37452/80
NOS.
51
SOUTH-78

रु. ६.००

सर्वोत्तम
रीडर्स डाइजेस्ट

वरी १९८३

'गांधी' महामानव : महान फ़िल्म
पृष्ठ १००

शतरंज की चाल
पृष्ठ १७

सुखी दांपत्य
पृष्ठ ४९

संसार की सर्वाधिक लोकप्रिय पत्रिका
प्रति मास १६ भाषाओं और ४० संस्करणों में ३.१ करोड़ से अधिक प्रतियां
हिंदी प्रकाशन का दूसरा वर्ष. दिसंबर '८२ अंक की मुद्रित प्रतियां ५९२२१
Reader's Digest : Hindi Edition : Jan. 83
यह प्रति वार्षिक ग्राहकों के लिए है, बिक्री के लिए नहीं

सोचने की बात

इमेल्डा मार्कोस, फ़िलीपीन के राष्ट्रपति की पत्नी :

हम माता पिता अकसर बच्चे को अपने अनुरूप ढालने की कोशिश करते हैं. लिहाजा हम एक शाख़ यहां से तो एक शांख वहां से काट देते हैं. तो भी यह हर बार सूरजमुखी की तरह सूरज की ओर घूम जाता है. और इस तरह हम शाख पर शाख काटते चले जाते है—अंत में वह एक ठूंठ भर रह जाता है. —'एशिया वीकली', हांग कांग

सोरेन किरकेगौर, डेनिश दार्शनिक (१८१३-१८५५) संभावनाओं के विषय में :

मुझ से कोई वरदान मांगने को कहा जाए तो मैं धन दौलत या ताज की कामना नहीं करूंगा. मैं ऐसी दिव्य दृष्टि चाहूंगा जो सदैव उत्कट एवं तीक्ष्ण रह कर संभावनाओं को समझ ले. आनंद से निराशा मिल सकती है, पर संभावनाओं से कदापि नही. और सच तो यह हे कि संसार में संभावना से अधिक मंजुल, मधुर और मादक नशा और कोई नहीं.

लैफ़्कैडियो हर्न, उन्नीसवीं शताब्दी के लेखकः

हम ने जिस प्रकार अपने से कमज़ोर जातियों को उन से अधिक समय तक जी कर, उन की ख़ुशियों के लिए ज़रूरी हर चीज़ पर अधिकार पा कर और साथ ही उन्हें आत्मसात कर उन्हें नष्ट कर दिया, उसी प्रकार हमें वे जातियां नष्ट कर सकती हैं जो हम से अधिक धैर्यवान, त्यागी और अधिक जननक्षमता वाली हैं और जिन्हें जीवित रखने के लिए प्रकृति को बहुत कम क़ीमत चुकानी पड़ती है.

लार्ड चेस्टरफ़ील्ड, अंग्रेज राजनयिक एवं विद्वान :

बौद्धिक ज्ञान पुस्तकों को बढ़ाने से प्राप्त होता है. पर इस से भी आवश्यक है सांसारिक ज्ञान, जो पुस्तकों के बजाए मनुष्यों और विशेष कर उन के विविध संस्करणों के अध्ययन से ही जुट पाता है.

नील मिलर, लिफ़ाफ़ा देख कर लोगों की पहचान के संबंध में कहते हैं :

आज का युग डिब्बाबंदी का है. हर चीज़ यानी जल से लेकर ज्ञान तक और मुरब्बे से ले कर महान राजनेता तक, सभी डिब्बाबंद आते हैं. और इस तरह हर चीज़ दबी ढंकी होती है. हां, लोगों को सुरक्षित ढंग से डिब्बाबंद करना, उन पर कोई ठप्पा लगाना सहज नहीं. हम में से प्रत्येक तथ्यों का एक शाश्वत और चिरंतन सुर संयोजन है. सुरों के असंख्यों. कांपते लरजते उठते गिरते तार संयोजित है.

अतः अनंत विश्व के किसी नागरिक को दुनियावी कसौटी पर रख कर परखना ऐसा ही है मानो बंसी की एक तान के आधार पर समूचे वाद्य वृंद का मूल्यांकन कर लिया जाए.

—'क्रिश्चियन साइंस मौनिटर'

सर्वोत्तम सूक्तियां

सहानुभूति यानी मेरे सीने में आप का दर्द.
—जेस लेयर

बिसात उठते ही बादशाह और प्यादा एक ही डब्बे में सिमट जाते हैं.
—इतालवी कहावत

दूसरा वसंत ही होता है पतझड़ जब कि पत्ता पत्ता फूल बन जाता है.
—आल्बेर कामू, फ्रांसीसी उपन्यासकार

आप को कोई नहीं देख रहा होता, तो आप वही होते हैं जो कि आप हैं.
—एन लैंडर्स,
अमरीकी स्तंभ लेखिका

बच्चों को क्या सिखाया जाए और क्या नहीं, जैसे अंकुश लगाने का फल यह मिलता है कि बच्चे बुद्धि में आप से आगे कभी नहीं निकल पाते.
—फ्रैंक ए क्लार्क

औसत व्यक्ति किसी भी प्रश्न के दोनों पहलुओं को सरलता से पकड़ सकता है बशर्ते इस में उस के पाकेटबुक या पूर्वाग्रह आड़े न आ रहे हों.
—'क्लीसिक क्रासवर्ड पज़ल्स'

आप यदा कदा ठोकर खा कर नहीं गिरते, तो इस का सीधा सा अर्थ यह है कि आप जोखिम नहीं उठा रहे.
—वुडी ऐलन,
अमरीकी फ़िल्म निर्माता व लेखक

सर्वोत्तम रीडर्स डाइजेस्ट

वर्ष २ : अंक २४ जनवरी १९८३

भारतीय संस्करणों के प्रमुख संपादक : अशोक महादेवन
संपादक : अरविंद कुमार
सहायक संपादक : ललित सहगल, सुशील कुमार
संपादन मंडल :
अरुण कुमार, राम. अरोड़ा, महेश नारायण भारती

विज्ञापन विभाग :
चंद्रन थरूर (निदेशक)
राम दत्ता (क्षेत्रीय प्रबंधक, बंबई)
विवियन डी सूज़ा (क्षेत्रीय प्रबंधक, दिल्ली)
कुमार माधवन (क्षेत्रीय प्रबंधक, मद्रास)
अमिताभ मजूमदार (क्षेत्रीय प्रबंधक, कलकत्ता)

अन्य विभाग :
विनायक उकिडवे (वित्त नियंता)
संजय जौहरी (वितरण प्रबंधक)
अजय कुमार दयाल (वितरण अधिकारी)

शुल्क :
रु. ७२.०० प्रति वर्ष, डाक व्यय अतिरिक्त
जानकारी के लिए लिखें : सर्वोत्तम रीडर्स डाइजेस्ट,
बी-१५, झिलमिल इंडस्ट्रियल एरिया, दिल्ली-११००३२
'सर्वोत्तम रीडर्स डाइजेस्ट' आर डी आई प्रिंट एंड पब्लिशिंग प्राइवेट लिमिटेड द्वारा प्रकाशित किया जाता है.
पंजीकृत कार्यालय : ओरियंट हाउस, मंगलौर स्ट्रीट, बलार्ड एस्टेट, बंबई ४०००३८
प्रकाशक तथा प्रबंध निदेशक : अनील गोरे

रीडर्स डाइजेस्ट
प्लेजेंट विल, न्यू यार्क
संस्थापक : डी विट वालेस और लीला एचेसन वालेस

रीडर्स डाइजेस्ट के अंतरराष्ट्रीय संस्करण
प्रमुख संपादक : एडवर्ड टी टामसन
संचालन संपादक : आर्लें द लाइरो
अध्यक्ष : जान ए ओ'हारा

अंतरराष्ट्रीय संस्करण १६ भाषाओं में प्रकाशित किए जाते है और उन के प्रमुख कार्यालय इस प्रकार हैं: अम्सटर्डम (डच), ओसलो (नारवेजियन), केप टाउन (अंग्रेजी), कोपेनहेगन (डेनिश), ज़ूरिख़ (जरमन और फ्रैंच), तोकियो (जापानी), दिल्ली (हिंदी), पेरिस (फ्रैंच और अरबी), बंबई (अंग्रेजी), मिलान (इटालियन), मेक्सिको सिटी (स्पेनिश), मैड्रिड (स्पेनिश), मौंटरीयल (अंग्रेजी और फ्रैंच), लंदन (अंग्रेजी), लिसबन (पुर्तगाली), सिड्नी (अंग्रेजी), सीयोल (कोरियन), स्टटगार्ट (जर्मन), स्टाकहोम (स्वीडिश), हांगकांग (चीनी), हेलसिंकी (फ़िनिश).

Published by Anil Gore for RDI Print & Publishing Pvt. Ltd., from B-15, Jhilmil Industrial Area, Delhi 110 032 and printed by him at Tej Press, Bahadur Shah Zafar Marg, New Delhi 110 002.

स्फूर्ति

कफ खांसी नाशक

विकास

बलवर्द्धक

बैद्यनाथ च्यवनप्राश क्यों ?

क्योंकि यह ५० से ज्यादा जड़ी-बूटियों के तत्वों से बना ऐसे प्राकृतिक विटामिनों से भरपूर है जो मानव शरीर के लिए आसानी से पाचन योग्य है। रासायनिक प्रक्रिया से बनाये गये दूसरे टानिकों में यह गुण नहीं होता। इसके अलावा, बैद्यनाथ च्यवनप्राश आपके लिए और आपके परिवार के लिए अति आवश्यक स्वास्थ्यवर्धक टानिक है क्योंकि यह है :

- विटामिन 'सि' से भरपूर
- कफ, खांसी, जुकाम नाशक
- कैल्शियम एवं खून की कमी के लिये
- ताजगी और तन्दुरुस्ती के लिये
- यौवन के लिये
- आयु व बलवर्द्धक
- त्रिदोष नाशक

श्री बैद्यनाथ आयुर्वेद भवन लिमिटेड

कलकत्ता • पटना • झाँसी • नागपुर • इलाहाबाद

AVID/BAB/1-81/H

शब्द संपदा सर्वोत्तम धन

कुसुम कुमार

प्रकृति की ध्वनियां मनोहर भी होती हैं और भयावह भी. सवाल यह है कि नीचे वाली २० ध्वनियों में से कितनी को आप पहचानते हैं. हर एक के सामने लिखे चार संभावित अर्थों में से निकटतम पर सही का निशान लगाइए और अगले पृष्ठ के सही उत्तरों से मिला कर निर्णय स्वयं कीजिए.

१. कुहू—अ. कथन. आ. सन्नाटा. इ. 'पी कहां'. ई. कोयल की बोली.
२. गूंज—अ. प्रतिध्वनि. आ. समाचार. इ. सितार ध्वनि. ई. वंशी ध्वनि.
३. टाप—अ. सिंह चाप. आ. घोड़ा चलने की आवाज़. इ. टांगे की आवाज़. ई. बड़ी घड़ी की आवाज़.
४. पी कहां—अ. विरह गीत. आ. कोयल की बोली. इ. मोर की बोली. ई. पपीहे की बोली.
५. पिहकना—अ. नशे में बोलना. आ. बकवास करना. इ. चहकना. ई. शोर करना.
६. दहाड़—अ. सिंह गर्जन. आ. हाथी का चीत्कार. इ. पुकार. ई. मेघ गर्जन.
७. चिंघाड़—अ. वानर ध्वनि. आ. डमरू ध्वनि. इ. नगाड़ा ध्वनि. ई. हाथी का चीत्कार.
८. गुंजार—अ. भीड़ का शोर. आ. भ्रमर ध्वनि. इ. गूंज. ई. दूध दुहने की ध्वनि.
९. सन्नाटा—अ. ध्वनिहीनता. आ. बेहोशी. इ. शोर. ई. उदास गीत.
१०. कल कल—अ. टालने की ध्वनि. आ. कोयल की बोली. इ. जल ध्वनि. ई. हास्य ध्वनि.
११. कुलबुल—अ. हिलने की ध्वनि. आ. क्रांति नाद. इ. आवाहन. ई. वायु ध्वनि.
१२. फड़ फड़—अ. फाड़ने की आवाज़. आ. पंख ध्वनि. इ. भ्रमर ध्वनि. ई. उबाल ध्वनि.
१३. चुर चुर—अ. मंद हंसी. आ. चुगली. इ. कपड़ा फटने की आवाज़. ई. सूखे पत्ते टूटने की आवाज़.
१४. फुफकार—अ. चोट लगने पर मुंह से निकली आवाज़. आ. सर्प ध्वनि. इ. पवन ध्वनि. ई. नफ़ीरी की आवाज़.
१५. फुरफुरी—अ. शीतकालीन कंपन की ध्वनि. आ. पंख ध्वनि. इ. पीपल के पत्तों की आवाज़. ई. भय ध्वनि.
१६. मिमियाना—अ. रोना. आ. गाली देना. इ. अस्पष्ट स्वर में गाना. ई. बकरी का बोलना.
१७. टरटराना—अ. मेंढक का बोलना. आ. झींगर का बोलना. इ. टिटहरी का बोलना. ई. बकवास करना.
१८. चहचहाहट—अ. पानी टपकने की ध्वनि. आ. कीचड़ में पग ध्वनि. इ. शोर. ई. पक्षियों की हर्ष ध्वनि.
१९. गड़गड़ाहट—अ. मेघ ध्वनि. आ. सिंह ध्वनि. इ. हाथी की बोली. ई. उबलने की आवाज़.
२०. बलबलाहट—अ. तड़पने की आवाज़ आ. रोने की आवाज़. इ. बकरी की बोली. ई. ऊंट की बोली.

उत्तर अगले पृष्ठ पर

पिछले पृष्ठ के उत्तर

१. **कुहू**—ई. कोयल की बोली, कूक, इसे कुहु भी लिखते हैं. ग़लती से इसे कुहुक लिख देते हैं, जिस का अर्थ होता है—पक्षियों की मधुर बोली, कूजन; उसे कोयल की बोली नहीं कहते.

२. **गूंज**—अ. प्रतिध्वनि, टकरा कर लौटने वाली आवाज़; देर तक बनी रहने वाली ध्वनि.

३. **टाप**—आ. घोड़ी चलने की आवाज़.

४. **पी कहां**—ई. पपीहे की बोली, चातक की बोली. रीति कालीन काव्य की परंपरा है कि पपीहा वसंत और वर्षा ऋतु में 'पी कहां' पुकारता है.

५. **पिहकना**—इ. चहकना, कोयल पपीहे मोर आदि मीठे गले वाले पक्षियों का पी पी या पिट्ट कर के चहकना या बोलना, पीकना.

६. **दहाड़**—अ. सिंह गर्जन, शेर या बाघ का ज़ोर से गरजना; ज़ोर की चिल्लाहट, गर्जन; चिल्ला कर रोना. हाथी दहाड़ता नहीं, चिंघाड़ता है. बादल गरजता है.

७. **चिंघाड़**—ई. हाथी का चीत्कार, हाथी का बहुत ज़ोर से चिल्लाना या बोलना; उक्त प्रकार से सहसा ज़ोर की ध्वनि या शब्द करना; चिल्लाना.

८. **गुंजार**—आ. भ्रमर ध्वनि, भंवरों के उड़ने से होने वाली भनभनाहट.

९. **सन्नाटा**—अ. ध्वनिहीनता, निस्तब्धता, स्तब्धता, नीरवता, चुप्पी. सन्नाटे का एक और अर्थ है जो उपरोक्त अर्थों से विपरीत मालूम पड़ता है: हवा चलने का शब्द, सनसनाहट; पर इस अर्थ में इस का उपयोग अब दुर्लभ है.

१०. **कल कल**—इ. जल ध्वनि, पानी चलने की आवाज़; झरने या नदी के मंद प्रवाह की ध्वनि. संस्कृत में 'कल' शब्द का अर्थ है अस्पष्ट मधुर ध्वनि. उसी से 'कल कल' शब्द बना है. अन्य अर्थ: अनेक लोगों के एक साथ बोलने की आवाज़.

११. **कुलबुल**—अ. हिलने की ध्वनि, छोटे छोटे जीवों के चलने व रेंगने या हिलने डोलने से होने वाली ध्वनि.

१२. **फड़ फड़**—आ. पंख ध्वनि, पंख आदि हिलने से होने वाली फड़ फड़ ध्वनि; ध्वज आदि के हवा में हिलने से होने वाली ध्वनि, फर फर, फरफराहट.

१३. **चुर चुर**—ई. सूखे पत्ते टूटने की आवाज़.

१४. **फुफकार**—आ. सर्प ध्वनि, सांप के मुंह से ज़ोर से निकली हवा की आवाज़, फुंकार, फूत्कार.

१५. **फुरफुरी**—आ. पंख ध्वनि, पक्षियों या फतिंगों के पंख फड़फड़ाने से होने वाली ध्वनि, फुरफुराहट. फुरफुराना = इस तरह उड़ना कि पंखों या डैनों से फुरफुर ध्वनि हो. शीतकालीन कंपन या भय कंपन को फुरहरी और फुरेरी कहते हैं.

१६. **मिमियाना**—ई. बकरी भेड़ आदि का बोलना अथवा में में शब्द करना. अन्य अर्थ: बहुत ही दबी ज़बान से चापलूसी करना.

१७. **टरटराना**—ई. बकवास करना, अंड बंड बकना, लगातार बेमतलब की बातें करना; बढ़ चढ़ कर बोलना, ज़ोर ज़ोर से बोलना. मेंढक टर्राते या टर टर करते हैं, आदमी टरटराते हैं.

१८. **चहचहाहट**—ई. पक्षियों की हर्ष ध्वनि, कलरव, पक्षियों का प्रसन्न हो कर या उमंग में आ कर चह चह शब्द करना.

१९. **गड़गड़ाहट**—अ. (मुख्यतः) मेघ ध्वनि, बादल गरजने की आवाज़; एक साथ बहुत सी तालियां बजने की आवाज़; तोप दग़ने की आवाज़. बादल गड़गड़ाते हैं, हुक़्क़ा गुड़गुड़ाया जाता है. पर कोई कोई हुक़्क़े की आवाज़ को भी गड़गड़ाहट कहते हैं.

२०. **बलबलाहट**—ई. ऊंट की बोली, ऊंट का बल बल शब्द, अन्य अर्थ: जल अथवा किसी अन्य तरल पदार्थ के उबलने की आवाज़.

मूल्यांकन:

१९ या अधिक सही ....सर्वोत्तम
१६ से १८ सही ....अत्युत्तम
१३ से १५ सही ....उत्तम
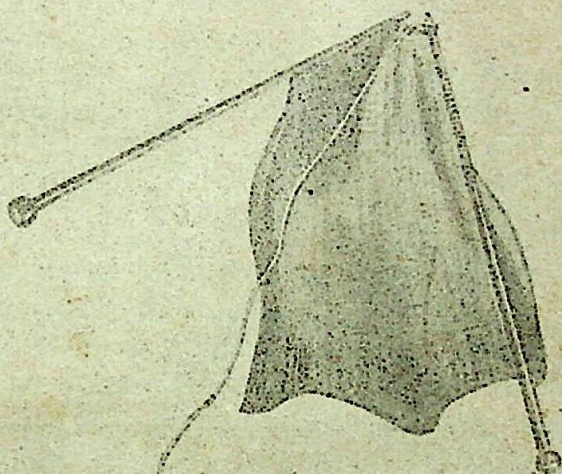
जीवन की बाज़ी में अब और कौन सा दांव खेलना है

जो करना है कर के रहूंगी

एरमा बामबेक

हमारे जीवन में कभी न कभी कोई न कोई ऐसी घटना घट ही जाती है कि पूर्व निर्धारित कार्यक्रमों में फेर बदल करना पड़ता है. कभी किसी के जन्म दिन की सूचना एकाएक मिलती है जिसे टाला नहीं जा सकता. या अकस्मात कोई मित्र आ टपकता है जो घोर संकट में होता है. परंतु मेरे सब काम जिस कारण धरे के धरे रह गए वह था एक मित्र का अंतिम संस्कार. सूचना मिलते ही मुझे लगा जैसे मैं बहुत कमज़ोर हूं, जैसे मुझे चोट पहुंचा- देना बहुत आसान है. ऐसा लगा जैसे कुछ भी सोचने और करने की सारी शक्ति जाती रही हो. कुछ पल्ले ही नहीं पड़ रहा था कि मुझे करना क्या है.

मन में आया कि बैंक में जमा सारे रुपए पैसे निकाल कर कहीं दूर चली जाऊं. प्लास्टिक की सारी तश्तरियां घर के बाहर सड़क पर रख दूं और उन पर कार चढ़ा दूं. नाच सीखना शुरू कर दूं. घर में जितने भी नक़ली फूल हैं, उन्हें फेंक दूं और सारा घर हरी भरी बेलों से भर दूं.

उसी रात मैं ने अपनी ज़िंदगी पर एक नज़र डाली कि आज के बाद क्या करना है, कैसे करना है, जीवन की बाज़ी में अब कौन सा दांव खेलना है. सब कुछ भली प्रकार सोचा और सौगंध खाई कि मैं अपने को उस महिला जैसी कमज़ोर नहीं बनने दूंगी जिस ने टिटानिक नामक जहाज़ से जीवन रक्षा के लिए लाइफ़ बोट में उतरते वक़्त हताश हो कहा था, "मैं जानती कि यह सब कुछ यदि होना ही है तो भोजन के बाद मीठा तो जी भर के खा लेती!"

सो दुनिया जो कर सकती है, कर ले. मैं तो आज से हर दिन ऐसे जिऊंगी जैसे वह मेरा आख़िरी दिन हो.

वो—जानते हैं न आप? मेरे कपड़े रखने की दराज़, जिस में मैं ने सिर्फ़ पैंटीज़ भर रखी हैं. जैसे जैसे वे मुझे छोटी पड़ती गईं मैं उन्हें दराज़ में डालती गई. और जिन्हें देखते ही मैं उदास होने लगती थी. तो जान लीजिए, मैं ने वह सब उठा कर फेंक दिया है.

अच्छा! बड़े कमरे में रखी वह मोमबत्ती आप को याद है—जिस की बनावट गुलाब के फूल जैसी थी, जिस पर ढेरों धूल जमी रहती थी, और गरमियों में जो ख़ुद ब ख़ुद मुलायम हो जाती थी—मैं ने कल उसे जला कर बिलकुल स्वाहा कर दिया.

और मोटर कार की वह खिड़की, जिस के

बराबर में बैठती थी, जिस में दो इंच की दरार पड़ गई थी और हम हमेशा यही सोचा करते थे कि कार बेचने से पहले इस की मरम्मत ज़रूर करानी है. हां! तो सुन लीजिए—उस की मरम्मत करा ली गई है.

अच्छा! ज़रा सोच कर बतलाइए तो कि इस रविवार को डिनर पर कौन आ रहा है? अज़ी, वही—जिन से हम ज़्यादा नहीं तो कम से कम सोलह बार विभिन्न मित्रों की शादियों में मिल चुके हैं, और हर बार हम उन से यही कहते रहे हैं, "किसी दिन आइए न!"

टूना मछलियों के उस बड़े डब्बे को मैं सिर्फ़ इस लिए नहीं खोल पा रही थी कि बची मछलियां बरबाद हो जाएंगी. क्योंकि इसे सिर्फ़ मैं ही खाती थी, और अकेले पूरा डब्बा तो कतई नहीं खाया जा सकता था. हां! तो मैं ने वह डब्बा खोल लिया. अगर मछलियां बरबाद होती हैं तो मेरी बला से.

मैं सीप के आकार वाले उस गुलाबी साबुन से हाथ धो रही थी कि पति ने कहा, "तुम तो बड़े चाव से यह साबुन बचा रही थीं. भीग जाने पर यह सीप जैसा थोड़े ही लगता है."

मैं ने हाथ पर साबुन के झाग को देखा—सीप के अंदर केवल एक जीव ही तो होता है. मैं ने उस जीव को कुछ करने कुछ कर दिखाने का मौक़ा दे दिया है.

दर

उन्हें अपनी कार बेचनी थी. अख़बार के दफ़्तर में फ़ोन किया कि विज्ञापन की दरें क्या हैं.

उधर से उत्तर मिला, "चालीस रुपए प्रति वर्ग सेंटीमीटर.."

वह दहल गए, "बाप रे! ये मेरे बस का नहीं. मेरी गाड़ी तो साढ़े चार मीटर लंबी है."

—'मिंग पाओ', हांग कांग
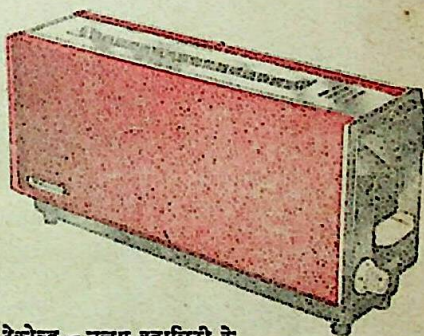
सर्वोत्तम के वार्षिक सदस्य होने में आप को लाभ ही लाभ है. ज़रा देखिए...

सर्व प्रथम आप पाएंगे, साल भर के लिए विश्व की सर्वोत्तम पठन सामग्री. आप विश्वास रख सकते हैं कि पूरे १२ महीनों तक आप को पूरी तरह से सारगर्भित, सरल और महत्वपूर्ण लेख... जीते-जागते जीवन के रोमांच... खुश कर देने वाले हास्य व्यंग्य... एक मासिक संक्षिप्त पुस्तक... एक ऐसा अनोखा लेखों का मिश्रण मिलेगा, जिस के कारण आज रीडर्स डाईजेस्ट संसार की सब से लोकप्रिय पत्रिका है.

और फिर, सुविधा. बस घर बैठे ही आप की पत्रिका आप को प्राप्त रहेगी. हर माह. और इतने कम दाम में—केवल बीस पैसे प्रति दिन. अपने दैनिक समाचार पत्रसे इसे मिलाइए. "सर्वोत्तम" में आप को ऐसी सामग्री मिलती हैं, जिसे आप संजो कर रखना चाहेंगे. यह आप के पुस्तकालय की शान बढ़ाती है, और इस का पूरा मज़ा—ज्ञान और मनोरजंन का भंडार वर्षो के लिए आप का है.

इसके अलावा, एक विशेष आकर्षण आप मुफ़्त प्राप्त करते हैं—एक अनोखी पुस्तक

आप को यह उपहार मुफ़्त

मुफ़्त

जीना इसको कहते हैं

जब आप "सर्वोत्तम रीडर्स डाइजेस्ट" के सदस्य बन जाते हैं.

प्रस्ताव की रूपरेखा:

अपनी सदस्यता को शुरू कर के 'जीना इसको कहते हैं' की अपनी मुफ़्त प्रति प्राप्त करने के लिए नीचे दिए हुए आदेश पत्र को भरकर, इस के साथ अपना शुल्क रु. ७२.०० (डाक खर्च के लिए रु. ७.०० अलग) आज ही भेजिए.

---------------------------- आदेश पत्र ----------------------------

सेवा में,
सर्वोत्तम रीडर्स डाइजेस्ट. दिल्ली.

कृपया मेरे सर्वोत्तम उपहार की मुफ़्त प्रति शीघ्र भेजें, और मेरी सदस्यता शुरू करें. मेरा शुल्क रु. ७९.०० संलग्न है.

नाम: ____________________

पता: ____________________

____

पिन कोड

वर्ष २ : अंक २४

सर्वोत्तम रीडर्स डाइजेस्ट

जनवरी १९८३

"मेरी ईमानदारी बिकाऊ नहीं है"

भ्रष्टाचार से लड़ना आसान नहीं. तरह तरह के दबाव पड़ते हैं, प्रलोभन दिए जाते हैं, बयान बदलने को कहा जाता है. लड़ने वाले फिर भी लड़ते हैं

जान जी हबल

"तुम लोग अपने उच्च अधिकारी से कह देना," बिल विंलकस्केल्स ने क्रुद्ध स्वर में जासूसों से कहा, "मैं यहां दोपहर को जांच के लिए प्रस्तुत हो जाऊंगा. उन्हें यह भी बता देना कि मैं उस समय रिपोर्टरों तथा जनता को भी बुलाऊंगा. मेरे पास छिपाने को कुछ नहीं है." वह वाशिंगटन स्थित जनरल सर्विसेज़ एडमिनिस्ट्रेशन (जी एस एः सामान्य सेवा प्रशासन) के भवन के भीतर अपने छोटे से कार्यालय में बैठा था. उस के सामने बैठे थे संघीय जांच ब्यूरो के दो एजेंट.

विंलकस्केल्स जी एस ए के जांच विभाग में सहायक महानिरीक्षक था. सत्तरादि दशक के अंत में उस ने उन जांच पड़तालों के सूत्रपात में मदद पहुंचाई थी जिन के परिणाम स्वरूप जी एस ए का व्यापक भ्रष्टाचार उघड़ कर सामने आ गया था. इन प्रयासों के फल स्वरूप विंलकस्केल्स को जांच विभाग से स्थानांतरित कर दिया गया. उस की पदावनति कर दी गई. उसे अपमानित और परेशान किया गया.

जुलाई १९८० में उस के शत्रु उसे बिलकुल नष्ट करने पर उतारू थे. उन्हों ने उस पर सरकारी संपत्ति की चोरी का आरोप लगाया था.

एक एजेंट ने उस से कहा, "तुम्हारे पास एक हथियार है जिसे तुम ने लौटाया नहीं है."

विंलकस्केल्स ने पूछा, "तुम्हारी बात का आधार?"

इस पर एजेंटों ने चांदमारी के दस्तावेज़ पेश किए जिन से पता चलता था कि विंलकस्केल्स ने कभी .३८ कैलिबर के जिस रिवाल्वर से गोली

चलाने का अभ्यास किया था, उस का नंबर वही है जो एक गुमशुदा रिवाल्वर का था. एक मिनट तक उस दस्तावेज़ का अध्ययन करने के बाद विंलकस्केल्स ने उसे एजेंटों को वापस दे दिया. उस ने साफ़ साफ़ कहा कि उस दस्तावेज़ में परिवर्तन किए गए हैं. दूसरे लोगों ने चांदमारी के लिए जो हथियार इस्तेमाल किए थे, उन के नंबर भी उस दस्तावेज़ में मिटा दिए गए थे और उन की जगह नए नंबर टाइप कर दिए थे. मूल नंबर अगर गुमशुदा रिवाल्वर के हों, तब भी इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि चांदमारी में एक ही रिवाल्वर से कई लोग अभ्यास कर सकते हैं.

विंलकस्केल्स सरीखे पारंगत जांच अधिकारी के लिए झूठे आरोपों को निपटाना बच्चों के खेल जैसा था. यद्यपि विंलकस्केल्स उस पृष्ठभूमि से काफ़ी लंबे समय से परिचित था जो उस षड्यंत्र के रूप में सामने आया था, तथापि उस की वितृष्णा ताज़ा हो उठी और उस ने संघर्ष जारी रखने का निश्चय किया. उसे विश्वास था कि एक न एक दिन सब ठीक हो जाएगा.

भस्मावृत चिनगारी

जी एस ए की स्थापना औपचारिक रूप से १९४९ में हुई थी. यह प्रशासन सरकारी ज़मीनों का मालिक, व्यापार एजेंट तथा फ़र्नीचर से ले कर ट्रकों तक सभी सरकारी आवश्यकताओं की आपूर्ति करता है. जी एस ए का काम बहुत फैला हुआ है. उस में लगभग ३०,००० लोग काम करते हैं. उन के हाथों से हर साल ३५ अरब डालर का लेनदेन होता है. पैसा खाने और बनाने के अनेक अवसर आते हैं और अनेक लोगों ने उन का लाभ उठाया भी है. सत्तरादि दशक के अंत में जब विंलकस्केल्स और उस के साथियों को भ्रष्ट कर्मचारियों तथा भ्रष्ट करने वाले लोगों का पता लगाने का अधिकार दिया गया, तो कुछ समय के लिए भ्रष्टाचार की ये घटनाएं बंद हो गई थीं.

भारी भरकम तथा मैत्रीपूर्ण स्वभाव वाला विलियम ए विंलकस्केल्स, जूनियर जब १९७६ में जी एस ए के जांच विभाग का मुखिया बना तो उस समय वह ४८ बरस का था. वह कोई नौसिखिया न था. २० बरस तक वह सेना में प्रति गुप्तचर्या अधिकारी (काउंटर इंटेलीजेंस) के रूप में काम कर चुका था. पिछले पांच साल से वह जी एस ए में जांच अधिकारी था. विंलकस्केल्स सरकारी ख़रीद तथा ठेके देने में स्पष्ट तौर पर व्याप्त भारी भ्रष्टाचार के उन्मूलन में अपने विभाग की असमर्थता पर काफ़ी समय से खिन्न था. उस ने एक के बाद एक केस का अध्ययन किया. उसे लगा कि जी एस ए के कार्यकलापों की राख के नीचे चिनगारी छिपी है और अगर इस राख को छेड़ा गया तो आग भड़क सकती है.

मुखिया बनने पर विंलकस्केल्स ने अपने ७० क्षेत्रीय कार्यालयों को जांच पड़ताल सुधारने का निर्देश दिया. शीघ्र ही शिकायतें आने लगीं कि वह अपनी अधिकार सीमा का अतिक्रमण कर रहा है. स्थिति को क़ाबू में लाने का काम जी एस ए के सहायक प्रशासक राबर्ट ग्रिफ़िन को सौंपा गया.

ग्रिफ़िन जी एस ए की स्थापना के समय से ही वहां काम कर रहा था. जितना वह जी एस ए की गतिविधियों के बारे में जानता था, उतना शायद और कोई नहीं जानता था. वह सुंदर और सुसंस्कृत था. इस के अलावा वह अमरीकी कांग्रेस में सदन के अध्यक्ष (स्पीकर) टामस टिप ओ' नील जूनियर का घनिष्ठ मित्र था और उसे उन का संरक्षण प्राप्त था. १९७७ में जब डेमोक्रेटिक पार्टी की सरकार बनी तो जी एस ए में उसे दूसरे नंबर का पद प्राप्त हो गया. विंलकस्केल्स का कथन है कि पिछली जुलाई में ग्रिफ़िन ने उसे मिलने के लिए बुलाया था. उस अवसर पर ग्रिफ़िन ने कहा, ''मैं राजनीतिज्ञ हूं. अध्यक्ष (स्पीकर) के साथ तथा सदन

और सीनेट के अनेक सदस्यों के साथ मेरे घनिष्ठ संबंध हैं."

इतना कह कर ग्रिफ़िन चुप हो गया मानो यह जानने की कोशिश कर रहा हो कि उस की बात से विंलकस्केल्स पर्याप्त प्रभावित हुआ या नहीं. विंलकस्केल्स कहता है कि इस के बाद ग्रिफ़िन ने ऐसे प्रश्न किए, जिन का प्रयोजन यह पता लगाना था कि वह अपने विभाग के कर्मचारियों के निजी जीवन की जांच के लिए तैयार है या नहीं. विंलकस्केल्स ने तमक कर जवाब दिया, "हरगिज़ नहीं. मेरी ईमानदारी बिकाऊ नहीं है."

विलियम विंलकस्केल्स, जूनियर

एक महीने बाद जी एस ए के प्रशासनिक कार्यालय के तत्कालीन कार्मिक अधिकारी अल्बर्ट पेट्रिलो को ग्रिफ़िन के कार्यालय में बुलाया गया. ग्रिफ़िन ने पेट्रिलो को ख़ुश करने के लिए उस की उपलब्धियों की सराहना की और कहा, "तुम्हारा भविष्य उज्ज्वल है. मुझे ख़ुशी है कि तुम मेरी टीम के सदस्य हो." शीघ्र ही पेट्रिलो को पता चल गया कि टीम की सदस्यता प्राप्त करने की क्या क़ीमत चुकानी पड़ती है. ग्रिफ़िन ने उस से कहा कि जी एस-१५ के जांच विभाग का एक अधिकारी फ़ालतू है. किसी न किसी को वहां से हटा देना चाहिए. ग्रिफ़िन चाहता था कि विंलकस्केल्स को वहां से हटा दिया जाए. उस ने पेट्रिलो को बताया कि फ़ोर्टवर्थ के जी एस-१२ में एक जगह ख़ाली है. विंलकस्केल्स को वहां भेजना मुनासिब रहेगा.

ग्रिफ़िन जो कारवाई कराना चाहता था, उस की कठोरता पर पेट्रिलो ने आपत्ति उठाई. तीन स्तरीय पदावनति का अर्थ था प्रति वर्ष आय में कोई ६,००० डालर की कटौती. पेट्रिलो ने सुझाव दिया कि वाशिंगटन के जी एस-१४ में एक जगह ख़ाली है. वह जगह नियमानुसार उसी व्यक्ति को प्राप्त हो सकती थी जो जी एस-१५ में छंटनी का शिकार हो जाए. लेकिन ग्रिफ़िन तो निश्चय कर चुका था कि विंलकस्केल्स को तीन स्तर पदावनत कर फ़ोर्टवर्थ निर्वासित कर दिया जाए. उस ने पेट्रिलो से कहा, "चाहे जैसे करो, लेकिन वह यहां से हटना चाहिए."

दबाव के बावजूद पेट्रिलो ने छंटनी अथवा स्थानांतरण के कार्य में सहयोग देने से इनकार कर दिया. विंलकस्केल्स अपने पद पर बना रहा, लेकिन अब पेट्रिलो पर संकट टूट पड़ा. ग्रिफ़िन ने खुले आम घोषणा कर दी कि वह पेट्रिलो को नौकरी नहीं करने देगा. उस ने पेट्रिलो के ३२ कर्मचारियों को निर्देश दिया कि वे पेट्रिलो का कोई काम न करें.

पेट्रिलो इस व्यवहार को सहन नहीं कर पाया. उस ने शीघ्र ही प्रशासन की नौकरी छोड़ दी और लोक सेवा आयोग के सामने शिकायत रखी. शिकायत रद्द कर दी गई, लेकिन एक विशेष अधिकारी ने मामले की फिर से छानबीन करने के बाद कहा : "पेट्रिलो को जी एस ए के विशेषज्ञों के दबाव और दमन के कारण त्यागपत्र देना पड़ा. इन विशेषज्ञों से तो रूसी जासूसी संस्था के जी बी भी दबाव और दमन के नए तरीक़े सीख सकती है."

"कर्तव्य पालन में स्वतंत्र हूं"

ग्रिफ़िन अब जी एस ए का कार्यवाहक प्रशासक बन गया था, लेकिन इस से विंलकस्केल्स भयभीत नहीं हुआ. जब उसे पता चला कि क्लीवलैंड में जी एस ए स्वयंसेवा भंडारों पर सरकारी कर्मचारी घूस ले रहे हैं और सरकारी सामान को अपने काम में ला रहे हैं तो उस ने

अपने विभाग के योग्यतम अधिकारी वहां भेज दिए. अपराधियों से इक़बालिया बयान लेने और उन्हें सज़ाएं दिलाने का काम बहुत फुर्ती से पूरा किया गया. बाल्टीमोर-वाशिंगटन क्षेत्र में हुई एक ऐसी ही जांच से विलकस्केल्स को आशंका हुई कि उस क्षेत्र के ३० भंडारों में से २५ में भारी धोखाधड़ी हुई है. उस ने बाल्टीमोर स्थित एफ़ बी आई और अटार्नी के साथ परामर्श किया और उन को एक गुप्त जांच दल की नियुक्ति में मदद दी. विलकस्केल्स को पता था कि अगर ग्रिफ़िन के कानों में इस की भनक पड़ गई तो उस के जांच अधिकारियों को उस जांच कार्य से हटने का आदेश मिल जाएगा. इस लिए विलकस्केल्स ने कार्यवाहक प्रशासक को इस की भनक भी न लगने दी. जांच दल एक बरस तक ख़ामोशी से काम करता रहा.

१९७७ में राष्ट्रपति कार्टर ने टेनेसी के व्यापारी जोएल डब्लू 'जे' सोलोमन को जी एस ए का प्रशासक नियुक्त कर दिया. इस के कारण ग्रिफ़िन को फिर उप प्रशासक के पद पर लौट आना पड़ा. सोलोमन शीघ्र ही विलकस्केल्स के कार्यकलाप का प्रबल समर्थक बन गया और उस ने न्याय विभाग के चोटी के वकील विंसेंट आल्टो को जी एस ए संबंधी जांच का विशेष परामर्शदाता नियुक्त कर दिया.

जांच अधिकारियों ने जिन चोरियों का पता लगाया, उन से दिमाग़ चकरा जाता था. मेरीलैंड की एक फ़र्म ने जी एस ए को ४४ लाख फ़ोल्डरों का बिल दिया था, लेकिन फ़ोल्डर सिर्फ़ १० लाख ही दिए थे. इस प्रकार जी एस ए ने करदाताओं की गाढ़ी कमाई के ६ लाख ३० हज़ार डालर की चोरी की. जी एस ए के जिन कर्मचारियों ने ऐसे बिलों का भुगतान कराया था, उन्हें बदले में रंगीन टेलीविज़न और बरमूडा में सप्ताहांत बिताने के पुरस्कार प्राप्त हुए थे. एक कर्मचारी ने तो चीन यात्रा का पूरा ख़र्च उपहार में प्राप्त किया. बाल्टीमोर की जांच पड़ताल में ही ५५ व्यक्तियों को दोषी पाया गया. उन में से ५३ को सज़ा हुई. लाखों डालरों का घोटाला सामने आया.

जांच के दौरान आल्टो की एक ऐसे निर्माता में विशेष दिलचस्पी हो गई जो सरकारी दफ़्तरों के लिए फ़र्नीचर का ख़ास सप्लायर था. उस के फ़र्नीचर के बारे में असंख्य शिकायतें प्राप्त हुई थीं और कंपनी के बोली लगाने के ढंग तथा उस के और जी एस ए के अधिकारियों के संबंधों को ले कर भी गंभीर प्रश्न उठाए गए थे.*

आल्टो ने उस कंपनी से संबंधित सभी फ़ाइलें विलकस्केल्स से मांगी. आल्टो की इस पहल पर विलकस्केल्स को बहुत प्रसन्नता हुई और उस ने फ़ाइलें तुरंत पहुंचा दीं, लेकिन उस ने आल्टो को चेतावनी दी कि आप पर यह कारवाई न करने के लिए भारी दबाव डाला जाएगा. जी एस ए के एक चोटी के अधिकारी ने एक बार विलकस्केल्स को चेतावनी दी थी: "इस कंपनी का राजनीतिक प्रभाव इतना अधिक है कि यदि तुम ने उस के ख़िलाफ़ जांच करने की हिम्मत की तो तुम्हें चींटी की तरह मसल दिया जाएगा."

आल्टो ने जब फ़ाइलें देख लीं तो शुक्रवार तीसरे पहर विलकस्केल्स ने उन्हें यथास्थान रख दिया. सोमवार को दफ़्तर पहुंचते ही उसे ग्रिफ़िन के एक सहायक का फ़ोन आया.

"तुम ने किस की इजाज़त से यह कारवाई की?" उस ने जवाब तलब किया.

विलकस्केल्स ने कहा, "मि. आल्टो के आदेश पर."

ग्रिफ़िन का सहायक चीख़ा, "तुम आल्टो के नहीं, मि. ग्रिफ़िन के नौकर हो." उस ने विलक-

*१९७८ में सोलोमन ने इस कंपनी के साथ हुए सभी अनुबंध ख़त्म कर दिए थे, परंतु कंपनी ने उस फ़ैसले के ख़िलाफ़ अपील की तो संघीय न्यायालय ने उस के पक्ष में फ़ैसला दिया.

स्केल्स को आदेश दिया कि वह अगले दिन सुबह आ कर ग्रिफ़िन को बताए कि वह आल्टो के लिए क्या क्या कर रहा है.

विंलकस्केल्स और आल्टो दोनों सोलोमन के कार्यालय पहुंचे और उन्हों ने उसे स्थिति से अवगत कराया. सोलोमन ने तुरंत ही एक विज्ञप्ति जारी की: "लेखा परीक्षक और जांच विभाग के कार्यालय विशेष परामर्शदाता विंसेंट आल्टो की मार्फ़त सीधे मुझे रिपोर्ट देंगे. यह आदेश तुरंत लागू माना जाए."

सोलोमन के कार्यालय से बाहर निकलते समय विंलकस्केल्स आनंद विभोर था. "ऐसा लगा कि मुझे अपना कार्य करने की पूरी स्वतंत्रता प्राप्त हो गई है."

सोलोमन ग्रिफ़िन को हटाना चाहता था, लेकिन उस ने राष्ट्रपति कार्टर से कहा, "मुझे डर है कि ग्रिफ़िन के हटाए जाने से अध्यक्ष ओ 'नील के साथ प्रशासन के संबंध बिगड़ जाएंगे." इस के बावजूद कार्टर ने ग्रिफ़िन को हटाने का आदेश दे दिया. इस पर ओ'नील आगबबूला हो गया और उस ने व्हाइट हाउस के संपर्क अधिकारी को अपने दफ़्तर में आने से रोक दिया. अंततः उप राष्ट्रपति वाल्टर मांडेल ने ग्रिफ़िन* को कार्टर के विशिष्ट व्यापार समझौता अधिकारी के कार्यालय में ५०,००० डालर वार्षिक वेतन वाला पद दिला दिया और इस तरह कुछ समय के लिए जी एस ए की जांच का काम जारी रहा.

१९७८ की गरमियों के अंत तक आल्टो को आशा थी कि जी एस ए को भ्रष्टाचार से मुक्त करने का प्रयास शायद सफल हो जाए. तत्कालीन लेखा परीक्षण विभाग के मुखिया हावर्ड डेविया का कहना है, "हमारा ध्यान इतने अधिक निशानों पर केंद्रित था कि हमें यह तय करने में कठिनाई हो रही थी कि करदाता की बचत की दृष्टि से कौन सा निशाना सब से अधिक महत्वपूर्ण रहेगा." विंलकस्केल्स को याद है, "बड़े बड़े कांड की जांच पर तैनात अधिकारी इतने उत्तेजित थे कि वे अतिरिक्त पारिश्रमिक लिए बिना ही स्वेच्छा से १२ से १५ घंटे प्रति दिन काम करते थे."

यह उत्साह कुछ ही समय तक रहा. भ्रष्टाचार के मामले जैसे जैसे उघड़ते गए, वैसे वैसे सोलोमन को लगा कि जिन राष्ट्रपति से वह जब चाहे मिल लेता था, अब वही उसे मिलने का समय नहीं दे रहे हैं. सोलोमन ने उदास स्वर में अपने भ्रष्टाचार निवारक दल के लोगों से कहा, "साथियो, व्हाइट हाउस अब हमारा साथ नहीं दे रहा है." उस पर इतना दबाव पड़ा कि मार्च १९७९ में उस ने त्यागपत्र दे दिया.

दफ़्तर या कबाड़ख़ाना

जी एस ए भ्रष्टाचार कांड के कारण अमरीकी कांग्रेस ने एक अधिनियम द्वारा एक दर्जन बड़े सरकारी अभिकरणों में से प्रत्येक के लिए एक महानिरीक्षक की नियुक्ति का प्रावधान कर दिया. और जब कार्टर ने सोलोमन के स्थान पर अवकाश-प्राप्त नौसेना के प्रधान रोलैंड फ़्रीमैन की नियुक्ति की तो महानिरीक्षक के पद पर न्याय विभाग के अटार्नी कुर्ट मूलेनबर्ग की नियुक्ति हो गई. विंलकस्केल्स को आशा थी कि मूलेनबर्ग जांच के काम को और फैलाएगा, लेकिन हुआ उस के बिलकुल विपरीत. जो हुआ, उस से यह सबक़ सीखा जा सकता है कि सरकार में फ़ुज़ूलख़र्ची और भ्रष्टाचार का भंडाफोड़ करने वालों पर क्या बीतती है.

मूलेनबर्ग यूं तो विंलकस्केल्स के साथ दोस्ताना बरताव करता था, लेकिन काम की बात अनसुनी कर देता था. विंलकस्केल्स की अपेक्षा वह उस 'विशेष परियोजना कार्यालय' पर अधिक निर्भर

*आज ग्रिफ़िन वाशिंगटन स्थित क्रिस्लर कारपोरेशन के सरकारी संपर्क विभाग में अधिकारी है और उस के हाथ में जी एस ए को मोटर गाड़ियां बेचने का काम है.

रहता था जिस ने लेखा परीक्षकों और जांच कर्मचारियों का एक नया दल भरती किया था. विंलकस्केल्स और डेविया ने मूलेनबर्ग को सावधान किया कि ऐसे पृथक समूह की स्थापना हानिकारक सिद्ध होगी. विंलकस्केल्स को याद है, "मूलेनबर्ग हम से सहमत था, लेकिन इस के साथ ही उस ने यह भी कहा कि मैं एक वर्ष के लिए ऐसा करने को प्रतिबद्ध हूं. अतः हमें नई व्यवस्था को सहन करना ही होगा."

आने वाले महीनों में जांच कार्य अव्यवस्थित हो गया. मूलेनबर्ग के विशिष्ट जांच दस्तों ने बहुधा विंलकस्केल्स को बताए बिना ही नाज़ुक मामले हाथ में लेने शुरू कर दिए. विंलकस्केल्स यह देख कर भड़क उठा कि जिन विस्फोटक कांडों में कुछ किया भी जा सकता था, उन में भी कोई काररवाई नहीं की गई. हां, बिल विंलकस्केल्स के विरुद्ध अवश्य ही काररवाई हो गई.

यह उस के जीवन की सर्वोच्च परीक्षा की घड़ी थी. उस ने जिस जांच को शुरू करने में मदद दी थी, उस की गणना अमरीका के इतिहास में सब से अधिक महत्वपूर्ण जांचों में की जाने लगी थी. एक साल के ही अंदर अंदर जी एस ए के स्वयंसेवा भंडारों की बिक्री में अढ़ाई करोड़ डालर की गिरावट आ गई थी. इस के बावजूद १९७९ के नवंबर के अंत में मूलेनबर्ग ने विंलकस्केल्स को सूचना दी कि उसे जांच विभाग के सहायक महानिरीक्षक के पद से हटाया जा रहा है.

मूलेनबर्ग ने उस से कहा कि इस काररवाई का कारण उस की अनुपयुक्तता है. विंलकस्केल्स ने कहा कि मूलेनबर्ग की शिकायत में कोई तुक नहीं है. सच तो यह है कि महानिरीक्षक के पद पर मूलेनबर्ग की नियुक्ति विंलकस्केल्स को हटाने के लिए ही हुई है. विंलकस्केल्स ने अपने हटाए जाने के विरुद्ध संघर्ष छेड़ने की शपथ उठाई.

हाल ही की एक भेंट वार्ता में मूलेनबर्ग ने इस आरोप को असत्य बताया कि विंलकस्केल्स से पिंड छुड़ाने के लिए ही जी एस ए में नियुक्ति हुई थी. उस ने ज़ोर दे कर कहा, "जब मैं ने वह पद संभाला था, उस समय विंलकस्केल्स के जांच विभाग में बहुत अधिक सुधार की आवश्यकता थी." इस का उत्तर विंलकस्केल्स ने इन शब्दों में दिया : "हमारे दस्तावेज़ हमारी बात के प्रमाण हैं. हमारे पास इस बात के ठोस कारण थे कि जांच अधिकारियों ने क्लीवलैंड, बाल्टीमोर और वाशिंगटन में जिस प्रकार के भ्रष्टाचार को उघाड़ा है, वैसा ही भ्रष्टाचार देश में अन्यत्र भी पनप रहा है. लेकिन जैसे ही मूलेनबर्ग ने जांच पड़ताल का कार्य अपने हाथों में लिया, जी एस ए का भ्रष्टाचार कांड उड़नछू हो गया."

जी एस ए के प्रशासक फ्रीमैन ने विंलकस्केल्स के सामने प्रस्ताव रखा कि वह अपनी इज़्ज़त बचाने के लिए उस इकाई का प्रधान बनना स्वीकार कर ले जो सरकारी दस्तावेज़ों को गोपनीय श्रेणी से हटाने के बारे में पुनर्विचार करती है. प्रशासक के विस्मय की सीमा न रही जब विंलकस्केल्स ने यह पद स्वीकार करने से इनकार कर दिया. विंलकस्केल्स ने कहा, "मैं इस तरह के किसी भी काम में हिस्सा लेने को तैयार नहीं हूं जो सही बात पर परदा डालती हो."

तब फ्रीमैन ने उसे उसी इकाई में उप निदेशक बना दिया. अब विंलकस्केल्स उस छोटे से कार्यालय में बैठने को विवश था जिस में कुर्सियों और डेस्कों के ढेर लगे थे. जब समाचार पत्रों ने विंलकस्केल्स के साथ हुए अन्याय पर प्रकाश डालना शुरू किया, तब फ्रीमैन और मूलेनबर्ग ने इस आरोप से इनकार किया कि विंलकस्केल्स के प्रति किसी प्रकार का दुर्व्यवहार किया गया है अथवा उस की पदावनति की गई है. विंलकस्केल्स ने संवाददाताओं से स्पष्ट कह दिया कि नए पद पर उसे कोई भी काम नहीं सौंपा गया है. ज़ाहिर

है, उस के दुश्मन उसे जी एस ए से एकदम बाहर निकाल देना चाहते थे. वे उस पर रिवाल्वर चुराने का अभियोग लगाते रहे, मगर उसे सिद्ध नहीं कर पाए.

विंलकस्केल्स और डेविया ने सीनेट की एक उप समिति के सामने विस्फोटक बयान दिए. उन्हों ने कहा कि जी एस ए के भ्रष्टाचार को उघाड़ने वाले प्रमुख जांच अधिकारी हटाए जा चुके हैं, महत्वपूर्ण मामले छोड़ दिए गए हैं तथा जिन लेखा परीक्षकों और जांच अधिकारियों ने ईमानदारी के साथ अपना कर्तव्य निभाया था, उन्हें धमकी मिल गई है. इन बयानों के बावजूद कोई काररवाई नहीं की गई.

जिस आदमी ने व्यापक सरकारी भ्रष्टाचार के विरुद्ध सब से अधिक सफल संघर्ष किया था, वह अगले डेढ़ वर्ष तक कबाड़ख़ाने जैसे दफ़्तर में फंसा रहा.

अनुत्तरित प्रश्न

१९८० के अपने राष्ट्रपति चुनाव अभियान में रोनाल्ड रीगन ने सरकार के भीतर पैसे की धोखाधड़ी और बरबादी को एक मुख्य मुद्दा बनाया था. उन्हों ने कहा था कि जिस समय जी एस ए को स्वच्छ करने के लिए एक गंभीर अभियान शुरू हुआ, ठीक उसी समय सोलोमन को अपना पद छोड़ना पड़ा तथा विंलकस्केल्स को उस के पद से हटा कर उस के साथ दुर्व्यवहार किया गया. रीगन ने वचन दिया था कि यदि उन्हें राष्ट्रपति पद के लिए चुन लिया गया तो "भ्रष्टाचार के विरुद्ध संघर्ष छेड़ने वाले लोगों को उस संघर्ष का नेतृत्व फिर से सौंप दिया जाएगा और उन से कह दिया जाएगा कि वे जी एस ए में ऊपर से नीचे तक भ्रष्टाचार का उन्मूलन कर डालें."

चुनाव अभियान की इस वक्तृता के बावजूद रीगन जब राष्ट्रपति बन गए तो उन्हों ने जी एस ए में भ्रष्टाचार उन्मूलन के मामले में तनिक भी जल्दी से काम नहीं लिया. मूलेनवर्ग को न्याय विभाग में उस के पुराने पद पर लौटा दिया गया तथा व्हाइट हाउस की ओर से उस के स्थान पर ज़ोज़फ़ सिकन की नियुक्ति की गई. सिकन कार्टर प्रशासन के दौरान गृह निर्माण और शहरी विकास विभाग की लेखा परीक्षण शाखा में सहायक महानिरीक्षक था. विंलकस्केल्स अगले पांच महीने तक और उसी कबाड़ख़ाने में पड़ा सड़ता रहा. पांच महीने बाद जा कर राष्ट्रपति ने न्यू हैंपशायर के व्यवसायी जेराल्ड कारमैन को जी एस ए का प्रशासक नियुक्त किया.

कारमैन ने अपना पद संभालने के बाद सब से पहला काम विंलकस्केल्स और डेविया को वापस अपने विभाग में लाने का किया. उस ने उन्हें जी एस ए में भ्रष्टाचार उन्मूलन की योजना तैयार करने का काम सौंप दिया. विंलकस्केल्स और डेविया ने सरकारी कार्यालयों के लिए सामग्री की ख़रीद पर नए नियंत्रणों का प्रस्ताव रखा. इस के साथ ही यह भी सुझाव दिया कि देश भर में जी एस ए के कार्यालयों द्वारा घेरी गई जगह में २० प्रति शत की कमी की जाए तथा नया फ़र्नीचर न ख़रीदा जाए. (विंलकस्केल्स का कहना है कि सरकार के पास इतना अधिक फ़र्नीचर है कि उस से सारी दुनिया का काम चल सकता है.) विंलकस्केल्स को पर्यवेक्षण कार्यालय का निदेशक बना दिया गया और उसे सरकारी ख़र्च, बरबादी तथा धोखाधड़ी पर नियंत्रण लगाने का अधिकार दे दिया गया.

ऊपर से देखा जाए तो लगता है कि आख़िर बिल विंलकस्केल्स को मुसीबतों से छुटकारा मिल गया है.

पिछले एक वर्ष में उस के द्वारा की गई कटौतियों के कारण करदाताओं को एक करोड़ तीस लाख डालर की बचत हुई. लेकिन कुछ गंभीर

प्रश्न ज्यों के त्यों बने हैं: विंलकस्केल्स अथवा डेविया को जी एस ए का महानिरीक्षक क्यों नहीं बनाया गया? विंलकस्केल्स तथा डेविया को जी एस ए की जांच शुरू करने का काम क्यों नहीं सौंपा गया?

क्या रीगन के सामने भी वही समस्याएं हैं जो कार्टर के सामने थीं? क्या प्रशासन के नेताओं के मन में यह भय है कि यदि जी एस ए में भ्रष्टाचार का सचमुच उन्मूलन किया गया तो उस के भयंकर राजनीतिक परिणाम होंगे?

शर मिला

आज भी झेंप जाता हूं कि मैं ने उस के (हम दोनों उस समय तेरहवें साल में थे) छोटे भाई को किस तरह रिश्वत दी कि वह मेरा प्रेम पत्र ले जा कर अपनी बहन के सिरहाने रख दे. वह प्रेम पत्र भी मैं ने एक पुरानी पुस्तक यानी 'संपूर्ण पत्र व्यवहार' से अक्षरशः टीपा था. दरअसल किताब मुझे दुछत्ती पर पड़ी मिल गई थी और उस में दिए मेरे प्रेम पत्र का शीर्षक था: नायक का पत्र नायिका के नाम. उस में लिखा था:

"डेढ़ बरस हो गए और वह दिन मुझे आज भी याद है मानो अभी कल की बात हो. तब मुझे पहली बार तुम्हारे दर्शनों का सौभाग्य प्राप्त हुआ था. तुम्हारे आकर्षण से बिंधा मैं उस दिन तुम्हारे घर पर बैठा पलछिन यही सोचता रहा कि तुम्हारा नेह कैसे पाऊं. पर मेरी आशा पूरी हुई क्या? बस, तुम्हारे इसी जवाब पर मेरे जीवन की सारी ख़ुशियां टिकी हैं. इसे क्षणिक आवेग मत समझना. तुम्हारे प्रति मेरा सम्मान और मेरी श्रद्धा ही मेरे अटूट प्रेम के सच्चे आधार हैं और ये महीनों से मेरे जीवन के परम स्वप्न बने हुए हैं. नारी सुलभ लज्जा और गरिमावश तुम्हारे मन की बात तुम्हारे मन में ही दबी ढंकी है. अतः मैं नहीं जानता कि उस में मेरे लिए कोई जगह है भी या नहीं. अनिश्चय का यह बोझ अब और नहीं सहा जाता सो आज दिल की बात काग़ज़ पर उतारने का साहस कर रहा हूं. अब नसीब में चाहे जीत लिखी हो या हार . . .सदा सर्वदा तुम्हारा . . ."

ख़ैर, इधर ख़त भेजा और उधर दिल डूबने लगा. कल्पना करता रहा कि प्रेम रस में पगे वे शब्द उस पर क्या प्रभाव डालेंगे. पर जो घटा वह कुछ और ही था. पत्र उस से पहले उस की मां के हाथ लग गया और अगली दुपहरिया महिला मंडली जुड़ी तो चर्चा का एकमात्र विषय था वही प्रेम पत्र.

वह दिन था कि हफ़्ते भर बाद भी गली में निकलना दुश्वार हो रहा था. दिल धड़कता रहता कि कोई पीछे से पूछ बैठेगा, "क्यों मियां, नारी सुलभ लज्जा और गरिमा देखने जा रहे हो?"

—ई बी

आदमी सोना उधार ले कर चुका सकता है, परंतु किसी का अहसान कदापि नहीं चुकाया जा सकता. यह ऋण आदमी के साथ ही जाता है.

—मलावी लोकोक्ति

इंगलैंड के मानचेस्टर विश्वविद्यालय के कुछ छात्रों की आंखों पर पट्टी बांध कर उन्हें एक गाड़ी में बिठा दिया गया. उन्हें हिदायत दी गई कि वे आपस में बातचीत न करें. इन छात्रों को यह नहीं पता था कि उन्हें कहां किस काम के लिए ले जाया जा रहा है. एक घंटे तक बल खाती सड़कों पर चक्कर लगाने के बाद गाड़ी रुकी. छात्रों की आंखों पर अब भी पट्टियां बंधी थीं. उन्हें गाड़ी से उतार कर मध्य इंगलैंड के पहाड़ी जंगल में साफ किए गए ऐसे स्थान पर ले जाया गया जो बिलकुल सुनसान था.

विश्वविद्यालय के प्राणीविज्ञानी रोबिन बेकर ने एक छात्रा को एक ओर ले जा कर कहा, "बताओ, हमारा विश्वविद्यालय किस दिशा में है ?" शरद ऋतु के उस तीसरे पहर में अधिकांश, छात्रों की भांति उस छात्रा ने भी ठीक उसी दिशा में अपनी उंगली उठा दी जिस ओर विश्वविद्यालय था.

अनेक प्राणियों में अपने घर लौट जाने की सहज बुद्धि होती है. ऐसे प्राणियों में घोंघे जैसे धीरे धीरे चलने वाले प्राणियों से ले कर तेज उड़ने वाले कबूतर और मधुमक्खियां तक शामिल हैं. बेकर का कहना है कि हम मनुष्यों में भी सहज दिशा बोध है. हो सकता है कि हमारा यह सहज दिशा बोध बहुत क्षीण हो या हम इस ओर ध्यान न दें, किंतु हमारी यह क्षमता
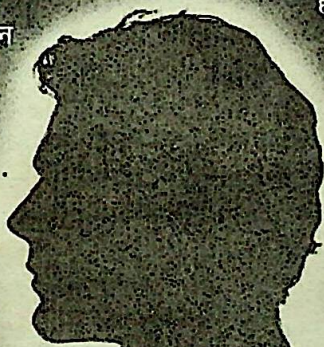
लोवेल पोंट

हमारे जीवन की महान शक्ति

मानस चुंबक

रूस और अमरीका के वैज्ञानिकों की खोज इशारा कर रही है उस भविष्य की ओर जब विद्युतीय आदेश पा कर शरीर अपने आप को ठीक कर लिया करेगा

उतनी ही वास्तविक है जितनी देखने, सुनने या सूघने की शक्तियां. उन का विश्वास है कि यह शक्ति चुंबकीय है क्योंकि परीक्षणों में उन्हों ने पाया कि आंखों पर पट्टी बांध कर जिन छात्रों ने सही दिशा बताई थी, उन्हीं का दिशा बोध उस समय गड़बड़ा गया. जब हैलमेट में चुंबक रख कर उन्हें पहनाया गया.

अनुसंधान कर्ता तो बहुत पहले से कहते आ रहे हैं कि जिन प्राणियों को घर लौटने का सही दिशा बोध होता है, उन्हें देख कर लगता है जैसे उन के सिर में कुतुबनुमा हो. वैज्ञानिकों को ऐसे प्रमाण मिले हैं जिन से अनुसंधान कर्ताओं की उपरोक्त उपमा सही सिद्ध होती. है. उदाहरण के लिए घर लौट आने वाले कबूतर के सिर में लौह आक्साइड के ऐसे छोटे छोटे कण होते हैं जिन्हें 'चुंबकीय लौह आक्साइड' या 'लोडस्टोन' कहते हैं. इस धातु का उपयोग प्रारंभिक कुतुबनुमा बनाने के लिए किया गया था.

हाल ही में काई, तितलियों, डालफ़िन और टूना मछलियों तथा मौसम बदलने पर एक देश से दूसरे देश में जाने वाले कुछ पक्षियों में भी चुंबकीय लौह आक्साइड के कण पाए गए हैं. बेकर के अनुसार मनुष्यों में भी चुंबकीय लौह आक्साइड के कण हो सकते हैं. ये कण मस्तिष्क के पास उस जगह हो सकते हैं जहां नाक खोपड़ी से मिलती है. इन्हीं के कारण मनुष्य को किसी भी चुंबकीय आकर्षण का बोध हो जाता है. (बेकर के परीक्षणों के परिणामों की पुष्टि करने के प्रयत्न असफल रहे हैं. अनेक अनुसंधानकर्ता यह मानने को तैयार नहीं हैं कि मनुष्य में भी घर लौटने की सहज चुंबकीय बुद्धि है.)

हम सूर्य से आलोकित ग्रह पर रहते हैं. अधिकांश जीवित प्राणियों ने प्रकाश का उपयोग करने का कोई न कोई उपाय अपना लिया है. हम तरह तरह की ध्वनियों से भरे संसार में रहते हैं. अधिकांश जीवित प्राणियों ने कंपनों का अनुभव करने के लिए अपनी किसी न किसी इंद्रिय को विकसित कर लिया है. पृथ्वी एक विशालकाय चुंबक भी है. इस लिए यह पता लगने पर हमें आश्चर्यचकित नहीं होना चाहिए कि मनुष्यों पर और अनेक जीवित प्राणियों पर पृथ्वी की चुंबकीय शक्ति का प्रभाव पड़ता है.

जीव चुंबक विज्ञान अभी अपनी प्रारंभिक अवस्था में ही है, किंतु इस ने स्वास्थ्य और जीवन को प्रभावित करने वाली महान अदृश्य शक्ति का पता लगाना शुरू कर दिया है. उदाहरण के लिए रूसी वैज्ञानिकों ने एक अध्ययन के बाद बतलाया है कि सूर्य के तल से उठने वाली ज्वालाओं के कारण जब पृथ्वी के वायुमंडल में चुंबकीय लौह आक्साइड के कणों के झोंके आते हैं, तब पृथ्वी के चुंबकीय क्षेत्र में अचानक गड़बड़ी मच जाती है. उस समय मोतियाबिंद के रोगियों की आंखों के अंदर पानी का दबाव बढ़ जाता है और इस से रोगी को अधिक कष्ट होने लगता है. अमरीकी अनुसंधान कर्ताओं का कहना है कि इस प्रकार की भू चुंबकीय हलचलों के दौरान मनोरोग चिकित्सालयों में रोगियों की संख्या बढ़ जाती है.

देह विद्युत की भूमिका. अपने वातावरण में हम जो विद्युत चुंबकीय क्षेत्र बनाते हैं, उन से भी काफ़ी नुक़सान होने की आशंका है. महामारी वैज्ञानिकों को एक अध्ययन में पता चला कि बिजली के ट्रांसफ़ार्मरों से ४० मीटर तक की दूरी में रहने वाले अधिकांश कम उम्र लोगों को ल्यूकीनिया और लसीका कैंसर था. इन ट्रांसफ़ार्मरों से शक्तिशाली चुंबकीय क्षेत्र बन जाते हैं. अन्य अध्ययनों से पता चला है कि चुंबकीय क्षेत्र कुछ प्रकार के कैंसरों को बढ़ाते हैं.

पृष्ठ १७ का फ़ोटो: एल फ्रांस केबिच

कुछ व्यक्तियों पर पास के हलके चुंबकीय क्षेत्रों में हुए परिवर्तनों का भी प्रभाव पड़ सकता है. जो लोग यह बताते हैं कि ज़मीन के नीचे कहां पानी है और कहां नहीं, उन का अध्ययन करने पर मालूम हुआ है कि उन की योग्यता का रहस्य और कुछ नहीं, यही चुंबकीय संवेदनशीलता है. कुछ विद्वानों का यह भी विचार है कि जिन व्यक्तियों में दूसरे व्यक्ति के मन की बात जान लेने की क्षमता होती है, उस का कारण भी शायद यही है कि इन व्यक्तियों के शरीर हलके विद्युत चुंबकीय संकेत ग्रहण कर सकते हैं और भेज सकते हैं. टेकनालाजी में प्रगति होने पर वैज्ञानिकों के हाथों में शायद ऐसे उपकरण आ जाएं जिन से ऐसी कल्पनाओं के बारे में निश्चित जानकारी मिल सकेगी.

अनेक वैज्ञानिकों को चुंबक विज्ञान के अनुसंधानों के बारे में संदेह है क्योंकि इन परीक्षणों की पुष्टि कर पाना कठिन है. कुछ समय से वैज्ञानिक जीव रासायनिक आधार पर ही जीवन को समझने की कोशिश करते आ रहे हैं. अधिकांश रोगों का इलाज किसी न किसी रसायन के इंजेक्शन, गोली या चूर्ण खाने में ही पाया गया है.

किंतु हमारे शरीर के निर्माण और अस्तित्व में जितना विभिन्न रासायनिक पदार्थों और प्रक्रियाओं का हाथ है, उतना ही विद्युत शक्ति और उस के स्पंदनों का भी है. वाल्ट व्हिटमैन ने १८९२ में अपनी कविता की पुस्तक 'लीव्ज़ आफ़ ग्रास' में लिखा था, "मैं देह विद्युत का गुणगान करता हूं." और वास्तविकता भी यही है कि हमारे केंद्रीय स्नायु तंत्र को विद्युत स्पंदन ही चला रहे हैं. यह ठीक है कि वैज्ञानिक अभी तक विद्युत और चुंबकीय आकर्षण के बीच के रहस्यमय संबंध की गुत्थी सुलझा नहीं पाए हैं, किंतु उन्हों ने यह पता लगा लिया है कि जहां कहीं विद्युत तरंगें प्रवाहित होती हैं, वहां वहां चुंबकीय क्षेत्र बन जाते हैं.

कोलराडो विश्वविद्यालय के स्वास्थ्य विज्ञान केंद्र में डा. जान ज़िमरमैन और उन के साथी एक ऐसे यंत्र का उपयोग कर रहे हैं जिस से शरीर के सूक्ष्म चुंबकीय क्षेत्रों का पता लग जाता है.

चुंबकीय क्षेत्र का पता लगाने वाले इस अत्यधिक संवेदनशील यंत्र सुपरकंडक्टिंग क्वांटम इंटरफ़ियरेंस डिवाइस (एस क्यू यू आई डी) में इस की विद्युत प्रतिरोध क्षमता शून्य तक कर देने के लिए द्रव हीलियम गैस इस्तेमाल की जाती है. इस यंत्र से मस्तिष्क के भीतर कोशिकाओं के गुच्छे का चुंबकीय क्षेत्र जान लिया जाता है. स्वस्थ मस्तिष्कों के गुच्छे का चुंबकीय प्रतिमानों की धैर्यपूर्वक जांच पड़ताल कर ज़िमरमैन और अन्य वैज्ञानिक मस्तिष्क में विभिन्न कार्य करने वाले क्षेत्रों का ठीक ठीक पता लगाने का प्रयत्न कर रहे हैं.

लेकिन डाक्टर इस से भी आगे बढ़ कर यदि ऐसे क्षेत्रों का सही सही पता लगा लें जहां किसी अड़चन के कारण शरीर के विद्युत चुंबकीय संकेतों में गड़बड़ी पैदा हो रही हो, तो ...? अथवा डाक्टर शरीर के विकारयुक्त संकेतों के स्थान पर मनुष्य निर्मित सही संकेत देने लग जाएं अर्थात शरीर की कोशिकाओं की भाषा में ही शरीर को अपने आप ही नीरोग कर लेने का आदेश देने लगें, तो ...?

चमत्कारी चिकित्सा. ऐसे चमत्कार होने भी लगे हैं. न्यू यार्क शहर के कोलंबिया प्रैसबिटेरियन मेडिकल सेंटर में डा. एंड्रू बैसेट विद्युत औषधि विज्ञान के क्षेत्र में अग्रणी हैं. उन की भविष्यवाणी है, चिकित्सा के क्षेत्र में विद्युत शक्ति का उसी प्रकार उपयोग होने लगेगा जिस प्रकार आज दवाओं या शल्य क्रिया का हो रहा

है. कुछ रोगों में तो दवाओं और शल्य क्रिया की ज़रूरत ही नहीं रहेगी."

कोई ऐसा रोगी डा. बैसेट के पास पहुंचे जिस की टूटी टांग ठीक तरह से जुड़ न पा रही हो तो संभव है कि वह घर लौटते समय अपने साथ ऐसे दो बड़े पैड ले आए जो तारों के द्वारा एक डब्बे से जुड़े होते हैं. इस डब्बे को घर जा कर बिजली के प्लग से जोड़ा जा सकता है. रोगी टूटी हड्डी के दोनों ओर एक एक पैड रख लेता है और इस यंत्र को चालू कर देता है. पैड में लगे कायल से रोगी के हाड़ मांस में ऐसा स्पंदनशील विद्युत चुंबकीय क्षेत्र बन जाता है जो न जाने कैसे हड्डी को स्वयं जुड़ने का आदेश दे देता है.

पिछले कुछ वर्षों में कई बड़े बड़े वैज्ञानिक अध्ययनों से सिद्ध हो चुका है कि विद्युत चुंबकीय क्षेत्रों से टूटी हुई हड्डियां जल्द जुड़ जाती हैं.

विद्युत औषधि विज्ञान के क्षेत्र में बैसेट और अन्य वैज्ञानिकों के अनुसंधान से भविष्य में और भी सफलताएं मिलने की आशा है.

यदि सैलामेंडर (आग में रहने वाला छिपकली से मिलता जुलता एक पौराणिक सरीसृप) जैसे किसी आदिम जानवर की टांग कट जाती थी तो उस की जगह नई टांग अपने आप उग आती थी. अनेक प्राणियों में यह शक्ति होती है. मनुष्य के छोटे बच्चों में भी कुछ हद तक यह शक्ति होती है. और किसी किसी की कटी उंगलियां फिर से उग सकती हैं.

शरीर के बढ़ने के साथ साथ यह क्षमता समाप्त हो जाती है. किंतु मान लीजिए, यदि हम मस्तिष्क की उस सांकेतिक भाषा को समझ लें जिस से वह शरीर को आदेश देता है तो हम भी कोशिकाओं को फिर से ऊतक उगाने के आदेश दे सकेंगे. सिद्धांततः किसी रोगी के अस्वस्थ हृदय को आदेश दिया जा सकता है कि वह अपने आप ठीक हो जाए या शरीर से कह दे कि वह दूसरा स्वस्थ हृदय बना ले. शायद यह भी संभव हो कि विद्युत शक्ति द्वारा शरीर के किसी ख़ास हिस्से की क्षमता बढ़ा कर रोगी के शरीर से कह दिया जाए कि वह स्वस्थ हो जाए अथवा जिस अंग की आवश्यकता है, उसे फिर बना ले. इस प्रकार हम मस्तिष्क या फेफड़े की क्षमता भी बढ़ सकते हैं.

अनुसंधान कर्ताओं ने प्रौढ़ चूहों के अंग फिर उगा लेने में सफलता प्राप्त कर ली है. चूहा भी हम जैसा ऐसा स्तनपायी जीव है जिस के शरीर में वयस्क होने के बाद अगर कोई अंग नष्ट हो जाता है तो वह दोबारा नहीं उगता. यह सिद्ध कर दिया गया है कि स्पंदनशील विद्युत चुंबकीय क्षेत्रों के कारण मनुष्य के शरीर की हड्डियां जल्द जुड़ जाती है और घाव जल्द भर जाते हैं. पशुओं पर किए गए परीक्षणों से पता चला है कि विद्युत चुबंकीय क्षेत्र से अनेक प्राणियों के अगों की टूट फूट को जल्द ही ठीक किया जा सकता है.

औषधि और चुंबक का मिलाप. चुंबकीय मस्तिष्क आलेखन के नए यंत्रों से यह जानकारी प्राप्त कर वैज्ञानिक आश्चर्य में पड़ गए हैं कि जब हम सोए होते हैं, तब हमारे मस्तिष्क के चुंबकीय क्षेत्र सब से अधिक प्रबल होते हैं. सोवियत अनुसंधान कर्ता अनेक वर्षों से विद्युत निद्रा के परीक्षण कर रहे हैं. इस परीक्षण में किसी व्यक्ति के सिर को चारों ओर से विशेष प्रकार के स्पंदनशील विद्युत चुंबकीय क्षेत्रों से प्रभावित कर ८ से १२ घंटों तक के लिए सुला दिया जाता है. अब अत्यधिक संवेदनशील यंत्र एस क्यू यू आई डी से मस्तिष्क के किसी भी भाग का कार्य कलाप सही सही पता लगा लिया जाता है. इस लिए इस यंत्र और विद्युत निद्रा की

विधि का कभी कभी एक साथ उपयोग कर अनिद्रा के रोगियों का उपचार भी किया जाने लगा है. आशा है कि भविष्य में इन यंत्रों का उपयोग मानस रोगों के इलाज के लिए या ज्ञान विज्ञान आसानी से समझने के लिए भी किया जाने लगेगा.

पश्चिमी देशों के वैज्ञानिकों ने यह भी पता लगाया है कि कुछ ख़ास तरह की विद्युत चुंबकीय तरंगें प्रयोग कर शरीर के किसी अंग को सुन्न किया जा सकता है. दांत आदि निकालने के लिए इन तरंगों का उपयोग किया जा सकता है. इस नई विधि से दर्द से भी छुटकारा दिलाया जा सकता है और इस में ऐसा कोई ख़तरा नहीं होता जैसा कि सुन्न करने वाली रासायनिक दवाओं के प्रयोग में होता है. लेकिन हमें अभी यह मालूम नहीं है कि विद्युत चुंबकीय उपचार से शरीर को क्या क्या नुकसान हो सकता है.

इस बीच अन्य वैज्ञानिक दवाओं और चुंबकीय शक्ति का मिला जुला उपयोग करने के उपाय ढूंढ़ रहे हैं. इन दिनों प्रयोगशाला में पशुओं पर ऐसे परीक्षण किए जा रहे हैं जिन में शरीर के किसी ख़ास अंग का इलाज करने के लिए दवाएं ऐसे पदार्थ के खोल में रख दी जाती हैं जिस का अपना कोई प्रभाव नहीं होता किंतु जिस पर चुंबक का प्रभाव पड़ सकता है. अब शरीर के जिस भाग में दवाई का असर पहुंचाना होता है, उस से कुछ आगे एक चुंबक रख कर कैप्सूल में दवा को वहां पहुंचाया जाता है. इस तरह शक्तिशाली दवाई थोड़ी थोड़ी मात्रा में और अधिक नियमित ढंग से दी जा सकती है.

जीव चुंबक के विकसित होते विज्ञान से हमें न केवल यह आशा बंधती है कि इस के कारण मनुष्य को इलाज के नए नए साधन मिल जाएंगे बल्कि हमारा ध्यान इस तथ्य पर भी जाता है कि हमारा शरीर कुछ रासायनिक पदार्थों का संग्रह ही नहीं है हम जीवन की ज्योति से आलोकित प्राणी हैं.

मसनददार

स्वर्गीय लेखिका सैली लैथम ने एक बार फ़ोर्ट पियर्स, फ़्लोरिडा, में बीते दिनों का यह क़िस्सा सुनाया. तब स्तंभकार जिम बिशप एक क़त्ल के मुक़दमे की कारवाई से संबंधित समाचार संकलन के लिए वहां आए हुए थे.

कई बार मुक़दमे की कारवाई एकदम नीरस होती थी और समाचार के नाम पर कुछ बनता बनाता नहीं था. ऐसे में, बिशप अकसर उस कसबाई कचहरी के शिथिल व ऊबाऊ रतावरण में भी कुछ रंग भरने की कोशिश करते.

एक बार उन्हों ने समां बांधने की जुगत में लिखा: कचहरी में चारों ओर चमेली की ख़ुशबू फैली रहती है. पर हां, यहां की मेहतरानी से वही फ़िनायल की सी बू फूटती है. उधर शहर के दूसरे छोर पर, सैली लैथम नाम की लेखिका पीठ पीछे दो दो तकिए लगाए बैठी रहती हैं. वह कोई कविता लिख रही हैं . . .

मैं उन की इस ख़ुशबयानी पर ख़ुश हो रही थी कि एक के बाद एक पत्र आने लगा. सब में एक ही प्रश्न था:

बिशप को कैसे मालूम कि आप दो दो तकिए इस्तेमाल करती हैं?

आज का आदमी कितना मूर्ख है

सवाल यह नहीं है कि हमें कितनी जानकारी है, सवाल यह है कि हमारे पास ज्ञान कितना है

डेनियल जे बूरस्टिन

आश्चर्य है—कोई भी व्यक्ति आज उस स्फीति की बात नहीं करता जिस ने हमारी विचार शक्ति को मंद कर दिया है. उस का नाम है 'सूचना स्फीति'. हर रोज़, हर घड़ी मिलने वाली सूचनाओं से हमारा मन और मस्तिष्क इस क़दर भरता जा रहा है कि हम अपने युग की समस्याओं पर विचार नहीं कर पा रहे हैं. टेलीविज़न और रेडियो, दैनिक समाचार पत्रों, कंपूटर से प्राप्त सूचनाओं और सारहीन छोटी मोटी ख़बरों से हमारा मस्तिष्क सदा भरा रहता है, उलझन में पड़ा रहता है. दुनिया के कोने कोने से तुरंत मिलने वाली इन सूचनाओं के कारण हमारी चेतना का चप्पा चप्पा भर जाता है और वे वहां ज्ञान बोध को प्रवेश नहीं करने देतीं.

ज्ञान नियमित रूप से निरंतर बढ़ता रहता है, सूचनाएं अनियिमित और फुटकर होती हैं. सूचना देने के साधन तो फूल फल रहे हैं, लेकिन ज्ञान बढ़ाने के साधनों, स्कूलों तथा पुस्तकालयों को कोई पूछता तक नहीं है.

सूचनाओं की भरमार से उत्पन्न भ्रांति उन पुस्तकालय संचालकों में भी पाई जाती है जो ज्ञान के संरक्षक माने जाते हैं. उदाहरण के लिए अमरीकी पुस्तकालयों की दुर्दशा पर ध्यान दिलाने के लिए 'व्हाइट हाउस' में जिस सम्मेलन का आयोजन किया गया, उस का नाम था 'पुस्तकालय और सूचना सेवा संबंधी व्हाइट हाउस सम्मेलन.' सूचनाएं देने से संबद्ध उद्योगों ने इस सम्मेलन को ख़ूब सहयोग दिया. उन्हों ने सूचनाएं एकत्र करने वाले आधुनिक उपकरण और कंपूटरों की सहायता से एक जगह सूचनाएं जमा करने और इन सूचनाओं को फिर बता देने वाले उपकरण भी लगाए. किंतु सारे सम्मेलन में वह शब्द नहीं सुना गया जो कभी पुस्तकालयाध्यक्षों की ज़बान पर हमेशा रहता था. वह शब्द सम्मेलन की कार्यक्रम पुस्तिका के पृष्ठ ५४ पर कहीं आ पाया. कौन सा शब्द था वह?

वह शब्द है: पुस्तक.

हमें याद नहीं रहता कि पुस्तक है टेक्नालाजी की महानतम उपलब्धि. इसी टेक्नालाजी के कारण होमर, प्लेटो, मैक्यावेली और डिकेंस का

पुलित्ज़र पुरस्कार विजेता इतिहासकार डेनियल जे बूरस्टिन 'द अमेरिकन्स' और 'द इमेज' के लेखक तथा अमरीकी संसद के पुस्तकालयाध्यक्ष हैं.

एक एक शब्द हमारे पलंग के सिरहाने या अध्ययन कक्ष में पहुंच जाता है. छापेख़ाने के आविष्कारक गूटेनबर्ग के कारण मृत लेखक भी हज़ारों लाखों लोगों तक अपनी बात पहुंचा सकते हैं. १६०५ में फ्रांसिस बेकन ने कहा था, ''जहाज़ों का आविष्कार बहुत भला कार्य माना जाता है क्योंकि ये अनेक बहुमूल्य पदार्थ एक जगह से दूसरी जगह पहुंचा देते हैं. किंतु पुस्तकें तो जहाज़ों से भी कहीं अधिक महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि पुस्तकें जहाज़ों की भांति हमें समय के विस्तृत समुद्रों को पार करा देती हैं और युगों पुरानी प्रज्ञा, ज्ञान और आविष्कार से परिचित करा देती हैं.'' मनुष्य जाति के पास आज जो भी ज्ञान है, उस का अधिकांश पुस्तकों में ही संगृहीत है. पुस्तकों से ही मनुष्य को अपना ज्ञान बढ़ाने की प्रेरणा मिली है और ज्ञान वृद्धि में पुस्तकों ने ही मनुष्य की सहायता की है.

पुस्तकों की कुछ विशेषताओं पर विचार कर हम ज्ञान के उस लक्षण को जान सकते हैं जो उसे सूचना से अलग करता है.

पुस्तकें स्थायी होती हैं. आज का अख़बार तो कुछ समय बाद रद्दी में चला जाएगा, किंतु पुस्तकें प्रिय उपहार की भांति हमेशा हमारी अलमारियों की शोभा बढ़ाती रहेंगी. एज़रा पाउंड के शब्दों में ''साहित्य स्थायी समाचार है.'' इस के विपरीत सूचना माध्यमों की सब से बड़ी उपलब्धि 'स्कूप' होती है अर्थात सूचनाएं एकत्र करने की बेतहाशा दौड़ में किसी समाचार के किसी अंश को सब से पहले पहुंचाना. ज्ञान की साधन पुस्तकों में अपने स्थायित्व के कारण वृद्धि होती है और सूचना माध्यम नित नई सूचनाएं देने के कारण फूलते फलते हैं.

पुस्तकें ज्ञानवर्धक होती हैं. सौल बैलो का कोई नया उपन्यास पढ़ कर इच्छा होती है कि हम उस के पहले उपन्यास भी पढ़ें. आर्नल्ड टायनबी रचित विश्व इतिहास पढ़ने के बाद हम जानना चाहते हैं कि एच जी वेल्स और ओसवाल्ड श्पेंगलर ने इस बारे में क्या लिखा है. आइंस्टाइन की रचनाएं पढ़ने पर हम न्यूटन, गैलीलियो, कोपरनिकस और टोलेमी के ग्रंथ भी पढ़ना चाहते हैं. नया ज्ञान हमारे पुराने ज्ञान में वृद्धि करता है. किंतु नई सूचना पुरानी सूचना का स्थान ले लेती है. आज का अख़बार हमें केवल यही बताता है कि कल जो ख़बरें छपी थीं, वे कितनी ग़लत और अपूर्ण थीं.

पुस्तकें एक विषय पर केंद्रित होती हैं. पुस्तक से हमें किसी एक विषय की जानकारी मिलती है. किंतु सूचना देने वाले माध्यम हमें सब चीज़ों के बारे में बताते हैं. पुस्तकालयों में विषयों के अनुसार पुस्तकों का वर्गीकरण किया जाता है, लेकिन हमारे समाचार पत्र और रेडियो व टेलीविज़न समाचार प्रायः यही बताते हैं कि अमुक घटना 'कब' हुई. उन से केवल इतना पता चलता है कि कल के बाद से अब तक क्या क्या घट चुका है.

पुस्तकें परंपरा का निर्माण करती हैं. सभ्यता के निर्माण में पुस्तकों का अमूल्य योगदान होता है. हम अपने महान ग्रंथों का बार बार अध्ययन कर अपने ज्ञान को समृद्ध करते हैं और उस के बाद ऐसी पुस्तकें लिखते हैं जिन्हें और अधिक लोग गहरी रुचि के साथ स्थायी रूप से पढ़ते हैं.

निस्संदेह हमें सूचनाओं की आवश्यकता पड़ती है. नागरिक, माता पिता और उपभोक्ता होने के नाते हमें सूचनाओं की आवश्यकता है. हमारे वैज्ञानिकों और टेक्नालाजिस्टों को भी इस की आवश्यकता होती है ताकि उन की जानकारी पुरानी न पड़े, उन के बौद्धिक साधन संरक्षित रहें और वे पहले के आविष्कार का फिर से

आविष्कार करने का प्रयत्न न करें. सूचनाएं हमें तानाशाहों, अत्याचारियों और चालबाज़ों से सावधान करती हैं. अमरीका के स्वतंत्रता घोषणा पत्र के रचयिता और तीसरे राष्ट्रपति टामस जैफ़रसन ने कहा था, ''यदि मुझे समाचार पत्र रहित सरकार और सरकार रहित समाचार पत्र में से एक का चुनाव करना हो तो मैं सरकार रहित समाचार पत्र को ही चुनूंगा.''

सूचनाएं एकदम निरर्थक ही होती हैं, ऐसी बात नहीं है. इन की बुराई यही है कि ये जंगल की आग की तरह तेज़ी से फैल कर हमें अभिभूत कर लेती हैं. सब से बुरी बात तो यह होती है कि नशेबाज़ की तरह हमें सूचना पाने की लत पड़ जाती है और इसी भूख के कारण सूचनाओं की संख्या और अधिक बढ़ती जाती है.

इसी के परिणाम स्वरूप इस युग में एक ऐसी मनुष्य जाति उत्पन्न हुई है जिसे हर सूचना की जानकारी तो है, लेकिन जो ज्ञान से सर्वथा रहित है. उसे राष्ट्रपति या प्रधान मंत्री की व्यक्तिगत आदतें मालूम होंगी. उसे सुविख्यात व्यक्तियों की भूलों या मूर्खतापूर्ण बातों की जानकारी भी होगी. उसे यह भी पता होगा कि तेल उत्पादक देशों का संगठन पेट्रोलियम की क़ीमत बढ़ाने की धमकी दे रहा है. किंतु ज्ञान के क्षेत्र में वह शायद अजनबी ही रहता है—उसे विदेश नीति, अर्थशास्त्र या राजनीतिक परंपरा की जानकारी अधिक नहीं होती.

बौद्धिक मुद्रा स्फीति के विरुद्ध मेरे प्रस्ताव का आधार यह है कि किसी भी सूचना का मूल्यांकन सामान्यतः उस के बीज और फल के बीच निश्चित होता है. सो इस का मतलब यह हुआ कि पत्रिकाओं की अपेक्षा पुस्तकें अधिक उपयोगी होती हैं. अख़बारों के मुक़ाबले पत्रिकाएं अधिक उपयोगी होती हैं तथा रेडियो और टेलीविज़न की ख़बरों की तुलना में समाचार पत्र अधिक उपयोगी होते हैं.

सूचना पाने की आदत छोड़ने के लिए हमें कभी कभी दैनिक समाचार पत्र नहीं पढ़ना चाहिए और दो एक दिन टेलीविज़न और रेडियो की ख़बरें भी नहीं सुननी चाहिए. धीरे धीरे कोशिश करनी चाहिए कि सप्ताह में एक बार ही अख़बार पढ़ा जाए और रेडियो टेलीविज़न पर ख़बरें सुन ली जाएं. अख़बारों की जगह हम कोई साप्ताहिक समाचार पत्रिका पढ़ सकते हैं. जल्द ही हमें लगेगा कि अब प्रति दिन मिलने वाली सूचनाओं की उतनी ज़रूरत महसूस नहीं होती. कुछ समय बाद तो ख़बरों की आवश्यकता ज़रा भी अनुभव नहीं होगी. इस बीच हम और **अधिक पुस्तकें पढ़ कर** अपने चेतन को ज्ञान से तृप्त कर सकते हैं.

हमें इस दक़ियानूसी और घिसी पिटी बात से अपना पीछा छुड़ा लेना चाहिए कि हमें जानकार नागरिकों की आवश्यकता है. समाज को वस्तुतः ज्ञानवान नागरिकों की आवश्यकता है. ज्ञान का संचार स्वच्छंद मन में होता है. हम में से प्रत्येक को अपनी इच्छानुसार ज्ञान के समृद्ध संसार में विचरना चाहिए—चाहे वह अतीत का हो या वर्तमान का.

नागरिकों होने के नाते हमारा महत्व इसी बात में है कि हम अपने को लगातार मिलती रहने वाली सूचनाओं के दबाव से कितना अधिक मुक्त रख सकते हैं. आज के संसार में स्वतंत्रता का नया अर्थ यही है.

हिम्मत का ही दूसरा नाम है ख़ुशी. —होलब्रुक जैक्सन

कथा कहानी

रेल वाली लड़की

रस्किन बांड

डब्बे से उतरते ही वह मुझे भूल गई होगी, पर मैं भला कैसे उसे भूल सकता हूं

रोहाना तक मैं रेल के उस डब्बे में अकेला था. वहां से एक लड़की सवार हुई. एक महिला और एक पुरुष उसे विदा करने आए थे, जो शायद उस के माता पिता थे. वे उस की ख़ैरियत के बारे में काफ़ी फ़िक्रमंद थे. महिला उसे तरह तरह की हिदायतें दे रही थी—कहां सामान रखा जाए, कब खिड़की से बाहर झांका जाए, और कैसे अजनबियों की बातों में उलझने से बचा जाए.

मैं चूंकि अंधा हो चुका था, इस लिए यह तो न जान सका कि लड़की देखने में कैसी है, लेकिन एड़ियों से तल्ले टकराने की आवाज़ से यह ज़रूर समझ गया था कि वह स्लीपर पहने है. बहरहाल उस की आवाज़ अच्छी थी.

स्टेशन पीछे छूटते ही मैं ने पूछा, "आप भी देहरादून जा रही हैं?"

ज़रूर मैं किसी अंधेरे कोने में बैठा था, चूंकि मेरी आवाज़ से वह चिहुंक उठी. बोली, "मैं नहीं जानती थी कि डब्बे में और भी कोई है."

ऐसा तो ख़ैर अकसर होता है कि अच्छे भले दीदों वाले ऐन सामने की चीज़ नहीं देख पाते. उन्हें शायद बेशुमार चीज़ें देखनी होती हैं. जब कि अंधे महसूस की जाने वाली हर चीज़ का अहसास बाक़ी इंद्रियों द्वारा कर लेते हैं.

मैं ने कहा, "शुरू में मैं ने भी आप को नहीं देखा था, लेकिन आप के आने की आवाज़ सुन ली थी." और मैं सोचने लगा कि क्या मैं उसे यह जानने से रोक सकूंगा कि मैं देख नहीं सकता. 'अगर मैं इसी जगह बैठा रहूं तो यह ख़ास मुश्किल नहीं होगा.'

"मैं सहारनपुर उतरूंगी." वह बोली, "मेरी मौसी मुझे लेने आएंगी. आप कहां जा रहे हैं?"

"देहरादून. और वहां से मसूरी." मैं ने जवाब दिया.

"ख़ुशक़िस्मत हैं आप! काश, मैं भी मसूरी जा पाती. पहाड़ मुझे बहुत भाते हैं. ख़ासकर अक्तूबर में"

इम्प्रिंट (अगस्त १९७१) से साभार. कापीराइट १९७१ बिज़नेस प्रेस प्राइवेट लिमिटेड, बंबई

"हां, यह बेहतरीन मौसम होता है," मैं उन दिनों की याद करते हुए बोला जब मैं देख सकता था. "चोटियां जंगली डालिया के फूलों से ढकी होती हैं, धूप मीठी लगती है और रात को अलाव में तापते आप थोड़ी बहुत ब्रांडी का लुत्फ़ उठा सकते हैं. ज़्यादातर सैलानी जा चुके होते हैं और सड़कें शांत और सूनी होती हैं."

वह चुप रही. मैं अंदाज़ा लगाता रहा कि मेरे शब्द उसे छू गए हैं या वह मुझे रूमानियत का मारा बेवकूफ़ समझ रही है. तभी मैं एक ग़लती कर बैठा. पूछ बैठा, "मौसम कैसा है?"

लगा, सवाल उसे क़तई अजीब नहीं लगा. क्या वह भांप गई थी कि मैं देख नहीं सकता? लेकिन उस के अगले सवाल ने मेरी आशंका मिटा दी. उस ने सहज ही कहा, "आप ख़ुद खिड़की से क्यों नहीं देख लेते?"

बर्थ के साथ साथ सहल सहल चलते मैं ने खिड़की का कगार टटोला. वह खुली थी. उस के सामने मुंह कर के मैं ने बाहर का नज़ारा देखने का स्वांग किया. मैं ने कल्पना की, खंभे पीछे छूटते जा रहे हैं. और मैं एक और दुस्साहस कर बैठा, "देख रही हैं? लगता है पेड़ दौड़ रहे हैं, और हम खड़े हैं?"

"हमेशा ऐसा ही लगता है," उस ने कहा.

खिड़की से घुमा कर मैं ने चेहरा लड़की की तरफ़ कर लिया. कुछ देर हम दोनों के बीच चुप्पी छाई रही. "आप के चेहरे में बड़ी कशिश है," मैं बोला. मेरी हिम्मत बढ़ती जा रही थी. लेकिन यह फ़िक़रा काफ़ी महफ़ूज़ था. कुछ ही लड़कियों पर ख़ुशामद का असर नहीं होता.

वह बड़ी प्रीतिकर, निर्मल और खनखनाती हंसी हंस पड़ी. "ऐसा सुन कर अच्छा लगा. लोगों से यह सुनते सुनते मैं ऊब गई हूं कि मेरा चेहरा बड़ा ख़ूबसूरत है."

'ओह! तो इस का चेहरा सचमुच ख़ूबसूरत है!' मैं ने कहा, "कशिश भरा चेहरा ख़ूबसूरत भी तो हो सकता है."

"बड़े रसिक हैं आप," वह बोली. "लेकिन इतने गंभीर क्यों हैं?"

"सहारनपुर आने ही वाला है," मैं अकस्मात कह गया.

"शुक्र है, सफ़र छोटा ही था. मैं ट्रेन में ज़्यादा नहीं बैठ सकती."

लेकिन मैं अनंत तक बैठा रह सकता था, उसे बातें करते सुनता रह सकता था. उस की आवाज़ में पहाड़ी झरने जैसा संगीत था. गाड़ी छोड़ते ही वह इस छोटी सी मुलाक़ात को भूल जाएगी; लेकिन मैं सारे सफ़र के दौरान, और उस के बाद भी काफ़ी देर तक इस की याद में उलझा रहूंगा.

इंजन चीख़ा. डब्बा के पहियों की ताल और लय बदल गई. लड़की अपना सामान समेटने को उठी. मैं तय नहीं कर पा रहा था कि उस के बाल जूड़े में गुंथे हैं, कंधों पर झूल रहे हैं, या बहुत छोटे कटे हैं.

ट्रेन धीरे धीरे स्टेशन में दाख़िल हुई. प्लेटफ़ार्म पर कुलियों और फेरी वालों की चीख़ पुकार थी. डब्बे के दरवाज़े पर एक भारी, ज़नाना आवाज़ सुनाई दी तो मैं ने समझा लड़की की मौसी होगी.

"जाती हूं," लड़की बोली.

वह मेरे बेहद क़रीब थी. इतने क़रीब कि उस के बालों की गंध मुझे उत्तेजित करने लगी. मैं ने हाथ बढ़ा कर उस के बाल छूने चाहे. लेकिन वह आगे बढ़ गई. जहां वह खड़ी थी, वहां से अभी तक सुगंध फूट रही थी.

डब्बे के दरवाज़े पर कुछ गड़बड़ हो गई. सवार होने वाला एक आदमी हकलाता हुआ माफ़ी मांग रहा था. इस के बाद दरवाज़ा बंद हो गया और दुनिया भी सिमट गई. मैं अपनी बर्थ पर लौट आया. गार्ड ने सीटी बजाई. ट्रेन चल दी.

इंजन ने रफ़्तार पकड़ी. पहियों की आवाज़

संगीतमय हो गई. डब्बा डोलने और चरमराने लगा. टटोल कर मैं खिड़की के सामने बैठ गया और अपनी अंधकारमयी आंखों से दिन की रोशनी में घूरने लगा. अब मुझे एक बार और अपना खेल खेलना था; एक और मुसाफ़िर मेरे हाथ लगा था.

पर बातचीत शुरू करने के इरादे से उसी ने कहा, "कितनी ख़ूबसूरत लड़की थी!"

"बड़ी दिलचस्प लड़की थी," मैं बोला. "बता सकते हैं, उस के बाल लंबे थे या छोटे?"

"कह नहीं सकता," उस ने कुछ परेशानी से कहा. "मैं ने उस की आंखें ही ग़ौर से देखी थीं, बाल नहीं. वे आंखें बला की ख़ूबसूरत थीं; लेकिन उस के लिए बेकार थीं. आप ने ग़ौर नहीं किया? वह एकदम अंधी थी!"

नुक्ते

कुंआरों की मधुशाला के लिए: आप यदि बड़ी मछली मारना चाहते हैं तो छोटी मछलियों के पीपे में बंसी न डालें.

—ए. एल

किसी धुंधले, उदास दिन के लक्षण देख: आप सब से पहले तो यह समझ लीजिए कि धुंधलका दिन पर घिरा है, आप पर नहीं. हां, आप भी उसके दायरे में आना चाहते हैं, तो बख़ूबी आ सकते हैं, पर यह कोई बंदिश नहीं.

—'सिंपल प्लेज़र्स: वंडरफुल एंड वाइल्ड थिंग्स टू डू एट होम'
(एडिसन—वेज़ली)

इनसान की सब से पुरानी ज़रूरत यह है कि आप रात रात भर घर न लौटें, तो कोई आप को ले कर हैरान हो रहा हो कि आप कहां रहे.

—मारग्रेट मीड

हर चीज़ को सही परिप्रेक्ष्य में लें. आज हम कई घटनाओं को लेकर चिंतित होते रहते हैं, पर अब से पचास साल बाद इन्हीं घटनाओं को सुन कर इतिहास की कक्षा में विद्यार्थी जम्हाई लेंगे.

—'आरबंज़ करंट कामेडी'

चाह गई चिंता मिटी

१८८६ में पैदा अमरीकी प्यानोवादक आरटुर रुबिनस्टाइन को जब यह बताया गया कि वह आजकल बहुत बढ़िया बजा रहे है, तो बोले:

"मेरा भी यही ख़याल है. मैं इस समय अस्सी बरस का हूं. अतः मैं वह सब करने की स्थिति में हूं जो पहले नहीं कर पाया. अब ऐसा करने में जोखिम भी नहीं—मैं अब कोई भी जोखिम उठा सकता हूं. पहले मुझे बहुत सतर्क रहना पड़ता था कि कहीं ग़लती से कोई ग़लत सुर न लग जाए. कुछ नया नहीं कर सकते थे, सुर धीमा रखना पड़ता था. पर अब मुझे कोई परवाह नहीं. मैं केवल अपने आनंद और संगीत की चिंता भर करता हूं—मेरी बला से, बाक़ी सब चूल्हे भाड़ में जाएं."

—मौर्टन पूनर
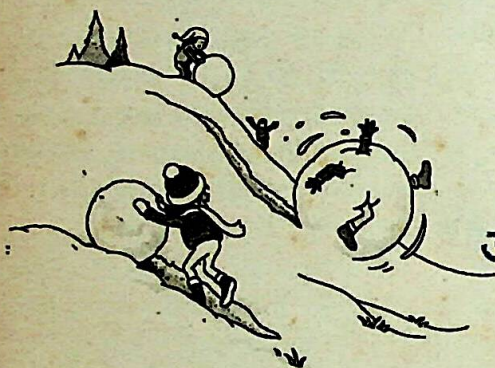
जीवन की यह रीत

कुछ वर्ष पहले मेरे मित्र ने किसी अजाने से क़सबे के लिए रेल से कुछ माल रवाना किया और इंतज़ार करता रहा कि प्राप्ति की सूचना प्राप्त होगी. स्थानीय माल बुकिंग एजेंट जान स्मिथ को उस ने एक पर एक पत्र लिखा, पर कोई जवाब नहीं. अंततः उस ने तंग आकर लिख माराः मुझे इस पत्र का भी उत्तर नहीं मिला, तो मैं तुम्हारे अफ़सर से शिकायत कर दूंगा.

तत्काल उत्तर मिला. लेटरहैड के ऊपर छपा था: 'जान स्मिथ रेलवे एजेंट/स्मिथ लांडरी वाले/स्मिथ कपड़े वाले/जान स्मिथ फ़ोर्ड विक्रेता.' और इन के नीचे लिखा था:

"श्रीमान,

मेरे कोई अफ़सर वफ़सर नहीं है और बराबर वाले भी नाम को ही हैं..."

—डब्लू बेथेक, इंडियाना

डाक्टर साहब और उन की धर्मपत्नी ने मित्रों को ज़रा भारी ही नाश्ते पर बुलाया. सारी तैयारी हो चुकी थी, मेहमान आ चुके थे कि मदिरा ढालने के लिए किराए पर आने वाले व्यक्ति का फ़ोन आया: तबीयत ख़राब है, नहीं आ सकूंगा. इस पर एक मेहमान ने अपने किशोर पुत्र की सेवाएं अर्पित कीं. अब चूंकि मात्र ब्लडी मैरी याने वोदका और टमाटर का जूस ही ढाला जाना था सो यह व्यवस्था सब को उचित भी लगी.

मेहमानों के आने के कुछ ही देर बाद डाक्टर साहब का इमरजेंसी बुलावा आ गया. दो घंटे बाद वह वापस आए तो पार्टी में आए सभी मेहमानों को 'नहीं भई, अब और नहीं. मैं तो अपना कोटा पूरा कर चुका' ही रटते सुना. फिर सब तरंग में भी थे.

इस पर उन्हों ने जाम ढाल रहे अपने मित्र के बेटे से पूछा, "क्यों भई, वोदका का क्या हाल है?" लड़के ने वोदका की बोतलों की ओर इशारा किया तो दोनों जस की तस धरी थीं. और अब वह नामुराद बोला, "अंकल, वोदका तो किसी ने मांगी ही नहीं. सब जूस पर जूस ढाले जा रहे हैं!"

—एस एस एस

बस यात्रा में मेरी बग़ल में बैठे सज्जन मेक्सिको के वासी थे, जो बड़े मोहक स्पेनिश लहज़े में थोड़ी बहुत अंगरेजी भी बोल लेते थे. राह में उन्हों ने मुझ से पूछा कि उन के सिगरेट पीने पर मुझे कोई आपत्ति तो नहीं होगी. पर मेरे ना करने पर उन्हों ने सिर हिलाया और बोले कि मैं सिगरेट नहीं पिऊंगी तो वह भी नहीं पिएंगे.

समय गुज़रता गया और वह आम सिगरेट पीने वालों की तरह उस की तलब से बैचेन होने लगे. आख़िरकार उन्हों ने डब्बी खोल कर सिगरेट निकाल ही ली. अब उन्हों ने सिगरेट सुलगाई और

मेरी तरफ़ मुख़ातिब हो कर बोले, "क्षमा कीजिए, सेन्योरा! आप से मुलाक़ात हुए अभी घंटा भर नहीं हुआ और मैं ने वादे भी तोड़ने शुरू कर दिए."

—एलीन एम रोज़, कैलिफ़ोर्निया

बाली द्वीप के देनपासार नगर स्थित परेड मैदान में किसी राष्ट्रीय दिवस पर समारोह के लिए ज़रूरी सैनिक तैयारियां हो रहीं थीं और हम थे उन के चमत्कृत दर्शक. सैनिकों को मैदान के चारों ओर तैनात किया जा रहा था और बैंड भी मुस्तैद खड़ा था. तभी बैंडमास्टर ने गत शुरू करने का संकेत दिया और बैंड ने मोहक प्रयाण धुन छेड़ दी. मैं चकित खड़ा था कि धुन प्रख्यात अमरीकी बैंडमास्टर जान फ़िलिप सूज़ा (१८५४-१९३२) की थी यानी द स्टार्स एंड स्ट्राइप्स फ़रेवर!

"ओ, तो आप को अमरीकी संगीत पर हैरानी हो रही है न ?" पास खड़े सैनिक अफ़सर ने पूछा. फिर वह पुनः चहका, हाथों और कंधों को हिलाते और मुसकराते हुए बोला, "बात ऐसी है कि बाली के परंपरागत संगीत पर नाचा तो जा सकता है. परेड नहीं की जा सकती."

—इ पी

कभी मैं हर विघ्न बाधा को ले कर अपने पापा के पास दौड़ा जाता, चाहे वह संकट टांग टूटने से संबंधित हो या दिल. बरसों बाद एक पर एक पड़ी विपदाओं से घबरा कर बेसहारा महसूस करते हुए मैं ने अपनी शेष जमा पूंजी निकाली और सीधा घर लौट आया.

वापसी की पूर्व संध्या पर हम घाट की ओर निकल गए और वहां खड़े डूबते सूरज को एकटक देख रहे थे कि मैं अपने मन की कड़वाहट पर और क़ाबू नहीं कर पाया

"पापा, हम अपने जीवन के सारे महत्वपूर्ण क्षणों को जोड़ दें, तो वे खींचतान कर मुश्किल से २० मिनट निकलेंगे."

उन्हों ने इस पर ज़रा सी हुंकारी भर भरी.

मैं ठिठका, उन की ओर मुख़ातिब हुआ. वह अब भी क्षितिज पर डूबते सूरज को देखे जा रहे थे. फिर मेरी आंखों में आंखें डाल कर बोले, "और क्या, और कितनी मुबारक हैं जिंदगी की ये चंद घड़ियां!"

—एस सी

अपने स्वीडन प्रवास के दौरान एक वयोवृद्ध महिला सफ़ाई कर्मचारी से मेरी जान पहचान हो गई. उन से जब भी आमने सामने होता उन्हीं की भाषा में नमस्कार करता. फिर यही वह एकमात्र शब्द था जिस से स्वीडिश भाषा ज्ञान के नाम पर मैं सुपरिचित था.

उस सुबह वह बहुत क्रुद्ध थीं और उन्हों ने मुझे देखते ही घेर लिया. फिर क्या था, लगीं हाथ हिला हिला कर स्वीडिश में जाने क्या क्या बोलने. ज़रा शांत हुईं तो मैं ने उन्हें बता दिया कि उन का बोला एक भी शब्द मेरे पल्ले नहीं पड़ा. इस पर वह टूटी फूटी जरमन यानी मेरी मातृभाषा में बोलीं, "ठीक है, अच्छा ही हुआ. बात ये थी कि मामला पारिवारिक है और मैं ने तय कर रखा था कि इस बारे में किसी को कुछ भी नहीं कहूं सुनूंगी. ख़ैर, जो हुआ अच्छा ही हुआ, इस तरह मेरे मन की भड़ास तो निकल ही गई!"

—सी एच

मोटर साइकिल पर सिडनी से पर्थ जाते हुए हम दोनों मित्र ग्रेट आस्ट्रेलियन बाइट की यूक्ला स्थित चौकी पर रुके. वहां से निकटतम क़सबा पश्चिम में ८०० किलोमीटर की दूरी पर है और इस के पूरब की ओर नलारबर प्लेन व ५०० किलोमीटर लंबी कच्ची सड़क पसरी है. ख़ैर, हम ने शाम वहीं के शराबघर में खदान मज़दूरों, ट्रक ड्राइवरों और सैलानियों के साथ बिताई. आख़िर में यानी आधी रात निकल चुकने के काफ़ी देर बाद, आवाज़ पड़ी, "सब लोग चटपट बाहर हो जाएं, दुकान उठानी है."

"अगर हम न जाएं, तो ?" एक नौजवान ने पूछा.

इस पर एक जोड़ा सख़्त निगाहों ने उसे घूरा और फिर सुन पड़ा : "तब तो हमें पुलिस को ख़बर करनी होगी. एक दो दिन में पुलिस यहां पहुंच ही जाएगी."

—एन लूकास, सिडनी
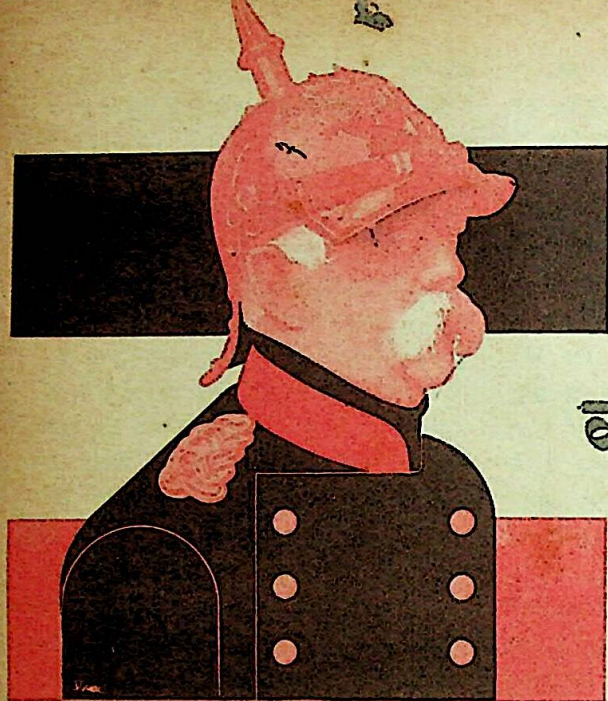
आधुनिक जरमनी का निर्माता बिस्मार्क

फ्रांसिस लियरी

ऊपर से कठोर, भीतर से संवेदनशील, सामाजिक भविष्यद्रष्टा, जो सैनिक अधिकारियों की सलाह पर कभी भरोसा नहीं करता था

उस के जीवन काल में यदि उन राजनीतिज्ञों की सूची बनाई जाती जिन्हें सब से अधिक घृणा की दृष्टि से देखा जाता है तो उस का नाम सब से पहला होता. एक बार जब आस्ट्रिया-हंगरी के विदेश मंत्री को यह पता चला कि इस व्यक्ति का एक षड्यंत्र असफल हो गया है तो उस ने ख़ुश हो कर अपने कार्यालय की मेज़ पर तीन बार कलाबाज़ी लगाई. प्रशिया की युवराज्ञी ने अपनी माता इंगलैंड की महारानी विक्टोरिया को लिखा था, "ऐसा एक दिन नहीं गुज़रता जब यह बदमाश अपना उल्लू सीधा करने के लिए हर बात को तोड़ मरोड़ कर लड़ाई की बात न करता हो."

इस घोर विरोध का पात्र था ओटो वान बिस्मार्क. उस ने लगभग ३० वर्ष तक प्रशिया और फिर जरमन साम्राज्य के शासन सूत्र का संचालन किया. लंबे चौड़े डील डौल वाले बिस्मार्क का क़द छः फुट (१.८० मीटर) से भी अधिक था. मूंछों वाले चेहरे पर धनी भौंहों के नीचे से उस की हलकी नीली आंखें अपने आलोचकों को उपेक्षा से देखती रहती थीं और वह हलकी टेनोर आवाज़ में अपने विरोधियों की निंदा करता रहता था. बिस्मार्क का नाम लेते ही नोकीला शिरस्त्राण पहने कठोर प्रशिया वासी की छवि आंखों के सामने तैर जाती है. समस्याओं के प्रति उस का

रवैया उस के इस प्रसिद्ध वाक्य से ही स्पष्ट हो जाता है, "आज की महान समस्याएं भाषण देने से या संसद के बहुमत से नहीं बल्कि खून और हथियारों से सुलझाइ जाएंगी."

बिस्मार्क की यह छवि यद्यपि ग़लत नहीं है किंतु अपूर्ण अवश्य है. बिस्मार्क का व्यक्तित्व अत्यंत जटिल और विरोधी बातों से परिपूर्ण था. उस ने यूरोप की अत्यधिक समर्थ सेना बनाई किंतु वह सैनिक सलाह के प्रति बहुत सावधान और सशंक रहता था. उस ने आस्ट्रिया को और बाद में फ्रांस को लड़ाई के मैदान में उतरने के लिए मजबूर किया. किंतु उस ने ऐसा तभी किया जब उसे विश्वास हो गया कि वे दोनों देश जरमनी को विभक्त और कमज़ोर बनाए रखना चाहते हैं. बिस्मार्क प्रशिया को अपनी सच्ची पितृभूमि मानता था लेकिन इस के बावजूद उस ने एक दूसरे से ईर्ष्या करने वाली ऐसी ३९ जरमन रियासतों को मिला कर एक राष्ट्र के रूप में संगठित किया जिन के बीच कोई समानता नहीं थी.

बिस्मार्क अपने देश में राजनीतिक दृष्टि से कोई भी उपयोगी काम करने से नहीं चूकता था. यदि अपने किसी कार्यक्रम को आगे बढ़ाने में उसे किसी विरोधी की सामयिक सहायता की आवश्यकता होती तो वह उस से भी समझौता करने के लिए सदा तैयार रहता. यह अनुदार राजनीतिज्ञ इतना व्यवहारकुशल था कि जब वह सत्ता के चरम शिखर पर था, तब उस के मित्रों में प्रमुख समाजवादी भी शामिल थे. उस ने उन के विचारों को भी जब तब अपनाया. उस ने कई समाजवादियों को उस अख़बार में भी लगा लिया था जो उस के पैसे से निकलता था. (एक बार तो उस ने कार्ल मार्क्स से भी आग्रह किया था कि वे इस समाचार पत्र में आ जाएं!) उस ने ऐसे कई सामाजिक क़ानून भी बनाए जो ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण थे और यूरोप में कहीं भी नहीं बनाए गए थे.

किंतु यह भी एक विडंबना ही है कि जिस व्यक्ति को फ़ौलादी चांसलर कहा जाता था, वह बेहद जज़्बाती था. कहते हैं कि एक बार प्रशिया के राजा के साथ मतभेद होने पर वह अपने अध्ययन कक्ष में आकर फूट फूट कर रो पड़ा था. उसे शेक्सपियर और बायरन की रचनाएं बहुत पसंद थीं और बत्तख़ के शिकार के दौरान वह कविताएं पढ़ा करता था.

वह डट कर खाता पीता था. वह एक बार में १५० आयस्टर (घोंघे) खा सकता था. उस ने एक बार कहा भी था कि मैं अपने जीवन में शैंपेन की ५,००० बोतलें पीना चाहता हूं. शाम के समय वह प्रायः काला सिगार और 'ब्लैक वैलवेट' नामक बहुत मादक पेय पीता था जिस में शैंपेन और स्टाउट का मिश्रण होता था. शराब का यह मिश्रण उस ने स्वयं ईजाद किया था.

भाषा और राजनीति पर उस का पूरा अधिकार था. उस की गद्य शैली की आज भी सराहना की जाती है. एक बार उस ने अपने कार्यालय में चक्कर लगाते लगातार पांच घंटे तक आदेश लिखवाए थे. बाद में उस के सचिव ने कहा था, "मैं उन की शुद्ध वाक्य रचना देख कर हैरान था."

बिस्मार्क का जन्म १८१५ में एक समृद्ध ज़मींदार परिवार में हुआ था. यह परिवार प्रशिया के ब्रैंडनबर्ग में रहता था. एक बार युवक बिस्मार्क ने अपने एक मित्र को लिखा था, "या तो मैं प्रशिया का सब से बड़ा बदमाश बनूंगा या चांसलर." कुछ समय तक लगता था जैसे वह सब से बड़ा बदमाश बनेगा.

गटिंगन विश्वविद्यालय में उसे सनकी और अनुशासनहीन समझा जाता था. उस के सुनहरे बाल कंधों तक लहराते रहते थे. वह 'केप' (बिना आस्तीनों वाला भारी लबादा) और लोहे की नाल लगे जूते पहन कर और हाथ में लोहे का डंडा लिए घूमता रहता था. उस के पीछे पीछे कई शिकारी कुत्ते भी चलते थे. वह बड़ा अभिमानी और द्वंद्व युद्ध का शौक़ीन था. वह छात्रों के द्वंद्व युद्ध संघ में शामिल हो गया और २५ में से २४ द्वंद्व युद्धों में विजयी रहा.

कुछ समय तक सरकारी नौकरी करने के बाद बिंस्मार्क ने लगभग दस वर्ष तक पोमेरानिया और ब्रैंडनबर्ग में अपने परिवार की जायदाद की व्यवस्था करने में बिताए. उन दिनों वह अपना समय कुत्तों, घोड़ों, ताल्लुक़ेदारों के साथ तथा पुस्तकें पढ़ने में बिताया करता था. बाद में उस ने बताया, "मेरे सामान्य ज्ञान का मुख्य आधार यही है कि जब मेरे पास कुछ करने को नहीं था तो मुझे अपनी ज़मींदारी में ऐसा पुस्तकालय मिल गया जिस में सभी तरह की व्यावहारिक और सैद्धांतिक जानकारी से संबद्ध पुस्तकें थीं. मैं ने वे सारी पुस्तकें पढ़ डालीं." १८४७ में उस ने योहाना वान पुटकामर नामक एक दुबली पतली, काले बालों वाली लड़की से विवाह किया और शेनहाऊज़न के पारिवारिक मकान में रहने लगा.

किंतु एक साल के ही अंदर वह कट्टर व्यवस्था चरमराने लगी जो नेपोलियन के पतन के बाद से यूरोप पर हावी थी. ऐसी परिस्थिति में ज़रमनी के उदार लोकतंत्रवादियों का संयुक्त जरमनी का नारा जनता को एक सूत्र में बांधने लगा. किंतु बिस्मार्क इन लोगों के अधिकांश राजनीतिक विचारों से घृणा करता था. उन के प्रभाव को घटाने के लिए उस ने संसद का चुनाव लड़ा और चुन लिया गया.

१८५१ में बिस्मार्क को अपने जीवन में पहला महत्वपूर्ण पद प्राप्त हुआ और वह था फ्रैंकफर्ट में प्रशिया का राजदूत. उन दिनों फ्रैंकफ़र्ट जरमन महासंघ की राजधानी थी. जरमन राज्यों का यह संगठन आस्ट्रिया के आधिपत्य का ही दूसरा स्वरूप था. इस लिए शुरू से ही बिस्मार्क ने ऐसे हर अवसर का लाभ उठाया जिस से प्रशिया को आस्ट्रिया के समान माना जाए. संघ की बैठकों में अध्यक्ष के नाते आस्ट्रिया के राजदूत को ही सिगार पीने का विशेषाधिकार था. जब उस ने सिगार निकाला तो बिस्मार्क ने भी अपना सिगार सुलगा लिया. बर्लिन की लोकसभा में जब एक उदार दल के सदस्य ने बिस्मार्क की 'सिगार सुलगाने' की नीति की निंदा की तो बिस्मार्क ने अपने स्वभाव के अनुरूप उस सदस्य को द्वंद्व युद्ध की चुनौती दे डाली. द्वंद्व युद्ध में दोनों ने एक दूसरे पर एक एक गोली चलाई, पर दोनों का ही निशाना चूक गया.

राजनयिक के नाते बिस्मार्क को १८५९ में तीन साल के लिए सेंट पीटर्सबर्ग भेजा गया और उस के बाद पेरिस. किंतु वह सत्ता के केंद्र से दूर ही रहा. अंततोगत्वा १८६२ में वह अवसर आ ही गया. प्रशिया के नए राजा विलियम प्रथम सैन्य सेवा में सुधार करना चाहते थे. इस बात को ले कर राजा और लोकसभा के बीच कटु विवाद उठ खड़ा हुआ. राजा जानता था कि बिस्मार्क बड़ा चालाक और कठोर राजनीतिज्ञ है. इस लिए उस ने उसे प्रधान मंत्री बना लिया. बिस्मार्क ने इस राजनीतिक गतिरोध में बड़ी चतुराई की भूमिका निभाई और धीरे धीरे जरमन महासंघ से आस्ट्रिया को निकाल बाहर करने पर अपना ध्यान केंद्रित किया.

आस्ट्रिया की भड़काने वाली कारवाइयों के

बारे में विस्मार्क राजा को नियमपूर्वक रिपोर्ट देता रहता था. इस बीच उस ने जनता को भी अपने पक्ष में लेने के प्रयत्न शुरू कर दिए. वह बर्लिन के अख़बारों में ऐसे लेख छपवाने लगा जिन में आस्ट्रिया की कटु आलोचना होती थी. परिणाम स्वरूप जून १८६६ में आस्ट्रिया ने ताव में आकर प्रशिया को सीधी चुनौती दे डाली.

युद्ध शुरू होने के सात सप्ताह बाद ही आस्ट्रिया हार गया. एक प्रेक्षक ने साडोवा के भयानक रणक्षेत्र में बिस्मार्क की उपस्थिति का वर्णन किया है. यूरोपीय इतिहास का एक सब से बड़ा युद्ध इस रणस्थली में लड़ा गया था. यहां ४,५०,००० सैनिकों की भयंकर मुठभेड़ हुई थी. "इस युद्धभूमि में ऊंचे बादामी रंग के घोड़े पर सवार, भूरे लबादे और लोहे के शिरस्त्राण के नीचे से चमकती बड़ी बड़ी आंखों वाला बिस्मार्क मुझे बचपन में सुनी कहानियों के उन दानवों की याद दिला रहा था जो उत्तर के बर्फ़ीले इलाक़ों से आया करते थे."

बिस्मार्क ने अपनी राजनीतिक विजय का लाभ उठा कर मेन नदी के उत्तर के सभी राज्यों को मिला कर उत्तर जरमन महासंघ बना दिया. इस महासंघ के प्रशासनिक अधिकार संघ के चांसलर बिस्मार्क को सौंप दिए गए.

शक्तिशाली संयुक्त जरमन राज्य के अभ्युदय से यूरोप का शक्ति संतुलन बिगड़ रहा था. यह भी स्पष्ट था कि फ्रांस का सम्राट नेपोलियन तृतीय इस स्थिति को बहुत देर तक सहन नहीं कर सकता था. किंतु बिस्मार्क चाहता था कि यदि फ्रांस से युद्ध हो तो फ्रांस आक्रमणकारी दिखाई दे. स्पेन का सिंहासन ख़ाली होने के दो वर्ष बाद १८७० में ऐसा अवसर आया. बिस्मार्क ने राजा विलियम के दूर के रिश्ते के भाई होएनत्सोलर्न को स्पेन की गद्दी पर बिठाने का गुप्त रूप से समर्थन करना शुरू कर दिया. फ्रांसीसियों को इस संभावना ने परेशान कर दिया कि उस की दोनों सीमाओं पर होएनत्सोलर्न वंश के राजाओं का शासन हो जाएगा. राजा विलियम उन दिनों प्रशिया स्थित एम्ज़ स्वास्थ्य स्थल में छुट्टियां बिता रहा था. फ्रांसीसी राजदूत ने विलियम पर दबाव डाला कि वे अपने भाई को स्पेन का राजा बनाने का समर्थन न करें. राजा विलियम ने यह बात मान ली. किंतु फ्रांसीसी राजदूत ने जब यह आग्रह किया कि विलियम सार्वजनिक तौर पर घोषणा करें कि होएनत्सोलर्न को स्पेन का राजा बनाने का प्रस्ताव फिर कभी नहीं किया जाएगा, तब विलियम ने इस बारे में और कोई बातचीत करने से इनकार कर दिया.

बिस्मार्क को इस भेंट के बारे में एम्ज़ स्थित अपने सहायक से जो रिपोर्ट मिली, उस में कोई विशेष बात नहीं थी. बिस्मार्क जानता था कि किस शब्द का कैसा प्रभाव पड़ता है. उस में चतुर राजनीतिज्ञ की सहज सूझबूझ भी थी. इस लिए उस ने एम्ज़ से मिले संदेश को काट छांट कर आधा कर दिया और फ्रांसीसियों की अंतिम मांग तथा विलियम के इनकार को इस तरह प्रस्तुत किया मानो दोनों देशों के बीच समझौते की कोई आशा न रह गई हो. इस के बाद उस ने अपने प्रसिद्ध 'एम्ज़ संदेश' को यूरोप भर में प्रकाशित करा दिया. ऐसी स्थिति में नेपोलियन को न चाहते हुए भी युद्ध के मैदान में उतरना पड़ा.

युद्ध शुरू होते ही फ्रांसीसी हारने लगे. उन का सैन्य संचालन बहुत अव्यवस्थित था. उन की तोपों को लगातार मात मिलती रही. फ्रांसीसी सेनापति भी अयोग्य थे. फ्रांसीसी

लगभग २,५०,००० सैनिक एकत्र कर सके. जब कि उन के मुक़ाबले ५,००,००० जरमन सैनिकों की फ़ौज खड़ी थी. युद्ध छः सप्ताह में समाप्त हो गया. नेपोलियन तृतीय ने स्वयं बिस्मार्क के सामने सेदां में आत्म समर्पण किया.

जैसी कि बिस्मार्क को आशा थी, इस युद्ध में विजय के कारण दक्षिण जरमनी के राज्य भी, जो उस समय तक महासंघ से अलग थे, जरमन महासंघ में शामिल हो गए. १८ जनवरी १८७१ को वरसाई के संगमरमर के शीशमहल में सजे धजे राजकुमार, ड्यूक और उच्च अधिकारी एकत्र हुए. उस अवसर पर बनाए गए एक चित्र में दिखाया गया है कि गहरी नीली प्रशियन वर्दी पहने विलियम बिस्मार्क के सामने खड़े हैं और चांसलर बिस्मार्क कवच-धारी घुड़सवार की सफ़ेद वर्दी में जरमन साम्राज्य की स्थापना का घोषणा पत्र पढ़ रहे हैं. विलियम सम्राट तो बन गया, किंतु संसार जानता था कि इस साम्राज्य को बनाने वाला बिस्मार्क ही है.

बिस्मार्क ने फ्रांस के दो प्रांतों अल्सास और लोरेन को भी जरमनी में मिला लिया. उस ने जरमनी को सुरक्षित आधुनिक देश बनाने का दृढ़ निश्चय कर रखा था. बिस्मार्क ने अनेक संधियां और समझौते किए जिन के कारण यूरोप के प्रायः प्रत्येक देश की राजधानी का बर्लिन के साथ संबंध स्थापित हो गया. देश के आंतरिक मामलों में बिस्मार्क ने अपना कट्टरपंथी रवैया छोड़ कर बड़े साहस के साथ नए क़दम उठाए. उस ने स्कूलों को चर्च के नियंत्रण से मुक्त कर राज्य की देखरेख में दे दिया. उस ने सरकारी पदों पर काम करने वाले यहूदियों पर लगी सभी प्रकार की पाबंदियां ख़त्म कर दीं. १८७६ में उस ने जरमनी में जन्म, मृत्यु, विवाह और तलाक़ की रजिस्ट्री अनिवार्य कर दी. सुधार के कार्यक्रम के अधीन उस ने तीन महत्वपूर्ण क़ानून बनाए —१८८३ में स्वास्थ्य बीमा और बीमारी लाभ क़ानून; १८८४ में कर्मचारी दुर्घटना बीमा क़ानून; और १८८८ में वृद्धावस्था और असमर्थता पेंशन क़ानून. ब्रिटेन के इतिहास लेखक ए जे पी टेलर ने लिखा है, "इन क़ानूनों के कारण जरमनी सभ्य देशों के लिए आदर्श बन गया."

काम से थक जाने पर बिस्मार्क अपनी लंबी चौड़ी जागीरों में से किसी एक में चला जाता और अपने एक दो प्यारे शिकारी कुत्तों के साथ जंगलों में घूमता. एक दिन उस ने एक वनपाल को एक सूखा पेड़ काटते पकड़ लिया. बिस्मार्क ने चौड़ी किनारी वाला काला टोप उतारा और अपना गंजा सिर दिखाते हुए कहा : "मेरे बाल भी झड़ गए हैं. क्या तुम मुझे मार डालोगे?" वनपाल ने तो नहीं, लेकिन ढीठ नौजवान विलियम द्वितीय ने बिस्मार्क को ज़रूर काट गिराया. १८९० में उस ने बूढ़े चांसलर को उस के पद से हटा कर घर भेज दिया. चांसलर के सुरागार में रखी शराब की १३,००० बोतलें भी उस ने उस के साथ ही भेज दीं.

आज यूरोप का जो वर्तमान राजनीतिक स्वरूप है, उस के निर्माण का श्रेय सब से अधिक बिस्मार्क को ही जाता है. आज यूरोप में शक्तिशाली जरमन राष्ट्र का महत्वपूर्ण स्थान है. बिस्मार्क ने शक्तिशाली साम्राज्य तो बनाया, उस ने अपने पीछे उस महान साम्राज्य का संचालन करने वाला कोइ योग्य उत्तराधिकारी नहीं छोड़ा. १९वीं शताब्दी की समाप्ति पर जब यूरोप प्रथम विश्व युद्ध की विभी-

षिका की ओर अग्रसर होने लगा, तब बिस्मार्क ने भविष्य में होने वाली घटनाओं को बड़े स्पष्ट रूप में पहचान लिया था. उस ने अपने उत्तराधिकारियों की अविवेकपूर्ण राजनीति पर अख़बारों में बड़े कठोर लेख लिखे.

३० जुलाई १८९८ की गरम शाम को बिस्मार्क अपने शयन कक्ष में आख़िरी घड़ियां गिन रहा था. उस के संबंधी चारों ओर खड़े थे. अचानक वह वृद्ध पुरुष उठ बैठा. उस ने एक गिलास शराब पी. आख़िरी सांस लेने तक वह टूटा नहीं था. उस के अंतिम शब्द थे: "आगे बढ़ो!"

पुलाव

आदरणीय हुए बिना आदर नहीं मिल सकता क्या?
—एशले ब्रिलिएंट

कितना अच्छा होता जो सुबह बिस्तर छोड़ने के अलावा दिन शुरू करने का कोई और ढंग भी होता.
—अर्ल विलसन, 'फ़ील्ड न्यूज़पेपर सिंडीकेट

हो सकता है कि विज्ञान कभी यह भी समझा सके कि बच्चे बरसात में जमा होने वाले पनीले दायरों के गिर्द चक्कर क्यों नहीं काटा करते.
—'बुलेटिन', पैंसलवानिया

लोग कहते हैं कि अमीर और दुःखी होने से बेहतर ग़रीब और ख़ुशहाल होना है. पर कुछ ऐसा नहीं किया जा सकता क्या कि आदमी गुज़ारे लायक़ अमीर रहे और थोड़ा बहुत मनमौजी.
—'गज़ेट', कैंज़ास

मेरे लिए मृत्यु से पूर्व ख्याति मिलना ऐसा ही होगा मानो किसी लंबी चौड़ी वर्ग पहेली में १४ ख़ाने नीचे या फिर ३६ ख़ाने दाहिने से बाईं तरफ़ और बढ़ जाना.
—बाब टालबर्ट, 'फ़्री प्रेस', डेट्रायट

मददगार

म्यूनिक में किसी से मिलने जा रहा था मैं. आधे रास्ते में मुझे टैक्सी में याद आया कि चश्मा होटल में ही छूट गया है और मेज़बान के पते वाली डायरी भी. सड़क का नाम तो याद आ गया, लेकिन मकान का नंबर नहीं. बस, मैं ने टेलीफ़ोन बूथ के पास टैक्सी रुकवाई, शायद टेलीफ़ोन डायरेक्टरी में मकान का नंबर मिल जाए.

चश्मा न होने से मुझे डायरेक्टरी आंखों से दूर, काफ़ी फ़ासले पर रखनी पड़ रही थी. सहसा किसी ने कांच के दरवाज़े पर खटखट की. देखा, तो टैक्सी ड्राइवर बड़े ही सौजन्य से मुसकराता खड़ा है. आंखें मिलते ही उस ने पूछा, "सर! क्या मैं कुछ मदद करूं? लगता है, आप की बांहें कुछ छोटी पड़ रही हैं!"
—डब्ल्यू सी एस

खेल क्या है—६४ ख़ानों की बिसात पर सोलह सोलह मोहरों की दो फ़ौजों के बीच जंग! नियम इतने आसान कि बच्चा भी ज़रा सी देर में सीख जाए. लेकिन जब होड़ होती है विश्व विजेता बनने की तो यही खेल व्यक्तिगत और राष्ट्रीय प्रतिष्ठा के लिए ज़बरदस्त संघर्ष का कारण भी बन जाता है

रूडोल्फ़ कैलमीन्येस्की

शतरंज के मैदान में

मई १९८१ में एक सरकारी सोवियत शिष्ट- मंडल उत्तरी इटली के क़सबे मेरानो पहुंचा और सितंबर, अक्तूबर, नवंबर के लिए एक अलग थलग बंगले में जा ठहरा. जून में एक वैज्ञानिक रेडियोधर्मिता मापक यंत्र से रीडिंग लेने वहां पहुंचा. उस के सहकर्मियों ने प्रतियोगिता का आयोजन करने वालों के सामने ७० प्रश्नों की एक प्रश्नावली रखी जिस में वहां की औसत वर्षा से लेकर अपराध तक पर प्रश्न थे. फिर सितंबर के अंत में वह भी आ पहुंचा जिस के लिए सारी सावधानी बरती जा रही थी. उस के साथ १५ आदमियों का क़ाफ़िला आया था. साथ
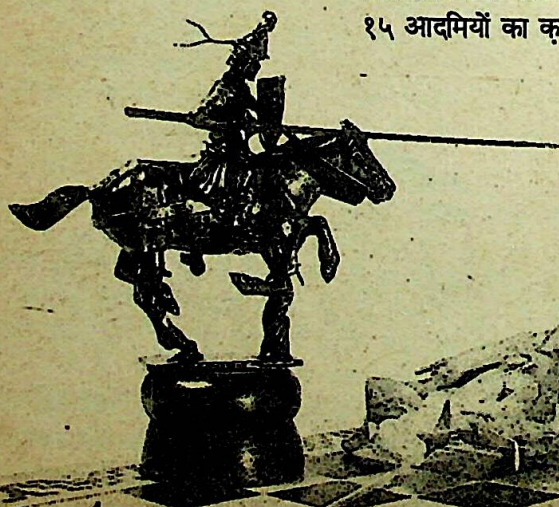
सी भोजन के डब्बे और हज़ारों पुस्तकें थीं. व्यक्ति पर अपने राष्ट्र की प्रतिष्ठा बनाए ने की भारी ज़िम्मेदारी थी.

व्यक्ति था दुबला पतला और काले लों वाला. उस की उम्र थी ३० साल र उस का नाम था अनोतोली व्जेनयेविच कारपोव. वह शतरंज का विश्व जेता था. कारपोव अपने ताज को बचाने नो आया था, क्योंकि अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिता के नियमानुसार चैंपियन को हर तीसरे वर्ष अपने ताज की रक्षा करनी होती है. खेलों के श्रेष्ठ सोवियत टेकनीशियनों के निर्देशन में तैयारी करते हुए उस ने अभ्यास कार्यक्रम का नियमपूर्वक पालन किया, चुनी हुई प्रतियोगिताओं में अपनी चालों में परिष्कार किया और अपने देश के शतरंज के विख्यात खिलाड़ियों साथ खेल कर अपने खेल को मांजा. अब वह दिमाग़ी खेल खेलने के लिए तैयार था.

शुरू से ही सोवियत लोगों ने अपने यहां शतरंज को एक विशेष स्थान दिया है. लेनिन स्वयं शतरंज के एक अच्छे खिलाड़ी थे. उन्हों सोवियत शिक्षा कार्यक्रम में इस खेल को शामिल करने की प्रेरणा दी थी. सोवियत सरकार सब से बड़ा सम्मान और पुरस्कार चोटी के शतरंज के खिलाड़ियों के लिए सुरक्षित रखती है. यही कारण है कि सोवियत शतरंज संघ विश्व भर में सब से बड़ा है. उस ५०,००,००० से अधिक सक्रिय सदस्य हैं. की तुलना में अमरीका में ५०,००० से र सदस्य है. दूसरे विश्व युद्ध के बाद शतरंज के सात विश्व चैंपियन हुए हैं. उन में छः सोवियत थे. इस लिए अगर मेरानो में कारपोव अपना ताज खो बैठता तो वह एक र की राष्ट्रीय दुर्घटना मानी जाती.

कारपोव के लिए जीतना इस लिए भी मुश्किल था क्योंकि उस का प्रतिद्वंद्वी था व्येक्तोर कोर्चनोई. वह उम्र में कारपोव से २० वर्ष बड़ा था. लेनिनग्राद में जनमे और पले बढ़े कोर्चनोई ने १९७६ में उस समय सोवियत संघ में आघात की लहर दौड़ा दी थी जब वह अपना देश छोड़ कर पश्चिम भाग आया था. तब से वह रूस के शतरंज जगत के पहलू में कांटा बन कर चुभ रहा था. वह रूस के अच्छे से अच्छे खिलाड़ियों को शतरंज में हरा रहा था. उस ने उन सोवियत खिलाड़ियों को भी बेनक़ाब किया था जो हारने पर अपने को शौक़िया खिलाड़ी कहने लगते थे. उस ने भंडाफोड़ किया कि वे सब के सब सरकार के पेशेवर खिलाड़ी हैं और उन्हें सरकार से वेतन मिलता है. संक्षेप में, कोर्चनोई ने उन सब का जीना दूभर कर रखा था.

इस से पहले भी दो बार १९७४ और १९७८ में कारपोव और कोर्चनोई का शतरंज की बिसात पर आमना सामना हो चुका था. दोनों बार कारपोव विजयी रहा, लेकिन बहुत थोड़े अंतर से. अब कोर्चनोई फिर विश्व की अन्य प्रतियोगिताओं को जीतता यहां तक पहुंचा था. वे एक बार फिर ८००,००० स्विस डालर की थैली के लिए आमने सामने थे. (५००,००० जीतने वाले को और ३००,००० हारने वाले को.) मेरानो में एकत्रित सैकड़ों पत्रकारों पर जल्द ही यह स्पष्ट हो गया कि कोर्चनोई को हराने के लिए सोवियत संघ कोई भी हथकंडा अपनाने से नहीं चूकेगा.

सब से अच्छा उपाय था बंधक बनाने का. जब कोर्चनोई देश छोड़ कर भागा था तो वह अपनी पत्नी बेला और किशोर पुत्र इगोर को देश में ही छोड़ गया था. उस का ख़याल था

कि हेलसिंकी के समझौते पर हस्ताक्षर करने के कारण सोवियत संघ नागरिकों के उत्प्रवास के अधिकार को मान्यता देने पर बाध्य है, इस लिए उस का परिवार जल्द ही उस से आ मिलेगा. लेकिन सोवियत संघ ने न केवल उस की पत्नी और बेटे को देश छोड़ने का वीज़ा देने से ही इनकार कर दिया बल्कि ईगोर को साइबेरिया के श्रम शिविर में भेज दिया. कोर्चनोई पर इस का जो मनोवैज्ञानिक दबाव पड़ा, वह विनाशकारी था. पूरे मैच के दौरान यह अफ़वाह उड़ती रही कि ईगोर को छोड़ दिया जाएगा, लेकिन ऐसा हुआ नहीं. महीनों बाद उसे छोड़ा गया.

सम्मोहन का मामला भी था. पिछली प्रतियोगिता १९७८ में फ़िलीपीन में हुई थी. दर्शकों में परामनोवैज्ञानिक व्लादिमीर ज़ूखार को उपस्थित पा कर कोर्चनोई बौखला गया क्योंकि वह बराबर कुटिल दृष्टि से कोर्चनोई को देखे जा रहा था. ज़ूखार का रहस्यमय ढंग देख कर लगता था कि शायद उस में कोई विशेष शक्ति हो. यह विचार ही उस मानसिक संतुलन को नष्ट करने के लिए पर्याप्त था जिस के सहारे कोर्चनोई जैसे तशरंज के उस्ताद अपनी जीविका चलाते हैं.

कमाल की चाल थी यह! मेरानो में भी लोग ऐसी ही किसी चाल की आशा कर रहे थे. इस लिए जब कोर्चनोई ने सम्मोहन के प्रभाव से बचने के लिए यह मांग की कि प्रतियोगिता कक्ष में दर्शकों और उस के बीच शीशे की एक अभेद्य दीवार खड़ी की जाए तो कुछ ही लोगों को आश्चर्य हुआ. उस की मांग ठुकरा दी गई.

एक खेल के लिए ये हरकतें पागलपन लगती हैं, लेकिन शतरंज निरा खेल नहीं है: यह वह पहेली है जिसे हल करने [illegible] दिमाग़ी कसरत हो जाती है. इसी लिए [illegible] भर में प्रिय है. इस खेल का कोई [illegible] तो है नहीं, लेकिन अनुमान है कि [illegible] शताब्दियों पहले भारत में इस खेल [illegible] हुआ था. तभी से शतरंज के खिला[illegible] के लिए बेईमानी, चालबाजी और [illegible] धड़ी से काम लेते हैं. रूस के भूत[illegible] चैंपियन बोरिस स्पास्की का कहना है, [illegible] जीवन के समान है.'' लेकिन अम[illegible] फ़िशर को यह उपमा सशक्त नहीं [illegible] बौबी फ़िशर द्वितीय विश्व युद्ध के [illegible] मात्र ग़ैर रूसी चैंपियन हुए हैं. उन [illegible] है, ''शतरंज ही जीवन है.''

शतरंज के खिलाड़ी जिस बात पर [illegible] क्रुद्ध हैं, वह यह है कि जो खेल इ[illegible] सादा दिखाई पड़ता है (यानी ६४ [illegible] बिसात पर १६ मोहरों की दो फ़ौजों [illegible] जंग, जिस के नियम एक बच्चा भी [illegible] देर में सीख सकता है) वह वास्तव [illegible] ज़्यादा पेचीदा है. इस में भाग्य के [illegible] का सवाल ही नहीं उठता. इस खेल [illegible] तो खिलाड़ी में ऐसी योग्यता होनी चाहि[illegible] लंबी लंबी चालों में तालमेल रख सके [illegible] को आंक सके और दस पंद्रह चालों के [illegible] की सूरत क्या होगी, इस की पहले से [illegible] सके.

शतरंज के एक खेल में कितनी च[illegible] हैं, उस की कल्पना कर सिर चकरा [illegible] सच तो यह है कि आज तक कोई [illegible] नहीं कर पाया है कि कितनी चालें [illegible] एक जांचकर्ता ने हिसाब लगा कर [illegible] १० के आंकड़े के आगे १२० शून्य [illegible] चालें संभव हैं. इसी को शायराना [illegible] और विशेषज्ञ ने यूं कहा है कि [illegible]

ोई के मैच के किसी एक खेल की चालों ानती दुनिया में कुल मिला कर जितने हैं, उन के बराबर हो सकती है.

ेल की पेचीदगियों से निबटने के लिए के सभी चोटी के खिलाड़ियों की शक्ति या तो जन्म से ही असाधारण है या कठिन परिश्रम द्वारा अर्जित की है. बौबी फ़िशर के बारे में कहा जाता है स ने आज तक जितने भी खेल खेले हैं ी हर चाल उसे याद है. १९वीं शताब्दी महान अंगरेज खिलाड़ी जोज़ेफ़ हेनरी बर्न ने एक बार खेल के बीच अपने द्वी के सामने घोषणा की थी कि मैं ठीक चालों में यह खेल जीत जाऊंगा. और १६ चालों में वे जीते. इतना पहले त देख पाना अपनी जगह असाधारण तो , लेकिन इस से भी अद्भुत यह था कि बर्न आंखों पर पट्टी बांध खेल रहे थे.

ज में अक्ल की ही ज़बरदस्त लड़ाई होती, निजी लड़ाई भी होती है. बड़े बड़े ड़ियों को हारने के बाद प्रलाप और करते देखा गया है. कई साल पहले प्रतियोगिता में एक खिलाड़ी को उस के ने अपने वज़ीर से मात दे दी थी. होने पर हारा हुआ खिलाड़ी क्रीड़ा कक्ष टा और उस कमरे में जितने भी वज़ीर , उस ने उन सब की गरदनें तोड़ डालीं. का रूसी उस्ताद आरोन निम्ज़ोविच से छोटे खिलाड़ी से मात खाने पर आपे से बाहर हुआ कि उस ने मेज़ पर र सारे मोहरे इधर उधर बिखेर दिए और ने लगा: "अब क्या ऐसे ऐसे बेवकूफ़ झे हरा डालेंगे!"

पियनशिप के लिए खेलने पर इतना दिमाग़, इतना ध्यान केंद्रित करना पड़ता है कि अंततः दिमाग़ चल जाता है. नाज़ुक स्थिति में खिलाड़ी कभी कभी कोई महत्वपूर्ण चाल चलने से पहले घंटा घंटा भर बिसात को ताकते रहते हैं. डेविड ब्रनश्टाइन पचासादि दशक के आरंभ में एक नामी रूसी खिलाड़ी थे. एक बार उन्हों ने अपनी पहली चाल सोचने में ५० मिनट लगा दिए थे.

शतरंज के माहिर खिलाड़ियों का मानसिक संतुलन कुछ इस तरह का होता है कि उन का सम्मोहन और परामनोविज्ञान से बराबर आक्रांत रहना आश्चर्यजनक नहीं लगता. और सोवियत संघ से ज़्यादा कोई भी देश इस से आक्रांत नहीं है. १९७२ में जब आइसलैंड में बौबी फ़िशर स्पासकी को हरा रहा था, तब मानसिक संतुलन खो बैठे सोवियत शिष्टमंडल ने खिलाड़ियों की कुरसियों को काट कर देखने और रोशनी के प्रबंध की जांच पड़ताल करने की मांग की थी ताकि बौबी फ़िशर के जीतने का रहस्य मालूम हो सके. उन्हें वहां चंद मरी हुई मक्खियों के अतिरिक्त कुछ नहीं मिला.

विशेषज्ञों की राय में फ़िशर शायद शतरंज का सब से बड़ा धनी है. १९५७ में जब वह १४ वर्ष का ही था, उस ने अमरीका की चैंपियनशिप जीत ली थी. साल भर बाद ही उसे 'ग्रैंड मास्टर' की उपाधि मिल गई थी. शतरंज के इतिहास में इतनी कम उम्र में सब से बड़ा ख़िताब पाने वाला वह पहला व्यक्ति था. इस भावुक और विवादास्पद खिलाड़ी ने १९७२ में अंततः स्पास्की के हाथों विश्व चैंपियनशिप का ताज छीन कर अकेले इस खेल का इतना अधिक प्रचार किया कि पश्चिम में शतरंज का पुनर्जागरण हो गया. जिस फ़िशर के व्यवहार के बारे में पहले से कोई अंदाजा

लगाना मुश्किल था, उस की दिनोंदिन बढ़ती मांग से शतरंज पहली बार बड़ी रक़म का खेल बन गया. जब वह और स्पास्की खेलने बैठे, तब जीत की रक़म २,५०,००० डालर की थी—उस समय शतरंज के इतिहास में यह राशि सब से बड़ी थी. दुनिया भर में लाखों लोगों ने हेकड़ीबाज़ बौबी को टेलीविज़न पर स्पास्की की इज़्ज़त मिट्टी में मिलाते देखा. लेकिन उस के बाद फ़िशर फिर कभी सार्वजनिक रूप से नहीं खेला. अब वह ३९ वर्ष का है, वैरागी की तरह कैलिफ़ोर्निया में रहता है.

खेल में सम्मोहन आदि से प्रतिद्वंद्वी को विचलित करने का प्रचलन कोर्चनोई कारपोव की प्रतियोगिता के साथ शुरू हुआ और बाद में आम हो गया. १९७४ में सोवियत संघ से भागने से पहले कोर्चनोई ने विश्व चैंपियनशिप के लिए कारपोव के साथ खेलते समय अपने सहायक के रूप में एक मनोवैज्ञानिक की सेवाएं प्राप्त की थीं. १९७२ में यह ताज जीता था फ़िशर ने और १९७४ में उस ने उस की रक्षा करने से इनकार कर दिया था. मनोवैज्ञानिक ही क्यों? इस लिए कि पहले कारपोव ने एक को रखा था. तीन साल बाद बेलग्रेड में सेमी फ़ाइनल के दौरान स्पासकी ने कोर्चनोई की तीव्र दृष्टि से बचने के लिए पहले 'सन वाइज़र' (धूप से आंखों को बचाने वाला टोप या हेलमेट का अग्रभाग) लगाया, फिर धूप का भारी चश्मा और आख़िर में वह काला चश्मा लगाया जो गोताख़ोर पहनते हैं.

१९८१ के पतझड़ के मौसम में जब कोर्चनोई और कारपोव की मेरानो में टक्कर हुई तो मैच में आवेश की जगह गहरा विद्वेष साफ़ नज़र आ रहा था. उद्घाटन समारोह मे पर जब सोवियत राष्ट्रगीत गाया जा र कोर्चनोई अपनी जगह बैठा रहा, और खड़ा नहीं हुआ. सोवियत समाचार प बात का वर्णन ख़ूब बढ़ा चढ़ा कर के साथ किया. मैच कोर्चनोई के साबित हुआ. वह जल्दबाज़ी से खेला. तभी वह आसानी से हार कोर्चनोई सिर्फ़ दो बाज़ियां जीता. शांत चित्त से खेलते हुए उसे छः हरा दिया.

कारपोव को आर्डर आफ़ लेनिन नित किया गया. सोवियत संघ में को प्रदान किया जाने वाला यह पुरस्कार है. कोर्चनोई मेरानो से बहु कर लौटा. एक बार फिर वह ता हाथ नहीं लगा. उस का परिवार भी बंधक था. (आख़िर क्रेमलिन ने उस वार को सोवियत संघ से जाने की दी और जुलाई १९८२ में कोर्चनोई ज़रलैंड में अपने परिवार से मिला.

रूसियों की नज़रें अभी से १९८ हैं. १९८४ में कारपोव को एक बार ताज की रक्षा करनी होगी. इस बीच और सफ़ेद ख़ानों की बिसात पर मुक़ाबला करने का सम्मान प्राप्त करने दुनिया भर के चोटी के खिलाड़ी अपनी आज़माते रहेंगे. जाग्रत क्षणों में वे तोड़ जोड़ में लगे रहेंगे और सपने शतरंज के मोहरे ही दिखाई देंगे.

आप कृपया किसी भी खिलाड़ी कहने का दुःसाहस न करें कि शतरंज तो है.

दुनिया के बढ़ते अंधेरों में
जिस की हमें ज़रूरत है उस

इंद्रधनुष की क़ीमत क्या होगी

मैग्ने शेरासेन

(ए)क नन्ही सी गुड़िया ने वह रात मेरे घर बिताई. और सुबह सुबह जब बिस्तर गरमाहट मुझे लपेटे थी, उस की पुकार ने जगा दिया. वह मुझे तुरंत बुला रही थी. बाथरूम में तौलने की मशीन पर नंगी (ख)ड़ी वह वज़न पढ़ने की कोशिश कर रही उस ने कहा, "देखिए तो : मेरी क़ीमत (क्या) होगी?"

इंद्रधनुष की क़ीमत क्या होगी?

इंद्रधनुष—दुनिया की मुश्किलों और बढ़ते (अंधे)रों में जिस की हमें ज़रूरत है, जो हमारे (सदा)त ऊपर तना रहता है, जिसे हम पकड़ नहीं सकते पर जो हमें प्रकाश देता है. इंद्रधनुष जो हमेशा हमेशा होता है. बस, ज़रा गरदन उठाइए और देख लीजिए.

बाथरूम में तौलने की मशीन पर झुकी नन्ही गरदन के सौंदर्य की क़ीमत क्या होगी?

सिर के बीचोबीच काढ़ी गई मांग और गरदन पर झूलती दो नन्ही चोटिया; उन्हें बांधने वाली रिबन की सुंदर गांठ का खेल खेल में हिलना और उछलना.

ऐसे पुनर्मिलन की दीप्ति की क़ीमत क्या होगी?

कितना सुखद है किसी की भोली आवाज़

अफ़्तेनपोस्तें (२३ जनवरी १९८२) ओस्लो से संक्षिप्त. कापीराइट १९८२ मैग्ने शेरासेन

पर जागना, छोटी छोटी बांहों का गरदन पर झूल जाना और महारानियों जैसा आदेश कि दाढ़ी काट डालो. कितना मज़ेदार!

उस आह्लाद की चुभन की क्या क़ीमत होगी जो हमें याद दिलाता है कि हम अभी बच्चे हैं?

और क्या क़ीमत होगी उन प्रतिध्वनियों की जब निरे एकांत में दुनिया से बेख़बर वह गुड़िया से बतियाती है?

जब मनोहर कल्पनाएं उस के लिए संसार को अस्तित्वहीन कर देती हैं और वह मां की पुरातन भूमिका में गुड़िया को डपटती है, "नहीं, बेटे, जब मुंह में कौर हो तो बोला नहीं करते!"

अपनी दुनिया में खोई, शांत क्षणों में अपने आप में गाती—उस के प्रफुल्ल गीतों की क़ीमत क्या होगी?

जिन गीतों को हम सुनते हैं और निश्चित जानते हैं—इस से पहले, इस से मधुर कुछ नहीं सुना.

उधार में मिले, इस सुख की क़ीमत क्या होगी?

जो हमारा नहीं है, जिन पर हमारा कोई अधिकार नहीं, हम उन्हें उधार ले कर केवल कुछ समय के लिए आभारी हो सकते हैं.

एक नन्हे इनसान की आत्मा की क्या होगी?

कहते हैं कि मनुष्य रूपी मिट्टी में ह हरेक को अपना सर्वोत्तम बोना है हमारा अपना श्रेष्ठ कुल है कितना! झगड़ा, लालच, अहंकार, गर्व, गाली ... सूची आवश्यकता से बहुत अधि है.

सर्वोत्तम की परिभाषा क्या है? जो हम अपने उन क्षणों में देते हैं कुछ देने की अनुभूति तक नहीं होती, दान के गौरव से मंडित नहीं होते.

ऐसे दान की प्रेरणा देने वाला सकता है?

जिसे हम प्यार करते हों.

कोई नन्हा बच्चा.

"मेरी क़ीमत क्या होगी?" उस पूछा. फिर वह देखने लगी कि मैं रहा हूं या नहीं.

मैं ने नीचे देखा, "पंदरह किलो ज़्यादा." लेकिन सही उत्तर मैं एक बच्चे की क़ीमत है हमारी सारी जो कुछ भी हम हैं और जो कुछ भी चाहिए, वह सब.

निर्णायक

आप यह कैसे तय करेंगे कि आप यह या वह काम करना चाहते हैं या नहीं. सिक्का लीजिए. जी हां, इस से बात सचमुच बन जाती है. इस लिए नहीं कि वह वाकई फ़ैसला है, बल्कि इस लिए कि डेनमार्क के कवि और गणितज्ञ पीट हेइन के अनुसार, "सिक्का में होता है तो आप एकाएक यह समझ जाते हैं कि आख़िर आप करना क्या चाहते

—मैडलि

दुनिया भर की

दक्षिण अफ्रीका के नेटाल ड्रैकंज़्वर्ग के लोटेनी ...यारण्य के ४०-५० बैबून बंदरों के एक गोल ने एक ...ो को गोद ले लिया है. अभयारण्य के रक्षकों के ...सार बकरे को इस गोल ने तभी अपना लिया था ...कि वह नन्हा सा मेमना था. उसे प्रायः नन्हे लंगूरों को

...नी पीठ पर लादे इस वानर वंश के साथ पहाड़ी चढ़ते ... गया है.

अभयारण्य के वरिष्ठ प्रभारी रेंजर का कहना है, ...खा गया है कि आहार का अभाव होने पर बैबून बंदर ...नों को खा भी जाते हैं, परंतु उन में ममता भी बहुत होती ...स्पष्ट है कि यह बकरा भी अपने आप को बैबून ही ...झने लगा है.'' —'नेटाल पार्क्स बोर्ड'

...एक गोली नहीं चली, कोई गोला नहीं दगा, ... जान नहीं गई और इस के बावजूद लड़ाई ...ती रही और अभी १९८१ में ही पूरे १७२ ... बाद कहीं जा कर बंद हुई. बहरहाल इतने ...न युद्धहीन युद्ध लड़ने वाले थे डेनमार्क और ...ण स्पेनिश नगर वेस्कर जिन के मध्य पुनः शांति ...पना होने पर डेनिश राजदूत मोगेन वेंडल-...रसन का कहना था : आज की दुनिया का हाल ...ते हुए इस युद्ध की समाप्ति बहुत ही सुखद है. ...इस पर वेस्कर के महापौर होसे पाब्लो सेरानो ...भी सहमति जताई, ''दूसरे देशों को हमारा ...करण करना चाहिए.''

...१८०९ में स्पेन के राजा के नाते फ्रांसीसी ...शाह नेपोलियन बोनापार्ट प्रथम का भाई जोज़ेफ़ बोनापार्ट अपने डांवाडोल तख़्त की बागडोर बचाए रखने के लिए हाथ पांव मार रहा था. उसी वर्ष नवंबर में वेस्कर की नगर परिषद ने डेनमार्क के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी, क्योंकि वह इंगलैंड के विरुद्ध फ्रांसीसी लड़ाई में नेपोलियन का साथ दे रहा था. ख़ैर, इधर नेपोलियन युद्ध में पराजित हो रहा था और अपनी मद्यप्रियता के कारण 'बोतल वीर' तक कहलाने वाले राजा को स्पेन से बाहर खदेड़ दिया गया. परंतु वेस्कर और डेनमार्क के मध्य घोषित युद्ध बदस्तूर जारी रहा.

अंततः १९८० में एक अधिकारी को उपरोक्त युद्ध की घोषणा संबंधी अभिलेख हाथ लगे तो उस ने इस विचित्र मामले को तत्काल उठाया. बस, वेस्कर व डेनमार्क युद्ध समाप्ति पर झटपट राजी हो गए और संधि की तारीख़ तय हुई ११ नवंबर यानी वही दिन जबकि १७२ साल पूर्व युद्ध की घोषणा की गई थी. —'यूपीआई'

इलेक्ट्रानिकी के चरण अमरीकी जन जीवन के एक अन्य क्षेत्र में आ पड़े हैं और वह है लिफ़्ट की सवारी. जुलाई १९८१ में विख्यात ओटिस ऐलिवेटर कंपनी ने अपने ऐलिवोनिक-४०१ की बिक्री का शुभारंभ किया. 'बोलती लिफ़्ट' तक पुकारे जाने वाले इस ऐलिवेटर के पास सूक्ष्म कंप्यूटर संचालित मरदाना आवाज़ में १११ शब्दों का भंडार है.

इस की एक रिकार्डिंग लिफ़्ट के बीच में फंस जाने पर चिंतित यात्रियों को सांत्वना देती है. दूसरी रिकार्डिंग विकलांग यात्रियों की सुविधा के लिए मंज़िलों की सूचना देती चलती है. फिर लिफ़्ट में ही लगा दृश्य पटल यात्रियों को समय, मौसम, स्टाक बाज़ार की स्थिति की सूचना से ले कर समाचार तक दिखाता रहता है. —'ग्रिट'

इटली में माफ़िया के पुराने प्रतिद्वंद्वी कमोरा का नेपल्स के बदनाम इलाक़ों में पूरा बोलबाला है. दोनों गिरोहों ने एक दूसरे के विरुद्ध युद्ध छेड़ रखा है जिस के फलस्वरूप नृशंस हत्याओं का तांता लग गया है

कमोरा के हत्यारे

गया सर्वादियो एवं एलन काप्स

अपराधियों के सरगना रैफ़ेले कुटोलो ने अपने अत्यधिक सुरक्षित बंदीकक्ष में टेली-विज़न के लिए एक इंटरव्यू दिया. तब संवाद-दाता ने उस व्यक्ति के बारे में पूछा था जिस ने जेल में कुटोलो की हत्या करने का प्रयास किया था. कुटोलो ने उत्तर दिया था : "वह तो कंधे पर अपनी लाश उठाए घूम रहा है." और कुल तीन महीने बाद सचमुच वह व्यक्ति अपने बंदीकक्ष में फंदे से लटका मृत पाया गया. कहा जाता है कि वह यूरोप के स[illegible] हिंसा ग्रस्त नगर नेपल्स के गिरोह [illegible] शिकार हो गया.

१९८१ में नेपल्स में २३० से [illegible] व्यक्तियों की हत्या हुई थी. इन में से [illegible] लोग नगर के सुसंगठित अपराधी गि[illegible] कमोरा के दो प्रतिद्वंद्वी गुटों के बीच [illegible] निर्मम युद्ध के शिकार हुए हैं. इस [illegible] उद्देश्य नित्य एक अरब लिरा (लगभ[illegible] करोड़ रुपए) मूल्य के मादक द्रव्यों की[illegible] के जमे जमाए धंधे और इस से भी [illegible] ८८२ अरब लिरा (लगभग साढ़े सा[illegible] रुपए) की उस विपुल 'सफ़ेद धनरा[illegible] कब्ज़ा करना है जो सरकार ने नवंबर [illegible] के भूकंप पीड़ित नेपल्स के १५ हज़ा[illegible] बार परिवारों के पुनर्वास के लिए निर्धा[illegible] थी.

भूकंप के बाद पीड़ित क्षेत्र में राहत[illegible] पहुंचने लगी तो उस के कुछ [illegible] कमोरा के गोदामों की ओर मोड़ दि[illegible] अस्थायी आवास के लिए भेजे गए ट्रे[illegible] रास्ते से ही उड़ा कर उत्तरी इटली में बे[illegible] गया. रोम सरकार ने भरसक प्रयत्न कि[illegible] सहायता ज़रूरतमंदों तक ही पहुंचे. प[illegible] गिरोह ने अपने राजनीतिक प्रतिनिधियों [illegible] पर, जिन में वकील, इंजीनियर, सर्वेक्ष[illegible] भवन निर्माता कंपनियां शामिल हैं, [illegible] एक न चलने दी.

प्रतिद्वंद्वी. कमोरा कुख्यात अपराधी [illegible] माफ़िया की शाखा नहीं है. वह [illegible] प्रतिद्वंद्वी है : माफ़िया से पुराना औ[illegible] प्रच्छन्न. नेपल्स तथा उस के व्यावसायि[illegible] प्रदेश के हिंसापूर्ण इतिहास में उस [illegible] काफ़ी गहरी हैं. माफ़िया के विपरीत, गिरोह के सरदार हमेशा जाने माने लोग[illegible]

टेलीग्राफ संडे मैगज़ीन (१४ मार्च १९८२) से संक्षिप्त, कापीराइट १९८२ टेलीग्राफ संडे मैगज़ीन, लंदन

कमोरा के सब से प्रमुख और सब से निर्मम गुट का नेता रैफ़ेले कुटोलो बड़ा मृदु-भाषी और सौम्य है. वह चश्मा पहनता है और देखने में अध्यापक जैसा लगता है. इसी लिए उसे प्रोफ़ेसर कह कर पुकारा जाता है. (वह कवि भी है और उस ने अपनी काव्यकृति 'कविताएं एवं विचार' की १० हज़ार प्रतियां उपहारस्वरूप मुफ़्त वितरित करवाईं.) नेपल्स की हिंसा, रोग और अभाव से जर्जर घनी बस्तियों के तमाम लोग उसे अपना हीरो मानते हैं. उस के गिरोह में ३,००० लोग हैं. वह अपने बंदीकक्ष से ही अपने अपराध साम्राज्य का संचालन करता है.

कुटोलो का प्रतिद्वंद्वी नेपल्स के कुख्यात फोर्सेला ज़िले का रहने वाला लुइज़ी ज़ूलियानो है. उस के गुट का नाम 'ला नोवा फ़ेमिलिया' है. दोनों व्यक्तियों ने एक दूसरे के विरुद्ध युद्ध छेड़ रखा है. फलस्वरूप नेपल्स में निर्मम हत्याओं का तांता लग गया है. हत्याएं प्रायः ऐसी विशेष बंदूकों से की जाती हैं जो शरीर के चिथड़े उड़ा देती हैं. नगर की पोगोरिएल जेल में भी कई हत्याएं की गई हैं. एक व्यक्ति वहां लकड़ी के खूंटीदार खंभे से लटका पाया गया था. औरों को गला घोंट कर या फंदे से लटका कर मारा गया था.

कमोरा गिरोह से संबंधित एक अत्यधिक लोमहर्षक हत्याकांड का पता २१ जनवरी १९८२ को चला. किसी अज्ञात व्यक्ति द्वारा टेलीफ़ोन से इटली की संवाद समिति 'अंसा' को दी गई सूचना के आधार पर पुलिस ने नेपल्स के मध्य में खड़ी एक फ़िएट कार बरामद की. कार में कुटोलो गिरोह के २३ वर्षीय सदस्य गियाकोम 'लिटिल डाल' फ़्रैटिनी का क्षतविक्षत शव मिला. उस का धड़ पिछली सीट पर पड़ा था और सिर, हाथ और दिल अगली सीट पर काले प्लास्टिक के थैलों में भरे पाए गए.

विडंबना यह है कि नव कमोरा को सरकार ने मान्यता दे रखी है. गत वर्ष क्रिश्चियन डेमोक्रेटिक पार्टी के नेता चिरो चिरिल्लो का आतंकवादियों द्वारा अपहरण किए जाने पर कुटोलो ने सरकार और आतंकवादी रेड ब्रिगेड के मध्य बिचौलिए की भूमिका अदा की थी. जिन दिनों चिरिल्लो आतंकवादियों के हाथों में थे, उन दिनों पुलिस इतनी सक्रिय थी कि अपराधी गिरोह अपना धंधा नहीं चला पा रहे थे. कुटोलो समझौता कराने में सक्षम था क्योंकि इटली की कई जेलों में, जहां महत्वपूर्ण आतंकवादी नेता क़ैद थे, उस के गिरोह का राज था और ब्रिगेड अपने नेताओं से हाथ धोना नहीं चाहता था. चिरिल्लो को मुक्ति मिल गई.

'कमोरा' शब्द की उत्पत्ति के बारे में दो लोक विश्वास प्रचलित हैं. या तो यह स्पेनी भाषा के उस शब्द से जनमा है जिस का अर्थ है 'संघर्ष', या 'शमारा' से उद्भूत हुआ है जिस का अर्थ है 'लुटेरे की जैकेट'. १७वीं शताब्दी में यह गिरोह तस्करी, वेश्यावृत्ति और चोरी ठगी के धंधे करता था. सन १८६० में, इटली के एकीकरण से पहले, तत्कालीन गृह एवं पुलिस मंत्री लिबोरियो रोमनो ने अशांत नेपल्स में शांति व्यवस्था क़ायम करने में कमोरा का सहयोग लिया. जिसेप गैरीबाल्डी ने इटली के विकासशील साम्राज्य के लिए नेपल्स को एक भी गोली चलाए बिना हथिया लिया था—इस के पीछे भी कमोरा का हाथ था.

सन १९११ तक यह संगठन गिरोह के सरग़नाओं को सज़ाएं हो जाने के कारण लगभग समाप्त हो गया था. पर उस का नाम नगर की लोककथाओं का अंग बन गया था

और उस की प्रशस्ति में गीत रचे गए थे.

पुनर्जन्म. तस्करी का धंधा नेपल्स में हमेशा ज़ोर पर रहा है और कमोरा का पुनर्जन्म तस्करों के बीच से ही हुआ. द्वितीय विश्व युद्ध के बाद से तस्कर अमरीकी सिगरेटों की तस्करी में दक्ष हो गए हैं. सत्तरादि दशक के प्रारंभ के वर्षों में सिसली के माफ़िया और मार्सेलीज़ के गिरोहों ने उन्हें संगठित किया तथा मादक द्रव्यों की लाभ वहुल तस्करी पर विशेष ज़ोर दिया. नेपल्स के परंपरावादी उद्योग ने विदेशी वर्चस्व क़ायम करने के इस प्रयास का प्रबल विरोध किया, सो कमोरा को उन लोगों का सहयोग और समर्थन प्राप्त हुआ जो तस्करी के लाभ स्वदेश में ही रखना चाहते थे. उन के तौर तरीक़े एकदम आधुनिक थे. कमोरा के सदस्यों का बीमा कर दिया गया. उन की गिरफ़्तारी की स्थिति में अच्छे वकील की सुविधा, साथ ही गिरफ़्तार सदस्यों को आर्थिक सहायता सहज सुलभ हो गई.

कुटोलो का सिक्का ज्यों ज्यों जमता गया, उस के इरादों में भी फ़र्क़ पड़ने लगा. कड़े मादक द्रव्य आम तौर पर बिकने के लिए उत्तरी इटली और रोम से समृद्ध बाज़ारों में भेजे जाते थे. पर कमोरा गिरोह नेपल्स के लतियों का फ़ायदा उठाने को उतावला हो उठा. व्यसन ग्रस्त लोगों की बड़ी फ़ौज कमोरा के हित में थी क्योंकि उन का शोषण सहज ही किया जा सकता था. अतः मादक द्रव्य नेपल्स के उन बेरोज़गार युवकों के हाथ बेचे जाने लगे, जो रातों में सक्रिय होते थे और नगर में चक्कर काटते थे.

हेरोइन या कोकीन का आदी हो जाने पर आदमी इस लत के लिए चोरी, डकैती कुछ भी कर सकता है. फिर तो सब कुछ बड़ा आसान हो जाता है. एक पेशेवर हत्यारा अपने काम के लिए ५० लाख लिरा (लगभग ५० हज़ार रुपए) की मांग कर सकता है, पर नशे की अमल का मारा आदमी तो ४ लाख लिरा में ही किसी के भी चिथड़े उड़ा सकता है.

हत्याकांडों में वृद्धि का आंकड़ा बड़ा चौंकाने वाला लगता है—१९८० में कुल १५० हत्याएं हुई थीं, जबकि अगले ही साल १९८१ में २३० से अधिक हत्याएं हुईं. एक ही सप्ताह में गिरोह युद्ध के अंतर्गत क़त्ल की २० वारदात हुईं. ज़्यादातर लोग कहीं जाते समय घेर कर कारों में ही मार डाले गए थे. लेकिन एक सब से गंभीर हत्याकांड गत वर्ष १० दिसंबर को हुआ था—कुटोलो गिरोह के लिए अवैध धन

रैफ़ेले 'प्रोफ़ेसर' कुटोलो

फ़ोटो: गीयाकोमीनो ए.टी

वसूल करने वाले लुइज़ी लिरेली को उसी की कपड़े की दुकान के बाहर गोली से उड़ा दिया गया. तीन नक़ाबपोशों ने उसे पुकार कर बाहर बुलाया और उस का शरीर गोलियों से छलनी कर के इंतज़ार करती कार में बैठ कर चंपत हो गए. आज दिन दहाड़े ऐसी जघन्य हत्याएं आम हैं. हिंसा पर क़ाबू पाने की ज़िम्मेदारी पुलिस प्रधान पर है. वाल्टर स्काट लोशी (उसी की मां आइवनहो की कट्टर प्रशंसक थी) ने १९८१ के मध्य में कार्यभार संभाला और उस का पहला, असंभव सा कार्य पुलिस में से उन लोगों को बीन बीन कर निकालना था जो गुंडों से संबंधित रहे हैं. नेपल्स में अपराध कर्म समाज के तलवर्ती अल्प संख्यक समुदाय तक ही सीमित नहीं है, बल्कि इस का जीवन व्यवस्था से वही नाता है जो वस्त्र के साथ मैल और जर्जरता का होता है.

पागलखाना. कुटोलो ने अपना अधिकतर वयस्क जीवन जेल में गुज़ारा है. उसे पहली बार १९६३ में, कुल २२ वर्ष की उम्र में, एक हत्या के सिलसिले में जेल जाना पड़ा था. १९७० में रिहा होने के बाद अगले ही वर्ष कई बंदूक़धारियों की हत्या के प्रयास के आरोप में उसे पुनः जेल जाना पड़ा. १९७७ में उस के वकीलों ने उसे गंभीर मानसिक रोग का शिकार घोषित करवाने में सफलता प्राप्त की (रोम की अपील अदालत ने गत जुलाई में इस की पुष्टि कर दी) जिस के कारण उसे नेपल्स के निकट एवर्सा अपराधी पागलख़ाने में डाल दिया गया. लेकिन १९७८ में एक विस्फोट में पागलख़ाने की एक दीवार का कुछ भाग उड़ गया और कुटोलो फ़रार हो गया. कहा जाता है कि उस की रिहाई की यह साज़िश उस की ४१ वर्षीया बहन रोज़ेटा ने की थी जिसे बर्फ़ानी आंखों वाली औरत कहा जाता है और जो सामान्यतः कुटोलो के गिरोह में प्रशासक की भूमिका निभाती है.

कुटोलो का सुदृढ़ दुर्ग उस के जन्म स्थान ओटावीयानो में स्थित एक विशाल भवन है. ओटावीयानो नेपल्स से २० किलोमीटर की दूरी पर २० हज़ार की आबादी वाली बस्ती है. वहां कुटोलो ने पुलिस से नहीं, अपने शत्रुओं से बचा कर अपने परिवार को सुरक्षित रखा हुआ है.

जिन दिनों कुटोलो फ़रार था, उन दिनों जूलियानो और 'ला नोवा फ़ेमिलिया' के अन्य सदस्यों के इर्द गिर्द एकत्रित कई छोटे मोटे गिरोहों ने तस्करी और मादक द्रव्यों के धंधे पर उस के शिकंजे को तोड़ने की कोशिश की. इस नए बलशाली गिरोह को सिसली के माफ़िया का भी समर्थन प्राप्त था. बदले में कुटोलो ने भयावह कालाबरी के गिरोह अंद्राघंटा से गठबंधन किया. दोनों पक्षों के बीच भयंकर संघर्ष हुआ. जूलियानो के एक विश्वस्त साथी एंटनी स्पावोन, जिसे 'ओ मलामो' (दुष्ट व्यक्ति) कह कर पुकारा जाता था, को एक अज्ञात शत्रु के हमले का शिकार हो कर शरण के लिए अस्थायी तौर पर अमरीका भाग जाना पड़ा. उस का चेहरा बारूद से बुरी तरह झुलस गया था और उस का एक भाग उड़ गया था. अभी तक इस कांड में कुटोलो या उस के गिरोह के किसी सदस्य का हाथ होने का प्रमाण नहीं मिला है.

१९७९ के आरंभ में पुलिस ने नेपल्स से कुछ ही दूर पर स्थित अल्बानेला के एक मकान पर छापे के दौरान कुटोलो को पकड़ने में सफलता पाई. यह मात्र संयोग था. जिस व्यक्ति ने कुटोलो को इतने महीनों तक अपने मकान में शरण दी थी, इस के कुल ५ महीने बाद उस की हत्या कर दी गई.

कुटोलो पोगोरिएल जेल में वापस आ गया. इस बीच उस की ख्याति बढ़ गई थी. उस के बंदीकक्ष के फ़र्श पर क़ालीन बिछा था, एक कोने में दूरदर्शन रखा था और एक निजी ख़ानसामा उस के लिए भोजन पकाता था. पर उस का प्रभाव अधिकारियों को फूटी आंखों नहीं भाया. अतः पहले तो उसे एस्कोली पिसेना की अति सुरक्षित जेल में भेजा गया और गत अप्रैल में वहां से असीनारा की द्वीप जेल में स्थानांतरित कर दिया गया.

कुटोलो का साम्राज्य इन दिनों सरकार की गिरफ़्त में है. उस के वकील ब्रूनो स्पाइज़िया को एक बंदूक़धारी ने गंभीर रूप से घायल कर दिया, इस प्रकार वह भी नेपल्स के गिरोह युद्ध के शिकारों की लंबी सूची में शामिल हो गया. नेपल्स के महापौर मौरीज़ियो वेलेंजी ने, जो ईमानदार व्यक्ति हैं, बताया कि ''नेपल्स में अपराधी गिरोहों में प्रचंड शक्ति से टक्कर हो रही है. उन का मुक़ाबला करने के लिए हमें शक्ति और सामाजिक सहायता दोनों की ज़रूरत होगी.'' अब पुलिस के भी हौसले बढ़ रहे हैं. १९८१ में पुलिस ने कुटोलो के मकान पर छापा मारा और उस के कई आदमियों के साथ उस के पुत्र को भी हिरासत में ले लिया.

लेकिन ओटावीयानो और उस की आबादी पर कुटोलो का शासन बरक़रार है. एक त्रस्त निवासी ने कहा, ''यहां हत्या तो मामूली सी बात है. वे लोग विरोध पसंद नहीं करते. कुटोलो से बचने का एक मात्र रास्ता है ओटावीयानो छोड़ जाना.''

ओटावीयानो में एंटोनियो मोरगिग्नी को जांच का काम सौंपा गया था. एक दिन वह कमरे से बाहर निकला तो दो आदमियों को कार के पीछे छिप कर इंतज़ार करते पाया. वे एंटोनियो की ओर लपके तो उस ने तुरंत पिस्तौल निकाल कर गोलियों की बौछार कर दी. वे लोग भाग निकले. लेकिन मोरगिग्नी का साहस भी साथ छोड़ गया. उस ने रोम को अपना तबादला करा लिया है.

तर्क रंगत

एक दुर्घटना में मरते मरते बचा था और अस्पताल में भरती था. अगली सुबह हमारे पारिवारिक डाक्टर मुझे देखने आए. मेरी गंभीर चोटों को देख कर मुझ से बोले कि भाग्यशाली थे जो ज़िंदा बच गए.

''मेरा ख़याल है, ऊपर वाले को मुझ से प्रेम है,'' मैं ने कहा.

''हां हां, या यह भी हो सकता है कि ऊपर वाले को आप की कोई ज़रूरत ही न हो,'' उत्तर मिला.

—आर डब्लू

हम पति पत्नी एक रेस्तोरां में बैठे एक वयोवृद्ध जोड़े से बातें करने लगे. पता चला कि पति बीमार थे और उन के डाक्टर ने बताया था कि उन्हें आपरेशन करवा लेना चाहिए. पर वह थे कि आपरेशन के नाम से घबरा रहे थे.

बातचीत आगे बढ़ी ही थी कि वृद्ध महिला ने पति को आपरेशन के लिए मनाने को एक नया तर्क पेश कर दिया. ''देखिए,'' वह बोलीं, ''आप अस्पताल जा कर आपरेशन करा ही लीजिए ताकि जो बचे खुचे उस का हीं आनंद लूट लें.''

—जी एस

सुखमय दांपत्य के छः सूत्र

पश्चिम के देशों में विवाह होते हैं, टूट जाते हैं. हमारे यहां भी दांपत्य जीवन के तनाव बढ़ते जा रहे हैं

रेवरेंड नारमन विंसेंट पील

हाल ही में एक हवाई यात्रा के दौरान मैं ने पाया कि मेरी बग़ल में बैठे सज्जन बड़े मिलनसार हैं. बोले, ''मैं बेटी के ब्याह में जा रहा हूं.''

मैं ने कहा. ''बधाई! यह तो बहुत अच्छी बात है.''

इस पर वह खिन्नता से हंस दिए. ''हां, लेकिन यह उस की तीसरी शादी है. लड़की होशियार है, नौकरी भी उस की बढ़िया है, किंतु २४ साल की उम्र में तीसरी बार शादी कर रही है. बेटी के ब्याह में जाते वक़्त इन ख़यालों में उलझे रहना कि क्या पता उस का दांपत्य सुखमय होगा या नहीं, बड़ा अजीब है.''

मैं ने कहा, ''सारी परेशानी की जड़ इस 'पता नहीं' में ही है.''

जाने क्यों, पिछले दो तीन दशकों में, वैवाहिक जीवन के साथ 'पता नहीं, क्या हो!' वाली संदेहावस्था चिपक कर रह गई है. क्या पता, मुझ से भूल ही हुई हो. क्या पता, मेरा साथी मुझ से कमतर हो. क्या पता, मेरा विकास तो अब भी हो रहा हो, मगर मेरे जीवन साथी का थम गया हो. क्या पता, हमारा यौन जीवन सही है या नहीं. क्या पता, किसी और को अपनाना ही अधिक सुखकर होता. क्या पता, बिना शादी के ही अच्छी कट रही होती.

इन में प्रत्येक 'पता नहीं' नकारात्मक प्रवृत्तियों का द्योतक है, हर 'पता नहीं' ब्रांड दुबिधा किसी न किसी पलायन द्वार की ओर ले जाती है. इन पर जितना सोचो, पलायन की संभावना उतनी ही बढ़ती जाती है.

एक बार एक युवती ने मुझ से शिकायत की कि उस का पति, डाक्टरी का छात्र, उस की अवहेलना करता है. रात दिन पढ़ाई में डूबा रहता है. कभी घुमाने फिराने नहीं ले जाता. अंत में बोली, ''पता नहीं, टाम से मैं ने शादी क्यों की थी. एक अन्य युवक उन दिनों मुझ से शादी करना चाहता था, किंतु मैं ने उसे ठुकरा दिया था. शायद यह मेरी भूल थी.''

मैं ने कहा, ''बस करो. तुम्हें सिर्फ़ एक 'शायद' आज़माना चाहिए. वह यह कि टाम की हिम्मत बढ़ाने और प्रिय बनने के लिए

'डायनेमिक इमेजिंग' से संक्षिप्त. कापीराइट १९८२ नारमन विंसेंट पील. फ्लेमिंग एच रेवल कं. न्यू जर्सी द्वारा प्रकाशित

शायद आज मुझे कोई नया रास्ता सूझ जाए."

सोच में डूबी वह चली गई. ज़ाहिर है, मेरे कहे का उस पर ज़रूर कुछ असर हुआ था. टाम से भी मैं ने कहा कि वह पत्नी को कभी कभी घुमाने अवश्य ले जाया करे. आज उन दोनों का दांपत्य अत्यंत सुखमय है.

दांपत्य की दुस्साध्यताओं से जूझते प्रौढ़ों के बेशुमार पत्र मुझे मिलते रहते हैं. इन में अच्छी ख़ासी संख्या ऐसी दुखियाओं की होती है जिन के पति उन्हें छोड़ गए हैं. विभ्रांत और भग्न-हृदय, ये औरतें बताती हैं कि कैसे शादी के १५ या २० साल बाद उन के पति अकस्मात उन के जीवन वीरान कर गए. कई बार इस का कारण कोइ अन्य औरत होती है; कई बार वह नहीं भी होती. कई मामलों में पति अपना पक्ष स्पष्ट कर पाते हैं, कई मामलों में नहीं कर पाते.

मुझे यह लगता है कि ऐसी परिस्थितियां पैदा होने का कारण है विवाह संबंधी ग़लत धारणाएं. पत्नी को त्यागने वाले पति के लिए शादी एकरसता तथा इकतरफ़ा त्याग का प्रतीक बन चुकी होती है. सोचता है, "इतने बरस तक मैं कोल्हू के बैल की तरह जुता रहा. ९५ प्रति शत कमाई परिवार के भरण पोषण में खपती रही. लेकिन मेरा क्या बना?"

हो सकता है कि संभवतः कोई दूसरी औरत अधिक प्रेरणामयी हो. जो हो, वह फ़ैसला कर लेता है, "अपना फ़र्ज़ मैं ने निभा दिया है, अब मैं चला."

इस समस्या का समाधान क्या हो?

सब से पहले तो विवाह की छवि पुनः संवारी जाए: यह जीवन पर्यंत चलने वाली उल्लासकारी साझेदारी है. इस की अच्छाइयां इस की त्रुटियों से कहीं अधिक हैं. यह ज़रूरी है कि पति पत्नी दांपत्य के दुखद पहलुओं में ही ध्यान न उलझा दें; बल्कि उस के सर्वाधिक तोषकारी पहलुओं को स्वीकार करें और महत्व दें.

दूरदर्शिता से कंटकाकीर्ण दांपत्य की कटुताएं कम हो सकती हैं. कुछ वर्ष पूर्व एक दंपती ने, जिस की शादी मैं ने ही करवाई थी, मुझे लिखा कि वे दोनों अब विवाह बंधन तोड़ने की स्थिति को पहुंच गए हैं. मैं ने उन से कहा कि वे कम से कम यह कल्पना कर लें कि तलाक़ के बाद उन की ज़िंदगियां कैसी होंगी? बच्चों का क्या हाल होगा? अकेलापन क्या गुल खिलाएगी? अपराध भावना कितना कचोटेगी? सब कुछ खो बैठने और सपने टूट जाने का अहसास कितना सालेगा? पैसे धेले की तंगी गड़बड़ियां कितना झकझोरेंगी?

और मैं ने उन से अनुरोध किया कि वे दोनों दांपत्य के सर्वाधिक सुखद तथा प्रेमिल अवसरों का स्मरण कर देखें. सुखद स्मृतियां संभवतः अवचेतन में सुखद भविष्य की राह दिखा दें. संभावित वैवाहिक जीवन की स्पष्ट, स्थिर छवि ने इस पति पत्नी को अपना वर्तमान दांपत्य सुधारने की प्रेरणा जुटा दी.

सफल दांपत्य में निरंतर उस का पोषण करना तथा उस को समायोजित करना, आवश्यक स्थितियों की समीक्षा, थोड़ा बहुत सामंजस्य और थोड़ा बहुत पोषक उपक्रम करते रहना पड़ता हैं, मेरी पत्नी और मैं निम्नलिखित छः उपाय अनुमोदित करते हैं:

१. प्रेम संबंधी प्रौढ़ धारणाएं विकसित कीजिए. बहुत से लोगों के लिए प्रेम एक अनवरत रूमानी दमक है, जिस का ध्येय है भावात्मक तोष. कुछ लोगों का जी तो इस तरह के प्यार सत्कार से भरता ही नहीं.

किंतु यह प्यार नहीं, निर्भरता है. यह एक

ऐसी अनुभूति है जो मूड के साथ साथ बदलती रहती है. और अगर यह अनुभूति लुप्त हो जाए—भले ही अल्प काल के लिए—तो वे मान लेते हैं कि प्यार भी चुक गया. परिपक्व प्रेम में शुभ और हित की अपेक्षा साथी का हित और शुभ महत्वपूर्ण होता है.

मेरे कार्यालय में आने वाली एक युवती बोली, ''अपने पति से अब मैं बिलकुल प्यार नहीं करती. उस के प्रति अब मुझे कुछ महसूस नहीं होता.'' मैं ने कहा, ''चाहे प्यार करती हो या नहीं, बरताव प्यार का ही करो! ज़रूरी यह है कि तुम पेश कैसे आती हो; यह नहीं कि महसूस कैसा करती हो. पति से कोमलता और विवेकपूर्ण बरताव करती रहोगी तो शायद शादी को भी बचा ले जाओगी.''

यह कोई धोखा नहीं है, अपेक्षाओं का नाटकीय अलंकरण भर है. उक्त युवती अभी तक प्रयत्नरत है, और उन की शादी भी अभी तक क़ायम है.

२. **परस्पर समझने समझाने की कोशिशें जारी रखें.** रोज़मर्रा के मनसूबों और मुश्किलों, शिकवे शिकायतों और ग़लतफहमियों अथवा दांपत्य के किसी भी पहलू पर बातचीत करने के लिए एक ख़ास वक़्त तय कर लें. यूं आप तिलों को ताड़ बनने से रोक लेंगे. एक बार समझने समझाने का सिलसिला जम जाने पर दांपत्य में बहुत से दबावों और तनावों से निपटने की क्षमता पैदा हो जाती है.

३. **सुख को टालना सीखिए.** यह संयम और धैर्य के संयोग से सीखा जाता है. दोनों साथियों को भविष्य संवारने के लिए तात्कालिक आनंद की अवहेलना कर देनी चाहिए.

अनेक व्यक्ति बचत करने अथवा दीर्घकालिक योजनाएं बनाने में सफल नहीं हो पाते. वे अभी इसी क्षण सारा आनंद और आमोद प्रमोद लूट लेना चाहते हैं.

लड़ने झगड़ने वाले दंपती यदि तात्कालिक सुख को कुछ सप्ताह या महीनों के लिए टाल जाना मंजूर कर लें तो वे यह समझ जाएंगे कि तात्कालिक कठिनाइयां समृद्धि की ओर ले जाती हैं. वे महसूस करने लगेंगे कि दांपत्य विच्छेद से उन की मूलभूत समस्याएं बदलने या मिटने वाली नहीं हैं. ये समस्याएं नए रिश्ते में भी वे संभवतः साथ ही ले जाएंगे.

४. **दायित्व निभाइए.** दांपत्य जीवन वैसा ही बनेगा जैसा आप और आप का साथी उसे बनाएंगे. यह तथ्य आप को स्वीकार लेना चाहिए कि किसी भी तरह की असहमति जीवन साथी को ज़्यादा नहीं बदलने वाली. अगर आप किसी को सचमुच बदल सकते हैं तो सिर्फ़ अपने आप को.

एक बार एक साहब ने मुझ से कहा ''मैं ने दुआ की है कि मेरी पत्नी की पीने की लत छूट जाए.''

मैं ने पूछा, ''छूट गई?''

वह बोले, ''नहीं. मगर मैं ने उस पर झींकना बंद कर दिया है. मैं ने धीरज धर लिया है. और मेरे ख़याल से एक न एक दिन वह सुधर ही जाएगी.''

मैं भी यही समझता हूं. किसी विवेकी ने कहा है, ''दुआएं हमेशा हालात को तुम्हारे मुताबिक़ नहीं ढाल सकतीं, मगर तुम्हें ज़रूर हालात के मुताबिक़ ढाल सकती हैं.''

५. **समझौता करना सीखिए.** समझौते का अर्थ है. यह समझ कि हर मसले के दो या दो से ज़्यादा पहलू होते हैं. यदि पति ताश खेलने के बजाए ससुराल जाने लगे तो पत्नी शायद बकझक छोड़ देगी. यदि वह बर्फ़ की तश्तरियां पानी से भर कर फ्रिज में रखने लगे

तो वह शायद टूथ पेस्ट ट्यूब को बीच से दबाना बंद कर देगी.

मेरी पत्नी और मैं ने ३६ वर्ष पूर्व गांव में मकान ख़रीदा तो मुझे इस बात से बड़ी परेशानी हुई कि सड़क पार वाला विशाल भुसौरा सारे नज़ारे पर कैंची सी चलाता रहता था. २२ साल तक मैं इसी मारे परेशान रहा. तब, क़रीब आधे मील दूर, मुझे एक और बिकाऊ मकान की ख़बर मिली. यहां से दृश्य निर्बाध था. मगर पत्नी पुराने मकान को बहुत चाहने लगी थी. फिर भी उसे लगा कि २२ साल तक तो वह अपनी मरज़ी के मकान में रहती रही है, अब अपनी मरज़ी के मकान में रहने की बारी मेरी है. अतएव उस ने सहर्ष मकान बदलना स्वीकार कर लिया. समझौता विवाह के यंत्र को चिकनाता रहने वाला तेल है. बेहरहाल मेरी पत्नी अब हमारे नए मकान को भी बहुत चाहने लगी है.

६. सराहने की कला आज़माते रहिए. हर किसी को सराहना के बोल सुहाते हैं. सहज ही प्रशंसा के दो शब्द कहने की कला सीखने में हर्ज़ क्या है? "मेरे ख़याल से तुम जैसे/जैसी भी हो, ग़ज़ब हो!" साथी को कभी कभार ऐसी प्रशंसोक्ति से मोह लेने में क्या कठिनाई है? साथी को अप्रत्याशित रूप से एक गुलदस्ता भेंट करना, या उसकी भीतरी जेब में, या तकिए तले एक नन्हा सा प्रेम पत्र रख देना ऐसी ही मनमोहक मुद्राएं हैं.

मेरे ख़याल से उपन्यासकार आर्नल्ड बैनेट ने कहीं टिप्पणी की है कि (उन्हें प्रतीत होता है) विवाह पति व पत्नी के बीच भद्रता का नामोनिशान क़रीब क़रीब मिटा देता है. ऐसा होना ज़रूरी नहीं. अपने जीवन साथी का दिन में कम से कम एक बार अभिवादन करना, उसे सराहना सीखिए. परिणाम स्वरूप फूटने वाली प्रेम की अजस्र धारा से आप चकित रह जाएंगे.

मेरे एक मित्र ने विवाह की तुलना एक ऐसे पड़ाव से की थी जो पर्वतारोहियों के दल किसी दुर्गम शिखर पर चढ़ने से, पहले बनाते हैं. यह शिखर ही जीवन है. हर आरोही अलग अलग मार्गों से चोटी पर पहुंचने का प्रयास करता है; लेकिन तलहटी वाला शिविर ही वह पड़ाव है. जहां एक दूसरे को जाना समझा जाता है, योजनाएं बनाई जाती हैं तथा निर्णय किए जाते हैं; जहां हर आरोही भोजन, आत्मीयता, अथवा शरण पाने या नए अभियान के लिए नई शक्ति जुटाने के लिए लौट लौट कर आता है.

यदि आप विवाहित हैं, अथवा विवाह करने वाले हैं, तो मन में ऐसे सुनियोजित शिविर की छवि स्पष्ट उतार लीजिए—जिस में प्रेम और अंतरंगता के उपकरण हों भरोसे, विश्वास और निष्ठा की आत्मीयता हो. हर तरह के उतार चढ़ाव में ईश्वर से आशीर्वाद मांगिए और पूरे आत्मविश्वास से जुट जाइए जीवन के सर्वोच्च शिखर के अभियान पर.

पादरी साहब वयस्कों के लिए होने वाले रविवारीय समागम में उस दिन नहीं आए. अगली बार उन्हों ने पिछले सप्ताह की सभा का हाल जानने के लिए पूछा, "पिछले सप्ताह किस बारे में चर्चा हुई?" सभी का एक स्वर था, "आप के बारे में."

—'द लूथरन'

काहिरा के उपेक्षितों का उद्धा

**गंदी बस्ती में रहने वाले उन बेच
की ज़िंदगी में आशा की कि
लाई एक बूढ़ी कमज़ोर औ**

डेबोरा काउले

फोटो: गगड अन कौमी

रोज़ तड़के अपनी सलेटी पोशाक पहने सिर पर स्कार्फ़ बांधे एक छरहरी, महिला काहिरा के उस बहुत ही सघन उप मतारिया से तेज़ तेज़ गुज़रती दिखाई प है. समीप के काथलिक गिरजे में कुछ प्रार्थना करने के बाद वह ट्राम से नगर के

ज़बालीन: बच्चों और वयस्कों के बीच सिस्टर इमै

पर पहुंचती है. वहां से रेत और पपड़ियाए ड़ भरे रास्ते पर २० मिनट तक चलने के बाद दरिद्रता और दुर्गंध से पगी गंदी बस्ती में ती है.

एक किलोमीटर क्षेत्र में फैली काहिरा के ,० अस्पृश्यों की बस्ती को बहुत से लोग की सब से गंदी बस्ती मानते हैं. चपटियाए के ड्रमों की चादरों, चिथड़ों , गत्तों और टूटे कनस्तरों की दीवारों की बनी झोंपड़ियों में कियां नहीं हैं. छत के नाम पर खजूर सूखे पत्तों का छाजन है. यहां की एक खोली में एक एक दर्जन 'अछूत' रहते क्वाड़ के एक टीले पर बनी इन झोंपड़ियों के ओर कूड़े के ढेर सड़ांध मारते रहते हैं.

स्ती के सैकड़ों मर्द और बच्चे सुबह तीन बजे हैं और अपने अपने ठेलों में गधे जोत कर का कूड़ा इकट्ठा करने निकल पड़ते हैं. र होते होते वे लौटने लगते हैं. ठेलों से कूड़ा कर वे उन में से कवाड़ में विकने, मरम्मत के इस्तेमाल करने या अपने मवेशियों को ने लायक हर तरह का रद्दी माल बीनने में जाते हैं. बाक़ी या तो जला दिया जाता है, या छोड़ दिया जाता है.

बी महिला के बस्ती में पहुंचते ही कूड़े व के ढेर पर नंगे पैर ऊधम मचाते बच्चे उस टनों और हाथों से लिपटने लगते हैं. उस के पर मुसकान थिरक उठती है और छः सात को अपनी बांहों में ले कर वह उन्हें रती है, "कैसे हो?" औरतें "दीदी मोनी, मोनी" पुकारती झुग्गियों से निकल पड़ती हैं. क को नाम से बुलाते हुए धाराप्रवाह अरबी में न सब से दुआ सलाम करती है, घर के ल पूछती है, किसी की बीमारी की ख़बर पा सिला बंधाती हैं, किसी ने कोई अच्छा काम हो तो शाबाशियां बरसाने लगती है.

आशा की किरण. मलिनता में डूबी इस बस्ती में घूमती मुसकराती आशा की इस किरण का नाम है सिस्टर मारी इमैनुएल. ७४ वर्षीया सिस्टर मारी का जीवन ११ वर्षों से इन अछूतों को समर्पित रहा है, जिन्हें वह स्नेह से "मेरे ४,००० भाई बहन" कहती है.

भूरी, मृदु आंखों और भव्य व्यक्तित्व वाली यह महिला हमेशा जुटी ही रहती है. और हर बात के बाद कहती है, "या अल्लाह! चलें. ज़िंदगी बड़ी प्यारी है." एक बार काहिरा में मैं उन के साथ थी. सड़कों पर दोपहर के यातायात का हंगामा था. सहसा एक जगह उन्हों ने कार रोक दी और लपकती हुई ट्रैफ़िक की चार पांतें लांघ कर सड़क के पास, रेलवे स्टेशन के बाड़े में कूद गईं और भागते भागते प्लेटफ़ार्म पार कर गईं. और उसी तरह दौड़ती दौड़ती लौटीं तो ग़ुस्से से भरी थीं. बोलीं, बस्ती वालों के लिए ज़रूरी सामान का पार्सल अभी तक नहीं आया. "उन की आस पूरी न होने से मुझे बड़ी कोफ़्त होती है ..."

ये लोग—ज़बालीन—काहिरा के सब से ग़रीब तो नहीं, मगर तिरस्कृत लोग हैं. सिस्टर इमैनुएल के पुराने मित्र, काहिरा के एक काथलिक हाई स्कूल के निदेशक ब्रदर बूला कहते हैं, "इन के बच्चे अनपढ़ ही रहते हैं, क्योंकि मां बाप उन्हें बस्ती से बाहर पढ़ने नहीं भेजते. न कोई बाहर वाला उन के पास आता है. कोई उन का हालचाल पूछने नहीं आता. सिवा सिस्टर इमनुएल के." बूला बताते हैं, "वे आईं तो इन अछूतों को उन्हों ने सीधे छाती से लगा लिया." एक बार मैं ने एक मेहतर को कहते पाया, "ज़िंदगी में सिस्टर जैसी किसी (भद्र महिला) ने पहली बार मुझे इतने प्यार से पुकारा है."

इन मेहतरों के प्रति सिस्टर इमैनुएल का लगाव १९७१ से शुरू हुआ था. एक दिन काहिरा स्थित पोप के धर्मदूत आर्कबिशप ब्रूनो हाइम उन से बोले, "क्यो न हम (दोनों) वह बस्ती देख आएं

जहां मेरा नौजवान मेहतर रहता है.'' उस दिन की याद कर के वह आज भी सिहर उठती हैं, ''वह गंदगी भरा मरुस्थल था. बस्ती की गलियों से गुज़रते हम ने देखा जगह जगह संतरों के छिलके बिखरे पड़े हैं. कूड़े की यही एक चीज़ सूअर नहीं खाते थे. इधर उधर जानवर मरे पड़े थे. जहां देखो कूड़े के ढेर सड़ांध मार रहे थे.

''और बच्चों के नन्हे नन्हे सूखे चेहरों पर मक्खियां भिनभिना रही थीं. एक ने सड़ा टमाटर उठाया तो मैं चिल्लाई, 'इसे मत खाना.' लेकिन उस की मां हंस पड़ी और बोली, 'अरे, यें तो खा लेता है' इस वाक्य ने मुझे मर्माहत कर डाला. वे बच्चे ... मुझे उन के लिए कुछ करना ही होगा.''

यूं ६२ वर्ष की उम्र में उन्हों ने अपने मंडल नोत्र दाम देसियों से अनुमति मांगी, स्थानीय अधिकारियों को अपने इरादों का क़ायल किया, और बस्ती में आ गईं. अपनी छोटी सी झुग्गी में तिलचट्टों और चूहों के साथ बसर करतीं, और ज़बालीन का आम खाना—पकी फलियां, रोट, पनीर और सड़े फल— उन की ख़ूराक़ बन गया. एक रियायत उन्हें ज़रूर मंज़ूर करनी पड़ी. यह था अलहदा शौचालय—ज़मीन में खोदा एक सूराख़, जिस के ऊपर छप्पर डाल दिया गया था.

शुरू शुरू में वह घर घर जा कर मेलजोल बढ़ातीं; ज़मीन पर बैठ कर महिलाओं के साथ चाय पीतीं और बच्चों के साथ खेलतीं. लेकिन ज़बालीन का विश्वास जीतना आसान नहीं था. कुछ मुसलमान समझते कि वह उन का मज़हब बदलना चाहती हैं. इस के अलावा ज़बालीन बाहरियों, ख़ास कर यूरोपियों के मुतल्लिक बड़े शक्की थे. आर्कबिशप हाइम बताते हैं, ''विरोध इतना प्रबल था कि शुरू शुरू में उन पर पथराव की भी कोशिश की गई.'' मगर सिस्टर इमैनुएल कहती हैं, ''अड़चनें आगे बढ़ने की शक्ति बढ़ाने के लिए ही होती हैं. अतः मैं बढ़ती रही.''

इस से पहले सिस्टर ने ऐसी कठिनाइयां नहीं झेली थीं. १९०८ में ब्रसल्स के एक पीते फ़्रांसीसी परिवार में माडलेन सिनक्विन के में जनमी इमैनुएल की ज़िंदगी सुख सुविधा कटनी चाहिए थी. लेकिन १२ साल की स्कूल की तरफ़ से उसे एक किताब इनाम में जो अफ़्रीका के ईसाई मिशनरियों के बारे ''तभी मैं ने निश्चय कर लिया कि मैं भी मि बनूंगी.'' २० साल की उम्र में वह नोत्र देसियों में भरती हो गईं. और बन गईं इमै —जिस का शाब्दिक अर्थ होता है, 'ईश्वर साथ है.'

युवा नन—साध्वी—ने तुर्की और ट्यूनी स्थित फ़्रेंच स्कूलों में अध्यापन कार्य से अपना ध जीवन शुरू किया. ब्रसल्स, इस्तंबूल और पेरिस ने अध्ययन किया और दर्शन शास्त्र, यूनानी लातिनी में डिगरियां हासिल कीं. साठादि के मध्य नोत्र दाम देसियों के सिकंदरिया (मिस्र) स्थित स्क अध्यापनार्थ भेजा गया. यहां सिस्टर इमैनुएल ने कि कानवेंट स्कूलों में ग़रीबों के बजाए अमीरों के पढ़ने आते हैं. इस स्थिति के प्रति उन का असंतोष ही गया, और स्थिति में सुधार लाने के लिए उ आर्कबिशप हाइम से सहायता मांगी. हाइम ने ज़बालीन बस्ती दिखा दी.

मुहब्बत ख़ुदा है. प्रारंभिक कुछ सप्ता दौरान सिस्टर इमैनुएल के लिए संदेह और विद्वे दीवारें भेदना आसान नहीं था. एक रात वह लौटीं तो उन्हों ने पाया कि पानी का कलसा और झुग्गी के बाहर लगा हैंड पंप टूटा प बस्ती अंधेरे में डूबी हुई थी. हर कोई सोया था. वह पंप ठीक करने की कोशिश करने ल आवाज़ सुन कर एक पड़ोसन चली आई. पानी ले लीजिए. ''मैं अभिभूत हो उठी. अपने घर की आख़िरी बूंद तक मुझे दे दयालुता की यह भंगिमा उन के प्रति ज़

बदलते रुख़ का प्रतीक बन गईं. बस्ती की
नें खुल कर उन से दुआ सलाम करने लगीं,
तक कि भोजन तक करने का इसरार कर
नीं. सिस्टर इमैनुएल ने समय नहीं गंवाया.
के वालों को समझा बुझा कर उन्हों ने एक
की झुग्गी साफ़ कराई और पुरानी पेटियों के
: जोड़ कर दर्जन भर बेंचे तथा कुछ मेज़ें बना
काहिरा की फ़्रांसीसी कैथलिक संस्था शरिता
थोड़ा अनुदान मांगा और पेंसिलें, चाक और
ज़ ख़रीद कर लगभग एक दर्जन बच्चों को
ई अपने नए किंडरगार्टन में पढ़ाने लगीं. पाठ-
ा के दरवाज़े पर बस्ती के एक आदमी ने
ने के बड़े बड़े अक्षरों में लिख दिया 'अल्लाह
ा!'—मुहब्बत ख़ुदा है! इस के नीचे उस ने
यों के सलीब पर मुसलिम धर्म चिह्न ईद का
बना दिया.

कुछ ही दिनों में रोज़ सबेरे झुग्गी में पढ़ने आने
बच्चों की संख्या ५० से ऊपर पहुंच गई.
ा की ओर से हर बच्चे को एक नीला सूती
और कपड़े का बस्ता दिया जाता. उन दिनों
याद करते हुए सिस्टर इमैनुएल बताती हैं,
च्चों को रोज़ ५ घंटे एकदम साफ़ सुथरी धज
ख कर मुझे कितनी ख़ुशी होती थी!'' और
ही महत्वपूर्ण बात यह हुई कि माता पिता का
वच्चों के प्रति गर्व बढ़ता गया और 'बाहरी
' के प्रति संदेह मिटता गया. जल्दी ही पढ़ाई
रखने के लिए वे अपने बच्चों को पड़ोस के
में भेजने पर भी रज़ामंद होने लगे.

तब सिस्टर इमैनुएल ने महिलाओं की ओर
दिया. दोपहर एक बजे किंडरगार्टन बंद होने
बाद उन्हों ने सिलाई, बुनाई और क्रोशिए का
सिखाने की कक्षाएं शुरू कर दीं. प्रारंभिक
हिचकिचाहट के बाद, कुछ ही दिनों में लगभग
महिलाएं इन कक्षाओं में नियमित रूप से आने
इन में से कुछ तो एक स्विस मित्र द्वारा भेंट
दी गई सिलाई मशीन चलाने में भी माहिर हो गईं, और
'बाहर के काम' से मिलने वाली मजूरी के ज़रिए अपनी
अपनी गृहस्थी के लिए अतिरिक्त आय के अलावा
आत्म गौरव भी कमाने लगीं.

इस के बावजूद पाठशाला कई घंटों के लिए
ख़ाली छूट जाती. अतः सिस्टर इमैनुएल ने सांध्य-
कालीन प्रौढ़ शिक्षा की कक्षा शुरू कर दी. पहले
पहल कोई नहीं आया. सारा दिन काम करने के
बाद ज़बालीन पीने और जुआ खेलने में मगन हो
जाना ही पसंद करते थे. लेकिन सिस्टर इमैनुएल ने
हिम्मत नहीं हारी. धीरे धीरे कुछ लोग अक्षर ज्ञान
के लिए आने लगे. फिर कुछ और आए. होते होते
शाम की कक्षा में इतने 'छात्र' हो गए कि सिस्टर
को एक पेशेवर शिक्षक रखना पड़ गया. २८
अक्तूबर १९७७ को सिस्टर इमैनुएल अपनी ज़िंदगी
का 'सब से ख़ूबसूरत दिन' मानती हैं. इस रोज़
मिस्र के उप गृह मंत्री कमाल ख़ैर अल्लाह ने ३६
मेहतरों को अरबी लिपि सीखने के लिए उपाधि पत्र
दिए थे. इन्हीं प्रमाण पत्रों के आधार पर इन में से,
और कालांतर में अन्य उपाधि धारियों में से कई
काहिरा में बेहतर नौकरियां करने लगे.

ज़बालीन का आत्म गौरव बढ़ाने की सिस्टर
इमैनुएल की शिक्षा नीति का एक अंग यह भी है
कि इन्हें ज़िम्मेदारी उठाना सिखाया जाए. बस्ती की
एक औरत के बच्चे को सूखा हो गया. उस ने
सिस्टर से कहा कि वे उस के चंगे हो जाने के
लिए ख़ुदा से दुआ मांगें. सिस्टर बोलीं, ''ठीक है,
मैं दुआ करूंगी. लेकिन तुम्हें बच्चा डाक्टर को
ज़रूर दिखाना होगा.'' सिस्टर के एक ब्रिटिश
कूटनीतिज्ञ मित्र माइकेल टाबिन ने, जो उन दिनों
काहिरा में थे, इस घटना का ज़िक्र करते हुए
बताया, ''सिस्टर के कहने का मतलब यह था कि
मैं तो अपना फ़र्ज़ निभाऊंगी, पर तुम्हें भी अपना
फ़र्ज़ निभाना होगा. और ज़बालीन औरतें अब उन
का मंशा समझने लगी हैं.''

कारवां बनता गया. बस्ती के घिनौने परिवेश को बदलने की दिशा में यह फ्रांसीसी साध्वी अधिक कुछ नहीं कर सकती थी. झुग्गियां ख़त्म करने लायक़ धन उस के पास नहीं था. लेकिन उस ने निश्चय किया कि हर साल कम से कम एक हफ़्ते के लिए बस्ती के बच्चों को गंदगी और बदबू भरे उस वातावरण से दूर रखेगी. १९७३ में उस ने राष्ट्रसंघीय विकास कार्यक्रम के काहिरा प्रतिनिधि से ८०० मिस्री पौंडों का अनुदान मांगा. धन मिलने पर उस ने १९५४ माडल की एक मिनी बस खरीदी. इस का नाम रखा 'माब्रूका' (निमतज़ाद), और अपने विद्यार्थियों में से ३० मेधावी विद्यार्थियों को १० दिन की सैर पर सिकंदरिया के समुद्र तट पर ले गईं. पहली बार समुद्र देख कर बच्चे मानो मतवाले हो उठे. कुछ विदेशी मित्रों से मिलने वाले चंदों तथा काहिरा के एक भूतपूर्व टैक्सी चालक जार्ज ज़ाकी (जो अपना काम छोड़ कर मिनी बस का पूर्णकालिक शोफ़र बन गया है) की बदौलत सिस्टर इमैनुएल अब हर साल कई मनोरंजन शिविर आयोजित करती हैं.
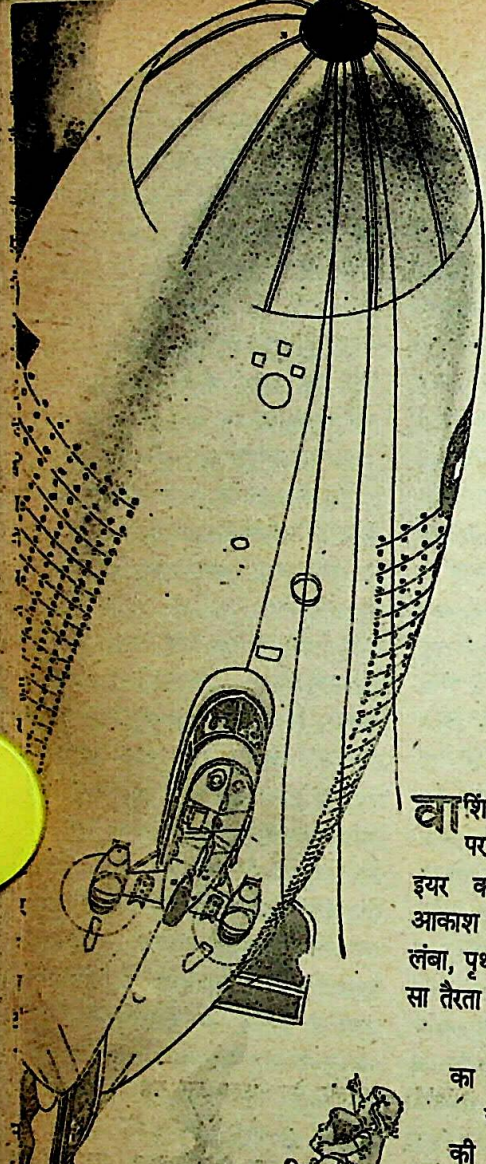
सागर तट के मनोरंजन शिविरों की लोकप्रियता ने सिस्टर इमैनुएल में बस्ती से बाहर एक स्थायी सामुदायिक केंद्र होने का सपना जगा दिया, ताकि "उन के लिए अपने अवमाननापूर्ण परिवेश का एक विकल्प जुट सके." १९७५ में उन्हों ने काहिरा के दक्षिण में स्थित नगर बेनीसुएफ़ के काप्टिक आर्थोडाक्स चर्च के बिशप एथानैसियास से अनुरोध किया तो बिशप महोदय ने प्रस्तावित केंद्र का प्रमुख बनना स्वीकार कर लिया. साथ ही उन्हों ने केंद्र के क्रिया कलाप में सहायता देने के लिए अपनी पांच साध्वियों की सेवाएं भी भेंट कर दीं. कार्थलिक, काप्टिक और मुसलिम समर्थकों का एक उत्साही दल सामुदायिक केंद्र की योजना बनाने में जुट गया. बिशप एथानैसियास के शब्दों में यह "हर धर्मावलंबी का मिला जुला प्रयास था."

सहायता विदेशों से भी मिली. सिस्टर इमैनुएल कई साल से लगभग २०० मित्रों को नियमित से "काहिरा से चिट्ठियां" भेजती रही थीं. ज़बालीन के बीच उन के जीवन के जीवंत होते थे. सामुदायिक केंद्र के बारे में जिज्ञासा वालों की संख्या बढ़ने लगी तो १९७६ में धन संग्रह और भाषण आदि के लिए यूरोप होते हुए अमरीका व कनाड यात्रा पर निकल गईं. दान राशियों की झड़ी गई. सामुदायिक केंद्र का काम शुरू करने लाय लाख डालर की रक़म जमा हो गई.

तदुपरांत स्थानीय अधिकारियों से बातचीत के उन्हों ने मेहतरों की बस्ती से क़रीब ५०० दूर ढाई एकड़ ज़मीन हासिल की. निर्माण शुरू हो गया. २९ मार्च १९८० को मि स्वर्गीय राष्ट्रपति की पत्नी जिहान सादात ने की पहली इमारत—दुमंज़िले किंडरगार्टन स्कूल उद्घाटन किया. आज 'सालाम सेंटर' (शांति नामक यह केंद्र आधे से ज़्यादा पूरा हो चु इस की छः पक्की इमारतें ज़बालीन के ही पड़ोस के गांवों का भी उत्थान कर रही हैं. औषधालय से हर हफ़्ते लगभग १०० रोगी इयां लेते हैं. एक प्रसूतिगृह और एक दंत चि लय शीघ्र ही खुलने वाले हैं. दूसरी इमा साक्षरता, सिलाई तथा कढ़ाई की कक्षाएं लग साथ ही इस में एक प्रशिक्षण केंद्र है. अंततः हर सत्र में लगभग १०० बच्चे रेडि टेलीविज़न की मरम्मत, बेल्डिंग पलस्तर पलंबरी का काम सीख सकेंगे.

सिस्टर इमैनुएल आज भी प्रति दिन काम करती हैं. उन्हें ब्रांकियल निमोनिया हो गया ने उन्हें निकटवर्ती मतारिया के एक फ़्लैट पर मना लिया. लेकिन ठीक होते ही वह भाइयों व बहनों के निकट संपर्क में रहने के फिर उसी झुग्गी में लौट आईं. वह क "उन्हें स्नेह करने (की क्षमता) ने ही मुझे उ

ज़मीन पर खड़ा हो तो लगता है कि छत पर हवामुर्ग़ा डोल रहा है, आसमान में उड़ता हो तो लगता है कि बादबान ताने कोई नाव लहरों के संग संग बही जा रही है

ग़ुब्बारा यान

डेविड मारगन

वाशिंगटन के डलेस अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर भीड़ में उत्तेजना फैली हुई थी—गुडइयर का ब्लिंप 'अमेरिका' अभी अभी आकाश में प्रकट हुआ था. लगभग ६० मीटर लंबा, पृथ्वी से ३०० मीटर की ऊंचाई पर स्वप्न सा तैरता यह हवाई दानव नीचे उतरने लगा तो विमान यात्री अपने जेट की उड़ान का समय भूल कर खिड़कियों के पास जमा हो गए. छः आदमियों ने उस की थूथन से लटकते रस्से झपट खींच कर उसे उस के एक पहिए पर टिका दिया. देखने वाले हर्ष विभोर हो उठे. ध्वनि की

गति से भी तेज़ उड़ने वाले विमानों तथा चंद्रमा को जाने वाले राकेटों के इस युग में भी ब्लिंप सब को मोह लेता है.

'अमेरिका' अतीत का स्मृति चिह्न है. बीसादि. तथा तीसादि दशकों में बीसियों ब्लिंप और उन के कड़ियल काठी भाई बंधु ज़ैपलिन आसमान छानते रहते थे. विमान अभी किशोरावस्था में थे. अधिकतर लोग समझते थे कि हवाई यात्रा का भविष्य गैस चालित वायुपोतों पर ही निर्भर करता है. आज केवल छः ब्लिंप बचे हैं, जिन में से चार गुडइयर के पास हैं—टेक्सास में 'अमेरिका', फ़्लोरिडा में 'ऐंटरप्राइज़', कैलिफ़ोर्निया में 'कोलंबिया' और रोम (इटली) में 'यूरोपा'. अन्य दो ब्लिंप जरमनी में हैं.

ब्लिंप से आदिम कोई वायुयान नहीं हो सकता. गुडइयर के ब्लिंपों में यद्यपि राडार लगे हैं, परंतु इन के स्वरूप और आकृति में लगभग पचास वर्षों से कोई अंतर नहीं आया. ये पुराने जीवावशेष इतने आराम से उड़ते हैं कि सीट पर बैठे यात्री को पेटी तक नहीं बांधनी पड़ती. और उड़ाने में सुगम इतने हैं कि अकसर चालक यात्रियों को ही संचालन सौंप देते हैं. एक जंबो जेट उड़ने से पहले उड़ान पट्टी पर दौड़ने और हवा में उठने के दौरान जितना ईंधन फूंक देते हैं, उतने ईंधन में एक ब्लिंप कई दिन तक आठ आठ घंटे उड़ता रह सकता है. ख़ास बात यह है कि ये यात्रा के संभवतः सर्वाधिक सुरक्षित माध्यम हैं. गुडइयर के ब्लिंपों में, पिछले ५२ वर्ष में, १० लाख से भी अधिक यात्री उड़ चुके हैं, किंतु आज तक किसी को कोइ चोट तक नहीं आई.

मज़ा यह कि यात्रा करते समय भीतर बैठे यात्री खिड़की खोल कर बाहर भी झांक सकते हैं. हाल ही में मैं 'अमेरिका' द्वारा यात्रा कर रहा था तो चालक लारी चैंबर्स एनापलिस (मैरीलैंड) स्थित मेरे घर के ऊपर से उड़ा. पृथ्वी से १८० मीटर ऊपर चक्कर काटते हुए उस ब्लिंप के इंजन बंद कर दिए तो आ बिलकुल बंद हो गई. मैं ने ब्लिंप की खि से सिर निकाल अपनी बेटी को पुकारा—" कैमिली!" वह दौड़ी दौड़ी बाहर आई, मुझे ब्लिंप में घर के ऊपर चक्कर काटता हैरान रह गई.

मात्र जन संपर्क कार्य के लिए बना गुड का प्रत्येक ब्लिंप लगभग ५० लाख डालर पड़ता है. अमरीका में रहने वाले तीन बि साल में सात महीने आकाश विहार करते हैं. के स्वदेश भ्रमण का ख़र्च आता है, लग ६० लाख डालर. हाल के एक सीज़न में इन अमरीका के २८ राज्यों में २,२२,००० ह किलोमीटर की उड़ानें भरी थीं. हर ब्लिंप साइडों में चार रंग के ७,५०० बल्ब लगे हैं! कंप्यूटर नियंत्रित ये बल्ब जब संदेश प्रस करने के लिए चमकते हैं तो ग़ज़ब के बनते हैं, जो पृथ्वी पर १,६०० मीटर नीचे देखे जा सकते हैं. गुडइयर के अनुमानानुसा वर्ष लगभग छः करोड़ व्यक्ति इस या ब्लिंप की झलक पाते रहते हैं. लोग बांहें कर ब्लिंप का अभिवादन करने पहले तो घ निकल पड़ते हैं; लेकिन फ़ोटो खींचने लिए कैमरा लेने फिर भीतर लपक पड़ते हैं. टायलेट पेपर फैला कर गृह वाटिकाओं के पौधों पर गुज़रते हुए ब्लिंप को अभिनंदन स भेजते हैं. सब से अधिक प्रचलित स है—"हलो ब्लिंप!"

आहिस्ता, आहिस्ता. क्यों हर कोई ब्लि को प्यार करता है? इस का सासेज लंबूतरा आकार देख कर हंसी छूटती है, आता है. लोग इसे पुराना मित्र समझते गुडइयर के ब्राडकास्टिंग मैनेजर मिकी वि

शब्दों में, "ब्लिंप आकाश में चलते, भोले ले बूढ़े संत बरनार्ड कुत्तों* जैसे लगते हैं."

ब्लिंप की खरामां खरामां रफ़्तार भी इस के दू का एक कारण है. पक्षी अकसर उसे पीछे ड़ देते हैं, राजमार्गों पर भागती मोटरें उस से गे निकल कर लुप्त हो जाती हैं, पर ब्लिंप त सा, हौले हौले घुरघुराता, अपेक्षाकृत कम ्राती युग की यादें बिखेरता रहता है. ठीकठाक धी हवा हो तो ब्लिंप ज़मीन पर ८० लोमीटर प्रति घंटे की रफ़्तार से चलने वाली र जितना तेज़ उड़ लेता है, मगर प्रबल उलटी ा में वह शायद उलटा भी उड़नें लगे.

ब्लिंप काउंट फ़र्डीनैंड वान ज़ैपलिन द्वारा ,१० में विकसित गैस चालित, भीमकाय युपोत से बहुत भिन्न है. 'ज़ैपलिन' का ढांचा ठोर था और उसे हवा में उठाने पैठाने वाली ड्रोजन गैस अत्यधिक ज्वलनशील थी, ब कि ब्लिंप में अज्वलनशील हिलियम गैस तेमाल की जाती है. अपने स्वर्ण काल में लिन अतलांतक पार नियमित नागरिक उड़ानें ते रहे थे, किंतु १९३६ में लेकहर्स्ट (न्यू र्सी) के हवाई अड्डे पर उतरते समय जब २४५ टर विशाल ज़ैपलिन 'हिंडनबर्ग' फट कर ट हो गया और उस पर सवार ७० यात्रियों में ३६ मर गए तो गैस वाले वायुपोतों का ़माना भी मानो लद गया.

ब्लिंप द्वितीय महायुद्ध में एक सर्वथा नए म के लिए चुने गए. अमरीकी जल सेना को डुब्बियों से बिंधे चिंधे समुद्रों में अपनी गारदों चौकसी की ज़रूरत ने आन घेरा तो धीमी तार से उड़ने और किसी भी जगह पर मंडराते रहने में कुशल ब्लिंप बड़े उपयोगी साबित हुए. जल सेना ने १६८ ब्लिंप इस्तेमाल किए थे, और इन के अनुरक्षण में रखे गए ८९,००० जलपोतों में से एक भी पोत डूबने की ख़बर कभी नहीं मिली.

गुडइयर के ब्लिंप ६ टन भारी और ५८.५ मीटर लंबे होते हैं, परंतु इन के रुपहरे डैकरान के झोले, जिन में गैस भरी होती है, कमीज़ के कालर से मोटे नहीं होते. प्रत्येक ब्लिंप को हवा में उठाने और थामे रखने का अधिकांश उद्यम उस के झोले में भरी २२,००० डालर मूल्य की हिलियम गैस ही करती है. दो छोटे छोटे इंजन थोड़ी सी अतिरिक्त शक्ति के अलावा आगे बढ़ने और दिशा नियंत्रण की क्षमता प्रदान करते हैं. यात्री तथा चालक झोले के नीचे लटके एक छोटे से कंपार्टमेंट में बैठते हैं. पृथ्वी पर ब्लिंप अपने एक पहिए पर खड़ा रहता है. और उस की थूथन १० मीटर विशाल अलूमीनम के एक खंभे से बंधी रहती है. यूं ज़मीन पर खड़ा, हवा के संग संग इधर उधर डोलता ब्लिंप हवा का रुख़ बताने वाले ग़ुब्बारे जैसा लगता है.

उड़ान के समय ज़मीन के हवाई अड्डे के १६ कर्मियों के दल में से ६ ब्लिंप को उस की थूथन के रस्से पकड़ कर साधते हैं, जब कि बाक़ी अमला उस के भार को उड़ान के अनुरूप बनाने के लिए गिट्टी की बोरियां घटाता या बढ़ाता रहता है. "अप शिप!"—यह निर्देश मिलते ही पायलट इंजनों का एक्सिलरेटर दबा देता है, ग़ुस्से से भरे वे घास काटने की मशीन जैसे ग़ुर्रा उठते हैं—और लो, ब्लिंप ५५ किलोमीटर रफ़्तार से उड़ने लगा!

आसमान में ब्लिंप यूं उड़ता है मानो समुद्र में बादबान वाली नाव लहरों के संग उठती

*सी आंखों व उदास चेहरे वाला, लंबोतरा, मशक्कती कुत्ता. बरनार्ड, सहायता, तत्परता और कर्म निष्ठा का प्रतीक माना ा है. इस का नाम संत बरनार्ड पड़ने का कारण संभवतः है कि आल्प पर्वत में संत बरनार्ड की सराय में रहता था

गिरती बही जा रही हो. इसे साधना बेहद आसान है. पायलट की सीट की बग़ल में एक बड़ा सा चक्का होता है, जिसे घुमाने से ब्लिंप ऊपर या नीचे उठाया या लाया जाता है; और पैरों के पास लगे पैडलों द्वारा इसे दाएं या बाएं मोड़ा जाता है.

कैसे कैसे मुसाफ़िर! लोग अकसर पूछते हैं, "पहिया पंचर हो गया तो क्या करोगे?" पर जवाब सुन कर वे शायद हैरान रह जाएंगे. "ख़ास कुछ नहीं करना होता." झोले की हिलियम का दबाव इतना कम रखा जाता है कि पायलट को निरापद नीचे उतरने के लिए काफ़ी समय मिल जाता है. लारी चैंबर्स का कहना है, "इस के छेद से गैस निकलने का मतलब है पीने की नली से बड़े तालाब को ख़ाली करना."

तूफ़ान भी ब्लिंप के लिए कोई समस्या नहीं हैं. पायलट तूफ़ान से कन्नी काटने की कोशिश करता है, पर न काट सके तो ब्लिंप झोंकों के साथ निश्चेष्ट मुड़ता बढ़ता चला जाएगा.

मगर गीध ब्लिंप के लिए कभी कभी ज़रूर सिरदर्द बन जाता है. इस की परछाईं पड़ने पर संभवतः उसे वहम हो जाता है कि वह किसी भीमकाय बाज़ की ज़द में है. और वह आतंकित हो जाता है. बड़े बड़े खेतों के हज़ारों गिध ब्लिंप की परछाईं के कारण भगदड़ पर उतारू हो जाते हैं. और गुडइयर को कई बार इस भगदड़ के कारण फ़सल को पहुंचने वाली क्षति की भरपाई करनी पड़ी है. अतः चालकों को हिदायत दी गई कि वे खेतों से दूर रहें.

गुडइयर के ब्लिंप हर वर्ष लगभग ४० क्रीड़ा तथा मनोरंजन उत्सवों का, विभिन्न दूरदर्शन तंत्रों के लिए, निःशुल्क प्रसारण करते हैं. इस का कारण यह है कि कंपनी के अफ़सर अपनी ९ अरब डालर की वार्षिक बिक्री का काफ़ी श्रेय इन ब्लिंपों को ही देते हैं.

ब्लिंप जब भी किसी बड़े शहर में पहुंचता है, गुडइयर के स्थानीय दफ़्तर में टेलीफ़ोनों की बाढ़ सी आ जाती है. ये सब ब्लिंप में सैर करने के इच्छुक होते हैं. इन में कुछ ही अनुरोध रखे जाते हैं; क्योंकि एक ब्लिंप में एक साथ केवल ६ व्यक्ति यात्रा कर सकते हैं. लेकिन इन के अमले बड़े नरमदिल होते हैं. एक बार एक ब्लिंप फिलाडेलफ़िया में खड़ा था. एक आदमी १५० किलोमीटर दूर कनैटिकट से अपनी ९० वर्षीय मां को ले आया और अमले से बोला, "यह मरने से पहले एक बार ब्लिंप में सैर करना चाहती है." कर्मी तत्काल मान गए. एक पायलट ने पांच वर्ष की एक बच्ची को अपने ब्लिंप का संचालन थमा दिया. लौट कर पुलकित नन्ही ने अपनी मां से कहा, "मां मैं ने ब्लिंप उड़ाया." सुन कर ब्लिंप के कर्मियों की आंखें उमड़ आईं, क्योंकि बच्ची रक्त कैंसर की मरीज़ थी.

एक बार शाम ढले अमला विश्राम की तैयारियां कर रहा था कि एक बुज़ुर्ग ने बच्चों की तरह ठुनक कर कहा, हमें भी ब्लिंप में घुमा दो. वे मान गए, और शायद परेशान भी हो गए, क्योंकि उड़ान के दौरान बुढ़ऊ ने अंट शंट सवालों का तांता लगा दिया. बाद में इस बुढ़ऊ ने अमले के सदस्यों को आभार भरा एक पत्र भी लिखा, जिस के नीचे हस्ताक्षर थे अमरीका के एक भूतपूर्व सेनापति और अवकाशप्राप्त राष्ट्रपति आइज़नहावर के.

ब्लिंप जहां चाहे वहां तत्काल ही नहीं पहुंच सकता. हां ये ब्लिंप लोकोपकार एवं जन हित संबंधी संदेश निःशुल्क पहुंचाने अथवा प्रदर्शित करने का दायित्व अवश्य निभाते हैं.

मौत के मुंह से निकलने के बाद ही मैं ने जाना कि हर पल हर दिन का महत्व है क्योंकि

ज़िंदगी हज़ार नेमत है

बिल वारनाक

पहले पहल मैं ने नेमती ज़िंदगी का ज़िक्र अपने दोस्त स्किनर से सुना था. वह ८१ साल का था, मगर अच्छा ख़ासा पाठा साठा दिखता था. एक दिन उस ने मुझे मुड़े तुड़े, स्याह पड़े धातु के तीन टुकड़े दिखाए.

"जानते हो, ये क्या हैं?"

बताना मुश्किल था. मैं ने अनुमान से कहा, "सिक्के."

"ठीक. एक फ्रैंच सू है और दो इंगलिश पेनियां हैं. पर बताओ इन्हें हुआ क्या है?"

"आग में झुलस गए हैं."

"क़रीब क़रीब," वह हंसा. "मेरी टांग में से निकले हैं."

दुर्घटना प्रथम विश्व युद्ध के दौरान हुई थी. बमबारी के हो हल्ले और अंधेरे के कारण वह अपने ही तोपख़ाने की भारी तोप के सामने पड़ गया था.

स्किनर की वरदी ख़ाक हो गई और पतलून की अगली जेब में पड़े तीन सिक्के उस की रान में गहरे चिंध गए. डाक्टरों ने इन में से दो सिक्के निकाल दिए. मगर महीनों बाद, जब घाव क़रीब क़रीब भर गए तो उन्हों ने उसे अपंग बता कर वापस आस्ट्रिलिया भेज दिया.

एक वर्ष बाद स्किनर की जांघ के पिछले हिस्से में एक भारी भरकम गूमड़ नासूर हो गया; और फिर फूट गया. डाक्टर ने ख़ूब खोज कर आख़िरकार स्याह पड़ चुका सू भी निकाल दिया. तोप के गोले ने इस सिक्के कं टांग तक धकिया दिया था. सौभाग्य से यह हड्डी और धमनी से बाल बाल परे गुज़रा था.

"तभी से," स्किनर बोला, "मैं नेमत पर ज़िंदा हूं. ५१ साल हो गए हैं, और सोचो इस अरसे का हर दिन मेरी ज़िंदगी को वरदान में मिला है." और सिक्कों को सहेज कर संदूक़ में वापस रख उस ने कहा, "इन्हें मैं ने इस लिए रख छोड़ा है कि मेरा सौभाग्य मुझे याद रहे. लेकिन इस बीच, आज पहली बार मैं ने इन्हें निकाल कर देखा है. यूं तो हर नई सुबह ही इस सौभाग्य की याद दिलाने को काफ़ी है."

साल भर बाद जब मेरा गुरदा ख़राब हो गया, तभी मेरी समझ में आया कि नेमती ज़िंदगी से स्किनर का तात्पर्य क्या था.

उन दिनों यानी १९७० में आस्ट्रेलिया में गुरदा मशीनें पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध नहीं थीं. डाक्टर लोग इस दुखद दुविधा से जूझते रहते थे कि जान बचाने वाली मशीन किसे दिलाई जाए और किसे नहीं.

अस्पताल में मशीन का इंतज़ार करते करते मरीज़ यह जान जाता था कि उस की जान का

दुश्मन रोगी कौन है. मौत रातों में हड़बड़ा कर जगाती रहती थी. सहसा लपकते क्रंदम, पड़ोसी शैया के हरे परदे का जल्दी से उठ कर गिर जाना, मरीज़ की छाती पर झुके डाक्टर की एक झलक, घबराई और जल्दी मचाती फुसफुसाहटें और सुबह एक बिस्तर ख़ाली मिलता. दवाओं की गनूदगी में बाक़ी मरीज़ रात सिधारे साथी का चेहरा याद करने की कोशिश करते, पर कर न पाते.

निराशा छा जाती, और भय नहीं, कुंठा दबोच लेती. भला यह भी कोई मरने का वक्त है? कितना कुछ अभी करना है, कितना कुछ अभी अनकहा है!

लेकिन डाक्टर का चेहरा देख कर ही मरीज़ भांप जाते कि उन का वक्त चुक गया है. डाक्टर खीझ कर कहते, ''मशीनें अभी नहीं हैं.''

किंतु जो भी कामचलाऊ उपचार वे करते, उन से कुछ ही राहत जुट पाती और अनमने से मरीज़ मौत की बाट जोहने लगते.

तभी कहीं एक चमत्कार होता है. गुरदा मशीन के सहारे जी रहे एक मरीज़ में गुरदा प्रतिरोपित कर दिया जाता है. एक मशीन ख़ाली होने वाली है. डाक्टर एक अन्य रोगी को ख़ुशख़बरी देता है, जो रुंधे हृदय से मानो सज़ाए मौत से बरी होने का फ़रमान सुन रहा हो... ''आंज तुम्हारी बांह में एक ट्यूब लगाई जाएगी और कल से तुम मशीन पर होगे.''

डाक्टर के कहने का आशय है, ''कल से तुम नेमती ज़िंदगी का इनाम पाओगे.''

अस्पताल के डायलेसिस यूनिट में पहली बार आप को मशीन के सहारे जीने वाले अन्य रोगी मिलते हैं. उन के चेहरे जर्द हैं, पर आंखों में चमक है. ये इनामी ज़िंदगी जीने वाले लोग हैं, और इन्हीं की शकुन भरी सोहबत में अब आप को जीना है.

अंग को सुन्न कर देने वाला टीका दे कर सर्जन बांह में 'शंट' —गुरदा मशीन से जोड़ने वाली ट्यूब— के लिए चीरफाड़ करता है.

नर्सें हमदर्दी से हौसला बंधाती हैं, ''तुम्हें इस की आदत पड़ जाएगी,'' और कुछ दिनों में आदत पड़ भी जाती है. हर रोज़ अस्पताल के बिस्तर पर आप की आंख खुलती है तो आप ख़ुद को गुज़रे कल से बेहतर महसूस करते हैं. कितनी अनहोनी बात है कि होनी टल गई! तुम्हें मर जाना चाहिए था, मगर तुम जीवित हो. क्या भविष्य नाम की ऐयाशी अभी बाक़ी है?

दो एक हफ़्ते बाद आप को घर जाने की इजाज़त मिल जाती है. घर की सीढ़ियां चढ़ते चढ़ते आप हलकान हो उठते हैं. पर अपनी चहेती आरामकुरसी में धप से बैठ कर कितनी राहत महसूस करते हैं.

''अच्छे हो?'' आप का दोस्त पूछता है.

आप फीकेपन से खीसें निपोर देते हैं. मुसकराना अब आप को फिर से सीखना होगा. ''मौत की छुट्टी हो गई?'' हां, हो तो गई. पर कैसे हुई?

आप की दुनिया फूलने फलने लगती है. आप के दृष्टिकोण में एक नया, मधुर आयाम जुड़ने लगता है. अरे! ग्रीष्म लता को इंच दर इंच बालकनी की रेलिंग तक बढ़ते आप ने आज तक कैसे नहीं देखा था? और जाले मकड़ियों पर निगाहें क्यों नहीं पड़ीं?

भोर फूटने की तीखी, प्यारी रोशनी रोज़ मानो समारोह बन जाती है. मामूली चीज़ें भी आप में झुरझुरी दौड़ाने लगती हैं. ग्वाले के आने की झनझन और खनखन; बढ़ी दाढ़ी का

नरम चादर में अड़ना; लकड़ी के फ़र्श पर आप के चलने की चरमराहट. टेलीफ़ोन के तारों से आने वाली दोस्त की आवाज़ दूर गगन से आने वाली चिड़िया की चहचहाहट जैसी लगती है. हंसी गूंजने पर आप चकरा उठते हैं—अरे! यह तो मेरी ही हंसी है!

मुझे इनामी नेमती ज़िंदगी का तोहफ़ा मिले १० साल हो चुके हैं. इन में से चार वर्ष मैं ने—जब तक मेरे शरीर में सफलता पूर्वक गुरदा प्रतिरोपित नहीं किया गया था—मशीन के सहारे काटे थे. इस के बाद मेरी जीवन शैली सामान्य हो गई.

लोग हमदर्दी से पूछते हैं, "मशीन के सहारे ज़िंदगी काटना बड़ा तकलीफ़देह रहा होगा."

मैं कहता हूं, "नहीं!"

वह कहते हैं, "हां, पर तुम में हिम्मत थी." पर मैं जानता हूं कि यह सच नहीं है. मैं ने वही किया था जिस का मनुष्य में बेजोड़ सामर्थ्य है: मैं टिका रहा.

मैं टिका रहा . . .इस तथ्य ने मुझे समय और जीवन की नश्वरता के प्रति अत्यंत सचेत कर दिया है. मैं ने पाया है कि मनुष्य के पास किसी भी विफलता, वस्तु, व्यक्ति अथवा संभावना से संत्रस्त होने का समय नहीं है.

बरसों तक, एक हद तक झोंक में ही, मैं सफलता पूर्वक व्यापार करता रहा हूं. इसे मैं ने लेखन अपनाने के मारे छोड़ दिया. लेखक बनने की ललक तो मुझे हमेशा थी मगर लेखन आज़मा देखने की हिम्मत कभी नहीं थी. सफलता पाने के लिए मैं वह सब करता हूं जो, मेरे ख़याल से, करना ज़रूरी है, मगर जब पारिश्रमिक के बजाए प्रायः अस्वीकृति पत्र आता है तो मैं क्षुब्ध नहीं होता.

अब मैं अपनी कमियों के लिए अपने आप को प्रताड़ित करने अथवा नवान्वेषित क्षमताओं के लिए ख़ुद पर लट्टू होने में अपना अमूल्य समय नष्ट नहीं करता. मैं जो हूं, जैसा हूं, उसे सहज स्वीकारने में इनामी ज़िंदगी ने मेरी बड़ी मदद की है.

दोस्त कहते हैं, "तुम बदल गए हो." और मैं जानता हूं कि मैं बदल गया हूं.

लोगों के साथ मेरे संबंध अब कहीं स्पष्ट और सरल हो गए हैं. मैं अब यह अपेक्षा नहीं करता कि कोई मुझे पसंद करे ही, या मुझ से सहमत हो ही; अथवा वह मेरी ख़ुशियों का भागीदार बने ही. लोग ऐसा करें तो मुझे प्रसन्नता अवश्य होगी; पर न करें तो भी मुझे मंज़ूर है. क्योंकि अब मैं किसी से भयभीत नहीं हूं, और अपना मत अभिव्यक्त करने का मुझ में अधिक साहस है.

बिना ख़ुद को बदले आप नेमती ज़िंदगी का महत्व नहीं समझ सकते. आप बढ़चढ़ कर अपने स्वास्थ्य की रक्षा करते हैं, चुस्त दुरुस्त रहने का उद्यम करते हैं, और अधिकाधिक अनुभव संजोने के प्रयास करते हैं.

नेमती जीवन जीने वाला मेरा दोस्त स्किनर आज भी भला चंगा है, और दिन प्रति दिन अधिक परिपक्व, अधिक क्षमाशील और अधिक उदार होता जा रहा है. ९१ वर्ष की उम्र के बावजूद वह स्वास्थ्य की जम कर देखभाल करता है. जम कर पढ़ता है. दिन प्रति दिन की घटनाओं में रुचि लेता है, वस्तुस्थिति से लोहा लेता है. कभी डरता नहीं. सहज भाव से हंसता हंसाता है और एक नायाब साथी है.

जीवन पा कर, जीवित होने का दैनंदिन चमत्कार हम सब के भाग्य में है. दोस्तों! हर पल, हर दिन का महत्व समझो. हम सब की ज़िंदगी हज़ार नेमत है.
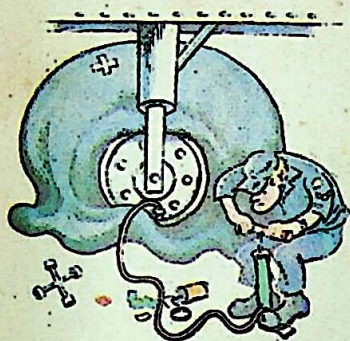
जय जवान जय मुसकान

मेरा एक फ़ौजी दोस्त असम की मीज़ो पहाड़ियों से ड्यूटी कर के लौटा. उस के अनुभव सुनने के लिए हम एकत्र हुए, तो वह बताने लगा कि वहां कितने बड़े बड़े मच्छर पाए जाते हैं. हमारे पूछने पर कि तुम वहां सो कैसे पाते थे, उस ने जड़ा :

"अरे भाई, यह तो बड़ा आसान था. बिस्तर में जाने से पहले व्हिस्की के दो चार बड़े पेग चढ़ा लेता बस. आधी रात मैं धुत्त रहता और बाक़ी रात वे."

—वी आर देशपांडे, रामपुर

हमारी बटालियन ने अनजान इलाके में पड़ाव डाला. इधर अंधेरा घिरने लगा और उधर गोलाबारी की बौछार के मारे जिस का जिधर सिर समाया, जगह देख कर घुस गया.

आधी रात को एक साथी ने मदद के लिए पुकार मचाई, तो सब चौकस हो गए. पर वह कहां था, इस का कुछ पता न चल सका. धीरे धीरे उस की चीख पुकार भी बंद हो गई. रात के उस घुप्प अंधेरे और ऊपर से बमों की मार के आगे सब लाचार थे. चाह कर भी कुछ न कर पाने की बेबसी सब पर तारी थी.

भोर के उजाले के साथ शव की खोज शुरू हुई, और चटपट समाप्त भी हो गई. वह जवान मुंह चुराता हमारे पास पहुंचा और उस ने रात की भिड़ंत का क़िस्सा सुनाया :

मैं ने जिस जगह शरण ली, इतनी छोटी थी कि मुश्क़िल से करवट ले कर उस में धंस पाया. सीने पर किसी का हाथ पड़ने से मैं जाग गया. तुरंत पलट कर उस पर झपटा, और हम दोनों गुत्थम गुत्थ हो कर इधर उधर लुढ़कने लगे. अब मैं ने मौक़ा मिलते ही अपना किरच निकालना चाहा, तो उधर से ज़रा भी आवाज़ नहीं आई. पर मेरा हाथ हथियार तक पहुंचने से पहले ही उस ने मेरे कूल्हे पर एक हाथ दिया. मगर इस मुष्टि प्रहार में जान नहीं थी. तभी मुझे अपने दाहिने बाज़ू में हज़ारों सूइयां सी चुभती महसूस हुईं. अब मेरी समझ में आया कि आख़िर हुआ क्या था. मेरे ही दाहिने हाथ ने मुझ पर हल्ला बोल दिया था, क्योंकि सोते समय नीचे दब जाने से वह बाज़ू सो गया था.

—फ्रे ली

नौ सैनिक अड्डों में उस कंप्यूटर का क़िस्सा बड़ा मशहूर है जिसे इस तरह बनाया गया था कि वह अलग अलग बौद्धिक स्तरों पर बातचीत कर सकता था. इस के लिए उस में अलग अलग साल का विवेक स्तर भरना पड़ता था.

मशीन की जांच के लिए उस में १८० का विवेक अंक भरा गया. तुरंत वह सापेक्षता के सिद्धांत की व्याख्या करने लगा. और अधिक जांच के लिए उस में १२० का नंबर पंच किया गया, तो वह तत्काल समसामयिक घटनाओं की चर्चा करने लगा.

अंततः अंतिम परीक्षण के लिए ५५ का अंक पंच किया गया. छूटते ही कंपूटर ज़ोर ज़ोर से गाने लगा :

"इस दिल के टुकड़े हज़ार हुए, कोई यहां गिरा कोई वहां गिरा ...."

—डब्लू आर डब्लू

दुनिया का सब से बड़ा और ठंडा टापू जो पिछले १०,००० सालों से वैसे का वैसा है, लेकिन आज उस के रहने वाले २०वीं शती में पहला क़दम रख रहे हैं

ग्रीनलैंड
हिमयुग से नवयुग की ओर

लारेंस एलियट

आसमान साफ़ हो तो अतलांतक पार जाने वाले हवाई जहाज़ से ग्रीनलैंड पर एक नज़र डाल कर हम यह कल्पना कर सकते हैं कि हिमयुग में यह पृथ्वी कैसी रही होगी. तीन किलोमीटर मोटी और १८,३३,८९० किलोमीटर विशाल इस बर्फ़ानी परत में भारत के कई राज्य दब कर रह जाएं और अगर यह सारी बर्फ़ पिघल जाए तो हमारे सारे समुद्रों का जल स्तर वर्तमान स्तर से ६ मीटर ऊंचा हो जाए. किंतु १०,००० वर्ष पूर्व समाप्त हो चुके हिमयुग का यह अवशेष, यह हिमनिधि दीर्घ काल से ज्यों के त्यों है. आजकल यह हिम विस्तार उत्तरी गोलार्ध की जलवायु के साथ साथ उन ५०,००० कठिनप्राण लोगों की जीवन शैली निर्धारित करता है जो बर्फ़ानी तूफ़ानों से बुहारे ग्रीनलैंड के तटवर्ती प्रदेश को अपना वतन कहते हैं.

यह पृथ्वी का सब से बड़ा द्वीप है—डेनमार्क से लगभग ५० गुना बड़ा, मगर २२ लाख वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल वाले इस द्वीप का १५ प्रति शत से भी कम क्षेत्र आवास-योग्य है. बाक़ी क्षेत्र पर्वतीय है या हिमशिख[र] के नीचे दबा है. पतझड़ में इस धरती की खोज करते मैं ने पाया कि यहां के वासी अपनी अपूर्व धरती के सानी हैं. इतिहास बताता है कि अस्तित्व के लिए आजीवन संघर्षरत रहना ही मूल ग्रीनलैंड वासियों की नियति रही है. आज तक उन में से एक भी व्यक्ति इंजीनियर, डाक्टर या नगर निवेशक नहीं बन सका. फिर भी, उत्तर ध्रुवीय जातियों में से केवल यही लोग अपना शासन खु[द] चलाते हैं.

यहां के १०,००० यूरोप वासियों की बा[त] करें तो उन में से अधिकांश साल दो साल के लिए धंधापानी करने आए थे, मगर फिर यहीं रह गए. डीटर ज़िलमान और उन की पत्नी एल्क जैसे नवागंतुकों के अनुसार इस में आश्चर्य की कोई बात नहीं है. जिलमान उस शांति और सौंदर्य की चर्चा करते हैं जो उन के अपने हो कर रह गए हैं—हिमनदों से विदीर्ण तटवर्ती लोहित पर्वत आर्कटिक प्रदेश की अदूषित हवा में १६० किलोमीटर दूर तक स्पष्ट दिखा[ई]

हिमयुग के भव्य पर्वत. वे कहते हैं, "अजीब बात सिर्फ़ इतनी है कि और ज़्यादा लोग अभी तक आ कर नहीं बसे."

डेनमार्क के दंत चिकित्सक ओल मूरप को भी यही आश्चर्य है. १७ वर्ष पहले वे दो वर्ष के सरकारी अनुबंध पर यहां आए थे. फिर यहीं के हो कर रह गए. मूरप मुझे याकेप्स-हाउन की बर्फ़ जमी सड़कों की सैर करा रहे थे. पश्चिमी तट के बीचोबीच ३,५०० बाशिंदों और स्लेज के ४,००० भौंकते कुत्तों की आबादी वाले इस शहर में कोई भी आदमी बियर की बोतलें उठाता नज़र नहीं आता. रसद पहुंचाने वाला जहाज़ यहां महीने में सिर्फ़ एक बार आता है और सर्दियों में तो बिलकुल नहीं.

मैं ने पूछा, "क्यों?" मूरप बोले, "कुछ दिन यहां रहो, समझ जाओगे."

और मैं कुछ दिन रहा. मैं ने रेंडियर के स्टेक और स्थानीय झींगे खाए. होटल की खिड़की के ऐन बाहर खाड़ी से एक भीमकाय हिम शैल की तसवीरें खींची. उस का उद्गम याकेप्सहाउन से इतनी दूर था कि घंटे भर में पैदल पहुंचा जा सके. वहां विश्व का सर्वाधिक प्रवहमान हिमनद एक शानदार दृश्य प्रस्तुत करता है. कुछ कुछ मिनटों के अंतराल पर चरमराता और कराहता वह अपने में से एक हिम पर्वत विच्छिन्न कर समुद्र की ओर बहा देता है. कुछ हिम शैल बीस मंज़िला इमारतों से भी ऊंचे होते हैं और उन का नौ

फ्रेड ब्रूमर

ग्रीनलैंड के पश्चिमी तट पर इंगलफ़ील्ड खाड़ी से उठती ये ऊंची ऊंची चोटियां सदियों से एक ही दृश्य को निहारती चली आ रही हैं
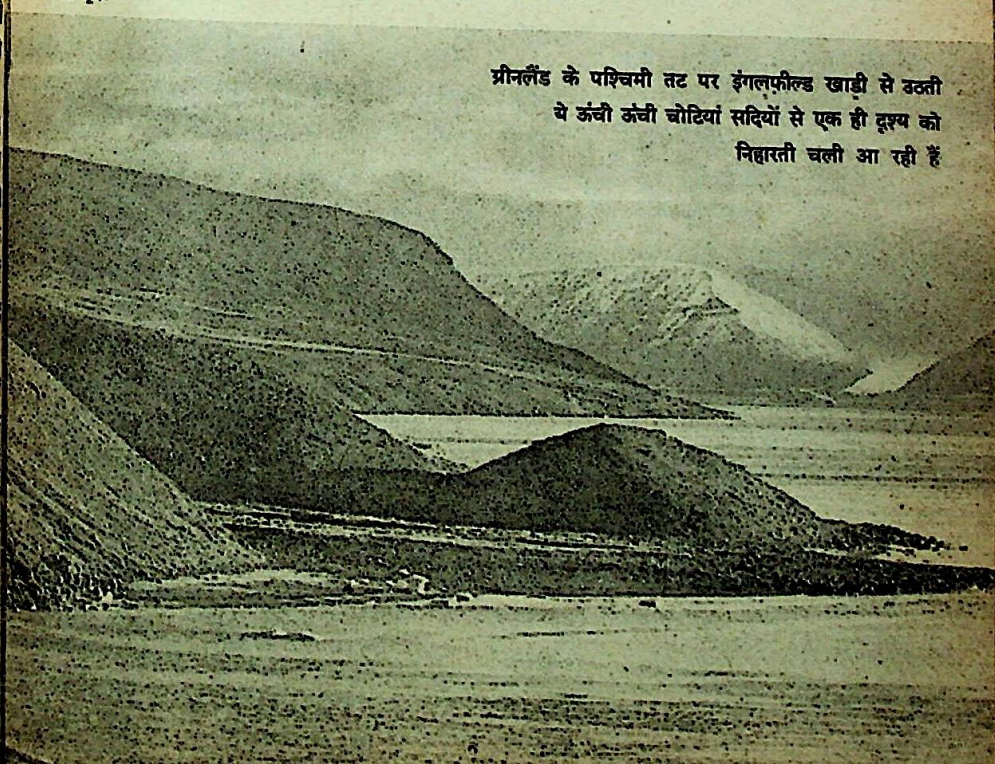
युगों पुराने सरमित्सांक पर्वत की छाया में खड़ी अत्याधुनिक इमारतें (गाटहाब)

गुना हिस्सा पानी के भीतर होता है.

सुदूर उत्तर में उत्तरी ध्रुव से ८०० किलोमीटर से भी कम दूर यह वक़्त के बयाबान में खोया देश है. तापमान का शून्य से ४० अंश कम होना कोई असाधारण बात नहीं है. जीना यहां आठों पहर का संघर्ष है. फिर भी यहां थोड़े से कृतसंकल्प शिकारी बसे हुए हैं और उन का रहन सहन दस शताब्दियों पहले के अपने पूर्वजों जैसा ही है. समुद्र में वे काइएकों (सील मछली की खाल से बनी डोंगी) में बैठ कर सील का शिकार करते हैं, ज़मीन पर स्लेजों से सफ़र करते हैं. कई कई दिन तक बर्फ़ से घिरे विस्तार में कुत्तों के क़ाफ़िले हांकते वे पूर्व निर्धारित हिम कगारों तक जा पहुंचते हैं और सीलों या नारव्हेलों की प्रतीक्षा करने लगते हैं. आज भी यहां के रहने वाले खाने पहनने की अपनी अधिकांश आवश्यकताओं के लिए सील और नारव्हेलों पर ही निर्भर करते हैं.

उत्तरी छोर से २,६७० किलोमीटर दूर सुदूर दक्षिण का प्रांतर चट्टानी कगारों वाले गहरे समुद्री भागों और बौने सरपतों और भोज वृक्षों वाली घाटियों के कारण अपेक्षाकृत अनुकूल प्रदेश है. इस हवाई युग में भी उत्तरी ग्रीनलैंड से दक्षिणी ग्रीनलैंड की यात्रा अत्यंत विकट सिद्ध हो सकती है. काफ़ी नीचे उड़ रहे अपने हेलिकाप्टर से मैं ने देखा कि प्रचंड हवाओं के कारण पर्वत नग्न हो रहे थे और उन के चारों ओर बर्फ़ की परतें जमी थीं. कहीं भी जीवन का चिह्न नहीं था. सहसा हेलिकाप्टर के यात्री व कर्मी एक मादा ध्रुवीय भालू और उस के बच्चे को जैसे तैसे एक तैरते हुए हिम शैल पर चढ़ते देख कर किलक उठे. ज़ल्द ही हम दक्षिणी ग्रीनलैंड की राजधानी गाटहाब पहुंच गए, जहां टेलीविज़न, पक्की सड़कें और छ: छः मंज़िला रिहायशी इमारतें भी हैं.

गाटहाब में ९,२०० बाशिंदों के लिए ११ बेतार नियंत्रित टैक्सियां हैं. यहां के बाशिंदे कहते हैं कि जनसंख्या को देखते हुए टैक्सियों का यह अनुपात विश्व में सब से ज़्यादा है

सील मछली की खाल से बनी डोंगी खेता शिकारी

ग्रीनलैंड की स्त्रियां राष्ट्रीय वेशभूषा में

सड़कों की कुल लंबाई २४ किलोमीटर है, मगर कोई भी सड़क शहर की सीमा से आगे नहीं जाती. वस्तुतः ग्रीनलैंड की १२० बस्तियों और नगरियों में किन्हीं दो को जोड़ने वाली कोई सड़क नहीं है. हां, २० हेलिकाप्टर वाली '.ग्रीनलैंडएयर' विश्व की सब से व्यापक हवाई सेवा है.

ग्रीनलैंड के बर्फ़ीले संसार में भले ही कोई परिवर्तन न होता हो, मगर अधिकांश ग्रीनलैंड वासी एक एक पीढ़ी में मानवीय विकास के कई कई युगों की दूरी तय करते चले आ रहे हैं. यहां के इतिहास की 'सब से महत्वपूर्ण घटना थी १,००० वर्ष पूर्व एस्कीमो पूर्वजों का प्रादुर्भाव. नारवे के एरिक द रेड नाम के समुद्री डाकू ने उन्हीं दिनों इस देश का नामकरण किया था और एक बस्ती भी बसाई थी जो अंततः लुप्त हो गई. केवल एस्कीमो यहां रहने आ गए. उन के पास दो ही रास्ते थे—या तो
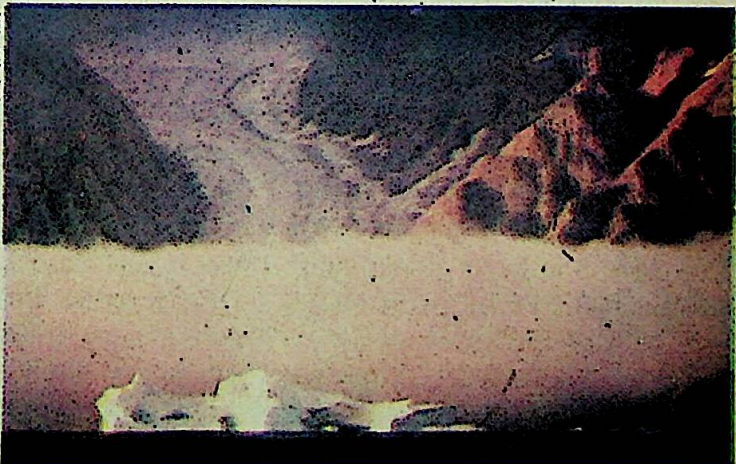
ऊमेनाक फ़िय्यार्ड में कुहासे के भीतर से चमकती ताज़ी ताज़ी बनी हिम शैल

छोटे से याकेप्सहाउन में स्लेज के कुत्तों की संख्या वहां के निवासियों से अधिक है

परिस्थितियों के अनुसार ढल जाएं या मर जाएं. जल्द ही वे इस नए वातवरण के अनुकूल ढल गए.

उन्हें उन १०,००० यूरोपीयों से निपटने में उल्लेखनीय सफलता नहीं मिली जो व्हेल मछलियों का शिकार करने ग्रीनलैंड लौट आए थे. १७वीं शताब्दी में व्हेल के तेल से ही दीए और लालटेनें जलाई जाती थीं. कुछ गोरे एस्कीमीओं को मार देते, कुछ उन से मित्रता कर लेते और कपड़ों तथा बंदूकों के बदले भालुओं की ख़ाल ख़रीद लेते, लेकिन उन की असली देन थी मिलेजुले ख़ून वाली क़ौम—यानी ग्रीनलैंड वासी.

१७२१ में डेनमार्क के लूथरवादी पादरी हांस एगेडे ईसाई धर्म का प्रसार और उपनिवेश बसाने आए. उन्हों ने स्थानीय लोगों को प्रार्थना करना सिखाया, "हमें आज पेट भरने को मांस दो," यीशु को उन्हों ने 'ईश्वर की सील (मछली)' के रूप में प्रस्तुत किया क्योंकि ग्रीनलैंड वासियों ने न रोटी का नाम सुना था न मेमनों का.

अंततः डेनमार्क के लोगों ने सारे ग्रीनलैंड पर आधिपत्य कर ही लिया. उन्हों ने वहां अपनी वाणिज्य चौकियां स्थापित कर लीं और अन्य देशों के लोगों के आने जाने पर रोक लगा दी. यह स्थिति २०० वर्ष तक बनी रही और द्वितीय विश्व युद्ध में डेनमार्क पर नात्सियों के आक्रमण के बाद ही ख़त्म हो सकी. तब ग्रीनलैंड की रक्षा और उस के वासियों की आवश्यकताएं पूरी करने का ज़िम्मा लिया अमरीका ने. चट्टानें रौंद कर हवाई अड्डे बनाने वाले बुलडोज़रों और यूरोपीय रणक्षेत्रों को जाने वाले बमवर्षक विमानों की घड़घड़ाहट ने ध्रुवीय शांति की धज्जियां उड़ा डालीं.

युद्ध के बाद डेनमार्क को जो उपनिवेश लौटाया गया, वह पहले से बिलकुल भिन्न था. ग्रीनलैंड वासियों ने २०वीं सदी की दुनिया की झलक पा ली थी और अब वे उस से

अलग थलग नहीं रहना चाहते थे. अतः डेनमार्क के लोग उसे ध्रुवीय डेनमार्क का स्वरूप देने में जुट गए. मकानों, अस्पतालों, बंदरगाहों और स्कूलों का निर्माण हुआ. सील मछलियां लुप्त होती जा रही थीं. सो सरकार ने करोड़ों की लागत से एक व्यावसायिक मत्स्य उद्योग स्थापित किया, मत्स्य नौकाएं आयात कीं और मत्स्य प्रक्रमण संयंत्र स्थापित किए.

पहले पहल बात बनती दिखाई दी. नया मत्स्य उद्योग देश का नंबर एक उद्योग बन गया और एक तिहाई जनसंख्या का पूरा पूरा भरण पोषण करने लगा. १९६७ में पहली बार क्षय रोग से कोई नहीं मरा. लेकिन कहीं न कहीं कोई कमी रह गई थी. जिस क़ौम का सब से बड़ा गुण जीने की कला ही रहा हो, उस के लिए कल्याणकारी राज्य की योजना ही अजीब थी. उन से उन के हिताहित के बारे में कोई राय नहीं ली गई थी. असमंजस में डूबे ग्रीनलैंड वासी अपने ही जीवन के दर्शक बन कर रह गए. हर बड़े पद पर डेन थे. स्थानीय मान्यताएं निरर्थक हो गई थी, लोगों का आत्म-सम्मान हरहरा गया था.

सेंट्रल हीटिंग से युक्त अपार्टमेंट वाले क़सबे बसाने के लिए ५० गांवों की बलि दे दी गई, मगर ये अपार्टमेंट ग्रामवासियों को कभी अपने घरों जैसे न लगे. ग्रीनलैंड वासी यंत्रचालित नौकरियां करने लगे, टेलीविज़न ख़रीदने लगे और हिमीकृत भोजन गरम कर के खाने लगे. लेकिन इस ज़िंदगी में बिरादरी के पुराने बंधन नहीं थे. इस से जो विघटन हुआ, उस से शराबख़ोरी, आत्महत्याओं तथा निरंकुश व विकृत मूल्यों की बाढ़ आ गई.

तब कुछ ग्रीनलैंड वासियों ने स्वतंत्रता की मांग करते हुए तर्क दिया कि टेकनिकल सहायता और अनुदानों से राष्ट्रीयता नहीं ख़रीदी जा सकती. जनमत संग्रह में भारी बहुमत ने स्वशासन की बात मान ली, जिस में महत्वपूर्ण मामलों में डेनमार्क से संबंध बनाए रखने लेकिन रोज़मर्रा के प्रशासन में ३,२०० किलोमीटर दूर स्थित डेनिश पार्लमेंट का नियंत्रण हटा लेने का प्रावधान था. इस तरह मई १९८० में ग्रीनलैंड की जनता ने अपनी राजनीति, अर्थ व्यवस्था और सांस्कृतिक शिक्षा संबंधी मामलों की बागडोर संभाल ली. ग्रीनलैंड का नया नाम रख दिया गया है कलालिट नुनाट और राजधानी गाटहाब अब नूक कहलाती है.

दुनिया भर की आंखें इस नए राष्ट्र पर लगी हैं. इस का एक कारण यह भी है कि यह टापू उत्तरी अतलांतक की रक्षा योजना की धुरी है.

अमरीका के कुछ सौ वायु सैनिक ही यहां हैं जो युद्ध की पूर्व चेतावनी देने वाले अमरीकी रडार यंत्र की देखभाल करते हैं. यहां से उत्तर अमरीका से जुड़े छोटे से ध्रुवीय संचार मार्ग द्वारा शत्रु के इरादों की सूचना सीधे भेजी जा सकती है. लेकिन पूर्व और पश्चिम में युद्ध छिड़ने पर इस विशाल द्वीप का सामरिक महत्व बहुत ज़्यादा नहीं हो सकता.

ग्रीनलैंड वासी नए युग में क़दम रख रहे हैं और उन्हें विश्वास है कि उन की उद्यमशीलता उन का साथ देगी. सामाजिक मामलों के मंत्री मोज़ेज़ ओलसन का कहना है, "हम सदा प्रतिकूल परिस्थितियों से लोहा लेते रहे हैं. हम जीत कर ही रहेंगे." पादरी अर्लिंग हेग का कहना है "हमारी नियति भी वही है जो हमारे पुरखों की थी अर्थात संसार के सब से अधिक दुर्गम क्षेत्र को बसाने की नियति."
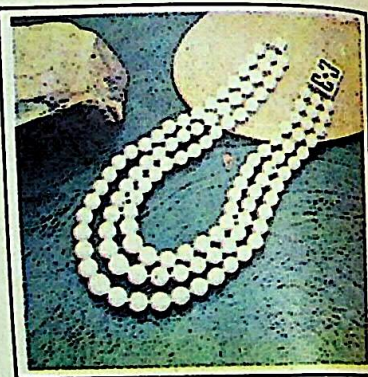
बर्मा में शानदार रत्नों की नीलामी

साल में एक बार विश्व भर से रत्नों के व्यापारी जगमगाते रत्नों, हरितमणियों और मोतियों के लिए बोली लगाने रंगून पहुंचते हैं

विक्टोरिया बटल

पांच कमरे ऐसे लगते हैं मानो अली बाबा की रहस्यमय अंधेरी गुफ़ा में धूप छिटक पड़ी हो—कोई २४,००० नीलम, मानिक, मोती और हरितमणि जैसे अनेक नग जगमगा रहे हैं. बाहर रंगून के ईन्या लेक होटल के आंगन और बरामदों में रखी मेज़ों और बेंचों पर मनों अनगढ़ हरिताश्म पड़ा है, जिस में से छांट तराश कर बहुमूल्य हरितमणि (जेड) निकाला जाता है. यह भव्य दृश्य फ़रवरी १९८१ का है—बर्मा के रत्न, हरिताश्म और मोतियों के १८वें वार्षिक मेले का जो विश्व में इस
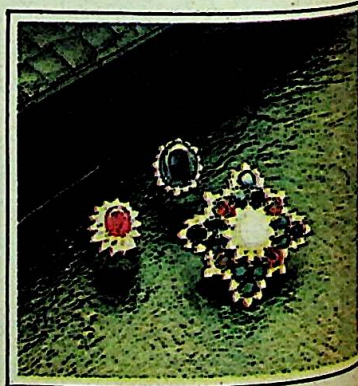
फोटो : आर्थरकान/ट्रियो ... कंपनी लि., हांगकांग

प्रकार की थोक नीलामी के सब से बड़े केंद्रों में से एक है.

साल में एक बार बर्मी सरकार अपने द्वार खोल देती है, और अनमोल रत्नों की नीलामी करती है. इस मेले का आयोजन सरकार द्वारा संचालित म्यानमा जेम्स कारपोरेशन करता है. इस मेले में विश्व भर के जौहरियों को आमंत्रित किया जाता है. फ़रवरी १९८१ में २२ देशों के ३५१ जौहरियों ने ६ करोड़ से भी अधिक रुपए ख़र्च किए.

बरस भर सरकार नीलामी के लिए सैकड़ों टन हरिताश्म ट्रकों में ढो कर रंगून लाती है. जहां व्यापारी इन साधारण से दीखने वाले भूरे पत्थरों में से अमूल्य राजसी हरितमणि ढूंढ निकालने की आशा से जुटते हैं. "सच्चा राजसी हरितमणि बड़ा ही दुर्लभ होता है," हांग कांग के सैमी चो कहते हैं. "यह रत्न चमकीला, गहरा हरा और पारदर्शी होता है. उस में मिलावट, दरार, निशान, या सफ़ेद धारियों जैसा कोई दोष नहीं होना चाहिए. राजसी हरितमणि के १३ मिलीमीटर चौड़े १८ मिलीमीटर लंबे और ७ मिलीमीटर मोटे टुकड़े की क़ीमत दस लाख रुपए तक आंकी जा सकती है. नसीब साथ दे तो टनों भूरे पत्थरों में से राजसी हरितमणि के नाख़ून बराबर एक दो टुकड़े हाथ लग सकते हैं.

(हांग कांग के हरितमणि व्यापारियों का कहना है कि वास्तव में ऐसे मूल्यवान पत्थर, जो बिना कटाई के भी कोई दस लाख रुपए में बिक सकते हैं, प्राप्त करने के लिए तस्करों की शरण लेनी ही पड़ती है. सरकार के प्रयत्नों के बावजूद, अभी तक हरितमणि के व्यापार पर उत्तर के क़बायलियों का ही नियंत्रण है. वे इन रत्नों को तस्करों के हाथ बेच देते हैं, जो अच्छे अच्छे टुकड़ों को देश की सीमा के बाहर थाईलैंड भेज देते हैं.)

विशेषज्ञों की सुविधा के लिए इंपोरियम के अफ़सर खनिज पत्थर को दो और कभी कभी चार टुकड़ों में काट देते हैं, ताकि यह निश्चय करने में उन्हें आसानी हो कि पत्थर में उच्च कोटि के हरितमणि की शिराएं हैं या नहीं. फिर भी हरिताश्म का मूल्यांकन बड़ा ही कठिन कार्य है. हरितमणि के जौहरी पत्थर की कटी सतह पर तीखी किरणें डाल कर झांकते हैं, इस आशा में कि शायद गहरे हरे रंग की शिरा दिखाई पड़ जाए.

रत्नों की जांच परख और नाप तौल बहुत सावधानी से की जाती है.

फोटो : डेविड डिवास
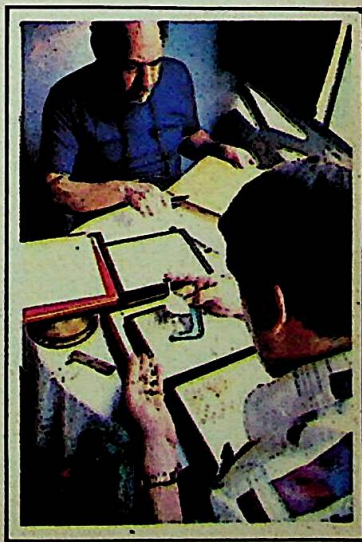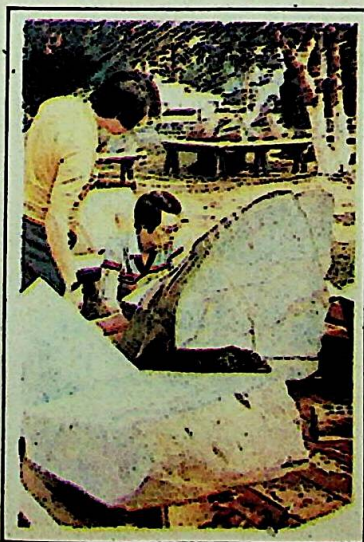
इस बीच दूसरे ख़रीददार मेज़ों पर झुके मानिक, नीलम, और खनिज अश्मों को नापते तौलते रहते हैं. रह रह कर किसी कैलकुलेटर की धीमी भनभनाहट, कभी कभार किसी गणक यंत्र की क्लिक क्लिक, और दबी दबी वाहें और आहें कमरों की ख़ामोशी को तोड़ देती हैं. इस मेले में मांडले के उत्तर पूर्व में कोई ११७ किलोमीटर की दूरी पर वसे पहाड़ी खदान वाले क़सबे मोगोक के आसपास से निकले बहुमूल्य रंग बिरंगे पत्थरों की नीलामी की जाती है. मोगोक क़ीमती मानिकों के लिए प्रसिद्ध है. यहां के मानिक बहुत से राष्ट्रों के मुकुटों की शान हैं.

मोती के द्वीप. बहुतेरे पश्चिमी ख़रीददार हरित-मणि और रत्नों से कतराते हैं, यह सोच कर कि उन की क़ीमत ज़्यादा है वे मोतियों पर ध्यान केंद्रित करते हैं. नायाब बर्मी मोतियों की एक ट्रे को जांचते परखते न्यू यार्क के आभूषणकार आर्थर किंग अंगूर जितना बड़ा एक चमकता नमूना उठा लेते हैं. "यह इस नीलामी का सब से बड़ा मोती है," वह आह भर कर कहते हैं, "केवल बर्मा में ही दक्षिण सागर के इतनी गहरी सुनहरी आब वाले मोती मिलते हैं."

उत्तम कोटि के ये मोती बरमा के पश्चिमी तट के आगे मेरगुई द्वीप समूह में उपजाए जाते हैं, जिन्हें 'मोतियों के द्वीप' कहा जाता है. सीपी बहुल ये स्थान विश्व के चंद सब से महंगे मोतियों को परवान चढ़ाते हैं.

रत्न के गिने चुने सौदागरों को ही अभी तक मोतियों के द्वीप जाने की अनुमति मिली है. इंपोरियम में वर्मी अफ़सरों की बातचीत के किसी टुकड़े की भनक कान में पड़ने से ही ख़रीददारों को मोतियों के उन फ़ार्मों के बारे में कुछ जानकारी प्राप्त होती है. वर्मा के राष्ट्रपति ऊ ने विन का सीपियों के उन क्षेत्रों पर ज़बरदस्त नियंत्रण है. वर्मी सरकार साल में कितने मोती उपजाती है, यह न तो व्यापारियों को मालूम होता है और न स्थानीय कूटनीतिज्ञों को. हां, सब ज़रूर जानते हैं कि बरमी मोती निस्संदेह विश्व भर में उत्तम कोटि के होते हैं. एक व्यापारी ने इस की व्याख्या यूं की, "किसी दूसरे मोती की बनावट इतनी चिकनी और रंग इतना गुलाबी रुपहला नहीं होता."

दो दिन तक व्यापारी बैठे १४,००० सुनहरे और रुपहले मोतियों को जांचते रहते हैं. छलनियों और व्यास मापक यंत्रों से लैस वे प्रत्येक मोती की क़ीमत आंकने का प्रयास करते हैं.

न्यू यार्क के फ़्रैंक मास्टोलोनी अनगढ़ मोतियों के ढेर से एक एक मोती अलग करते हैं, और उन्हें आंकते हैं. दक्षिण सागर के एक दूसरे से मेल खाते मोतियों के हार की क़ीमत तीन लाख डालर (लगभग २९ लाख रुपए) भी मिल सकती है. वह बताते हैं.

क़ीमतें और भी ऊंची जा सकती हैं, क्योंकि बहुत से विशेषज्ञों का विश्वास है कि सीपियों के क्षेत्र कम हो रहे हैं. कभी छिछले पानी में अनगिनत सीपियां हुआ करती थीं. अब फ़ार्म वालों को बहुमूल्य शेलफिश को खोजने गहराई तक जाना पड़ता है. और सीपी में बीज डालने में (यानी सेलखड़ी या सीपी के ही कवच के एक सूक्ष्म कण को गोल कर के सीपी के अंदर रखते समय) उस के नष्ट हो जाने का भी ख़तरा होता है. "आप सीपी में एक बाहरी पदार्थ डाल रहे होते हैं, जो ट्यूमर या डील के समान फैलता है," मास्टोलोनी समझाते हैं. मोती तैयार होने में १८ महीनों से ले कर तीन साल तक लगते हैं, और कभी कभी तो पांच छः साल भी लग जाते हैं. होशियारी इस में होती है कि मोती पूरी तरह बड़ा हो जाने पर ही निकाला जाए. समय से पहले निकाल लेने पर वह बहुत छोटा रह जाता है, और देर होने पर सूख जाता है.

अंधी नीलामी. सरकार का संग्रह देख परख

लेने के बाद ख़रीदार नीलाम के लिए तैयार होते हैं. नीलामी के आरंभ के तीन दिन हरितमणि के लिए रखे जाते हैं, अगले दो दिन मोतियों के लिए, और अंतिम दिन अन्य रत्नों के लिए. हर दिन सवेरे ९ बजे नीलामी करने वाला एक ढेर के नंबर की घोषणा करता है, और सुर में बोलता है, "अब बोली शुरू होती है." बोली बेआवाज़ और गुप्त होती है. मेज़ों पर बैठे जौहरी अपनी बोली लिख कर देते हैं. साथ ही उन की नज़रें प्रतियोगियों पर जमी रहती हैं. "यह वास्तव में आंख मिचौनी का खेल होता है," मास्टोलोनी ऐंड संस इनकारपोरेशन के साझेदार ऐडवर्ड मास्टोलोनी कहते हैं. "आप अपने प्रतियोगी पर आंख गड़ाए यह ताड़ने की कोशिश में लगे रहते हैं कि वह क्या कर रहा है."

इंपोरियम के अफ़सर परंपरागत वस्त्र लुंगियां पहने, कमरे में घूम घूम कर बोलियों के परचे इकट्ठे करते फिरते हैं. उन की जांच कर के वह दो बड़े थालों में से एक में डाल देते हैं. जिन ढेरियों की वास्तव में मांग होती है, उन के लिए सरकारी अध्यक्ष दूसरी बार, बल्कि तीसरी बार भी बोली लगवा सकता है. ख़रीदार किसी ढेरी पर चाहे जितनी बोली लगा सकता है. हर वार जब वह अपनी नई बोली लिख कर देता है, तो समझा यही जाता है कि यह बोली उस की पिछली बोली से बढ़ कर होगी. लेकिन कोई भी विश्वास के साथ कुछ नहीं कह सकता—और यही बात इस नीलामी को अनूठा और दिलचस्प बनाती है. इतनी गोपनीयता के बावजूद, बोलियों में बड़ा ही कम अंतर होता है. कभी कभी तो कोई व्यापारी मात्र एक डालर से बोली जीत जाता है.

दुर्लभ रत्नों पर व्यापारी आधे घंटे या इस से भी अधिक देर तक बोली लगाते रहते हैं, और बोली बढ़ती ही चली जाती है. फ़रवरी १९८१ की नीलामी में अनगढ़ राजसी हरितमणि के बहुमूल्य ढेर पर बोली एक लाख डालर से शुरू हो कर १,५५,००० डालर पर समाप्त हुई थी. नीलाम के अंत तक हरितमणि की १५७ ढेरियां लगभग २७ लाख डालर में, और मोतियों की १५२ ढेरियां ३७ लाख डालर में बिकी थीं, जो एक रिकार्ड था.

बिकने के बाद मोतियों और जवाहरों की थैलियां टीन के डब्बों में बंद कर दी जाती हैं. फिर उन पर कपड़ा चढ़ा और सी कर डब्बों को सीलबंद कर दिया जाता है. अधिकांश व्यापारी ख़रीदा हुआ माल बरमा से अपने साथ ही ले जाते हैं—सिवाए हरितमणि के ढेरों के, जो बक्सबंद कर के समुद्री रास्तों से रवाना किए जाते हैं.

यह वार्षिक इंपोरियम बर्मा की मलिन आर्थिक स्थिति का चमकता हीरा है. १९६२ में सत्ता संभालने पर जनरल ने विन ने हर चीज़ का राष्ट्रीकरण कर दिया था, जिस में उत्तर की जवाहरात की खानें और पश्चिम के मोतियों के क्षेत्र भी शामिल थे. उस के दो साल बाद उन्हों ने विदेशी व्यापारियों को प्रति वर्ष एक सप्ताह के लिए बहुमूल्य रत्न और मोती ख़रीदने आने की अनुमति देनी आरंभ कर दी थी. बर्मियों के स्तर को देखते हुए यह नीलामी भारी दौलत कमा कर देती है, और इस का धूम धड़क्का व्यापारियों और अफ़सरों को समान रूप से आनंद देता है.

मिसाल के तौर पर फ़रवरी १९८१ में आर्थर किंग की ख़ुशी का ठिकाना नहीं रहा था. उन्हों ने सुनहरे आब वाले मोतियों की वह ट्रे जीत ली, जो नीलाम से पहले ही उन के दिल और दिमाग़ पर छा गई थी. वह ढेरी २८,००१ डालर में बिकी थी, और इस में उस नीलामी का सब से बड़ा मोती भी शामिल था. "कैसा चमकता दमकता है," उन्हों ने कहा. उन की आंखें जगमगा उठीं. बोले. "उन हज़ारों स्त्रियों में से, जो इस वर्ष मोती ख़रीदेंगी, कोई एक ही इस मोती को प्राप्त कर सकेगी. क्या उस के लिए यह गौरव की बात नहीं होगी?"◆
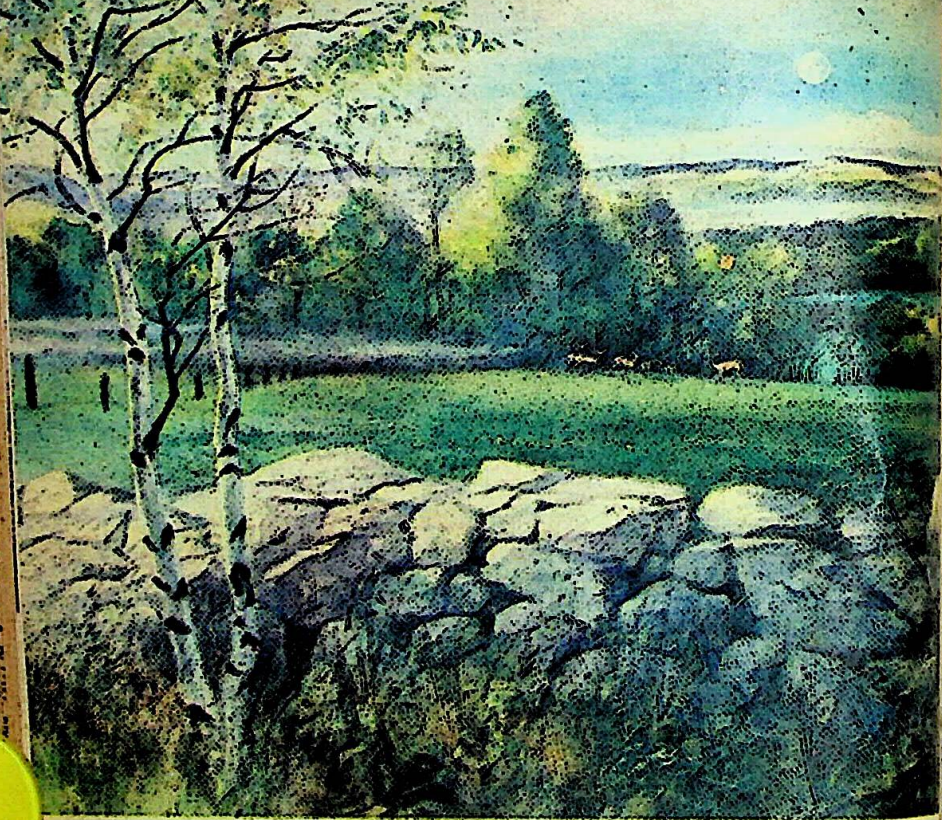
सुबह का जादू

जान ऐलन

घड़ी ने सुबह सुबह छः बजे का अलार्म बजाया ही था कि नींद में बेहोश हमारे आठ वर्षीय लाड़ले का हाथ मेरी छाती पर आ पड़ा. कोई घंटा भर पहले नींद में ही वह मेरे बिस्तर में घुस आया था. किसी बुरे सपने को ले कर कुछ देर बुड़बुड़ाता रहा, फिर सो गया.

मैं ने अलार्म बंद किया और थोड़ी देर तक लेटा रहा. सोचा कि प्रातःकालीन सैर को टाल कर पौन एक घंटे की एक और झपकी ले लूं. सीने पर पड़े हाथ को वैसे ही रहने देने और बगल में सो रही पत्नी की गरमाहट महसूस करते रहने के लिए मैं ने मन ही मन कई बहाने भी गढ़ लिए.

लेकिन आकाश बिलकुल साफ लग रहा था. उसी से अनुमान लगाया कि बीसेक मिनट में

सूर्योदय हो जाएगा. हमारे सुनहरे कुत्ते को सुबह सैर पर जाने की आदत थी. सो किसी प्रकार बेटे का हाथ हटाया, सैर के कपड़े पहने और सीढ़ियां उतर कर नीचे चला गया. कुत्ते ने नियमानुसार बड़े प्यार से मेरा हाथ चाटा.

उसे साथ लिए मैं सड़क पर निकल आया. मैं यह देखना चाहता था कि पूर्णिमा का चांद अब भी आकाश में है या नहीं ? पश्चिमी क्षितिज पर चांद अब भी था—भक्क भक्क सफ़ेद, कल रात से भी ज़्यादा. उस के पर्वत एकदम साफ़ नज़र आ रहे थे.

खेतों को पीछे छोड़ता मैं पहाड़ी की चोटी से बाईं ओर मुड़ा और कोई ३०० मीटर चलने के बाद एक जगह रुक कर पश्चिम में नज़रें दौड़ाईं. चांद अब भी वहीं था. घाटी सुबह के कोहरे में डूबी थी. मैं ने ध्यान से देखा तो घोड़ा फ़ार्म की काली चहारदीवारी नज़र आई. और उस के आगे जंगल. जहां से चरागाह शुरू होती है. ठीक वहीं, छः हिरन दिखाई पड़े—बिलकुल चौकस—कान जैसे राडार की तरह मेरी ओर ही लगे हुए थे.

उसी समय, मैं ने ठीक अपने पीछे रंभाने की आवाज़ सुनी. देखा तो एक भूरी गाय रंभा रही थी मानो कह रही हो दूध दुह लो. उधर सुदूर उत्तर में मुरगे की बांग सुनाई दे रही थी.

सामने आकाश में पूर्णिमा का अस्त होता चांद. नीचे घाटी में बिछी हुई धुंध, गाय और उस का रंभाना, हिरनों का वह समूह—लग रहा था सब कुछ जैसे जम सा गया हो. मुझे लगा जैसे कुछ चीज़ें बिलकुल नहीं बदलतीं. यह चांद, यह कोहरा, ये जानवर, बल्कि दूध और अंडे जैसी चीज़ें भी हज़ारों वर्षों से हैं और हज़ारों वर्षों तक रहेंगी.

कुत्ते ने फिर मेरा हाथ चाटना शुरू कर दिया और इस सारे नज़ारे को अपने आप में समाए मैं ने पैर आगे बढ़ा दिया. सारा दृश्य अपने आप में इतना पूरा था कि वापस लौटने वाले रास्ते पर नहीं जा कर मैं ने इसी रास्ते से वापस लौटने का फ़ैसला किया, ताकि इस दृश्य को एक बार और देख सकूं.

पंद्रह मिनट बाद ही मैं फिर पहाड़ी की उसी चोटी पर आ खड़ा हुआ और पश्चिम में अपनी नज़रें जमा दीं. चांद डूब चुका था. कोहरे की परत तेज़ी से पतली होती जा रही थी. हिरन खेत छोड़ कर दूर कहीं सुरक्षित घने जंगलों में जा छुपे थे. गाय दुही जा रही थी. अब उसे रंभाने की कोई आवश्यकता न थी. मुरगा चुप था.

कुत्ते के लाख ज़ोर मारने के बावजूद मैं वहीं खड़ा रहा—गुमसुम. जिन दो बातों का अहसास मुझे हो रहा था, कोई भी दिन शुरू करने के लिए वे काफ़ी हैं. यदि मैं किसी तरह हिम्मत कर के बिस्तर से बाहर न निकलता, उस नरम गरम बिस्तर को छोड़ने के लिए अपने आप को तैयार न करता तो उस पहले संपूर्ण क्षण को भोगने से वंचित रह जाता. इतना सुंदर, अपने आप में इतना मुकम्मल दृश्य मैं ने आज तक नहीं देखा था. मेरी जानकारी में ख़ूबसूरती के सारे तत्व शायद ही कभी इतनी पूर्णता से एक साथ मिले हों.

इस के साथ ही साथ मुझे यह भी लगा कि यद्यपि हर चीज़ बदल गई है, बड़े बुज़ुर्ग यह कहते भी हैं—परिवर्तन ही शाश्वत नियम है—फिर भी एक बात हर परिवर्तन के बावजूद अटल अमर और अमिट रहेगी. और वह है—आशा किसी ख़ास चीज़ के लिए नहीं, बल्कि जो अत्यंत गहरी है, जीवन की नींव है और हम सब की अपनी अत्यंत निजी संपत्ति है. हालांकि यह हमेशा हमारे मन में रहती है, पर आज सुबह डूबते सफ़ेद चांद, नरम नरम धुंध से भरी घाटी, छः सतर्क हिरन और पशुओं की युगों पुरानी आवाज़ ने इसे छेड़ कर जगा दिया है.

आप सिंगापुर गए और इस होटल में नहीं जा पाए—
मतलब आप सिंगापुर गए ही नहीं

रैफ़ल्स, तेरी शान निराली!

इल्सा शार्प

सिंगापुर के रैफ़ल्स होटल में खाना खाते वक्त एक अमरीकी रईस से उस के दोस्त ने (जो होटल का डाक्टर भी था) पूछा कि वह हमेशा इसी होटल में क्यों ठहरता है. अमरीकी के अनुसार इस का कोइ स्पष्ट कारण नहीं बताया जा सकता. हो सकता है इस के पीछे यहां की पुरानी साज सज्जा, शालीनता और स्नेहिल वातावरण ही हो. उसी समय रूम बाय वहां आया और उस से बोला : "हुजूर! धोबी के कपड़ों की लिस्ट बदलना चाहेंगे? काला मोज़ा आप के जूते में छूट गया था और सूट में तीन रूमाल."

धोबी की लिस्ट सुधार दी गई. रूम बाय ने आगे कहा, "आप की कमीज़ के कफ़लिंक अब ठीक हो गए हैं और मैं ने आप के भूरे जूतों के लिए नए फ़ीते मंगवा लिए हैं."

अमरीकी ने अपने डाक्टर मित्र को संबोधित करते हुए कहा, "अब समझ गए न कि मैं हमेशा रैफ़ल्स में ही क्यों ठहरता हूं! दुनिया के और किसी होटल में तुम्हें ऐसा सत्कार नहीं मिलेगा."

रैफ़ल्स होटल का नामकरण सर स्टैमफ़ोर्ड रैफ़ल्स के नाम पर किया गया है जो सिंगापुर में ब्रिटिश उपनिवेश के संस्थापक थे, सिंगापुर अब एक स्वाधीन राज्य है. ९६ साल पुराना यह होटल आज किसी जीती जागती दंत कथा की तरह निरंतर फूल फल रहा है. आज के कैफ़ेटेरिया युग में इस परिमार्जित होटल को देख कर लगता है जैसे समय पीछे खिसक गया हो. ऊंची ऊंची छतों के नीचे पंखे घरघराते रहते हैं. संगमरमरी टिफ़िन रूम में (सिंगापुर के बड़े बुजुर्ग लंच के लिए अभी तक 'टिफ़िन' शब्द का प्रयोग करते हैं) बेंत की सफ़ेद कुरसियों और बाटिक प्रिंट वाली चादरों से ढंकी मेज़ों के इर्द गिर्द. ख़ूबसूरत पौधों के गमले हैं. पाम कोर्ट में ताड़ वृक्षों के नीचे एडवर्डकालीन संगीत की चुनिंदा धुनें बजती रहती हैं. सारा माहौल चमेली की मस्त ख़ुशबू में डूबा रहता है. रैफ़ल्स अपने अतिथियों को इस सदी के उस आरंभिक काल तक न्योत ले जाता है जब रबड़ बाग़ान के गोरे मालिक आराम के क्षणों में जंगल में काटे महीनों के अकेलेपन से राहत पाने के लिए यहां आया करते थे.

ख़ास बात. रैफ़ल्स में ठहरने का मतलब होता है उस मशहूर संगत में शरीक़ होना जिसे अपने समय़ में नामी गिरामी रईसों और बड़े

देयर इज़ ओनली वन रैफ़ल्स से संक्षिप्त. कापीराइट १९८१ इल्सा शार्प. सोविनिर प्रेस लिमिटेड लंदन द्वारा प्रकाशित.

लोगों का संरक्षण प्राप्त रहा है. मैरी पिकफ़ोर्ड, चार्ली चैपलिन, मारलन ब्रांडो और एवा गार्डनर जैसे फ़िल्मी सितारे; राजा महाराजों में इथियोपिया के सम्राट हैल सिलासी और कंपूचिया के युवराज सिंहानुक, प्रधानमंत्रियों में भारत के प्रधानमंत्री पंडित नेहरू और कनाडा के पियरे त्रोदू यहां के अतिथि रह चुके हैं. सऊदी अरब के शहज़ादा फ़ैज़ल ने अपने पांच दिन के प्रवास के लिए इतने कमरों की मांग की कि कुछ अतिथियों से दूसरे होटलों में ठहरने का आग्रह करना पड़ा. शाहज़ादा फ़ैज़ल के आग्रह के अनुरूप बड़े कमरे न होने के कारण होटल के मैनेजर ने रातो रात दीवारें गिरवा कर चार नए कमरे खड़े करवा दिए.

इस होटल में आने वाले अन्य अतिथियों ने भी कोई कम हंगामा नहीं किया. न्यू ज़ीलैंड के एक एथलीट ने सनक में आ कर डाइनिंग रूम में सजी मेज़ों पर से एक किनारे से दूसरे किनारे तक छलांग लगा डाली और एक चम्मच तक नहीं हिला. धनाभाव के कारण एक और अतिथि बालरूम के पास की सीढ़ियों पर से जान बूझ कर गिर पड़ा ताकि कोई कचहरी के चक्करों से डरने वाला मैनेजर उस के कमरे का बिल न मांगे. और ऐसा कहा जाता है कि नाटकीयता में रुचि रखने वाली एक इतालवी महिला ने ३० कैरेट का एक माणिक सरे आम अपने प्रेमी के गले में ठूंस दिया था.

अगर दुनिया के उन तमाम होटलों की बात की जाए जिन के नाम उन के शहरों के पर्याय बन गए हैं तो सिंगापुर के रैफ़ल्स के अलावा और कोई नाम इतनी जल्दी दिमाग़ में नहीं आता. और न ही कोई और ऐसा होटल है जिसे जानने वालों में हज़ारों वैसे लोग भी शामिल हैं, जो कभी दक्षिण पूर्व गए भी नहीं. लगभग एक शताब्दी से यहां आने वाले लेखक, पत्रकार, नाटककार, और तमाम देशों के संवाददाता उन तथ्यों और कथाओं के ख़ज़ाने में श्रीवृद्धि करते आ रहे हैं जो इस होटल का एक अभिन्न अंग बन चुका है. मसलन उन की लेखनियों ने सिंगापुर की लौंग बार और १९१५ में इस के द्वारा अन्वेषित जिन स्लिंग को (आधा हिस्सा जिन, एक चौथाई चेरी ब्रांड़ी, एक चौथाई फलों का रस, थोड़ा संतरे का मीठा रस तथा बैनेडिक्टाइन शराब की कुछ बूंद मिला कर बनाई गई काकटेल) दुनिया भर में मशहूर कर दिया है.

रुडयार्क किपलिंग और नोएल कावर्ड भी इस होटल के अतिथि रह चुके हैं. नोएल कावर्ड की कहानी 'प्रिटी पाली बार्लो' पर बनी फ़िल्म 'प्रिटी पाली' की शूटिंग भी इसी होटल में हुई थी. मुख्य भूमिकाओं में हेली मिल्स और ट्रेवर हावर्ड थे. बीस आदि दशक में इस होटल के रंगीले अतिथियों पर पैनी नज़र रखते देखा जा सकता था विलियम समरसेट माम को, जो अपनी कहानियों के प्लाट खोजने यहीं आया करते थे. उन दिनों को याद करते हुए रैफ़ल्स के तत्कालीन डाक्टर चार्ल्स विल्सन कहते हैं, "एक बार माम को एक बुफ़े पार्टी में आमंत्रित किया गया माम ने कुछ सिंगापुरी कथाएं सुनने की इच्छा ज़ाहिर की. और बस चारों ओर से कथाएं फूट पड़ीं. लोगों के साथ ऐसी अजीबोग़रीब घटनाएं घटती रहती हैं जिन पर सहसा विश्वास नहीं होता."

माम अपने कमरा नं. ७८ (आम तौर पर माम इसी कमरे में ठहरते थे) के ठीक बाहर 'पाम कोर्ट' में एक मेज़ पर अपनी तीखी कहानियां लिखा करते थे. हमेशा के लिए रैफ़ल्स के साथ जुड़ जाने वाली एक महंगी काकटेल आज भी यहां आए अतिथियों को माम की याद दिला देती है. माम की एक
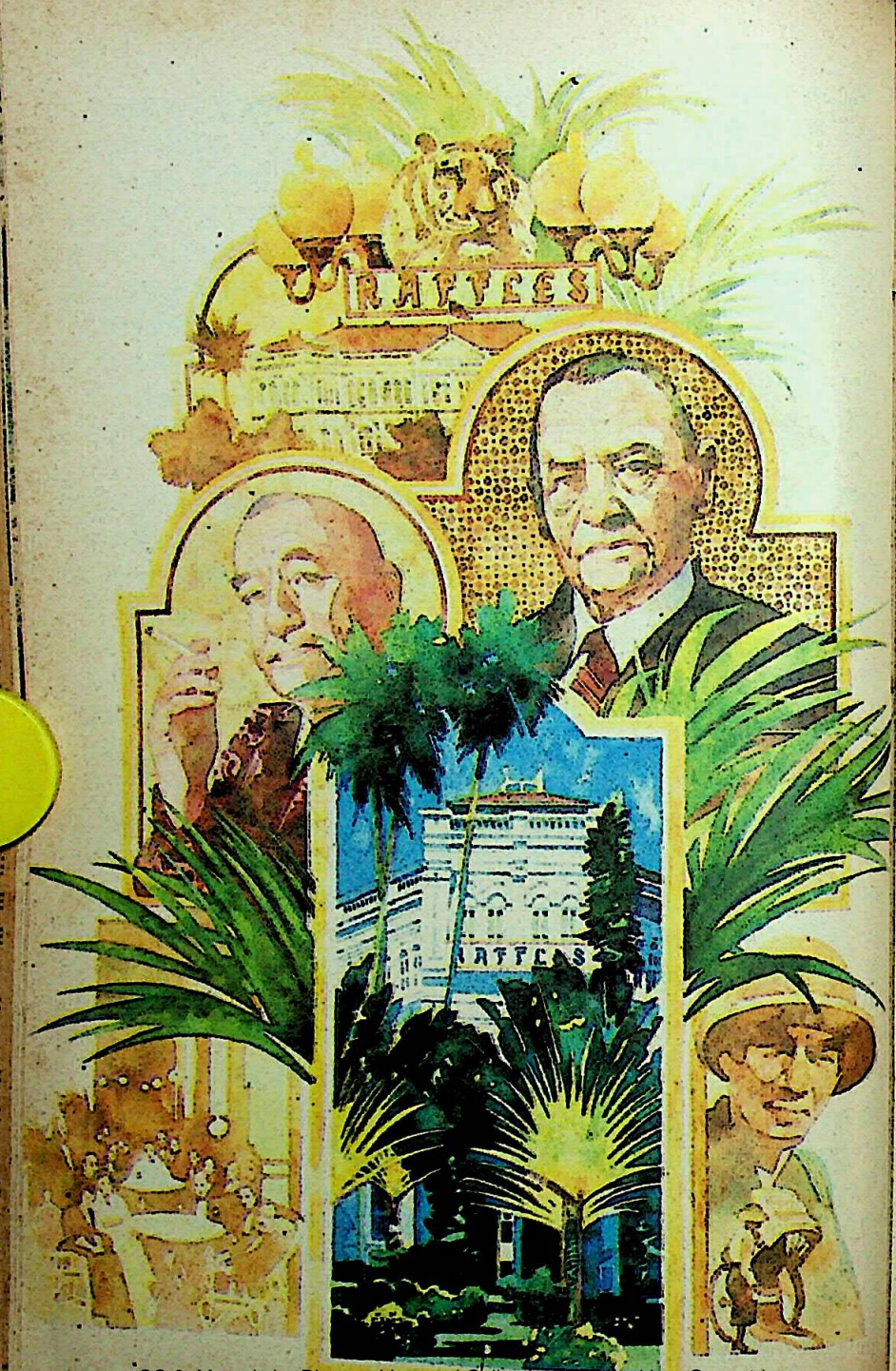
भावनाप्रधान कहानी 'द लेटर' की पात्र श्रीमती ज़ायस की कल्पना की यह क़ीमती काकटेल जिन, वरमूथ, अंडे की सफ़ेदी, अनन्नास का रस और अंगास्तुरा का मिश्रण है.

ब्रिटिश राज का प्रतीक. यद्यपि एक अरसे से रैफ़ल्स को ब्रिटिश उपनिवेशी राज का प्रतीक माना जाता रहा है, फिर भी इस की स्थापना का श्रेय तीन अमरीकियों, टाइग्रान, एविअट और अरशाक सारकीज़ बंधुओं को जाता है. १९वीं शताब्दी के अस्सी आदि दशक में सिंगापुर तेज़ी से दक्षिण पूर्व एशिया की व्यावसायिक धुरी बनता जा रहा था. अवसर को ताड़ कर सारकीज़ बंधुओं ने उस समय की समुद्र तटीय बीच रोड पर एक मकान ख़रीद लिया, समुद्र में ज्वार आने पर पानी अगली चौखट पर थपकियां देता.

कल का वह अदना सा सारकीज़ लाज आज के १२७ रूमों वाले होटल में यूं ही नहीं बदल गया. आसपास की इमारतें ख़रीद कर इस में मिला ली गई हैं. इन में रैफ़ल्स स्कूल की वह इमारत भी है जिस के साथ होटल के भूत का क़िस्सा जुड़ा है. १९७४ में चीनी मूल का एक युवा मलेशियाई विज्ञापन अधिकारी, फू चान हेंग. रैफ़ल्स होटल के कमरा नं. ८३ में ठहरा. कमरा ब्रास बासा मार्ग के ठीक सामने पड़ता है. उस के अनुसार, ''जब मैं ने कमरे का दरवाज़ा खोला तो मुझे कुछ अजीब सा लगा. मुझे गरदन के पीछे कुछ सिहरन सी महसूस हुई. फिर एक बच्ची की आवाज़ सुनाई पड़ी. ऐसा लगता था कि बच्ची की उम्र सात आठ साल होगी. वह बिलकुल अंगरेजों जैसी आवाज़ में 'मैरी हैड ए लिटिल लैंब' गुनगुना रही थी. मैं तुरंत भाग निकला और दूसरे होटल में जा कर ठहरा.'' कमरा नं. ८३ में रुके दूसरे अतिथियों को भी ऐसे ही अनुभव हुए. होटल के इतालवी मैनेजर, राबर्टो प्रेगार्ज़, को अकसर ही होटल की परिचारिकाओं को होटल में आग लगने के संभावित ख़तरों से सावधान करने के लिए भाषण पिलाना पड़ा है कि वे बाहर गलियारों में चीनी अगरबत्तियां, मोमबत्तियां और धूप जलते हुए न छोड़ें. दरअसल वे भटकती आत्मा की शांति के लिए ही यह सब करती थीं.

तीस आदि दशक के आरंभिक वर्षों की विश्वव्यापी मंदी ने सारकीज़ परिवार के व्यापार का दीवाला निकाल दिया. ब्रिटिश प्रबंध समिति वाली एक नई कंपनी ने १९३३ में होटल को अपने हाथों में ले लिया. कंपनी ने होटल का आधुनिकीकरण कर उसे सिंगापुर के आधुनिक, अभिजात्य लोगों के लिए आकर्षण का केंद्र बना दिया. हालांकि बालरूम में तापमान २७ डिग्री सेलसियस से कभी कम नहीं होता, फिर भी टेलकोट सहित पूरी ईवनिंग ड्रेस पहन कर आना अनिवार्य था. एक अतिथि को आज भी याद है कि वहां अगर आप ने समयानुकूल ढंग की पोशाक नहीं पहनी तो आर्केस्ट्रा बजना बंद हो जाता था; या अगर मैनेजर को आप की सार्वजनिक प्रतिष्ठा का ध्यान रहा तो आप के हाथ में चुपचाप एक कार्ड सरका दिया जाता जिस में आप से चले जाने का अनुरोध होता. आम तौर पर ऐसे कठोर और भावनाहीन व्यवहार 'सेंट जार्ज डे' जैसे शुद्ध ब्रिटिश अवसरों पर विशेष रूप से किए जाते. इन समारोहों के समापन में उपनिवेशीय हैसियत की याद दिलाते हुए 'गाड सेव द किंग' की धुनें बजाई जातीं. जैसे जैसे द्वितीय विश्व युद्ध पास आता गया एक और धुन की बढ़ोतरी हो गई—देयर विल आलवेज़ बी ऐन इंगलैंड.

१९४२ में सिंगापुर पर जापानी आधिपत्य

से घंटों पहले रैफ़ल्स के कर्मचारियों ने होटल की खूबसूरत चांदी की रोस्ट बीफ़ ट्राली को बड़े जतन से पाम कोर्ट की मिट्टी में गाड़ दिया ताकि ब्रिटिश उपनिवेशी मेज़ के गौरव से जापानी आक्रमणकारी पूरी तरह वंचित हो जाएं. जापानियों ने रैफ़ल्स को तुरंत केवल उच्चाधिकारियों के लिए सीमित कर दिया. जब तक होटल जापानियों के अधिकार में रहा उन के और होटल के कर्मचारियों के बीच उस चांदी की बीफ़ ट्राली को ले कर झगड़ा चलता रहा. कुछ जापानी युद्ध से पहले भी इस होटल के अतिथि रहे थे और उन की याद में कहीं न कहीं ऐसी ट्राली अवश्य होनी चाहिए थी.

अचानक ४ सितंबर १९४५ को जापानियों ने होटल को अपने अधिकार से मुक्त कर दिया. ट्राली खोद कर निकाली गई. (अब यह ट्राली एलिज़ाबेथ ग्रिल की शोभा बढ़ा रही है.) ५ सितंबर को बड़े गर्व से प्रबंधकों ने होटल को फिर से जनता के लिए खोल दिया.

देशी विदेशी खाना. सिंगापुर में राशन की तंगी के कारण रैफ़ल्स का मीनू सासेज और फलों के रस तक ही सीमित था. आज रैफ़ल्स में खाने की मेज़ पर तरह तरह के व्यंजन होते हैं. दोपहर बाद की पारंपरिक चाय के साथ खीरे की सैंडविच, चीनी चाय और छोटी छोटी स्वादिष्ट पेस्ट्रियां परोसी जाती हैं, जिन के भीतर गरम मसालेदार रसा भरा होता है.

लंच और डिनर के समय होटल की किचन इंगलैंड, चीन, मलाया, फ्रांस और इटली के सर्वोत्तम व्यंजनों की ख़ुशबू से भरी रहती है. साथ ही 'कानसोम किपलिंग' और 'पापिए द रुज माम' जैसे अकल्पनीय व्यंजन भी होते हैं. न्यू यार्क टाइम्स के भोजन विशेषज्ञ क्रेग क्लेबोर्न के अनुसार, "अगर आप ने रैफ़ल्स में खाना नहीं खाया, तो समझिए आप का सिंगापुर जाना बेकार हुआ."

लंबे अरसे तक ठहरने वाले एक आस्ट्रेलियाई अतिथि को मेमने के कटलेट के अलावा और कुछ भी नहीं सुहाता था. हर वक़्त, यहां तक कि नाश्ते में भी उसे या कटलेट चाहिए ही था. कोई और व्यंजन खाने से वह सीधा इनकार कर देता. दूसरी तरफ़ ड डच पुरातत्ववेत्ता प्रोफ़ेसर पीटर कालेनफ़ेल्स जैसा व्यक्ति, जिस ने सिर्फ़ नाश्ते में जिन की दस बोतलें पी कर रैफ़ल्स से जुड़ी मिथक कथाओं में अपना स्थान बना लिया. प्रोफ़ेसर की लंबाई थी १.८ मीटर से भी ज़्यादा और वज़न १५० किलोग्राम. सिंगापुर से बाहर भी उन के पेटूपने की कहानियां विख्यात थीं. मज़ाक़ मज़ाक़ में एक बार कालेनफ़ेल्स के एक मित्र ने शर्त लगाई कि अगर कालेनफ़ेल्स मीनू में दर्ज़ सारी चीज़ें खा लेगा, तो मित्र सब से बढ़िया शैंपेन की एक पेटी हार जाएगा. कालेनफ़ेल्स ने शर्त तो जीत ही ली, साथ ही साथ अपने पेट की क्षमता का प्रदर्शन करने के लिए फ़ौरन सारी चीज़ें उलटे क्रम में भी खा डालीं. सर आर्थर कानन डायल के उपन्यास 'द लास्ट वर्ल्ड' का पात्र प्रोफ़ेसर चैलेंजर असली जीवन में स्वयं कालेनफ़ेल्स ही था.

पुरानी तीन मंज़िली इमारत को फिर से नया रूप देने के बावजूद सत्तर आदि दशक के प्रारंभ में रैफ़ल्स को नए चमक दमक वाले होटलों से ख़तरा पैदा हो गया था. होटल ९० प्रति शत ख़ाली रहने लगा. फिर भी रैफ़ल्स का सब से बड़ा आकर्षण था—रैफ़ल्स का अनूठा इतिहास. और इसी ने होटल को संकट से उबार लिया. मैनेजर राबर्टो प्रेगार्ज़ ने होटल के रूमानी इतिहास को भुनाने का निश्चय

किया. उस ने सारकीज़ के ज़माने के उस मौलिक वातावरण को फ़िर से जीवित कर दिया. दीवारों पर वही पुराने चित्र टंग गए, और आज होटल में हर हफ़्ते ठहरने वाले अतिथियों की संख्या लगभग ६०० है, जिस से रैफ़ल्स की सालाना आमदनी दस लाख पौंड से ज़्यादा हो गई है. कुछ तो ऐसे हैं जो सिर्फ़ विगत की सुखद स्मृतियों में खोने आते हैं. न्यू ज़ीलैंड की लारेटा बेलवाश यहां आ कर १९३० की यादों में खो गईं. वे इस बात को ले कर दुखी थीं कि आज वातानुकूलित सिंगापुर में मच्छरदानियों के दर्शन तक नहीं होते. होटल के प्रबंधकों ने एक मच्छरदानी तलाश की और उन के पलंग के गिर्द लगवा दी.

दफ़्तरों और दुकानों के लिए १९ करोड़ पौंड की लागत से दस हेक्टेयर ज़मीन पर रैफ़ल्स सिटी की निर्माण परियोजना के अंतर्गत रैफ़ल्स होटल को गिराए जाने की अफ़वाह उड़ने पर व्यापक स्तर पर इस का विरोध किया गया. जून १९८० में सिंगापुर के राष्ट्रीय विकास मंत्री ने आश्वासन दिया कि होटल को रैफ़ल्स सिटी के अंदर सुरक्षित रखा जाएगा, तब जा कर संरक्षणवादियों ने राहत की सांस ली.

और इस प्रकार इस जाने माने होटल का भविष्य सुनिश्चित हो गया है जहां गाड़ियों में लद लद कर पर्यटक पहुंचते रहते हैं. ये लोग उस ज़माने के माहौल में असली सिंगापुरी जिन स्लिंप का मज़ा लेने आते हैं जब समरसेट माम विक्टोरियाई रीति रिवाजों को एक ठंडी जलवायु से उठा कर हरे भरे गरम मुल्कों में ले जाने वाले साम्राज्य निर्माताओं की ज़िंदगियों की चीरफाड़ किया करते थे.

नाम को नहीं नाम!

और एक हमारे बैंड निर्देशक हैं, जिन्हें शिकायत है कि सारी की सारी वाहवाही फ़ुटबाल की टीम लूट ले जाती है, जबकि उस के साथी भी सारा समय वहीं स्टेडियम में डटे रहते हैं—चाहे धूप हो या बारिश. ऊपर से बैंड बजाते बजाते बेचारों का दम निकल जाता है, पर नाम नाम को भी नहीं. ख़ैर, अब उन्हों ने भी खेलकूद विभाग की धज पर प्रेस विज्ञप्तियां जारी करनी शुरू कर दी हैं ताकि बैंड वालों की भी सुनी जाए:

"हाल ही में हम ने अपने तूती विभाग के लिए नए और बढ़िया वादकों की भरती की है. ड्रम बजाने वाला अब थोड़ा अधिक बोझ उठा सकता है, इस लिए हम उसे एक विशेष कार्यक्रम में पेश करेंगे. पर हमें तुरही वादन के लिए अभी भी कुछ और लंबे वादकों की ज़रूरत है.

"पिछले दिनों दो अच्छे अलगोजा, एक तुरही और एक काष्ठ तरंग वादक से हाथ धोना पड़ा. अब पहले जैसा काष्ठ तरंग वादक खोज पाना तो कठिन है, परंतु पिछले वर्ष के अन्य अधिकांश वादक आज भी हमारे बीच हैं और अपना कमाल दिखाने को उत्सुक हैं. हमारी टीम के हर सदस्य के पास हिम्मत है और तुरही वादकों के तो होंठ तक फड़फड़ा रहे हैं. हम अब भी मानते हैं कि हार जीत तो लगी ही रहती है और असली चीज़ यही है कि श्रीगणेश एक स्वर से हो तो इतिश्री भी समवेत ही."

—जेम्स डेंट, 'गज़ेट', चार्ल्सटन

स्वास्थ्य परीक्षण से
आप की जान बच सकती है

डाक्टर शिवानंद कारकल

चालीस वर्षीय श्रीमती इंदिरा कालरा को लगा कि उन के दाहिने स्तन में एक छोटी गांठ पड़ गई है जिस में दर्द बिलकुल नहीं होता. जब उन की एक मित्र ने सलाह दी कि उन्हें किसी स्त्री रोग विशेषज्ञ से दिखा लेना चाहिए, तो श्रीमती कालरा ने यह कह कर टाल दिया कि "मैं तो अच्छी भली हूं." मगर उन की मित्र बराबर दबाव डालतीं रहीं और आखिर श्रीमती कालरा मान गईं. परीक्षणों से पता चला कि उन्हें कैंसर था. डाक्टरों ने उन का स्तन काट कर हटा दिया. अगर लापरवाही की जाती तो कैंसर कोशिकाएं उन के सारे शरीर में फैल सकती थीं जिन से शायद उन की मृत्यु भी हो जाती.

३५ वर्षीय पुलिस कांस्टेबल ने स्वास्थ्य परीक्षण के दौरान डाक्टर को बताया कि उसे कभी कभी चक्कर आते थे, और सिरदर्द रहता था. "मेरी समझ से यह कोई संगीन मामला नहीं है," उस ने डाक्टर को अपनी बात बताई. मगर वह गलत था. डाक्टर ने उस में अत्यधिक तनाव (हाइपरटेंशन) के लक्षण पाए. प्रमस्तिष्कीय धमनियां इतनी संकरी हो गई थीं कि उस के मस्तिष्क को पर्याप्त रक्त नहीं पहुंच पाता था. "आप को किसी भी समय घातक दौरा पड़ सकता है." डाक्टर ने चेतावनी दी. कांस्टेबल को तुरंत अस्पताल में भरती कर लिया गया.

ऐसे मामले दुर्लभ नहीं हैं है. डाक्टरों ने इतने लोगों को साधारण स्वास्थ्य परीक्षणों द्वारा मौत के मुंह में जाने से बचाया है कि अब वे इन सालाना परीक्षणों को उम्र लंबी करने का सब से बढ़िया नुस्खा मानने लगे हैं. परीक्षण करने वाले डाक्टर ने अगर कोई गड़बड़ी देखी, और उसे लग गया कि किसी विशेषज्ञ को दिखाना चाहिए, तो वह आप को तुरंत अस्पताल में भरती हो जाने की सलाह देगा. वहां कई क़ाबिल डाक्टर आधुनिक उपकरणों की मदद से पूछताछ कर, छू कर, महसूस कर—यानी पूरी तरह ठोंक बजा कर रोग पहचानने की कोशिश करते हैं. उदाहरण के लिए, किसी के फेफड़े में किसी रोग की शंका होने पर धातु की एक पतली नली गले में डाली जाती है जिस से श्वास मार्ग की जांच की जा सके. नली के एक किनारे पर रोशनी करने का उपकरण लगा होता है. इसी प्रकार एक अन्य रोशनी वाली पतली नली—सिगमायडोस्कोप—बड़ी आंत और मलाशय के परीक्षण में प्रयोग की जाती है. जब यह पतली नली पाचन मार्ग के अंतिम ३० सेंटीमीटर के हिस्से में खिसकाई जाती है, तो डाक्टर इस में से झांक कर सुई की नोंक के बराबर ख़राबी का पता भी लगा लेते हैं. हालांकि अंतड़ियां १.५ मीटर लंबी होती हैं, लेकिन ज़्यादातर गड़बड़ियां इन्हीं ३० सेंटीमीटर के हिस्से में होती हैं. अकसर तो एक्सरे परीक्षण छिपी बीमारियों को सामने ला देता है. साठ वर्षीय श्री कामथ के सीने में दर्द हुआ. "मांसपेशियों का दर्द

ब्लेक क्लार्क के एक लेख पर आधारित

होगा,'' उन्हों ने अपने को तसल्ली दी. फिर भी उन का लड़का उन्हें अस्पताल ले गया. एक्सरे से पता चला कि उन की एक पसली पर नींबू के आकार की सूजन थी. डाक्टरों ने बताया कि उन्हें हड्डियों का ट्यूमर है. अंततोगत्वा उन की पूरी पसली निकालनी पड़ी.

रक्त परीक्षण से भी अनेक छिपी बीमारियों का पता चलता है. कुछ मिलीमीटर रक्त ले कर विश्लेषक रक्त के शर्करा, सीरम प्रोटीन, यूरिया और कैलशियम जैसे मुख्य रासायनिक तत्वों पर अपने यंत्रों की खोजी नज़रें दौड़ाते हैं. उन की असाधारण मात्रा डाक्टरों को तुरंत मधुमेह, जिगर, गुर्दे के रोग या हड्डियों के विकास जैसी बीमारियों के प्रति चौकन्ना कर देती है.

कुछ बीमारियों के संकेत तो इतने छुपे होते हैं कि उन्हें पकड़ने के लिए सूक्ष्म तकनीकों की ज़रूरत पड़ती है. एक मां इस लिए चिंतित थी कि उस का बच्चा बहुत कम खाता था. उस की गरदन तनी हुई थी. कुल मिला कर वह ठीक नहीं लग रहा था. डाक्टरों को मवाद वाले मेनिंजाइटिस—मस्तिष्क की सुरक्षा झिल्ली में सूजन—का शक हुआ. मस्तिष्क और रीढ़ में पाए जाने वाले द्रव को सुई से निकाल कर माइक्रोस्कोप द्वारा परीक्षण करने पर इस शंका की पुष्टि हो गई. बच्चे का एंटीबायटिक उपचार तुरंत आरंभ कर दिया गया.

डाक्टरी के छात्रों के एक ग्रुप ने एक अन्य विद्यार्थी पर डाक्टरी परीक्षणों के दौरान यंत्र से रक्तचाप मापते समय देखा कि उन के 'रोगी' का रक्तचाप असाधारण रूप से ज़्यादा था. ''लेकिन मैं तो बिलकुल ठीक हूं.'' १९ वर्षीय हतप्रभ विद्यार्थी ने कहा. उस के शारीरिक परीक्षणों से पता चला कि संभवतः उस की महाधमनी (शरीर की वह बड़ी रक्तवाहिका जो रक्त को हृदय से शरीर के अन्य अंगों तक ले जाती है) जन्मजात संकरी थी. हाइपेक नामक रंगीन अपारदर्शी विकिरण घोल के टीके के बाद लिए गए एक्सरे से पता चला कि महाधमनी का ५ सेंटीमीटर भाग भयानक रूप से सिकुड़ा हुआ था. शल्य चिकित्सकों ने उसे हटा कर डेक्रान ग्राफ़्ट विधि से काटे गए स्थान को पुनः जोड़ दिया.

समय पर जांच डाक्टर यह दावा नहीं करते कि वार्षिक परीक्षणों से हर घातक बीमारियों का पता समय पर लग जाएगा. कुछ स्थितियां ऐसी भी हैं. जो एक वर्ष से भी कम समय में असाध्य बन सकती हैं. परंतु परीक्षण को कई कई साल तक टालते जाना एक ख़तरनाक जुआ है.

क्या आपको परीक्षण की आवश्यकता है?

यदि आप ३५ से ऊपर के हैं और पिछले १२ महीनों में आप ने स्वास्थ्य परीक्षण नहीं कराया तो निश्चित ही आप को इस की ज़रूरत है. और यदि आप निम्नलिखित प्रश्नों में से किसी का भी उत्तर हां में देते हैं तो आप को कतई देर नहीं करनी चाहिए.

पहला : क्या आप के परिवार में मधुमेह, उच्च रक्तचाप, हृदय रोग, कैंसर या अन्य किसी ऐसी बीमारी का इतिहास रहा है?

दूसरा : क्या आप शराब ज़्यादा पीते हैं? इस का अत्यिधिक प्रयोग हृदय, जिगर और दूसरे अनिवार्य अंगों को भयकर क्षति पहुंचा सकता है.

तीसरा : क्या आप धूम्रपान करते हैं? यदि हां, तो आप हृदय और फेफड़ों के रोगों के संभावित उम्मीदवार है. कार्डियोवेस्कूलर एंड थोरेसिक सेंटर, बंबई के प्रधान डा. जी. बी. पारुलकर का कहना है. ''दिन में दस सिगरेट पीने वाले के लिए धूम्रपान न करने वालों की अपेक्षा हृदय रोग से पीड़ित होने की संभावनाएं तीन गुनी बढ़ जाती है.''

चौथा : क्या आप पान खाते हैं? पान और चूना खाने के आदी लोगों में मुंह का कैंसर आम है.

पांचवां : क्या आप को अपने पेशे के कारण स्वास्थ्य संकटों से दो चार होना पड़ता है? रंग

रोगन और रसायनों का काम करने वाले लोगों में चर्म रोग अधिक होते हैं. रोगन उद्योग में काम करने वालों को सीसे का ज़हरबाद हो जाता है और कपड़ा उद्योग में काम करने वाले लोग फुफ्फुसकार्पासता (बिसिनोसिस सांस द्वारा कपास की धूल के भीतर जाने से होने वाला फेफड़ों का रोग) के शिकार हो सकते हैं. हमेशा विकिरण के संपर्क में रहने वालों पर कैंसर का ख़तरा मंडराता रहता है.

सौभाग्यवश इन घातक बीमारियों के लक्षण शीघ्र ही सामने आ जाते हैं, इन के लक्षण पहचान कर इन का इलाज शुरू कर दिया जाता है. कई बार तो ये रोग ठीक भी हो जाते हैं.

स्वस्थ दिखने और स्वस्थ लगने वाले लोगों को भी शीघ्र सहायता की आवश्यकता हो सकती है, लेकिन संभव है उन्हें ख़ुद इस का पता न चले. वे मधुमेह, उच्च रक्तचाप और गुर्दे के रोगों की आरंभिक अवस्थाओं में हो सकते हैं, जिन का पता शायद शुरू में नहीं चले. यह बढ़ती आयु की जीर्णकारी प्रक्रिया का अंग है जो ४०-५० के फेरे में पता चलता है.

यह परीक्षण कभी कभी गंभीर स्थिति का पता देते हैं, परंतु अकसर इन से ऐसी बीमारियों या समस्याओं का पता चलता है जिस का उपचार आसानी से किया जा सकता है. चाहे इस का परिणाम कुछ भी निकले, परंतु स्वास्थ्य परीक्षण का मुख्य लाभ डाक्टर के सुझावों को मानने में है. डाक्टर ज़रूरतमंदों के लिए विशेष इलाज, दवा और खुराक के नुस्ख़े बता सकते हैं. बाक़ियों को वह उन चीज़ों को त्यागने को कह सकते हैं जो आप को जल्दी बूढ़ा करती हैं. अधिक खाना, व्यायाम नहीं करना, अत्यधिक धूम्रपान और सब से ऊपर भावात्मक तनाव . . . बूढ़ा होने की प्रक्रिया को निरंतर तेज़ करते हैं.

नई सदी के सूत्र

अब सवाल का मूल नहीं होता, ब्याज होता है.

—डाग लारसन, 'यूनाइटेड फ़ीचर सिंडीकेट'

धन्य हैं वे भूख खाने और प्यास पीने वाले लोग जो अपना वज़न घटा रहे हैं.

—ट्राय गोर्डन, 'वर्ल्ड', टैलसे

दो बिंदुओं के बीच की निकटतम दूरी इस पर निर्भर करती है कि नपवाता कौन है.

—मोरिस बेंडर

पापा अपने लाड़ले किशोर से यह कहते सुने गए: सचमुच सोने और सचमुच उठने से आदमी बुद्धिमान गुणवान बनता है.

—आर जी डब्लू

अमरीकी अभिनेता विंसेट प्राइस ने भयोत्पादक फ़िल्मों में काम कर के ख़ूब दौलत कमाई है और अब उन का कहना है: हो बुरा तो कर बुरा, क्योंकि अंत बुरे का भला.

—'संडे न्यूज़ मैगज़ीन', न्यू यार्क

मारी फ़्रांस ज़ारो के साथ भेंट

यूरोप की राजनीति

कुछ ज्वलंत प्रश्न

भेंटकर्ता : क्लाद बोवें

भूतपूर्व फ़्रांसीसी राष्ट्रपति स्वर्गीय जार्ज़ पांपिदू और तत्कालीन प्रधान मंत्री ज़ाके शीराक की सलाहकार मारी फ़्रांस ज़ारो को एक लंबे समय से फ़्रांस की राजनीतिक हलचलों के पीछे प्रभावशाली शक्ति माना जाता रहा है. पिछली बार जब वे फ़्रांस के राष्ट्रपति पद के चुनाव में एक स्वतंत्र उम्मीद-वार के रूप में खड़ी हुईं तो समूचे यूरोप में यह ख़बर मुखपृष्ठों की सुर्खियों में छपी. रीडर्स डाइजेस्ट के फ़्रांसीसी संस्करण के साथ एक भेंट में उन्हों ने बताया कि इस प्रकार आम जनता के रूबरू होने के पीछे उन का उद्देश्य सोवियत विस्तारवाद की ओर ध्यान आकर्षित करना था. समूचे यूरोप के लिए उन का संदेश है कि यदि हमारे मन में यह धारणा पक्की नहीं है कि हमें अपनी स्वतंत्रता की रक्षा करनी है तो हमारी हार निश्चित है.

प्रश्न : क्या आप की दृष्टि में सोवियत विस्तारवाद आज के युग का एक प्रमुख मुद्दा है?

उत्तर : निश्चित रूप से. मैं जिस समस्या को अपने देश की प्रमुख समस्या मानती हूं उस के प्रति लोगों का ध्यान आकर्षित करने के लिए ही मैं ने सार्वजनिक जीवन में प्रवेश किया है. बेरोज़गारी और मुद्रा स्फीति निश्चय ही गंभीर चिंता के विषय हैं. लेकिन चाहे हम दक्षिण पंथी हों, वाम पंथी हों या मध्य मार्गी, क्या यह जानना सब से अधिक महत्वपूर्ण बात नहीं कि आज से पांच साल बाद हम अपने राजनीतिक और आर्थिक मामलों के बारे में निर्णय लेने के लिए स्वतंत्र रह पाएंगे या किसी विदेशी सत्ता द्वारा सुझाए गए हल स्वीकार करने के लिए बाध्य होंगे?

पोलैंड की घटनाओं पर ध्यान दें. यह बात पूरी तरह स्पष्ट है कि पोलैंड के अधिकांश लोग अपने देश पर लादी गई सोवियत साम्यवादी सत्ता के विरुद्ध हैं, परंतु वे उस को सहते रहने के लिए विवश हैं. यदि हम ने सावधानी नहीं बरती तो हम भी किसी दिन उसी स्थिति में जा पहुंचेंगे.

प्रश्न : आप किस आधार पर ऐसा सोचती हैं कि सोवियत संघ दुनिया पर अपना प्रभुत्व जमाने की कोशिश कर रहा है?

उत्तर : दुनिया के नक़्शे पर नज़र डालना

भर काफ़ी है. द्वितीय विश्व युद्ध के बाद से रूस निरंतर नए क्षेत्रों पर विजय प्राप्त करता जा रहा है. पूर्वी यूरोप के देशों को अपने अधिकार में लेने के बावजूद उसे संतोष नहीं हुआ. प्रत्येक महाद्वीप पर वह व्यवस्थित रीति से आक्रमण का दबाव बनाए हुए है. एशिया को ही लीजिए : उत्तरी कोरिया, वियतनाम, कंपूचिया, लाओस और दक्षिणी यमन; अफ़्रीका में इथियोपिया, अंगोला, कांगो, गिनी बिसाऊ, गिनी गणराज्य, मेडागास्कर, मोज़ाबिक; मध्य अमरीका में क्यूबा और निकारागुआ.

और अफ़ग़ानिस्तान! कल ईरान की बारी आ सकती है. इस प्रकार सोवियत संघ शीघ्र ही अपनी चिर अभिलाषा—फ़ारस की खाड़ी में प्रवेश तथा उस के तेल भंडार पर नियंत्रण—की पूर्ति कर लेगा.

प्रश्न : आप की नज़र में वह कौन सी शक्ति है जो सोवियत संघ को अपने प्रभाव क्षेत्र में निरंतर विस्तार के लिए बाध्य कर रही है?

उत्तर : यह मार्क्सवादी विचार धारा की प्रवृत्ति है—समूची मानव जाति को मार्क्सवादी व्यवस्था के अंतर्गत करना. सोवियत नेताओं ने कभी इस लक्ष्य को गोपनीय नहीं रखा.

हम एक ऐसी शक्ति को पूरी पृथ्वी पर क़ब्ज़ा जमाते देख रहे हैं जिस के लिए मनुष्य और समय कोई मायने नहीं रखते.

प्रश्न : सोवियत संघ ने अभी तक पश्चिमी यूरोप के लोकतांत्रिक देशों पर सीधे आक्रमण नहीं किया है. आप ऐसा क्यों सोचती हैं कि भविष्य में वह ऐसा करेगा?

उत्तर : पहला कारण तो यह कि इधर कुछ वर्षों में पूर्व और पश्चिम के बीच शक्ति संतुलन उलट कर पूर्व के अनुकूल हो गया है. दूसरा यह कि परमाणु हथियारों के क्षेत्र में असीम टेकनीकी प्रगति ने सारी परिस्थिति को बदल दिया है. दस वर्ष पहले के प्रक्षेपास्त्रों का निशाना अचूक नहीं था. वे अपने लक्ष्य के पास दो किलोमीटर की दूरी में कहीं भी गिर सकते थे. इस लिए लक्ष्य को पूरी तरह नष्ट करने के लिए उस में रखे विस्फोटक पदार्थों की मात्रा ५ मेगाटन होना आवश्यक था. आजकल के प्रक्षेपास्त्र अपने लक्ष्य के सौ मीटर तक पहुंच सकते हैं. अतः आज उस निशाने को नष्ट करने के लिए केवल एक किलोटन का विस्फोटक पदार्थ ही काफ़ी होता है. यह पहले वाले विस्फोटक पदार्थ का कुल ५ हज़ारवां भाग है. हालांकि यह एक भीषण स्थिति है, लेकिन विशेषज्ञ इसे 'स्वच्छ युद्ध' कहते हैं.

दो बड़े देशों—सोवियत संघ और अमरीका—के बीच भयंकर परमाणु युद्ध से व्यापक स्तर पर विनाश की संभावनाएं हैं. इसी लिए वर्तमान में ऐसा युद्ध हो जाना एक तरह से असंभव माना जाता है. परमाणु आक्रमण का उत्तर देने की क्षमता वाले फ़्रांस सरीखे देश और सोवियत यूनियन तक के बीच युद्ध भीषण रूप से विनाशकारी सिद्ध हो सकता है. परंतु यदि सोवियत संघ पश्चिम जरमनी, हालैंड, बेल्जियम अथवा इटली पर आक्रमण करता है जिन के पास अपने परमाणु हथियार नहीं हैं तो स्थितियां उस समय तक भिन्न रहेंगी जब तक इस प्रकार के आक्रमण के ख़िलाफ़ अमरीका की ओर से बृहत पैमाने पर जवाबी हमले स्वतः अनिवार्य नहीं हो जाते.

प्रश्न : आप ने जिन देशों का उल्लेख किया है वे सब उत्तर अटलांटिक संधि संगठन (नाटो) के सदस्य हैं. उन पर आक्रमण की स्थिति में क्या अमरीका स्वतः युद्ध में शामिल नहीं हो जाएगा?

उत्तर : मौजूदा स्थिति में यह ज़रूरी नहीं है. मान लीजिए कि अगले रविवार को सोवियत संघ पश्चिमी यूरोप पर आक्रमण कर देता है. उस स्थिति में उसे ४६० नाटो प्रक्षेपास्त्र केंद्रों को नष्ट करने के लिए ४६० प्रक्षेपास्त्र छोड़ने होंगे तथा ये समस्त देश सात मिनट के भीतर पूरी तरह निःशस्त्र हो जाएंगे. वे नष्ट नहीं होंगे, और इस प्रक्रिया में ५० हज़ार से कुछ कम ही लोगों की जानें जाएंगी. फ़्रांस पर इस का कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा, क्योंकि वह नाटो का सदस्य नहीं है तथा वह अपनी परमाणु पनडुब्बियों का इस्तेमाल नहीं करेगा क्योंकि हमेशा ऐसा समझा जाता रहा है कि वह उन का उपयोग अपनी ही भूमि की रक्षा के लिए करेगा. उधर अमरीका ने यूरोप में ऐसे दूरमारक प्रक्षेपास्त्र नहीं लगा रखे हैं जो सोवियत संघ तक मार कर सकें. (१८०० किलोमीटर की मारक क्षमता वाले पर्शिंग-२ प्रक्षेपास्त्र कहीं नहीं लगाए गए हैं तथा पर्शिंग-१ की मारक क्षमता केवल ७५० किलोमीटर है.) अतः अमरीका अपने आप को इस युद्ध में नहीं डाल पाएगा.

आक्रमण आरंभ होने के आठवें मिनट में रूसी शासक टेलीफ़ोन पर फ़्रांसीसी राष्ट्रपति मितरां से कहेंगे, "यह ठीक है कि तुम्हारे मित्र निहत्थे हो गए हैं, लेकिन तुम चिंता मत करो. इन देशों पर आधिपत्य जमाने का हमारा कोई इरादा नहीं है. बस, हम 'अपने' महाद्वीप पर तनाव की स्थिति अधिक समय तक नहीं बनाए रखना चाहते थे.' और हम आप के साथ परमाणु युद्ध नहीं करना चाहते. यह न हमारे हित में है न आप के. अतः हम अपनी ओर से समझौते का प्रस्ताव रख रहे हैं." ऐसी स्थिति में हमारे सामने क्या विकल्प होगा? हमें उन के साथ समझौता करना ही पड़ेगा.

हमारे दैनिक जीवन पर फ़ौरन ही इस का कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा. सैद्धांतिक रूप से हम स्वतंत्र बने रहेंगे. सोवियत संघ, जो अपने नागरिकों के लिए भरपूर अनाज नहीं पैदा कर सकता, हमारा गेहूं, मक्खन और हमारी उन्नत औद्योगिक टेकनीक हम से खरीदता रहेगा. मास्को की बैले कंपनियां पेरिस ओपेरा में कार्यक्रम प्रस्तुत करेंगी और हाल पूरा भरा रहेगा. परंतु उस क्षण से ही हमारी गरदन में एक पट्टा पड़ जाएगा और पट्टे में लगी चेन क्रेमलिन में बैठे मालिकों के हाथ में होगी.

प्रश्न : ऐसी संभावना को किस प्रकार टाला जा सकता है?

उत्तर : पहले तो हमें साफ़ दिमाग़ से सोचना होगा, और आसपास नज़र रखनी होगी कि क्या कुछ हो रहा है.

इस के लिए हमें अपनी विदेश नीति को इस प्रकार पुनर्व्यवस्थित करना होगा कि वह हमारे मित्रों के अनुकूल रहे न कि हमारे संभावित शत्रुओं के. जो लोग साझा बाज़ार देशों की पारंपरिक सेनाओं वाली यूरोपीय प्रतिरक्षा की बात करते हैं वे अपने आप को आश्वस्त करने के लिए झंडी हिला रहे हैं.

प्रश्न : क्या शांति और स्वतंत्रता दोनों को बनाए रखने के लिए पूर्व पश्चिम समझौता सर्वोत्तम मार्ग नहीं है?

उत्तर : दरअसल समझौतों से हमेशा सोवियत संघ को ही लाभ मिलता है. और न तो समझौता उन्हें अधीनस्थ देशों की जनता पर दमन को रोकने में समर्थ हो पाता है और न ही उन्हें दिग्विजय से रोक पाता है.

१९७५ में हेलसिंकी में जो कुछ हुआ उस पर ध्यान दें. याल्टा समझौते के तीस साल बाद इस समझौते ने सैन्य विभाजन रेखा के पार के

देशों पर सोवियत आधिपत्य को स्वीकार कर लिया. बदले में क्या मिला? मानवाधिकारों को सोवियत संघ की स्वीकृति. यह बात पूरी तरह स्पष्ट है कि पश्चिमी देश इस चाल में आ गए. ज़रा गौर से देखिए कि पोलैंड और साइबेरिया में मानवीय अधिकारों का आदर किस प्रकार हो रहा है. सोवियत संघ ने दिग्विजय के एक नए युग का सूत्रपात करने के लिए बहुत चालाकी से हेलसिंकी समझौतों के नैतिक लाभों का शोषण किया: हाल ही में हुआ मैड्रिड सम्मेलन साम्यवादी विस्तारवाद को रोक पाने के मामले में हमारी शक्तिहीनता की पुष्टि भर करता है.

जेनेवा निरस्त्रीकरण सम्मेलन भविष्य के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण होते हुए भी बहुत ही कमज़ोर कच्ची नींव पर खड़ा किया गया है. सोवियत संघ ने अपने प्रक्षेपास्त्रों को लगाने के बाद ऐसी इच्छा ज़ाहिर की कि यदि अमरीका यूरोप में पर्शिंग-२ प्रक्षेपास्त्र नहीं लगाने के लिए सहमत हो जाए तो वह एस एस-२० प्रक्षेपास्त्रों की संख्या और उन के स्थलों के बारे में सब प्रकार की छूट देने को तैयार है. रूसी पर्शिंग-२ प्रक्षेपास्त्र से बेहद डरते हैं. वे स्वेच्छापूर्वक इस त्याग के लिए तैयार भी हो जाएंगे क्योंकि यदि अमरीका उन की बात मान लेता है तो यूरोप में सोवियत शक्ति की सर्वोपरिता बनी रह जाएगी.

प्रश्न : क्या आप पूर्व पश्चिम व्यापार के भी विरुद्ध हैं.

उत्तर : नहीं, बशर्ते यह हमारे हितों को लाभ पहुंचाते हों. यह बात बार बार याद रखनी चाहिए कि आर्थिक हितों का स्थान राजनीतिक हितों के बाद में है. सोवियत संघ हमारी व्यापारिक मनोवृत्तियों को सहलाता रहता है, ताकि हम उन पर निर्भर रहें. लेनिन ने कहा था, "पूंजीवादी इतने मूर्ख हैं कि वे हमारे हाथों वह रस्सी भी बेच डालेंगे जिस से हम उन्हें फांसी पर लटकाएंगे." जब हम ने साइबेरियाई गैस के समझौते पर हस्ताक्षर किए तो हम इस से भी आगे बढ़ गए. हम ने उन के हाथों फांसी की रस्सी उधार पर बेच डाली तथा ब्याज़ की दर भी उन के अनुकूल रख दी. व्यापार बनाए रखने की चिंता हमेशा ही आवश्यक प्रतिशोधात्मक क़दम उठाने से रोक़ती रही.

प्रश्न : शीत युद्ध की ओर वापसी से विश्व युद्ध का ख़तरा क्या बढ़ नहीं जाएगा?

उत्तर : अपनी जान की रक्षा में ख़तरा तो उठाना ही होगा. विंस्टन चर्चिल के ये शब्द याद रखिए, "आप ने आत्म सम्मान गंवा कर युद्ध रोकने की कोशिश की है, अतः आप को युद्ध और अपमान दोनों भोगने होंगे."

प्रश्न : तटस्थतावादी आंदोलनों के विकास से—ख़ास क़र जरमनी में—ऐसा लगता है कि यूरोप वासी अभी ख़तरों को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं हैं.

उत्तर : निस्संदेह, अपने घर में पर्शिंग की स्थापना कोई बहुत ख़ुशी की बात नहीं है. प्रत्येक देश में, प्रत्येक राजनीतिक समूह में और मैं तो यहां तक कहूंगी कि हम में से प्रत्येक के भीतर कुछ ऐसा है जो पराधीनता को स्वीकार कर लेता है क्योंकि यह ज़्यादा आसान है, तथा हमारा दूसरा अंश उसे अस्वीकार करता है, क्योंकि हमें ऐसा लगता है कि यह कायरता पूर्ण और ख़तरनाक है. यदि हमारे मन में स्वाधीनता के महत्व का लोप हो गया है तो हमारी हार निश्चित है. हमारे पास साम्यवादी चुनौती का सामना करने के लिए दो ही निधियां हैं—शक्ति और आस्था. लेच वालेसा ने कहा था, "मैं ईश्वर के सिवाए और किसी

से नहीं डरता.'' और उस के इस कथन में हमारे लिए एक संदेश है—वह कह रहा है कि साम्यवाद से लड़ने का एक मात्र रास्ता है आध्यात्मवाद

प्रश्न : भविष्य के बारे में आप आशावादी हैं या निराशावादी ?

उत्तर : मैं अपने मन में यह आशा पालना चाहती हूं कि यूरोप पतन और दासता से बचने के संसाधन खोजने में सफल रहेगा. मैं स्वतंत्र देशों की जनता को एकता के बंधन में बंधा देखना चाहती हूं. यदि पश्चिमी देशों में अपने विचारों की ख़ातिर लड़ने की क्षमता अभी बाक़ी है तो वह साम्यवादी चुनौती क़बूल कर सकते हैं.

आख़िरकार बुनियादी तौर पर यह एक आध्यात्मिक चुनौती है.

फंसोड़

कुछ बुढ़ पुरनियों को द्वितीय महायुद्ध की समाप्ति के बाद की वह घटना अब भी याद है जबकि मेन और हालीवुड का ज़ोरदार आमना सामना हुआ. उन दिनों तटवर्ती मेन के वाइनेलहैवन द्वीप पर 'डीप वाटर्स' की शूटिंग चल रही थी.

सीज़र रोमेरो और उन के साथी अभिनेता रबड़ के चमचमाते बूट पहने तैयार खड़े थे और उधर लेस्टर नामक एक प्रखरबुद्धि द्वीपनिवासी बड़े मनोयोग से यह सब तामझाम देख रहा था. अंततः यह तमाशा देखा न गया, तो अपने साथियों को जमा कर लिया और लगा ठट्ठा ठट्ठा कर हंसने. निर्देशक ने इस का कारण पूछा तो लेस्टर ने बुरी तरह हंसने के कारण आंखों में तिर आए आंसू पोंछते हुए सारा माजरा कह सुनाया.

''वाइनेलहैवन के किसी बाशिंदे को कभी ऐसे चमचमाते बूट पहने देखा है किसी ने ?'' लेस्टर ने प्रश्न किया. ''एकदम अजूबा लग रहा है यह सब. सो हम ने सोचा कि अपने यहां फ़िल्म लगने तक प्रतीक्षा क्यों की जाए जब हम अभी ही तबियत से हंस सकते हैं.''

लेस्टर की बात निर्देशक को जंच गई. वह अपनी फ़िल्म को प्रामाणिकता देने के लिए जी जान जो लड़ाए था. बस, उस ने लेस्टर को अपना सलाहकार नियुक्त कर लिया.

''पर, रबड़ के दर्जन भर घिसे पिटे बूट अब आएंगे कहां से ?'' उस ने लेस्टर से पूछा.

और लेस्टर महाशय अच्छी तरह जानते थे कि वैसे फटे पुराने बूट आएंगे कहां से. परंतु यह सज्जन यह भी जानते थे कि सलाहकार को अपने वेतन का औचित्य भी सिद्ध कर के दिखाना होगा. कुछ देर सोच विचार का नाटक करने के बाद वह चहके, ''बस बन गई बात. आप हमें पांच मिनट की मोहलत दीजिए और देखिए. कोई न कोई हल ज़रूर निकल आएगा.''

इस प्रकार हालीवुड की उस फ़िल्म मंडली को सचमुच के पुराने घिसे पिटे जूते मिल गए और वाइनेलहैवन के शेर अगले दिन समुद्री हवा का आनंद लेने गए तो उन के पांव में रबड़ के एकदम नए चमचमाते बूट थे.

—'डाऊन ईस्ट'

मेरे मित्र की छः वर्षीय बच्ची ने अपने जन्म दिन पर उपहार की फ़रमाइश की : पापा, मुझे तो जादू की छड़ी चाहिए, जो सचमुच काम करती हो.

—एल एन
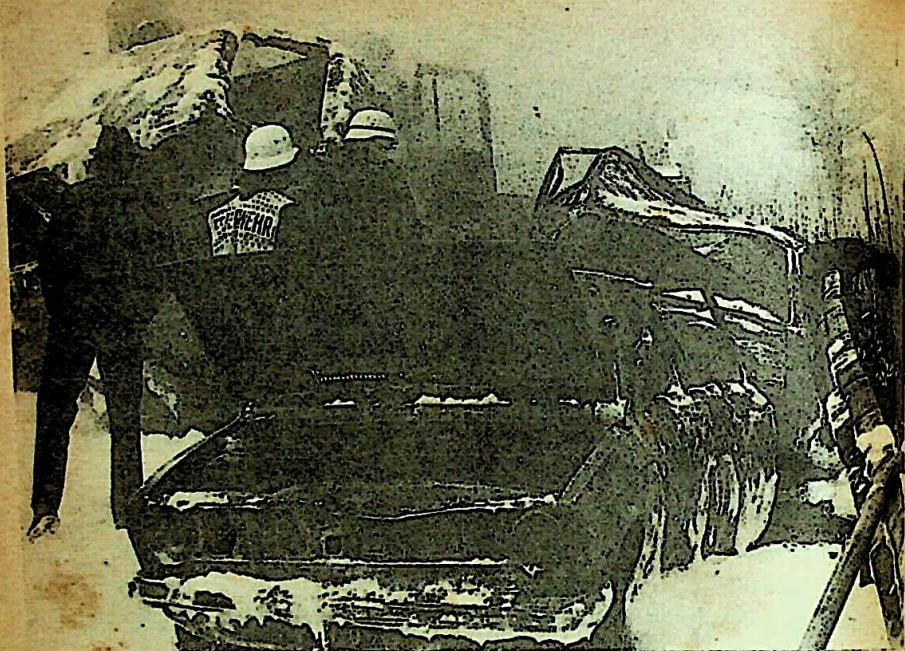
जब कभी आप को घने कोहरे में गाड़ी चलानी पड़े तो जरमनी की इस भयंकर दुर्घटना को मन ही मन याद करें और गाड़ी की रफ़्तार धीमी कर लें.

क़हर कोहरे का

मार्क ट्यूगल

२६ फ़रवरी १९८० की बात है. समय होगा यही सुबह के कोई आठ बज कर कुछ मिनट. म्यूनिक से लगभग १४ कि. मी. उत्तर पश्चिम में लैंगवाइड झील और उस के आसपास के इलाक़े में घना कुहासा छाया था. आग्ज़बर्ग और म्यूनिक को मिलाने वाले व्यस्त राजमार्ग पर दौड़ती मोटर गाड़ियां एक एक कर के इस धुंध में गायब होती जा रही थीं. सभी मोटरगाड़ियां ८० किलोमीटर प्रति घंटे की औसत रफ़्तार से भागी जा रही थीं. कोई कार वाला घबरा जाए और रफ़्तार क[म] करना चाहे तो बस ट्रैफ़िक जाम होना शुरू ह[ो] गया.

वर्नर श्रीबर अपने ट्रेलर ट्रक में म्यूनिक [जा] रहा था. इस से पहले कि उस का ट्रक गाड़ि[यों] से टकराता उस ने एकदम से उसे दाहिनी ले[न] में डाल कर रोक दिया. उस ने पिछली बत्ति[यां] जला दीं ताकि पीछे आने वाले अन्य ड्राइव[र] सावधान हो जाएं उसी समय पीछे से आ[ती] एक सिट्रोएन कार ट्रक के पिछले बाएं पहि[ए]

ए डी ए सी मोटरवेल्ट (नवंबर १९८०) से संक्षिप्त. कापीराइट ए डी ए सी मोटरवेल्ट म्यूनिक

से टकराई और उलट गई. रास्ता बिलकुल जाम हो गया. श्रीबर ने देखा कि सिट्रोएन के ड्राइवर को चोट नहीं आई पर वह कार में फंसा पडा है. कार की छत कैनवस की थी. वर्नर ने लपक कर उसे कैनवस की छत से बाहर निकाला. दोनों अभी एक दो क़दम ही पीछे हटे होंगे कि अन्य कार बड़ी तेज़ी से उन की ओर आती दिखी. दोनों ने बचने की कोशिश की लेकिन तेज़ी से आती वह कार सिट्रोएन से इतनी ज़ोर से टकराई कि उलटी पड़ी सिट्रोएन दस मीटर आगे तक घिसटती चली गई. भागते भागते भी दोनों इस की चपेट में आ गए. श्रीबर सड़क के बीच लगी रेलिंग से जा टकराया. उस के पैर की हड्डी दो जगहों से टूट गई. सिट्रोएन के ड्राइवर को घातक चोटें आईं.

कुछ ही क्षणों के अंदर दो और कारें इन कारों से आ टकराईं. उसी समय ३२ वर्षीय टेक्नीशियन गर्ड एंबाक अपनी फ़ोक्सवेगन गोल्फ़ कार में वहां आ पहुंचा. उस ने सही वक़्त पर ब्रेक लगाई, और पिछली कारों में भी ब्रेक लगने की आवाजें सुनीं. लेकिन बाद में उस से एक दुःखद भूल हो गई. बजाए इस के कि वह रेलिंग के पार कूद कर अपने को बचाता, पीछे से आने वाली कारों को सावधान करने के लिए वह रेलिंग और रुकी कारों के बीच दौड़ने लगा. दाहिनी लेन में आते एक ट्रक चालक को आगे रुके ट्रक की धुंधली परछाईं दिखी. इस ट्रक पर २४ टन वज़न की इस्पाती चादर लदी थी. ड्राइवर समझ गया कि अगर ब्रेक तेजी से लगाया गया तो यह चादर अपने ही ट्रक के केबिन को चीर डालेगी. उस ने बड़ी ख़ूबी से अपना ट्रक उस लेन में डाल दिया जो अभी तक चालू थी. और सावधानी पूर्वक अत्यंत कुशलता से ब्रेक लगाई. उस की
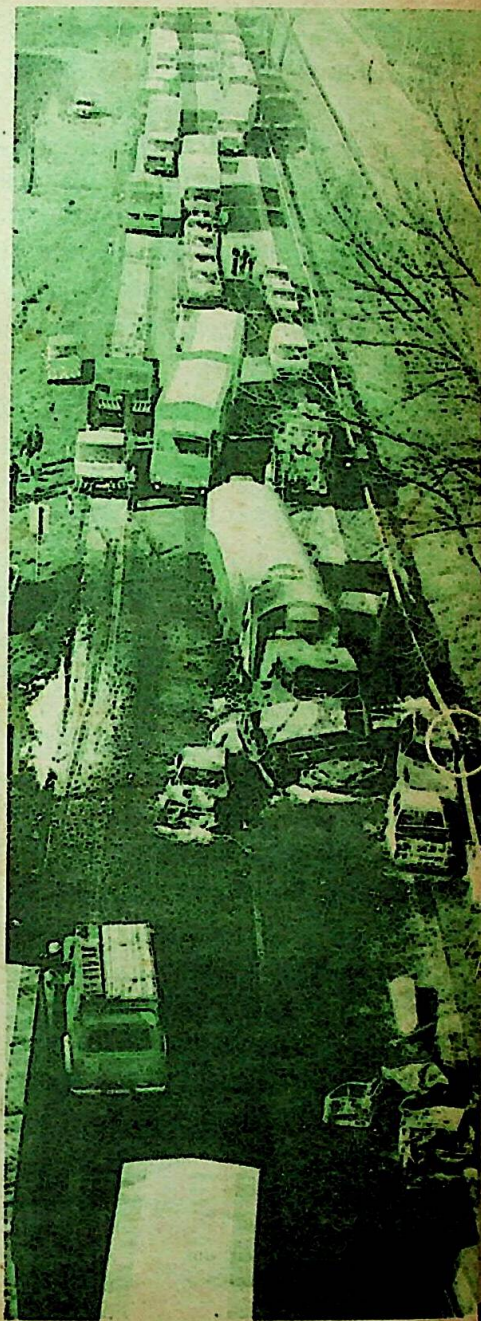
इस सावधानी ने उसे एक संभावित टक्कर से बचा लिया. लेकिन उसी सड़क पर उस के पीछे अन्य कारें भी थीं ट्रक के ठीक पीछे वाली कार के ड्राइवर ने उस के पिछले भाग तथा रेलिंग के बीच अपनी कार रोक ली. उस की कार बाल बाल बची. लेकिन पीछे से आने वाली दो अन्य कारें भी वहीं आ धंसीं. ५६ वर्षीय इंजीनियर पीटर वीशार की फ़ोक्सवेगन गोल्फ़ कार ट्रक के पिछले भाग से इतने ज़ोर से टकराई कि इस्पाती चादर एक मीटर सरक गई. २६ वर्षीय व्यवसायी केरिन रीबर की ओपेल कार वीशार की कार से ठीक पीछे थी. बीशार की गोल्फ़ से ओपेल की इतनी तेज़ भिड़ंत हुई कि गोल्फ़ ट्रेलर के नीचे घुसती चली गई. बीशार इस टक्कर की चपेट में आ गया. इस दुर्घटना में केरिन रीबर और वीशार दोनों की मृत्यु हो गई.

कई और कारें एक दूसरे से उलझती जा रही थीं. ४२ वर्षीय एंड्रिया क्रेमर ने ठीक समय पर अपनी कार रोक तो ली लेकिन पीछे वाली कार उस की कार से टकरा गई. सुरक्षा के लिए किसी ने उस महिला को सड़क के पार सुरक्षित स्थान तक पहुंचा दिया. क्रेमर का कुत्ता भी किसी प्रकार कार से निकल कर अगली पिचकी हुई कार के नीचे जा दुबका.

१९ वर्षीय छात्रा एंजेला फ़ौकर्ट ने सामने यह हाल देखा तो अपनी कार रेलिंग के निकट रोक ली. वह सीट बेल्ट खोलने वाली ही थी कि पीछे से किसी कार ने उस की बीटल कार में टक्कर मार दी. बाद में जब उस का शरीर बरामद किया गया, तो उस का एक हाथ अगली सीटों के बीच लटक रहा था.

इस्पात लदे ट्रैक्टर के पीछे आती कारों में से एक फ़ोर्ड कार थी जिसे मशहूर टेलर मास्टर फ्रांज़ आंद्रा चला रहे थे. रेलिंग के नज़दीक आ कर उन्हों ने अपनी कार रोकी ही थी कि पीछे से एक और ट्रक उस से आ टकराया. ठीक उसी समय जब कि पीछे से आ रहे वाहनों को सावधान करने के उद्देश्य से दौड़ता गर्ड एंबाक फ़ोर्ड के बराबर पहुंचा, दुर्घटनाओं का सिलसिला अपने चरम बिंदु पर पहुंच गया.

कुर्ट बैकमैन अपने ट्रेलर ट्रक में २३ टन आलू लादे ८० किलोमीटर प्रति घंटा की रफ़्तार से चला आ रहा था. घने कोहरे में वह कुछ भी देख नहीं पाया. उस ने संभलने की पूरी कोशिश की, लेकिन अवसर हाथ से निकल चुका था. दुर्घटनाग्रस्त कारों के रेले से उस का ट्रक इतनी तेज़ी से टकराया कि सारी कारें आगे घिसटती चली गईं. यहां तक कि ट्रैक्टर पर लदी इस्पात की चादर ने मुड़ तुड़ कर ४ मीटर ऊंचे टीले का रूप ले लिया. परंतु इस से भी बड़ा अनर्थ यह हुआ कि दो वाहनों के पेट्रौल की टंकियां फट गईं. पेट्रौल सड़क पर बह निकला. उधर कंकरीट की सड़क पर धातु की रगड़ से चिनगारियां पैदा हुईं.

बहते पेट्रोल के संपर्क में आते ही चिनगारियों ने लपटों का रूप ले लिया. देखते ही देखते आग की लपटें चारों ओर फैल गईं. दुर्घटनाग्रस्त कारें धू धू कर के जलने लगीं.

फ्रांज़ आंद्रा ने अपनी कार के शीशे में पीछे से आने वाली कारों को देखा. वह अपनी पत्नी से कहना चाहते थे, "सीट कस कर पकड़ लो. पिछली कार टकराने वाली है." लेकिन समय नहीं मिला. पीछे वाली कार ने उन की कार को टक्कर दे मारी. वे अपनी सीटों ही में फंसे रह गए. कार के पिछले हिस्से ने आग पकड़ ली थी. दोनों बाहर भी नहीं निकल सकते थे. सड़क की रेलिंग कार के बाएं दरवाज़े के इतने क़रीब थी कि उसे खोला नहीं जा

धुंध में गाड़ी चलाएं तो...

- यह देखें कि सामने से आने वाली कार की बत्तियां तो नहीं जल रहीं. जल रही हों तो संभव है कि आगे कोहरा छाया है.
- अपनी गाड़ी की हैंड लाइट जला लें. आप की कार में धुंध में काम आने वाली बत्तियां लगी हों तो उन का सहारा लें. यह भी जांच लें कि टेल लाइटें ठीक जल रही हैं.
- कार को बाईं ओर ही रख कर चलाएं. अचानक रुकना पड़े, तो पार्किंग जला दें और जलने बुझने वाली लाइट चालू कर दें. संभव हो तो गाड़ी सड़क से एकदम हट कर कच्चे पर खड़ी करें और पार्किंग लाइट जली रहने दें. गाड़ी सड़क से न उतर सकती हो तो गाड़ी से निकलने के लिए ड्राइवर वाले दरवाज़े से नहीं, बल्कि सवारी वाले बाएं दरवाज़े से बाहर निकलें.
- गाड़ी की गति दृष्टि की पहुंच के हिसाब से रखें कोहरे की गहनता का अनुमान बिजली के खंभों को देख कर भी लगाया जा सकता है कि वे आप को कहां तक दिखलाई पड़ रहे हैं.
- अगली और अपनी गाड़ी के बीच की दूरी बढ़ा लें. अगली गाड़ी से सट कर चलना ख़तरनाक है.
- ओवर टेक करने की कोशिश न करें. अगली गाड़ी की हेडलाइट से यह भ्रम हो जाता है कि आप दूर तक देख सकते हैं, जब कि ऐसा नहीं होता.
- अपनी गाड़ी के वाइपर भी चला दें ताकि नमी की परत साफ़ हो.
- आप की कार कोहरे के कारण कहीं टकरा जाए तो तत्काल गाड़ी को छोड़ उस से काफ़ी दूर चले जाएं.

—जरमन आटोमोबाइल क्लब प्रेस सरविस

सकता था. दाहिने दरवाज़े का रास्ता एक अन्य कार ने रोक रखा था.

बदहवास आंद्रा ने सामने वाले शीशे पर पूरी शक्ति से मुक्का मारना शुरू किया. टक्करों से कार का अंजर पंजर इस तरह हिल चुका था कि मुक्का लगते ही शीशा फ्रेम समेत बाहर निकल आया. वे और उन की पत्नी उसी रास्ते से किसी प्रकार बाहर निकलें. उसी समय उन्हों ने एक चीख़ सुनी. और फिर उन्हों ने जो कुछ देखा उसे जीवन भर नहीं भूल पाएंगे. कार और रेलिंग के बीच गर्ड एंबाक फंसा पड़ा था, जो आलुओं से भरे ट्रक की चपेट में आ गया था. चारों ओर से बढ़ते आग के शोले उसे लील लेने को आतुर थे. "बचाओ, प्लीज़ मेरी मदद करो," एंबाक चीख़ चीख़ कर बस यही कह रहा था, "मैं जल जाऊंगा. भगवान के लिए मुझे बाहर निकाल लो."

परंतु शोलों की गरमी इतनी तेज़ थी कि देखने वाले एंबाक से दो मीटर दूर रहने पर विवश थे. उधर सड़क के उस ओर बिजली मिस्तरी बर्नहार्ड क्लिंजर ने यह दृश्य देखा, तो आग बुझाने वाला यंत्र उठा लिया और कुछ क्षणों तक उन भयंकर शोलों को एबाक से परे रखने में सफल रहा. पर उस के यंत्र में आग बुझाने वाली गैस समाप्त हो गई. एंबाक को बचाने का जब और कोई उपाय न सूझा तो गैस का ख़ाली सिलेंडर हाथ में ज़ोर ज़ोर से लहराते हुए वह सड़क के दूसरी तरफ़ से आने वाली

कारों को रोकने दौड़ा. कारें आंधी जैसी गति से आ जा रही थीं. वह ख़ाली सिलेंडर हवा में लहरा रहा था. लोग सब कुछ देख रहे थे. पर किसी ने कार नहीं रोकी.

दुर्घटना-ग्रस्त गाडियों में अंतिम और २३वीं थी ४३ वर्षीय शोधकर्ता गुंटर रीन कैंप की पोर्श कार. उस ने भी एंबाक की पुकार सुनी. और कुछ न बन पड़ा तो उस ने अपना चमड़े का ओवर कोट उतारा और उसे एंबाक के कंधों पर फेंका. लेकिन गुंटर भी एंबाक को निकाल नहीं पाया.

दस मिनट तक एंबाक सहायता के लिए पुकारता रहा. फिर आग उस के कपड़ों और बालों तक पहुंच गई. थोड़ी देर तक उस की मद्धिम होती आवाज़ सुनाई देती रही. फिर वह हमेशा के लिए शांत हो गया.

एक कार वाले ने निकटस्थ आपातकालीन फ़ोन पर दुर्घटना की सूचना दी. ८ बज कर ३७ मिनट पर म्यूनिक रेस्क्यू सेंटर की एंबुलेंस गाड़ियां घटना स्थल पर पहुंचीं. घायलों का प्राथमिक उपचार होने लगा. बुरी तरह झुलसे व्यक्तियों सहित बारह व्यक्तियों को नज़दीक के अस्पतालों में ले जाया गया. तब तक आग बुझाने वाली गाड़ियों ने झाग की वर्षा से आग बुझा दी. आठ कारें जल कर राख बन चुकी थीं. आलुओं वाले ट्रक का अगला भाग तथा एक अन्य ट्रक का पिछला भाग भी बिलकुल जल गया था.

बाद में इन लौह ढांचों को काट कर चारों ड्राइवरों के शव निकाले गए. एक कार के फ्रंट ऐक्सल के तले से कुल ७० सेंटीमीटर का जला अस्थिपंजर मिला. सब स्तब्ध थे कि वह बच्चा तिल तिल कर कैसी मौत मरा होगा. तात्कालिक जांच से पता चल गया कि कोयले का वह ढांचा एंड्री क्रैमर के कुत्ते का था जो कार के नीचे फंस कर आग में जल गया.

न्यायाधीश हैंस बार ने इस तांडव का निरीक्षण करते हुए कहा, "जज और सरकारी वकील के तौर पर अपने जीवन के बीस वर्षों में मैं ने कई भयंकर दुर्घटनाएं देखी हैं, परंतु यह सब से भीषण है." न्यायाधीश हैंस ने विभिन्न प्रमाणों के आधार पर चार ड्राइवरों को लापरवाही वश हत्या तथा शारीरिक चोट पहुंचाने का अपराधी ठहराया. नवंबर १९८० में म्यूनिक के ज़िला न्यायालय ने सज़ा सुनाई. एक ड्राइवर को एक साल की कैद का निलंबित दंड दिया गया. और ट्रैक्टर ट्रेलर के ड्राइवर को मुक्त कर दिया गया. बाक़ी के दो मुक़दमे अभी बक़ाया हैं, उन मामलों में सज़ा के विरुद्ध अपील दायर है.

दोषियों को तो सजा मिल गई, पर इस दुर्घटना से संबद्ध लोगों के दिलोदिमाग से महा विनाश का वह दृश्य क्या कभी मिट पाएगा ? "उस दुर्घटना के बाद मैं पूरे तीन दिन तक सो नहीं पाया," कहना था फ्रांज़ आंद्रा का. वह बताते हैं, "और उस के बाद भी हफ़्तों मेरी आंख खुल जाती. दरअसल आंख लगते ही धुएं और आग में घिरी गाड़ियों का दृश्य सामने उभर आता और मदद की उन कातर पुकारों से मैं हड़बड़ा कर उठ बैठता. मैं तीस साल से कार चला रहा हूं पर मुझ से कभी कोई दुर्घटना नहीं हुई. फिर भी आजकल कभी कोहरा देखता हूं तो गाड़ी घर ही छोड़ जाता हूं."

उस राजमार्ग पर उस अग्निकांड के निशान कब के मिट चुके हैं. दुर्घटना स्थल पर अब कंकरीट की नई तह बिछा दी गई है. पर आज भी किसी सुबह धुंध का चादर फैलता है तो यातायात की रेलपेल के क्षणों में गाड़ियों के स्पीडोमीटर की सुई ८०, ९० या फिर १०० किलोमीटर प्रति घंटे के निशान पर थरथराया करती है. लोग अपनी तबाही और मृत्यु को निमंत्रण दे रहे हैं—आप उन में शामिल मत हों.

दुनिया बुद्धिमान है जो बुद्धिमानी से ज़्यादा खुशी को पसंद करती है. —विल डूरंट
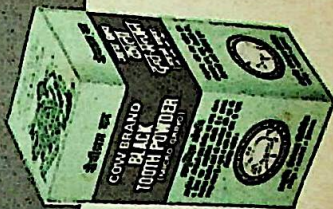
heros AS-151 F HN

ये लोग आदमी को तो चांद पर उतार सकते हैं, लेकिन केक में जेली ठीक से नहीं भर सकते

बड़ा काम छोटे पहलू

विल स्टेनटन

चंद्रलोक पर मानव के चरण पड़ने से कुछ अरसा पहले ही मेरे दादा परलोक पहुंच चुके थे. मेरे विचार में, इस घटना को न देख पाना उन के लिए शर्म की बात थी. इस लिए नहीं कि उन्हें चंद्रलोक की यात्रा से कुछ फ़र्क पड़ता, वरना इस लिए कि यह घटना उन के जीवन के सब से अहम सवाल को उजागर करती : आदमी जब मुश्किल से मुश्किल काम को इतनी अच्छी तरह कर लेता है तो आसान कामों को करने में क्यों बौखला जाता है?

उन के पास एक अनोखी पुरानी कार थी. घर वालों के दबाव डालने पर उन्हों ने उस की जगह नई पूर्ण स्वचालित कार ले ली. एक तरह से नई कार दादा के लिए वरदान थी क्योंकि यह उन के प्रिय सिद्धांत 'परिवर्तन का परिणाम बुरा होता है' के पक्ष में रोज़ रोज़ प्रमाण जुटा देती थी. दूसरा महीना लगते लगते कार की स्वचालित खिड़कियां गड़बड़ करने लगीं. पुरानी कार में लगी खिड़कियां २० साल बाद भी ठीक ठाक काम कर रही थीं.

पुरानी कार में बैठ कर शान बान का अनुभव होता था. दुबक कर बैठने, कोहनी तुड़वाने या हैट उछलवाने की नौबत भी उस में नहीं आती थी. उस के बड़े बड़े पहिए रास्ते की बाधाओं को पार करने में सक्षम थे. छोटा रास्ता पकड़ कर उसे चरागाह की पगडंडी से भी निकाला जा सकता था. एक छोटा सा पत्थर पार करने में भी इस नई कार की चूलें हिल जातीं, जब कि पुरानी कार ऐसी बाधाओं को हिरन की तरह कुलांच मार कर पार कर लेती.

मैं ने बचपन के काफ़ी दिन दादा की संगत में बिताए थे. कुछ लोग मेरी शंकालु और अविश्वासी प्रवृत्ति को इसी संगत की देन मानते हैं. यह वाहियात बात है. वह बस, सीधे सादे सही सलीक़े के आदमी थे. मैं ने उन से तीन बातें सीखीं : १. सुधरे नमूने की बनिस्बत सुधरी हुई चीज़ बेहतर होती है. २. सही काम करने वाले को ग़लत बताने वाले हमेशा मिलते हैं. ३. कुछ भी इतना सीधा सादा नहीं होता कि उसे गोल मोल न बनाया जा सके.

मेरे अनुमान से ऐसे लोग अधिक नहीं होंगे जिन्हें उस पुराने टोस्टर की याद हो जो दोनों तरफ़ खुल सकता था. जब चाहें, उसे खोल कर देखा जा सकता था कि रोटी कैसी सिंक रही है. अब हमारे पास आधुनिक टोस्टर है

जिस में चार स्लाइस एक साथ सेंके जा सकते हैं. वह कुछ इस तरह का है कि कार्टून बनाने वाले इसे परे रसोईघर में रोटियां उछालते अंकित करना पसंद करेंगे.. लेकिन हमारा टोस्टर बिलकुल उलटा है. यह रोटी सेंकता है तो जला भून कर ही उस का पीछा छोड़ता है.

पहले बोतलों में दूध आता था. क्रीम ऊपर ही तैरती रहती. उसे निकाल कर काफ़ी या स्ट्राबेरी में इस्तेमाल किया जा सकता था. दूध बच्चों के लिए बच जाता. क्रीम में कैलोरी और कोलेस्टेरोल की भरपूर मात्रा होती. लेकिन हम ने कभी इस ओर ध्यान नहीं दिया. सोचा कि इस तरह की चीज़ें आप के लिए ठीक होंगी. फिर दूध बिलोया हुआ मिलने लगा. कैलोरी और कोलेस्टेरोल उस में मिला दिए जाते हैं ताकि सब के हिस्से में आएं, सिर्फ़ स्ट्राबेरी खाने वाले ही फ़ायदे में न रहें.

आज कल हमारे यहां दूध गत्ते के डब्बों में मिलता है. इसे ऊपरी ढक्कन हटा कर निकालना होता है. पर यह तो हुई सिद्धांत की बात. वास्तव में होता यह है कि गत्ते के टुकड़े कुछ इस तरह चिपकाए जाते हैं कि ऊपर का ढक्कन हटाते हटाते कोई कोर फट जाती है. और आप बच्चे के लिए गिलास में दूध उंडेलने लगते हैं तो पता लगता है कि दूध तो आप की आस्तीन में बह आ रहा है. ग़रज़ यह है कि काम कितना भी असाधारण हो, उस के कई पहलू होते हैं.

कुछ दिन पहले की बात है. घर में जेली भरा केक सिर्फ़ एक था और मेरे दोनों बच्चे उसे हथियाने के लिए झगड़ रहे थे. मुझे दोनों को संतुष्ट करने की तरक़ीब सूझी और मैं ने केक को आंधा आधा काट दिया. लेकिन क्षण भर के लिए मैं ठगा सा रह गया. केक के आधे हिस्से में तो जेली भरी थी, दूसरा हिस्सा ख़ाली था. आख़िर उस में मुझे जार से निकाल कर जेली भरनी पड़ी.

उस पल मेरे कानों में दादा की असंतोष भरी तीखी आवाज़ गूंजने सी लगी, "यह कैसी विडंबना है! ये लोग आदमी को चांद पर तो उतार सकते हैं, लेकिन केक में जेली ठीक ठीक नहीं भर सकते." ❖

बेन किंग्सले को निर्देशन देते हुए रिचर्ड एटनबरो

'गांधी' महान फ़िल्म की महायात्रा

राहुल सिंह

दृश्य : नई दिल्ली के निकट एक छोटा सा गांव. समय : सूर्योदय के तत्काल बाद. एक कार, वयोवृद्ध मोहनदास करमचंद गांधी के रूप में, रायल शेक्सपियर कंपनी के अभिनेता बेन किंग्सले को 'गांधी' नामक फ़िल्म की शूटिंग में भाग लेने के लिए पहली बार लोकेशन पर लाती है. हू ब हू गांधी से, सफेद धोती पहने, कमर से ऊपर निर्वस्त्र शरीर पर ओढ़ी शाल को मुट्ठी से भींचे वह कार से निकलते हैं तो दर्शकों में खड़ा एक किसान उन के चरण छू लेता है. किंग्सले बौखला उठते हैं और उसे समझाते हैं कि वह तो गांधी का अभिनय करने वाले अभिनेता भर हैं.

किसान कहता है, "हम जानते हैं. मगर

आप के रूप में गांधी निश्चय ही फिर अवतार लेंगे.''

बेन किंग्सले के अभिनय कौशल के प्रति यह एक हृदयस्पर्शी, स्वतः प्रसूत श्रद्धांजलि थी; और 'गांधी' के निर्माता निर्देशक सर रिचर्ड एटनबरो के इस उत्कट विश्वास की पुष्टि थी कि अहिंसात्मक क्रांति द्वारा भारत के स्वतंत्रता संग्राम की सृष्टि करने वाले महात्मा गांधी नामक चमत्कारी व्यक्ति पर फिल्म बन सकती है और अवश्य बनाई जानी चाहिए.

आम सभाओं व प्रदर्शनों आदि में भीड़ के भव्य दृश्यों वाली 'गांधी' जिस का हाल ही में नई दिल्ली, लंदन व वाशिंगटन में प्रीमियर हुआ था और इस महीने जिस का विश्वव्यापी प्रदर्शन होगा, भारत में बनी आज तक की सब से महंगी फ़िल्म है (बजट १८ करोड़). यह २० साल पुराने एक सपने की उपलब्धि है, और सिनेमा के इतिहास की कतिपय दुर्गमतम बाधाओं पर विजय की कहानी है. ५९ वर्षीय एटनबरो खुद स्वीकार करते हैं कि 'गांधी' उन का ''उन्माद'' थी.

राह का पहला रोड़ा तो फ़िल्म उद्योग के ही भीतर मौजूद संदेहवादी थे. एक बोला, ''फ़िल्म, गांधी पर? ज़रूर आप पागल हो गए हैं.'' अन्य पश्चिमवासी पूछने लगे, ''वह, आखिर, था कौन?'' फाइनेंसर बिदक उठे. ब्रिटेन की रैंक आर्गनाइज़ेशन के चेयरमैन जान डेविस के सामने जब एटनबरो ने बड़ी गंभीरता से दलील दी, ''गांधी का प्रेम, अनुकंपा और भाईचारे का संदेश दुनिया भर तक पहुंचना चाहिए.'' तो डेविस भभक पड़े, ''मुझे यह मत सिखाइए कि आप कोई आदर्श संदेशपूर्ण फ़िल्म बनाने जा रहे हैं. इलेक्ट्रिकल एंड म्यूज़िकल इंडस्ट्रीज़ और ट्वेंटियथ सेंचुरी-फ़ाक्स वाले ऐसी फिल्मों को 'अव्यावसायिक' घोषित कर चुके हैं.'' ब्रिटिश फ़िल्म उद्योग के लिए भारत अपेक्षाकृत अनटोहा बाज़ार था, ''अतः पूंजी की दृष्टि से विनाश की आशंकाएं लिए हुए था. कुछ उल्लेखनीय विदेशी फ़िल्मों की यहां शूटिंग की गई थी; मगर 'गांधी' की शूटिंग का मतलब था तेज़ी से बढ़ते ग्रामीण क्षेत्रों में अतीत की पुनर्रचना.

जबकि भारत में इसी बात को ले कर गहरी ऊहापोह थी कि महात्मा की भूमिका—जो भारत के अंतिम वायसराय लार्ड लुई माउंटबेटन के अनुसार एक दिन ईसा और बुद्ध जितने ही श्रद्धास्पद होने वाले हैं—एक विदेशी निभाएगा. बंबई की एक महिला प्रोफ़ेसर का दृढ़ मत था कि स्क्रीन पर गांधी का चित्रण ''एक गतिमान ज्योति पुंज'' के माध्यम से ही किया जा सकता है. एटनबरो कहते हैं, ''बहुतेरे भारतीयों की धारणा यह थी कि ऐसे दिव्य पुरुष को व्यावसायिक सिनेमा का पात्र बनाना अपवित्र करना होगा. मैं इस (धारणा) से बिलकुल असहमत था और नेहरू के अंतिम शब्द याद करता रहता था: ''गांधी को देवता मत बनाना: वह इतने महान पुरुष थे कि उन्हें देवपद नहीं दिया जा सकता.''

इस के अलावा भारत की नौकरशाही के उलझावपूर्ण बीहड़ से भी निपटना था. पटकथा के अनुसार, एक ऐतिहासिक स्थल पर कुछ शूटिंग नितांत आवश्यक थी. एक अफ़सर की टालमटोल से जब शूटिंग में विलंब का ख़तरा पैदा हो गया तो छः महीने के शूटिंग कार्यक्रम को राई रत्ती निभाने पर आमादा एटनबरो उस पर एक थानेदार की तरह तमकने और गरजने बरसने लगे.

अफ़सर संत्रस्त हो उठा. मिन्नत करता

'रीडर्स डाइजेस्ट' के भारतीय संस्करणों के भूतपूर्व प्रमुख संपादक राहुल सिंह संप्रति दैनिक 'इंडियन एक्सप्रेस' के वरिष्ठ संपादक हैं.

दक्षिण अफ़्रीका में भारतीय खदान मजदूरों के शांतिपूर्ण प्रदर्शन पर डंडे बरसाती घुड़सवार पुलिस

बोला, "मेहरबानी कर के गुस्सा न कीजिए, सर रिचर्ड." और उस ने तत्काल शूटिंग की अनुमति दे दी. इस अवसर पर उपस्थित एक अन्य अफ़सर बताता है, "मेरे साथी को पता होना चाहिए था कि सर रिचर्ड एक मंजे हुए अभिनेता हैं. उस से काम निकलवा कर उन्हों ने मुझे चुपके से आंख मार दी."

बीस वर्ष पहले एटनबरो के लिए गांधी इतने महत्वपूर्ण नहीं थे. पर तभी एक दिन महात्मा गांधी के एक अनुयायी मोतीलाल कोठारी ने, जो उन दिनों लंदन के भारतीय उच्च आयोग में काम करते थे, उन से पूछा, "आप गांधी पर फ़िल्म बनाना पसंद करेंगे?" एटनबरो को तब लगा तो यह फ़ितूर ही, मगर लुई फ़िशर लिखित गांधी का जीवनचरित 'द लाइफ़ आफ़ महात्मा गांधी' पढ़ने की बात उन्हों ने मान ली.

आज एटनबरो याद करते हैं: "पहले पृष्ठ से ही मैं मुग्ध हो कर रह गया. फिर मुझे एक ऐसी घटना पढ़ने को मिली जिस ने मुझे चारों खाने चित कर दिया. १९ वीं सदी के अंतिम दशक में गांधी, जो तब दक्षिण अफ़्रीका में वकील हुआ करते थे, एक अन्य भारतीय के साथ फुटपाथ पर चले जा रहे थे कि दो गोरे दक्षिण अफ़्रीकियों को रास्ता देने के लिए इन दोनों को मोरी में उतर जाना पड़ा. इस पर गांधी बोले, 'मेरे लिए यह रहस्य ही है कि कुछ मनुष्य दूसरे मनुष्यों का अपमान कर के खुद को सम्मानित कैसे अनुभव कर सकते हैं.' इस टिप्पणी की अनुभूति से मैं हक्का बक्का रह गया."

एटनबरो के मातापिता भी जातीय भेदभाव के विरुद्ध संघर्ष कर चुके थे; उन के पिता ने यहूदी शरणार्थियों को नात्सी जरमनी से पलायन करने में सहयोग दिया था. कहते हैं, "एक तरह से मैं तो मानो तैयार बैठा गांधी की प्रतीक्षा ही कर रहा

था.''कोठारी को उन्हें ने फ़ोन किया : ''मैं फ़िल्म बनाऊंगा.''

भारत की सरकारी अनुमति आवश्यक थी. एटनबरो को याद है, ''मैं ने लार्ड माउंटबेटन से अपनी ज़रा सी जान पहचान का पल्ला थामा. उन से मैं ने नेहरू और अपने बीच मध्यस्थ बनने को कहा.'' दो दिन बाद ही दिल्ली से उन्हें तार आया, ''प्रधान मंत्री को उक्त योजना पर चर्चा कर के प्रसन्नता होगी.''

एटनबरो मई १९६३ में नई दिल्ली आए. प्रधान मंत्री के दफ़्तर का दरवाज़ा खोलने से पहले नेहरू के सेक्रेटरी ने चेतावनी दी : ''याद रखिएगा, आप को केवल ३० मिनट दिए गए हैं.'' लेकिन एटनबरो के उत्साह और विषय बोध ने वह कमाल दिखाया कि फ़र्श पर फैले अलबमों पर झुके झुके प्रधान मंत्री जवाहरलाल नेहरू ने उन के साथ दो घंटे काट दिए. ब्रिटेन लौटने पर एटनबरो को एक पत्र मिला जिस में भारत सरकार नें उन्हें फ़िल्म बनाने की विधिवत अनुमति दे दी थी.

इस के बाद एटनबरो के दृढ़ निश्चय की कड़ी परीक्षा लेते पूरे १६ साल गुज़र गए. नेहरू गुज़र गए हालांकि मृत्यु से पहले उन्हों ने अपनी बेटा इंदिरा गांधी से एटनबरो का परिचय करा दिया.

आपातकाल ने फ़िल्म बनाने की संभावना टाल दी, और १९७७ में इंदिरा गांधी ही सत्ताच्युत हो गईं. एटनबरो इस बीच निर्देशक बन गए. 'ओह! ह्वाट ए लवली वार,' 'यंग विंस्टन' और 'ए ब्रिज टू फ़ार' जैसी फिल्मों ने उन्हें निर्देशक के रूप में ख्याति भी दिलाई. किंतु इस तमाम अरसे 'गांधी' पर काम करने में वह इस क़दर व्यस्त रहे कि अभिनय के ४० और निर्देशन के १२ अनुबंध उन के हाथ से निकल गए.

पूंजी की गुत्थी १९८० में इंदिरा गांधी के पुनः सत्तारूढ़ होने के बाद ही सर रिचर्ड एटनबरो सुलझा सके : १०.२ करोड़ रुपए दिए फ़िल्मों में पैसा लगाने वाली अंतरराष्ट्रीय कंपनी गोल्डक्रेस्ट ने, २.७ करोड़ रुपए दिए ब्रिटिश प्रकाशन संस्थान पियरसन लांगमैन ने, और ५.१ करोड़ रुपए भारत की सरकारी संस्था राष्ट्रीय फ़िल्म विकास निगम (नेशनल फ़िल्म डेवलपमेंट कारपोरेशन) ने. अंततः 'गांधी' का फिल्मांकन शुरू हुआ; उन्माद को वास्तविकता का रूप मिला लेकिन सुलह समझौते का दौर इतना यंत्रणादायी था कि एक बार तो ज़िंदगी बनाए रखने के लिए एटनबरो को अपना अमूल्य कला संग्रह का कुछ अंश बेच देना पड़ा और अपना घर तथा 'ए ब्रिज टू फ़ार' के टेलिविज़न अधिकार तक गिरवी रखने पड़ गए.

अब समस्या आई मुख्य भूमिका के लिए अभिनेता के चयन की. एलेक गिनिस (जो नेहरू की पसंद थे) और जान हर्ट पहले ही मना कर चुके थे.

अतः एटनबरो ने बेन किंग्सले को जा थामा, जिन्हें वह रायल शेक्सपियर कंपनी के नाटक 'ए मिडसमर नाइट्स ड्रीम' में देख चुके थे. किंग्सले, जो तब ३६ वर्ष के थे, आधे भारतीय हैं (वास्तविक नाम कृष्ण भानजी). उन के पिता गांधी जी की ही भांति गुजराती हैं. ५'८'' लंबे, गांधी जी से क़द में मात्र डेढ़ इंच ऊंचे व उन्हीं जैसी अभिव्यक्तिशील काली आंखों लंबी नाक और अस्थि विन्यास के स्वामी किंग्सले बताते हैं, ''विचित्र संयोग है कि मेरी पत्नी (एक बार) पुस्तकालय से गांधीजी की राबर्ट पेन लिखित जीवनी लाई. और कुछ ही दिन बाद स्क्रीन टेस्ट देने के लिए मुझे मिला सर रिचर्ड का निमंत्रण, फिर भूमिका भी मिल गई. लगता है, 'गांधी' मेरा प्रारबध थी.''

एटनबरो की अविचल आस्था के अनुरूप,

किंग्सले ने शाकाहारप्राय संयम निष्ठा से अपना वज़न कई किलो कम कर के अपना ढांचा महात्माजी की तरह दुबला पतला कर लिया, जिस का वज़न ५१ किलो के आसपास रहता था. बदन को गांधी जी जैसा लचीला बनाने के लिए प्रतिदिन वह योगाभ्यास करते;और उन्हीं की तरह अपने कपड़े बनाने के लिए किंग्सले ने चरखे पर सूत कातना भी सीखा. लंकाशायर की मिलों में बने कपड़े के आयात से भारत के लाखों बुनकरों की दशा शोचनीय हो गई थी, और चरखे के सूत से वस्त्र बनाना इस स्थिति के प्रति गांधी के विरोध का प्रतीक था. होटल के जिस कमरे में किंग्सले रहते थे, उस की दीवारों पर उन्हों ने गांधीजी के विभिन्न मुद्राओं में चित्र टांग या चिपका लिए.

बहुत सी पटकथाएं रद्द करने के बाद एटनबरो ने दामन पकड़ा ५४ वर्षीय, इंगलैंड वासी अमरीकी लेखक जान ब्रिली का. साल भर के शोध और श्रम के बाद ब्रिली ने जो पटकथा लिखी उस में महात्मा गांधी के १८९३ में, दक्षिण अफ्रीका पहुंचने से ले कर १९४८ में, ७९ वर्ष की अवस्था में, मार दिए जाने तक का चित्रण है. लेखन पूरा कर के ब्रिली ने पटकथा अपनी टाइपिस्ट को थमा दी, मगर कई दिन तक उस ने टाइपशुदा पांडुलिपि नहीं लौटाई. माजरा यह था कि जैसे ही वह टाइप करना शुरू करती, चंद सतरों का सफ़र तय करते करते फूट फूट कर रोने लग जाती. एटनबरो समझ गए कि उन्हे एक आदर्श पटकथा मिल गई है. श्रीमती इंदिरा गांधी ने तीन घंटे सात मिनट लंबी ब्रिली की पटकथा पढ़ते ही सहमति दे दी.

२६ नवंबर १९८० को, दिल्ली के पास, पत्थर की एक इमारत की लोकेशन पर, एक पुजारी के आशीर्वाद के उपरांत फ़िल्म की शूटिंग शुरू हुई. एटनबरो ने आदेश दिया "एक्शन!" ... और डंडे बरस पड़े, घोड़ों की टापें गूंज उठीं ;और घुड़सवार पुलिस गांधीजी के अनुयायियों को धुनने लगी—जो सत्ता की सविनय अवज्ञा में डंडों की मार खाते निर्विरोध पड़े रहे.

गरमियों से पहले ही शूटिंग पूरी करना ज़रूरी था. बहुधा सूती कमीज़ और स्ट्रा हैट पहने एटनबरो कभी जोश से भर उठते, कभी अभिनेताओं को अपनी कल्पना के अनुरूप शाट देने के लिए फुसलाने लगते; मगर हमेशा जागरूक आलोचक की तरह सतर्क रहते, और कभी कभी री-टेक पर खौखिया भी उठते : "मुझे ख़ामोशी चाहिए, कमबख़्तो, सुनते हो ?" और यूं उन्हों ने १०० विभिन्न सेटों पर १८९ दृश्यों का फ़िल्मांकन पूरा कर डाला.

ब्योरों की परिशुद्धता के प्रति एटनबरो अतिशय सतर्क थे. १९वीं सदी केअंतिम दशक से ले कर २० वीं सदी के पांचवें दशक तक, विभिन्न समयों में प्रचलित रेल डब्बों की पुनर्रचना के लिए ब्रिटेन से एक रेल विशेषज्ञ बुलाया गया. भारत में फ़ोर्ड की एक ही माडल टी कार बची रही होगी, जिसे जैसे तैसे ढूंढ निकाला गया और मरम्मत कर के चलने लायक़ बना लिया गया. तभी दिल्ली के निकट ही खड़ा किया गया गांधी जी का आश्रम, हू ब हू वैसा ही; जिस में ज़मीन पर बैठ कर पढ़ने लिखने वाली उन की उरेबदार गावमेज़* भी ज्यों की त्यों थी, तकिए और सिरहाने भी वैसे ही थे और

---

*बड़े शहरों से आजकल प्रायः विलुप्त होती जा रही भारतीय शैली की यह मेज़ कचहरियों के मुंशियों और मंडियों के मुनीमों में बहुत प्रचलित थी. इस में पाए नहीं होते और यह चारों तरफ़ से बंद होती है. ऊपर से तख़्तियां होती हैं—एक सीधी और एक उरेबदार, जो इस से कब्ज़ों से जुड़ी होती है और ढक्कन का काम भी करती है. इस के भीतर पढ़ने लिखने और संदर्भ आदि योग्य ढेर सारी सामग्री रखी जा सकती है.

परोसने पकाने के बरतन भी ठीक वैसे ही जैसे कस्तूरबा इस्तेमाल करती थीं. कस्तूरबा की भूमिका की है रोहिणी हतंगड़ी ने.

वेशभूषा नियोजिका भानु अतैया को शुरू शुरू में वैसे मर्दाना सैंडिल न मिले जैसे उन दिनों जवाहरलाल नेहरू (रोशन सेठ) पहना करते थे. आख़िर वह खोजती खोजती उसी दुकान पर जा पहुंची जहां से जवाहरलाल जूते ख़रीदा करते थे; और सही जूते ले आई.

भीड़ के दृश्यों में भाग लेने के लिए बसों में भर भर कर एक्स्ट्रा जुटाए गए, मगर लोकेशन पर बस से उन्हें नहीं उतरने दिया गया; पहले उन के कपड़े बदले गए, उन से निवेदन किया गया कि वे अपने अपने बाल पेन और आधुनिक कलाई घड़ियां आदि छिपा लें. इस के बाद शुरू हुई उन की हजामतें—कतर ब्योंत कर सब के बाल उन दिनों के अनुरूप छोटे छोटे कर दिए गए. वेशभूषा विभाग को भारत के अंगरेज वायसरायों, महाराजाओं, एडवर्ड काल के नफ़ासत पसंद गोरों, सैकड़ों घुड़सवार सिपाहियों और पुलिस अफ़सरों तथा हज़ारों किसानों को इतिहास सम्मत वस्त्र पहनाने पड़े. भानु अतैया कहती हैं, ''गांधी में पोशाकों की जितनी क़िस्में हैं उतनी शायद कभी किसी फ़िल्म में नहीं देखी गई होंगी.''

आधुनिक इतिहास के पन्ने पलटते पलटते फ़िल्म से जुड़े लोग बहुधा विस्मयविमूढ़ हो उठते. तीन मूर्ति हाउस—प्रधान मंत्रीत्व काल में नेहरू के आवास और अब नेहरू संग्रहालय—में जब नेहरू की गांधी, सरदार पटेल और मौलाना आज़ाद से भेंट का दृश्य फ़िल्माया जा रहा था तो नेहरू की स्मृतियों के रक्षकों का कलेजा उमड़ पड़ा और वे बेक़ाबू हो कर रोने लग गए. उन में से एक साहब बोले, ''यह बिलकुल उन्हीं दिनों जैसा है. १९१९ का जलियांवाला बाग़ हत्याकांड—जिस में १५,००० लोगों की आम सभा पर अंगरेजों के निर्मम गोली चलाने से ३७९ मासूम मारे गए थे—फ़िल्माया जा रहा था तो पुनर्रचित ऐतिहासिक दृश्य की भीड़ के दो सिख एक्स्ट्रा इतने उत्तेजित हो उठे कि एटनबरो के निर्देशानुसार भागने के बजाय सिपाहियों पर डंडे बरसाते पंजाबी में नारे लगाने लगे : ''असी लड़ के मरांगे!''

भारत में इस फ़िल्म को ले कर बड़ा हो हल्ला था, मगर रचना की निश्छलता की बात फैलते ही वह छू मंतर हो गया. फ़िल्म का विरोध करने के लिए बनाई गई वाचाल समिति ने विशुद्ध गांधी शैली में कैमरे के सामने लेट कर शूटिंग रोकने की अपनी योजना त्याग दी. सरकार द्वारा एक विदेशी फ़िल्म में पैसा लगाने के कारण भड़के हुए भारतीय फ़िल्म निर्माता यह सुनते ही शांत हो गए कि ५.१ करोड़ की इस लागत की गारंटी सरकार ने दे दी है और गांधी से होने वाला लाभ वापस भारतीय फ़िल्म निर्माण में ही लगाया जाएगा.

फ़िल्म की सह निर्माता रानी दुबे कहती हैं, ''वरिष्ठ सरकारी अफ़सरों से ले कर निर्धन, भोलेभाले ग्रामीणों तक हर कोई जिस तत्परता से सहायता देने आगे बढ़ा, वह अद्‌भुत ही कहा जाएगा.'' इंदिरा गांधी ने भानु अतैया को अपने स्वर्गीय पिता के जोड़ों का पूरा ट्रंक सौंप दिया, ताकि वह नेहरू की भूमिका निभाने वाले रोशन सेठ के लिए वैसे ही वस्त्र सिलवा सकें. वायसराय के उद्यान में आयोजित एक जलपान समारोह के दृश्य के लिए भारत के विख्यात जौहरी त्रिभुवनदास भीमजी ज़वेरी ने ४० लाख रुपयों के कंठहार और हीरों, पन्नों व मणिकों से जड़े तेहरे मुकुट उधार दे दिए—और रसीद तक नहीं मांगी.

इस शाहकार का क्लाइमेक्स—गांधीजी की

राजकीय शव यात्रा का दृश्य—एटनबरो ने गांधीजी की ३३वीं पुण्य तिथि पर ३१ जनवरी १९८१ को फ़िल्माया था. सिनेमा इतिहास के सब से भीड़ भरे दृश्य के रूप में विख्यात, इस दृश्य में नई दिल्ली के राजपथ पर ३,५०,००० लोग जुटाए गए थे. एक ब्रिटिश स्टाफ़ आफ़िसर के रूप में, पुष्पाच्छादित अर्थी के ऐन पीछे चलते एटनबरो ख़ुद भी मातम मनाने वालों की इस भीड़ में शामिल हुए थे. उन की वरदी एकदम दुरुस्त थी;और इस महाविशाल दृश्य का अंकन उन्हों ने अचूक परिशुद्धता से किया था. उन के मुख्य सहायक निदेशक डेविड टांबलिन के शब्दों में, "हम यह आशा नहीं कर सकते थे कि यह भीड़ दुबारा जुट कर शव यात्रा करेगी. हमें दृश्य सीधे, बिना री-टेक ही पूरा करना था."

महात्मा—जिसे अलबर्ट आइंस्टाइन ने "आने वाली पीढ़ियों का प्रकाश स्तंभ" कहा था—के प्रति एटनबरो की इस श्रद्धांजलि के समीक्षा प्रदर्शन १९८२ की गरमियों के अंत तक होने लगे थे. ५० वर्षों से ख़ुद को सिनेमा का इल्लती बताने वाले एक श्रीलंकावासी का कहना है कि ऐसी मर्मस्पर्शी फ़िल्म उस ने कभी नहीं देखी: "स्क्रीनिंग रूम से निकले तो, आत्मचक्षुओं से यह देख लेने के कारण कि वास्तविक शक्ति तोप की नाल से नहीं फूटती, हम आध्यात्मिक उदारता एवं आश्चर्य बोध से विह्वल थे." अमरीका में हालीवुड के व्यावसायिक बैठकख़ानों में इस के वितरण अधिकार झपटने के लिए भगदड़ मच गई. एक अमरीकी आलोचक के शब्दों में, उत्कृष्टता की दृष्टि से, "फ़िल्म के रूप में गांधी का वर्गीकरण संभव नहीं है; यह एक अनुभव है."

एटनबरो द्वारा भारत में, निर्धारित समय औ[र] बजट के अदर अंदर, इस महागाथा के नि[र्माण] का प्रभाव यह हुआ कि अब पश्चिमी फ़िल्[म] जगत की कम से कम छः मुख्य फ़िल्मों क[ी] शूटिंग भारत में करने की योजना बनाई जा र[ही] है, जिन में से एक इ एम फ़ास्टर की विख्या[त] रचना 'पैसेज टु इंडिया' पर आधारित होगी.

'गांधी' के शिल्पियों पर भी गांधी क[ी] शिक्षाओं का पर्याप्त प्रभाव हुआ. सुरेश जिंद[ल] कहते हैं, "२५० भारतीय और ब्रिटिश कर्मि[यों] के यूनिट में थोड़ा बहुत मनमुटाव होना त[ो] अपरिहार्य था, किंतु गांधी जी के स्पर्श ने,उन क[ी] इस निष्ठा ने कि सहयोग के बिना कोई का[र्य] सफल नहीं होता, अपना रंग दिखाया. का[म] ख़त्म होने और विदा होने तक हम सब घनिष्[ठ] मित्र बन चुके थे."

घोर हिंसामयी अमरीकी फ़िल्म 'एपोकैलि[प्स] नाउ' के सितारे मार्टिन शीन ने, जिस ने 'गांधी' में एक अमरीकी पत्रकार की भूमिका निभाई है, अपना सारा मेहनताना (४ लाख रुपए) दान क[र] दिया—अधिकांश मदर टेरेसा को. साथ ही उ[न्हों] ने प्रण कर लिया है कि वह कभी किसी ऐ[सी] फ़िल्म में अभिनय नहीं करेग जो हिंसा [को] किसी भी रूप में महिमान्वित करती है.

और 'गांधी' के प्रधान शिल्पी सर रि[चर्ड] एटनबरो कहते हैं, "मैं नास्तिक हुआ करता [था] मगर अब मैं उन सारे आध्यात्मिक अनुभवों [के] लिए तैयार हूं जिन के बारे में २० वर्ष प[हले] सोच भी नहीं सकता था. बापू ने मुझे उस द[र्शन] से धन्य किया है जिस में कर्म और आस्था [का] समागम होता है. वह हमें नई दिशा देते हैं."

प्रथम पुरुष को प्राथमिकता देने पर कोई भी रिश्ता रिसने लगता है.

—'जरनल', फ्लोरिडा

सर्वोत्तम पुस्तक

जानवरों का डाक्टर
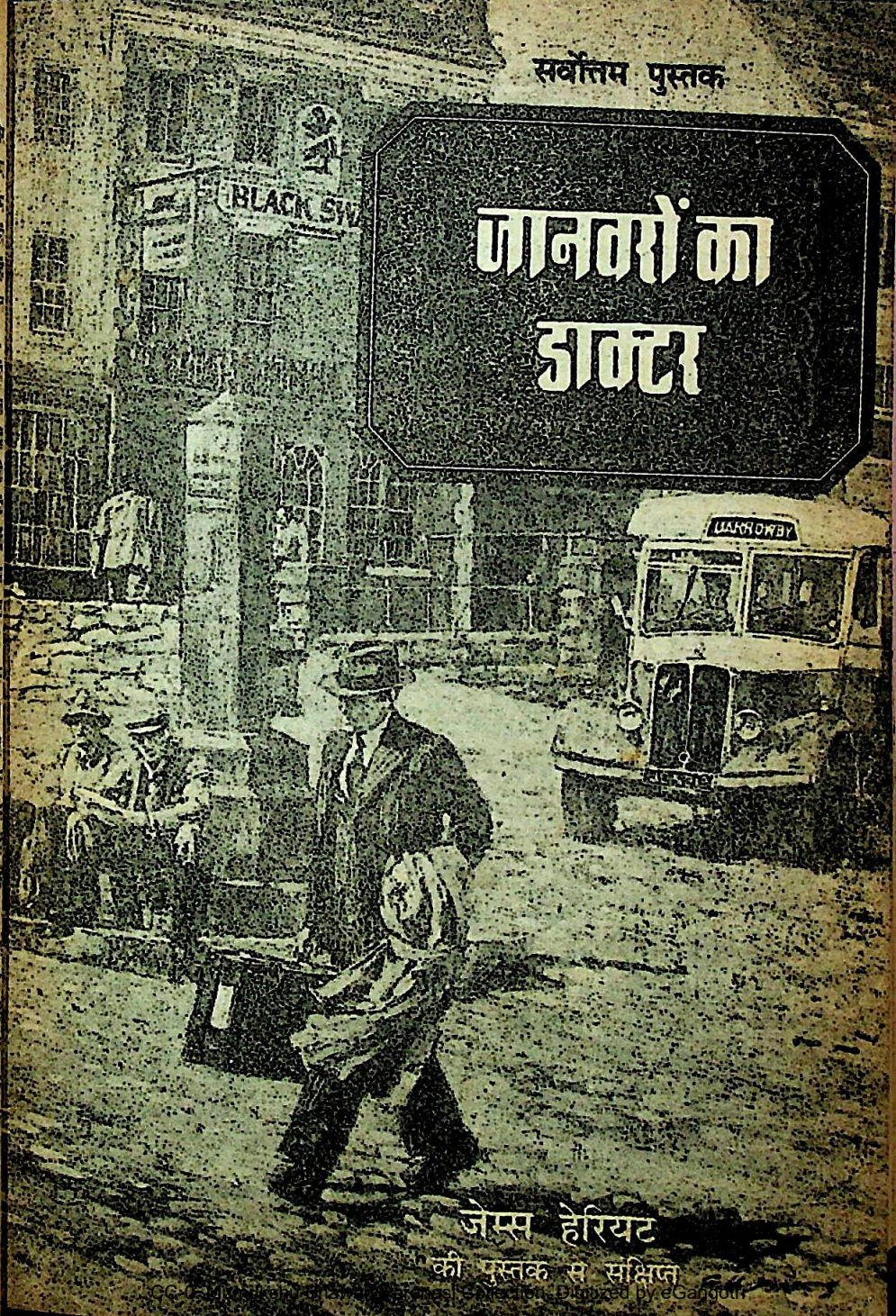
जेम्स हेरियट

की पुस्तक से संक्षिप्त

इस पुस्तक में जेम्स हेरियट ने जानवरों का देहाती डाक्टर होने के नाते अपने अनुभव बड़ी चतुरता के साथ बयान किए हैं. दूसरा विश्व युद्ध छिड़ा हुआ था. वह रायल एयर फ़ोर्स में भरती हो गए थे. अब उन के फ़ौजी जीवन की अपनी मांगें थीं. फिर भी रह रह कर उन का ध्यान अपने परिवार के खेतों और अपने काम धंधे की ओर चला जाता था. परिणाम स्वरूप ऐसी दिलचस्प कहानियों का संग्रह तैयार हो गया जिन में इंगलैंड के यार्कशायर डेल्स के इनसानों और जानवरों के आपसी प्रेम का वर्णन है.

जेम्स हेरियट

"आगे बढ़ो!" ड्रिल कराने वाला कार्पोरल चिल्लाया, "अरे, चाल थोड़ी तेज़ करो!" वह स्वयं बिना किसी प्रयास के दौड़ कर हमारे हांफते दस्ते के पिछले छोर पर चला आया और वहां से हमें हुक्म देने लगा, "क़दम तेज़, लैफ़्ट राइट, लैफ़्ट राइट."

मैं उस दस्ते के कहीं बीच में था. औरों के साथ साथ बड़ा ज़ोर लगाते दौड़ रहा था. सोच रहा था, ऐसा कब तक चलेगा. गांव का रहने वाला और वह भी यार्कशायर डेल्स का रहने वाला जानवरों का डाक्टर तो कभी ढीला पड़ ही नहीं पाता. उसे तो हरदम चलते रहना पड़ता है, बड़े बड़े ढोर डंगरों को क़ाबू में रखना होता है, एक खलिहान से दूसरे खलिहान तक पहुंचने के लिए कोसों चलना पड़ता है. और वह तो सख़्तजान होता है, मैं ने सोचा.

सहसा और और विचार आने लगे. शादी के बाद हेलेन के साथ गुज़ारे वे चंद महीने बड़े ही मौज मज़े में बीते थे. वह बहुत अच्छा खाना बनाती थी और मैं उस की पाक कला का शैदाई था. तीन दिन पहले मैं डेरोबाई में था. मेरी आधी जान हेलेन के पास अटकी थी

[illegible] से संक्षिप्त. कापीराइट [illegible] जेम्स हेरियट

आज रायल एयर फोर्स में मेरा तीसरा दिन था, जीवन धुंधला धुंधला लग रहा था. "घूम जाओ!" कार्पोरल चिल्लाया. जैसे ही मैं लड़खड़ाते हुए आगे बढ़ा, मेरे दिमाग़ में बड़ी कड़वी कड़वी बातें आने लगीं. अरे, आप तो अपना घरबार और प्यारी पत्नी को छोड़ कर देश की सेवा करने आए हैं और आप के साथ ऐसा सुलूक किया जा रहा है!

पिछली रात ही मुझे डैरोबाइ का सपना आया था. मैं बूढ़े डाकिन की गोशाला में पहुंच गया था. नीचे की ओर झुकी बडी बडी मूंछों वाले चेहरे में से उस किसान की धैर्यपूर्ण आंखें मुझे ताक रही थीं.

"लगता है बेचारी बूढ़ी ब्लौसम के दिन अब पूरे हुए," उस ने गाय की पीठ पर हाथ रखते कहा. उस का हाथ जो पहले ही बहुत बड़ा था, काम करते करते और भी भारी हो गया था. बूढ़े डाकिन के दुबले पतले शरीर पर मांस बस नाम को ही था, लेकिन उस की मोटी मोटी उंगलियां मेहनती जीवन का सबूत थीं.

मैं ने सुई को पोंछा और उसे भी धातु के उस बक्से में रख दिया जिस में मैं छुरी चाकू आदि डाक्टरी का साज़ सामान रखता था. "आप जानें, मि. डाकिन, लेकिन तीसरी बार मुझे इस के थनों को सीना पड़ा है और मेरा ख़याल है, ऐसा होता ही रहेगा."

बूढ़ी गायों के साथ सब से बड़ी यही समस्या है. उन के थन बहुत लटक जाते हैं और जब वे अपने थान पर लेटती हैं तो उन के थन और गायों के रास्ते में आ जाते हैं. फिर एक न एक गाय के पैरों तले आ कर वे कुचले जाते हैं.

"हां," मि. डाकिन ने कहा, "इस बुढ़िया गाय ने सारा क़र्ज़ उतार दिया है. मुझे १२ वर्ष पहले की वह रात याद है, जब यह जनमी थी. इस की मां का नाम डेज़ी था. मैं इसे इसी गोशाला से उठा कर ले गया था. बाहर बला की बर्फ़ गिर रही थी. तब से अब तक इस ने जाने कितने हज़ारों लीटर दूध दिया है. हिसाब लगाना भी कठिन है. १५ लीटर दूध तो यह आज भी दे रही है. नहीं, मेरा अब कुछ भी इस पर बाक़ी नहीं रहा."

मि. डाकिन ने अपने गाल फुला कर कहा, "अब इस का किया भी क्या जाए! मैं जैक डाडसन से कह दूंगा कि वह गुरुवार को आ कर इसे ले जाए. खाने में इस का मांस ज़रा सख़्त रहेगा, लेकिन थोड़े बहुत टिक्के तो बन ही जाएंगे." उस ने अपनी तरफ़ से मज़ाक़ ही किया था, लेकिन वह स्वयं उस पर हंस न सका.

अगले गुरुवार को किसी और काम से मुझे उसी फ़ार्म पर दोबारा बुलाया गया. मैं अभी गोशाला में ही था कि डाडसन ब्लौसम को ले जाने आ पहुंचा. "चल मेरे साथ!" वह गाय के शरीर में अपनी छड़ी गड़ाते हुए चिल्लाया.

"मारो मत!" मि. डाकिन गरजे.

डाडसन ने आश्चर्य से मि. डाकिन की ओर देखा. "आप जानते ही हैं, मैं जानवरों को कभी मारता नहीं हूं. मैं तो इस तरह उन्हें हांकता हूं."

"मालूम है, मालूम है, जैक. लेकिन इसे हांकने के लिए छड़ी की ज़रूरत नहीं है. तुम जिधर ले जाओगे, यह आप ही चली चलेगी."

मि. डाकिन और मैं खड़े देखते रहे. गाय आराम से गोशाला के बाहर निकल कर पहाड़ी की ओर चल दी. रास्ता चंद पेड़ों के पीछे से हो कर जाता था, इस लिए जल्द ही डाडसन

और ब्लौसम हमारी नज़रों से ओझल हो गए. लेकिन मि. डाकिन फिर भी उधर ही ताकते रहे और सख़्त धरती पर गाय के पांव पड़ने से जो आवाज़ निकल रही थी, उसे खड़े खड़े सुनते रहे.

जब वह आवाज़ भी आनी बंद हो गई, तब वह मेरी ओर मुड़ कर बोले, "हां तो, मिस्टर हेरियट, आइए अब चल कर अपना काम करें."

जब मेरा काम पूरा हो गया तो बातचीत भी समाप्त हो गई. चुप्पी खलने लगी. हम ने गोशाला का दरवाज़ा खोला. मि. डाकिन का हाथ अभी दरवाज़े की कुंडी पर ही था कि वे रुक गए. "यह क्या?" वे धीरे से बोले. पहाड़ी की ओर से मुझे भी किसी गाय के पैरों की आवाज़ साफ़ सुनाई पड़ी. तभी हम ने देखा कि पहाड़ी का मोड़ काट कर एक गाय हमारी ओर चली आ रही है.

वह ब्लौसम ही थी. दौड़ी दौड़ी आ रही थी. उस के बड़े बड़े थन झूल रहे थे और उस की आंखें हमारे पीछे खुले दरवाज़े पर टिकी थीं.

"यह क्या...?" मि. डाकिन के मुंह से निकला. वह बूढ़ी गाय हमारे पास से निकल कर अपने उसी थान पर पहुंच गई जो इतने बरसों से उस का ठिकाना था. मि. डाकिन उसे देखते के देखते रह गए. उन की आंखों में कोई भाव नहीं था, लेकिन उन का पाइप जल्दी जल्दी धुआं उगल रहा था.

तभी बाहर से भारी भारी जूतों की आवाज़ सुनाई दी और जैक डाडसन दरवाज़े से अंदर दाख़िल हुआ. "अच्छा तो तू यहां आ कर छिपी है, साली!" उस ने हांफते हांफते कहा. "मैं तो समझा था कि तुझे गंवा बैठा!" फिर वह किसान की ओर मुड़ा. "माफ़ करना, मि. डाकिन, यह ज़रूर दूसरे रास्ते पर मुड़ गई होगी. साली मेरी नज़र बचा कर यहां चली आई." इतना कह कर वह मुसकराया और ब्लौसम की ओर बढ़ा, "चल, लाडो, अब फिर निकल यहां से."

लेकिन वह रुक गया क्योंकि मि. डाकिन ने एक हाथ से उस का रास्ता रोक लिया था. डाडसन और मैं ने हैरत से उन की ओर देखा. वे खड़े खड़े अपनी गाय को देखे जा रहे थे. गाय वहां शान से खड़ी थी. उस की आंखों में धैर्य था, मांग कोई नहीं थी. बस, एक ऐसी शान थी जिस के पीछे उस के मुड़े हुए खुरों, उस की उभरी हुई पसलियों और धरती तक लटके थनों की सारी बदसूरती छिप गई थी.

"मुझे खेद है, जैक, तुम्हारा समय बेकार में नष्ट हुआ. लेकिन अब तुम्हें बिना गाय के ही लौटना होगा. यह ससुरी घर लौट आई है." उन्हों ने डाडसन पर एक निर्णायक दृष्टि डाली. डाडसन समझ गया. उस ने सिर हिला कर हामी भरी और गोशाला से निकल गया.

"एक ख़याल आया," मि. डाकिन ने मुझ से कहा. "इस का दूध दोहने की बजाए मैं दो तीन बछड़े इस के दूध पर लगा देता हूं. मेरा वह तबेला ख़ाली पड़ा है—यह उधर रह जाएगी. वहां कोई इसे तंग भी नहीं करेगा."

मैं हंस पड़ा. मैं ने कहा, "ठीक कहते हैं आप, मि. डाकिन. यह उस तबेले में मज़े से रह लेगी और तीन बछड़ों को तो आराम से दूध पिला देगी. इस तरह जो ख़र्च इस पर होगा, वह निकल आएगा."

उन के चेहरे पर भी मुसकान दौड़ गई. बोले, "मैं ने कहा था न, क्या फ़र्क पड़ता है इतने बरसों के बाद इस पर मेरा कुछ नहीं निकलता. असल बात तो सिर्फ़ इतनी है कि यह घर लौट आई है."
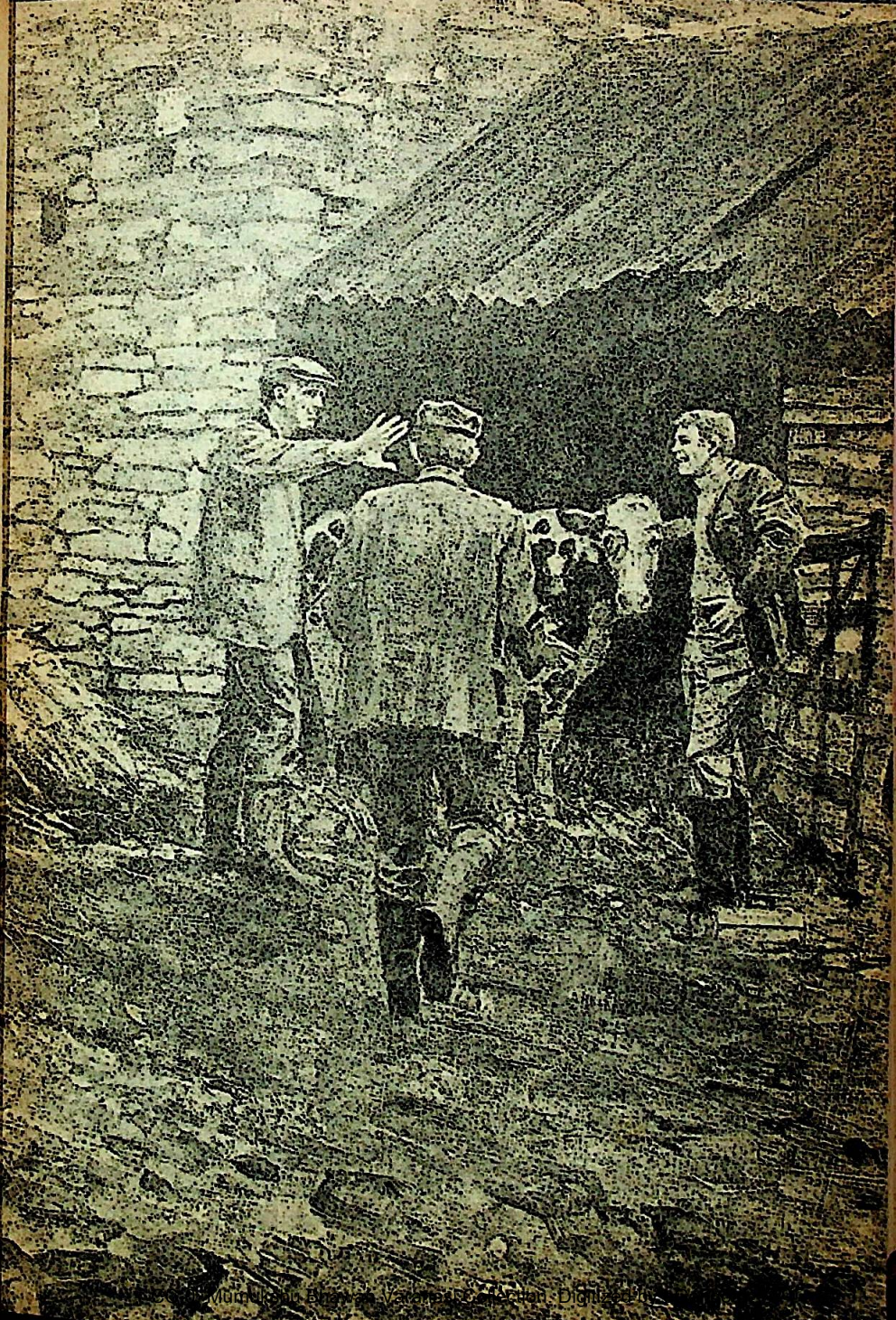
मुझे कार्पोरल का हंसता हुआ चेहरा दिखाइ दे रहा था. वह ज़रूर दूसरों को कष्ट दे कर मज़ा लेने वाला आदमी था. जब मैं ड्रिल का अंतिम चरण पूरा कर रहा था तो सहसा मेरी समझ में आया कि मुझे ब्लौसम का सपना क्यों आया था. मैं भी घर लौटना चाहता था.

मिसेज़ रमनी की समस्या

रायल एयर फ़ोर्स में भरती होने पर हर रोज़ मेरा यह विश्वास पक्का होता चला जाता था कि मैं बड़ी कठोर दुनिया में धकेल दिया गया हूं. यह ख़याल वहां की गालियां और अश्लील बातें सुन कर ही मुझे नहीं आता था बल्कि अंधेरे कमरों में बंद पेट से छूटने वाले गोलों की आवाज़ सुन सुन कर मैं ऐसा सोचने लगता था. उन आवाज़ों को सुन कर मुझे अपने मरीज़ सीडरिक की याद हो आई और मैं पलक झपकते ख़यालों ही ख़यालों में डैरोबाइ पहुंच गया. फ़ोन की घंटी बज़ी. मैं ने चोंगा उठाया ....

"मिस्टर हेरियट ... अगर, आप आ कर मेरे कुत्ते को देख लें तो बड़ी कृपा होगी." एक स्त्री की आवाज़ सुनाई दी. वह निःसंदेह ऊंचे घराने की लगती थी.

"ठीक है, मैं आ जाता हूं लेकिन उसे तकलीफ़ क्या है?"

"वह .... सारा दिन .... बदबू फैलाता रहता है."

"जी, मैं समझा नहीं."

ज़रा देर चुप रहने के बाद कांपती सी आवाज़ आई, "उसे गैस बहुत परेशान कर रही है ...हवा छोडता रहता है."

मेरी समझ में कुछ कुछ आ गया. "आप का मतलब है उस का पेट ....?"

"नहीं, नहीं, पेट नहीं. वह .... अपने उस से .... बहुत ज़्यादा हवा छोड़ता रहता है ..." उस के स्वर में हताशा का भाव व्याप गया.

सहसा मेरी समझ में सब आ गया, और मैं ने उन का पता पूछा. "मिसेज़ रमनी ...., लारेल्स."

स्वयं मिसेज़ रमनी ने दरवाज़ा खोला. उन्हें देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ. उन की उम्र कोई ४० साल की होगी, लेकिन वह विक्टोरिया काल के किसी उपन्यास की नायिका जैसी लगती थीं ...लंबी, लचीली और नाज़ुक. तुरंत मेरी समझ में आ गया कि वह टेलीफ़ोन पर इतनी झिझक क्यों रही थीं. उन में नज़ाकत के साथ साथ नफ़ासत भी बहुत थी.

"सीडरिक किचन में है," वे बोलीं. "मैं आप को वहीं लिए चलती हूं."

सीडरिक को देख कर मैं फिर हैरान हुआ. वह लंबे लंबे प्यारे बालों वाला बुलडाग था. वह ख़ुशी से मेरी ओर लपका और पंजे मेरी छाती पर गड़ा कर खड़ा हो गया. मैं ने उसे परे धकेलना चाहा, लेकिन वह हर्षातिरेक से मेरे मुंह पर अपना सांस छोड़ता और अपनी पूरी पिछाड़ी हिलाता पंजे गड़ाए रहा.

"बैठ जाओ!" मिसेज़ रमनी ने कठोर स्वर में कुत्ते को आदेश दिया जिसे उस ने सुना अनसुना कर दिया. इस पर वे बेहाल हो कर मुझ से बोलीं "यह प्यार बहुत करता है."

आख़िर मैं उस लंबे तगड़े पशु को धकेलने में सफल हो गया और उस से बचे रहने के लिए एक कोने में हो लिया. "यह कितनी कितनी देर बाद बदबू फैलाता है?" जवाब सीडरिक ने दिया और बदबू की एक लहर ने मुझे अपने घेरे में ले लिया. मैं दीवार से सट

खड़ा था. इस लिए भाग कर कहीं और शरण नहीं ले सका. सो कुछ देर मैं नाक पर हाथ रखे चुपचाप खड़ा रहा.

पता चला कि सीडरिक को खाने के लिए ज़रूरत से ज़्यादा गोश्त मिल रहा है. मैं ने प्रोटीन की मात्रा घटा दी और कार्बोहाइड्रेट की मात्रा बढ़ा दी. सुबह और रात देने के लिए एक दवा तजवीज़ की और फिर निश्चिंत हो कर वहां से चला आया. लेकिन एक सप्ताह बाद ही मिसेज़ रमनी ने फिर फ़ोन किया.

मैं दिन भर व्यस्त रहा. शाम कहीं छः बजे जा कर मैं उन के घर पहुंच पाया. उन के घर के आगे बहुत सी कारें खड़ी थीं. अंदर पहुंचा तो देखा कि मिसेज़ रमनी ने अपने ही जैसे ऊंचे घराने और परिष्कृत स्वभाव के लोगों को पीने की दावत दे रखी है.

मिसेज़ रमनी मुझे किचन में ले जाने ही वाली थीं कि दरवाज़ा ज़ोर से खुला और सीडरिक ख़ुशी ख़ुशी मेहमानों के बीच आ धमका. ज़रा देर बाद एक सुरुचिपूर्ण सज्जन उस से बचने की ज़ोरदार कोशिश में लगे थे. वे बच तो निकले, लेकिन उन्हें अपने कोट के चंद बटनों से हाथ धोने पड़े. अब सीडरिक एक महिला की तरफ़ मुख़ातिब हुआ. लेकिन जल्द ही पूरे का पूरा वातावरण दुर्गंध से भर उठा. ज़ाहिर था कि सीडरिक की नामुराद बीमारी फिर जोर पकड़ गई थी.

यह तकलीफ बहुत से कुत्तों को कभी कभी हो जाती है, लेकिन सीडरिक को तो यह बीमारी छोड़ने का नाम ही नहीं ले रही थी. हर बार बदबू फैलाने के बाद वह पीछे मुड़ कर देखता कि यह हरकत किस ने की है? फिर वह कमरे में यूं घूमने लगता जैसे उसे अपराधी का पता चल गया हो और वह उसे पकड़ने पर आमादा हो.

उस रात की घटना के बाद मैं ने मिसेज़ रमनी की ख़ातिर अपने आप को उस संघर्ष में झोंक दिया. मुझे लगा, उन्हें मेरी सहायता की सख़्त ज़रूरत है. इस लिए मैं अकसर उन के कुत्ते को देखने जाने लगा और मैं ने कितनी ही दवाएं बदल बदल कर उस का इलाज किया. मैं ने अपने साथी सीगफ्रीड फ़ारनन से भी मशवरा किया. उस ने चारकोल बिस्कुट खिलाने की सलाह दी. सीडरिक ने ख़ूब खाए भी, लेकिन और उपायों की तरह बिस्कुटों का भी उस पर कोई असर नहीं हुआ.

सीडरिक का एक प्रशंसक था और वह था कोन फेनटन. वह अवकाशप्राप्त खेतिहर मज़दूर था और अब सप्ताह में तीन दिन लारेल्स में माली का काम किया करता था. एक बार मैं सीडरिक को देख कर लौट रहा था. सीडरिक बाहर ही उछलकूद मचा रहा था और बूढ़ा माली उसे सराहनीय दृष्टि से देख रहा था.

"वाह!" वह बोला, "कितना प्यारा कुत्ता है!"

"हां, सचमुच बड़ा प्यारा कुत्ता है," मैं ने कहा और मैं ने झूठमूठ भी नहीं कहा था. सीडरिक इस बीच बराबर दुर्गंध फैला रहा था और साथ ही अपना प्यार भी लुटा रहा था.

"क्या टांगें हैं इस की!" सीडरिक की गठीली टांगों को निहारते हुए कोन ने कहा. "इसे कहते हैं कुत्ता!" मुझे लगा कि कोन को यह कुत्ता इसी लिए इतना भाया है क्योंकि वह ख़ुद उस बुलडाग जैसा है—कमअक्ल, गठीला बदन, चौड़े मज़बूत कंधे और हंसता चेहरा.

कुछ सप्ताह बाद मैं फिर लारेल्स गया. मैं ने मिसेज़ रमनी से कहा, "शायद आप सोचें कि यह डाक्टर छोटा मुंह बड़ी बात कह रहा है, लेकिन सच बात तो यह है कि सीडरिक आप के लायक़ कुत्ता नहीं है. मेरी राय में आप को इस

के स्थान पर कोई दूसरा छोटा कुत्ता पालना चाहिए."

"लेकिन, मिस्टर हेरियट, मैं सीडरिक को मार देने का ख़याल भी नहीं ला सकती." तुरंत उन की आंखों में पानी भर आया. "यह मुझे बहुत पसंद है ...हर बात के बावजूद."

"नहीं, नहीं, यह बात नहीं," मैं ने जल्दी से कहा, "सीडरिक को मैं भी पसंद करता हूं. लेकिन मुझे एक बड़ा अच्छा ख़याल आया है. इसे आप कोन फेन्टन को क्यों नहीं दे डालतीं? उसे सीडरिक हद से ज़्यादा पसंद है. इस की ज़िंदगी भी उस बुड्ढे के साथ अच्छी कट जाएगी? उस की झोंपड़ी के पीछे कुछ खेत हैं. सीडरिक वहां जी भर कर दौड़ भाग सकता है. कोन जब यहां काम करने आएगा, तब उसे साथ ले आएगा. इस तरह आप सप्ताह में तीन दिन तो उसे देख ही सकेंगी."

थोड़े दिन बाद मिसेज़ रमनी का फ़ोन आया. कोन झट सीडरिक को लेने पर राज़ी हो गया. वे दोनों एक दूसरे के साथ बहुत ख़ुश हैं. मिसेज़ रमनी ने मेरी सलाह मान कर घुंघराले बालों वाला एक छोटा सा कुत्ता पाल लिया था.

मैं ने नए कुत्ते को तब तक नहीं देखा जब तक कि वह छ: महीने का नहीं हो गया. एक दिन उन्हों ने मुझे फ़ोन कर के बुलाया. कोन फेनटन की झोंपड़ी वहां से कोई एक किलोमीटर दूर थी. घर लौटते समय मुझ से रहा नहीं गया और मैं उस की झोंपड़ी पर जा पहुंचा. मैं उस छोटे से कमरे में घुसा ही था कि एक झबरा कुत्ता मुझ पर झपट पड़ा. मैं बड़ी मुश्किल से उस से पीछा छुड़ा कर उस टूटी कुरसी तक पहुंचा जो अलाव के पास रखी थी. कोन मेरे सामने बैठ गया और जब सीडरिक उस का मुंह चाटने उछला तो उस ने धीरे से एक घूंसा उस की खोपड़ी पर जमाया.

"अरे, बैठ जा, लंबू!" उस ने प्यार से कहा.

फिर कोन ने कुछ घातक सा दिखने वाला तंबाकू काटा और उसे अपने पाइप में भरते हुए मुझ से कहा, "हां तो, मिस्टर हेरियट, मैं आप का बहुत आभारी हूं जो आप ने यह शानदार कुत्ता मुझे दिलवा दिया. सच, इस का जवाब नहीं है. इस से अच्छा कोई दोस्त नहीं मिल सकता."

ठीक उसी समय एक जानी पहचानी बदबू उठी जो पाइप से निकलने वाली दुर्गंध से भी बढ़ कर थी. सीडरिक ही कमरे की हवा बदल रहा था. कोन उस बदबू से बेख़बर था, लेकिन मेरे लिए वह असहनीय थी. "असल में," मैं ने जल्दी से कहा, "मैं यह देखने चला आया था कि तुम दोनों की आपस में कैसी पट रही है. अब मैं चलता हूं." मैं लपक कर खड़ा हो गया और लड़खड़ाता सा दरवाज़े की ओर बढ़ा.

मैं मेज़ के पास से गुज़रा. उस पर बुड्ढे का बचा खुचा खाना पड़ा था. उसी मेज़ पर एक टूटा गुलदस्ता रखा था. झोंपड़ी में एक वही सजावट की चीज़ थी. गुलदस्ते में कारनेशन के फूल खिले थे. मैं ने उन की सुगंध में अपनी नाक धंसा दी.

कोन ने सराहनीय दृष्टि से मेरी ओर देखा. "प्यारे फूल हैं न? लारेल्स से मैं जो कुछ भी लाना चाहता हूं, वह मेमसाहब मुझे लाने देती हैं. कारनेशन के ये फूल तो मेरे चहेते फूल हैं. हां," बुड्ढे ने कुछ सोच कर कहा, "इन का पूरा फ़ायदा मैं नहीं उठा पाता. छुटपने में मेरी नाक का आपरेशन हुआ था और उस के बाद जाने क्या हुआ . . ."

"तुम्हारा मतलब है . . ." मेरी समझ में कुछ कुछ आ रहा था.

"हां," बुड्ढा दु:खी हो कर बोला, "मेरी सूंघने की शक्ति जाती रही."

हमारी ट्रेनिंग के सप्ताह पूरे होने को आए थे और अब हम इनीशियल ट्रेनिंग विंग में लगाए जाने की प्रतीक्षा में थे. वहां हमें जहाज़रानी और उड़ान के सिद्धांत आदि सिखाए जाने थे. बहुत सारी अफ़वाहें फैली थीं. कभी सुनने में आता कि हमें वेल्स भेजा जाएगा. कभी कार्नवाल जाने की ख़बर उड़ती और कभी किसी और ही जगह का नाम सुनने में आता. मैं उत्तर जाना चाहता था क्योंकि हेलेन हमारे पहले पहले बच्चे की मां बनने वाली थी और मैं चाहता था कि मैं यथा संभव उस के निकटतम स्थान पर रहूं. नियुक्ति का आदेश आया तो मारे ख़ुशी के उस पर विश्वास ही नहीं हुआ. मुझे स्कारबरो नाम की समुद्री सैरगाह में भेजा जा रहा था जहां से बस के ज़रिए घर पहुंचने में कुल तीन घंटे लगते थे.

मेरा ख़याल है, कोई एक बार गुनाह के रास्ते पर चल निकले तो वह रास्ता आसान लगने लगता है. स्कारबरो पहुंचते ही मैं हेलेन से मिलने चुपके से खिसक लिया. कुछ सप्ताह बाद मैं फिर चोरी-चोरी चक्कर मार आया. हेलेन अब किसी भी समय मां बन सकती थी. मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि कुछ किलोमीटर की दूरी पर होते हुए भी मैं हाथ पर हाथ धरे कैसे बैठा रहूं.

बस के लंबे सफ़र के बाद मैं ससुराल पहुंचा. हेलेन उन दिनों वहीं रह रही थी. वहां पहुंच कर मुझे मायूसी का सामना करना पड़ा क्योंकि किचन ख़ाली पड़ा था. जाने क्यों मुझे विश्वास था कि वह वहां खड़ी मेरी राह देख रही होगी. मैं ने उस का नाम ले कर पुकारा, लेकिन कोई जवाब नहीं मिला. मैं अभी वहीं खड़ा किसी की आहट पाने की कोशिश कर रहा था कि अंदर के कमरे में से उस के पिता बाहर आए.

"तुम्हारे यहां लड़का हुआ है," उन्हों ने कहा.

"क्या . . . ?" मैं ने कुरसी की टेक का सहारा लेते हुए पूछा.

"तुम बेटे के बाप बन गए हो," उन्हों ने इतमीनान के साथ कहा. "ज़रा देर पहले नर्स ब्राउन ने फ़ोन पर ख़बर दी थी कमाल है कि तुम भी आ गए."

मैं कुरसी पर कुछ झुक गया तो उन्हों ने मुझे ग़ौर से देखा. "थोड़ी व्हिस्की लोगे? तुम्हारे चेहरे का रंग उड़ गया है, साहबज़ादे!"

"नहीं, नहीं, व्हिस्की नहीं. हां. अगर आप थोड़ी देर के लिए अपनी कार ले जाने दें तो. . ."

क़ार चलाते समय भी मैं थोड़ा कांप रहा था. नर्स ब्राउन के यहां पहुंचने के बाद भी मुझे विश्वास नहीं हो रहा था कि मैं बाप बन गया हूं.

नर्स ब्राउन ने स्वयं दरवाज़ा खोला और आश्चर्यचकित हो कर कहा, "मिस्टर हेरियट! अरे, आप इतनी जल्दी कहां से टपक पड़े?"

सपने की सी हालत में मैं उस के पीछे पीछे सीढ़ियां चढ़ कर एक छोटे से बेडरूम में पहुंचा. वहां पलंग पर हेलेन लेटी थी. . .लाल सुर्ख़. "हलो," वह बोली. मैं ने आगे बढ़ कर उसे चूमा. उस ने पलंग के सिरहाने रखे पालने की तरफ़ गरदन से इशारा किया.

मैं ने अपने बेटे पर पहली नज़र डाली. नन्हे जिमी का रंग ईंट की तरह लाल था और दृष्टि नशेबाज़ जैसी. मैं उस पर झुका. उस ने अपनी नन्ही नन्ही मुट्ठियां अपनी ठुड्डी के नीचे इस तरह कस लीं जैसे किसी ज़बरदस्त उलझन में फंसा हो. जब उस ने अपने चेहरे का भाव बदला तो उस का मुंह फूल गया और रंग गहरा लाल हो गया. फिर फूले फूले चेहरे के कहीं

भीतर से उस की आंखें मुझ पर जम गईं और उस ने अपने मुंह के कोने से अपनी जीभ बाहर निकाल दी.

"हे भगवान!" मेरे मुंह से निकला.

नर्स ने हैरानी से मेरी तरफ़ देखा. "क्या हुआ?"

"कैसा अजीब सा लग रहा है यह है न?"

"क्या?" उस ने मुझे गुस्से से घूरा. "मिस्टर हेरियट, क्या कह रहे हैं आप? इतना सुंदर बच्चा तो है!"

मैं ने फिर एक बार पालने की ओर ताका. जिमी ने जैसे मेरा मुंह चिढ़ाया. उस का रंग किरमिज़ी हो गया और फिर वह मुंह से बुलबुले निकालने लगा. "क्या यहां कुछ और भी है?" मैं ने पूछा.

"कुछ और क्या?" नर्स ने ज़हर भरे अंदाज़ से पूछा.

"बच्चे—नवजात शिशु. मैं जिमी का किसी और बच्चे से मिलान कर के देखना चाहता हूं."

वह देर तक मुझे ऐसे ताकती रही जैसे मैं इनसान नहीं, कोई और ही अजीब चीज़ होऊं. उस ने कहा, "साथ वाले कमरे में मिसेज़ ड्यूबर्न हैं. उन का नन्हा सिडनी भी जिमी के साथ साथ ही पैदा हुआ है."

मिसेज़ ड्यूबर्न क़साई की पत्नी थीं. मैं उन्हें अच्छी तरह जानता था. वे तकिए पर सिर रखे लेटी थीं. उन का चेहरा भी हेलेन की तरह तमतमाया हुआ और थका थका लग रहा था. मैं ने पालने में नज़र डाली. सिडनी का रंग भी गहरा लाल था और चेहरा फूला हुआ.

वह भी जैसे अपने आप से कुश्ती लड़ रहा था. उस के अंदर जो जंग चल रही थी, वह उस के मुंह बिगाड़ने के क्रम से ज़ाहिर होती थी और उस की ताल बिना दांतों की गुर्राहट पर टूटती थी.

उसे देख कर मैं अनचाहे ही उछल पड़ा. "कितना सुंदर बच्चा है," मैं ने कहा. "आप का बहुत बहुत धन्यवाद, मिसेज़ ड्यूबर्न, जो आप ने इस बच्चे को देखने का सौभाग्य मुझे प्रदान किया." बाहर निकल कर मैं ने एक लंबी सांस खींची और माथे का पसीना पोंछा. बड़ा चैन मिला मुझे.

सिडनी तो जिमी से भी कहीं ज़्यादा अजीब लग रहा था.

मैं लौट कर हेलेन के कमरे में आया. नर्स ब्राउन बिस्तर पर बैठी थी. दोनों स्त्रियां मिल कर मेरा मज़ाक़ उड़ाने में लगी थीं. "शायद आप समझते हैं कि हर बछड़ा और घोड़े का बच्चा जन्म से ही सुंदर होता है, है न?" नर्स ने मुझ से पूछा.

"हां," मैं ने जवाब दिया, "तुम ठीक कहती हो. वे जन्म से ही सुंदर होते हैं."

स्कारबरो लौटते समय बस में एक षड्यंत्र मेरे मस्तिष्क में जन्म लेने लगा. मुझे छुट्टी मिलने वाली थी, लेकिन मैं ने सोचा मैं अभी छुट्टी क्यों लूं? हेलेन पंद्रह दिन तो नर्सिंग होम में रहेगी. इस लिए मैं अभी छुट्टी ले कर पागलों की तरह अकेला डैरोबाई के चक्कर काहे को काटता फिरूं? मुझे करना यह चाहिए कि पंद्रह दिन बाद मैं अपने नाम एक तार भिजवाऊं जिस में बच्चा होने की सूचना हो. तब हम वह छुट्टी एक साथ गुज़ार सकेंगे. मैं कोई ग़लत काम तो कर नहीं रहा, मैं ने अपने आप को समझाया, सिर्फ़ दिन बदल रहा हूं. अगले दिन मैं ने डैरोबाई में अपने एक दोस्त को लिख भी दिया और तार भिजवाने का बंदोबस्त कर लिया. लेकिन मैं कोई पक्का अपराधी तो
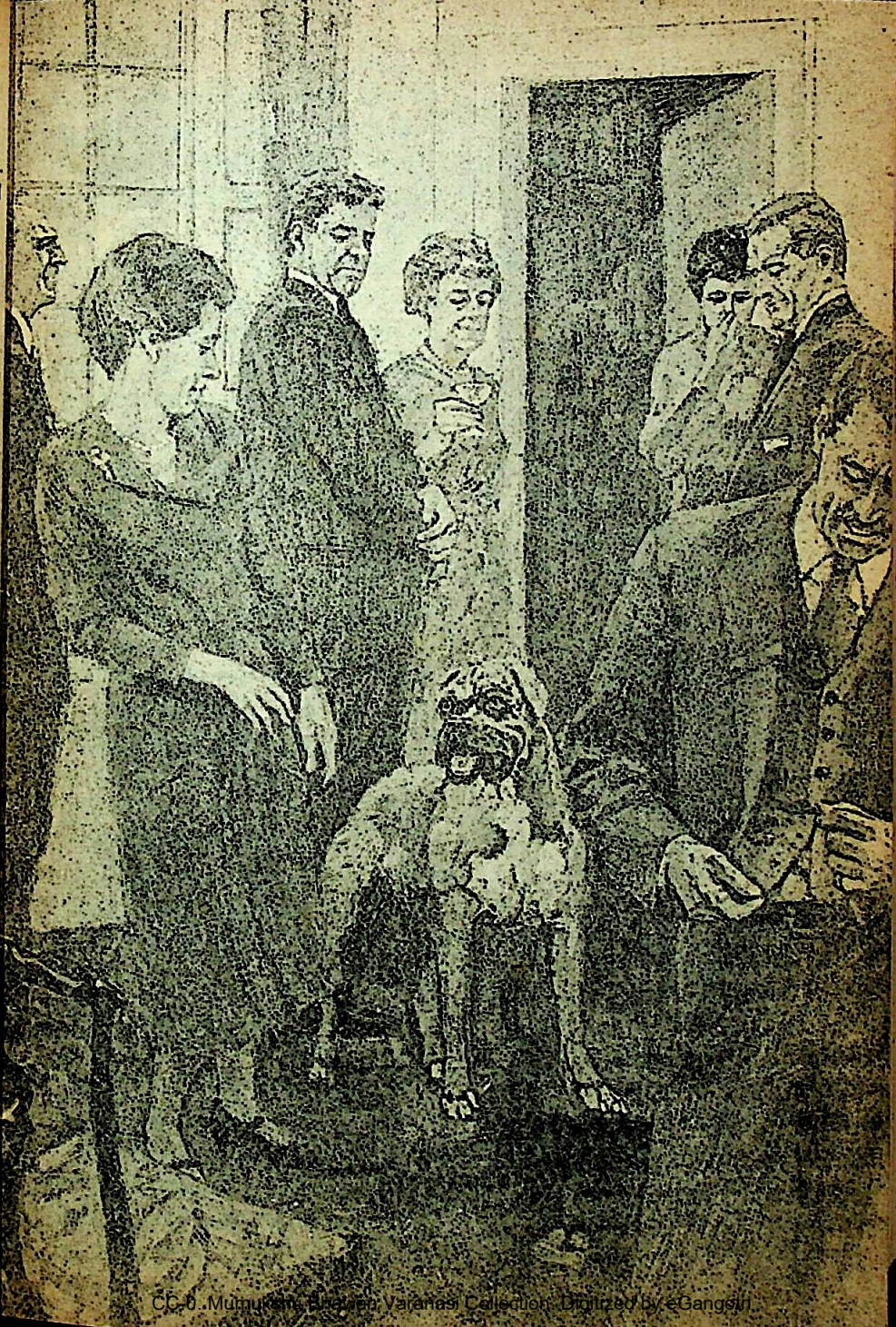
था नहीं. इस लिए जैसे जैसे दिन गुज़रते गए, मेरे मन में शंकाएं पैदा होने लगीं.

आख़िर वह दिन आ पहुंचा. दोपहर के खाने के बाद मैं अपने साथियों के साथ आराम कर रहा था. तभी बरामदे से एक भारी भरकम आवाज़ आई, "हैरियट, इधर आओ, हैरियट!"

मेरे पेट में कुछ होने सा लगा. मुझे गुमान भी नहीं था कि फ़्लाइट सारजेंट ब्लैकिट इस मामले में आ पड़ेंगे. ब्लैकिट भारी भरकम और कड़े शासक थे. मुसकराना जानते ही न थे. आम तौर पर हमारे मामले जूनियर नान कमीशंड अफ़सर ही निपटाया करते थे. हां, अगर मामला फ़्लाइट सारजेंट ब्लैकिट के हाथ में हो तो फिर बस अपनी ख़ैर ही मनानी चाहिए.

आवाज़ दोबारा आई...वही शेर की दहाड़ जो रोज़ सवेरे मैदान में हमारे सिरों के ऊपर गूंजा करती थी. "हैरियट! जल्दी आओ, हैरियट!" मुझे सूचना देते हुए बोले, "सब से पहले मेरी ओर से बधाई लो." उन्हों ने अपना हाथ आगे बढ़ा दिया. जब मैं ने उन से हाथ मिलाया तो वे मुसकरा दिए. उस समय वे फ़िल्म अभिनेता गैरी कूपर जैसे लग रहे थे.

"तुम्हें ज़्यादा दूर तो जाना नहीं है. कौन सी जगह है?—हां, डैरोबाई—यहां से ३.२० पर एक ट्रेन चलती है." उन्हों ने अपनी घड़ी पर नज़र डाली. "अगर तुम आनन फ़ानन तैयार हो जाओ तो तुम अब भी उसे पकड़ सकते हो."

मैं शर्म से ज़मीन में गड़ सा गया जब उन्हों ने कहा, "यह तुम्हारा पहला बच्चा है, है न? मेरे तो तीन तीन हैं. बड़े हो गए हैं. मुझे उन की बेहद याद आती है. मुझे यह सोच कर तुम से ईर्ष्या हो रही है कि आज रात तुम अपने बेटे का मुंह देख पाओगे."

मैं ग्लानि की बाढ़ में बहा जा रहा था. मुझे डर था कि कहीं मेरी निगाहें मेरा भंडा फोड़ न कर दें. लेकिन वे मेरी ओर देख ही नहीं रहे थे.

"जानते हो, बेटा," उन्हों ने बड़े प्यार से कहा, "तुम्हारे जीवन का सब से अच्छा समय अब आ रहा है. उन दोनों को मेरा आशीर्वाद देना."

हेलेन के साथ मेरे वे दिन बहुत मज़े में बीते. हम बच्चे की गाड़ी धकेलते कई कई किलोमीटर निकल जाते और उस में बड़ा आनंद आता. जिमी की शक्ल सूरत अब पहले से कहीं अच्छी हो गई थी. अगर मैं ने पंद्रह दिन पहले छुट्टी ले ली होती तो कुछ भी इतना अच्छा न लगता. बेशक, मेरी चाल कामयाब रही.

लेकिन मैं अपनी चाल की डींग नहीं मार सकता था. इसी लिए जीत का नशा अधूरा रहा क्योंकि जो कुछ मैं ने किया था, उस के औचित्य के बारे में मुझे आज भी संदेह है.

अनुभवी व्यक्ति

डैरोबाई से दूर बिलकुल अलग ढंग का जीवन बिताते हुए मैं कुछ बातों का तटस्थ हो कर मूल्यांकन कर सकता था. मैं ने अपने आप से कई प्रश्न किए. उदाहरण स्वरूप सीगफ़्रीड फ़ारनन के साथ मेरी साझेदारी इतनी सफल क्यों रही?

मैं आज भी सोचता हूं कि पिछले ३५ वर्षों से हमारे संबंध इतने मधुर कैसे बने हैं. शायद इस लिए कि हम दोनों एक दूसरे के बिलकुल उलटे हैं. सीगफ़्रीड की बेचैन तबीयत उसे चीज़ों को बदलने के लिए बराबर उकसाती रहती है जबकि मुझे परिवर्तन से बेहद चिढ़ है.

बहुत से लोग उसे प्रतिभाशाली मानते हैं, लेकिन मेरे बेहतरीन दोस्त भी मेरे बारे में यह राय नहीं रखते. मैं अपनी और उस की तुलना के ऐसे कई उदाहरण दे सकता हूं. हम शारीरिक रूप से भी एक दूसरे के उलटे हैं. इस पर भी, जैसा कि मैं ने कहा, हमारी पटती चली आ रही है.

इस का यह मतलब नहीं कि हमारी कभी झड़प ही नहीं हुई. एक झड़प तो कैल्शियम का टीका लगाने वाली प्लास्टिक की सुई को ले कर ही हुई थी. वह सुई उन दिनों नई नई ही निकली थी, इसी लिए सीगफ़्रीड को पसंद थी और मुझे इसी लिए नापसंद. मेरी नापसंदगी का कारण वे कठिनाइयां भी थीं जो उन को बरतते समय मुझे पेश आती थीं. वे शिकायतें तो अब दूर की जा चुकी हैं, लेकिन शुरू शुरू में वे मुझे ऐसी मूडी लगी थीं कि मैं ने उन्हें तज दिया था.

अब मेरे साथी ने मुझे नल के पानी से सिरिंज धोते देखा तो उस ने मुझे झिड़का भी. "अरे जेम्स, तुम अभी तक वही पुरानी सिरिंज इस्तेमाल कर रहे हो! तुम ने वह नई प्लास्टिक वाली आज़मा कर नहीं देखी?"

"देखी थी," मैं ने सिरिंज में से बची खुची पानी की बूंदें झटक कर उसे डब्बे में रखते हुए कहा. "आख़िरी बार जब मैं ने उसे इस्तेमाल किया था तो चारों तरफ़ कैल्शियम बिखर गया था. मेरे कोट पर बड़ी बड़ी सफ़ेद धारियां पड़ गई थीं."

सीगफ़्रीड ठहाका मार कर हंसा. "कमाल है! उन्हें तो बच्चा भी आसानी से इस्तेमाल कर सकता है."

"हो सकता है," मैं ने कहा. "लेकिन तुम मुझे जानते ही हो. मुझ में कल पुरज़ों को इस्तेमाल करने वाली सूझबूझ नहीं है."

सीगफ़्रीड ने गंभीर हो कर कहा, "इस के लिए बस तुम्हें ज़रा आदत डालनी होगी, जेम्स. हठ कर के तुम अपने को प्रतिक्रियावादी सिद्ध कर रहे हो, और कुछ नहीं. हमें समय के साथ साथ चलना चाहिए. तुम जब भी यह पुराना साज़ सामान काम में लाते हो तो आगे बढ़ने की बजाए पीछे हट जाते हो."

हम एक दूसरे की आंखों में झांकते खड़े रहे, जैसा कि हम अकसर आपसी मतभेद के समय किया करते थे. फिर सीगफ़्रीड मुसकरा दिया और बोला, "तुम अभी जान टिलट की प्रसूति ज्वरग्रस्त गाय देखने जा रहे हो न? मेरा ख़याल है, अभी उसे प्रसूती ज्वर चढ़ा नहीं है. ख़ैर, अगर तुम उस पर प्लास्टिक की नई सुई इस्तेमाल कर सको तो मुझ पर बड़ी मेहरबानी होगी."

मैं ने एक पल सोच कर कहा, "ठीक है, सीगफ़्रीड, मैं एक बार फिर कोशिश कर देखता हूं."

मैं फ़ार्म पर पहुंचा. वह गाय आराम से सरसों के लहराते खेत के बीच बैठी थी.

"इस ने दो चार बार अपने पांवों पर खड़े होने की कोशिश की," किसान ने कहा, "लेकिन खड़ी नहीं हो पाई."

"शायद एक और इंजेक्शन लगाने की ज़रूरत है." यह कह कर मैं अपनी कार तक गया और डिकी में से प्लास्टिक की एक सिरिंज निकाल लाया. मैं लौटा तो टिलट ने भवें चढ़ा कर पूछा, "क्या यह वही नई सुई है?" "हां," मैं ने कहा. मैं ने उसे विश्वास दिलाया कि सुई गरम पानी से धो रखी है.

"कुछ भी हो, यह मुझे पसंद नहीं है."

"क्यों?"

"मिस्टर फ़ारनन ने सुबह यही इस्तेमाल की थी. कुछ दवा तो उड़ कर मेरी आंख में आ

गिरी, कुछ उन के कान में गिरी और बाक़ी उन की पतलून पर बिखर गई. मुझे नहीं लगता कि गाय में थोड़ी बहुत भी गई होगी."

हमारे कुछ मतभेद तीखे और संक्षिप्त होते थे. एक दोपहर मैं खाने की मेज़ पर बैठा अपनी बांह सहला रहा था. सीगफ़्रीड ने रोस्ट मटन का टुकड़ा काटते हुए निगाह उठा कर मुझे देखा.

"क्या हुआ, जेम्स, गठिया?"

"नहीं, सुबह एक गाय ने सींग मार दिया, ठीक कुहनी पर."

"कैसे? तुम उस की नाक पकड़ रहे थे?"

"नहीं, इंजेक्शन दे रहा था."

"इंजेक्शन दे रहे थे? वहां? वह कोई जगह होती है इंजेक्शन लगाने की. मैं तो हमेशा पुट्ठे में इंजेक्शन लगाता हूं. गरदन तो उस के सींगों के बिलकुल पास होती है."

"मगर पुट्ठा भी तो पिछली टांगों के ठीक ऊपर होता है."

"गरदन पर अधिकतर मांस कम होता है," सीगफ़्रीड ने बात काटी. "वहां ऐसी मोटाई होती ही नहीं जिस में तुम सुई घोंप सको."

"और दुम तो जैसे उस के होती ही नहीं," मैं गुर्राया, "किसी ने उसे पकड़ रखा हो तो और बात है, नहीं तो कोड़े की तरह लगती रहती है."

"जेम्स, मैं तुम से इस ढंग से यह कहना नहीं चाहता, लेकिन अब बताए बिना भी चारा नहीं क्योंकि तुम एकदम बेवक़ूफ़ों जैसी बात कर रहे हो."

मैं ने उसे नाराज़ हो कर घूरा. "तुम्हारी यही राय है, है न?"

"हां, जेम्स."

"तो फिर ठीक है."

"ठीक है तो ठीक है."

उस के बाद हम ने खाना चुपचाप खाया.

अगले कुछ दिन रह रह कर उसी बातचीत का ध्यान आता रहा. सीगफ़्रीड को अपनी बात मनवाने में कमाल हासिल है. मैं रह रह कर यही सोचता रहा कि शायद उसी की बात ठीक हो.

एक सप्ताह बाद हाथ में सिरिंज लिए मैं दो गायों के बीच से निकलते निकलते रुक गया. जानवर मेरी नीयत ताड़ गए थे. वे अधिकतर ताड़ जाते हैं. उन दोनों ने अपने पिछले धड़ सटा कर मेरा रास्ता बंद कर दिया. मुझे लगा कि सीगफ़्रीड की बात में कुछ तो तत्व है. जब पुट्ठे में आसानी से इंजेक्शन लगाया जा सकता है तो फिर मैं आगे जाने की कोशिश क्यों करूं?

"ज़रा इस की दुम थाम लो," मैं ने किसान से कहा और फिर पुट्ठे के अंदर सुई घुसेड़ दी. मुझे लगा, सीगफ़्रीड ठीक कहता था. मैं तो परले दरजे का गधा निकला.

किसान हंसा. "कमाल है. आप सब के ढंग निराले हैं."

"क्या मतलब?"

"कल मि. फ़ारनन उस गाय को सुई लगाने आए थे. वे उस के पुट्ठे में सुई लगाने के ख़िलाफ़ ज़बरदस्त बहस करते रहे. उन्हों ने उस की गरदन में सुई लगाई."

मेरे चेहरे का भाव देख कर वह ज़रूर भांप गया होगा. बोला, "ख़ैर, आप को फ़िक्र करने की ज़रूरत नहीं, मि. हेरियट." उस ने सहानुभूति दिखाने को मेरा बाज़ू छुआ, "आप अभी कमउम्र हैं, और मि. फ़ारनन ठहरे अनुभवी व्यक्ति."

बुड्ढा एल्बर्ट और मिक

हम फ़्लाइट हट में बैठे थे और वायु सेना का जवान हंस रहा था. वह वायु सेना में भरती

होने से पहले के काम के बारे में मुझे बता रहा था. जब मैं ने उसे अपने काम, काम के घंटों और कार्य स्थितियों के बारे में बताया तो उसे विश्वास ही नहीं हुआ. वह बोला, " देहात में जानवरों का डाक्टर वही बनता होगा जो थोड़ा बहुत बेवकूफ़ हो."

कभी मैं दिल से उस की बात मान सकता था एक बार मैं बड़ी कठिनाई के साथ एक बछड़ा जनवा कर घर लौट रहा था. ठंड से मेरा चेहरा जमा जा रहा था, कपड़ों से रगड़ खा खा कर चमड़ी में जलन मच रही थी और मेरा बदन ऐसे दुख रहा था जैसे कई तगड़े लोगों ने मिल कर मेरी खूब पिटाई की हो. काप्टन गांव पहुंचने तक मैं आत्म करुणा से भर उठा था.

गरमियों में काप्टन स्वर्ग लगता था. लेकिन आज की रात तो वह क़ब्रिस्तान की तरह लग रहा था. ताबड़तोड़ बारिश बंद अंधेरे घरों से अपना सिर फोड़ रही थी. सिर्फ़ गांव के शराबघर से हलकी सी रोशनी सड़क के बहते पानी पर पड़ रही थी. मैं ने फ़ाक्स एंड हाउंड्स के डोलते साइनबोर्ड के नीचे कार रोक दी. सोचा, एक बियर पी लेना लाभदायक रहेगा.

शराबघर में घुसते ही सुखद गरमाई ने मुझे अपनी बांहों में ले लिया. कोई दर्जन भर आदमी वहां बैठे बड़े बड़े गिलासों से पी रहे थे. कुछ डोमिनो नामक खेल खेल रहे थे. उन सब के चेहरे मेरे जाने पहचाने थे, विशेष कर अवकाश प्राप्त गडरिए बुड्ढे एल्बर्ट क्लोज़ का चेहरा, जो हर रात उसी एक कोने में बैठा करता था . . .अलाव के पास.

वह हमेशा की तरह हाथ और ठुड्डी अपनी लंबी छड़ी की वक्र मूठ पर टिकाए बैठा था. यह छड़ी तभी से उस के पास थी जब वह काम किया करता था. उस की आंखें भावहीन थीं. कुरसी के नीचे उस का कुत्ता मिक पसरा पड़ा था. वह भी अपने मालिक की तरह बूढ़ा था और अवकाश प्राप्त कर चुका था. उस समय वह पशु किसी सपने में खोया लगता था. बीते हुए शानदार दिनों को कल्पना में जी रहा था. उस के पंजे रह रह कर हवा में लहराते, होंठ मुड़ते, कान खड़े हो जाते और थोड़ी थोड़ी देर बाद वह हौले से भौंक पड़ता था.

और एल्बर्ट स्वयं क्या सोच रहा था ? उस की भावहीन आंखों के पीछे क्या छिपा था ? मैं अंदाज़ा लगा सकता था कि अपनी जवानी में वह तेज़ हवाओं वाले पहाड़ी इलाक़े में घूमता होगा, कच्छ और चट्टानों पर मीलों निकल जाता होगा. डेल्स के चरवाहों की तरह हर मौसम में खुले में रहने वाले मज़बूत काठी के विरले ही होते हैं.

वही एल्बर्ट अब एकदम टूट गया था. अब वह गठिया का मारा बुड्ढा था जो अपनी पुरानी ट्वीड की टोपी के नीचे से उदास उदास नज़रों से बैठा ताकता रहता था. मैं ने देखा कि उस ने अभी अभी अपना गिलास ख़ाली किया है. मैं चल कर उस के पास पहुंचा.

"गुड ईवनिंग, मिस्टर क्लोज़," मैं ने कहा.

उस ने हाथ कान पर रखते हुए आंखें झपकाईं.

मैं ने चीख़ कर कहा, "थोड़ी और पिएंगे. ?"

"वाह . . .धन्यवाद!" उस ने अपने गिलास की ओर कांपती उंगली से संकेत किया, "इस में थोड़ी सी डाल दो, साहबज़ादे."

मैं ने शराबघर के मालिक को इशारे से बुलाया. गिलास भर दिया गया. बुड्ढे चरवाहे ने उसे उठाया, मेरी ओर देखा और बुड़बुड़ाया, "अच्छी सेहत के लिए."

मैं अपनी जगह पर लौटने को ही था कि उस का बुड्ढा कुत्ता उठ कर बैठ गया. कुत्ते का

मुंह मेरे सामने पड़ा तो मुझे धक्का सा लगा. उस की आंखें देखी नहीं जाती थीं, बल्कि यह कहना ज़्यादा ठीक रहेगा कि मुझे उस की आंखें दिखाई ही नहीं पड़ीं. वह मेरी ओर मुंह किए बड़े कष्ट से अपनी पीप से भरी पलकें झपक रहा था. मैं ने एल्बर्ट के कंधे पर हाथ रख कर कहा, "मिक की आंखें बहुत बुरी हालत में हैं."

"हां," बुड्ढे ने गरदन हिलाई, "नज़ले की वजह से इस की आंखें भारी हैं. जब यह छोटा सा पिल्ला था, तभी से इसे नज़ला रहता है."

"नहीं यह नज़ले के कारण नहीं है. इस के पपोटे अंदर को मुड़ गए हैं. इन्हें ठीक करने के लिए आपरेशन ज़रूरी है."

"तुम ठीक कहते हो, साहबज़ादे." उस ने बियर का घूंट भर कर कहा, "इसे बस नजला हो गया है. जब यह छोटा सा पिल्ला था, तभी से उस को . . ."

मैं अपनी जगह लौट आया. टैड डाबसन नाम के एक तगड़े ग्वाले ने मेरी तरफ़ सवालिया नज़रों से देख कर पूछा, "क्या बात थी?"

"टैड, एल्बर्ट के कुत्ते के पपोटे मुड़ गए हैं और पलकें हर घड़ी उस की आंखों से रगड़ खाती रहती हैं. इस से बेहद दर्द तो होता ही है, कभी कभी घाव भी हो जाता है. वह अंधा भी हो सकता है. मामूली बीमारी हो, तब भी उस से काफ़ी तकलीफ़ होती है."

"बेचारा कुत्ता," टैड बोला. "इलाज पर काफ़ी पैसे ख़र्च हो जाएंगे."

विकृत मुसकान के साथ मैं ने कहा, "हम आम तौर पर एक पौंड लेते हैं." इनसानों का डाक्टर इतनी सी रक़म सुन कर हंस देता, लेकिन बुड्ढे एल्बर्ट के लिए यह रक़म फिर भी बहुत ज़्यादा होगी. एक पौंड का मतलब था उस की पेंशन का आधा हिस्सा.

टैड चल कर बुड्ढे एल्बर्ट के पास गया "एल्बर्ट, मि. हेरियट तुम से जो कह रहे हैं वह तुम्हारी समझ में आया?" उस ने ऊं आवाज़ में कहा.

"हां, हां. नज़ले से मिक की आंखें ख़ हो गई हैं."

टैड झल्ला कर चिल्लाया, "अरे बेवक़ू बुड्ढे! मेरी बात ध्यान से सुन! तुम्हें इसे ले जा कर इस का . . ."

लेकिन बुड्ढा तो अपने ही ख़यालों में खोया था. बोला, "जब यह छोटा सा पिल्ला था, तभी से . . ."

कुछ रोज़ बाद टैड अपनी बहन से मिलने क़सबे में आया. दवाख़ाने के दरवाज़े पर वह अपनी साइकिल पर झुका सा खड़ा था. उस का खिला हुआ साफ़ सुथरा चेहरा चमक रहा था. वह सीधा मतलब की बात पर आ "क्या आप बुड्ढे मिक का आपरेशन कर देंगे, मि. हेरियट? फ़ाक्स एंड हाउंड्स में हम होने वाले ख़र्चे का प्रबंध कर रहे हैं. क्लब के पैसों में से हम यह रक़म निकाल रहे हैं गरमियों में पिकनिक पर जाने के लिए हम स हर सप्ताह कुछ न कुछ जमा करते हैं. उस से एक पौंड निकाल लेंगे तो कोई फ़र्क़ नहीं पड़ेगा. वैसे भी हम वहां जा कर उस पैसे शराब ही पीते हैं." इतना कह कर वह रु फिर बोला, "बुधवार की रात ठीक रहेगी

बुधवार की रात आई. पता चला कि मिक आपरेशन शानदार अवसर में बदल गया टैड जो गाड़ी मांग कर लाया था, वह फ़ा एंड हाउंड्स में रोज़ाना आने वालों खचाखच भरी थी. बाक़ी लोग साइकिलों आए थे.

आपरेशन के कमरे में अनगिनत चेहरे

उत्सुकता के साथ मेरी ओर ताक रहे थे. अपूर्व दृश्य था. रोशनी में मैं ने पहली बार मिक को अच्छी तरह देखा. आंखों को छोड़ कर वह बहुत ही सुंदर कुत्ता था. वहां बैठे बैठे उस ने एक पल को आंखें खोल कर मुझे देखा, फिर तेज़ रोशनी के कारण आंखें मूंद लीं. मुझे लगा, पल दो पल दर्द से आंखें मिचकाते और उस बीच अपने आसपास का जायज़ा लेते उस ने जीवन बिता दिया है. उस को बार्बिट्यूरेट का इंजेक्शन लगाना उपकार करने के समान था.

फिर जब वह बेहोश हो कर पड़ गया, तब मैं ने उस की अच्छी तरह परीक्षा की. "जानते हो, " मैं ने कहा, "इस की हालत कितनी ख़राब है? शुक्र इतना ही है कि स्थायी रूप से कोई हानि नहीं पहुंची है."

उन लोगों ने तालियां तो नहीं बजाईं, फिर भी वे आपस में चहकते रहे और हंसते रहे. जब मैं ने छुरी उठाई तो मुझे लगा कि इतने शोर शराबे के वातावरण में मैं ने इस से पहले कभी आपरेशन नहीं किया.

पहले मैं ने बाईं आंख का आपरेशन शुरू किया. मैं ने पपोटे के समांतर चीरा लगाया. उस के बाद पपोटे के ऊपरी हिस्से में लगभग एक सेंटीमीटर चौड़ा अर्धचंद्राकार चीरा लगाया. निचले पपोटे में से मैं ने खाल कम ही काटी. फिर मैं दाहिनी आंख पर आया. मैं इतमीनान से आपरेशन कर रहा था कि मुझे लगा, शोर दब गया है. थोड़ी बहुत बातें तो हो रही थीं, लेकिन हंसना हंसाना एकदम बंद हो गया था. मैं ने निगाह उठाई तो लारेल ग्रोव का १.९३ मीटर ऊंचा लंबा सईस कैन एपलटन नज़र आया जिस की काठी अपने घोड़ों की तरह ही मज़बूत थी. "बड़ी गरमी है यहां," उस ने धीरे से कहा. उसे वाकई गरमी लग रही थी क्योंकि उस के चेहरे से पसीना चू रहा था.

मैं अपने काम में तल्लीन न होता तो मैं यह भी देख लेता कि न केवल उसे पसीना आ रहा है बल्कि उस का रंग भी ज़र्द पड़ गया है. मैं पपोटे की चमड़ी काट रहा था कि मुझे किसी की चिल्लाहट सुनाई दीः "संभालो इसे!"

उस ऊंचे लंबे आदमी के दोस्तों ने सहारा दिया तो वह हौले से फ़र्श पर लुढ़क गया. मेरे आख़िरी टांका लगा लेने तक वह वहीं पड़ा आराम से सोता रहा. फिर जब मैं औज़ारों को साफ़ कर के उन्हें रख रहा था, तब उस ने आंखें खोलीं और इधर उधर देखने लगा. उस के साथियों ने उसे उठा कर खड़ा किया. आपरेशन हो चुकने पर लोगों में फिर से जान आ गई थी. वे केन का मज़ाक़ उड़ाने लगे, लेकिन आपरेशन के समय अकेले केन का ही रंग नहीं उड़ा था.

दस दिन बाद वे मिक के टांके खुलवाने आए, लेकिन मुझे अंतिम परिणाम देखने का अवसर एक महीने तक नहीं मिल सका. एक शाम जब मैं अपने एक मरीज़ को देख कर काप्टन से गुज़र रहा था तो फ़ाक्स एंड हाउंड्स के रोशन दरवाज़े ने मुझे खींच लिया. मैं अंदर जा कर जाने पहचाने चेहरों के बीच बैठ गया.

सब कुछ बिलकुल पहले जैसा था. बुड्ढा एल्बर्ट क्लोज़ अपनी बंधी जगह पर बैठा था. मिक मेज़ के नीचे पसरा हुआ था. उस के हवा में लहराते पंजों से स्पष्ट था कि वह सपना देखने में मगन है. मैं ने कमरा पार किया और उसे पुकारा. उस का लंबे रूखे बालों वाला सिर मेरी ओर घूमा तो मैं सांस रोके उसे देखता रह गया. मुझे अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हो रहा था क्योंकि मैं ने अपने आप को एक स्वस्थ कुत्ते की साफ़

सुथरी चमकती आंखों में झांकते पाया. न उन में कोई सूजन थी और न उन में से पानी आ रहा था. मैं ने उस का सिर थपथपाया. और जब वह बड़े चाव से इधर उधर ताकने लगा तो मेरे सारे बदन में खुशी की लहर दौड़ गई. उस बूढ़े जानवर को अपनी आज़ादी के मज़े लूटते देख कर मुझे बड़ा भला लगा. जिस नई दुनिया के दरवाज़े उस के लिए खुल गए थे, वह उस में विचर रहा था.

"मि. क्लोज़," मैं ने ऊंचे स्वर में कहा, "और पिएंगे?"

"हां, डाल दो थोड़ी सी इस में, साहब-ज़ादे."

"मिक की आंखें ठीक हो गई हैं."

बुड्ढे ने अपना गिलास ऊपर उठाया. "हां, कोई ख़ास बीमारी नहीं थी इसे. नज़ले से आंखें भारी हो गई थीं. जब यह छोटा सा पिल्ला था . . ."

श्रीमान गलाफाड़ श्रीमान कानाफूसी

आर ए एफ़ में चीख़ना चिल्लाना बहुत होता था. नान कमीशंड अफ़सर सदा ही मुझ पर या किसी और पर चिल्लाते रहते थे और उन में से ज़्यादातर अफ़सरों की आवाज़ बड़ी ज़ोरदार थी. लेकिन लेन हैंपसन की आवाज़ सब से ऊंची और ज़ोरदार थी. हमारा कोई अफ़सर उस का मुक़ाबला नहीं कर सकता था.

मैं लेन के फ़ार्म की ओर जा रहा था कि सहसा मैं ने कार को रोक दिया और पल भर के लिए स्टीयरिंग व्हील पर झुक सा गया. गरमियों के अंतिम दिनों का गरम और सूना दिन था. इतने में लेन हैंपसन की आवाज़ मुझे सुनाई दी, हालांकि उस का फ़ार्म दो खेतों की दूरी पर था. वह अपने मवेशियों को नहीं पुकार रहा था. वह तो आदत के मुताबि[illegible] अपने घर वालों से बातचीत कर रहा था.

मैं फ़ार्म पर पहुंचा. "गुड मार्निंग, [illegible] हैंपसन." मैं ने कहा.

"ओ हो, मि. हेरियट हैं!" उस ने चि[illegible] कर कहा, "गुड मार्निंग नहीं, ग्रैंड मा[illegible] कहिए."

उस की आवाज़ इतनी ऊंची थी कि उस [illegible] धक्के ने मुझे एक क़दम पीछे धकेल दि[illegible] लेकिन उस के तीनों बेटे मुसकराते रहे. [illegible] उस आवाज़ के आदी थे. मैं थोड़े फ़ासले [illegible] खड़ा रहा और वहीं से मैं ने पूछा, "आप मु[illegible] कोई सुअर दिखाना चाहते थे."

"हां. दो दिन से उस ने कुछ खाया न[illegible] है."

हम सुअर बाड़े में गए. अजनबी को दे[illegible] ही सारे सुअर इधर उधर हो गए, पर ए[illegible] चुपचाप कोने में खड़ा रहा. उस पर मुर्दनी छ[illegible] हुई थी.

"इस की ये हालत अचानक हुई है [illegible] धीरे धीरे?" मैं ने पूछा.

'बस, अचानक ही!" जगह इतनी तंग [illegible] कि उस की भरपूर आवाज़ मुझे बहरा कि[illegible] रही थी. "सोमवार की रात तक यह बिल[illegible] ठीक था. हां, मंगल सुबह से इस की [illegible] हालत है."

मैं ने सुअर के पेट को टटोला. "इस [illegible] आंत कट गई है. ये जब एक दूसरे से ल[illegible] भिड़ते हैं तो ऐसा हो जाता है. इस के ठी[illegible] होने की संभावना कम ही है."

"नहीं, ऐसा मत कहो. हमें कोशिश [illegible] के तो देखनी चाहिए. कुछ न कुछ तो किया [illegible] जा सकता है. कोशिश करो न, डाक्टर!"

"ठीक है," मैं ने कंधे उचका कर क[illegible] "मैं कुछ दवाएं दिए जाता हूं." मैं ने सल[illegible]

नामाइड पाउडर की एक पुड़िया दे दी. यह पाउडर पहले बहुत कारगर साबित हुआ था, लेकिन इस सुअर के मामले में मुझे कोई ख़ास उम्मीद नहीं थी.

चिल्ला कर बोलने वाले के यहां से मुझे सीधे बहुत ही धीमा बोलने वाले के यहां जाना पड़ा. इलाइज़ा वेंटवर्थ सारी बातचीत ऐसे करता था जैसे अपने से बात कर रहा हो. मैं पहुंचा तो वह गोशाला की धुलाई कर रहा था.वह मुड़ा और आदत के अनुसार गंभीर मुद्रा बना कर उस ने मेरी ओर देखा. "मि. हेरियट," उस ने कानाफूसी के अंदाज़ से कहा, "मरीज़ की हालत सचमुच बहुत ख़राब है." वह हमेशा इस तरह बोलता था माने हर बात बड़ी गंभीर और रहस्य की हो.

"बड़ा अच्छा बैल है, मि. हेरियट. बड़ी तेज़ी से इस की हालत बिगड़ रही है." इतना कह कर वह मेरे पास और खिसक आया और फिर सीधे मेरे कान में बोला, "मुझे लगता है, इसे टी बी हो गई. है." वह एक क़दम पीछे हटा. उस का चेहरा लटक गया था.

उस ने उंगली से इशारा किया और उस के पीछे पीछे थान पर पहुंचा. हर्फ़र्ड क्रास नामक बैल का वज़न कम से कम ५०० किलो होना चाहिए था: वह अब मरियल हो गया था. मैं ने उस का अच्छी तरह निरीक्षण किया.

"मेरे ख़याल में इसे जिगर की बीमारी हो गई है, मि. वेंटवर्थ. मैं इस का गोबर ले जा कर टेस्ट करूंगा और देखूंगा कि उस में फ़्लूक के अंडे तो नहीं हैं. लेकिन इलाज मैं इस का अभी, इसी वक़्त से करना चाहता हूं."

"लीवर में फ़्लूक ? इसे यह बीमारी कहां से लग गई ?"

"आम तौर पर गीला चारा खाने से यह बीमारी हो जाती है."

इलाइज़ा दो बारा मेरे पास खिसक [illegible] उस ने घबरा कर आसमान की ओर [illegible] फिर मेरे कान में हौले से कहा, "मैं [illegible] गया. इस का ज़िम्मेदार कौन है. मेरी [illegible] का मालिक. वह मेरे लिए कुछ भी करना [illegible] चाहता." उस ने सिर घुमा कर हैरत भरी [illegible] से मुझे देखा और फिर मेरे कान के [illegible] अपना मुंह ला कर फुसफुसाया, "सा[illegible] वह इस खेत को निचोड़ रहा है, पर [illegible] कुछ नहीं है."

मैं पीछे हटा. मैं उस के बैल को [illegible] खिलाना चाहता था. मेरे पास थोड़ा [illegible] हैक्साक्लारोथेन कार में पड़ी थी. मैं ने [illegible] पानी के साथ मिला कर पशु को पिला [illegible]

कोई एक महीने बाद हाट वाले दिन मैं [illegible] के बीच घूम रहा था जिन से सड़क पटी [illegible] थी. स्थानीय शराबघर के सामने हमेशा [illegible] तरह किसानों का झुंड बतिया रहा [illegible] मवेशियों के सौदागरों से और अनाज [illegible] व्यापारियों से सौदे भी कर रहे थे.

"अरे, मिस्टर हेरियट!" यह आवाज़ [illegible] हैंपसन के सिवा और किस की हो [illegible] थी! उस का चेहरा लाल था और वह [illegible] ख़ुश नज़र आ रहा था. मेरे इर्द गिर्द [illegible] हुए बोला, "आप को उस सुअर की [illegible] जिस का आप ने इलाज किया था?" [illegible] लग रहा था कि उस ने हाट वाले दिन [illegible] की कुछ बोतलें चढ़ा रखी हैं. इसी लिए [illegible] की आवाज़ पहले से भी ऊंची थी.

किसानों के कान खड़े हो गए. एक [illegible] के लिए दूसरे किसान के मवेशी की बीमा[illegible] बढ़ कर कोई और ख़बर पहेली सी नहीं [illegible]

"हां, मि. हैंपसन," मैं ने जवाब [illegible]

"वह बिलकुल ठीक नहीं हुआ!"

चिल्ला कर कहा.

मुझे किसानों के चेहरे खिलते नज़र आए. जब कोई बात बिगड़ जाती है, तब उन्हें और भी मज़ा आता है.

"ना जी, वह नहीं बचा. मैं ने इतनी जल्दी किसी सुअर को छीजते नहीं देखा. उस का मांस तो जैसे पिघल गया."

"यह जान कर बहुत दुःख हुआ. लेकिन आप को याद होगा, मैं ने कहा था यह नहीं बचेगा . . ."

"उस की हड्डियां निकल आई थीं!" उस की दहाड़ पूरे हाट में गूंज उठी. मैं ने बेचैनी से इधर उधर देखा. "मि. हैंपसन, मैं ने तो तभी आप से कहा था कि . . ."

"जाने वह कौन सा पाउडर आप ने उसे दिया था. उस से ख़ाक फ़ायदा नहीं हुआ. बेचारे का मांस कुत्तों के काम आया. अच्छा, मि. हेरियट, नमस्कार!" यह कह कर वह मुड़ा और चल दिया.

मैं लोगों का केंद्रबिंदु बना हुआ था. इसी लिए जल्दी से वहां से खिसक जाना चाहता था, कि तभी किसी ने हौले से मेरे कंधे पर हाथ रखा. मैं ने घूम कर देखा, इलाइज़ा वेंटवर्थ खड़े थे.

"मि. हेरियट," उन्हों ने कानाफूसी की, "उस बैल के बारे में आप को बताना था.." मैं ने ग़ौर से उन्हें देखा. इस संयोग पर चकित था. किसानों के कान फिर खड़े हो गए.

"कहिए, मि. वेंटवर्थ ?"

उन्हों ने मेरे और पास आ कर कान में फुसफुसाया, "कमाल ही हो गया. जैसे ही आप उसे दवाई दे कर गए, वह ठीक होने लगा."

मैं एक क़दम पीछे हटा, "बहुत ख़ूब! लेकिन ज़रा ऊंचा बोलिए, मुझे सुनाई नहीं दे रहा." मैं ने उम्मीद के साथ चारों ओर देखा.

वह फिर मेरे पास आया. उस ने अपनी ठुड्डी मेरे कंधे पर रख दी. "जाने आप ने उसे क्या दवा दी थी, लेकिन जो भी दी थी, ग़ज़ब की दी थी. मुझे तो आंखों देखी पर विश्वास नहीं हो रहा था."

"ज़रा ऊंचा बोलिए," मैं ने उत्सुकता से कहा.

"वह अब मक्खन की टिकिया जैसा हो गया है." उन की सुनाई न पड़ने वाली फुसफुसाहट ने मेरे गाल को छुआ. "मुझे पूरा भरोसा है कि नीलामी में उस की अच्छी बोली लगेगी."

किसानों को कुछ सुनाई नहीं दे रहा था, इस लिए उन की दिलचस्पी समाप्त हो गई. फिर जब वे आपस में बातें करने लगे तो वेंटवर्थ ने मेरे कान में धीरे से यह राज़ खोला, "ऐसा शानदार और ग़ज़ब का इलाज मैं ने ज़िंदगी में पहली बार देखा है.'

अकेली उड़ान

"आज," फ़्लाइट अफ़सर वुडहैम ने कहा, "हम कुछ नई क़िस्म की उड़ानें भरेंगे. कलाबाज़ियां खाएंगे, गोता लगाएंगे और गतिरोध की स्थिति से कैसे निकला जाता है, यह सिखाएंगे." उन की आवाज़ नरम थी. हैलमेट पहनने से पहले उन्हों ने सुंदर नैन नक़्श वाला पके रंग का चेहरा मेरी ओर घुमाया और मुसकराए. हवा में उड़ने से पहले तक वे हमेशा ऐसे ही होते थे, लेकिन आसमान पहुंचते ही उन का अंदाज़ बिलकुल बदल जाता था. गरमियों के आकाश में उड़ते समय पहले पहल उन के आदेश साधारण लगते थे और उन का पालन करना आसान लगता था, पर जल्द ही उन का लहजा बदल जाता.

"मैं ने तुम से कहा नहीं था कि सामने वाले रडर और साइड स्लिप पर टिके रहो?" वे इंटरकाम पर चिल्लाए.

"यस, सर," मैं बस इतना कह पाया. कहना तो मैं यह चाहता था, 'वही तो मैं कर रहा हूं, उल्लू के पटठे!'

उन की चश्मा चढ़ी आंखें मेरे आईने में घूरीं. "तो फिर वह तुम कर क्यों नहीं रहे?" उन की आवाज़ चीख़ की सीमा तक जा पहुंची. "हवाई जहाज़ को ऊपर ले चलो. हम फिर कोशिश करेंगे. और भगवान के लिए, होश ठिकाने रखो!"

यही बात कलाबाज़ी और गतिरोध की स्थिति में से निकलने पर हुई. धीरे धीरे डर बैठने लगा. "उस बादल पर नज़र जमाए रखो. अपना नक़ली क्षितिज देखो! तुम्हें पता नहीं, आल्टीमीटर किस लिए होता है? मैं ने तुम्हें ताकीद की थी कि ३०० मीटर पर रहना, लेकिन लगता है, मैं दीवार से बातें कर रहा था!"

मैं बिलकुल आगे नहीं बढ़ पा रहा था. मैं जो भी करता था, ग़लत हो जाता था. अब मैं निराश होने लगा था. उम्मीद तो यह थी कि मैं पायलट बना दिया जाऊंगा, लेकिन वुडहैम के साथ हर बार उड़ने के बाद मुझे लगा कि मैं हवाई जहाज़ कभी अकेला नहीं उड़ा पाऊंगा.

आज भी जब मैं उन से मिला तो वे एकदम शांत नज़र आ रहे थे. उन का व्यवहार भी मोहक था. लेकिन आकाश में पहुंचते ही उन का चिल्लाना फिर शुरू हो गया.

"आराम से! भगवान के लिए आराम से!" या, "ऊंचाई पर ध्यान दो! अरे, कहां लिए जा रहे हो?" या, "मैं ने तुम से कंट्रोल स्टिक को बीच में रखने को नहीं कहा था? अरे, बहरे हो गए हो क्या?" आख़िर जब हमारा जहाज़ डगमगाता सा घास पर आ कर रुका तो वे बोले, "बहुत ही वाहियात ढं[illegible] जहाज़ उतारा है तुम ने. चलो, फिर उड़ा[illegible] इसे."

दूसरी बार की उड़ान के दौरान वे हैरान [illegible] देने की हद तक चुपचाप बैठे रहे. हालांकि [illegible] की चुप्पी से मुझे चैन मिलना चाहिए [illegible] लेकिन उस अपरिचित शांति के लक्षण [illegible] अच्छे नहीं लगे. इस का एक ही मतलब [illegible] सकता था. उन्हें निश्चय हो गया है कि [illegible] कभी पायलट नहीं बन पाऊंगा. जब हम [illegible] पर उतर आए तो वे पिछले काकपिट से [illegible] उतर कर बोले, "वहीं बैठे रहो और [illegible] अकेले उड़ाओ. लौट कर मुझ से फ़्लाइट [illegible] में मिलना." इतना कह कर वे मुड़े और [illegible] दिए.

मैं बहुत डरा हुआ था, फिर भी मैं का[illegible] पिट में दी गई उन हिदायतों को नहीं भूला [illegible] जो मेरे अंदर रच बस गई थीं. रडर, एले[illegible] और एलिवेटर की जांच करने के बाद इं[illegible] की आवाज़ गूंजने लगी. मैं ने थ्रोटल को [illegible] खोल दिया. वह छोटा सा जहाज़ घास [illegible] धक्के खाता हुआ आगे बढ़ने लगा. मैं [illegible] कंट्रोल स्टिक पीछे खींची तो जहाज़ आराम [illegible] हवा में उठने लगा. अपनी इस सफलता [illegible] मेरी ख़ुशी का ठिकाना न रहा. "आज [illegible] अकेला इसे उड़ा रहा हूं." मुझे इस अह[illegible] का नशा चढ़ गया. मैं देर तक बस उड़ता [illegible] और मूर्खों की भांति आप ही आप हंसता र[illegible]

आख़िर जब मैं होश में आया तो मैं ने [illegible] ख़ुशी के नीचे देखा. लौटने का समय हो [illegible] था लेकिन जब मैं ने नीचे नज़र डाली [illegible] वास्तविकता मुंह फैलाए मेरी ओर बढ़ने ल[illegible] नीचे जो धुंधली सी तसवीर थी, मैं उस[illegible] कुछ भी पहचान नहीं पा रहा था. मेरा [illegible] सूख गया. मैं ने आल्टीमीटर पर नज़र डा[illegible]

में ६०० मीटर से भी ज़्यादा ऊंचाई पर था.

सहसा मुझे लगा कि वुडहैम का चीख़ना चिल्लाना बेमतलब नहीं था. वे मुझे पते की बातें बता रहे थे, काम की सलाह दे रहे थे, लेकिन मैं जैसे ही अकेला उड़ा, मैं ने उन को दरगुज़र कर दिया. न तो मैं ने किसी बादल को अपना आधार बनाया और न मैं ने अपने नक़ली क्षितिज पर ध्यान रखा. मैं ने आल्टी-मीटर पर भी नज़र नहीं डाली. इसी लिए मैं भटक गया.

लगता था, एक न एक ढंग से मैं नाम कमाने वाला हूं. दूसरे चालकों के साथ अजीब घटनाएं घटी थीं. कुछ को उलटियां हो गई थीं. एक झाड़ियां तोड़ कर निकला था, एक और ने पहली अकेली उड़ान में हवाई अड्डे के बारबार चक्कर काटे. सात चक्कर काटने के बाद वह नीचे उतरने की हिम्मत जुटा पाया था. उस का शिक्षक नीचे खड़ा अपना पसीना एक कर रहा था और गालियां बक रहा था. लेकिन कोई भी उड़ान भरने के बाद बिना हवाई जहाज़ के नीचे लौट कर नहीं आया था.

मेरा क्या अंजाम होने वाला है, इस विषय में मेरी कल्पना बड़ा भयानक रूप लेती चली जा रही थी मेरा दिल बुरी तरह धड़क रहा था. तभी मुझे बाईं ओर ऐस्काट के रेस कोर्स का जाना पहचाना लंबा चौड़ा स्टैंड नज़र आया. ख़ुशी से लगभग रोते हुए मैं उस की तरफ़ मुड़ा और कुछ ही क्षण बाद उस की छत पर उड़ रहा था.

और नीचे . . . बहुत नीचे हवाई अड्डे के किनारे खड़ी तरु पंक्तियां तेज़ी से पास आती जा रही थीं. अभी मैं बहुत ऊंचाई पर था. मैं कभी इतना नीचे नहीं आ सकता था कि ठीक समय पर हवाई पट्टी पर उतर सकूं.

बदनामी की बात गहरे पैठ गई. नीचे सब लोग खड़े देख रहे होंगे. कुछ यह देख कर ख़ूब हंसेंगे कि मेरा जहाज़ नीचे उतर नहीं पाया और फिर बादलों में चला गया. 'लेकिन मैं यह क्या सोच रहा हूं? ऊंचाई जल्दी से कम करने का तरीक़ा है और, भगवान तुम्हारा भला करे, वुडहैम, वह तरीक़ा मुझे आता है.'

वुडहैम ने सैकड़ों बार मुझे साइड स्लिप करना बताया था. वही अब मैं ने पूरी शक्ति से किया और मेरा छोटा सा जहाज़ केंकड़े की तरह वृक्षों की ओर उतरता चला गया.

तरक़ीब काम कर गई! वह हरियाली तेज़ी से खिंचती चली आई और इस से पहले कि मैं संभल पाता, मेरा जहाज़ उन पेड़ों को छूने सा लगा. मैं सीधा हो कर बैठा और मैं ने घास की उस लंबी पट्टी का रुख़ किया. जहाज़ के पहिए बिना झटके के धरती पर आ गए. फिर मैं उसे चलाते हुए हैंगर में ले गया. मैं काकपिट से बाहर निकला और फ़्लाइट हट की ओर चल पड़ा.

वुडहैम हाथ में प्याला लिए मेज़ पर बैठे थे. मुझे अंदर आते देख उन्हों ने पूछा:

"ओह हेरियट, काफ़ी पी रहा हूं मैं. तुम भी पिओगे?"

मैं बैठ गया. उन्हों ने एक प्याला मेरी तरफ़ बढ़ाया.

"मैं ने तुम्हें जहाज़ उतारते देखा था," उन्हों ने कहा. "बहुत अच्छा उतारा, बहुत अच्छा."

"थैंक यू, सर."

"वह साइड स्लिप . . ." उन के होंठ का एक किनारा ऊपर को मुड़ गया. "वह भी बहुत अच्छी रही . . .शानदार."

काफ़ी घूंट उठाते हुए वे बोले, "तुम ने बहुत अच्छा जहाज़ उड़ाया, हेरियट. अकेली उड़ान भरी है न नौ घंटे की शिक्षा के बाद?

क्या कहने! लेकिन मुझे तुम्हारे बारे में कभी रत्ती भर शक नहीं था." उन्हों ने मेरे प्याले में काफ़ी डालते कहा, "कैसी काफ़ी पीते हो तुम...दूध डाल कर या बिना दूध के?"

सैलानी बिल्ला

जब मैं डेरोबाई से चला था तो हेलेन अपने पिता के साथ रहने चली गई थी. घर के वे छोटे छोटे कमरे जिन में हम सीगफ़्रीड और उस के विद्यार्थी भाई ट्रिस्टन के साथ रहते थे, अब ख़ाली पड़े थे. उन में धूल जम गई होगी. लेकिन मेरी यादों में वे अपने सारे रख रखाव के साथ मौजूद थे. मुझे वह बेल चढ़ी खिड़की याद थी जिस से घरों की ऊंची नीची छतों के पार हरी भरी पहाड़ियां नज़र आती थीं. कमरों में हमारा थोड़ा सा फ़रनीचर था, जैसे पलंग, उस के साथ की मेज़, और कपड़ों की वह पुरानी अलमारी जिसे बंद करने के लिए एक पट में मेरा ऊनी मोज़ा लगाना पड़ता था. वही आधा अंदर आधा बाहर लटकता मोज़ा उस याद को ताज़ा रखे था.

पलंग के पास रखा रेडियो बज रहा था. अलाव की दूसरी तरफ़ से पत्नी की आवाज़ साफ़ सुनाई दे रही थी. जाड़े की उस शाम सीढ़ियों के नीचे खड़े ट्रिस्टन फ़ारनन के चिल्लाने की आवाज़ सुनाई दी. वह ऊपर मुंह कर के पुकार रहा था.

"जिम! जिम!"

मैं बाहर निकला. रेलिंग के ऊपर से पूछा, "क्या बात है, ट्रिस?"

"जिम, ज़रा नीचे आ सकते हो?" उस के ऊपर उठे मुंह पर परेशानी साफ़ झलक रही थी. मैं एक साथ दो दो सीढ़ियां फलांगता नीचे उतरा. ट्रिस्टन ने मुझे इशारे से कंसलटिंग रूम में बुलाया. मेज़ के पास एक किशोरी एक लिपटे हुए कंबल पर हाथ धरे खड़ी थी

"इस में बिल्ला है," ट्रिस्टन बोला.
ने कंबल हटाया तो मुझे काली धारियों वा
एक भूरा बिल्ला दिखाई दिया. उस ने धी
बिल्ले की एक पिछली टांग उठाई ताकि
का पेट मुझे नज़र आ सके. उस का पेट फ
हुआ था और उस की आंतों का एक गु
निकल कर कंबल पर पड़ा था. वह बि
लड़की का नहीं था. वह बोली, "यह
रास्ते में पड़ा मिला तो इस का भयानक घाव दे
कर मैं यहां ले आई." उस की आंतें मिट्टी
कीचड़ से सनी हुई थी.

"इस की आंतें कई जगह से कट
हैं. बचने की कोई उम्मीद नहीं." मैं ने ग
सांस ले कर कहा. "अब तो एक ही का
किया जा सकता है ..."

ट्रिस्टन बोला तो कुछ नहीं, लेकिन उस
मुंह से एक हलकी सी सीटी निकल गई.
अपनी उंगली बार बार बिल्ले के फर
बालों से भरे गाल पर फिराता रहा. सह
बिल्ले की कमज़ोर छाती में से खुर खुर
आवाज़ आई.

ट्रिस्टन ने मेरी तरफ़ हैरानी से दे
"सुना तुम ने?"

"कोई फ़ायदा नहीं, ट्रिस," मैं ने मृदु स्व
कहा. "कंबल पर थोड़ा ईथर लाड दो. श
मर जाएगा. और कोई चारा नहीं."

ट्रिस्टन ने ईथर की बोतल का ढ
खोला. असमंजस में वह बिल्ले के सि
ऊपर बोतल ले गया. इतने में हमें फिर
खुर खुर की आवाज़ सुनाई दी जो धी
इतनी बढ़ गई कि वह हमारे कानों में का
जाने वाला मोटर साइकिल की आवाज़
तरह आने लगी.

ट्रिस्टन ने मेरी ओर ताका, थूक नि

और बोला, "मुझे से यह नहीं होगा, जिम! क्या कुछ भी नहीं किया जा सकता?"

दो घंटे तक कई मीटर आंतें सीने के बाद अब सब ठीक लग रहा था. "यह बच ही गया, ट्रिस," मैं ने औज़ार धोते धोते कहा. तभी दरवाज़ा खुला और हेलेन अंदर आई. "तुम ने बड़ी देर लगा दी, जिम." वह चल कर मेज़ के पास आई और उस ने सोए हुए बिल्ले पर एक नज़र डाली. "कितना मरियल है यह बेचारा. हड्डियां ही हड्डियां हैं." उस ने प्यार से क्षण भर उस पर हाथ फेरा और पूछा, "बुरी तरह ज़ख्मी है यह?"

"हां, हेलेन," मैं ने कहा. "हम से जो हो सकता था, कर डाला है, पर मुझे लगता नहीं कि वह बचेगा." हेलेन लपकी हुई स्टोर में गई और वहां से एक ख़ाली डब्बा ले कर लौटी.

"मैं इस में इस के लिए बिस्तर लगा देती हूं. यह हमारे कमरे में ही सोएगा, जिम."

अगले कई दिन तक हेलेन उसे चम्मच से दूध, अनछना सूप और बेबी फूड खिलाती पिलाती रही. "इस का नाम आस्कर रख देते हैं." उस ने सुझाव दिया.

"आस्कर क्यों?"

"बस, यूं ही."

स्त्रियों की जो बात मुझे पसंद है, वह है उन का किसी भी बात को राज़ बना लेना. इसी लिए मैं ने बात आगे नहीं बढ़ाई.

आस्कर की खुर खुर हमारे जीवन का एक हिस्सा बन गई थी. स्वस्थ होने पर जब वह घूमता घामता रसोई में आया और उस ने हमारे कुत्ते का भोजन—गोश्त और बिस्कुट चखा तो हम अपनी सफलता पर दिपदिपा उठे.

आस्कर को हमारे परिवार का सदस्य बने कई सप्ताह बीत चुके थे. एक दिन जब मैं एक मरीज़ को देख कर रात गए लौटा तो मैं ने हेलेन को मुंह लटकाए अपनी प्रतीक्षा करते पाया. "आस्कर कहीं चला गया." वह उसे

आंगन में ही नहीं, बस्ती में भी ढूंढ़ आई थी. रुआंसी होने से उस की ठुड्डी कांप रही थी. बोली, "वह पहले भी कहीं से भाग कर आया था."

ठीक उसी समय दरवाज़े की घंटी बजी. मैं जल्दी जल्दी सीढ़ियां उतर कर जैसे ही गैलरी में मुड़ा, मुझे शीशे में से विकार की पत्नी मिसेज़ हैस्लिंगटन दिखाई पड़ीं. मैं ने दरवाज़ा खोला. वह आस्कर को गोद में लिए थीं.

"चर्च हाउस में हमारी मदर्स यूनियन की मीटिंग चल रही थी," उन्हों ने बताया, "कि हम ने इस बिल्ले को कमरे में बैठे देखा, मानो यह भी हमारी बातें सुनने आया हो. हमें बड़ा अजीब लगा. जब मीटिंग समाप्त हुई तो मैं ने इसे खुद ही आप तक पहुंचाना ठीक समझा."

कुछ रोज़ बाद आस्कर फिर ग़ायब हो गया.

नौ बजे दरवाज़े की घंटी बजी. वृद्ध महिला मिस सिंपसन शीशे में से झांक रही थीं. आस्कर पायदान पर पसरा पड़ा था.

"यह आप को कहां मिला?"

"महिला संस्थान में," मिस सिंपसन ने बताया. "मीटिंग शुरू होने के कुछ देर बाद यह वहां पहुंचा और मीटिंग समाप्त होने तक बैठा रहा. यह सब से घुलमिल गया और बड़े चाव से स्लाइडें देखता रहा. केक में इस ने बड़ी दिलचस्पी दिखाई. यहां तक यह आप ही लौटा है. मैं ने घंटी इस लिए बजा दी ताकि आप को मालूम हो जाए कि यह आ गया है."

मैं एक सांस में सीढ़ियां चढ़ गया. "अब मैं आस्कर को समझ गया हूं," मैं ने हेलेन से कहा. "यह भाग कर कहीं नहीं जाता—यह तो बस मिलने जुलने जाता है. इसे लोग अच्छे लगते हैं. वे जो भी करते हैं, उस में इस की दिलचस्पी है. यह स्वभाव से सामाजिक है."

हेलेन ने गोद में लिए फ़र के उस सुंद[illegible] को देखा. "हां, यही बात है . . .यह मि[illegible]सार है!"

"बिलकुल . . . और घुमक्कड़!"

"यानी यह सैलानी बिल्ला है!"

वज्रपात सर्वथा आकस्मिक हुआ. मैं शाम[illegible] दवाखाने का काम समाप्त करने में लगा[illegible] कि मैं ने दरवाज़े के बाहर बस एक अ[illegible] और दो छोटे छोटे लड़कों को देखा.

मेरी आवाज़ सुन कर वह उ[illegible] खड़ा हुआ. वह अपने साथ कोई जानवर [illegible] लाया था. वह अधेड़ उम्र का आदमी था. [illegible] का चेहरा खेतिहर मज़दूर जैसा खुरदरा [illegible] झुर्रियोंदार था. वह घबराहट में कपड़े की टो[illegible] को अपने हाथों में मरोड़ रहा था. "[illegible] हेरियट," वह बोला, "मेरा ख़याल है [illegible] बिल्ला आप के पास है. मेरा एक चचेरा [illegible] डैरोबाई में रहता है. उसी से मुझे पता चला [illegible] आप के पास वह बिल्ला है जो मीटिंग[illegible] आता जाता है. हम ने जाने कहां कहां खो[illegible]

हम ऊपर पहुंचे. हेलेन अलाव में को[illegible] डाल रही थी. "हेलेन," मैं ने कहा, "ये हैं [illegible] . . .माफ़ कीजिए. आप का नाम?"

"गिंबस, सैप गिंबस. ये दोनों मेरे [illegible] बेटे हैं." वे दोनों लड़के जुड़वा भाई थे. [illegible] की उम्र कोई आठ वर्ष की होगी. वे [illegible] गंभीरता से हमारी ओर देख रहे थे.

काश! मेरा दिल इतने ज़ोर से न [illegible] रहा होता. "मि. गिंबस का ख़याल है [illegible] आस्कर इन का है. इन का बिल्ला कुछ [illegible] से गुम है."

हेलेन ने कोयले डालने वाला छोटा

बेलचा नीचे धर दिया. "ओह . . .समझी." क्षण भर को वह निश्चल खड़ी रही. फिर फीकी हंसी हंसते बोली, "बैठ जाइए. आस्कर रसोई में है. मैं उसे ले कर आती हूं."

वह बिल्ले को गोद में लिए लौटी. अभी वह दरवाज़े में ही थी कि दोनों लड़कों के मुंह से निकला, "टाइगर!" फिर वे चिल्लाए, "ओह, टाइगर, टाइगर!"

आदमी का चेहरा भीतर से खिल उठा. उस ने अपने चौड़े चकले हाथ से जो काम करते करते खुरदरा हो गया था, बिल्ले को सहलाया. "हैलो, बेटे," वह बोला और फिर ख़ुशी से मुसकराते मेरी ओर मुड़ा. "यही है, मि. हेरियट, यही है. कितना हट्टा कट्टा दिखाई दे रहा है, है न? सच, हमें इस की बहुत याद आती थी."

हेलेन ने मेरे मन की बात कही. "मि. गिंबस," उस की आवाज़ में कुछ ज़्यादा ही खनक थी, "इसे ले जाइए." उस ने बिल्ले के सिर को दोनों हाथों में थामा, फिर उसे कुछ क्षण चुपचाप ताकती रही. उस ने उन दोनों लड़कों के सिर पर भी हाथ फेरा, "तुम इस का पूरा पूरा ध्यान रखोगे न?"

मैं उन को छोड़ने दरवाज़े तक गया, फिर कमरे में लौट आया.

उन दिनों एक साथ दो दो, तीन तीन सीढ़ियां चढ़ना मेरी आदत थी, लेकिन उस समय मैं एक बूढ़े आदमी की तरह सीढ़ियां चढ़ा. मेरा सांस फूल गया, गला सूख गया. आंखों में चुभन हो रही थी. मैं ने इतना भावुक होने के लिए अपने आप को बुरा भला कहा, लेकिन जैसे ही मैं कमरे के दरवाज़े पर पहुंचा, मुझे थोड़ी तसल्ली हुई. हेलेन ने सदमा बरदाश्त कर लिया था. उस बिल्ले की उसी ने तीमारदारी की थी और वह उस से बहुत प्यार करने लगी थी. मेरा ख़याल था कि इस तरह की घटना से वह बुरी तरह परेशान हो उठेगी, लेकिन उस ने शांति और विवेक से सब सह लिया था. स्त्रियों के मन का कभी कुछ पता नहीं लगता. ख़ैर, उसे शांत देख कर मुझे ख़ुशी हुई.

अब आंसू पी लेना मेरे लिए ज़रूरी था. मैं ने अपने को संभाला, मुसकराहट चेहरे पर लाया और कमरे में क़दम रखा.

हेलेन मेज़ के पास एक कुरसी सरका कर उस पर पड़ी थी और उस ने अपना सिर मेज़ पर टिका रखा था. उस का एक हाथ सिर के गिर्द था, दूसरा उस के सामने फैला था. आंसुओं का बांध तोड़ते हुए उस का बदन कांप कांप उठा.

ऐसी हालत में मैं ने उसे पहले कभी नहीं देखा था. मैं घबरा गया. मैं ने उसे दिलासा देने को कुछ कहना चाहा, पर उस की सिसकियां रुकने का नाम ही नहीं ले रही थीं.

मैं बस असहाय और असमर्थ सा उस के पास बैठ गया और उस के बाल सहलाने लगा. अगर मैं ख़ुद दुःखी न होता तो शायद दिलासे के दो चार शब्द कह पाता.

समय के साथ साथ आदमी दुःख पर क़ाबू पा जाता है. हम ने अपने आप को समझाया, आस्कर मरा तो है नहीं! वह बस यहां से दूसरे घर . . . कहना चाहिए, अपने घर चला गया है और वे लोग उस की देखभाल करेंगे ही.

उस नामुराद रात को बीते एक महीना गुज़र गया था. हम अपनी आधे दिन की छुट्टी में ब्रौटन से सिनेमा देख कर निकल रहे थे. मैं ने घड़ी पर निगाह डाली, "आठ बजे हैं. आस्कर को देखने चलें?" आस्कर का घर वहां से आठ किलोमीटर दूर था.

हेलेन के चेहरे पर धीरे से मुसकान आई. बोली, "ख़याल तो बहुत अच्छा है, लेकिन वे लोग बुरा तो नहीं मानेंगे?"

"बुरा क्यों मानेंगे? आओ, चलें."

एक छोटे कद की व्यस्त सी महिला ने दरवाज़ा खोला. वह धारीदार तौलिए से हाथ पोंछ रही थी. "मैं जेम्स हेरियट हूं और ये मेरी पत्नी हैं. आप का बिल्ला कुछ दिन हमारे यहां ही रहा था."

महिला हंसी. अपना तौलिया हमारी ओर लहराते हुए बोली, "ओह, हां, याद आया. सैप ने आप के बारे में बताया था. आइए, आइए, अंदर आइए."

सैप आग के पास बैठा था. वह उठ कर खड़ा हो गया. उस ने अपना अख़बार नीचे रख दिया. इस्पात की कमानी वाला चश्मा उतार कर उस ने हम से हाथ मिलाया. हेलेन को उस ने एक झोला खाई कुरसी पर बैठने को कहा. फिर वह बोला, "आप को देख कर बड़ी ख़ुशी हुई. मैं अकसर अपनी पत्नी से आप का ज़िक्र करता रहता हूं."

जब तक चाय बन कर नहीं आई और प्यालों में नहीं डाली गई, तब तक मैं वह बात छेड़ नहीं सका. "वह," मैं ने झिझकते झिझकते पूछा, "टाइगर . . . कैसा है?"

"बहुत मज़े में है," महिला ने जल्दी से जवाब दिया. उस ने कारनिस के ऊपर लगी दीवार घड़ी पर नज़र डाली. "वह बस आता ही होगा, फिर आप देख लीजिएगा."

तभी सैप ने एक उंगली उठा कर कहा, "उसी की आवाज़ आ रही है." उस ने जा कर दरवाज़ा खोला. हमारा आस्कर अपनी पुरानी शान और दबदबे के साथ अंदर दाख़िल हुआ. हेलेन को देखते ही वह लपक कर उस की गोद में जा बैठा. "यह मुझे पहचानता है," हेलेन ने हौले से कहा, "मुझे पहचान[illegible] है यह!"

मैं उठ कर आस्कर के पास गया और [illegible] ने उस की ठुड्डी को गुदगुदाया. फिर मैं [illegible] मुड़ कर मिसेज़ गिबस से पूछा, "नौ ब[illegible] चुके हैं. यह अब तक कहां था?"

उस ने मक्खन लगाने वाला चाकू स[illegible] और शून्य में देखते हुए बोली, "आज गुरु[illegible] है न? आज की रात यह योगाभ्यास क[illegible] जाता है."

वापसी

युद्ध समाप्त होने से पहले पहले मेरा [illegible] आपरेशन हुआ. जिस के बाद मुझे सेना [illegible] अयोग्य ठहरा दिया गया. फ़ौज से निकाले [illegible] लोगों में मेरा मामला बिलकुल निराला [illegible] उन्हों ने मेरी नीली वरदी ले ली और बदले [illegible] बैंजनी धारियों वाला भूरे रंग की सर्ज का [illegible] पहना दिया जिस में मैं पुराने समय का [illegible] डाकू लगता था.

यात्रा का अंतिम चरण बस से तय कर[illegible] था—उसी खड़खड़ाती बस से जिस से मैं [illegible] साल पहले अपने पहले काम पर गया [illegible] ड्राइवर भी वही था. जैसे जैसे सुबह [illegible] धुंधलके में दूर के नीले फ़ासले में से प[illegible] भूमि उभरने लगी, वैसे वैसे दोनों यात्राओं [illegible] बीच का अंतराल जाने कहां तिरोहित [illegible] चला गया. जाने पहचाने खेतघर नज़र [illegible] लगे और घास की ढलानों के परे दीवारें [illegible] नदी किनारे खड़ी तरु पंक्तियां दिखाई [illegible] लगीं.

जब हमारी बस खड़खड़ाती, शोर म[illegible] मार्केट में पहुंची, उस समय दिन चढ़ [illegible] था. दूसरे सिरे की दुकान के ऊपर [illegible] कोआपरेटिव सोसाइटी का बोर्ड लगा था. [illegible]
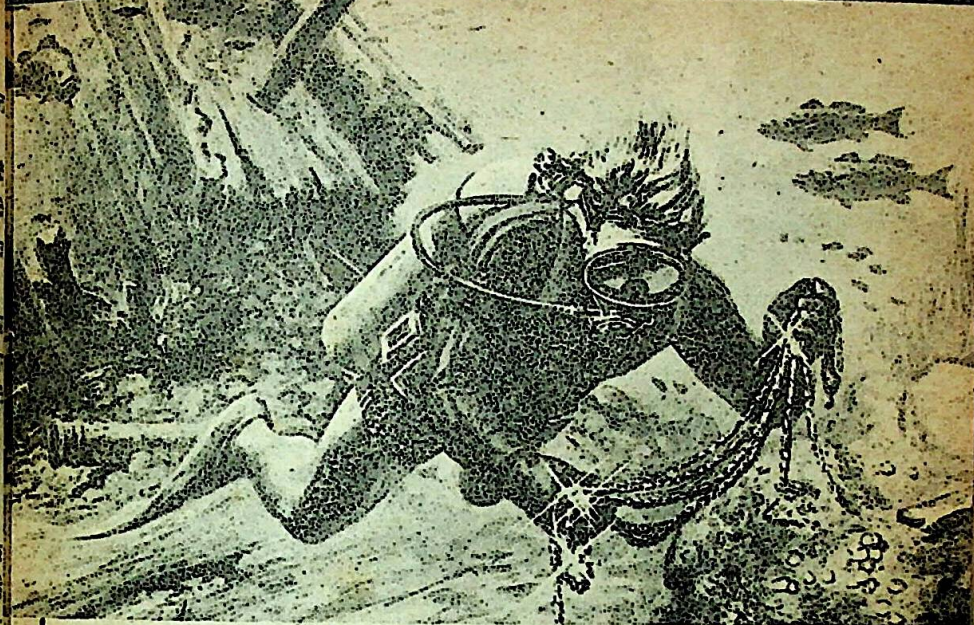
अगले महीने

खजाने की खोज

३६० साल पहले डूबे स्पेनी जहाज़ को खोजने की कई बार कोशिश की गई थी. गोताखोरों को आख़िर वह मिला तो देख कर आंखें चौंधिया उठीं.

अंधेपन का उपचार

महंगे आहार ही सब कुछ कर सकें ऐसा नहीं है. सस्ते स्वस्थ आहार का उपयोग कर के भारत में कुपोषण के शिकार लाखों बच्चों की आंखें बचाई जा रही हैं..

मंगोलिया करवट बदल रहा है

चंगेज़ ख़ां के वंशज अपने सोवियत पड़ोसियों की सहायता से सामंतवादी कड़ियां तोड़ कर आधुनिक औद्योगिक युग में पैठ रहे हैं.

स्वतंत्रता का शिक्षक वाल्तेर

१९वीं शताब्दी के उस महान क़लम के धनी ने फ़्रांस को ही नहीं, सारे यूरोप को मध्य युग के अंधेरे से निकाला, और पूरे संसार को क्रांति का पाठ पढ़ाया.

सर्वोत्तम पुस्तक : मेरे अपने

वे सब उस के अपने थे, वे जो अलग अलग घरों से आए थे—विक्षिप्त से बच्चे जिन्हें पढ़ाना भर उस का काम था, लेकिन जो उस संतानहीन अध्यापिका के जिगर के टुकड़े बन गए. एक मर्मस्पर्शी सत्य कथा.

यह सब तथा और बहुत कुछ सर्वोत्तम के फ़रवरी अंक में

चढ़ आया था और वह जालीदार छतों की खपरैलों को तपा रहा था—पृष्ठभूमि में था पहाड़ियों का हरा भरा वातावरण. मैं बस से उतरा. बस मुझे अपने सूटकेस के पास खड़ा छोड़ आगे चल दी.

सब कुछ पहले की तरह था. वही प्यारी प्यारी हवा, वही ख़ामोशी, पत्थरों का बना वही चौराहा जहां घंटाघर के चारों ओर सिवा बुड्ढों के कोई नहीं बैठा था. उन में से एक ने मुझे देखा.

"अच्छा, मि. हेरियट हैं!" वह ऐसे बोला जैसे उस ने मुझे कल भी देखा हो.

जब मैं काम की खोज में डैरोवाई आया था, उस दिन से ले कर आज तक बहुत कुछ हो गया था. अचानक मुझे लगा कि मेरी परिस्थितियां विशेष नहीं बदली हैं. तब भी मेरे पास कुल मिला कर एक पुराना सूटकेस और एक सूट था जो उस वक़्त मैं ने पहन रखा था. अब भी मेरी वही हालत थी—सि[illegible] प्यारी और शानदार चीज़ों के. एक [illegible] पत्नी हेलेन और दूसरी चीज़ थी मेरा [illegible] जिमी.

इन से ही सारा अंतर आ गया था. [illegible] मेरे पास नहीं था, घर तक नहीं था जि[illegible] अपना कह सकूं. लेकिन जिस छप्पर तले [illegible] पत्नी और मेरा बेटा हो, वह मेरे लिए [illegible] की छत से भी बढ़ कर थी. वे लोग क[illegible] बाहर थे और यहां से वहां तक का फ़[illegible] काफ़ी था. मैं ने पतलून में से झांकते [illegible] चौड़े चकले जूतों को देखा. आर ए ए[illegible] मैं ने उड़ना ही नहीं, पैदल चलना भी [illegible] था. कुछ किलोमीटर क्या माने रखते [illegible]

मैं ने गत्ते के सूटकेस को फिर से [illegible] चौराहे से बाहर निकलने वाले रास्ते प[illegible] और लेफ़्टराइट, लेफ़्ट राइट करता घर की [illegible] चल दिया.

सूचनार्थ

शनिवार को नृत्य का शानदार कार्यक्रम—केवल यूनियन के सदस्यों के लिए. बर्मिंघम, इंगलैंड, के एक कारख़ाने की कैंटीन में लगी थी यह सूचना और किसी ने इसी के नीचे जड़ दिया था: यह बंद-दर नाच है.

—'डेली टेलीग्राफ़', लंद[illegible]

वाटरविल, मेन, के व्यस्ततम चौराहे पर यह सूचना लगी थी: १८१८ में पर कोलबी कालेज की कक्षाएं पहलेपहल इसी स्थान पर लगती थीं. इसी के ठीक नीचे किसी मनचले ने लिख मारा था: और वे कक्षाएं अंगरेजी भाषाशास्त्र की तो नहीं ही होती थीं.

—ए एम ए[illegible]

टिकटिकी

अमरीकी कलाकार तथा लेखक जेम्स ग्रोवर थर्बर (१८९४-१९६१) ने कभी कहा था: इनसान लगातार घड़ी की तरह टिकटिक ही नहीं करता, बल्कि घड़ियाल की तरह टनटनाता, हर घंटे का घंटा भी बजाता है. यही नहीं, गिर कर टूट जाने पर इस की मरम्मत तक करवानी पड़ती है और कभी किसी तूफ़ान के गुज़रने पर वह बिजली के क्लाक की तरह बंद भी हो जाता है.

—'सलेक्टेड लैटर्स आफ़ जेम्स थर्बर' (एटलांटिक-लिटल, ब्राउन)

आइए मधु मुसकान लाइए

सर्वोत्तम में विभिन्न स्तंभों के लिए रचनाएं भेजिए. प्रकाशित रचनाओं पर पारिश्रमिक निम्न दरों से दिया जाता है :

जीवन की यह रीत : रु. १५०
रचनाएं आप के निजी अनुभव पर आधारित और पूर्णतः अप्रकाशित होनी चाहिए. उन से वयस्क मानव स्वभाव या दैनिक भारतीय जीवन का कोई आकर्षक पक्ष उजागर होना चाहिए. अधिकतम शब्द : ३००

जय जवान ! जय मुसकान ! : रु. १५०
सैनिक जीवन के सच्चे अनुभवों पर आधारित अप्रकाशित रचनाएं. अधिकतम शब्द : ३००

पाठशाला हास्यशाला : रु. १५०
विद्यार्थी जीवन से संबंधित सच्ची अप्रकाशित रचनाएं. अधिकतम शब्द : ३००

मेरा काम तेरा काम : रु. १५०
काम के क्षणों में होने वाली सच्ची मनोरंजक घटनाओं पर अप्रकाशित रचनाएं. अधिकतम शब्द : ३००

लच्छे भाषा के : रु. ४०
हिंदी उर्दू लेखकों द्वारा लच्छेदार चित्रण, रवानीदार, मज़ेदार और दिलचस्प मुहावरे, वाक्य या छंद. उद्धरणों के साथ लेखक का नाम, पुस्तक या रचना का शीर्षक, और प्रकाशन संस्था का नाम या पत्रिका का नाम एवं प्रकाशन तिथि अवश्य लिखें. स्वरचित रोचक वाक्य अथवा वर्णन भी भेज सकते हैं. अधिकतम शब्द : १००

इसी प्रकार झलकियां (प्रसिद्ध व्यक्तियों के जीवन की उल्लेखनीय घटनाएं), सोचने की बात (पुस्तकों, पत्रपत्रिकाओं, भाषणों में उठाए गए ऐसे मुद्दे जिन पर सब को विचार करना चाहिए) आदि स्तंभों के लिए, तथा लेखों के अंत में प्रकाशित की जाने वाली लघु रचनाओं के लिए भी आप अपनी पसंद के उद्धरण भेज सकते हैं. प्रत्येक उद्धरण के साथ लेखक, पुस्तक या पत्रपत्रिका का नाम व प्रकाशन तिथि अवश्य लिखें. प्रकाशित उद्धरणों को हमारे पास सर्व प्रथम पहुंचाने वालों को प्रति उद्धरण रु. ४० दिए जाएंगे.

हर रचना पर अपने नाम व पते के साथ भेजने की तारीख अवश्य लिखें. जिस रचना पर भेजने की तारीख नहीं लिखी होगी, उस पर कतई विचार नहीं किया जाएगा. संपादक का निर्णय अंतिम व पूर्णतः मान्य होगा. रचनाओं के संबंध में किसी प्रकार का कोई पत्र व्यवहार नहीं किया जाएगा, न ही अस्वीकृत रचनाएं लौटाई जाएंगी. रचनाएं भेजने का पता :

संपादक, सर्वोत्तम,
बी-१५, झिलमिल इंडस्ट्रियल एरिया,
दिल्ली-११००३२

लिफ़ाफ़े पर ऊपर के बाएं कोने पर संबंधित स्तंभ का नाम व भेजने की तारीख फिर से लिखना न भूलें.

खिड़की : आदम ... मार्वे

रु. ६.००

सर्वोत्तम
रीडर्स डाइजेस्ट

...बर १९८२

...शियाड
पृष्ठ ९३

...गमग दीवाली ब्रजवाली

पृष्ट ७२

सर्वोत्तम पुस्तक

...कथा ज़ार
पीटर
पृष्ठ ११०

संसार की सर्वाधिक लोकप्रिय पत्रिका
प्रति मास १७ भाषाओं और ४१ संस्करणों में ३.१ करोड़ से अधिक प्रतियां
हिंदी प्रकाशन का दूसरा वर्ष. अक्तूबर '८२ अंक की मुद्रित प्रतियां ६०,०००
Reader's Digest : Hindi Edition : Nov .82
यह प्रति ...िक ग्राहकों के लिए है, बिक्री के लिए नहीं
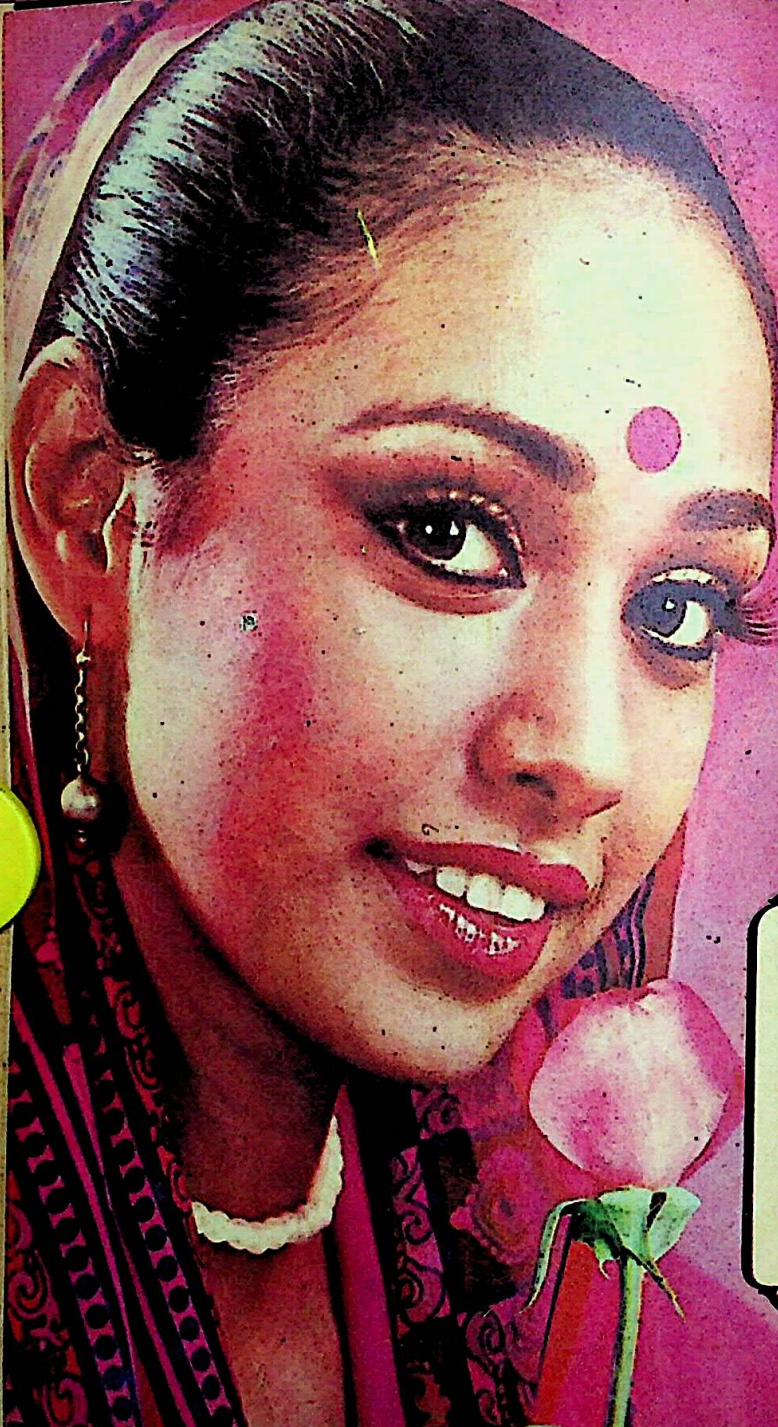
माथे
चेहरे की
डीलक्स
आपकी
लगाए...
फूलों सा
डीलक्स
वैज्ञानिक तौर
आपकी
अरविंद
मद्रास

सर्वोत्तम सूक्तियां

अधिकांश चिंताएं पुनरावृत्ति होती हैं.

—क़्लाड मैकडोनाल्ड
'द क्रिश्चियन वर्ल्ड'

ज़रा ऊंचा बोलते ही हर बात के मायने बदल जाते हैं. —हरमन हेस

चाटुकारिता ख़रीदी जा सकती है, लेकिन ईर्ष्या कमानी पड़ती है.

—फ़िलिप्स कैलेंडर १९७७

डाक टिकट को देखो, इस की उपयोगिता समझो. यह तब तक उस चीज़ से चिपका रहता है जब तक अपने गंतव्य तक न पहुंच जाए. —जोश बिलिंग्स

बहुत से लोग सुख की खोज ऐसे करते हैं मानों अपनी टोपी ढूंढ रहे हों जबकि टोपी उन के सिर पर ही होती है.

—निकोलस लेनाऊ,
जरमन कवि

किसी युवक की तड़कभड़क पर हंसिए मत. वस्तुतः वह एक पर एक मुखौटा लगा कर लगातार अपनी अस्मिता की तलाश कर रहा है.

—लोगान पियरसाल स्मिथ,
'आफ़्टरथाट्स' (हरकोर्ट ब्रेस जोवानोविच)

मनुष्य के कर्मों की खिल्ली मत उड़ाओ, निंदा मत करो और न उन पर तरस खाओ—बस, उन्हें समझने की कोशिश करो.

—बेनेडिक्ट स्पिनोज़ा, डच दार्शनिक

सर्वोत्तम रीडर्स डाइजेस्ट

वर्ष २ : अंक २२ नवंबर १९८२

भारतीय संस्करणों के प्रमुख संपादक: अशोक महादेवन
संपादक: अरविंद कुमार
सहायक संपादक: ललित सहगल, सुशील कुमार
संपादन मंडल:
अरुण कुमार, राम अरोड़ा, महेश नारायण भारती

विज्ञापन विभाग:
चंद्रन थरूर (निदेशक)
राम दत्ता (क्षेत्रीय प्रबंधक, बंबई)
विवियन डी सूज़ा (क्षेत्रीय प्रबंधक, दिल्ली)
कुमार माधवन (क्षेत्रीय प्रबंधक, मद्रास)
अमिताभ मजूमदार (क्षेत्रीय प्रबंधक, कलकत्ता)

अन्य विभाग:
विनायक उकिडवे (वित्त नियंता)
संजय जौहरी (वितरण प्रबंधक)
अजय कुमार दयाल (वितरण अधिकारी)
शुल्क:
रु. ७२.०० प्रति वर्ष, डाक व्यय अतिरिक्त
जानकारी के लिए लिखें: सर्वोत्तम रीडर्स डाइजेस्ट, बी-१५, झिलमिल इंडस्ट्रियल एरिया, दिल्ली-११००३२
'सर्वोत्तम रीडर्स डाइजेस्ट' आर डी आई प्रिंट एंड पब्लिशिंग प्राइवेट लिमिटेड द्वारा प्रकाशित किया जाता है.
पंजीकृत कार्यालय: ओरियंट हाउस, मंगलौर स्ट्रीट, बलार्ड एस्टेट, बंबई ४०००३८

प्रकाशक तथा प्रबंध निदेशक: अनील गोरे

[illegible] रीडर्स डाइजेस्ट
प्लेजेंटविले, न्यूयार्क
संस्थापक: डी विट वालेस और लीला [illegible] वालेस

रीडर्स डाइजेस्ट के अंतरराष्ट्रीय संस्करण
प्रमुख संपादक: एडवर्ड टी टामसन
संचालन संपादक: आर्ले द लाइरो
अध्यक्ष: जान ए ओ'हारा

अंतरराष्ट्रीय संस्करण १७. भाषाओं में प्रकाशित किए जाते है और उन के प्रमुख कार्यालय इस प्रकार है: अम्सटर्डम (डच), एथेंस (ग्रीक), ओसलो (नारवेजियन), केप टाउन (अंगरेजी), कोपेनहेगन (डेनिश), ज़ूरिख़ (जरमन और फ़्रेंच), तोकियो (जापानी), दिल्ली (हिंदी), पेरिस (फ़्रेंच और अरबी), बंबई (अंगरेजी), मिलान (इटालियन), मेक्सिको सिटी (स्पेनिश), मैड्रिड (स्पेनिश), मौंटरीयल (अंगरेजी और फ़्रेंच), लंदन (अंगरेजी), लिसबन (पुर्तगाली), सिडनी (अंगरेजी), सीयोल (कोरियन), स्टटगार्ट (जर्मन), स्टाकहोम (स्वीडिश), हांगकांग (चीनी), हेलसिंकी (फ़िनिश).

Published by Anil Gore for RDI Print & Publishing Pvt. Ltd., from B-15, Jhilmil Industrial Area, Delhi 110 032 and printed by [illegible] Tej Press, Bahadur Shah Zafar Marg, New Delhi 110 002.

शब्द संपदा सर्वोत्तम धन

—कुसुम कुमार

हर समय हमें अनेक ध्वनियों से काम पड़ता है. अतः अलग ध्वनियों की पहचान के लिए भाषा में अलग शब्द बन जाना आश्चर्य की बात नहीं. कई ध्वनियों से तो पदार्थों तक को नाम मिले हैं. यहां ध्वनि संबंधित २० शब्द लिखे हैं. हर एक के सामने वाले चार अर्थों में से निकटतम पर सही का निशान लगाइए और अगले पृष्ठ पर सही उत्तर से मिला कर अपना ध्वनि ज्ञान जांचिए.

१. खट—अ. टकराने की ध्वनि. आ. खाट की ध्वनि. इ. छः व्यक्तियों का गीत. ई. झगड़े का शोर.
२. ठक—अ. आश्चर्य ध्वनि. आ. काष्ठ ध्वनि. इ. तबला वादन. ई. ठीकरा ध्वनि.
३. चाप—अ. धनुष ध्वनि. आ. गरुड़ की बोली. इ. पग ध्वनि. ई. रहट ध्वनि.
४. ठांय—अ. बंदूक ध्वनि. आ. विस्फोट ध्वनि. इ. हिम पात ध्वनि. ई. तोप ध्वनि.
५. टंकार—अ. प्रतिध्वनि. आ. नूपुर ध्वनि. इ. धनुष ध्वनि. ई. हास्य ध्वनि.
६. घमर—अ. नाचने की आवाज़. आ. नगाड़े की आवाज़. इ. भ्रमर ध्वनि. ई. युद्ध ध्वनि.
७. सड़ाक—अ. ट्रैफ़िक का शोर. आ. दौड़ने की आवाज़. इ. पेड़ की आवाज़. ई. छड़ी सटकारने की आवाज़.
८. तड़ाक—अ. तमाचे की आवाज़. आ. टूटने का शब्द. इ. तड़फड़ाने की आवाज़. ई. गिरने की आवाज़.
९. धड़ाका—अ. विस्फोट ध्वनि. आ. हृदय ध्वनि. इ. रेल ध्वनि. ई. आपात ध्वनि.
१०. पटाका—अ. पताका ध्वनि. आ. पटाखे की आवाज़. इ. फटने की आवाज़. ई. टूटने की आवाज़.
११. छमछम—अ. क्षमा ध्वनि. आ. चूड़ियों की आवाज़ इ. नूपुर ध्वनि. ई. सितार ध्वनि.
१२. बड़बड़—अ. पत्तों का शोर. आ. पंख ध्वनि. इ. प्रलाप. ई. शान बघारना.
१३. धमाधम—अ. रेल ध्वनि. आ. सिंह ध्वनि. इ. ऊंट ध्वनि. ई. ढोल ध्वनि.
१४. टिकटिक—अ. तबले की एक ताल. आ. कोयले का चटकना. इ. घड़ी की धड़कन. ई. गरारी की ध्वनि.
१५. टिपटिप—अ. सिक्कों की ध्वनि. आ. बूंदों की ध्वनि. इ. घोड़े के पैरों की आवाज़. ई. दस्तक की आवाज़.
१६. फदफदाना—अ. उबलना. आ. ऊपर नीचे होना. इ. स्फुरण ध्वनि. ई. उबाल उतरना.
१७. चरमराहट—अ. जूते की आवाज़. आ. पत्तों की आवाज़. इ. संघर्षण ध्वनि. ई. तनाव ध्वनि.
१८. छननमनन—अ. नृत्य ध्वनि. आ. तलने की आवाज़. इ. ताल. ई. बूंद गिरने की आवाज़.
१९. खड़खड़ाहट—अ. लड़ाई का शोर. आ. बरतन टकराने की ध्वनि. इ. सूखे पत्तों की ध्वनि. ई. पत्थर गिरने की आवाज़.
२० फटफटिया—अ. झगड़ालू. आ. बेचैन पक्षी. इ. एक पटाखा. ई. मोटर साइकिल.

उत्तर अगले पृष्ठ पर

१. **खट**—अ. दो चीज़ों के टकराने की ध्वनि. खटखट, खटाखट, खटका. 'खटपट' से झगड़े का बोध होता है.

२. **ठक**—आ. काष्ठ ध्वनि, काठ पर काठ बजने का शब्द. विशेषण के तौर पर ठक का अर्थ है स्तब्ध, भौंचक्का. ठकठक ध्वनि को भी कहते हैं और मनमुटाव व झगड़े को भी.

३. **चाप**—इ. पग ध्वनि, पैरों की आहट.

४. **ठांय**—अ. बंदूक़ ध्वनि, बंदूक़ के चलने या ऐसी ही और कोई क्रिया होने का शब्द.

५. **टंकार**—इ. धनुष ध्वनि, धनुष की चढ़ी डोरी को खींच कर छोड़ने की ध्वनि; धातु खंड आदि पर आघात होने से उत्पन्न ध्वनि.

६. **घमर**—आ. नगाड़े की आवाज़; गंभीर ध्वनि.

७. **सड़ाक**—ई. छड़ी सटकारने की आवाज़. सटक कहते हैं लचकीली छड़ी को जब ऐसी छड़ी को तीव्र गति से हवा में घुमाया झटकाया या सटकाया और किसी पर आघात किया जाता है तो उस से होने वाली आवाज़.

८. **तड़ाक**—आ. किसी चीज़ के ज़ोर से टूटने का शब्द, तड़ाका. तड़कना का अर्थ है तड़ की आवाज़ के साथ फटना या टूटना—विशेषकर आंच पा कर. लालटेन की चिमनी गरमी से तड़कती है, चूड़ियां किसी दबाव से या गरमी से तड़क सकती हैं, लेकिन टकरा कर टूटती है. मौलती हैं. तड़ाक शब्द का एक अन्य मुख्य अर्थ है : चटपट, झटपट, तुरंत, तड़ाक फड़ाक.

९. **धड़ाका**—अ. विस्फोट ध्वनि, किसी चीज़ के ज़ोर से फटने या गिरने आदि से होने वाला घोर शब्द, धमाका. तोप और बिजली गरज... गड़गड़ाती भी है और धड़ाका भी करती है.

१०. **पटाका**—आ. पटाखे की आवाज़; पट ... ध्वनि, पटाक.

११. **छमछम**—इ. नूपुर ध्वनि, घुंघरू पायल ... की बार बार होने वाली आवाज़; ज़ोर का ... पड़ने की आवाज़; छमाछम, झम झम.

१२. **बड़बड़**—इ. प्रलाप, अनर्गल अर्थहीन प्र... असंगत अस्पष्ट अनवरत कथन, बकबक.

१३. **ढमाढम**—ई. ढोल नगाड़ा. डंका आदि ... बजने की आवाज़, ढामक, ढमढम.

१४. **टिकटिक**—इ. घड़ी की धड़कन, घड़ी के च... रहने पर उस में से निकलने वाला शब्द.

१५. **टिपटिप**—आ. बूंदों के पृथ्वी पर गिरने ... ध्वनि, टप टप. भाव सामीप्य के कारण ... अर्थ : हलकी वर्षा.

१६. **फदफदाना**—अ. भात रस आदि का उब... समय फदफद ध्वनि करना, फदकना. ... अर्थ : शरीर में अधिक फुंसियां या गरमी के ... निकल आना; वृक्ष या पौधे में बहुत सी ... निकल आना.

१७. **चरमराहट**—अ. चलने में जूते से होने ... चरमर की ध्वनि; बैठने पर चारपाई से होने ... ध्वनि; जोड़ों के कसमसाने की आवाज़.

१८. **छननमनन**—आ. तलने की आवाज़, ... कड़ाते घी तेल आदि में किसी गीली चीज़ ... गिरने से होने वाली आवाज़.

१९. **खड़खड़ाहट**—इ. सूखे पत्तों के परस्पर टक... या दबने से उत्पन्न ध्वनि.

२०. **फटफटिया**—ई. मोटर साइकिल जिस के ... से फटफट की आवाज़ होती है, फटफ...

मूल्यांकन

१९ या अधिक सही .... सर्वो...

१६ से १८ सही .... अत्यु...

१३ से १५ सही .... उ...

दर्द से तुरंत आराम के लिए
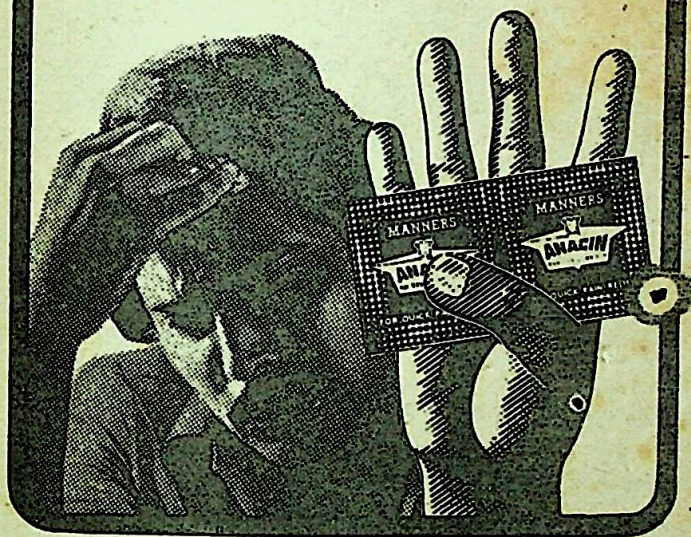
नई एनासिन

इसमें ज्यादा दर्द-निवारक शक्ति है

नई एनासिन में वह दर्द-निवारक दवा और ज्यादा है, जिसकी
दुनिया-भर के डॉक्टर सब से ज्यादा सिफारिश करते हैं.
सर-दर्द, सर्दी-जुकाम, फ्लू, पीठ-दर्द, पट्ठों के दर्द और
दांत-दर्द के लिए ज्यादा असरकारक.
सिर्फ एनासिन पर ही विश्वास कीजिए.
अब नई सुरक्षित पैकिंग में

भारत की सब से लोकप्रिय दर्द-निवारक दवा

GM-1-82-HIN
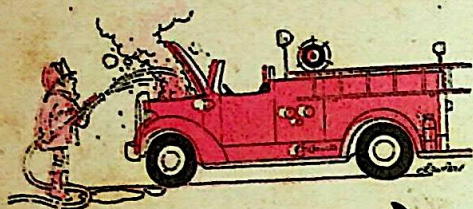
मेरा काम तेरा काम

गाइड ने बस में भरे हम पर्यटकों को बताया, "हमारे बाईं ओर की गगनचुंबी इमारत केंद्रीय सचिवालय है."

"इस में कितने लोग काम करते होंगे?" महिला पर्यटक ने हैरानी से पूछा.

"ओह, यही समझ लीजिए कि पच्चास में से एक!" गाइड ने दांत निपोर कर उत्तर दिया.

—'सिंग पाओ', हांग कांग

टेनेसी के देहाती क्षेत्र के पादरी की मृत्यु हो गई. शोक सभा में आए लोगों ने कहा कि नए पादरी के आने तक मेरे चचा ही उन की जगह काम देखें. पहले रविवार की प्रार्थना सभा में चचाजान ज़रा हिचकिचा रहे थे. दरअसल उन्हें लग रहा था कि वह स्वर्गीय पादरी का दायित्व ठीक ठीक नहीं निभा सकेंगे, बड़ी भद्द उड़ेगी.

अंततः प्रार्थना से पहले उन्हों ने पूछा, "आप में से कितने लोगों के पास पेंसिल है?" लगभग सभी ने हाथ उठा दिए.

"और कागज़?" उन का दूसरा प्रश्न था. जवाब में चिट्ठी पत्री आदि के रूप में जो कुछ पास था लोगों ने लहरा दिया.

"बहुत बढ़िया," वह बोले, "हम एक प्रतियोगिता करते हैं. मैं चाहता हूं कि बोलते वक्त आप सब बहुत ध्यान से मुझे सुनें और कागज़ पर लिख लें कि मैंने कहां कहां गलती की, लिहाज़ नहीं. आप की सूची जितनी लंबी होगी, उतना अच्छा. प्रार्थना के बाद सब अपनी अपनी जमा करा दें."

यह कहने के बाद उन्हों ने सभा में बैठे पर गहरी नज़र डाली, प्रभाव पैदा करने के ज़रा थमे, और बोले, "और जिस की सूची से लंबी होगी, उसे सर्वोच्च पुरस्कार —अगले रविवार से मेरी जगह वही होगा."

—जो

कुछ साल पहले छुट्टियों के बाद स्कूल तो मैं राउंड पर निकला. एक तरफ देखा पांचवीं कक्षा का एक लड़का हाथ में टाकी' लिए है. प्रधानाचार्य के रूप में मैं जा कि बच्चे इस तरह की बहुत सी चीज़ें लिए घूम रहे हैं, सो मैं ने उसे कुछ नहीं तभी उसे एक कोने में 'वाकी टाकी' पर साते सुना, "ओय, एक तरफ हो ले. बुड्ढा पर है. उधर तेरी तरफ ही चला आ रहा

मेरा सहयोगी वकील ओहायो की मामलों की अदालत में आपसी तलाक के एक मामले की पैरवी कर रहा पत्नी मिस्सेतान थे, लेकिन उन के घर में

ज़रूर था. दोनों को ही बहुत प्यारा था वह कुत्ता. ख़ैर, मेरे साथी ने कहा कि दोनों पक्ष इस बात के लिए भी राज़ी हैं कि कुत्ते की बीमारी का ख़र्च दोनों आधा आधा बांट कर उठाएंगे. दोनों में सहमति है कि कुत्ता पत्नी के पास रहेगा, लेकिन पति को उस से मिलने की इजाज़त होगी.

यह सुन कर माननीय न्यायाधीश ने ज़रा अचरज से पति की ओर देखा. और पूछ बैठे, "क्यों साहब, यह सही है?"

"हां, हुज़ूर," पति का उत्तर था.

अब जज साहब मुसकरा कर बोले, "यह तो ठीक है, लेकिन हम आप को यह बता देना चाहेंगे कि आप के मिलने जाने पर कुत्ता मिलने से इनकार कर दे, तो अदालत आप की कोई मदद नहीं कर सकेगी." —स्टी से

निवेदन करने पर टेलीफ़ोन डायरेक्टरी घर पहुंचा देने का हमारे कसबे में नियम नहीं, पर रिवाज़ है. महकमे की एक महिला कर्मचारी उस बंगले में पहुंची जिस के तीन फ़ुट के पोर्च में छः फ़ुट का कुत्ता बैठा हुआ था. पोर्च में ही उस ने डायरेक्टरी रख दी और दरवाज़ा खटखटा कर लौट पड़ी. उस के मुड़ते ही कुछ चबाने की आवाज़ हुई. उस ने घूम कर देखा कि कुत्ता डायरेक्टरी खा रहा है. उस ने एक और डायरेक्टरी रख दी.

तभी एक कार रुकी, और एक आदमी उतरा. "आप नई डायरेक्टरी देने आई हैं?" उस ने पूछा.

"जी हां," महिला ने उत्तर दिया. "मैं ने दो रख दी हैं. एक आप के लिए, दूसरी आप के कुत्ते के लिए."

"बहुत बहुत धन्यवाद." उस आदमी ने कहा. "पिछले साल तो टेलीफ़ोन वालों ने सिर्फ़ कुत्ते के लिए ही भिजवाई थी." —एल ओ

अगस्त १९८० में रोनाल्ड रीगन के लास एंजलस वाले मकान के सामने, सड़क पार खड़े एक पेड़ को एसोसिएटेड प्रेस, संवाद समिति ने किराए पर लिया. क्यों? पिछले राष्ट्रपति चुनाव अभियान के दौरान वहां फ़ोन लगाने के लिए. सेकरिमेंटो में संवाद समिति के ब्यूरो प्रमुख डग विलिस के अनुसार उन्हों ने सौ दिन के लिए पचास सेंट प्रति दिन का किराया चुका कर उस पेड़ के सर्वाधिकार सुरक्षित कर लिए थे. इस संबंध में एक अनुबंध तक पर हस्ताक्षर किए गए.

एपी के उस पेड़ वाले फ़ोन का नंबर किसी डायरेक्टरी में अंकित नहीं था. उसे एक तालाबंद डब्बे में रखा गया था. और विलिस फ़ोन उठाते ही कहते थे, "एपी ट्री."

—स्टीव हारवे, लास एंजलस टाइम्स

मैं जिस रेस्तोरां में काम करती हूं, वहां की एक ग्राहक ने खाने में फ़्रैंच टोस्ट और मुर्ग़ा आदि मंगाया. मांग सीने वाले हिस्से की थी. मुर्ग़ आने पर उसे लगा कि जित्ता पैसा दिया उत्ते का माल नहीं.

बस, वह दौड़ी दौड़ी काउंटर पर गई. वहां बैठी मेरी सहेली ने प्लेट में रखे ज़रा ज़रा से सीने देखे, तो बोली, "अब मैं क्या कहूं. देखिए, मुर्ग़ भी महिलाओं जैसे ही होते हैं—किसी के होता है और किसी के नहीं. दरअसल आप को ३८ की जगह ३४ मिल गया और कोई बात नहीं."

इस के बाद वह महिला सीधी अपनी मेज़ पर गई, खाना खाया और चल दी. —जूडी ब्रुक्स

लुईज़ियाना राज्य विधानसभा में 'जान जान्स जान बिल' नाम से मशहूर विधेयक पारित कर दिया गया.

इस का क्या मतलब? मतलब तीनों जानों में निहित है, जिस में से तीसरे का अर्थ शौचालय जैसी जन सुविधाओं से है और पहले दो जान विधानसभा के सदस्य जान जान तृतीय के नाम से लिए गए हैं. दूसरे शब्दों में, जान जान का जन सुविधा संबंधी यह विधेयक बाज़ारों में ख़रीदारों के लिए शौचालय आदि उपलब्ध किए जाने की व्यवस्था लिए है. —एपी
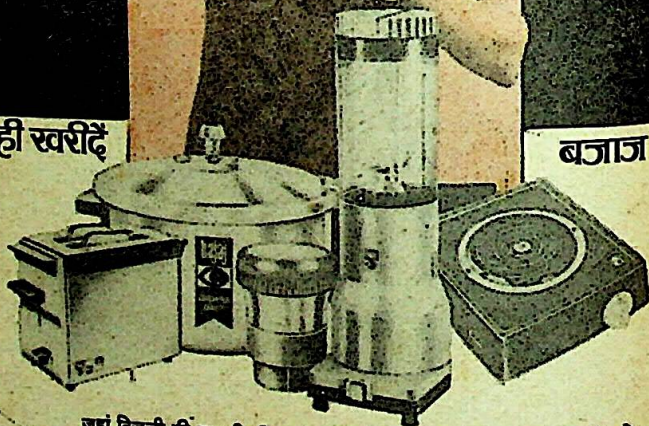
वर्ष २ : अंक २२
नवंबर १९८२

दुनिया के शरणार्थियों का आशादीप आई सी एम

जातीय, धार्मिक और राजनीतिक उत्पीड़न के शिकार लोगों की सहायता करता है, लेकिन ढिंढोरा नहीं पीटता

रूडोल्फ कैलमीन्येस्की

दिसंबर १९८१ की कठोर सैनिक कार्रवाइयों से पहले के अशुभ महीनों में लगभग १,००,००० पोलैंड वासी पश्चिम की ओर भाग निकले. उन में से अधिकांश अब भी यूरोप में अपने परिचितों के पास अथवा आस्ट्रिया और जरमनी के शरणार्थी शिविरों में रह रहे हैं. आज यूरोप अपनी कमज़ोर अर्थ व्यवस्था और बढ़ती बेरोज़गारी के कारण सीमित सहायता ही कर पाने की स्थिति में है. इन पोलैंड वासियों के लिए अमरीका, कनाडा, आस्ट्रेलिया या संभवतः दक्षिण अफ्रीका जैसे देशों में शरण लेना ही एकमात्र उपाय है. एक ही संस्था उन्हें इन देशों में पहुंचा सकती है और वह है आई सी एम.

आई सी एम यानी इंटरगवर्नमेंटल कमेटी फ़ार माइगरेशन विश्व के अन्य अंतरराष्ट्रीय संगठनों की तुलना में कम जाना माना किंतु अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रभावशाली ढंग से चुपचाप काम करने वाला संगठन है. आई सी एम का मुख्य कार्य है दुःखी विस्थापितों का पुनर्वास. एक कार्यकर्ता के अनुसार दुःखियों का उद्धार करना ही आई सी एम का काम है.

१९५१ में जब संयुक्त राष्ट्र ने युद्धोपरांत शरणार्थियों के पुनर्वास का कार्य समाप्त कर दिया तो आई सी एम ने ही पश्चिमी शिविरों में बच रहे ३,००,००० विस्थापितों के पुनर्वास का कार्य किया था. आई सी एम ने ही १९५६ में सोवियत टैंकों के डर से भागे २,००,०००

हंगरी वासियों; १९६८ में चेकोस्लोवाकिया के २०,००० लोगों; पिछले दशक में स्वेच्छा से निर्वासन का मार्ग चुनने वाले २,५०;००० सोवियत यहूदियों तथा १९७२ में ईदी अमीन द्वारा निष्कासित युगांडा के २,००० एशियाइयों को बसाया था. १९५१ से अब तक आई सी एम ३० लाख से अधिक शरणार्थियों व प्रवासियों का 'उद्धार' कर चुका है.

संयुक्त राष्ट्र की अन्य संस्थाओं की तरह इस का प्रधान कार्यालय भी जेनेवा में ही है. इस के १३१ कर्मचारी प्रधान कार्यालय में और १८६ विश्व के अन्य देशों में काम करते हैं. स्विस शहर में यह सब से छोटा अंतःसरकारी संगठन है. यह अच्छा ही है कि यह संयुक्त राष्ट्र से किसी भी रूप में जुड़ा नहीं है. ३० देश इस संगठन के सदस्य और १६ देश संयुक्त सदस्य हैं. इस संगठन की सदस्यता प्राप्त करने की एक ही शर्त है और वह यह कि सदस्य देश लोगों के आवागमन पर कोई प्रतिबंध न लगाएं. परिणाम स्वरूप अमरीका, पश्चिमी यूरोप और मध्य तथा दक्षिण अमरीका के अधिकांश देश ही इस के सदस्य हैं और वही इस के १३ करोड़ ३० लाख के वर्तमान वार्षिक व्यय का बोझ उठाते हैं.

मददगार कौन? जेनेवा स्थित ब्रिटिश पत्रकार कारेल नोर्सकी का कहना है: "संयुक्त राष्ट्र के १५७ सदस्यों में से एक तिहाई से भी कम देशों में ही सच्चा लोकतंत्र है. ऐसी स्थिति में सर्वाधिकारवादियों के चंगुल से बच निकलने वालों की कौन मदद करेगा? आई सी एम ही ऐसा कर सकता है क्योंकि यह उन कुछेक संगठनों जैसा है जिस में स्वतंत्र विश्व के राष्ट्रों का प्रभाव बना हुआ है."

आई सी एम को प्रायः मानवतावाद का दमकल माना जाता है, किंतु रेडक्रास की अंतरराष्ट्रीय समिति के आलें मोदू का कह[ना] कि वे मानवतावाद का ढिंढोरा नहीं [पीटते] फिरते. आई सी एम अपना मुंह बंद रख[ता] और मूल्यांकन की ज़िम्मेदारी दूसरों के [ऊपर] छोड़ देता है. "यही कारण है," जेनेवा [स्थित] आई सी एम के एक उच्च अधिकारी का क[हना] है, "हम काम करवा लेते हैं जबकि [दूसरे] नहीं करवा पाते." १९७३ में जब पीनोचे[ट ने] चिली की सत्ता संभाली तो आई सी एम [के] कारण ही भूतपूर्व राष्ट्रपति सलवाडोर आयें[दे के] ३०,००० समर्थक चिली से बाहर [निकल] सके—और आई सी एम के कारण ही [वे] लोग जो चिली छोड़ गए थे, अपने देश [लौट] सके.

आई सी एम कैसे अपने काम करवा[ता] है, यह समझने के लिए मैं ने आई सी ए[म के] सान फ्रांसिस्को स्थित कार्यालय में [रोबर्ट] एंडरसन के साथ एक दिन बिताया, जो [दक्षिण] पूर्व एशियाई कारखाई के सर्वेसर्वा हैं. [यह] कारखाई आई सी एम की अब तक की [सब से] बड़ी कारखाई है. इस कारखाई के [अंतर्गत] ७,००,००० हिंदचीनी शरणार्थियों को [बसाया] गया—आधे से अधिक शरणार्थियों को [सान] फ्रांसिस्को के रास्ते जगह जगह भेजा ज[ा चुका] है और २,५०,००० अन्य शरणार्थि[यों को] अभी भेजा जाना बाक़ी है. १९७५ में [वियतनाम] के पतन के साथ ही एशिया के शरणार्थि[यों की] समस्या शुरू हुई. पहली बार तभी बड़ी [संख्या] में एशियाई लोग पश्चिम में दिखाई [दिए.] १९७९ में जब अमरीका और अन्य [पश्चिमी] राष्ट्रों ने अधिक से अधिक संख्या में [इन] शरणार्थियों को बसाने की व्यवस्था की [तो] समस्या ने विकराल रूप धारण कर [लिया.]

जुलाई १९७९ में एंडरसन के कार्या[लय में] इतने कम लोग काम करते थे कि जब [...]

बाद एक जंबो जेट विमान से सैकड़ों थके हारे शरणार्थी सान फ्रांसिस्को पहुंचे तो उसने स्थिति से निबटने के लिए अपने आप को असमर्थ पाया. एंडरसन को याद है: ''कभी कभी तो शरणार्थियों को घंटों सान फ्रांसिस्को के हवाई अड्डे पर अटके रहना पड़ता—बिना किसी सुविधा के और फ़िर से कहीं जाने का इंतज़ार करना पड़ता. एक बार तो हज़ार लोग फ़र्श पर ही सो रहे थे.''

बिल्डिंग के रखवाले ने हड़ताल करने की धमकी दे दी थी, बीमारी की अफ़वाहें गरम थीं और स्थानीय अखबारों का रवैया प्रतिकूल था. ऐसे में एंडरसन ने विदेश विभाग के अधिकारियों से कहा कि अब मैं सारी समस्या खुद ही हल करूंगा. उस ने गर्भवती महिलाओं और बीमार लोगों को हवाई अड्डे के पास ही एक मोटल में टिका दिया और संकटकालीन स्थिति से निबटने के लिए स्वयंसेवकों को बुलाया.

समय दान. जनवरी १९८० में जा कर यह अव्यवस्था समाप्त हुई. सान फ्रांसिस्को के उत्तर में ४० किलोमीटर की दूरी पर 'हेमिल्टन एयर फ़ोर्स बेस' नामक वायु सेना का एक बहुत बड़ा ख़ाली हवाई अड्डा था. एंडरसन को वहां शरणार्थियों को ठहराने के लिए तीन अच्छी बैरकें मिल गईं. उस ने एक सैनिक शिविर से एक हज़ार खाटें और बिस्तर मांग लिए. स्वयंसेवकों ने बच्चों के लिए खेलने कूदने का साज़ सामान ढूंढ़ ढांढ़ लिया. १० फ़रवरी १९८० तक एंडरसन का 'हेमिल्टन संक्रमणकालीन शिविर' शरणार्थियों के लिए तैयार हो गया और तब से वह अब तक भरा ही हुआ है.

एंडरसन के साथ मैं ने उस दिन सुबह की उड़ान से आने वाले शरणार्थियों की पहली बस को आते और उस का निरीक्षण किए जाते देखा. स्थानीय धर्मार्थ व चर्च संस्थाओं द्वारा दान में दिए गए पर्याप्त भंडार में से हर व्यक्ति को नवंबर की ठंड से बचने के लिए एक एक हुड वाली जाकेट और एक एक जोड़ा गरम कपड़ा दिया गया.

आई सी एम के लिए समय दान का भी उतना ही महत्व है जितना कि दान में मिले कपड़ों का. १३ करोड़ ३० लाख डालर के कुल बजट में से केवल १ करोड़ १० लाख—यानी आठ प्रति शत ही इस के कर्मचारियों पर ख़र्च होता है. स्वयंसेवकों के आंशिक समय दान के कारण ही आई सी एम इतने कम स्टाफ़ के बावजूद इतना अधिक काम कर लेता है. इस के अस्थायी कर्मचारियों की संख्या ४४४ है जो स्थायी कर्मचारियों से कहीं अधिक है. अस्थायी कर्मचारियों में अनुबंधित डाक्टरों से ले कर छात्र और अवकाश प्राप्त लोग हैं जो निःशुल्क सेवा करते हैं. एंडरसन के इस संक्रमणकालीन शिविर में केन नामक कंपूचियाई दंपती स्वयंसेवकों की उदारता से इतने प्रभावित हुए कि उन्हों ने अमरीका में पैदा होने वाले पहले पुत्र का नाम ही हेमिल्टन रख दिया. आई सी एम की इस से बढ़ कर और क्या सराहना हो सकती थी!

एंडरसन पहले व्यक्ति हैं जो यह मानते हैं कि सामूहिक प्रयास के बिना कुछ भी किया जाना संभव नहीं. ''हम यह काम निष्ठावान लोगों की मदद से कर पाए. आई सी एम का कार्य एक ऐसी चुनौती है जिसे आप स्वीकारने के आदी हो जाते हैं.''

आई सी एम में पूर्णकालिक अधिकारियों की अपेक्षा एंडरसनवादियों की संख्या बढ़ती ही जा रही है. जेनेवा के प्रधान कार्यालय में कार्य

संचालन तथा परिवहन के मुख्य व्यक्ति हैं विद्वान से लगने वाले ६२ वर्षीय डेनमार्क निवासी सेरेन क्रिस्टनसन. अपने २५ वर्ष के कार्य काल में वे कई बार वीरोचित भूमिकाएं निभा चुके हैं. १९७० में वे बीआफ़्रा बच्चों को आइवरी कोस्ट और गेबों से, जहां उन्हें गृहयुद्ध के दौरान भेज दिया गया था, विमानों में भर भर कर नाइजीरिया ले गए. दो साल बाद ही वे युगांडा के ५,००० आतंकित एशियाइयों को कंपाला से निकाल कर लाए. १९७६ में जब बेरूत में घमासान लड़ाई चल रही थी तो उन्हों ने परिवारों को सुरक्षित निकाल लाने के लिए हर हरबा अपनाया —संतरियों को शराब की घूस दी, और एक बार तो घायलों और मृतकों को उठाने वाले ट्रक में मृतक बने पड़े रहे.

पानी में कूद जाओ. अमरीकी एयर लाइन के एक स्टीवर्ड को लास एंजेलस में लगा, "आई सी एम का सिद्धांत है समय के अनुसार कार्य करना." एयर लाइन का एक नियम है कि विमान यात्रा करते समय कोई भी यात्री नंगे पैर न हो. इस नियम का अक्षरशः पालन करते हुए स्टीवर्ड ने एक नंगे पांव वियतनामी शरणार्थी बच्चे को जहाज़ पर चढ़ने से रोक दिया. मौक़े पर मौजूद आई सी एम की एक प्रतिनिधि ने झटपट अपने लंबे मोज़े उतार कर उस बच्चे को पहना दिए और बिना झिझक उसे ऊपर चढ़ा दिया. स्टीवर्ड कुछ न कर सका.

इसी तरह आई सी एम का एक कुशाग्र बुद्धि कर्मचारी है ६२ वर्षीय वियनावासी जो इवोराक. उस ने जिस ढंग से जटिल समस्याओं को बार बार सुलझाया है, उस ने दंत कथा का रूप ले लिया है. इवोराक की कार्य पद्धति आई सी एम का आदर्श वाक्य भी बन सकती है: "पानी में कूद जाओ और फिर हाथ पैर मारो."

इवोराक के अधिकारी हैं लक्समबर्ग वासी हेनरी वान वेरवेक जो आस्ट्रेलिया में आई सी एम कार्यालय के संचालक हैं. मैं उन के साथ वियना से २५ किलोमीटर दक्षिण स्थित ट्राइसंकिरचन के शरणार्थी शिविर में गया जहां लगभग ३,००० पोलैंड वासी बसाए जाने की प्रतीक्षा कर रहे थे. इन के अलावा क़रीब २३,००० युवा परिवार देश भर के विभिन्न शिविरों, होटलों और छात्रावासों में ठहरे हुए थे जब कि अन्य २०,००० अपना ख़र्च ख़ुद उठा रहे थे. वान वेरवेक का कहना है: "आस्ट्रिया शरण देने वाला पहला देश ज़रूर है, लेकिन वहां सारे लोगों को खपाया नहीं जा सकता. हमीं उन्हें कहीं और बसाने के लिए ले जाएंगे."

आस्ट्रिया की स्थिति उन कारणों का स्पष्ट चित्रण करती है जिन के रहते आई सी एम संयुक्त राष्ट्र का हिस्सा न बन सका है और न ही कभी बन सकेगा. संयुक्त राष्ट्र ने १९५१ के अधिवेशन में शरणार्थी की परिभाषा की थी: "शरणार्थी वह व्यक्ति है जो अपने देश से भाग आया हो और जिसे राजनीतिक उत्पीड़न के कारण अपनी सरकार का संरक्षण प्राप्त न हो." पिछले दिसंबर में मार्शल ला लागू होने से पहले ही जो पोलैंड वासी पश्चिम यूरोप भाग आए थे, उन पर यह परिभाषा लागू नहीं होती क्योंकि अधिकांश मामलों में वास्तविक उत्पीड़न सिद्ध ही नहीं होता. संयुक्त राष्ट्र की दृष्टि में तो वे पश्चिम में आए पोलैंड के यात्री मात्र थे.

इसी प्रकार संयुक्त राष्ट्र की परिभाषा के अनुसार, अपने ही देश के लोग भी शरणार्थी नहीं माने जाते. यही कारण है कि संयुक्त राष्ट्र

ने उन पीनोचेट विरोधी ३०,००० चिली वासियों को शरणार्थी नहीं माना जिन्हें आई सी एम ने १९७३ में उबार कर चिली से बाहर निकाला था. यही बात युगांडा के अभागे एशियाइयों के साथ हुई थी. यूं तो संयुक्त राष्ट्र का शरणार्थी उच्च आयोग प्रशंसनीय कार्य करता है किंतु अनधिकृत शरणार्थियों के भाग्य का फ़ैसला केवल आई सी एम ही कर सकता है. ट्राइसकिरचन शिविर के निदेशक कार्ल राद्येक का कहना है: "बरसों का अनुभव हमें बताता है कि अभागे लोगों को भले ही कोई सहारा न दे, आई सी एम हमेशा सहारा देता है."

विशेषज्ञों की भरती. लेकिन मानवतावाद ही आई सी एम का एकमात्र पक्ष नहीं है अनेक वर्षों में आई सी एम ने अपनी गतिविधियां तीन विशिष्ट कार्यक्रमों के साथ विकास कार्यक्रम में विभक्त कर दी हैं. सब से पुराना कार्यक्रम है चयनात्मक प्रवास. १९६४ में दक्षिण अमरीकी सरकारों की प्रार्थना पर आई सी एम ने यूरोप और अमरीका में ऐसे विशेषज्ञों की भरती शुरू कर दी जिन की प्राकृतिक स्रोतों और नए उद्योगों तथा व्यापारों के विकास के लिए आवश्यकता थी. तब से आई सी एम मध्य व दक्षिण अमरीका में लगभग ३०,००० टेक्नीशियनों, किसानों, स्थपतियों और अन्य विशेषज्ञों को बसा चुका है.

१९७४ में आई सी एम ने विशेषज्ञ संयोजन तथा प्रतिभाशाली व्यक्तियों की वापसी के द्विसैद्धांतिक कार्यक्रम का शुभारंभ किया. पहला कार्यक्रम विकासशील राष्ट्रों को एक प्रकार की टेक्निकल सेवा उपलब्ध कराता है. उदाहरण के लिए, इक्वेडर के अनुरोध पर बोन स्थित आई सी एम मिशन ने एक जरमन मेकैनिकल इंजीनियर की सेवाएं प्राप्त कीं. कीटो विश्वविद्यालय में सुपरवाइज़र के तौर पर उस ने प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया और स्नातक इंजीनियरों को मशीनी औज़ारों के डिज़ायन बनाने, उन का निर्माण करने और उन के रख रखाव का प्रशिक्षण दिया. प्रतिभाशाली व्यक्तियों की वापसी के कार्यक्रम का उद्देश्य उन लोगों को, जिन्हों ने विदेशों में प्रशिक्षण प्राप्त किया है, अपने देश या उसी क्षेत्र के किसी अन्य देश में वापस लाना है जहां उन की प्रतिभा की सख़्त ज़रूरत है. आई सी एम उन्हें वापस आने के लिए सहमत करता है और उन की भरसक सहायता करता है. १९७४ से लगभग २,००० डाक्टर, इंजीनियर और अर्थशास्त्रियों आदि को आई सी एम के शुभ प्रयासों से स्वदेश भेजा जा चुका है.

भविष्य में निश्चय ही आई सी एस विकासशील राष्ट्रों के जीवन में और महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा. लेकिन मानवतावाद का बुनियादी उद्देश्य जब तक शरणार्थी हैं, तब तक बना रहेगा. आज दुनिया में एक करोड़ से भी अधिक शरणार्थी हैं. अमरीका के सीनेटर एडवर्ड कैनेडी भविष्य पर दृष्टि डालते हैं तो कहते हैं: "इस शताब्दी और आगे आने वाली शताब्दी में प्रवास की समस्या गंभीर अंतरराष्ट्रीय मुद्दा बनी रहेगी. अगर इस से जूझने के लिए अभी तक आई सी एम जैसा संगठन न होता तो हमें वैसा संगठन बनाना पड़ता."

समय बरबाद करना समुद्र में शराब उलीचने जैसा ही है. —जरमन लोकोक्ति

क्या चंद्रमा आप के मनोभावों का नियंत्रण करता है?
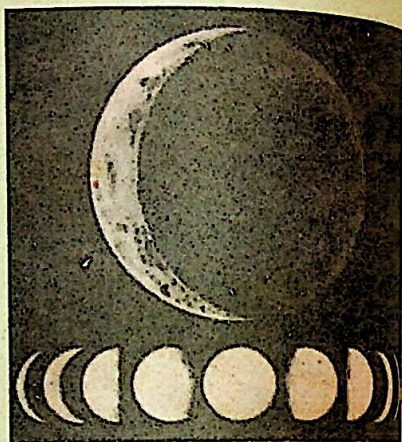
या ब्रह्मां की किसी शक्ति की अपेक्षा 'जीन' हमारी अवस्थाओं को प्रभावित करता है? प्रस्तुत लेख में है दोनों ही पक्षों का विवेचन

एडवर्ड ज़ीगलर

आर्नल्ड एल लीबर, एम डी, की पुस्तक 'द लूनर इफ़ेक्ट', प्रस्तोता जेरोम वी ऐजल; रोनाल्ड आर फ़ीव, एम डी, की पुस्तक 'मूडस्विंग' और लाइएल वाट्सन की पुस्तक 'लाइफ्टाइड' पर आधारित

प्रेमी, मछुए, अध्यापक और माता पिता—सब जानते हैं कि चंद्रमा में कोई शक्ति है. जब पूर्णमासी आती है तो कुछ हो जाता है. पिछले दिनों एक पुस्तक के लेखक ने तो यहां तक कहा था कि पृथ्वी के सब से अधिक पास वाला ग्रह चंद्रमा हमारी मनोदशा को बहुत ज़्यादा प्रभावित करता है.

किंतु मानव मन के अन्य अध्येताओं का विचार है कि हमारी मानसिक उथल पुथल का कारण ग्रह नक्षत्र नहीं अपितु हमारा अपना शरीर है. उन के अनुसार शारीरिक या मानसिक क्रियाएं हमारे मनोभावों के प्रवाह को प्रभावित करती हैं. जैसे अधिकांश रहस्यों के साथ तरह तरह की बातें जुड़ जाती हैं, उसी प्रकार इस मामले में भी अनेक बातें कही जा रही हैं. एक अन्य पुस्तक में कहा गया है कि ह... मानसिक स्थितियों के लिए हमारी वंश पर... मुख्य रूप से ज़िम्मेदार है.

इन दोनों विचारों में से कोई ठीक है; यद्यपि कोई निश्चित उत्तर नहीं दिया जा सक... किंतु इन दोनों ही अवधारणाओं के बारे... जानना काफी दिलचस्प साबित हो सकता है.

१. चंद्रमा हमारे मनोभावों का निय... करता है.

कई वर्ष पहले की बात है अमे... के नेशनल ओशन सर्वे (राष्ट्रीय महास... सर्वेक्षण) वैज्ञानिक फ़र्गस जे ... ने कहा था कि ८ जनवरी और फ़रवरी १९७४ को समुद्र में दो बहुत ... ज्वार आएंगे. वुड की इस भविष्यवाणी ...

आधार था कि इन दोनों ही अवसरों पर पृथ्वी, सूर्य और चंद्रमा लगभग सीधी रेखा में होंगे और ग्रहयुति की इस स्थिति में ८ जनवरी को चंद्रमा पृथ्वी के बहुत पास होगा. ग्रहों के ऐसे ही असाधारण योग के कारण महासागरों में सामान्य से बहुत ऊंची लहरें उठती हैं.

मियामी के मनोरोग चिकित्सक आर्नल्ड एल लीबर ने वुड की इस भविष्यवाणी को बड़े ध्यान से पढ़ा. मनुष्य के व्यवहार पर चंद्र-कलाओं का क्या प्रभाव पड़ता है, इस का गहन अध्ययन कर रहे थे डा. लीबर. वे इस निष्कर्ष पर पहुंच चुके थे कि चंद्रमा की कलाओं के घटने बढ़ने का मनुष्य की आक्रामक प्रवृत्ति से गहरा संबंध है. ख़ास तौर पर शराबियों, नशीली दवा खाने वालों, दुर्घटना करने वालों, अपराधियों और मानसिक रूप से अस्थिर व्यक्तियों के व्यवहार पर चंद्रमा की कलाओं के घटने बढ़ने का ज़्यादा प्रभाव पड़ता है. डा. लीबर का कहना है: "पृथ्वी की सतह की तरह मनुष्य के शरीर में भी लगभग ८० प्रति शत जलीय और २० प्रति शत ठोस पदार्थ हैं. मेरा विश्वास है कि जिस प्रकार पृथ्वी के सागरों पर चंद्रमा की गुरुत्वाकर्षण शक्ति का प्रभाव पड़ता है, उसी प्रकार आप के और मेरे शरीर के जलीय तत्व पर भी चंद्रमा की इस शक्ति का प्रभाव पड़ता है. मुझे विश्वास है कि जीवन के ज्वारभाटे चंद्रमा से ही नियंत्रित हैं. अमावस और पूर्णिमा के दिनों में ये ज्वार सब से अधिक ऊंचे होते हैं और उस समय हमारे व्यवहार पर चंद्रमा का ज़बरदस्त असर होता है."

सितंबर १९७० में जब ग्रहों का इसी प्रकार का योग बना था तो डा. लीबर ने देखा था कि मियामी में हत्याकांड की संख्या बहुत बढ़ गई है. अपने इस अध्ययन के स्पष्ट परिणामों को ध्यान में रखते हुए उन्हों ने मियामी के अधिकारियों को सावधान करने का निश्चय किया, क्योंकि डा. लीबर को आशंका थी कि अत्यधिक ऊंची लहरों के कारण मनुष्य हिंसात्मक काण्ड करेंगे.

उन्हों ने अपनी पुस्तक 'द लूनर इफ़ेक्ट' में लिखा है, "मैं ने मियामी के पुलिस विभाग, समाचार पत्रों और मियामी के जैकसन स्मारक चिकित्सालय के मनोरोग आपत्कालीन कक्ष को सावधान कर दिया कि आने वाली ग्रहयुति के दौरान मनुष्यों का व्यवहार सामान्यतः असाधारण हो जाएगा."

उस दिन क्या हुआ? लीबर लिखते हैं, "आफ़त ही आ गई. इस बार मियामी में नए वर्ष के पहले तीन सप्ताहों में जितनी हत्याएं हुईं, वे पिछले वर्ष जनवरी १९७३ में हुई कुल हत्याओं से दोगुनी थीं." इन हत्याओं के अलावा ऐसे अनेक अपराध भी हुए जिन का कोई औचित्य या उद्देश्य नहीं था.

इन घटनाओं और इसी प्रकार के अन्य मिलते जुलते अनुभवों के आधार पर लीबर ने यह सिद्धांत प्रतिपादित किया है कि चंद्रमा आदि का कुछ मनुष्यों पर प्रत्यक्ष और अधिकांश मनुष्यों पर प्रच्छन्न प्रभाव पड़ता है. उन्हों ने अपने सिद्धांत की पुष्टि में पर्याप्त प्रमाण जुटाए हैं.

२. जीन (आनुवंशिक रूप) हमारे मनोभावों को नियंत्रित करते हैं.

न्यू यार्क के कोलंबिया प्रेसबिटेरियन मेडिकल सेंटर के मनोरोग चिकित्सक प्रोफ़ेसर रोनल्ड आर फ़ीव ने अपनी पुस्तक 'मूडस्विंग' में यह सिद्धांत प्रतिपादित किया है कि अन्य किसी भी बाहरी शक्ति की अपेक्षा 'जीन' हमारे मनोभावों को अधिक प्रभावित करते हैं.

डा. फ़ीव ने मानसिक अवसाद के ऐसे रोगियों का विशेष रूप से अध्ययन किया है जो पल में तोला पल में माशा हो जाते हैं.

६,००० से भी अधिक मानसिक रोगियों के केसों का अध्ययन करने के बाद डा. फ़ीव इस परिणाम पर पहुंचे कि हमारी अधिकांश मनोदशाओं का कारण हमारे शरीर की बदली हुई रासायनिक प्रक्रिया होती है. हमारे 'जीन' और जीवन के प्रमुख संघर्ष शरीर की इस रासायनिक प्रक्रिया को बदलते रहते हैं. वे इस बात से इनकार नहीं करते कि शरीर पर चंद्रमा का प्रभाव पड़ता है वे उन्माद से पीड़ित रोगियों के व्यापक अध्ययन से प्राप्त इस तथ्य को स्वीकार करते हैं कि मानसिक रोगियों में अवसाद का चक्र प्रायः ३० दिनों का होता है.

किंतु डा. लीबर मनुष्य की मनोवृत्तियों पर चंद्रमा के प्रभाव को ही विशेष महत्वपूर्ण मानते हैं. इस विचार की पुष्टि में वे निम्नांकित घटनाओं और तथ्यों को प्रस्तुत करते हैं:

—फ़ीनिक्स के दमकल विभाग ने पाया है कि पूर्णिमा की रात को आग बुझाने के लिए २५ से ३० टेलीफ़ोन अधिक आते हैं.

—अस्पतालों के मनोरोग वार्ड के कुछ कर्मचारियों ने बताया है कि पूर्णमासी के दौरान मनोरोगियों का आचरण अपेक्षाकृत अधिक असंबद्ध और अव्यवस्थित हो जाता है.

—स्त्रियों के मासिक धर्म का चक्र चांद्र मास के २९½ दिनों जितना ही होता है. मनुष्य की संतान को गर्भ में बढ़ने के लिए भी लगभग नौ चांद्र मास का समय ज़रूरी होता है.

तो क्या बाहरी प्रभावों से हमारी आंतरिक दशा संचालित होती है? डा. फ़ीव 'मूडस्विंग' में लिखते हैं कि यह अनिवार्य नहीं है. वे अपने सिद्धांत के समर्थन में तीन महापुरुषों के उदाहरण देते हैं. इन में से पहले अब्राहम लिंकन ... अपने गहन मानसिक अवसादों के लिए ... थे. डा. फ़ीव का कहना है कि "समय ... पड़ने वाले मानसिक अवसाद के ये दौरे ... लिंकन के स्वभाव के अंग थे, इस लिए ... कि इन दौरों का कारण किसी न किसी प्र... रासायनिक कमी थी."

अमरीका के एक और राष्ट्रपति ... रूज़वेल्ट तो मानसिक उल्लास की प्रतिमा ... लिंकन प्रायः खिन्न और उदास रहते थे ... रूज़वेल्ट सदा प्रसन्न.

तीसरे ऐतिहासिक महापुरुष में ... मानसिक अवसाद और जीवंत उल्लास ... गए थे. इन्हीं विशेषताओं के कारण वे ... काम कर पाते थे. ये थे विंस्टन चर्चिल ...

अस्थिर स्वभाव के कारण रूज़वेल्ट ... चर्चिल भी सतर्क और संतुलित नहीं ... थे. इस से उन के सहयोगी प्रायः चिंतित ... डा. फ़ीव का कहना है, "चर्चिल को ... स्वभाव निश्चय ही विरसे में मिला था." ... परिणाम पर पहुंचे कि 'चर्चिल की वंश... 'जीन' का प्राधान्य था और इसी कारण ... मिज़ाज परिवेश से कम, 'जीन' से ... प्रभावित था."

डा. लीबर ने 'द लूनर इफ़ेक्ट' में ... सिद्धांत की स्थापना की है, उस के अनु... नक्षत्रों का प्रभाव हमारे शरीर, 'हार्मो... जटिल संतुलनों, द्रव पदार्थों और स्नायु ... शक्ति देने वाले विद्युत कणों पर पड़ता ... लीबर का कहना है, "त्वचा ऐसी अर्ध... झिल्ली है जो दोनों दिशाओं में विद्युत ... शक्तियों का आवागमन होने देती है ... क्रियाशील संतुलन बनाए रखती है." ... प्रत्येक तरंग शक्ति की हलकी सी विद्यु... उत्पन्न करती है; छोटे से सौर मंडल ...

प्रत्येक सैल (कोशिका) का अपना हलका सा विद्युत चुंबकीय क्षेत्र होता है. डा. लीबर का कहना है कि ग्रह नक्षत्रों से बड़े व्यापक परिमाण में निकलने वाली विद्युत चुंबकीय शक्तियां शरीर की सूक्ष्म कोशिकाओं के संतुलन को प्रभावित कर सकती हैं.

डा. लीबर लिखते हैं, "जब कभी १९७४ जैसी—जिस में भंयकर ज्वार उठे थे— ग्रहयुति होती है, तब मनुष्य के शरीर पर गुरुत्वाकर्षण शक्ति में हुए व्यापक परिवर्तनों का और चारों ओर व्याप्त विद्युत चुंबकीय क्षेत्र का ज़बरदस्त असर पड़ता है. यह परिवर्तन हमारे आंतरिक और बाह्य जगत के बीच स्थापित संतुलन को बड़े नाटकीय ढग से बदल देता है." इस प्रकार "स्नायु तंत्र उत्तेजित हो सकता है और इस से स्नायु को शक्ति देने वाले क्षेत्र बदल जाते हैं. शरीर के विभिन्न भागों में कहीं पानी जमा हो जाता है और कहीं पानी की बहुत कमी हो जाती है."

डा. लीबर का कहना है कि मेरे रोगियों में से अनेक रोगी हैं जो मानसिक अवसाद से ग्रस्त हैं. लीथियम दवाई से उन का मानसिक संतुलन बनाए रखा जाता है. "कभी कभी बहुत से रोगी एक ही समय में आ कर बताते हैं कि हम बेचैन और खिन्न हैं, हमें अनिद्रा रोग हो गया है और हमारे हृदय की धड़कन तेज़ हो गई है. इन रोगियों में पाए जाने वाले समान लक्षणों का एक मात्र कारण यही होता है कि इन पर वायुमंडलीय परिवर्तनों का प्रभाव पड़ता है और यह प्रभाव बहुत हद तक चंद्रमा से संबंद्ध है."

इन दोनों विचारों में से कौन सा सही है? शायद दोना ही. ब्रिटिश नृवंश वैज्ञानिक लाइएल वाटसन की अद्वितीय पुस्तक 'लाइफ़टाइड्स' के निम्नलिखित अंशों से लगता है कि संपूर्ण सृष्टि में ऐक्य है.

वाटसन लिखते हैं:

हम में से प्रत्येक व्यक्ति चलता फिरता अजायबघर है. हमारे शरीर में जो द्रव पदार्थ है, वह प्राचीन सागर की हू ब हू नक़ल है. हमारे रक्त में सोडियम, पोटाशियम और क्लोराइड का केंद्रीकरण तथा ऊतकों में कोबाल्ट, मैगनीशियम और जस्ता उसी तरह मौजूद हैं जिस तरह ये खनिज आदिकालीन महासागरों में विद्यमान थे.

हम आज भी उस आदिम महासागर को अपने शरीर में धारण किए हैं जो एक जीवित जीवाश्म की भांति अंदर बंद है. इस आंतरिक लघु सागर में वही प्राचीन संघर्ष जारी है जो तीन अरब वर्ष पहले चल रहा था.

आप समुद्र जल के चाहे जितने नमूने एकत्र कर लीजिए, लेकिन इन में से एक भी नमूना न तो आप को ज्वार की जानकारी देगा और न ही उस में ज्वार होगा. जीवन एक प्रतिमान है, गति है और है तत्व का ऐसा लोप जो आकस्मिक संयोग की ताल और लय के आनुषंगिक स्वर के रूप में रचा गया है. जीवन दुर्लभ और आश्चर्यजनक रूप से असंगत है.
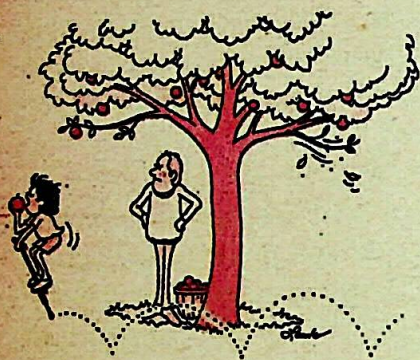
जीवन की यह रीत

मैं तमाम कोशिशें कर कर के हार गई, लेकिन हमारी टार्च नहीं जली तो नहीं जली. यह हाल तब था जब कि उस के सारे सेल एकदम नए थे. मेरी मां ने सुझाया, "ऐसा करो, आख़िरी सेल में एक सिक्का रख कर टार्च बंद कर दो. इस से टार्च के कनेक्शन कस जाएंगे." मेरे ऐसा करते ही टार्च वास्तव में जल उठी. मेरी बहन यह सब देख रही थी, बोली, "देखा! आजकल बिना पैसों के तो कोई काम होता ही नहीं." —संगीता, गोहाटी

हमारे गिरजाघर में बच्चों की धार्मिक शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया जाता है. वहां हर महीने बच्चों की विशेष प्रार्थना सभा होती है और उन विशेष प्रार्थना सभाओं में मेरी चार वर्ष की बच्ची कुछ और बच्चों के साथ वेदी के पास ही बैठती है. इधर मैं घबराती रहती हूं कि वह वहां भी कोई गुल न खिला दे. एक दिन बच्चों की भीड़ इंतज़ार करते अभिभावकों की ओर लौटी, तो बच्ची मेरी नज़र से ओझल हो गई. मेरी बहन ने समझाया, "कहां जाएगी, अभी अपने आप आ जाएगी." परंतु जब बच्चों की भीड़ छंट गई तो मैं ने देखा कि अकेले पादरी महोदय प्रार्थना मुद्रा में झुके हैं. मुझे लगा कि उन्हें इस तरह झुके कुछ ज़्यादा ही देर हो गई है सो पास जा कर देखा तो चोगे के पीछे छिपी हमारी बिटिया पै... बैठी थीं और पादरी साहब उन के जूते के फी... रहे थे.

—...

पत्नी की छुट्टियां समाप्त हो चुकी थीं ... पास कुछ समय बाक़ी था. सारा दिन घर में ... पड़े पड़े ऊब जाता था. सो एक दिन तय कि... रसोई में जूठे पड़े बरतनों की सफ़ाई कर ... झाड़ पोंछ कर घर भी चमका दूं ताकि बेगम ... दफ़्तर से थकी मांदी घर लौटें तो दंग रह ... विश्वास था कि लौटने पर बेगम ख़ूब तारीफ़ ... पर नहीं, ऐसा कुछ नहीं हुआ. आख़िरकार ... हुआ तो मैं ने शिकायत कर ही दी, "तुम ... तक नहीं कि मैं ने कितना कुछ कर डाला है ..." अब जो उत्तर मिला तो उस ने मेरी आंखें ... "अरे हां! पर इन सब बातों की परवाह कौन ... है, क्यों?"

—...

शादी से छः महीने पहले मेरे मंगेतर ... परिवार से मुझे मिलाने ले गए. उन की ... दादी मां बहुत प्यारी और ज़िंदादिल हैं ... अधिकांश ऊंचा सुनने वालों की तरह वह ... ऊंचा बोलती हैं.

अब मैं बैठक में बैठी उन के बच्चों ... पोतियों की तसवीरें देख सराह रही थी ... बिल को एक ओर ले गईं और रहस्यमय ... चिल्ला कर बोलीं, "तुम चिंता मत करो ... उस पहले वाली लड़की के साथ वाले फोटो ... अलग रख दिए हैं."

—श्रीमती ...

हमारा दवाफ़रोश बहुत भला व मिल... जिस के कारण उस से ख़रीद फ़रोख़्त में ... आता है. परंतु हाल ही में मैं ने महसूस ... उस में भलमनसाहत कम होती और ... ज़्यादा, तो अच्छा था.

मैं विमान से मेक्सिको पहुंची, तो कस्टम ... मुझे यात्रियों की क़तार से निकाल कर एक ... कमरे में ले गए. वहां मैं ने अपने आप ...

गंभीर मुख मुद्रा वाले इंसपेक्टरों के बीच घिरा पाया. पता चला कि वे कैप्सूलों की उस शीशी के बारे में चिंतित थे, जो मैं ने अपने दवाफ़रोश से ख़रीदी थी. अब चूंकि मैं यात्रा पर निकली थी अतएव हिदायतों की जगह शीशी पर उस ने लिख दिया था : एक दिन में दो वार लें और सफ़र तंरग में रहें.

—कुमारी आर जे

दवत का आयोजन था और खाद्य सूची में सब से ऊपर लिखा था सूप डु जुर यानी आज का विशिष्ट सूप. ख़ैर, सूप आया तो हम ने देखा कि वह वाक़ई बढ़िया था, खुंबियों और क्रीम का सुंदर सम्मिश्रण. इतने में मेरी बग़ल में बैठे वयोवृद्ध सज्जन ने मुझे टहोका और नाक भौं चढ़ा कर बोले, "ज़नाब, ये तो सूप डु ज़ुर नहीं."

मैं चौंका, "क्या मतलब?"

अब वह बोले, "एक वार पहले भी मैं ने यही सूप लिया था, वो तो मुर्ग़ का होता है."

—डब्लू वी, न्यू यार्क

उस रूपहली दोपहर, मैं अपने मित्र के साथ मछली घाट पर घूम रहा था. वहां कई बेंचें पड़ी
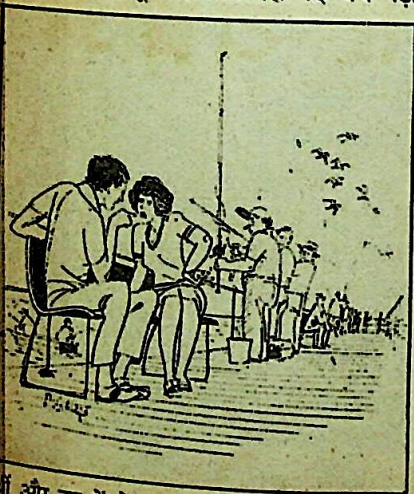
थीं और उन में से एक पर बैठा जोड़ा बहसाबहसी उलझा था.

मछली मारने के शौक़ीन उन के शोर से परेशान थे कि मछली कैसे मारें. अंततः एक व्यक्ति से नहीं रहा गया. वह उन के पास जा पहुंचा और उन का ध्यान बेंच की टेक की ओर खींचा. दोनों ने घूम कर देखा तो झेंप गए और उठ कर चल दिए.

उत्सुकतावश मैं बेंच के नज़दीक गया कि देखूं क्या लिखा है. वहां यह सूचना लगी थी : "मछली बाज़ार नहीं."

—टी डी

यूरोप के लिए एक चार्टर्ड विमान में चढ़ने के लिए लगी लंबी पांत में मेरे आगे एक काफ़ी भारी भरकम महिला खड़ी थीं.

क्लर्क के आम पूछताछ के दौरान प्रश्न किया, "आप का वज़न?"

"अस्सी किलो, लेकिन आप को इस की क्या ज़रूरत पड़ गई?" महिला ने वज़न बताते ही पूछा.

"इस से हम अपनी ईंधन की खपत का हिसाब लगाते हैं."

पल भर सोच कर वह आगे को झुकीं और बाबू के कान के पास मुंह ले जा कर बोलीं, "नौ दस किलो और बढ़ा लीजिएगा."

—श्रीमती बी आर किर्किंडल, टेक्सास

हमारे परिवार में बच्चों की लंबाई का ब्योरा दरवाज़े की चौखट पर दर्ज़ करने की परंपरा थी. एक बार इस घरेलू विवरण का जायज़ा लेते वक़्त मुझे यह भी पता चला कि उम्र बढ़ने के साथ साथ सही नाप के कपड़े बनवाने में घर वालों को कितनी मुसीबत होती होगी. ख़ैर, यह सब देख ही रहा था कि नज़र छोटे भाई से संबधित विवरण पर गई.

वह दिन दूनी रात चौगुनी तेजी से बढ़ रहा था. शायद यही कारण था कि मां ने उस की २०१ सेंटीमीटर की लंबाई के बराबर में '२५ अक्तूबर १९७३' का दिन ही नहीं, बल्कि शाम ८.३० बजे का समय तक दर्ज कर लिया था.

—जे एफ आर

अविस्मरणीय क्रिस्टी ब्राउन

स्टिफ़ेन रुडले और सी एल लिनेस

"खोलो बेटे, क्रिस्टी, मुंह खोलो," दूध का निपल शिशु के मुंह में डालने की कोशिश करती मां फुसफुसाई. बच्चे के जबड़े भिंचे थे. उस ने उन्हें मल मल कर खोलने की कोशिश की, पर खोल न सकी. तभी क्रिस्टी का नन्हा मुंह अचानक खुल गया; और, जैसे बंद था वैसे ही, निश्चल खुला रह गया. वह ग्यारह महीने के बेटे के मुह में दूध भरा कुनकुना निपल डालने की कोशिशें कर कर के रह गई, मगर उसे कोई सफलता न मिली.

"कोई बात नहीं क्रिस्टी, हम फिर करेंगे," और ब्रिजित ब्राउन ने बेटे को और ज़्यादा सटा लिया.

क्रिस्टी जनमा तो "नीला निचुड़ा था. जब तक डाक्टर उस की सांस मस्तिष्क का वह हिस्सा बेकार हो चुका मांसपेशियां नियंत्रित करता है. उस की कर लटकी रह गईं, सहारे बिना न वह न घिसट पाता. लगातार लार बहता क्रिस्टी की हालत—प्रमस्तिष्कीय

घात—के बारे में १९३३ में बहुत कम जानकारी थी. डाक्टरों ने उसे मानसिक रूप से विकृत बताया. उन के अनुसार इस का कोई उपचार नहीं था : इसे किसी आश्रम में डाल दीजिए!

लेकिन ब्राउन दंपती ने मना कर दिया. वे डबलिन (आयरलैंड) की मज़दूर बस्ती कियेज में स्टैन अवे रोड के अपने घर में ही, बाक़ी बेटे बेटियों के साथ उस का पालन पोषण करेंगे. श्रीमती ब्राउन को विश्वास था कि उन का बेटा हीन बुद्धि नहीं है, और इसे सिद्ध करने पर उन्हों ने कमर कस ली.

एक एक कर के दिन और साल गुज़रते गए. श्रीमती ब्राउन किताबें पढ़ कर क्रिस्टी को सुनातीं, उस से बातें करतीं, उसे दुलारतीं पुचकारतीं; हरचंद कोशिश करतीं कि वह किसी ढब जवाब दे. और उन के पति दिन भर एक राज मिस्तरी के तौर पर खटने के बाद क्रिस्टी को नहलाते धुलाते, पेशाब पाख़ाने में मदद करते और उसे कपड़े पहनाते; लेकिन उस की हालत में कोई सुधार न हुआ. अब सज्जन मित्र और रिश्तेदार भी कहने लगे कि इसे किसी आश्रम में ही डाल दो. वे कहते, 'यह तो हद है. घर में सात बच्चे और नहीं हैं?'

शुरू शुरू की उम्र के वे साल क्रिस्टी के लिए एक बेगाने सपने जैसे थे. वह सुन सकता था, देख सकता था, महसूस कर सकता था और सोच भी सकता था. लेकिन अपनी बात नहीं कह सकता था. यहां तक कि किसी बात पर सहमति जताने के लिए वह सिर भी न झुला पाता. उस की इच्छा होती कि वह घर वालों को अपने घर में होने का अहसास करा सके. लेकिन यह कैसे होता?

एक दिन, जब वह पांच साल का था, उस ने तकियों के सहारे फ़र्श पर बैठे अपनी बहन मोना को स्लेट पर लिखते देखा. अचानक उस का बायां पैर आगे बढ़ा, उंगलियों में उस ने चाक भींचा और स्लेट पर अंधाधुंध आड़ी तिरछी रेखाएं खींचने लगा. इस से पहले उस ने कभी अपने पैर का इस्तेमाल नहीं किया था.

और नज़र उठाने पर उस ने पाया कि हर कोई उसे निहार रहा है. श्रीमती ब्राउन एकदम समझ गईं. वह क्रिस्टी के पास झुक कर घुटनों के बल बैठ गईं.—मैं तुम्हें बताती हूं बिट्टू, इस से कैसे लिखते हैं.'' और स्लेट पर अंगरेजी का 'ए' बना कर उन्हों ने कहा, ''क्रिस्टी, इस की नक़ल करो!''

उस ने पैर चलाने की कोशिश की, पर नहीं. उस ने दोबारा हिम्मत की, और लो! टेढ़ी मेढ़ी एक रेखा खिंच गई. उस ने फिर कोशिश की. वह समझ गया कि उसे कोशिश करते रहना होगा. वह 'ए' की एक सर्पिल भुजा खींच चुका था, और दूसरी आधी खींच पाया था कि चाक टूट गया. हताश क्रिस्टी का मन हुआ उसे उठा कर फेंक दे, मगर तत्काल मां ने उस के कंधे पर हाथ रख दिया.

आख़िर अपनी तमाम मांसपेशियों पर ज़ोर डालते हुए, किसी तरह उस ने 'ए' बना ही लिया. और उस ने देखा, आंसुओं से भीगे मां के गाल चमक रहे हैं और वह मुसकरा रही है. तभी एक उल्लास भरा चीत्कार सुनाई दिया : पिता ने हिलोर कर क्रिस्टी को अपने मज़बूत कंधों पर बैठा लिया.

क्रिस्टी अब पहले जैसा नहीं रहा. साल भर के भीतर ही, बाएं पैर की उंगलियों में चाक को मज़बूती से भींचे वह पूरी वर्णमाला लिखने लगा. समय के साथ साथ मां ने उसे पढ़ना और लिखना सिखा दिया. उस ने अपनी ही एक घुरघुराहट भरी भाषा भी विकसित कर ली, जो उस के घर वाले कमोबेश समझ लेते थे.

आख़िर वह अपनी कुछ नियंत्रण योग्य मांसपेशियों का इस्तेमाल करना भी सीख गया;

और घर भर में इतनी भगदड़ मचाने लगा कि सब त्रस्त हो उठते. कूल्हों के बल वह हवाई की तरह उछलता और सीढ़ियां फलांग जाता. गुस्से में होता तो उस का बायां पैर हथियार बन जाता : दूसरे को चुभाता हुआ आश्चर्यजनक शक्ति से उसे धकियाने लगता.

भाइयों की मदद से घर के बाहर घूमने फिरने, खेलने कूदने भी जाने लगा. वे क्रिस्टी को उस के 'रथ'—लकड़ी की एक धचड़ पचड़ ठेली—पर बैठा कर कियेज की गलियों में, बल्कि शहर तक घुमा फिरा आते. यह ठेली मिस्टर ब्राउन ने अपने बेटे के लिए खुद बनाई थी.

टूटा हुआ रथ. क्रिस्टी के दिन हंसी ख़ुशी

क्रिस्टी की एक स्टिल लाइफ़ पेंटिंग

बीत रहे थे. खिलाने पिलाने और पहनने जैसे कुछ कामों में उसे ज़रूर मदद लेनी पड़ती, लेकिन कोई भी उस से फ़ालतू लाड़ प्यार न करता और ख़ुद को आम बच्चों जैसा ही पाता. कभी कभी अजनबियों की घूरती नज़रें उसे उद्विग्न भी कर देतीं, लेकिन आसपास की हंसी ख़ुशी और प्यार के सामने ऐसी परेशानियां ज़्यादा न टिक पातीं.

एक दिन, जुलाई की झुलसाती तिपहरी में क्रिस्टी के रथ का धुरा टूट गया. भाइयों के पास, उसे घर छोड़ जाने के अलावा कोई चारा न रहा. क्रिस्टी खिड़की के पास कोच पर बैठा भाइयों को गली में गेंद खेलता देखता रहा. उन के बलिष्ठ और फुरतीले हाथों को गेंद लोकते उछालते निहारते निहारते, सहसा उस की नज़र अपने मुड़े तुड़े कंपकंपाते हुए हाथों पर पड़ गई : मानो हाथों को और अपने आप को वह पहली बार देख रहा हो. रेंगता रेंगता ऊपरी मंज़िल पर जा आइने के सामने बैठ गया और अपने एंठे झुके, झूलते सिर और लार टपकाते मुंह को लगा ; और आवेश से भर कर उस ने वायां पैर आइने पर दे मारा—और शीशे गए.

घर वालों ने क्रिस्टी को एक नया रथ दे मज़बूत और आधुनिक पहिएदार कुरसी. बाहर जाने को क्रिस्टी का मन न होता. बीत गईं, शरत ऋतु आ गई. क्रिस्टी गुड़ी एक कुरसी पर बैठा शून्य में घूरता र

और क्रिसमस आ गया. हर बच्चे को एक उपहार मिला. एक भाई उपहार में मि के डब्बे के छोटे छोटे चौकोर टुकड़ों लापरवाही से बुरुश घिसने लगा तो क्रिस्टी सरक आया; और तत्काल मुग्ध हो उठा. क्षणों में उस ने इस भाई से अपना हार—खिलौने सिपाही—बदल लिया.

बाद में बाएं पैर की उंगलियों से कुछ कर रंगों के डब्बे की लाल टिकिया से रं लीथ कर उस ने कागज़ के बीचोबीच एक बनाया. और वह भौंचक रह गया. यह अपनी कृति थी.

प्रतियोगिता. दिन पर दिन क्रिस्टी काम में डूबता गया. ऊपरी मंज़िल पर, कमरे में फ़र्श पर कागज़ बिछाए, बाएं पैर पर चित्र आंकता वह धीरे धीरे रंगों, और आकारों की भाषा का स्वाध्याय करता पेंटिंगों के ढेर लग गए—जानी पहचानी के स्टिल लाइफ़ अंकन, पारिवारिक व्यक्ति चित्र, घूमी फिरी जगहों के लैंडस्केप और रंगों के उद्दाम विस्फोट—जो उस की

फ़ोटो : द डिसएबल्ड आर्टिस्ट्स लि., कार्क, आयरलैंड

भावनाओं की अमूर्त अभिव्यक्तियां थे. कूची चलाते समय वह अपने एकाकीपन तथा पीड़ा को भूल जाता, खुद को ताक़तवर महसूस करता.

१२ साल की उम्र में क्रिस्टी ने एक प्रमुख समाचारपत्र द्वारा आयोजित १२ से १८ साल के किशोरों की 'रंग भरो प्रतियोगिता' में भाग लिया.

दो सप्ताह बाद पिता को भड़भड़ा कर कमरे में घुसते देख कर वह बौखला उठा. एक अख़बार उस के सामने फैलाते हुए चीख़ते से बोले, "देखो! देखो, तुम जीत गए हो!" क्रिस्टी ब्राउन आयरलैंड भर के प्रतियोगियों में से जीता था.

अंततः अपनी आकुल भावनाओं को अभिव्यक्त करने के लिए क्रिस्टी चित्रांकन के साथ साथ लेखन की ओर भी प्रवृत्त हुआ. शुरू शुरू में वह अपनी देखी हुई फ़िल्मों से बिंब ग्रहण करता और भाषा के मामले में अपने प्रिय लेखकों, ख़ास कर चार्ल्स डिकेंस पर निर्भर करता. लेकिन उस की अनुभूतियां विशुद्ध रूप से—स्टैनअबे रोड, डबलिन, आयरलैंड की उपज थीं. और लेखन के इन उद्यमों द्वारा उस ने इन सारी अनुभूतियों को एक सामंजस्यपूर्ण धारा में समेट लिया.

एक अजनबी भद्रपुरुष. मगर वक़्त गुज़रता ही जा रहा था. क्रिस्टी १८ वर्ष का हो गया था, और वह भी वे तमाम ज़रूरतें व हसरतें महसूस करता था जो कि उस उम्र के किसी भी नौजवान को महसूस होती हैं. लेकिन वह मानो अपने निष्क्रिय शरीर में ज़िंदा ही दफ़्न हुआ पड़ा था. उस की कुंठाओं और आशंकाओं का वारापार नहीं था.

तभी, एक रात एक अजनबी ने दरवाज़े पर दस्तक दी, और क्रिस्टी की जीवन धारा हमेशा हमेशा के लिए बदल गई. संभ्रांत से दिखने वाले भद्र पुरुष ने कहा, "हैलो क्रिस्टी!" शायद यह भद्र पुरुष की आवाज़ ही थी कि आगंतुक उसे एकदम भा गया.

यह आगंतुक था आयरलैंड का प्रसिद्ध बाल रोग चिकित्सक डाक्टर राबर्ट कालिस. वर्षों पहले कालिस ने वंचित बच्चों के सहायतार्थ एक कार्यक्रम में भाग लिया था. वहां उन्हों ने लुंज पुंज शरीर वाले एक छोटे से बच्चे को देखा था, जिस का चेहरा उन्हें नवजागरण काल की किसी पेंटिंग के माडल जैसा लगा था; और उस जैसी कुशाग्रता भरी नीली आंखें उन्हों ने पहले कभी नहीं देखी थीं. उन्हों ने पूछा था, "कौन है यह लड़का?" जवाब मिला, "क्रिस्टी ब्राउन." वर्षों
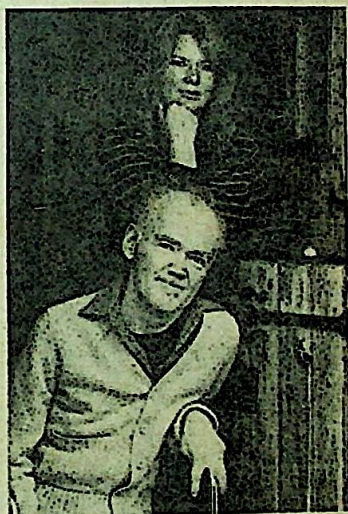
मेरी के साथ क्रिस्टी

बाद, आयरलैंड में मस्तिष्कीय पक्षाघात का पहला उपचार केंद्र खुलने लगा तो कालिस इस मोहिनी छलकाते युवक को ढूंढ़ने निकल पड़े थे.

डा. कालिस ने क्रिस्टी को उपचार केंद्र और अमरीका में विकसित उन व्यायामों के बारे में बताया, जो उस के लिए लाभदायक हो सकते थे. लेकिन ये व्यायाम आसान नहीं थे. कालिस ने पूछा, "अगर मैं मदद करूं, तो तुम कोशिश करोगे?"

डा. कालिस के शब्दों से क्रिस्टी विभोर हो

फोटो: माइकेल सेंट मार शील

उठा. वह उसे नए जीवन का आह्वान दे रहे थे.

उपचार केंद्र डबलिन के विकलांग अस्पताल का एक ऊंचा, बैरकनुमा कमरा था. यहां क्रिस्टी का, मानसिक पक्षाघात से पीड़ित अन्य बच्चों के साथ, मस्तिष्कीय प्रगाढ़ उपचार कार्यक्रम के अधीन भौतिक चिकित्सा शुरू हो गई. यह चिकित्सा कार्यक्रम यूं तैयार किया गया था कि रोगी बच्चों के मांसपेशीय संचालन और अभिव्यक्ति नैपुण्य का विकास हो सके.

मगर तमाम कोशिशों के बावजूद क्रिस्टी की केवल बोलने की क्षमता को ही थोड़ा सुधारा जा सका. अगर वह अपने बाएं पैर पर निर्भर करना छोड़ देता तो संभवतः वह कुछ और प्रगति कर पाता. तब शायद उसे बाध्य हो कर अन्य पेशियों से काम लेने की कोशिश करनी पड़ती. क्रिस्टी के लिए सुधार की यह बहुत बड़ी क़ीमत थी, लेकिन क्रिस्टी ने प्रयत्न करने की प्रतिज्ञा की.

लेकिन इस महत त्याग से भी कोई लाभ न हुआ. क्रिस्टी ने बहुत लंबा अरसा बिना इलाज के गुज़ार दिया था. क्रिस्टी और कालिस, दोनों समझ गए अब और शायद कुछ नहीं किया जा सकता.

नई ज़िंदगी. लेकिन चिकित्सा के इस दौर ने क्रिस्टी के व्यक्तित्व का भरपूर विकास किया. उपचार केंद्र में उस ने बहुत से नए दोस्त बनाए. लेकिन उसे सब से अधिक प्रभावित किया मुड़े तुड़े, झूलते अंगों वाले बच्चों ने, जिन के चेहरे ऐंठे हुए थे, जो उस के अपने बचपन के अक्स थे. पीड़ा से जूझते उन के शौर्य ने क्रिस्टी को अपना जीवन सही परिप्रेक्ष्य में देखने में सहायता दी.

धीरे धीरे उसे समझ आने लगा कि वह कौन है, और क्या है? उस पर यह ज़ाहिर हो गया कि वह शारीरिक रूप से तो शायद कभी सहज नहीं हो सकता, लेकिन सहज सोचने और महसूस करने का उद्यम ज़रूर कर सकता है. और भी सकता है.

अब उसे यह भी मालूम था कि उसे महत्वपूर्ण बातें कहनी हैं. उसे अपनी विक[illegible] से घृणा थी, लेकिन एक अजब अंदाज़ से उस की ज़िंदगी में ख़ूबसूरती ढाल दी. [illegible] उस में सामान्य प्रकरणों के गूढ़ अर्थ [illegible] क्षमता पैदा कर दी. उस ने तय कर लिया [illegible] आत्मचरित लिखेगा और असंख्य [illegible] अपंगों को अपनी विशिष्ट चेतना तथा कल्प[illegible] सहभागी बनाएगा.

लेकिन आत्मचरित कागज़ पर लिख[illegible] और क्रिस्टी वचनबद्ध था कि वह बाएं [illegible] इस्तेमाल कम से कम करेगा. अतः वह छो[illegible] बहनों को, बारी बारी से इमला देने लगा. [illegible] कष्टसाध्य था.

एक साल बीत गया. सैकड़ों घंटों के [illegible] हज़ारों शब्द उपजे, लेकिन रचना का कोई [illegible] न उभर पाया. स्पष्टतः क्रिस्टी को मार्गदर्[illegible] ज़रूरत थी. मगर कौन कर सकता था [illegible] दर्शन? डाक्टर कालिस? उस ने फ़ौरन [illegible] के नाम रुक्का लिखवाया: "डियर [illegible] कालिस, मैं एक किताब लिखने की कोशिश [illegible] रहा हूं. अगर असुविधा न हो तो कृपया [illegible] मेरी मदद करें. क्रिस्टी ब्राउन."

अगले दिन क्रिस्टी अलाव के [illegible] बैठा रहा था कि कालिस आ गए. बोले, "[illegible] तुम्हारी किताब देखें." पांडुलिपि में ख़ामियां [illegible] लेकिन कालिस भांप गए कि क्रिस्टी में प्रति[illegible] वे मुक्त हृदय से सहायता को तैयार [illegible] कालिस स्वयं लेखक थे; और शिक्षक [illegible] क्रिस्टी को ऐसा ही मार्गदर्शक चाहिए [illegible]

क्रिस्टी एक होनहार शिष्य से कहीं बढ़ कर था. हर आलोचना वह गंभीरता से [illegible] कालिस उसे आधुनिक लेखकों की रचनाएं [illegible]

पर उत्साहित करते, और घंटों साहित्य तथा लेखन के टेकनीक की चर्चा करते रहते. वह दंग थे कि एक दिन भी स्कूल गए बिना क्रिस्टी इतना सब कैसे सीख पाया! उस का अंगरेजी साहित्य का ज्ञान विशेष रूप से प्रशंसनीय था.

इस के बावजूद किताब लिखना बड़ा कुंठाकारी साबित हो रहा था. तेज़ इमला न दे पाने के कारण बहुत सारा सोचा और महसूसा छूट जाता था. एक कमी सी खलती रहती.

क्रिस्टी यह स्थिति ज़्यादा न सह सका. उस ने इमला बोलना बंद कर दिया और अपने मौलिक ढंग से, पैर की उंगलियों में पेंसिल फंसा कर लिखने लगा. किताब पूरी हुई. उसे लगा उसमें फिर से ज़िंदगी दौड़ने लगी है.

शब्द और आत्मा. वर्षों, लंबे प्रयत्न करने और अनेक संशोधनों के बाद, आखिर क्रिस्टी की आत्मकथा एक प्रकाशक को भेजी गई; और बिना किसी बाधा के स्वीकृत हो गई. १९५४ में माई लैफ़्ट फ़ुट जब प्रकाशित हुई तो क्रिस्टी ब्राउन २२ वर्ष का था.

इस आत्मकथा की बिक्री और कुछ अन्य लेखन तथा अपंग कलाकार संघ—डिसएबल्ड आर्टिस्ट्स एसोसिएशन—(जो कि उसे मासिक वृत्ति देता था) की सदस्यता की बदौलत क्रिस्टी को सामान्य सी नियमित आय होने लगी. उसे एक बिजली का टाइपराइटर भी मिल गया. अब, बाएं पैर की उंगलियों से टाइप करते हुए, वह अपने विचार प्रवाह और टंकन गति में तालमेल बैठाने में भी समर्थ हो गया.

आखिर उस ने वह भी कर दिखाया जो उस की हमेशा से हसरत थी : दुनिया को किताबों के ज़रिए नहीं, ज़िंदगी जी कर जानना है. ''लोगों को जानते चीन्हते, सरज़मी को महसूस करते और 'खुदरा व टुकड़ा टुकड़ा झलकियों के बजाय (दुनिया का) पूरा नज़ारा लूटते हुए'' उस ने पूरे आयरलैंड की यात्रा की. उस ने सतत सृजन. चित्रांकन और कहानी कविता लेखन अनवरत रखा.

निश्चय ही यह उस के सर्वतोमुखी पल्लवन का समय था, जिस के परिणामस्वरूप १९७० में, उस का उपन्यास 'डाउन आल द डेज़' प्रकाशित हुआ.

'माई लेफ़्ट फ़ुट' यदि उस के जीवन की कहानी थी तो 'डाउन आल द डेज़' इस जीवन की प्रकृति. अजस्र काव्य निस्रण सा यह उपन्यास एक निर्धन आइरिशं परिवार और उस की जीवन शैली का—उस की कुरूपता और सौंदर्य का, नृशंसता और प्रेम का—एक सर्वदर्शी, अपंग बालक का देखा नाना रूपचित्र.

'डाउन आल द डेज़' इंटरनेशनल बेस्ट सेलर बन गया. सहसा क्रिस्टी ब्राउन विख्यात लेखक बन गया. आलोचक उसे जीनियस कहने लगे.

'माई लेफ़्ट फ़ुट' के प्रकाशन का उत्साह तथा गौरव क्रिस्टी के माता पिता ने भी बांटा था लेकिन 'डाउन आल द डेज़' की सफलता देखने के लिए दोनों में से कोई भी नहीं बचा था. उन की मृत्यु ने क्रिस्टी को झकझोर दिया था. लेकिन उन के प्रति उस की छलछलाती कृतज्ञता ने उन के न होने के संताप में आब भर दी; उन का शौर्य तथा स्नेह उसे आगे बढ़ने की प्रेरणा देता रहा.

अंततः वह स्टैनअवे रोड वाला घर छोड़ कर अपनी बहन ऐन के साथ वाली काटेज में आ गया. मां के बाद वही उस की देख भाल करती थी. ऐन और उस के परिवार के साथ उस का बहुत सा वक्त हंसी ख़ुशी ही गुज़रता, लेकिन एक बहुत बड़ी कमी उसे अखरती ही रहती.

एक अद्भुत महिला—मेरी. एक रात, लंदन में, शान ब्राउन ने अपने भाई क्रिस्टी—जो टी वी के लिए डेविड फ्रास्ट को इंटरव्यू दे कर हटा था—के अभिनंदन में एक पार्टी दी. यहां

क्रिस्टी की नज़र पड़ी कमरे के परले सिरे पर, मित्रों से गपशप करती, सुनहरी बालों वाली एक आकर्षक महिला पर. किसी को घूरते महसूस कर के वह पलटी और क्रिस्टी को देख कर मुसकरा पड़ी. क्रिस्टी ने बौखला कर मुंह फेर लिया. पहियों वाली कुरसी में धंसा वह अपनी स्थिति के प्रति कातर सजगता से भर उठा. अचानक क्रिस्टी ने पाया कि महिला उस की बग़ल में बैठी उस से बातें कर रही है. यह थी दांतों के अस्पताल की नर्स मेरी कार.

क्रिस्टी की तीख़ी हाज़िर जवाबी ने मेरी को मोह लिया और वह चैन महसूस करने लगी. निःसंदेह क्रिस्टी एक सुदर्शन था : भूरे घुंघराले बाल, नफ़ासत से तराशी मूंछें और संवेदनशील चेहरे को मढ़ती सी साफ़ सुथरी दाढ़ी और —गहरी नीली, उदारता से छलकती और कुशाग्रतासे दमकती उस की वे आंखें.

क्रिस्टी के डबलिन लौटने पर दोनों में चिट्ठी पत्री चल निकली लेकिन जल्दी ही उन्हें महसूस हुआ, इतना ही काफ़ी नहीं है. और वे एक दूसरे के यहां आने जाने लगे. और ६ अक्तूबर १९७२ को दोनों विवाह सूत्र में बंध गए. विवाह के रजिस्टर पर क्रिस्टी ने पैर की उंगलियों से ही हस्ताक्षर किए.

न्यू यार्क के 'टाइम्स' में प्रकाशित विज्ञप्ति में मेरी ने कहा, "क्रिस्टी जैसा भद्र व्यक्ति मेरी जानकारी में नहीं है; और मैं उसे बेहद प्यार करती हूं." मेरी उस के जीवन की धुरी, संगिनी और सर्वोत्तम अलोचक बन गई. क्रिस्टी उसे अपने जीवन का 'सब से बड़ा चमत्कार' कहता.

दांपत्यकाल क्रिस्टी के लिए अतिशय सृजनशील साबित हुआ. चित्रांकन के अलावा उस के तीन कविता संग्रह और दो उपन्यास—'ए शैडो आन समर' (१९७४) और 'वाइल्ड ग्रो द लिलीज़' (१९७६)—प्रकाशित किए. (एक अन्य उपन्यास—'ए प्रामिसिंग कैरियर'—उस ने १९८१ में पूरा कर लिया था, जो १९८२ में प्रकाशित हुआ.

मगर अपनी पराश्रयता को ले कर क्रिस्टी अब भी क्रुद्ध और हताश होता ही रहता. लेकिन कोई भी कठिनाई उस पर हावी कभी न हो सकी. अजेय प्रतीत होने वाली बाधाओं के बावजूद अपने कौशल तथा कड़ियलपन के बूते पर, दुनिया का उस ने जम कर सामना किया. बारबार उस की दिलेरी की जीत हुई. परिणामस्वरूप, वह सब उस ने हासिल किया, जिसकी उस ने कभी हसरत की थी, जिस के मुताल्लिक़ उस ने एक इंटरव्यू में कहा था—"(कुछ ऐसा हो कि) तुम्हें (तुम्हारी) मानवीय दुर्बलताओं अथवा विशिष्टताओं के लिए नहीं, (तुम्हारे) कर्मों, उपलब्धियों और उत्तराधिकार के लिए, एकदम अनजानों के जीवन को छूने और स्पंदित करने वाली चीज़ों के लिए याद किया जाए."

६ सितंबर १९८१ को, ४९ वर्ष की अवस्था में क्रिस्टी ब्राउन का देहांत हो गया. मेरी के साथ उस ने ९ वर्ष तक वैवाहिक जीवन व्यतीत किया. "प्यार," एक बार उस ने कहा था, "(जीवन के) बोझ को सहज और सुगम बना देता है."

किसी गाड़ी को प्रति किलोमीटर कितना पेट्रोल खाना चाहिए, और वास्तव में वह कितना ईंधन पीती है के बीच वही अंतर है जो वास्तविक वेतन और कट कटा कर घर पहुंचने वाली धन राशि में होता है.

—'न्यूज़ टाइम्स', कनेक्टिकट

श्रीलंका में सर्वोदय श्रमदान की लहर

वुडवर्ड ए विकऐम

इस आंदोलन का उद्देश्य भौतिक समृद्धि ही नहीं, आत्मा की सच्ची उन्नति भी है

मैं अगस्त की तपती दुपहरी में उत्तरी श्रीलंका के कितुलुतुवा गांव के पास दस मीटर ऊंचे टीले पर खड़ा था. पिछले आठ महीनों के सूखे के बावजूद टीले के नीचे अभी तक कुछ पानी जमा था. यह तालाब गांव वालों ने दोबारा बनाया था. एक गांव वाले ने बताया, "पिछले दो सालों में यह तालाब कभी नहीं सूखा है. इस का पानी घट ज़रूर जाता है, किंतु थोड़ा बहुत पानी इस में सदा रहता है."

ब्रिटिश शासन के दौरान श्रीलंका की प्राचीन सिंचाई प्रणाली अस्त व्यस्त हो गई थी. कितुलुतुवा का यह तालाब भी इसी उपेक्षा का शिकार हुआ. ६०० से अधिक स्वयंसेवकों ने इस तालाब को फिर खोदा. इस सर्वोदय आंदोलन में विद्यार्थियों, दूसरे ज़िलों से आए किसानों, दफ़्तरों के बाबुओं, सरकारी अफ़सरों, पुलिस अधिकारियों और दुकानदारों ने मिल कर श्रमदान किया.

श्रीलंका में सर्वोदय श्रमदान का आंदोलन १९५८ में कोलंबो के एक हाई स्कूल के विज्ञान के अध्यापक ए टी आर्यरत्न ने शुरू किया था. एक दिन वे एक प्रमुख बौद्ध स्कूल के छात्रों और अध्यापकों को कंथोलुवा गांव में नीची जातियों के ग़रीब लोगों के लिए शौचालय, सड़कें और बाग़ बनाने के लिए ले गए. तब से श्रीलंका के लगभग २० लाख लोग सर्वोदय आंदोलन में भाग ले चुके हैं. अब तक श्रीलंका द्वीप के कम से कम एक चौथाई अर्थात लगभग ६,००० गांवों को सर्वोदय श्रमदान आंदोलन का लाभ मिल चुका है.

कितुलुतुवा गांव में तालाब का जीर्णोद्धार शुरू होने से पहले एक सर्वोदय कार्यकर्ता इस गांव में गया. उस ने गांव वालों से पूछा कि किस परियोजना से उन की हालत बेहतर हो सकती है. आज तक उन से कभी किसी ने नहीं पूछा था कि उन्हें क्या चाहिए. कितुलुतुवा के निवासियों को सर्वोदय कार्यकर्ता की बात पर विश्वास नहीं हुआ. फिर भी उन्हों ने तालाब का जीर्णोद्धार करने की बात कही और यह काम कुछ ही दिन बाद शुरू हो गया.

आधार स्तंभ. तालाब की खुदाई और जीर्णोद्धार का काम ख़त्म हो जाने पर भी सर्वोदय कार्यकर्ता गांव वालों के साथ मिल कर काम करते रहे. ग्राम पुनर्जागरण समिति स्थापित की गई. गांव वालों ने मिलजुल कर

एशिया (मई/जून १९८९) से संक्षिप्त. कापीराइट १९८९: द एशिया सोसायटी इनकारपोरेटेड, न्यू यार्क

एक नया कुआं खोदा और छोटे बच्चों की देखभाल के लिए बालबाड़ी चलानी शुरू की. गांव की माताओं का भी संगठन बनाया गया और किसानों ने अपनी समस्याएं मिल कर सुलझाना सीख लिया.

किसी भी योजना के दौरान स्वयंसेवक और ग्रामवासी सप्ताह में तीन बार समस्याओं और काम की प्रगति पर विचार विनिमय करने के लिए जमा होते हैं. इन पारिवारिक गोष्ठियों में सर्वोदय के कार्यकर्ता बौद्ध धर्म के चार मूल सिद्धांतों मित्ता (प्रेमपूर्वक व्यवहार), करुणा (दयापूर्ण परोपकार) मुदिता (निःस्वार्थ आनंद) और उपेक्खा (सब के प्रति समान वृत्ति) पर बल देते हैं.

बौद्ध 'सर्वोदय श्रमदान' आंदोलन के प्रभावशाली संस्थापक ए टी आर्यरत्न,

आर्यरत्न के अनुसार यही चारों मूल सिद्धांत हमारी 'ग्राम संस्कृति' के आधार स्तंभ हैं. महीने में एक बार सब लोग मिल कर नाचते, गाते और ख़ुशी मनाते हैं; इन अवसरों पर ग्रामवासी श्रीलंका के परंपरागत नृत्य करते हैं जिन में ग्राम जीवन के किसी नैतिक पक्ष का वर्णन होता है.

इन दिनों सारे श्रीलंका में हज़ारों विकास योजनाओं पर अमल किया जा रहा है. जिन दिनों मैं कितुलुतुवा में आए परिवर्तनों के बारे में जानकारी पा रहा था, उन्हीं दिनों बड्डेगाम के पास स्वयंसेवक गांव वालों के साथ मिल कर पांच किलोमीटर लंबी सड़क बना रहे थे. कैंडी शहर के पास के ग्रामवासी पानी की नई पाइप लाइन बनाने के बारे में सर्वोदय कार्यकर्ताओं से बातचीत कर रहे थे. 'सर्वोदय श्रमदान' आंदोलन उचित टेक्नालाजी अपनाने के लिए अनुसंधान करने में भी सहयोग देता है, गांव के लोगों तक आवश्यक जानकारी पहुंचाता है. पोषक आहार, माता और बच्चे का स्वास्थ्य, खेती-बाड़ी की शिक्षा, काम धंधों की ट्रेनिंग और छोटे मोटे व्यापार चलाने में भी ये सर्वोदय कार्यकर्ता ग्रामवासियों की पूरी सहायता करते हैं. सर्वोदय श्रमदान आंदोलन से साबुन बनाने, ईंटों का भट्ठा लगाने और ट्रकों के ट्रेलर बनाने जैसे छोटे पैमाने के उद्योग भी शुरू हो गए हैं. सहकारिता के आधार पर दुकानें चलाने के लिए भी स्वयंसेवक गांव वालों की मदद करते हैं.

शुरू शुरू में आर्यरत्न ने ख़ाली समय में अपना ही पैसा ख़र्च कर के १४ वर्षों तक सर्वोदय आंदोलन चलाया. १९६९ में जब उन्हें सामुदायिक नेतृत्व के लिए 'रैमन मैगसेसे' पुरस्कार प्रदान किया गया, तब से अनेक देशों के विकास संगठन उन की सलाह लेने लगे. सत्तरादि के प्रारंभ में आर्यरत्न ने विदेशी अनुदान राशि से अपना काम बढ़ाया.*

हाल ही में मैं सर्वोदय आंदोलन के प्रधान कार्यालय मोरातुवा गया. समुद्र तट पर आबाद मोरातुवा शहर कोलंबो के पास ही है. वहां मैं

* २४ नवंबर १९८२ को आर्यरत्न और सर्वोदय आंदोलन को बेल्जियम की किंग बोद्वेन फ़ाउंडेशन की ओर से ३० लाख बेल्जियन फ़्रांक का अंतरराष्ट्रीय विकास पुरस्कार प्रदान किया जाएगा. ७ मार्च १९८१ को श्रीलंका के श्री जयवर्धनपुर विश्वविद्यालय ने आर्यरत्न को डाक्टर की उपाधि प्रदान कर सम्मानित किया था.

तानामालविल केंद्र में प्रशिक्षणार्थी सिंचाई प्रणाली जैसे कृषि कार्यों में दक्षता प्राप्त करते हैं और फिर गांवों में जा कर किसानों को सिखाते हैं

ने सर्वोदय आंदोलन की गतिविधियों के बारे में आर्यरत्न से बातचीत की. छोटे कद और सफेद बालों वाले आर्यरत्न ऐसी बातों की विशेष रूप से चर्चा करते हैं जिन से विशेषज्ञों की भूलों और आम लोगों की बुद्धिमत्ता का पता चलता है. "एक बार मैं ने प्रस्ताव रखा कि जब कोई गांव तूफ़ान से नष्ट हो जाएगा तो सर्वोदय कार्यकर्ता बिना इंजीनियरों की सहायता के उसे फिर से बनाएंगे. सरकारी अधिकारी ने कहा कि मशीनों के बिना यह काम बहुत धीरे धीरे होगा. मैं ने साधारण बढ़ई और राज इकट्ठे किए और उन्हें सूझबूझ रखने वाले एक लड़के के सुपुर्द कर दिया. ज़रूरत सदा इसी बात की होती है कि कोई सूझबूझ रखने वाला आदमी आप के पास हो." आर्यरत्न का अपने बारे में भी यही विचार है. वे प्रायः कहते हैं, "मैं निपट देहाती हूं. विकास कार्यों के बारे में जैसे जैसे मेरे मन में विचार आते जाते हैं, मैं प्रकट करता रहता हूं."

आर्यरत्न बिलकुल निचले स्तर से विकास के काम शुरू करने की उपयोगिता पर ज़ोर देते हैं, साथ ही विकास के कामों के बारे में प्रचलित प्रणाली पर भी बल देते हैं. उन का कहना है कि बुनियादी भौतिक आवश्यकताएं पूरी हो जाने से ही सच्चा विकास नहीं होता. विकास का चरम लक्ष्य तो आध्यात्मिक उन्नति होना चाहिए. "श्रमदान की योजनाओं में काम कर हम अपनी आत्मा का विकास करते हैं." आर्यरत्न कहते हैं, "हम सड़क बनाते हैं और सड़क हमारा निर्माण करती है."

मार्गदर्शन. सीधे सादे लाखों गांव वालों को प्रेरणा देने वाले आंदोलन में कुछ न कुछ समस्याएं उत्पन्न हो जाना स्वाभाविक ही है. सर्वोदय आंदोलन के प्रारंभिक दिनों में कुछ कार्यकर्ताओं को ऐसे काम धंधे सिखा दिए गए जिन की उन के अपने गांवों में कोई उपयोगिता नहीं थी. अपनी चीज़ों को वे तुरंत आसपास की मंडियों में भी बेच न सके. इस के अतिरिक्त सरकार के राष्ट्रीय विकास प्रयत्नों के साथ अपने कार्यक्रमों को जोड़ने और निकट से सहयोग देने के प्रयत्नों में सर्वोदय आंदोलन से अनजाने ही ग़रीब किसान के हितों की भी कभी कभी उपेक्षा हो गई.

मैं उत्तरी श्रीलंका के बयाबान जंगल में एक आवास योजना को देखने गया. वहां ऐसे ३२ आदिवासी किसान परिवारों के लिए सीमेंट और खपरैल के पक्के आधुनिक मकान बनाए गए थे जो झोंपड़ों में रहने के आदी हैं. वे नए मकानों में नहीं, उन मकानों के आसपास झोंपड़े डाल कर रह रहे थे. जब मैं ने उन से पूछा कि उन के लिए ये मकान किस ने बनाए हैं तो उन्हों ने सर्वोदय कार्यकर्ताओं की ओर इशारा कर के कहा, "सरकार ने."

समस्याओं के बावजूद सर्वोदय आंदोलन काफ़ी सफल रहा है. खेतों की उपज बढ़ाने में इसे विशेष सफलता मिली है. इसी कारण विदेशों के विकास विशेषज्ञ इस आंदोलन से प्रभावित हुए हैं. राजनीति विज्ञान के विद्वान और संयुक्त राष्ट्र सामाजिक विकास आयोग में अमरीका के भूतपूर्व प्रतिनिधि रूथ एस मारगेनटाउ का कहना है, "सर्वोदय आंदोलन देख कर लगता है कि शायद भूख की समस्याएं सुलझाई जा सकती हैं."

विभिन्न विकास संगठन अब तक ऐसा कोई उपाय नहीं निकाल पाए थे जिस से छोटे किसानों की सहायता की जा सके. सर्वोदय कार्यकर्ताओं ने श्रीलंका के ग़रीब ग्रामवासियों की सेवा कर विकास संगठनों को लक्ष्य पर पहुंच सकने का मार्ग दिखा दिया है. रूथ मारगेनटाउ और आर्यरत्न के नेतृत्व में एक अंतरराष्ट्रीय समिति ने साहेल, तंज़ानिया और ज़िंबाब्वे में ऐसी अनेक कृषि योजनाओं पर काम शुरू कर दिया है जिन का लाभ छोटे छोटे किसानों को मिलेगा. सर्वोदय का अनुभव इन कृषि योजनाओं को प्राप्त है. इस समिति का नाम है आहार सेना. यह समिति पता लगाएगी कि सर्वोदय आंदोलन के अनुभवों का लाभ संसार के अन्य देशों में किस तरह उठाया जा सकता है.

जिस आंदोलन ने अपनी ठोस सफलताओं से उन्नत और विकासशील देशों को आश्चर्यचकित कर दिया है, वह अन्य परिस्थितियों में भी निश्चय ही प्रेरणा दे सकता है. सर्वोदय का सही अर्थ समझने की कोशिशें अब शुरू हो गई हैं.

चौकस

टैक्सास के एक देहाती से कहा गया : दुनिया चलाने के लिए हर क़िस्म के जीव की ज़रूरत होती है.

इस पर वह चट से बोला : वाह! यह भी कोई बात हुई ? ज़रूरत हो, न हो तो भी हर किस्म होती है.

—आर डब्लू डी

"मेरा बच्चा कुएं में गिर गया है!"

पीटर माइकलमोर

अनहोनी की उस गहमागहमी में कौशल और भाग्य धरे ही रह जाते ...

जीवन का रोमांच

सन १९८० के मध्य दिसंबर का वह गुनगुना सोमवार था. लगभग ११.३० बजे डेल राइं ओक्स, कैलिफ़ोर्निया, की श्रीमती शांटाल पोर्टर ने रसोई की खिड़की से पीछे वाले दालान में झांका—दोनों बच्चे ठीक ठाक खेल तो रहे हैं. चार वर्ष की क्विंसिएन तो दिखाई दे रही थी, किंतु पंदरह महीनों का क्रिस्टोफ़र कहां था?

दौड़ी दौड़ी वह बाहर गइं. क्विंसिएन भी मां को छोटे भाई के बारे में कुछ न बता सकी. सघन बाग़ीचे वाले छोटे से घर का उस ने चप्पा चप्पा छान मारा, मगर क्रिस्टोफ़र का पता न चला. सहसा शांटाल की नज़र संकरे से कुएं से निकली पाइप पर पड़ी. यह कुआं उस के पति जैफ़री ने खोदना शुरू किया था. बलुआ ज़मीन में खुदे इस कुएं के खुले मुंह का व्यास २० या २५ सेंटीमीटर रहा होगा यानी सिर्फ़ एक बालिश्त. साढ़े ग्यारह किलो का क्रिस्टोफ़र उस में गिर नहीं सकता था. फिर भी जाने क्यों वह अंधे गढ़े से कान लगा कर कुछ सुनने की कोशिश करने लगी—और यक़ीनन तलहटी से जो क्रंदन फूट रहे थे वे क्रिस्टोफ़र के ही थे.

शांटाल का गला सूखने लगा. वह सरपट भीतर भागी और फ़ोन पर झपट पड़ी. "बचाओ!" आपातकालीन नंबर घुमा कर वह

रिसीवर में चीख़ पड़ी. "मेरा बच्चा कुएं में गिर गया है!"

कुएं के मुंह पर मुंह. चंद मिनट बाद एंबुलेंस का दस्ता पहुंचा तो शांटाल प्रवेश मार्ग में खड़ी थी. क्विंसिएन को कलेजे से लगाए वह ऊंचे, सधे स्वर में यूं दुआएं मांग रही थी मानो उस का सर्वस्व ईश्वर को पुकार रहा हो.

फ़ायर डिपार्टमेंट के स्टेशन नंबर ३ से एक दमकल इंजन और एक रेस्क्यू ट्रक (बचाव गाड़ी) आ पहुंचे. दमकल कर्मचारी एयर वाटल्स आंगन में ढोने लगे और २७ वर्षीय दमकल इंजीनियर राब मैक पेट के बल लेट कर कुएं में झांकने लगा.

"क्रिस्टोफ़र!" उस ने अंधेरे में आवाज़ दी. जवाब में सवा साल का क्रिस्टोफ़र रिरियाने लगा. मैक ने कुएं में शाफ़्ट पर रोशनी फेंकी; और कांप उठा. क़रीब छः मीटर नीचे क्रिस्टोफ़र के सिर के बालों का गुच्छा दिखाई पड़ा. जैसे भी हो, बच्चा पैरों के बल भीतर धसक गया था और, आख़िर, उस के नितंब फंस गए थे. दोनों हाथ अब सिर के ऊपर उठे हुए थे: केवल उंगलियां हिल डुल रही थीं. मैक ने सुना, वह ताक़त लगा कर फंसी फंसी सांसें ले रहा था. पाइप और बच्चे की नाक तथा मुंह में मात्र आधे इंच का फ़ासला था. 'अगर वह नींद से झूल जाए . . .या एक कटोरा रेत ही ऊपर से भुरभुग पड़े . . .' मैक ने सिर झटक कर ये अशुभ विचार दिमाग़ से निकाल फेंके.

दमकल कर्मियों ने बाग़ीचा सींचने वाली पाइप का एक लंबा टुकड़ा काट कर उस से एयर बाटल जोड़ दी और मैक उसे धीरे धीरे भीतर सरकाने लगा. क्रिस्टोफ़र के सिर से ३० सेंटीमीटर ऊपर उस ने पाइप रोक दिया; और उस का हांफना थम गया.

पत्नी से इत्तला मिलते ही जैफ़री पोर्टर ने घर आ कर अपने बच्चे के रक्षा अभियान की कमान संभाल ली. रिहाइशी मकानों के ठेकेदा जैफ़री की संतुलित आवाज़ से मैक को बड़ी तसल्ली मिली. जैफ़री ने बताया कि पाइप के निचले सिरे पर एक १५ सेंटीमीटर का वाल्व ठुका हुआ है. यदि पाइप ऊपर खींचा जाए तो क्रिस्टोफ़र भी बरमे की टेक पा कर ऊपर आ सकता है.

सो चार हट्टे कट्टे कर्मियों ने पाइप को जकड़ लिया. "एक, दो, तीन! हइशा!" लेकिन पाइप महज़ हिल कर रह गया.

"ठहरो!" मैक चिल्लाया. "तुम लो उस की बांहें और जकड़े दे रहे हो."

अब जैफ़री ने लगभग वही निर्णय लिया जो वह लेना नहीं चाहता था: पास ही एक और बड़ा कुआं खोद कर सुरंग के रास्ते बच्चे तक पहुंचना होगा. सूखी बलुआर में भा मशीनों से खोदना हमेशा मुश्किल होता है और कुएं का मुंह बहुत ही बड़ा होना चाहिए क्योंकि बालू भुरती रहती है. इस से भी विकट स्थिति यह थी कि भारी भरकम बैक हो* के प्रहारों से ज़मीन में कंपन उठेंगे, जिन के परिणामस्वरूप उस कुएं की दीवारें भी भुरभु सकती थीं जिन में क्रिस्टोफ़र फंसा था. भुरने वाली मिट्टी क्रिस्टोफ़र को दफ़ना भी सकती थी.

बहरहाल दमकल कर्मी ज़मीन खोदने के लिए आपातकालीन यंत्र मंगवाने के इंतज़ाम में जुट गए. उधर जैफ़री नाइलोन की रस्सी और तार का एक कांटा बना कर क्रिस्टोफ़र को खींचने का प्रयास करता रहा. घंटे भर बाद उस ने हार मान ली.

*बिजली से चलने वाली ज़मीन खोदने की मशीन, जिस के मोटी वाली लंबी छड़ के सिरे पर एक डोलचा लगा रहता है

आख़िर एक बैक हो आया. पर इस की खुदाई वाली बल्ली सिर्फ़ छः मीटर लंबी थी, जबकि क्रिस्टोफ़र साढ़े छः मीटर नीचे था. एक ठेकेदार कंपनी से और बड़ी मशीन मांगी गई. वहां के डिस्पैचर ने रेडियो से संदेश भेजे. हाइवे पर काम कर रहा ३१ वर्षीय फ़ोरमैन माइक मैलो तत्काल तैयार हो गया. दुबले पतले और कड़ियल माइक का छोटा क़द (१६० सेंटीमीटर) और भूमिगत कामों का विशेष अनुभव बड़े उपयोगी प्रतीत हुए.

दमकल वालों से वह बोला, "हमें इलाके भर का बेहतरीन बैक हो आपरेटर चाहिए. हैरल्ड क्लार्क को बुलवाओ—वह फ़ोर्ट आर्ड वाले ठेके पर काम कर रहा है."

राब मैक अभी तक कुएं के मुंह से मुंह सटाए लेटा था, और रह रह कर बच्चे को पुकार उठता था, "क्रिस्टोफ़र! क्या हाल हैं, बहादुर!" जब भी क्रिस्टोफ़र जवाब देने से चूकता, उस के स्वर में व्यग्रता झलकने लगती. इस पर नन्हा शिकायत के अंदाज़ में रो पड़ता, या उस की उंगलियां कुलबुलाने लगतीं. दूसरे दमकल कर्मी राब को वहां से हटाने की कोशिश कर कर के रह गए. यहां तक कि आख़िर जैफ़री पोर्टर ने भी हार मान ली.

किसी को राब के पैरों से ठोकर लगी तो रेत के कुछ कण शाफ़्ट पर झर पड़े. राब ने रोशनी में उन्हें झरते देखा तो फुसफुसा पड़ा, 'प्लीज़, अब ऐसा न करना.' और सोचने लगा, 'यह कुआं है अगर तली से पानी फूट पड़े, तो?'

कोई चारा नहीं. क़रीब तीन बजे माइक मैलो ने जैफ़री के कंधे छुए. "जल्दी ही अंधेरा घिर आएगा और ठंड हो जाएगी." उस ने शांत स्वर में कहा. "मेरे ख़याल से हमें खुदाई शुरू कर देनी चाहिए."

"हां," जैफ़री बोला, और शांटाल के पास चला गया. पति पत्नी मिल कर प्रार्थना करने लगे.

आठ टन का दैत्याकार नया बैक हो आ गया था; और शरमीला सा, ४५ वर्षीय हैरल्ड क्लार्क भी. उस ने आंगन का जायज़ा लिया, बालू की जांच की तथा वृक्षों को माप कर उन जड़ों की गहराई का अनुमान लगाया. निष्कर्ष निकला, काम मुश्किल है. हो सकता है नामुमकिन हो. जितनी गहराई पर क्रिस्टोफ़र था उतना गहरा गड्ढा खोदने के लिए मुंह का घेरा १५ मीटर रखना पड़ेगा और किनारे ढलवां रखने होंगे. जबकि जगह इतनी नहीं थी. अतः छः मीटर सपाट खोदना होगा जितनी बैक हो की छड़ की लंबाई थी. ऐसा उस ने पहले कभी नहीं किया था.

क्लार्क ने बैक हो की सीट पर बैठ कर इंजन चालू किया. बटन दबाते ही छड़ कब्ज़े से बाहर निकली और ज़मीन पर झुक गई. उस के रुखड़े दांत पोली ज़मीन खोद खोद कर बालू उलीचने लगे. बड़ी फुरती और विश्वास से क्लार्क ने ढाई × साढ़े चार मीटर की एक खंदक खोद डाली. उस का कौशल देख कर लग रहा था मानो बैक हो की छड़ उस की बांहों का विस्तार हो और डोलचे के कांटे मानो हाथों की उंगलियां हों.

"सब बंद करो!" एकाएक राब मैक चीख़ पड़ा. "वह हिल डुल नहीं रहा."

क्लार्क ने मोटर बंद कर दी. हर एक की आंखें हाथ पैर फैला कर ज़मीन पर लेटे राब पर टिक गईं. "क्रिस्टोफ़र ? उंगलियां हिलाओ!" युगों लंबे एक मिनट बाद उस ने अपना अंगूठा हवा में तान दिया. "कितना अच्छा है हमारा क्रिस्टोफ़र! चलो, सब फिर से जुट जाओ!"

पूरे ४५ मिनट तक क्लार्क बिना रुके, इतनी पटुता से छड़ तथा डोलचा चलाता रहा कि मैक को खुदाई का आभास तक न हुआ. अंत में बेघनी छड़ पूरी की पूरी गढ़े में समा गई. तब क्लार्क ने ट्रैक्टर को अगले पहिएं उठा कर पीछे की ओर झुका दिया—ताकि आधे मीटर और खोद कर क्रिस्टोफ़र जितनी गहराई तक उतरा जा सके. अब गढ़े की दीवारों की मिट्टी संभाले रखने के लिए दो बायलर प्लेटों की पुश्तें लगा दी गईं.

"क्या बात है!" माइक मैलो ने जांच परख कर कहा. "अब मेरी बारी है."

क्लार्क बोला, "गड्ढे में मैं भी तुम्हारे साथ उतरूंगा."

२९ वर्षीय दमकल कर्मी रे लाफ़ांटेन उन के साथ उतरने वाला तीसरा शख़्स था. बायलर प्लेटों की कवच वाली पुश्तों ने खांचे पहले ही बना दिए थे, और दो फ़ुट चौड़ी सुरंग बनाने लायक़ जगह हो गई थी. तीनों कर्मियों ने फावड़े चलाने शुरू कर दिए. फिर, हाथ पैर चलाने लायक़ जगह घट जाने पर वे खदानों में इस्तेमाल की जाने वाली गैंती से काम करने लगे; और अंत में जंबूर से. गड्ढा खोदने से पहले उन्हों ने अंदाज़ा लगाया था कि पेंदी से पौने चार मीटर लंबी सुरंग क्रिस्टोफ़र तक पहुंचने के लिए काफ़ी होगी, और इसी नाप की फ़ाइबर ग्लास की पाइप भी उन्हों ने काट ली थी.

अतः क्रिस्टोफर की कमर का निशाना दिमाग़ में रख कर पाइप आड़ी कर के अंदर धंसाई, ताकि सुरंग की मिट्टी झर कर उन्हें दफ़्ना न दे. पाइप सीधा धंसाने से भय था कि वह बच्चे के सिर के ऊपर जा निकलेगी और बालू गिरने से उस का सांस घुट जाएगा. मगर अब पाइप डेढ़ मीटर भीतर घुस कर अटक गया, और बेशक़ीमती वक़्त सुरंग चौड़ाने गुज़र गया.

अंधेरा छाने लगा था. अतः आर्क लटका दिए गए. पट लेटे राब ने कुएं के से नज़र उठाई तो देखा आंगन लोगों से हुआ है. उन में से कई पोर्टर परिवार के के साथी थे, और उन्हीं जैसे धर्म परा ईसाई थे. और सभी प्रार्थनाएं कर रहे थे.

दूसरे गढ़े की पेंदी पर माइक मैलो ने सुरं नापी : आठ फुट थी. "अब पाइप धंसा छोड़ो!" वह बोला. वह और लाफ़ांटेन पि एक घंटे से बारी बारी से खुदाई कर रहे और टांगों से बालू धकेल धकेल कर फें रहे थे. माइक अब थकने लगा था. अ आख़िरी एक फ़ुट की खुदाई उस ने लाफ़ां पर छोड़ दी. लेकिन एक फ़ुट बाद लाफ़ांटेन क्रिस्टोफ़र तक नहीं पहुंच सका. हो, उन का हिसाब ग़लत लगा था.

मैलो ने पुकार कर कहा कि कोई कुएं पाइप पर थप्पियां मारे ताकि उन्हें दिशा लेकिन थप्पियां शुरू करते ही क्रिस्टोफ़र सिर पर बालू गिरने लगी. मैक चिल्ला "बंद करो!" थप्पियों की आवाज़ से मै को लगा कि पाइप उन के एकदम सामने लाफ़ांटेन ने छः इंच और काटा. पर नतीजा नहीं.

इस पर मैलो बोला, "ध्यान रखना सुरंग और चौड़ी करता हूं." और सिर पाइ धंसा कर विक्षिप्त सा उंगलियों से मिट्टी खो लगा. सुरंग सवा मीटर और लंबी हो गई. वह गुड़ाई में बड़ी सावधानी बरतने लगा: तक वह पाइप के बाहर था, मिट्टी भुर पड़ उस का दम घुटने में वक़्त न लगता. थकाव उस की बांहों के कड़ाके निकलने लगे थे. करते उन्हें दो घंटों से भी ज़्यादा हो गए

सवा तीन मीटर बाद क्रिस्टोफ़र की सेंध न मिली. वह आर्त्त स्वर में बोला, "हम चूक गए हैं."

पर ऐसा हुआ कैसे? उस ने राई रत्ती दुरुस्त कूता था. सहसा उसे लगा. उस ने ग़लती नहीं की. सुरंग के पास कुआं ज़रूर तिरछाया हुआ है. क्रिस्टोफ़र उस से दूर नहीं है.

उस ने उंगलियां फिर मिट्टी में धंसा दीं, और उसे लगा कुछ हाथ में आ कर छूट गया है. उधर, ऊपर से मैक ने क्रिस्टोफ़र के कंधे पर मिट्टी का डला गिरते देखा; और उमस का एक भभका उस के मुंह पर पड़ा. "वे पहुंच गए!" वह चीख़ा. "मुझे दिख रहे हैं."

"वाह वाह, वाह!" शांटाल पोर्टर मानो नाच उठी. "यीशु, तेरी मेहरबानी!"

माइक मैलो बच्चे के सिर से बालू हटा रहा था. "क्रिस्टोफ़र," उस ने भर्राए स्वर में पुकारा. नन्हे ने सिर घुमाया; सुरंग से फूटने वाली रश्मि में उस की स्याह, मोटी आंखें चौंधिया गईं. मैलो ने सुरंग का मुंह साफ़ किया और बच्चे को छाती से चिपटा कर औंधे बल मुक्ति गुहा में रेंगने लगा.

छः बजे पोर्टर परिवार के बाल चिकित्सक ने क्रिस्टोफ़र की जांच शुरू की; और बाद में घोषणा की कि उसे कोई क्षति नहीं पहुंची है. बस, बदन पर कुछ खरोंचें आई हैं, सिर पर एक गूमड़ हो गया है और बांह की एक नस ऐंठ गई है.

राब मैक, माइक मैलो और हैरल्ड क्लार्क के लिए यह एक अविस्मरणीय करतब था. और क्लार्क के शब्दों में ऐसा करतब वे फिर कभी नहीं दिखाना चाहेंगे. बाद में उस ने स्वीकार किया कि सुरंग की खुदाई के दौरान इतनी अनहोनियों की गुंजाइश थी कि कौशल और भाग्य धरे रह जाते. "मुझे मानना पड़ेगा कि ईश्वर ही हमारी रक्षा कर रहा था."

सुदूर दृष्टा

एरिस्टोटल ओनासिस को पार्टियों का इंतज़ाम निहायत ही व्यापक स्तर पर सूक्ष्मता से करने की सनक थी. इस का मुझे पता चला जब कि उन्हों ने हम लोगों को मांटी कार्लो में लंगर डाले अपने विहार पोत 'क्रिस्टीना' पर भोजन के लिए आमंत्रित किया. दोपहर हम बाहर डेक पर खुले में बैठे थे. ऊपर आसमान में बादल घुमड़ रहे थे. अब चूंकि टपटपाहट शुरू नहीं हुई थी सो खाना बाहर ही परोसा जाने लगा—एक के बाद एक खाद्य व पेय पदार्थ. तभी शरबत आया तो मैं ने शरारत से ओनासिस से पूछा, "मान लो सचमुच बारिश हो जाए, तो?"

"अभी बताता हूं,' यह कहते हुए वह मुझे नीचे खींच ले गए. देखा, डाइनिंग रूम में खाना परोसा जा रहा था, और दसों कुरसियां खाली थीं. मेज़ पूरी तरह से सुसज्जित थी, बाहर की तरह वहां भी बर्फ़ में वाइन लगी थी और मांस मछली की प्लेटें उठाई जा चुकी थीं. वस्तुतः बैरों का एक अन्य समूह शरबत लिए तैयार खड़ा था—इशारे की प्रतीक्षा में.

"ये एकदम हमारे साथ चल रहे हैं जो चीज़ हमें बाहर परोसी जाती है, वही यहां अंदर लगा दी जाती है." ओनासिस ने कंधे उचका कर कहा, "वर्षा शुरू हो जाती तो हम यहां अंदर आ जाते और अपना लंच बदस्तूर जारी रहता मानो कुछ हुआ ही न हो."

—नोएल बारबर,

'द नेटिव्ज़ वर फ्रेंडली . . . सो वी स्टेड द नाइट'

(मैकमिलन)
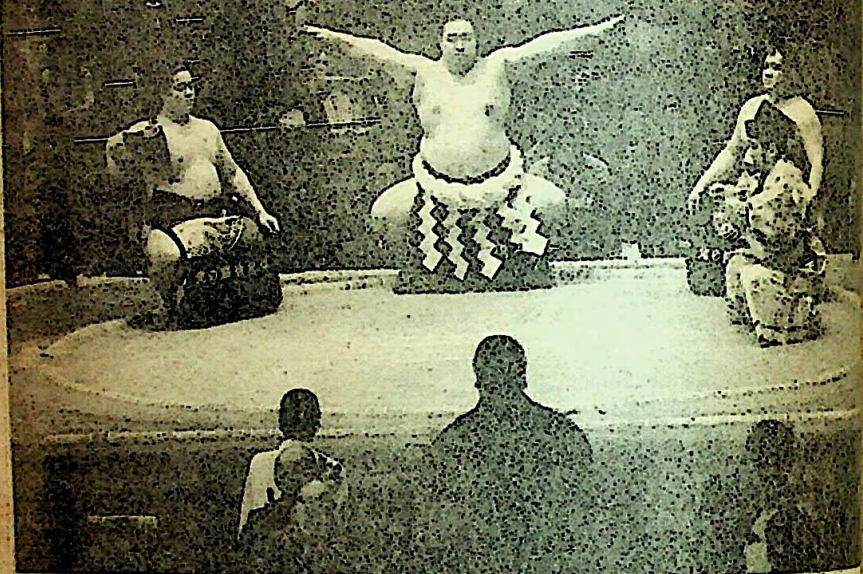
सूमो उस्ताद पहले अखाड़े की रस्में निभाते हैं

जापानी दंगल सूमो

पाल राफ़ेल

जनवरी १९८० की एक सर्द
बदन को जकड़ देने वाली
तोकियो स्थित मेजी जिंगू मठ
प्रांगण, में कुछ लोग एक दूसरे से
बैठे थें. जिंगू मठ उन नौ शिंटो मठों में
जो राजघराने को समर्पित हैं. हम नव
अवसर पर होने वाली परंपरागत सूमो
आनंद लूटने आए थे. 'निहोन सूमो
(जापानी सूमो एसोसिएशन) के
पहलवान वहां पहले ही पहुंच
'हाओरी' पदवीधारी इन ओजस्वी

*जापानी शैली की कुश्ती सूमो में पहलवान के
से बाहर निकल जाने या पैरों के सिवा शरीर का
भी अंग जमीन से छू जाने पर उसे आउट मान
जाता है.

की तोंद निकली हुई थी. और उन के बड़े कान बंदगोभी जैसे लग रहे थे. अपने लिए नियत छोटी सीटों पर ये पहलवान सिकुड़े से बैठे थे. उन्हें न तो कड़कड़ाती ठंड की चिंता थी और न ही अपने लटके हुए कूल्हों की.

गड़गड़ाहट की आवाज़ होते ही एक बौना सूमो रेफ़री (ग्योजी) मठ में प्रवेश करता है. उस के पीछे पीछे ही लगभग नग्न अवस्था में तत्कालीन ग्रैंड चैंपियन कितानोमी ने भी अपने दो अंगरक्षकों के साथ वहां प्रवेश किया. उस के एक अंगरक्षक के हाथों में ग्रैंड चैंपियन के अतुल शौर्य का प्रतीक समुराई तलवार थी.

कितानोमी उस समय इतना तन्मय थ., मानो चेहरे पर एकाग्रता का मुखौटा पहन रखा हो. उस ने अपनी टांग को हवा में ऊंचा उठा कर ज़मीन पर बड़े ज़ोर से पटका. यह एक परंपरागत क्रिया थी, सिर्फ़ यह दिखाने के लिए कि वह महान शूरवीर अपने प्रतिस्पर्धी की खोपड़ी कुचल कर धूल में मिला देने के लिए पूरी तरह सन्नद्ध है. भीड़ ने उसे उकसाया. कितानोमी अपनी विशाल भुजाओं को हवा में ऊंचा उठाता है. उस की इस मुद्रा पर मुग्ध उस एक क्षण में मुझे लग गया कि सचमुच मैं सूमो का प्रशंसक बन गया हूं. मैं जन्म से आस्ट्रेलियाई नागरिक होते हुए भी १९६४ में जापान आया और सूमो का प्रशंसक बन गया.

मुझे याद है यहां आने से पहले मैं ने अख़बारों में सूमो की तसवीरें देखी थीं, और अग़र साफ़ कहूं तो इतनी इतनी उम्र के आदमियों को अपने कूल्हों की नुमाइश करते देख मैं कोफ़्त से भर उठा था. ये पहलवान किसी अश्लील थुलथुले दरियाई घोड़े की तरह दिखते थे. और कभी सूमो मैच देखने के विचार मात्र से ही मेरा जी मिचलाने लगता था. इस संबंध में मेरी प्रारंभिक प्रतिक्रिया वैसी ही थी जैसी १८५३ के कमाडोर मैथ्यू कोरी के जापानी अभियान के इतिहासकार ने व्यक्त की थी. उस के अनुसार : ''बेतहाशा खाए पिए इन राक्षसों की पाशविक प्रवृत्तियों को बड़ी सावधानी और यत्न से उभारा और पोसा गया था. आदिम प्रवृत्तियों वाले इन क्रूर पहलवानों को एक दूसरे की तरफ घूरते देख कर लगता था जैसे ये मनुष्य नहीं बल्कि रक्त के प्यासे ख़ूंखार जंगली जानवर हों.''

परंतु बाद में मेरी धारणा एकदम बदल गई. १९६४ का वह दिन मुझे आज भी याद है जब तोकियो के एक 'काफ़ी शाप' में टेलिविज़न पर मैं ने पहली बार सूमो कुश्ती देखी थी. कुश्ती के दौरान अंगों को मरोड़ने, एक दूसरे को धकेलते सूमोतोरी तब तक एक दूसरे को अपने चंगुल में जकड़े रहते हैं जब तक उन में से एक विजयी घोषित न कर दिया जाए. कुश्ती में उन की आश्चर्यजनक तेज़ी ने मुझे सम्मोहित कर दिया था. सूमो से मैं इस क़दर प्रभावित था कि मैं ने तोकियो छोड़ने का कार्यक्रम स्थगित कर दिया ताकि इन भीमकाय पहलवानों की कलाबाज़ियां पदंरह दिनों तक और देखी जा सकें.

सूमो का सम्मोहन. १९४१ की जापान यात्रा के दौरान उसी साल आयोजित तोकियो टूर्नामेंट के अंतिम दिन मैं ने सूमो का और भी उत्कृष्ट रूप देखा. मैं अखाड़े के किनारे उस ख़तरनाक सीट पर बैठा था, जहां एक दूसरे से गुंथे सूमोतोरी दर्शकों की गोद में ही आ गिरते थे. किसी अखाड़े में सूमो कुश्ती देखने का मेरा यह पहला मौक़ा था. संयोगवश यह दिन एक ऐतिहासिक दिन की तरह आज भी याद किया जाता है. इसी दिन महान विजेता तेहो ने अपनी अंतिम बड़ी जीत हासिल की थी.

जैसे जैसे तेहो और उस के प्रतिद्वंद्वी ग्रैंड चैंपियन तामानोमी के मुठभेड़ का समय करीब
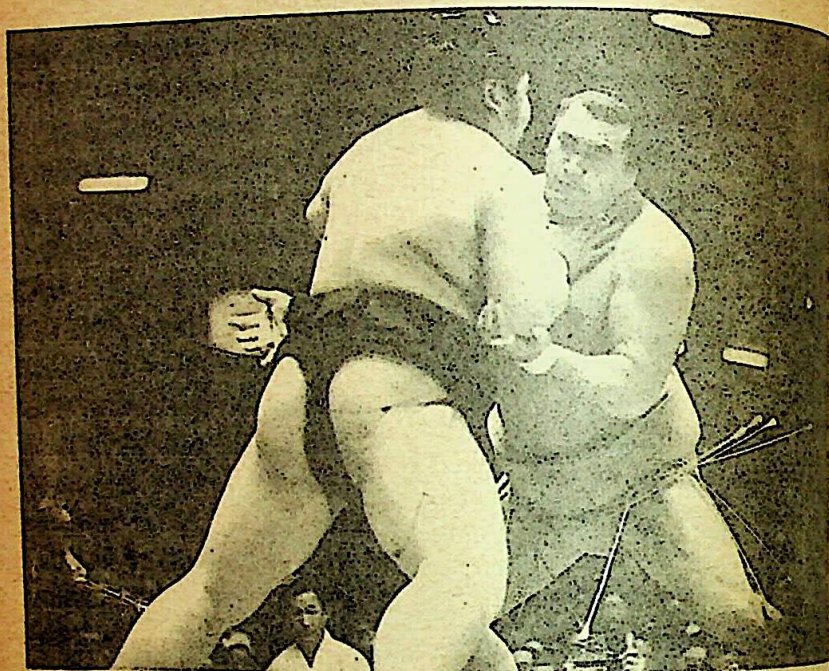
सूमो पहलवान अखाड़े में

आता गया, दर्शकों की अधीरता बढ़ती गई. इसी मुठभेड़ के बाद चैंपियनशिप का निर्णय होना था. तेहो जिस समय अखाड़े में आया, उस समय तक उस का रिकार्ड १३-१ का था, जब कि तामानोमी का १४-० था.

दोनों ग्रैंड चैंपियन अपनी बलिष्ठ भुजाओं से एक दूसरे की तोंद जकड़े उचित दाव मारने की ताक में अपने प्रतिद्वंदी की कमर मज़बूती से पकड़ लेने के फ़िराक़ में थे. दोनों पहलवानों ने अखाड़े का चक्कर लगाया और चीनी जुड़वों की तरह एक दूसरे से गुंथ गए. प्रतिद्वंद्वी को थाहते, मौक़ा लगने पर दोनों एक दूसरे को हवा में उछाल देते थे. थक कर चूर हो जाने पर दोनों एक दूसरे के कंधों पर सिर रगड़ने लगे, ताकि थोड़ी देर सुस्ता सकें. इस बीच रेफ़री ने थोड़ी देर के लिए पानी पीने का अवकाश दिया. बाद में दोनों फिर भिड़े अपने प्रतिद्वंद्वी को उछाल कर फेंक दि तामानोमी के मुक़ाबले १४-१ से ली. 'एम्परर कप' हासिल करने निर्णायक राउंड में एक बार फिर तामानोमी को पछाड़ा.

परंतु उस समय सूमो के लिए सम्मोहन की जो स्थिति थी, वह जैसी दो भीमकाय पहलवानों की भिड़ंत के दौरान हर्षोल्लास करते किसी दर्शक सकती है. काफ़ी बाद में मुझे लगा धार्मिक परंपरा वाली इस ख़ूनी कुश्ती भी इतना ही रोचक है जितना कुश्ती जितना ही अधिक मैं सूमो कुश्ती दे उतना ही अधिक मुझे लगता रहा कि मैं थिएटर को उस के प्राचीनतम रूपों में

फ़ोटो : पाल राकेल

होऊं. ऐसा थिएटर जिस में ओपेरा, ड्रामा और बैले के तत्व विद्यमान हों. धीरे धीरे मुझे ऐसा लगने लगा जैसे इस कुश्ती में मध्ययुगीन, सामंती जीवन प्रणाली का इतिहास जीवंत हो उठा हो. बाद में मुझे पता चला कि सूमोतोरी ही आज के समुराई हैं, जिन का द्वंद्व कौशल एक कड़े धार्मिक अनुशासन का परिणाम है.

तोकियों में रहने के ख़याल से मैं १९७७ में पुनः जापान लौटा. तीन साला तोकियो प्रवास के दौरान बीसों टूर्नामेंट के प्रायः प्रत्येक मैच को देखना मेरी ज़िंदगी का एक व्यसन बन गया था. १९८० में कई सप्ताह तक मैं सूमो के मध्य-युगी संसार में खोया रहा. मेरा प्रयत्न सूमो के सामंती तौर तरीक़ों का अध्ययन करना, और यह पता लगाना था कि सूमोतोरी की बैरागी जीवन प्रणाली कैसी होती है? मैं यह भी जानना चाहता था कि सूमोतोरी की सम्मानित उपाधि भर प्राप्त करने के लिए नौजवान सूमो पहलवान रोज़ स्वेच्छा से इतनी पीड़ा, अपमान और दरिद्रता की मार क्यों सहता है?

अखाड़े पर दो दिन. ताकामियामा के निमंत्रण पर मैं ने दो दिन ताकासोगो अखाड़े पर गुज़ारे और सूमो पहलवानों का प्रातः अभ्यास देखा. तोकियो स्थित ३५ सूमो अखाड़ों में से एक ताकासोगो अखाड़े पर कई दर्जन सूमोतोरी साथ साथ खाते, सोते, लड़ते और अभ्यास करते हैं. मुझे एक ऐसी जगह ले जाया गया, जहां से इन का युद्ध देखा जा सकता था. जब दो उच्च स्तरीय सूमोतोरी भिड़ने की प्रक्रिया में एक दूसरे के हाथ पैर को लकड़ी के खंभों पर रगड़ते, अखाड़े की मिट्टी पर पैर पटकते युद्ध नाद करते हैं, तो लगता है जैसे कान के परदे फट गए. दिन जैसे जैसे चढ़ता गया, उन के अभ्यास की गति और तेज़ होती गई. ये पहलवान कभी एक दूसरे पर प्रहार करते तो कभी एक दूसरे को चकनाचूर कर देने की मुद्रा में आ जाते. कभी ये आर्तनाद करते हुए कराहते थे, तो कभी एक दूसरे को धकेलते हवा में उछालते, रगड़ते और पटक-निया देते थे. सूमोतोरी पहलवानों की ललकार हाथियों की चिंघाड़ जैसी लगती थी. अखाड़े में पसीने की बदबू के कारण सांस लेना दूभर हो गया था. सूमोतोरी के बालों में लगे तेल ने इस बदबू को और तेज़ कर दिया था. तेल से चिपचिपे बालों को लपेट कर सूमोतोरी ने उन्हें कलगी जैसा रूप दे दिया था.

बुतसुकारी-जीको नामक पूरी तरह थका देने वाला यह अभ्यास दिन में ११ बजे समाप्त हो गया. एक भारी भरकम सूमोतोरी अखाड़े के एक किनारे अपने अंगूठे से मिट्टी कुरेदते दूसरे पहलवान को अखाड़े से बाहर फेंक देने के लिए ललकारता है. दूसरे पहलवान के आ जाने पर अभ्यास फिर से चालू हो जाता है. अभ्यास तब तक चालू रहता है, जब तक थक कर चूर हो गया सूमोतोरी पूरी तरह निष्क्रिय हो कर धूल नहीं चाटने लगता और अभ्यास के दौरान लगी चोट की झलक उस के चेहरे पर नहीं दिखने लगती.

—

जिस दिन की यह घटना है उस सुबह अनेक उच्च स्तरीय पहलवान एक भारी भरकम माकुशीता* सूमोतोरी को अभ्यास कराने पहुंचे थे. मापुशीता सूमोतोरी को तब तक पटकनिया दी जाती रही, जब तक उस के पूरे शरीर पर धूल और मिट्टी की पर्त नहीं जम गई. उस ने वरिष्ठ सूमोतोरी की विशालकाय छाती पर हमला किया. उस की जांघों, नितंबों और पिंडलियों पर केंदो छड़ी की चोटें लगातार पड़ रही थीं. जब वह गिर जाता तो वहां भी एक वरिष्ठ सूमोतोरी

*माकुशीता सूमो पहलवानों की एक कनिष्ठ श्रेणी है जो 'जुरयो' के तुरंत बाद होती है.

उस के पेट और गर्दन पर उस समय तक चोट करता रहता जब तक वह फिर से खड़ा हो कर प्रतिद्वंद्वी पर हमला नहीं कर देता. इस क्रिया को कवाइगारु कहते हैं, जिस का मतलब होता है 'दया का कार्य.' इस नौजवान सूमोतोरी को पदोन्नति के बाद 'जुरयो' की श्रेणी में पहुंचना था. वरिष्ठ सूमोतोरी उस में नया जोश और उमंग भर कर आने वाले टूर्नामेंट के लिए उसे तैयार कर रहे थे.

अभ्यास के अंत में ताकामियामा ने अपने तीन भृत्यों को इशारा किया. वे सब टब के पास पहुंच गए जहां ताकामियामा विश्राम करता है और सभी सुकेबितो* उस के १९६ किलोग्राम के विशाल शरीर को रगड़ते, उस की मालिश करते और नहलाते हैं. इस बीच दूसरे शागिर्द सूमोतोरी दोपहर के भोजन के लिए तैयारी करते. (दिन का यह पहला भोजन सूमो पहलवानों का ख़ास भोजन है जिसे गोश्त, मछली या सब्ज़ियों को उबाल कर बनाया जाता है.)

सामंती परिवेश. सूमो खेल जगत की एक अनोखी कुश्ती है क्योंकि इस के पहलवानों को पूरे एक साल तक शारीरिक और आध्यात्मिक अनुशासन में बंध कर चलना होता है. तोकियो के अधिकांश अखाड़े १८वीं शताब्दी के मध्य काल के हैं. उन के प्रशिक्षण नियमों में शायद ही कोई बदलाव हुआ है.

इन अखाड़ों में ऊंच नीच का भेदभाव बख़ूबी बरता जाता है. कनिष्ठ पहलवानों के साथ गुलामों की तरह व्यवहार किया जाता है, जबकि उच्च स्तरीय पहलवान किसी राजा महाराजा की तरह आदर के पात्र होते हैं. सूमोतोरी को हर रोज़ ठोकर मारी जाती है, उस का अपमान किया जाता है, उसे नीचा दिखाया जाता है ताकि 'जुरयो' श्रेणी में पहुंचने की अदम्य इच्छा उस में जाग जाए.

लेकिन सूमो की वर्गीकरण परंपरा पूर्ण रूप से लोकतांत्रिक है. सूमो की सामंती दुनिया में जन्मजात कुलीन कोई नहीं होता. अपने खून पसीना बहा कर मिली सफलता के बल पर ही एक कुलीन तबका तैयार होता है, जो ख़ास आदर पाने का अधिकारी बन जाता है.

इस के कुछ समय बाद ही तोकियो के [illegible] विश्वविद्यालय के अखाड़े (दोहयो) में [illegible] कालेज के सूमो पहलवानों से भिड़ने का [illegible] मिला. कालेज में सूमो के प्रशिक्षक द्वारा आमंत्रित किए जाने पर मैं ने एक बेल्ट बांधी [illegible] मवाशी के नाम से जाना जाता है फिर [illegible] प्रतिद्वंद्वी की तरफ़ क्रूरता से देखते, गुर्राते [illegible] पैर पटकते मैं कुश्ती के पहले की सारी क्रियाएं पूरी करने लगा.

अचानक मैं अपने प्रतिद्वंद्वी पर टूट [illegible] कुछ देर की कशमकश के बाद हम दोनों दोहयो (अखाड़े) से बाहर जा गिरे. यह [illegible] विश्वविद्यालय ने केवल शिष्टाचार [illegible] आयोजित की थी. अगर यह वास्तविक [illegible] होती तो दो सेकंड के भीतर ही मैं [illegible] चाटने लगता.

कुछ घंटों की कुश्ती के बाद हम [illegible] किया. एक शागिर्द पहलवान ने सूमो [illegible] की परंपरा के अनुसार हमारी पीठ को रगड़ [illegible] कर नहलाया. आख़िर ओहदेदारी होने [illegible] आती है.

—[illegible]

*कनिष्ठ पहलवान जो बड़े पहलवानों की सेवा टहल किया करते हैं.

केवल दमित आवाज़ ख़तरनाक होती है.

विगत का बटोही

सुरभि नाग

इतिहास का यह पथिक भूत को भविष्य के लिए संजो रहा है, इतिहास के पैबंद सी रहा है—प्रमाण है . . . . .

पुणे के प्रसिद्ध राजा दिनकर संग्रहालय में पदार्पण करने वाले दर्शकों के साथ अकसर हो लेता है नाटे क़द का वह वयोवृद्ध. कृश तन पर सिलवट भरी धोती और खादी का कुर्ता होता है, और होती है आंखों में एक चमक. संग्रहालय के कमरों और गलियारों में वह आप के साथ साथ हर प्रदर्शित नग से जुड़े क़िस्से और कहावतें बयान करता चलता है. लोग बहुधा उसे संग्रहालय का कोई गाइड मान बैठते हैं, पर वह इस से सर्वथा असंपृक्त अपनी राह चलता रहता है.

यह है संग्रहालय के ८७ वर्षीय मानद निदेशक पद्मश्री दिनकर गंगाधर केलकर. लोग इन्हें 'काका साहब' कह कर बुलाते हैं. संग्रहालय में प्रदर्शित एक एक चीज़ उन की साठ साल की अनथक मेहनत से जुड़ी है और इस के पीछे है उन की अथाह लगन और साधना का विस्तृत वितान. संग्रह में १५,००० से भी अधिक प्रदर्शनीय पुरा वस्तुएं हैं. इन में सब्ज़ी काटने के हंसुए से ले कर हुक्के, चिलम, ताम्रलेख, जिरह बख़्तर, और विशेष अवसरों पर घोड़े, हाथियों और ऊंटों को पहनाए जाने

चित्र : राओबेल
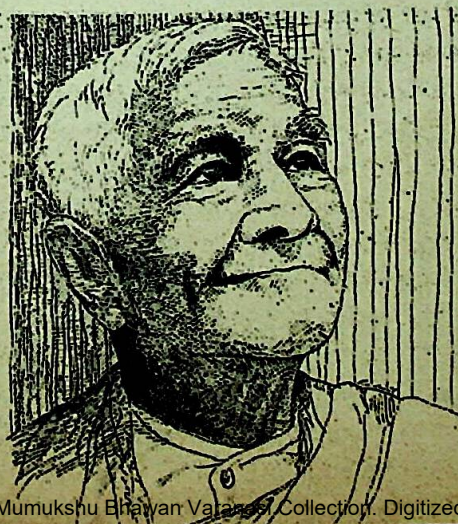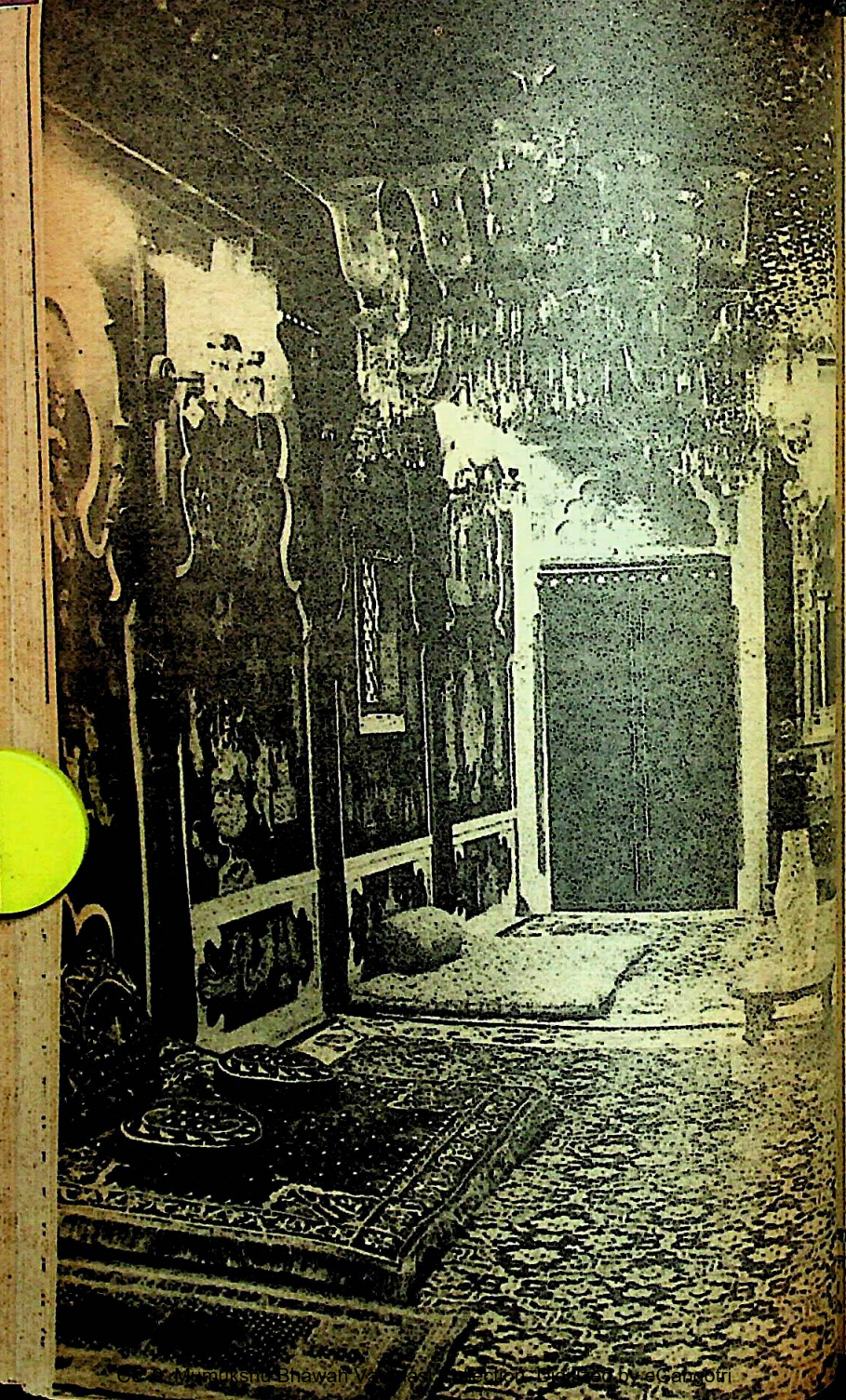
वाले अलंकरण तक शामिल हैं. काका साहब का संग्रहालय भारत के दो प्रमुख निजी संग्रहों में एक है, दूसरा है हैदराबाद का सालारजंग संग्रहालय. पूरे प्राच्य जगत में भी इस की सानी विरले ही मिलती है.

पुरा वस्तुओं के संग्रह में काका की अभिरुचि की ऐतिहासिक जड़ें १९२१ तक गई हैं, जब वे बंबई विल्सन कालेज में पढ़ते थे. वैसे भी काका साहब की रुचि पठन पाठन से कहीं ज़्यादा मराठा इतिहास की विरुदावलि गाने में थी. शिवाजी राजा के पौरुष पराक्रम के विशद बखान में काका का युवा मन कहीं अधिक रमता. वीर गाथाएं उकेरने को सम्यक वातावरण की सृष्टि के लिए उन्हों ने अपने कमरे की दीवारों पर मराठा काल के शस्त्रास्त्र तक चुन दिए. ये प्राचीन हथियार उन्हों ने कुलीन मराठी घरानों से जुटाए थे.

उन्हों ने देखा कि महाराष्ट्र के पुराने, संपन्न घराने पीतल, कांसे और मिश्र धातु की पुरा वस्तुएं कौड़ियों के भाव बेच रहे थे ताकि अपने बंगलों में कांच और बेकेलाइट के आधुनिक तामझाम बटोर सकें. कई बार तो काका ने पुरा महत्व की चीज़ें तौल के भाव ख़रीदीं और वह भी छः आने सेर—यही कोई १.२ किलोग्राम. महाराष्ट्र के अमीर उमरा घरानों से पुराने काठ कबाड़ के बारे में पूछगछ कर के भी काका साहब ने मुग़ल, राजपूत और मराठा शैली के कई पुराने चित्र बटोरे, जो आज बहुमूल्य माने जाते हैं. इसी तरह पीतल व काठ के बरतन से ले कर इत्र फुलेल की पुरानी शीशियां और झांवे तक इन के संग्रह की शोभा बने.

...न ए ख़ास : बाजीराव पेशवा के ...की मलिका मस्तानी के लिए मस्तानी महल की बैठक

...: डीजी शॉटर
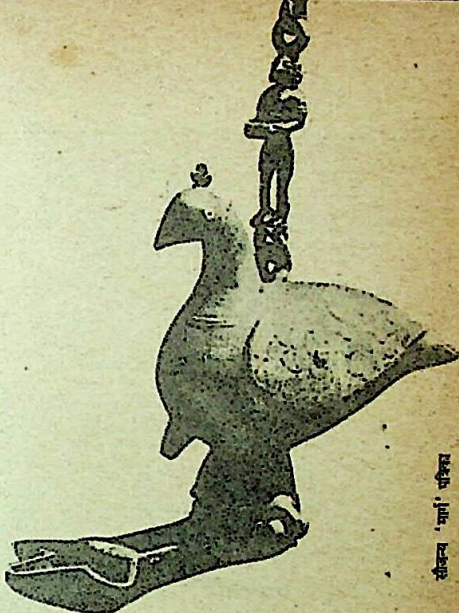
दीप शिखा : अठारहवीं शताब्दी का गुजराती दीपक—आधार में मयूरी और जंज़ीर पर वाद्य वृंद

अतीत की गहराई में खोए से काका कहते हैं, "जैसे कोई शराबी अपने नशे का इतिहास नहीं खोज पाता, उसी तरह मैं भी यह नहीं बता पाऊंगा कि इस पुरा संग्रह के शौक़ में मैं किस किस दौर से गुज़रा. शुरुआत दो चार चीज़ों से हुई और अंततः यही मेरा समर्पण, जीवन धन बन गया."

१९२१ के अंतिम दिनों में काका साहब की धर्मपत्नी कमला सहित पूरा परिवार पुणे चला आया और रेलवे डाक सेवा में सेवारत अपने क्लर्क पिता द्वारा कुल नौ सौ रुपए में ख़रीदे मकान में सब रहने लगे. काका साहब ने वहीं चश्मों की दुकान खोल ली. धंधा १९४१ तक ठाठ से फलता फूलता रहा जबकि उन का इकलौता बेटा राजा मामूली बीमारी के बाद चल बसा. पुत्र शोक से व्यथित पिता की व्यवसाय में कोई रुचि न रही और वह दुकान समेट पुरा वस्तुओं के संग्रह में जुट गए.

इसी बीच बिजली की जगमग घर घर

पहुंचने लगी और तेल के दीपदान एवं लालटेन जैसी चीज़ें मिट्टी के मोल बिकने लगीं. बस, काका साहब ने पीतल के २०० दीपदानों का बढ़िया संग्रह बटोर लिया, और 'लैंप्स आफ़ इंडिया' यानी 'भारतीय दीपक' नाम की एक किताब भी लिख डाली. यह १९६१ में छपी.

पुणे के सम्मानित उद्योगपति और संग्रहालय के संरक्षकों में से एक यानी श्री एन के फ़िरोदिया का कहना है, "काका साहब को एक बार पीतल के दीपदानों के इस संग्रह के लिए कई लाख रुपए पेश किए गए पर उन्हों ने इसे बेचने से कतई इनकार कर दिया, चाहते तो वह अच्छा पैसा बटोर लेते. पर नहीं, किसी निजी लाभ के लिए वह ये चीज़ें जमा नहीं कर रहे थे. यह तो बस, उन के प्रेम और शौक़ की बात है."

शुरू में काका साहब ने अपने ही घर के कुछ कमरों में इन पुरातत्व और कला वस्तुओं को संजो कर रखा. कालक्रम में संग्रह इतना व्यापक हो गया कि उसे संभालना एक आदमी के वश की बात न रही. अंततः १९६२ में काका साहब इस बात पर राज़ी हो गए कि महाराष्ट्र सरकार ही इस के रख रखाव और संरक्षण का ज़िम्मा संभाले. १९७५ में उन्हों ने यह संग्रह सरकार को दान कर दिया—मकान का एक छोटा हिस्सा ही अपने निजी प्रयोग के लिए रखा. अंततः संग्रहालय का नामकरण काका साहब के स्वर्गीय पुत्र के नाम पर 'राजा दिनकर केलकर संग्रहालय' रख इसे सार्वजनिक लाभ के लिए खोल दिया गया. साथ ही काका साहब इस के आजीवन, मानद निदेशक बना दिए गए, और उन्हों ने संग्रहालय के विस्तार के लिए निजी स्तर पर कोष संग्रह का ज़ोरदार अभियान शुरू कर दिया.

पुणे के भीड़ भड़क्के वाले बाज़ार से हट कर निकली एक संकरी गली के [illegible] स्थित यह तीन मंज़िला संग्रहालय [illegible] जर्जर मकानों, मोटर गराजों और गो[illegible] अटे परिवेश में एकदम घुल मिल [illegible] बाहर एक साइनबोर्ड पर संग्रहालय का [illegible] साधारण से दरवाज़े के दोनों ओर [illegible] शताब्दी के दो प्रस्तर गजराज खड़े हैं—इस धरोहर के रक्षक हों.

सौजन्य [illegible]
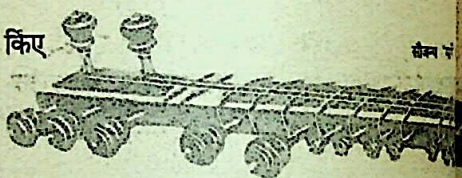
संग्रहालय के प्रवेश द्वार पर शिवाजी के सौतेले भाई सरफ़ो की चार फ़ुटी कांस्य [illegible] प्रार्थना की मुद्रा में खड़ी है—हाथों में दीप रखा है. काका साहब ने इसे १९[illegible] तंजौर महाराज से २०,००० रुपए में [illegible] था. आगे चल कर आप किर्लोस्कर [illegible] पहुंचते हैं जिस में गुजराती, राजस्थानी, [illegible] और दक्षिण भारतीय शैली की मनोहर [illegible] कारी से युक्त काष्ठ द्वार हैं. कुछ में हा[illegible] और पीतल का बारीक काम भी है.

निचले माले पर काका की बहुमूल्[illegible] है—भगवान राम की तीन फ़ुट ऊंची [illegible] प्रतिमा. यह तेरहवीं शताब्दी की है. मदु[illegible] के दौरान काका साहब ने यह [illegible] प्रतिमा एक दुकान पर बिक्री के लि[illegible] देखी. उसी दिन काका साहब पास [illegible] कबाड़ गोदाम में पीतल की एक [illegible] प्रतिमा पड़ी देख चुके थे. उन की पारखी [illegible] ने दोनों की अभिन्नता तत्काल गुन [illegible]

उन्हों ने कुल ६०० रुपए में दोनों खंड ख़रीद लिए, आज इस की कीमत दो लाख है.

पहली दो मंज़िलों के एक भाग में प्रसिद्ध 'मस्तानी महल' के कुछ हिस्से भी संजो कर रखे गए हैं. १९५४ में काका साहब ने किसी अख़बार में पुणे के पास के एक गांव कोथ्रुड में एक पुराने मकान के गिराए जाने से संबंधित सूचना देखी. वे दौड़े दौड़े वहां पहुंचे और १८वीं शताब्दी के मध्य की वह पुरानी इमारत देखते ही सब समझ गए. यह महल पेशवा बाजीराव प्रथम ने अपनी मुसलमान उपपत्नी 'मस्तानी' के लिए बनवाया था. यह बेढब महल फ़व्वारों, लकड़ी के नक़्क़ाशीदार स्तंभों, ख़ूबसूरत झरोखों, छज्जों, जंगलों, वेदिकाओं और मेहराबों से सुसज्जित था. विशाल कक्षों की दीवारों पर शीशे जड़े थे और पीतल की नाज़ुक ज़ंजीरों से झाड़फ़ानूस झूल रहे थे. काका साहब ने कुल १,००१ रुपए में महल ख़रीद लिया और उस की एक एक ईंट अलग कर उस के एक भाग को संग्रहालय में फिर से खड़ा कर दिया.

मयूर वीणा : दक्षिण भारतीय सितार का कमनीय रूपाकार

रामायण : मराठी लोक चित्र पर महारथी राम द्वारा राक्षसों का संहार

डौली शहियार
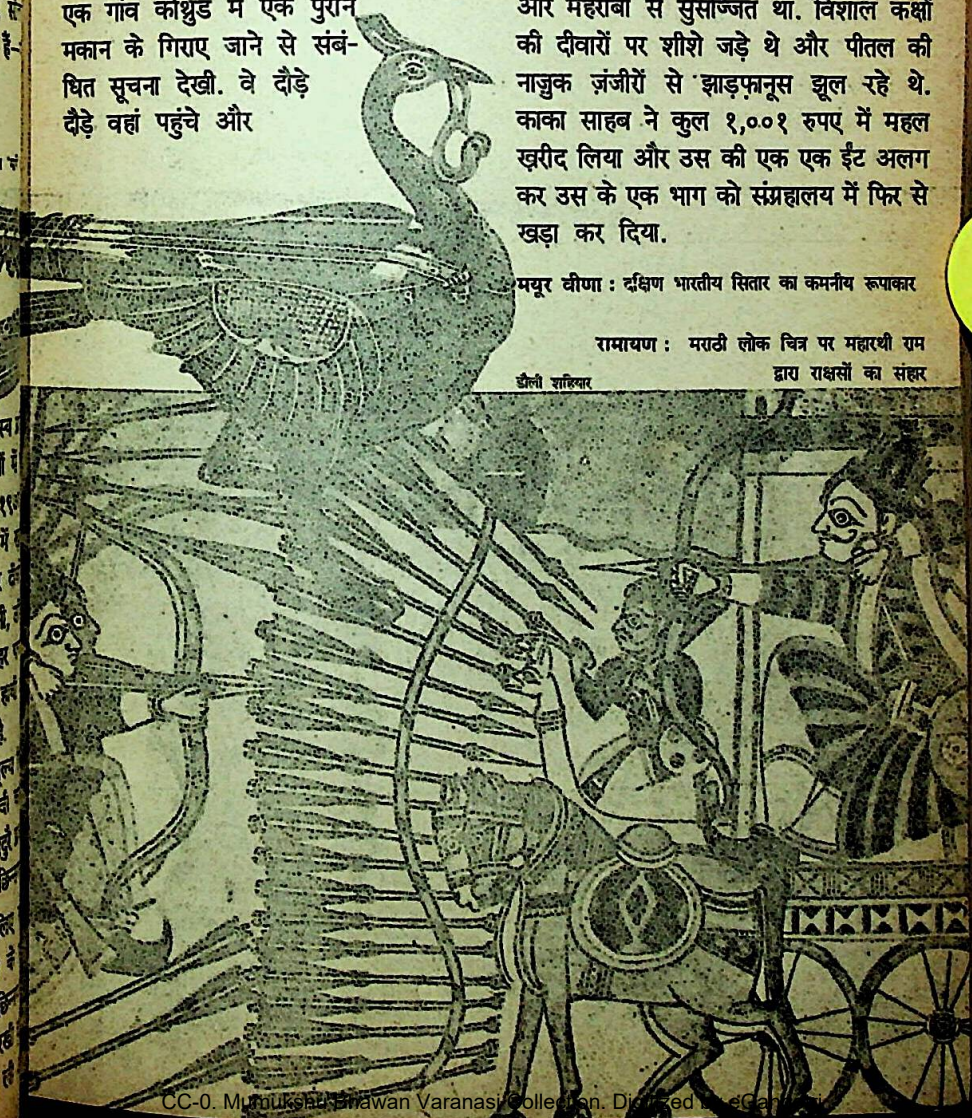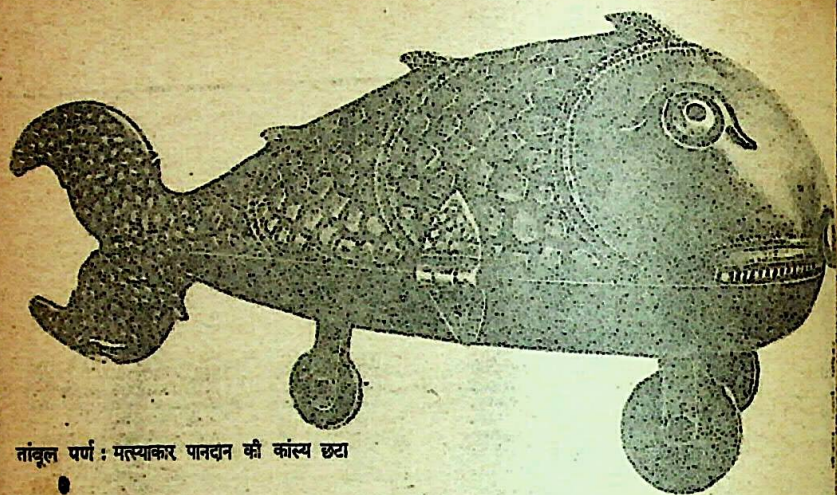
तांबूल पर्ण : मत्स्याकार पानदान की कांस्य छटा

अपनी ख़रीदारियों के बारे में काका साहब कहते हैं, "अपनी अंतःप्रेरणा से वशीभूत वेही वस्तुएं ख़रीदता हूं जो मेरी कलात्मक संवेदना को आंदोलित करती हैं." सरकार द्वारा प्रदत्त रेल पास से उन्हें संपूर्ण भारतवर्ष में निःशुल्क भ्रमण की सुविधा प्राप्त है. वह भारत का कोना कोना छान चुके हैं और कभी कभी तो लंबी पदयात्रा कर के भी दूरदराज़ के दुर्गम गांवों तक जाते रहे हैं. ऐसी ही एक यात्रा के दौरान वह पुणे से १२० किलोमीटर दूर सतारा के पास एक गांव में पहुंचे. वहां के किसी व्यक्ति ने दावा किया था कि उस के पास कुछ बहुमूल्य चित्र हैं. लेकिन ऐसा कुछ नहीं था. हां, पास के एक जीर्ण मकान में काका साहब को एक धुंधली लघु (मिनिएचर) चित्रकृति मिली जिस में एक व्यक्ति किसी महिला को कंधे चढ़ाए ले जाता दीखता था. मन की उचंग के भरोसे काका ने वह चित्र देने के लिए उस के मालिक को रज़ामंद कर लिया. बाद में उन्हें पता चला कि चित्र के पीछे लंबा इतिहास है.

१९७१ की पानीपत की लड़ाई में मराठा सेनापति भाऊ सदाशिव राव पेशवा अपनी धर्मपत्नी पार्वतीबाई को भी रण क्षेत्र में साथ ले गए. लड़ते लड़ते वह ग़ायब हो गए और मान लिया गया कि खेत रहे. इस पर पा-बाई का एक सेवक उन्हें अपने कंधे चढ़ा घर ले गया. और इसी अज्ञात ऐतिह- घटना का चित्रण उस दुर्लभ चित्र में गया जो अकस्मात काका साहब के हाथ

उम्र हो जाने के बावजूद काका आश्चर्यजनक रूप से सक्रिय हैं उ भावी योजनाओं में वर्तमान संग्रहालय के ही और ज़मीन ले कर एक चार मंजिला खड़ा करने की योजना शामिल है. इस में शोध संस्थान के साथ ही 'स्त्रियों का सं-लय' खोला जाएगा. जिस में भारत के राज्यों में नारी जीवन से संबंधित केश वि- वेशभूषा, प्रसाधन सामग्री आदि का प्र- किया जाएगा.

इसी खंड में काका साहब अपनी कठपुतलियों और मुखौटों के अलावा संग्रह की १,२०० सूक्ष्म चित्रकारियां संजोना चाहते हैं. जो आज बक्सों में बंद हैं.

यों वर्तमान इमारत के प्रांगण में का- साहब परिवहन के परंपरागत भारतीय सा- —पालकी, रथ तथा बैल एवं घोड़ा गाड़ि- —प्रदर्शित करना चाहते हैं.
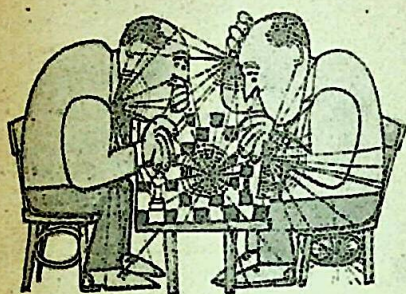
सोचने की बात

ब्रूस बारटन, अमरीकी लेखक एवं राजनीतिज्ञ (१८८६-१९६७) :

विश्व को देने के लिए आप के पास कुछ अमूल्य है तो वह आप के व्यक्तित्व मात्र से स्वतः प्रस्फुटित हो जाएगा. उस दैव दीप्ति की एकमात्र किरण आप को अन्य प्राणियों से भिन्न बना देगी.

पाल लोनी :

किसी भी व्यक्ति का जीवन अपने आप तक सीमित नहीं. छुद्र से छुद्र व्यक्तित्व का भी दूसरों पर प्रभाव पड़ता है. ठीक उसी प्रकार जैसे थिर जल में कंकड़ फेंकने से सारा पानी आंदोलित हो उठता है. अतः अपने जीवन से दूसरों को प्रभावित न करने वाला व्यक्ति छायाहीन व्यक्ति समान है.

कैथरिन बटलर हैथवे का नए अनुभवों के बारे में कहना है :

वैभव विलास में पले बढ़े लोग नए अनुभवों से आमने सामने होते कतराते हैं. वे अपने बारे में जो कुछ मान कर बैठे हैं उस से हट कर किसी और रूप में अपने को देखने, लेने की बात उन के चरित्र के प्रतिकूल है. लेकिन ये नए अनुभव ही जीवन को जीवंत बनाते और सार्थकता की ओर ले जाते हैं. उपयुक्त क्षणों में मिलने वाले नए, अनंजाने, असाधारण अनुभव व्यक्ति के जीवन में वही स्थान रखते हैं जो किसी खेत में हल का होता है. —'द लिटल लाकस्मिथ'

जान कैनेथ गैलब्रेथ, अर्थशास्त्री और भारत स्थित भूतपूर्व अमरीकी राजदूत :

पैसा अद्भुत चीज़ है. मानव की खुशी के सब से बड़े स्रोत रूप में इस का स्थान प्रेम के साथ है और उस की सब से बड़ी चिंता के रूप में मृत्यु के साथ. पैसे वालों और ग़ैर पैसे वालों के मामले में भी यह महत्व की दृष्टि से मोटरगाड़ी, रखैल या कैंसर से भिन्न महत्ता रखता है. इतिहास गवाह है कि पैसे ने लोगों को इस या उस तरह से प्रभावित अवश्य किया है. या तो यह भरपूर होता है और इस के पांव होते हैं अथवा यह बहुत कम होता है, परंतु इस के पांव नहीं होते. बहरहाल आजकल बहुत से लोगों को इस के साथ तीसरी दिक़्क़त भी जुड़ी दिखती है : एक तो यह पहले ही कम होता है' दूसरे इस के पांव भी होते हैं.

—'मनी : वेंस इट केम, व्हेयर इट वेंट'

लुएलइन पोइज़, अंग्रेज लेखक :

प्रत्येक परिवार, चाहे वह कितना ही साधारण क्यों न हो, अपने अतीत की कोई न कोई गाथा लिए होता है—ऐसी गौरव गाथा जिस का दुराग्रही मोह हमें राजाओं, महाराजाओं की वैभवशाली परंपराओं की भांति बांधे रहता है.

—'अर्थ मेमोरीज़'

सर रिचर्ड डौल :

शोध का बुनियादी कार्य और विकास का काम, दोनों परस्पर भिन्न बातें हैं. जहां तक विकास का प्रश्न है, उसे निर्धारित समय से पहले ही पूरा कर लेना असंभव नहीं. लेकिन आधारभूत सत्य यह है कि शोध की अपनी गति होती है. आख़िर यह आशा कैसे की जा सकती है कि नौ स्त्रियां एक साथ गर्भवती हो कर कुल एक माह में मां भी बन जाएं.

—'न्यू साइंटिस्ट', इंगलैंड

एक प्याला मज़ेदार चाय

जार्ज आर्वेल

पाक विद्या की किसी भी पुस्तक में 'चाय' शीर्षक के नीचे लिखे ब्योरों में आप को कुछ स्थूल निर्देश ही मिलेंगे, जो अनेक महत्वपूर्ण प्रश्नों पर किसी तरह का प्रकाश नहीं डालते. यह अजीब बात है, क्योंकि चाय बनाने की सर्वश्रेष्ठ विधि स्वयं में विवाद का विषय है.

अनिंद्य चाय के प्याले की पाक विधि का जायज़ा लेते वक़्त मेरे सामने ११ अनमोल नियम आते हैं. मेरे लेखे इन में से हर एक बेशक़ीमती है:

जार्ज आरवेल (१९०३-१९५०) का वास्तविक नाम था एरिक ब्लेर. ब्रिटिश लेखक आरवेल उग्र वामपंथी थे. उन के उपन्यास '१९८४' (१९४९) में पथभ्रष्ट शासकों और बर्बर मनुष्यों के भयंकर संसार का वर्णन है. 'एनीमल फ़ार्म' (१९४५) में सोवियत तानाशाही पर आक्रमण है.

सब से पहले, चाय पत्ती हिंदुस्तान श्रीलंका की ही इस्तेमाल करनी चाहिए. की चाय के गुणों की भी उपेक्षा नहीं की सकती—यह किफ़ायती है और बिना दू भी पी जा सकती है—मगर इस से तल मिटती. इसे पी कर आदमी ख़ुद को समझदार, बहादुर या आशावादी महसूस करता. जब भी कोई "एक प्याला चाय" की बात कर के तसल्ली देने कोशिश करता है, उस का मतलब हिंदुस्ता चाय से ही होता है.

दूसरे, चाय हमेशा थोड़ी थोड़ी मात्रा यानी चायदानी से ढाल कर बनानी चाहिए. देगची से उंडेली चाय हमेशा बेस्वाद होती जबकि हंडों में उबाली फ़ौजियों की चाय

सोनिया आर्वेल एवं आयन एंगस द्वारा संपादित 'द कलेक्टेड एसेज़, जर्नलिज़्म ऐंड लैटर्स आफ़ जार्ज आर्वेल' से संक्षिप्त. कापीराइट १९६८ सोनिया

और सफ़ेदी के काढ़े जैसी लगती है. चायदानी चीनी मिट्टी या मिट्टी की होनी चाहिए. चांदी या ब्रिटेनिया मेटल के बरतनों की चाय कमतर होती है और तामचीनी के बरतनों की बदतर. हालांकि कांसे के बरतन, जो आजकल दुर्लभ हो गए हैं, चाय के मामले में ऐसे बुरे नहीं होते.

तीसरा नुक़्ता यह कि पत्ती और पानी मिलाने से पहले चायदानी को गरमा लेना चाहिए. इस का बेहतर तरीक़ा यह है कि बरतन को गरम पानी से खंगालने के बजाए उसे अंगीठी के किनारे रख लें.

चौथे, चाय कड़क होनी चाहिए. दो पाइंट या लगभग एक लीटर की चायदानी मुंह तक भरनी हो तो पत्ती के छः लबालब चम्मच ठीक रहेंगे. सच्चे चाय प्रेमी चाय न सिर्फ़ कड़क पसंद करते हैं, बल्कि साल दर साल उन की पहले से ज़्यादा कड़क पीने की तलब भी बढ़ती जाती है.

पांचवें, चाय प्याले में सीधे डाली जानी चाहिए. जाली, मलमल के झोले आदि जैसे चाय को जकड़े रखने वाले किसी भी उपकरण की दरकार नहीं होनी चाहिए. कुछ देशों में चायदानी की टोंटी से एक झूलती हुई टोकरीनुमा जाली लगी होती है जो घोल के संग टपकने वाली इक्का दुक्का पत्ती को दबोच लेती है. ये पत्तियां हानिकारक मानी जाती हैं. हक़ीक़त यह है कि उबली हुई चाय की कितनी भी पत्तियां आप निगल जाएं, कोई नुक़सान नहीं होगा. इस के अलावा, पानी में पत्ती अगर खुल्ली न बूड़े तो चाय में लज़्ज़त भी नहीं आती.

छठे, खौलता पानी डालने के लिए चायदानी को केतली या देगची के पास ले जाना चाहिए, न कि खौलाने वाले बरतन को चायदानी के पास. चायदानी में डालते समय पानी खौलता होना चाहिए; यानी पानी सीधे आंच से उठाया जाना चाहिए. कुछ लोग यह भी कहते हैं कि पानी हमेशा ताज़ा उबालना चाहिए. पर मैं ने ताज़ा या बासी पानी में कभी कोई फ़र्क़ महसूस नहीं किया.

नंबर सात. पानी मिलाने के बाद पत्ती को ख़ूब चलाना चाहिए. बल्कि, बेहतर यह होगा कि चायदानी को अच्छी तरह झकझोरें और फिर पत्ती को तली पर बैठ जाने दें.

आठवां क़ायदा यह है कि चाय हमेशा नाश्ते वाले, गहरे, मग्गे जैसे प्याले में पीनी चाहिए—न कि चपटे, उथले प्याले में. मग्गे में चाय देर तक गरम रहती है, जबकि फ़ैशनेबल प्यालों में सुड़कना शुरू करने से पहले ही वह आधी ठंडी हो चुकी होती है.

नौवां काम होना चाहिए चाय में डालने से पहले दूध की मलाई उतारना. मलाई वाले दूध से चाय चिपचिपी हो जाती है.

दसवां काम होना चाहिए मग्गे में पहले चाय डालने का. यह चाय का सब से विवादास्पद नियम है. दूध पहले डालने के हामी बहुत ज़ोरदार दलीलें पेश कर सकते हैं, परंतु मेरे ख़याल से मेरी दलील लाजवाब है. पहले चाय डाल कर उसे चलाते चलाते दूध डालें तो दूध ज़रूरत के मुताबिक़ डालना अपने बस में रहता है; जबकि कहवा बाद में डालने वाली पद्धति में बहुत अधिक दूध डल जाने का ख़तरा बराबर रहता है.

मेरा अंतिम सुनहरा नियम यह है कि चाय—अगर आप रूसी ढंग से न पी रहे हों, तो—हमेशा बिना मीठे के पीनी चाहिए. मैं जानता हूं कि इस मामले में मैं अल्पमत में हूं, पर चीनी मिला कर चाय के असली फ़्लेवर का नाश पीट देने के बाद कोई अपने आप को

सच्चा चाय रसिक कैसे कह सकता है? अगर चाय में मीठा मिलाया जा सकता है तो नमक काली मिर्च भी मिलाए जा सकते हैं. मैं समझता हूं चाय की लज़्ज़त उस के तीतेपन में है—जैसे बियर का लुत्फ़ उस के तीतेपन में है. अगर आप चाय में मीठा डालते हैं तो आप मीठे वाली चाय नहीं, चाय वाला मीठा पीते हैं. बिलकुल ऐसा ही पेय आप गरम पानी में चीनी मिला कर भी तैयार कर सकते हैं.

कुछ लोग कहेंगे कि चाय उन्हें अच्छी नहीं लगती और वे तो इसे महज़ थकान उतारने और सरूर सा महसूस करने के लिए पीते हैं; और इस की तिश्नगी मारने के लिए वे इस में मीठा मिलाते हैं. ऐसे भटके हुए लोगों से मैं कहना चाहूंगा : पंद्रह दिन तक कोशिश कर के बिना मीठे की चाय पीजिए, उस के बाद शायद आप कभी मीठा मिला कर अपनी चाय को बदमज़ा नहीं बनाना चाहेंगे.

ध्वस्तक

मैं दस किलोमीटर लंबी दौड़ से पूर्व अपना बदन गरमा रहा था. तभी देखा कि कुछ युवतियां दौड़ में भाग लेने के लिए प्रस्तुत एक आवेदन पत्र को ले कर खिलखिला रही हैं. उत्सुकतावश उन के पास पहुंचा और झुक कर देखा तो नज़र फ़ार्म के बीचोबीच छपी एक प्रविष्टि पर पड़ी. 'पिछला श्रेष्ठतम समय' यानी 'पिछली बार इस दौड़ को आप ने कम से कम, कितने कम समय में पूरा किया था?' के सामने एक धावक बंधु ने घसीट मारा था : सन बहत्तर में स्कूल में आयोजित भूतपूर्व छात्रों का मिलनोत्सव.

—'रनर्ज़ वर्ल्ड'

मेरे ननद ननदोई हाल ही में विदेश यात्रा से लौटे, तो मेरी वर्षगांठ के लिए महंगे विदेशी इत्र की एक शीशी लेते आए. सारा परिवार घर पर जुटा था, तो उन्हों ने वह भेंट मुझे दी. मैं ने कृतज्ञता व्यक्त करने के बाद शीशी आगे बढ़ा दी. सब लोग देखना भी चाहते थे कि उस की सुगंध कैसी है. घूमते फिरते वह एक नवविवाहित जोड़े के पास पहुंची, तो पतिदेव इत्र सूंघते ही चहके, "अरे! इस इत्र वाली से तो मेरी निभ नहीं पाई."

—श्रीमती बी एस

स्वास्थ्यकर

आपरेशन के बाद स्वास्थ्य लाभ करते करते मेरा पड़ोसी चिड़चिड़ा हो गया और उस ने दिन में तीन बार दस दस मिनट की सैर करने का डाक्टरी निर्देश मानने से इनकार कर दिया. उस की पत्नी ने बहुत ख़ुशामद की, कोंचा भी; पर उस कर कोई प्रभाव न पड़ा.

अंततः उस ने एक युक्ति निकाल ही ली. दिन में तीन बार वह घर भर की बत्तियां जला देती. पति को इस फ़ुज़ूलख़र्ची से चिढ़ थी, सो वह मन मार कर उठता और बत्तियां बुझाता. इस तरह उसे दिन में तीन बार उठ कर घर भर की बत्तियां बुझाते फिरने में दस मिनट लगते और डाक्टर की बात पर अमल भी हो जाता.

—बी सी आर

कथा कहानी

दुनिया भर के लोग छः दिन तक रेडियो से कान लगाए वे रहस्यमय संदेश सुनते रहे

रुकावट के लिए खेद है

जार्ज समनर एल्बी

मार्च के पहले सोमवार को रात के ९ बज कर ३८ मिनट पर वह अपरिचित और राजसी स्वर पहली बार वायु तरंगों पर गूंज उठा. वही दिन और वही समय क्यों चुना गया, यह कोई नहीं बता सकता. जो भी हो, तात्कालिक प्रतिक्रिया अविश्वास की थी. लोगों को कानों पर भरोसा नहीं हो रहा था.

पेनसिल्वानिया स्थित डोयल्ज़ टाउन के निवासी फ़्लोयड उफ़ेलमान तहख़ाने में अपने बेटे लाइमेन की विद्युत ट्रेन से खेल रहा था और उस समय प्रसारित हो रहे प्रश्नोत्तर कार्यक्रम को पोर्टेबल रेडियो पर सुन रहा था. एकाएक प्रश्नोत्तर कार्यक्रम रुक गया और एक ऐसी ठोस आवाज़ उभरी जिस में गंभीरता थी, और थी शुभचिंता :

मैं ईश्वर बोल रहा हूं. मुझे खेद है, प्रसारित होते कार्यक्रम को बीच में ही रोकना पड़ा. वैसे तो सृष्टि की प्रत्येक योजना नियमानुसार चलनी चाहिए, लेकिन, ऐ सूर्य के तीसरे ग्रह के प्यारे बच्चो! तुम ने अपने आप को विनाश के ऐसे कगार पर खड़ा कर लिया है कि मुझे आना ही पड़ा. मैं यह सप्ताह तुम्हारे साथ बिताऊंगा.

फ़्लोयड क्षण भर के लिए अवाक रह गया. "यह ज़रूर लाइमेन की शरारत है. वही अपने कमरे से माइक्रोफ़ोन पर बोल रहा होगा और इस रेडियो का कोई तार उस से जोड़ दिया होगा."

सीढ़ियां चढ़ कर वह बेटे के कमरे में गया.

कहानीकार और उपन्यासकार जार्ज समनर एल्बी (१९०५-१९६४) द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान अमरीकी राजस्व मंत्री के सहायक थे

कापीराइट १९४८ ... न्यूयार्क से प्रकाशित 'कास्मोपोलिटन' (अगस्त १९४८) से संक्षिप्त

एक हाथ में एक पांव लिए लाइमेन उस समय अंकगणित के सवालों के साथ मगज़पच्ची कर रहा था.

"तुम ने रेडियो के साथ क्या किया ?" पिता ने पूछा.

"मैं ने ? कुछ भी तो नहीं. टूट गया है ?" लड़का बोला.

फ़्लोयड सख़्त उलझन में पड़ गया. वह लपक कर अपने पड़ोसी जीन ह्यूकिल के यहां पहुंचा.

"जीन," फ़्लोयड ने पूछा, "अभी अभी प्रश्नोत्तर कार्यक्रम सुना तुम ने ?"

"नहीं तो," जीन ने उत्तर दिया. "मैं तो रेडियो मंच कार्यक्रम सुन रहा था."

"तो फिर तुम वह सब नहीं सुन पाए होगे.," फ़्लोयड ने कहा.

"क्या ? . . . अच्छा, वह! . . . वह सब तुम ने भी सुना ?" हैरान हो कर जीन ने पूछा. "लानत है हम सब पर."

डोयल्ज़ टाउन ही ऐसा क़सबा नहीं था जो अचरज में डूबा हो. सुबह तक यूरोप, एशिया, अफ़्रीका, दक्षिण अमरीका और आस्ट्रेलिया से भी समाचार आ गया. सब को पता चल गया था कि वह प्रसारण विश्व व्यापी था और अनेक भाषाओं में प्रसारित किया गया था. अरबों ने अरबी में और दक्षिण अफ़्रीका के आदिवासियों ने अपनी बोली में सुना.

"क्या ख़याल है तुम्हारा उस प्रसारण के बारे में ?" लोग एक दूसरे से पूछ रहे थे. "मुझे नहीं पता," ये विनम्र शब्द मार्च महीने के उस मंगल को उस से पहले कभी इतनी बार नहीं बोले गए थे.

सूरज डूब गया. आठ बजे तक बिजलीघरों के धारामापी यंत्र ऐमीटरों में बिजली का बोझ हद से ज़्यादा बढ़ गया. श्रोताओं को भी निराश नहीं होना पड़ा. ठीक ९ बज कर ३८ मिनट पर वही ... और मैत्रीपूर्ण स्वर फिर सुनाई दिया:

"डरो मत. मैं तो बस तुम्हें इस बात का क़ायल करना चाहता हूं कि मैं ईश्वर ही हूं. ... सप्ताह मैं तुम्हारे यहां आ रहा हूं."

इस बार जब ईश्वर की आवाज़ आई तो रेडियो संकेतों द्वारा दिशान्वेषकों ने इस प्रसारण की दिशा स्थिति की जांच करनी चाही, लेकिन कोई चालबाज़ी नज़र नहीं आई. कुछ लोगों का ख़याल था कि यह रूस की शरारत है, लेकिन फ़िलहाल उसे बरी कर दिया गया.

बुधवार को अख़बारों के पन्ने के पन्ने इस आवाज़ की ख़बर से रंगे थे. इस आवाज़ के बारे में कुछ वैज्ञानिकों की राय ली गई. उन में से कुछ अज्ञातवास में थे. वे सब इस बात पर सहमत थे कि आवाज़ किसी पुरुष की है. भाषाओं और बोलियों के एक अध्यापक का दावा था कि उस का लहजा मासाचुसेट्स में जनमे और ग्रोटन (प्रतिष्ठित और मंहगा माध्यमिक स्कूल) में पढ़े लिखे आदमी का है.

"अगर वह ईश्वर ही बोल रहा था," तर्कशास्त्र के एक प्रोफ़ेसर ने ध्यान दिलाया, "तो उसे यह सब रेडियो पर कहने की क्या ज़रूरत थी!"

चर्च के पादरियों के वक्तव्य नपे तुले थे. "वह आवाज़ ईश्वर की न भी हो," एक अंग्रेज़ पादरी ने कहा, "तो भी वह हमें इस बात की याद दिलाती है जिसे हम में से बहुत से याद नहीं रखते कि ईश्वर हमारे साथ है."

बुधवार की शाम को अमरीका भर में लोग बड़े उत्साह से प्रार्थना सभाओं में शामिल हुए. अधिकांश गिरजाघरों में रेडियो लगा दिए गए थे. तीसरा प्रसारण मात्र तीन शब्दों का था. जो लोग ईश्वर को धीर गंभीर और निरानंद मानते हैं, उन्हें सुन कर बहुत बुरा लगा क्योंकि वे ...

वात्सल्यपूर्ण हंसी के साथ बोले गए थे. वे शब्द थे :

"यह मैं हूं."

उस समय जो भी रेडियो ट्रांसमीटर चल रहे थे, उन के कायल और कंडेंसरों में पहले संदेशों के समान यह तीसरा संदेश भी संचारित हो गया. उन में वे जलयान भी शामिल थे जिन का निर्माण मात्र संकेत ग्रहण करने के लिए किया गया था और जिन में माइक्रोफोन नहीं लगाए गए थे. इसी से पता चलता था कि ईश्वर ने अपने संदेश रेडियो से क्यों प्रसारित किए. अगर वह सीधा आकाश से उद्घोष करता तो शायद दहशत फैल जाती. चूंकि लोग रेडियो पर आवाज़ें सुनने के आदी हैं, इस लिए कहना चाहिए कि ईश्वर लिहाज़दारी बरत रहा था.

मानव मनोविज्ञान संबंधी ईश्वर की जानकारी बेजोड़ थी. (सोचा जाए तो इस में हैरानी की बात भी नहीं.) "यह मैं हूं" के संक्षिप्त से वाक्य ने उन लोगों को भी भरोसा दिला दिया जिन्हें विनम्रता और कम बयानी पसंद है.

बृहस्पतिवार को एक और तरीका अपनाया गया : नासमझ और अंधविश्वासी लोगों के लिए चमत्कारों का प्रदर्शन. सारे भूमंडल पर कोई ८०-८० किलोमीटर की दूरी पर चमत्कार घटित हुए. बहुत से साधारण क़िस्म के थे.

विसकौंसिन की होबर्ट स्ट्रीट मार्केट में संतरे लुढ़कते हुए दीवार से जा लगे और अजमोद के सुंदर चौखटे में अक्षरों के आकार में जम गए. इबारत इस तरह पढ़ी जाती थी : सब इनसान मेरे बेटे हैं और इस लिए सब भाई भाई हैं. कोपेनहेगन के चिड़ियाघर में एक सिंह पिंजरे से बाहर निकल आया और मटरगश्ती करता देहात की ओर निकल गया. वहां उसे एक खेत में कुछ भेड़ें दिखाई दीं और वह उन भेड़ों के बीच जा लेटा. कैलिफ़ोर्निया स्थित पासाडीन में एक बेहाल औरत जिस का पति नींद में दांत किटकिटाता था, अराइओ सीको के पुल से नीचे कूद गई. पौन घंटे तक वह अधर में लटकी रही. जब आग बुझाने वाले इंजन ने उस की ओर एक लंबी सीढ़ी फैलाई, तब कहीं जा कर वह नीचे उतर पाई.

ये चमत्कार भले ही छोटे छोटे थे, लेकिन इन का उन लोगों पर भी ज़बरदस्त असर हुआ जो रेडियो पर गंभीर और ओजपूर्ण आवाज़ सुन कर भी तनिक घबराए नहीं थे. फ्रांस की विधान सभा के सदस्यों ने तो जैसे बलवा मचा दिया. वे एक दूसरे पर फ़िक़रे उछाल रहे थे और 'ऊंट' की उपाधि से एक दूसरे को विभूषित कर रहे थे : क्रांति और बुद्धिवाद से विश्वासघात करने के आरोप एक दूसरे पर मढ़े जा रहे थे. अमरीका में सब से ज़्यादा ग़ुस्सा आया न्यू यार्क के वाल्टर वालीरियन को. वह रूढ़ि भंजक था और निरीश्वरवाद को बढ़ावा देने वाली संस्था का अध्यक्ष था. उस ने देश के सभी भागों से अपनी संस्था के सदस्यों को सामूहिक विरोध प्रकट करने के लिए तुरंत न्यू यार्क बुलाया.

बृहस्पतिवार की शाम को ईश्वर का प्रसारण लंबा था और उस में धर्म दर्शन कूट कूट कर भरा था :

"तुम्हारे पांव के नीचे का हर कंकर, पानी की हर बूंद—एक चमत्कार है. चूंकि तुम ने भयभीत और विस्मित होने की क्षमता खो दी है, इस लिए आज मुझे कुछ और चमत्कार दिखाने पड़े जो प्राकृतिक नियमों की अवहेलना मात्र हैं. तुम्हारे लिए मैं ने जो नियम तोड़ा है, उस से तुम पर यह बात स्पष्ट हो जानी चाहिए कि मुझे तुम से कितना प्रेम है. सर्वशक्तिमान देव को भी अपना बल मर्यादा में रखना पड़ता है. ख़ैर, यह बात कट्टरपंथियों को क़ायल नहीं करेगी. इस लिए मैं कल शुक्रवार को दोपहर से पहले कई बड़े बड़े करिश्मे दिखाऊंगा और ठीक दोपहर के

समय आस्ट्रेलिया महाद्वीप को एक मिनट के लिए समुद्र के नीचे डुबो दूंगा."

बृहस्पतिवार के सायंकालीन प्रसारण के बाद सारा अविश्वास धुल गया. करोड़ों अरबों लोगों को विश्वास हो गया कि वह आवाज़ ईश्वर की ही थी. सारे का सारा मुसलिम जगत मक्का जाने वाली सड़कों पर हो लिया. चीन की पीली धरती पर दिन रात पटाखे चलते रहे. दक्षिण अमरीका के पहाड़ों में बसने वाली ओज़ार्क नामक एक जाति के सदस्य अपने आप को चादरों में लपेटे एक पहाड़ी की चोटी पर जमा हो गए और संसार के आसन्न विनाश की प्रतीक्षा करने लगे.

वायु तंरगों पर आस्ट्रेलियाई रेडियो स्टेशनों के प्रसारण हावी हो गए. अपना अख़िरी तमाशा दिखाने के लिए ईश्वर ने ठीक ही महाद्वीप चुना था. किसी और देश के लोग होते तो नौकाओं में जगह पाने के लिए उन में छीना झपटी मच जाती. लेकिन आस्ट्रेलियाई ऐसे नहीं थे! मैलबर्न के विनोदप्रिय उद्घोषक ने कहा, "यहां किसी की हवा नहीं सरकी है. आम रवैया यही है कि पानी के नीचे एक मिनट डुबकी खाने से किसी को कोई नुक़सान नहीं पहुंचेगा. अलबत्ता कुछ नागरिकों को बहुत फ़ायदा पहुंच सकता है." कुछ छोटे छोटे विमानों की व्यवस्था की गई जो मैलबर्न और सिडनी के गिर्द चक्कर काटते हुए 'द्वितीय महाप्रलय' का आंखों देखा हाल प्रसारित करेंगे.'

ईश्वर ने शुक्रवार की दोपहर से पहले कुछ बड़े बड़े करिश्में दिखाने का वादा किया था. सचमुच वे काफ़ी बड़े सिद्ध हुए. अमरीका में स्थल, वायु और नौसेना की सारी की सारी सामग्री अपने अपने नियत ठिकानों से गायब हो गई. बकसुए से ले कर युद्ध पोत तक सारे का सारा असला सफ़ाई से तराशी हुई कतरनों का रूप ले चुका था. दोपहर होने से पहले एक और राष्ट्र, जिस की युद्ध क्षमता दुनिया के लिए हौवा बनी हुई थी, अपनी सारी सैन्य सामग्री से हाथ धो बैठा था. इस से क्रेमलिन में जो आक्रोश व्याप्त हुआ, वह सारी आंतरिक सेंसर व्यवस्था की धज्जियां उड़ा देने को काफ़ी था. चमचमाते रूसी टैंकों की तमाम क़तारें विमान और क़िलाबंदी करने वाली तोपें गधे के सिर से सींग की तरह ग़ायब हो चुकी थीं. उन की जगह खाद के ठेलों की क़तारें खड़ी थीं और हर ठेले पर लेनिन का यह उद्धरण लिखा था: "शांति, रोटी और भूमि".

न्यू यार्क में नास्तिकों का अधिवेशन होने वाला था. प्रदर्शनकारियों का टोला मुश्किल से टाइम्ज़ स्क्वेयर में पहुंचा था कि ईश्वर ने हर नास्तिक को फ़रिश्ते में बदल दिया. एकाएक उन के कंधों पर पूरे पूरे उजले सफ़ेद चापदार पंख निकल आए और उन के सिरों के पीछे सुनहरे प्रभा मंडल उभर आए. वे बेहद शर्मिंदा हुए और आंख बचा कर टैक्सियों में रफ़ू चक्कर हो गए.

जैसे जैसे घड़ियों की सुइयां एक एक सैकंड आगे सरकती हुई ११.५८, ११.५९ और फिर ठीक १२ के बिंदु पर पहुंचीं, आस्ट्रेलिया के आकाश में उड़ान भरते उद्घोषक और संवाददाता स्नायविक उत्तेजना के कारण अनाप शनाप बकने लगे. हां, बीबीसी (ब्रिटिश ब्राडकास्टिंग कारपोरेशन) का आदमी शांत भाव से इस तरह बोल रहा था जैसे क्रिकेट मैच का हाल सुना रहा हो. "भविष्यवाणी के अनुसार," उस ने कहा, "महाद्वीप अब डूब रहा है. डूबने की रफ़्तार काफ़ी तेज़ है—आधुनिक लिफ़्ट की रफ़्तार के बराबर. लीजिए, गिरजाघर की वह आख़िरी बुर्जी भी पानी के नीचे चली गई. बहती चीज़ों का एक अंबार पानी में तेज़ी से चक्कर काट रहा है! तौबा! तौबा! लोग भी अपने घरों में क्या क्या इकट्ठा कर लेते हैं! अब पहाड़ी चोटियां भी पानी के नीचे चली गई हैं ... ५० सैकंड ... ५५ सैकंड

. . . अरे वाह! . . . आस्ट्रेलिया फिर से ऊपर उभरने लगा है. लीजिए, वह ऊपर आ गया वही पुराना आस्ट्रेलिया! थोड़ा बहुत भीगने से उस का कुछ ख़ास नहीं बिगड़ा है!''

जैसे ही किनारा नाम की चीज़ दिखाई दी, विमान तेज़ी से किनारे की तरफ़ लपके, जिस पहले नागरिक तक पोर्टेबल ट्रांसमीटर उठाए रेडियो एनाउंसर पहुंच पाया, वह था विशिष्ट सेवा के लिए सम्मानित अवकाश प्राप्त कर्नल हंफ्री आरबथनट. हांफते हुए एनाउसर ने कहा, ''कृपया सुनने वालों को बताइए—आप सचमुच पानी के नीचे गए थे?''

''देख तो रहे हो, बुरी तरह से चू रहा हूं,'' कर्नल ने गरज कर कहा. ''घुसपैठिए की तरह समुद्र का पानी मेरे कमरे में चला आया. तुम्हारे पास कोई सूखा तौलिया हो तो दो.''

शुक्रवार की शाम को जो प्रसारण हुआ, उस में ईश्वर ने बिखरे हुए सूत्रों को बटोरा था:

''क्या मेरे आगमन का यह अर्थ है कि सृष्टि का अंत होने वाला है? क़सम है तुम्हें, अपनी आत्मा की आवाज़ को सुनो और वह जो कहे, वही करो. शुभ रात्रि.''

शनिवार का दिन बहुत ही व्यस्त बीता. चिरकाल से सूखी अंतरात्मा में नए नए अंकुर फूट पड़े. दक्षिण अमरीकी देशों के आधा दरजन तानाशाहों ने इस्तीफ़ा दे दिया. एक अंतरराष्ट्रीय बैंकिंग संस्था ने अपना धंधा ठप कर दिया क्योंकि उस के निदेशकों को लगा कि उन के तौर तरीक़े, जो पहले भी कभी सराहनीय नहीं रहे, पूरी तरह से अवांछित हो चुके हैं. हज़ारों लाखों छोटे व्यापारियों में भी इसी प्रकार का हृदय परिवर्तन हुआ. एक मोटर वर्कशाप के मालिक ने अपने मिस्तरियों को बुला कर कहा, ''आइंदा अगर हम किसी गाहक से कोई नया पुरज़ा लगाने का दाम वसूल करेंगे तो सचमुच नया पुरज़ा लगाएंगे भी.''

छोटे कुकर्मियों ने शनिवार को लाइब्रेरी से चुराई हुई किताबें लौटाईं, पुराने क़र्ज़ चुकाए और महिला केंद्रों में रह रही भूली बिसरी फूफी काकियों को उपहार भेजे. बाक़ी लोगों ने भी इसी तरह के कामों में शनिवार का दिन बिताया. शनिवार की रात तक यह धरती ९९ प्रति शत मानव जाति के लिए आश्चर्यजनक रूप से स्वर्ग समान बन चुकी थी.

शनिवार की शाम को ईश्वर ने रेडियो से जो संदेश दिया, वह उस का विदाई प्रसारण था. दुनिया भर के रेडियो भड़भड़ा रहे थे. यकायक खामोशी छा गई और वह ख़ूबसूरत आवाज़ उभरी:

''अब मैं विदा लूंगा. तुम्हारी अधिकांश समस्याएं ज्यों की त्यों बनी हुई हैं. तुम्हारा दर्द और ग़म वैसे का वैसा बना है. खाने, पहनने और अपना शासन चलाने की तुम्हारी ज़रूरत अब भी क़ायम है. बताऊं क्यों? यह पृथ्वी एक विद्यालय के समान है. यहां रहो, मेरे बच्चों, और सीखो. अच्छा, अब अगली मुलाक़ात होने तक—अ..विदा!''

सातवें दिन, हमारा अनुमान है, ईश्वर ने विश्राम किया होगा.

आदतन

पत्नी से बहस के दौरान मैं ने कहा, ''औरतों की आदत होती है कि पति जो कहे उस का विरोध करो.''

''नहीं, हरगिज़ नहीं!'' मेरी पत्नी ने दम न लेने दिया.

—वी वी जी नायर

सुखी गृहिणी

"जब मैं पास पड़ोस की औरतों को काम पर जाते देखती हूं तो मुझे लगता है कि मैं अकेली रह गई हूं, लेकिन हूं मैं बहुत सुखी," भारत की अधिकांश स्त्रियों की तरह एक अमरीकी महिला की हृदयस्पर्शी स्वीकारोक्ति

जोयस कोलोनी

आज सुबह यहां बहुत शांति है. गिलहरी की चहक और बंद दरवाज़े पर कुत्ते के पंजों की ख़रोंच की आवाज़ के सिवा सारा परिवेश रीता है. बच्चे स्कूल चले गए हैं, मां बाप काम पर. अकेली मैं ही रह गई हूं.

मैं उस जाति की सदस्या बन गई हूं जो लुप्त होती जा रही है— और वह जाति है गृहिणी. मेरे चारों ओर की तमाम औरतें काम पर जाती हैं किंतु मैं ही अभी तक अपनी मां और दादी की तरह दिन भर घर के कामकाज में खटती रहती हूं.

हर वर्ष पतझड़ शुरू होने पर मुझे अपनी इस स्थिति का ज्ञान होता है. पड़ोस की माताएं मुझ से पूछती हैं कि क्या हम अपने बच्चे के स्कूल फ़ार्म में संकट कालीन संपर्क के लिए आप का नाम दे सकती हैं ? मैं एकदम हां कह देती हूं, क्योंकि मैं जानती हूं कि वे भी, यदि कहीं काम न कर रही होतीं तो अच्छी पड़ोसिन के नाते मेरा इसी तरह का अनुरोध मान लेतीं. मैं उन के पार्सल आदि लेने और संदेहास्पद अजनबियों पर नज़र रखने के लिए भी अपनी पड़ोसिनों का अनुरोध स्वीकार कर लेती हूं. उत्तर अमरीका के लुप्त होते सारस की तरह संसार में मेरी भी कुछ उपयोगिता है.

कभी कभी जब मैं अपनी पड़ोसिनों को वह जीवन स्वीकार करते देखती हूं, जिसे स्वतंत्र जीवन कहा जाता है, तो मुझे लगता है जैसे मैं पिछड़ गई हूं. मैं सोचने लगती हूं कि मैं संसार को कोई योग नहीं दे रही हूं, कि मेरी सारी योग्यता यूं ही मिट्टी में मिली जा रही है और सब से बड़ी बात यह कि मैं ख़ुद नहीं कमा रही हूं.

गृहिणियां प्रायः कल्पना करती हैं कि ख़ुद कमाने के बड़े फ़ायदे हैं. वे यह निष्कर्ष भी निकाल सकती हैं कि वैवाहिक जीवन में उन की स्थिति निर्विवाद रूप से पति के समान हो जाती है, कि ख़ुद चार पैसे कमाने से मर्द का पलड़ा भारी नहीं रहता, कि अगर वह चाहे तो अपने वेतन के बल पर अपना निर्वाह आप कर सकती

न्यू यार्क टाइम्स मैगज़ीन (६ दिसंबर [illegible]) से संक्षिप्त. कॉपीराइट [illegible] द न्यू यार्क टाइम्स कंपनी, न्यू यार्क [illegible]

है. किंतु बाहर काम करने वाली स्त्री को अपने व्यस्त और तनाव भरे जीवन को देख कभी कभी संदेह होने लगता है कि मैं अपने आप को धोखा तो नहीं दे रही हूं? वह पूछ सकती है, वह कौन सी चीज़ थी जिस ने मेरी मां को बल प्रदान किया? क्या आज से पहले की हर पीढ़ी ग़लती करती आ रही थी?

मेरी मां का जन्म इस शताब्दी के आरंभ में हुआ था. घर में उन की हैसियत थी घर बनाने वाली की—और इसी बात से उन्हें बल मिलता था. यह वह काम था जो उन्हों ने अपनी इच्छा से जीवन में चुना था. वे किसी कार्यालय में अधिकारी नहीं बनना चाहती थीं. उन्हें घर के काम की ट्रेनिंग भी दी गई थी. मेरे पिता की सुख सुविधाओं का ध्यान रखना, हम बच्चों की देखभाल करना और पढ़ाना लिखाना मेरी मां के लिए सम्मानित कार्य था. इस से उन्हें रचनात्मक संतोष मिलता था. मेरी मां घर के कामों में लगी रहती थीं और पिता हम सब के लिए कमाते थे. यद्यपि उन की कमाई बहुत नहीं थी, फिर भी उस पर निर्भर रहा जा सकता था. वे दोनों मिल कर अपनी और अपने बच्चों की पढ़ाई लिखाई, सैर सपाटे और अन्य उपयोगी कार्यों के सपने संजोते.

एक सेक्स को छोड़ कर आज के स्त्री पुरुष एक दूसरे के क्षेत्र में दख़ल जमा रहे हैं. उन्हें एकता की अपेक्षा स्वतंत्रता अधिक अच्छी लगती है. इस के विपरीत मेरे माता पिता को एक दूसरे पर निर्भर रहना ज़्यादा पसंद था. उन्हों ने दांपत्य जीवन में अपने लिए अलग अलग काम निश्चित कर अपने व्यक्तित्व का विकास किया. उन्हें मालूम था कि किस की क्या ज़िम्मेदारी है. इसी लिए कोई किसी के काम में दख़ल नहीं देता था. हमें भी मालूम था कि पैसे किस से मिलेंगे और खाना कौन देगा.

मेरी मां ने अपने जीवन के लिए जो रास्ता चुना, उस पर शायद वे कभी पछताई नहीं होंगी. उन दिनों स्त्रियां गृहिणी ही होती थीं और प्रतिभा संपन्न लड़कियां भी जीवन में गृहिणी ही होना चाहती थीं. घर में रहने से मेरी मां उन चीज़ों को बनाने में अपनी पटुता दिखाती थीं जो फ़ालतू पैसा होने पर ही बाज़ार से ख़रीदी जा सकती थीं. उदाहरण के लिए, किसी महंगे डिपार्टमेंट स्टोर से कपड़े ख़रीदने की अपेक्षा घर में ही सिलाई की मशीन से कपड़े सी लेना. साइकिल की जगह पुस्तकें, खेल खिलौने आदि ख़रीद लेना. रात रेस्तोरां या नाइट क्लब जाने के बजाए घर में ही खाना खा लेना. वे कम ख़र्च में भी आनंद की अनुभूति दे देती थीं. और सब से बड़ी बात तो यह है कि वे यह सब किसी अफ़सर के लिए नहीं बल्कि हमारे लिए करती थीं.

मां कौन हैं और उन की क्या हैसियत है, इस का कोई सवाल ही नहीं उठता था. वे मां थीं. यदि कभी वे बीमार होतीं या कहीं चली जातीं तो हम—पिता और बच्चे—सब लोग अपने जीवन में अभाव अनुभव करने लगते क्योंकि हमारे संसार में उन का स्थान महत्वपूर्ण था, और हमें अपने जीवन के प्रत्येक सजग क्षण में उन की आवश्यकता अनुभव होती रहती थी. उन्हें भी यह बात मालूम थी और वे इस ज़िम्मेदारी को स्वीकार करती थीं, घर गृहस्थी के बोझ के रूप में नहीं बल्कि अपनी क़द्र के तौर पर.

घर के जिन जिन कामों को मेरी मां आवश्यक समझती थीं, उन्हीं को सब से पहले किया जाता था, क्योंकि उन का बौस कोई अफ़सर नहीं अपितु कठोर अनुशासन में बंधी उन की अंतरात्मा थी. काम से निपट कर या तो वे अपने छोटे से कमरे में झूला कुरसी पर बैठ कर आराम करतीं या ड्योढ़ी के झूले पर बैठ जातीं और पत्र लिखतीं या फटे कपड़ों की सिलाई आदि करतीं. जब हम

स्कूल से या मैदान से खेल कर घर लौटते तो वे हमें पढ़ने के लिए बिठा देतीं, हमारी निगरानी करतीं, हमारी ग़लतियां सुधारतीं, ठीक काम करने को उकसातीं.

वे औपचारिक स्वागत को महत्व देती थीं. शाम ४.३० बजे वे पिता जी के लौटने से पहले कपड़े बदलने चली जातीं. और उन के आने पर सब के सामने कहतीं, "मुझे आप का घर लौटना कितना अच्छा लगता है."

मनुष्य को प्रेम से भी अधिक भोजन की आवश्यकता होती है और भोजन किसी न किसी को बनाना पड़ता है. मेरी मां ने अपनी इच्छा से यह ज़िम्मेदारी ओढ़ी थी. इस के अलावा साधारण तथा सस्ते खाद्य पदार्थों से बढ़िया से बढ़िया

भोजन बनाना उन के लिए चुनौती भी थी.

हमारे पिता ने शायद ही कभी घर लौटने पर मां को परिवार के लिए भोजन बनाने के अलावा और कोई काम करते देखा हो. पिछवाड़े के बरामदे में हमारे पिता बांहें पसारे खड़े होते ....उन की आंखों में चमक होती. कबीले के विजयी सरदार की तरह वे गरजते, "वाह, भई वाह! मुझे तो पहाड़ी की तलहटी से ही प्याज़ की गंध आ रही थी." उन्हें कभी यह पूछने देखने की ज़रूरत नहीं पड़ी कि क्या पकाया जा रहा है.

और उन का उन्मुक्त आनंद मेरी मां के लिए मनचाहा पुरस्कार होता था. उन के घर आते ही मेरी मां का चेहरा खिल उठता. गृहिणी के नाते दिन भर के काम काज से उन्हें जो भी थकान या क्लांति होती थी, वह पिता जी के घर लौटने की ख़ुशी में दूर हो जाती थी.

मेरी मां घर की ज़िम्मेदारियों को जिस तरह निभाती थीं, उस क़रीने या उस निष्ठा से मैं नहीं निभा पाती.

सुबह जब अड़ोस पड़ोस के सारे लोग काम पर चले जाते हैं तो मैं 'ब्लाइंड्स' उठा कर दिन का जायज़ा लेती हूं. क्या आज मेरे पड़ोसी के घर की खिड़कियों पर धूप खिलेगी या उन पर रिमझिम वर्षा होगी. मौसम कैसा भी हो, मुझे अपनी स्वाधीनता का भान हो जाता है. जब तक मैं स्वयं न चाहूं, मुझे घर से बाहर जाने की ज़रूरत नहीं पड़ती. हालांकि मैं भी उसी आंतरिक सत्ता से निर्देश लेती हूं जो मेरी मां का पथ प्रदर्शन किया करती थी, किंतु मैं जब तब उसे अपने अनुकूल बना लेती हूं.

यदि टाइलों की सफ़ाई और ढेर सारे कपड़ों की धुलाई करनी ही है तो ये काम आटा गूंथने, गोट लगाने या एडना आंटी को पत्र भेजने से पहले, बाद में, या बीच में, कभी भी किए जा सकते हैं. कोई ज़रूरी काम न हो और देवदार की अलमारी साफ़ करते हुए मेरा कोई मनपसंद स्वेटर निकल आए तो मैं उसे पहन कर घूमने भी चली जाती हूं. अलमारी बाद में भी साफ़ हो सकती है, लेकिन बतख़ें तो खाड़ी पर उतरने के लिए किसी का इंतज़ार नहीं करतीं.

निश्चय ही मैं बहुत सुखी हूं. मैं जब चाहती हूं काम करती हूं. इस अनुभूति के कारण मुझे अपना काम करने पर जो संतोष मिलता है, वह किसी रचनात्मक खेल जैसा होता है. और मेरा विचार है कि खेल में ही सच्ची स्वाधीनता है. किन्हीं दिनों मैं अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ अपने कार्यक्रम निश्चित करती हूं. फिर मैं आधी रात को लिखी कविता ठीक करने के लिए समय निकाल लेती हूं. अकसर मैं बाक की संगीत रचनाओं का अभ्यास करती हूं और अगर गुलाब खिल रहे हों तो मैं अपनी खिड़की सजाने के लिए एक गुच्छा काट लेती हूं और उन्हें इस तरह रखती हूं कि गतिशील सूर्य की किरणें उन की पंखुड़ियों को दानेदार कांच की तरह भेद डालें.

यदि मैं घर से बाहर काम कर रही होती तो शायद मैं उन पंखुड़ियों से झर कर आती सूर्य की किरणों को न देख पाती. देख पाती तो केवल सप्ताहांत या छुट्टियों में, और सप्ताहांत या छुट्टियों में इतने ज़रूरी काम करने होते हैं कि बैठ कर फूलों को देखने की बात सोची भी न जाती. तब स्पैगेटी का सौस बनाने का भी समय न मिलता, जिस की महक ही आने वाले को बता देती है कि खाना तैयार है.

इस जीवन में मैं ने जो मौज की है, वह मुझे अपने माता पिता, दादा दादी, नाना नानी और उन के भी पुरखों से विरासत में मिली है. अच्छा भोजन, साफ़ कपड़े, पुस्तकें, संगीत और एकांत जैसी महत्वपूर्ण चीज़ें मुझे 'जीन' की तरह विरासत में मिली हैं. ये सब मुझे अपनी आंखों के

रंग या अपने सिर की बनावट जितनी ही स्वाभाविक प्रतीत होती है. निराशा, कुंठा या क्षति अभेद्य दुर्ग तक में प्रवेश कर जाती है. यह विरासत इन से मेरा बचाव नहीं करती, लेकिन इस से मुझे बहुत संतोष मिला है. गृहिणी की हैसियत से ३१ वर्ष बिताने के बाद भी मैं अपने परिवार की उस शिक्षा और सांस्कृतिक वातावरण के प्रति कृतज्ञ हूं जिस के कारण गृहिणी की परंपरा आज भी विद्यमान है.

लेकिन यह सब लिखते हुए भी मैं जानती हूं कि जीवन की यह पद्धति क्षणभंगुर है और एक दिन इस संसार से विदा हो जाएगी. मेरे सोचने का तरीक़ा भी शायद पड़ोसिन जितना आधुनिक हो जाएगा. मैं भी शायद घर से बाहर काम करने जाने लगूंगी और संसार के कामों में दूसरी तरह का योग देने लगूंगी. शायद मेरी योग्यता भी पहचान ली जाएगी और मैं सब को दिखाने के लिए वेतन ले कर अपने घर लौटने लगूंगी.

लेकिन अभी तो मैं घर के सुख की तुलना में वेतन लाना घाटे का सौदा समझती हूं. यहां वेतन मेरी स्वतंत्रता और उन्नति का द्योतक हो सकता है. लेकिन उस के कारण मुझे अपने परिवार का काम मर्ज़ी के मुताबिक़ करने का समय नहीं मिल पाएगा और स्वाधीनता भी खोनी पड़ेगी.

घर वह होता है जहां हमारा हृदय अटका हो, दांपत्य जीवन का सुख हो. बाल बच्चे, पलंग, मेज़ और चीनी मिट्टी के बरतन जहां हमारी राह देखते हों, घर वही कहलाता है. अपना घर तो वही है जिस घर की चौखट में क़दम रखते ही पति ख़ुशी से ऐसे चिल्ला उठे, जैसे घर आ कर जाने क्या मिल गया हो, घर वही होता है.

मुझे ऐसे ही घर में किसी की राह देखना अच्छा लगता है.

फ़रिश्ता और बादल

जरमन पियानोवादक योहानेस ब्राम्स एक बार चिपकू क़िस्म की कुछ महिलाओं से घिर गए. निकल भागने की हर कोशिश नाकाम रही. आख़िर उन्हों ने बड़ा सा सिगार निकाला और सुलगा लिया. शीघ्र ही महिलाएं सिगार के नीले धुएं से घिर गईं और लगीं खांसने. आख़िर एक से न रहा गया. उस ने उलाहने के स्वर में कहा, "मिस्टर ब्राम्स! महिलाओं की मौजूदगी में आदमी कहीं धूम्रपान करता है?"

ब्राम्स ने मंद मुस्कान के साथ उत्तर दिया, "बेशक, लेकिन देवियों! जहां फ़रिश्ते होते हैं, वहां बादल भी तो होते हैं!"

—'एलजेमाइने त्साइतुंग', फ़्रैंकफ़ुर्त

गोया के चुनांचे

मैं न्यू यार्क नगर में ग्रैंड सेंट्रल टर्मिनल के टिकटघर में काम करता हूं. एक दिन एक व्यक्ति टिकट खिड़की पर आया और परिक्रमा टिकट मांगने लगा. लंबी चुप्पी के बाद मैं ने ही पूछा, "कहां से, कहां तक?"

वह कुछ देर ख़ामोश रहा और कुछ सोच विचार करने के बाद उस ने आख़िर उत्तर दिया, 'यहां से, यहां तक.'

—आर एच एम
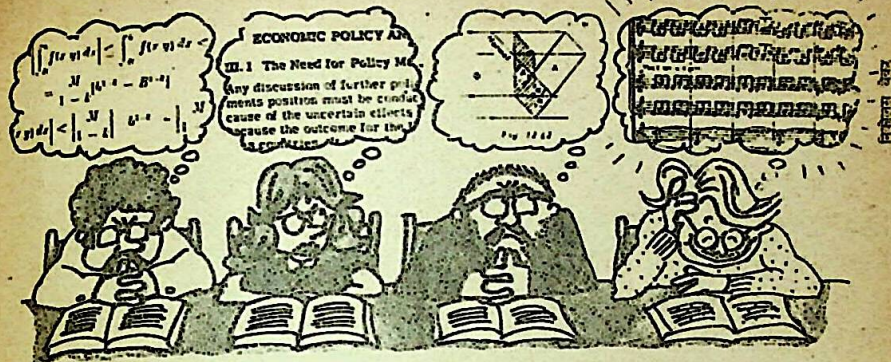
पाठशाला : हास्यशाला

तब मैं आठवीं कक्षा में पढ़ता था. हिंदी व्याकरण की क्लास चल रही थी और मास्टरजी 'सर्वनाम' के बारे में समझा रहे थे. पाठ पूरा होने पर उन्हों ने हम सब से पूछा, "क्यों सब को समझ में आ गया या नहीं?"

सभी एक साथ चीखे, "हां, मास्टरजी." फिर क्या था, मास्टरजी ने पिछली बेंच पर बैठे छात्र से पूछ लिया, "ठीक है किशोर, सर्वनाम के कोई दो उदाहरण दो." अब किशोर बैठा ऊंघ रहा था, सो अचकचा कर बोला, "कौन? मैं!"

मास्टरजी खुश! बोले, "शाबाश बेटे!" और उधर कक्षा में वह ठहाका लगा कि बस. हां, मास्टरजी भौंचक्क हमें घूरे जा रहे थे.

—चंद्र मोहन भटनागर, बंबई

रूसी भाषा की कक्षाएं चल रही थीं. विद्यार्थियों से कहा गया कि वे टेप किए गए वाक्यों को सुनें और दोहराएं. मेरे टेप पर जिन सज्जन की आवाज़ टेप थी, वह इतनी तेज़ी से रूसी हांक रही थी कि पल्ले कुछ पड़ता ही न था. दो हफ़्ते कुंठित रहने के बाद मैं ने यह समस्या अपने प्रोफ़ेसर के सामने रखी. उन्हों ने सुझाया कि भाषा टेपशाला में जा कर कोई खाली टेप ले लूं और अपने पाठ मैं स्वयं ही तैयार कर डालूं.

वहां पहुंच कर मैं ने मेज़ के पीछे बैठे बाबू से कोई खाली टेप देने के लिए कहा. "आप किस भाषा का प्रशिक्षण ले रही हैं?" उस ने पूछा.

"रूसी," मैं ने उत्तर दिया.

"क्षमा कीजिए. रूसी में कोई ख़ाली टेप हमारे पास नहीं है."

पल भर को मैं ठगी सी खड़ी रही, फिर पूछा, "रूसी में नहीं, तो जरमन की कोई ख़ाली टेप दे सकते हैं?"

"हां . . .शायद हो."

"तब ठीक है," मैं ने कहा, "मैं उसी से काम चला लूंगी."

—मैरी हार्टमैन

मेरे रूममेट ने जब मुझ से कहा कि उसे किसी पार्टटाइम नौकरी की तलाश है, तो मैं ने सुझाया कि वह फलां डिपार्टमेंट स्टोर में जा कर पता लगाए. मेरे पिता वहां के मैनेजर थे.

मेरा रूममेट वहां पहुंचा, तो उसे यह बताने का मौक़ा ही नहीं मिल सका कि उसे किस ने भेजा था. 'बास' ने तत्काल तेज़ तर्रार सवालों की झड़ी लगा दी, "क्या तुम्हें कोई ऐसा अनुभव है जिस में आम लोगों से तुम्हारा साबक़ा पड़ा हो यानी चिड़चिड़े, तुनकमिज़ाज, शिष्टाचारहीन लोगों से?"

मेरा दोस्त ज़रा ठिठका, और फिर बोला. "ऐसा है कि मैं पिछले दो सालों से उस के साथ एक ही कमरे में रहता आ रहा हूं."

उसे और कोई सवाल पूछे बग़ैर ही काम पर रख लिया गया.

—जी ए

आओ संविधान बनाएं

कोरी फ़ोर्ड
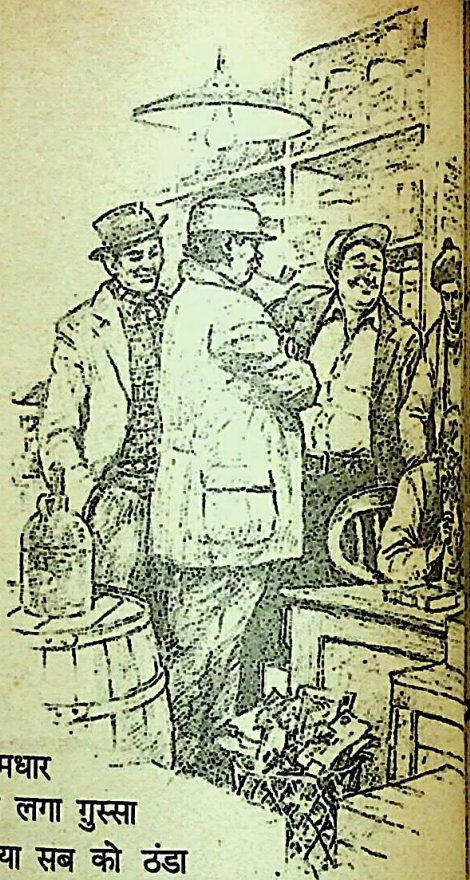
४० से कम उम्र के मछलीमार
जब बने अपनी संस्था के नियमधार
तब मछलीमार जवानों को आने लगा गुस्सा
पर्क चाचा की सुराही ने कर दिया सब को ठंडा

चालीस से कम उम्र के मछलीमारों की क्लब की वार्षिक चुनाव सभा पर्किंज़ स्टोर के पिछवाड़े हुई. यहां इस लिए हुई कि क्लब के सदस्य उस समय वहां मौजूद थे. यह खेलों के सामान की दुकान थी. वार्षिक चुनाव की बात तब चली जब जज ने बातों बातों में नए सदस्यों की चर्चा छेड़ दी. बस इधर उन्हों ने नए सदस्यों का सुझाव दिया और उधर ऐसी ऐसी समस्याएं उठ खड़ी हुईं जिस की आशा भी नहीं की जा सकती थी. पहाड़ जैसी पहली समस्या तो यही आन पड़ी कि क्लब की ऐसी क़ोई नामांकन समिति न [illegible] नए सदस्यों को बनाने का प्रस्ताव पे[illegible] सकती. उस पर यह अड़चन पैदा हु[illegible] अगर नए सदस्यों को नामज़द कर भी [illegible] जाए तो क्लब के संविधान में ऐसी कोई [illegible] नहीं थी कि वे चुन लिए जाएं. सब से [illegible] समस्या यह थी कि क्लब का कोई [illegible] ही नहीं था.

"यह तो बहुत गंभीर स्थिति है," [illegible] न्याय करने के ठेठ अंदाज़ में ऐनक के [illegible] के पीछे आंखों की पुतलियां घुमाते हुए [illegible]

'द बेस्ट आफ़ कोरी फ़ोर्ड' से संक्षिप्त. संपादक: जैक सैम्सन. कापीराइट १९७५, द ट्रस्टीज़ आफ़ डार्टमाउथ कालेज. प्रकाशक: होल्ट, राइनहार्ट एंड विंस्टन, न्यू यार्क. चित्र: लौरेंस [illegible]

"अब इस का मतलब तो यह हुआ कि हमारे 'लोअर फ़ोर्टी' क्लब में नए सदस्य कभी भरती किए ही नहीं जा सकते."

"नए सदस्यों का क्या हमें अचार डालना है?" यह प्रश्न डाक्टर ने किया जो अभी तक अंदर ही अंदर इस बात पर जला भुना बैठा था कि जज ने कल ही एक किलो की मछली वहां से दबोच ली थी जहां पर वह ख़ुद बैठा था. मज़े की बात यह थी कि उस ने मछली का शिकार कांटे से नहीं बल्कि चारे वाली चकरी से किया था. डाक्टर ने खा जाने वाली नज़रों से जज को देखा और बोला, "क्लब में पहलें ही ज़रूरत से ज़्यादा सदस्य हैं."

"हमें कुछ न कुछ करना होगा," सिड ने शब्दों पर ज़ोर दे कर कहा, "हमें क्लब के नियम बना लेने चाहिए. और फिर हर सदस्य को उन का पालन करने के लिए कहा जाए."

"हर सदस्य अपने लिए स्वयं ही नियम क्यों न बनाए और उन का पालन करे," कर्नल बोले.

जज ने मेज़ को ज़ोर ज़ोर से थपथपा कर सब को ख़ामोश रहने का इशारा किया. "अपने क़ानूनी ज्ञान और अनुभव के मद्दे नज़र मैं . . ." वे लहजे में नम्रता ला कर बोले, "नियम बनाने वाली समिति का खुशी से अध्यक्ष बनने को तैयार हूं." अचानक उन का चेहरा ख़ुशी से चमक उठा और वे मुसकरा कर बोले, "कोई साहब हैं जो नियमों के बारे में सुझाव देना चाहें?"

"डाक्टर ने गुस्सैल नज़रों से जज को देख कर कहा, "मैं यह सुझाव दूंगा कि मछली पकड़ने के लिए चारे वाली चकरी का प्रयोग न किया जाए."

"यदि हम ने ऐसा कोई नियम बनाया तो फिर . . ." जज ने तुनक कर कहा, "मैं यह सुझाव पेश करूंगा कि हमें कांटे पर चारा लगाना ही नहीं चाहिए."

"अगर तुम ज़ाती हमला करने पर उतर आए हो . . ." डाक्टर ग़ुस्से से बोला, "तो फिर रात को खेतों में से चोरों की तरह सूखी घास उठाने पर भी पाबंदी लगनी चाहिए."

"दोस्तो!" अंकल पर्क ने बात बिगड़ती देख कर दराज़ में से शराब की सुराही निकाली और कहा, "अरे, छोड़ो नियम वियम का चक्कर. कोई और बात करते हैं."

जज बोले, "सब से पहले तो इस बात की ज़रूरत है कि हमें कोई ऐसा व्यक्ति चाहिए जो सभा की कारवाई ठीक ढंग से चला सके." फिर गला साफ़ कर के बोले, "और वह व्यक्ति ऐसा होना चाहिए जो सब सदस्यों के मुकाबले में तेज तर्रार हो यानी ऐसा आदमी जो सब से बड़ी मछली पकड़ सके." यह सुन कर डाक्टर बड़बड़ाने लगा. उस के ख़ामोश होने पर जज फिर बोले, "वह ऐसा आदमी होना चाहिए जिस का निशाना अचूक हो. जब उस के साथी बंदूक़ उठाने की सोच रहे हों, वह एक ही गोली से दो को धराशायी कर दे." यह कह कर जज ने ऐनक के ऊपरी भाग से एक नज़र कर्नल पर डाली जिस का चेहरा जज की सीधी चोट से मारे ग़ुस्से से लाल हो गया था. जज ने आगे कहा, "मेरा इशारा ऐसे अनुभवी व्यक्ति से है जो २०० गज़ की दूरी पर भागते उस हिरन को गोली मार कर गिरा दे जिस पर पल भर पहले उस के साथी का निशाना चूक गया हो." यह कह कर जज ने अर्थपूर्ण दृष्टि सिड पर डाली और कहा, "मतलब यह कि कोई ऐसा व्यक्ति जिस में क्लब का नेता बनने के सभी गुण मौजूद हों."

"अगर तुम क्लब के अध्यक्ष बने," डाक्टर ग़ुस्से से खड़ा हो कर बोला, "तो यह

रहा क्लब से मेरा त्याग पत्र."

"मैं भी क्लब छोड़ रहा हूं," कर्नल बोला, "मुझे क्या करना है और क्या नहीं, यह बताने वाला कोई कौन होता है?"

सिड बोला, "मैं भी त्याग पत्र दे रहा हूं. सच पूछो तो दूसरों की पकड़ी मछलियां साफ़ करते करते मैं भी तंग आ चुका हूं."

"फिर मैं ही अकेले इस क्लब का सदस्य रह कर क्या करूंगा?" मिस्टर मैक्नाब ने आह भर कर कहा. "कोई खिलाने पिलाने वाला तो रहेगा नहीं."

"यार, एक मिनट रुको तो सही," अंकल पर्क ने सब को शांत करते हुए कहा. इसी के साथ ही उन्हों ने सुराही को उठाया जिस का मतलब था कि ज़रा रुको, अभी सब को जाम मिलता है. सब को ललचा कर वे आराम से बोले, "हम एक ऐसा सीधा सादा संविधान तैयार कर लेते हैं जिस पर सभी सहमत हों."

यह कह कर वे अपने पुराने टाइपराइटर के सामने जा बैठे. मशीन पर भूरे रंग का काग़ज़ चढ़ाया और अपनी मोटी मोटी उंगलियों से एक एक अक्षर टाइप करने लगे. सब उन के आसपास और आगे पीछे घेरा डाल कर खड़े हो गए. वे टाइप किए जा रहे थे.

चालीस से कम उम्र वालों का संविधान

धारा एक—नियम.

हमारा कोई नियम नहीं है.

धारा दो—अध्यक्ष.

क्लब का हर सदस्य अध्यक्ष है.

धारा तीन—सदस्यता.

जो व्यक्ति भी क्लब में आना चाहे, वे शौक़ से आ सकता है. पर हमें इस के लि परेशान न करे क्योंकि हम मछली पकड़ने र रहे हैं.

अंकल पर्क ने बड़े विजयी भाव से व किया काग़ज़ बाहर निकाला और बोले:

"अब मैं यह प्रस्ताव पेश करता हूं कि इ संविधान को ऐसी जगह रख दिया जाए जहां इ का कभी अता पता न चले. एक और सू आप सब को दे दूं कि मैं ने आज सुबह पुल नीचे वही घाघ मछली देखी थी जो हमें अ तक चकमा देती आई है. आप चाहें तो मेरे स चल कर देख लें कि मैं उसे कैसे पकड़ हूं."

इसी के साथ ४० से कम उम्र मछलीमारों की चुनाव सभा समाप्त हो गई.

जीवंत

चूला विस्ता, कैलिफ़ोर्निया, के मवेशी अस्पताल के पार्किंग स्थल के प्रवेश पर लगी तख्ती: "केवल मरीजों के लिए."
—आर सी

वीलिंग, पश्चिमी वर्जीनिया, के एक घुड़दौड़ के मैदान के बाहर: "आप क्या समझते हैं, यहां करने को कुछ भी नहीं ...? शर्त बद लो?"
—डी अ

स्वयंसेविकाओं द्वारा चलाई जा रही स्टैनफ़ोर्ड मेडिकल सेंटर के उपहार गृह में लगे नए आधुनिकतम 'कैश रजिस्टर' यानी जोड़ की मशीन के ऊपर: आप के धैर्य की हम क़द्र करते हैं. नया इलेक्ट्रानिक कैश रजिस्टर—और वही पुरानी देवियां.
—जे

छड़ियों का विचित्र मोहक संसार

ऊपर बाएं से : चमड़ा मढ़ी भालेदार नोक वाली इस्पात की छड़युक्त छड़ी जिस की मूठ में कंपास लगा है. नक्काशीदार इतालवी बेंत. छिपी हुई बंदूक युक्त चील के सिर जैसे आकार का बेंत. महोगनी लकड़ी से बनी छड़ी. डंडे में चिकित्सा का साज़ सामान छिपाए किसी डाक्टर का बेंत. स्थानीय लकड़ी से बनी अनन्नास की शक्ल की मूठ वाली छड़ी, हवाई द्वीप. ग्रोवर क्लीवलैंड के धड़ के आकार की मूठ वाला राजनीतिक बेंत. १८वीं शताब्दी के सत्तरादि दशक में बना घड़ीयुक्त बेंत. चांदी के सिगरेटदान वाला बेंत, बेहद बारीकी से तराशा हुआ नीबू की लकड़ी का बना बेंत. आत्मरक्षा के लिए प्रयुक्त बेंत, बटन छूते ही मूठ से छः सूजे निकल पड़ते हैं.

फ्रांसिस मोनेक

छड़ियों का प्रचलन हज़ारों वर्षों से है. मिस्र के सम्राट तुतअंखामन के पास अनेक स्वर्ण निर्मित बेंत थे जो राजदंड के प्रतीक थे. १७वीं और १८वीं शताब्दियों में लोग अपनी पोशाक से मिलान कर के बेंत चुनते थे, जैसे आज़कल टाइयां चुनी जाती हैं. फ्रांसीसी लेखक विचारक वाल्तेर को इस बात पर बड़ा फ़ख्र था कि उन के पास ७५ से भी अधिक बेंत थे.

मैं ख़ुद ऐसे बेंतों का शौक़ीन हूं जिन्हें किसी गुप्त प्रयोजन के लिए बनाया गया हो. ऐसे 'कलदार' बेंत चुस्त, सुरुचिपूर्ण लोगों के अनिवार्य प्रसाधन होते थे और १९वीं शताब्दी के कारीगर उन का इस्तेमाल अपने काम धंधे में उपयोगी उपकरण रखने के लिए करते थे. प्यानो की ट्यून ठीक करने वाले कारीगर अपने बेंतों में सुर ठीक करने वाली हथौड़ियां छिपाए रहते थे और रेल की पटरियों की देख भाल करने वाले ट्रैक मैन अपने हाथ में पकड़े बेंतों में माप ले कर चलते थे. फ़ोटोग्राफ़रों के बेंत

'दि एनसाइक्लोपीडिया आफ कलेक्टिबिल्स' से संक्षिप्त, कापीराइट १९७८, टाइम-लाइफ बुक्स इनकारपोरेटेड, अलेक्ज़ेंड्रिया, वर्जीनिया
इस पृष्ठ का फोटो : लेखक के संग्रह से
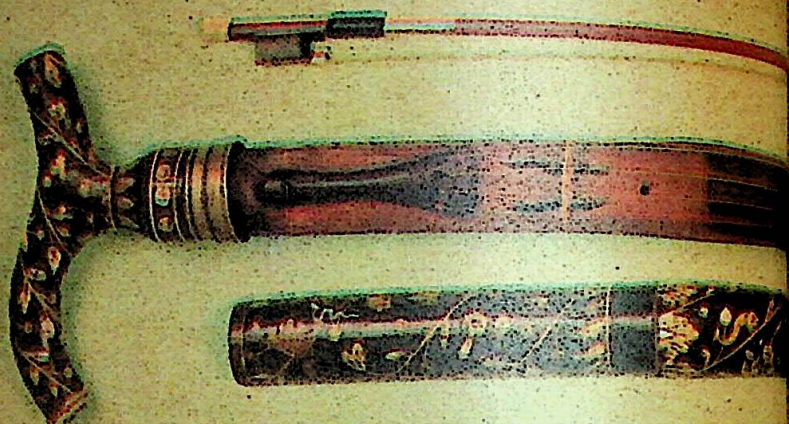
१९ वीं शताब्दी में जरमनी में बना फ्रिट्ज क्रीस्लर का हाथी दांत और सीप के काम वाला वायलिनयुक्त बेंत

विक्टोरिया काल में लोकप्रिय, शिकारी कुत्ते की शक्ल में तराशा हुआ बेंत का हत्था. और १८वीं शताब्दी का बना हाथीदांत के नक्काशीदार वाला बेंत, जिस में उत्तम नस्ल के तीन घोड़ों की दौड़ को दिखाया गया है.

ज़रूरत पड़ने पर कैमरा संभालने के लिए तिपाई का काम भी दे जाते थे. मेरे अपने संग्रह में उपलब्ध एक नायाब बेंत में लगा पूरी तरह चालू कैमरा, तसवीर लेने के साथ साथ छड़ी की मूठ का भी काम अंजाम देता है.

अधिकांश 'कलदार' बेंतों में कोई न कोई हथियार छिपा रहता है. कुछ तलवार वाले होते हैं, जिन की छड़ी म्यान का काम देती है और कुछ कटार वाले, जिन का फलक बेंत के हत्थे में छिपा रहता है. किसी में फलक निकालने के लि हत्थे को आधा घुमाना पड़ता है और कुछ में जड़ाऊ घुंडी के बहाने हत्थे में लगे बटन को दबा कर हथियार को बाहर निकाला जाता है कुछ बेंत ऐसे भी होते हैं जिन के हत्थे में लगे बटन को दबाते ही छड़ी के निचले सिरे से एकाएक छुरे जैसा फलक निकल पड़ता है.

जिन बेतों के बारे में पूरी जानकारी न हो, उन में लगी घुंडियों को दबाना खतरनाक
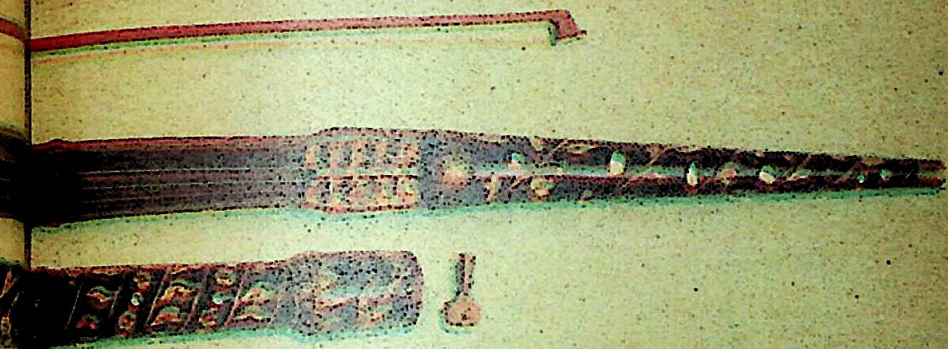
कैथरीन डाइक संग्रह से

हथियार युक्त छड़ियां, बाएं से : नौ खानों वाली चकमकी पिस्तौल ; अमरीका में बनी बंदूक युक्त डेरिंजर छड़ी ; सोने के हत्थे वाली बंदूक युक्त छड़ी ; छः कारतूस वाली बर्छी युक्त रिवाल्वर, हर्सटाल द्वारा निर्मित छड़ी के ऊपर लगी ब्राउनिंग पिस्तौल जिस की मैगज़ीन में ४० कारतूस रखने की व्यवस्था है.
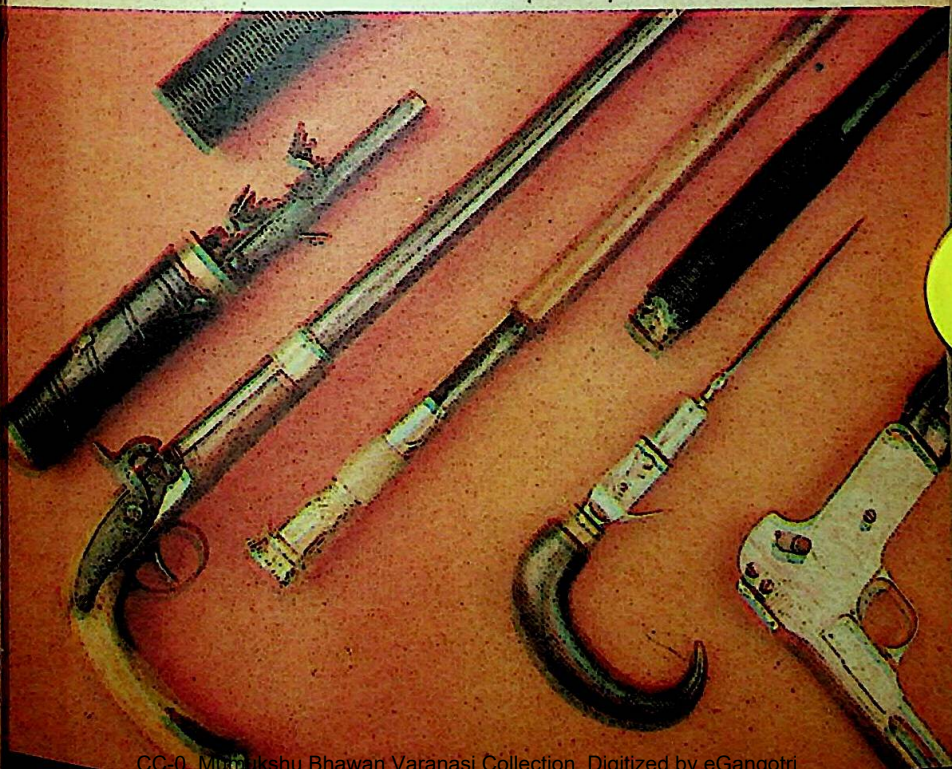
साबित हो सकता है. मेरे एक परिचित व्यापारी ने एक बेंत की जांच पड़ताल करते हुए अनायास उस की मूठ के पास लगे बटन को दबा दिया. पलक झपकते छड़ी की नोक से एक तेज़ फलक इतने ज़ोर से निकला कि उस का आधा हिस्सा उस की मेज़ में धंस गया.

तरह तरह के फलक छिपाए रखने वाले इन बेंतों के अलावा कुछ बेंत आग्नेयास्त्र युक्त होते हैं. इस श्रेणी में छोटी छोटी तोपों से ले कर बंदूक़ और पिस्तौल वाले बेंत तक आते हैं. मेरे संग्रह में लगभग सौ बंदूक़ युक्त बेंत शामिल हैं. अ २० से भी अधिक प्रकार से गोली चला घोड़ा दाबने की युक्तियां हैं.

'कलदार' बेंतों की क़ीमत कुछ हद त उन के ख़ुफ़िया अमल पर निर्भर करती है. ए संग्रहकर्ता अपने संग्रह की बिक्री कर रह पूछने पर बताया कि उन के पास कोई 'कलदा बेंत नहीं है, हां, उन की यह तमन्ना ज़रूर थी कि उन के पास तलवार वाला बेंत होता.

संग्रह का मुआयना करने पर मुझे लगा कि उस में से एक बेंत के अंदर ज़रूर कुछ है मैं ने देखा, डंडे पर एक हलकी सी रेख दिखाई दे रही थी. लगा शायद लकड़ी के दो हिस्सों को जोड़ कर यह हिस्सा तैयार कि

१९वीं शताब्दी के इस कैमरा युक्त जासूसी बेंत में कैमरे का लैंस हत्थे के दाहिने भाग में छिपा है. हत्थे में लगा चक्र फ़िल्म को घुमाने और उस पर अंकित चिह्न तसवीरों की संख्या गिनने के काम आते थे.

प्रीसिस एव मोनेक संग्रह से
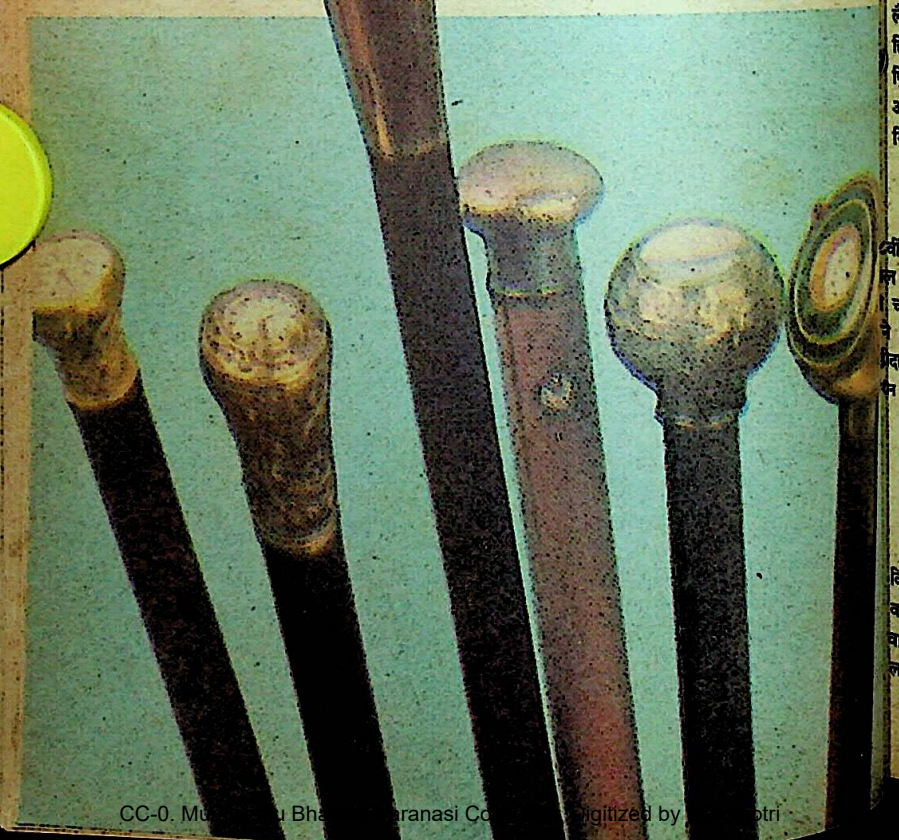
गया था. लेकिन रेखा इतनी बारीक़ थी कि यक़ीनन कुछ नहीं कहा जा सकता था. इस के बावजूद मैं ने बेंत ख़रीद लिया.

होटल वापस पहुंचने पर मैं ने रेखा के दोनों ओर से छड़ी को कस कर पकड़ा और उसे पूरी ताक़त लगा कर खींचा. एकाएक तेज़ी से चटक कर दरार खुल पड़ी और छड़ी के भीतर से मैं ने एक बेहद ख़ूबसूरत नक़्क़ाशीदार तलवार खींच निकाली. तलवारदार बेंत पास होते हुए भी बेचारे संग्रहकर्ता को इस की जानकारी नहीं थी, क्योंकि तलवार को बड़ी ख़ूबी से छिपाया गया था. यह कोई ताज्जुब की बात नहीं, लगता था उस बेंत को पिछले सौ साल में एक बार भी खोला नहीं गया था.

...वीं शताब्दी के अंतिम ...ल और १९वीं शताब्दी ... चांदी. मीनाकारी या ...ने के काम वाली ...दार छड़ियां.
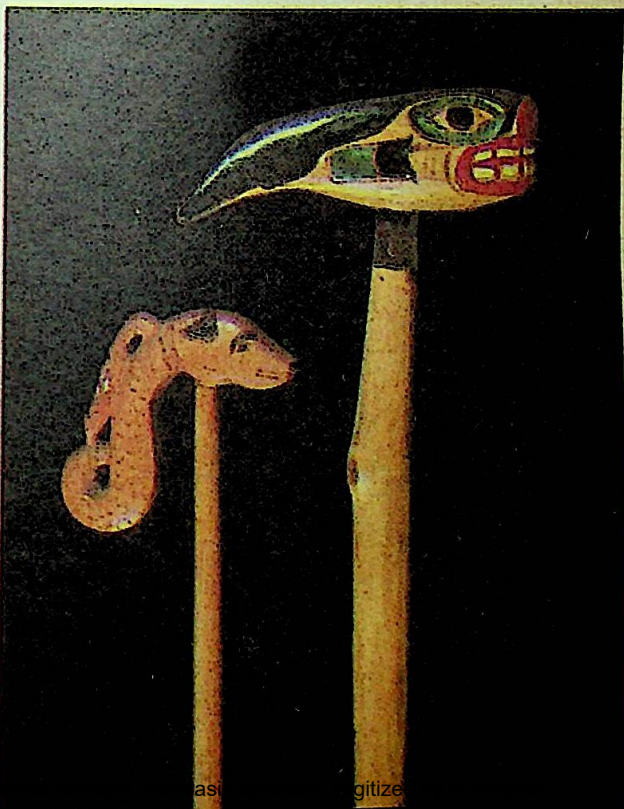
...न ब्रुक संग्रह से

१९वीं शताब्दी के आरंभ में किसी प्रशांत महासागरीय द्वीपवासी द्वारा और किसी अलास्कावासी एस्किमो द्वारा रंगीन लकड़ी से तराश कर बनाए गए हत्थों वाले अनगढ़ बेंत.

प्रीसिस एव मोनेक संग्रह से

ब्रज की होली तो सुप्रसिद्ध है लेकिन दीवाली भी यहां की कम नहीं

जगमग दीवाली ब्रजवाली

गोपाल प्रसाद व्यास

आप को यदि वैभव की दीवाली देखनी है तो बंबई जाइए. एक सेकंड में साबरमती के तट पर छूटने वाले दस पटाखों के शतधा धमाकों के बीच महालक्ष्मी के आवाहन के लिए पूरी रात अपलक जागरण करना है तो अहमदाबाद का टिकट कटाइए. अगर जागरण का यह अनुष्ठान पूरे पखवाड़े चलाना है तो पंजाब प्रदेश का पर्यटन कर डालिए. यदि आप का आयोजन त्रिदिवसीय हो तो दिल्ली तशरीफ़ ले आइए. यदि आप भगवान की आद्या शक्ति महाकाली के उपासक हैं तो पूर्वांचल पधारिए.

और आप का मन साहित्यानुरागी है, और नाचता गाता, खेलता खाता भारत का जन जीवन आप को गंवारू नहीं लगता तो आइए, ब्रज में आप का स्वागत है. विश्वास रखिए, आप अकेले नहीं होंगे. भयंकर वर्षा, बाढ़, मलेरिया, जूड़ी ताप, हैज़ा विषूचिका आदि की चिंता न करते हुए कम से कम एक लाख व्यक्ति अभी अभी नंगे पैर चलते, आकाश की छत के नीचे सोते, अपने हाथ से खाते पकाते, गाते नाचते, कथा कीर्तन सुनते करते ब्रज की चौरासी कोस की यात्रा संपन्न कर चुके हैं.

←

श्री बांके बिहारी जी (वृंदावन) की मूर्ति का तैल चित्र

राजसी श्रंगार. इस समय मथुरा में इन असंख्य यात्रियों के दल के दल राजाधिराज द्वारिकाधीश की दीवाली और अन्नकूट के दर्शन कर रहे हैं. दीवाली के दिन द्वारिकाधीश जी का राजसी शृंगार होता है. आज द्वारिकाधीश श्वेत ज़री के शुभ वस्त्र धारण किए हैं. उन के श्रीमस्तक पर श्वेत ज़री की कुलह (एक प्रकार की पगड़ी) और उस पर पन्ना मानिक के त्रवल जड़ाऊ गोठी और पान शोभायमान हैं. आज भगवान ने २१ मोर के पंखों का जोर धारण किया हुआ है. श्रीहस्त में हीरा के कड़े, मानिक की पहुंची, हथफूल और मुंदरी देदीप्यमान हैं. श्रीकंठ में हीरों का पाटिया और कौस्तुभ मणि कंठमाला, हांस, हमेल, हीरा, माणिक के हार सुशोभित हैं. प्रभु के चरणारविंद नूपुर, गुजरी, पपान, अनवट बिछिया आदि से अलंकृत हैं. राजाधिराज के अंग अंग पर रत्नराशि बिखरी है. इन के एक हाथ में शंख है, दूसरे में चक्र, तीसरे में गदा और चौथे में पद्म शोभायमान है. नाक में नकबेसर और ठोड़ी पर जड़ा दुर्लभ हीरा सैकड़ों हाथ की दूरी से दमदमाता दिखाई पड़ रहा है. मुखिया जी आरती कर रहे हैं, सामने कीर्तनिया समाज अत्यंत सुमधुर कंठ से महा-

"मोहि ब्रज बिसरत नाहीं" से संक्षिप्त, कापीराइट १९८१ गोपाल प्रसाद व्यास, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली द्वारा प्रकाशित पुस्तक

कवि सूरदास सहित अष्टछाप के अन्य कवियों के पद प्रस्तुत कर रहा है.

ब्रज में दीपावली के अवसर पर गायों को खेल खिलाने की पुरानी परंपरा है. कवि कुंभनदास ने कृष्ण की गोलीला का वर्णन किया है. खिरकों में बंधी गायों को उन के बछड़ों को दिखा दिखा कर बुलाया जाता है. ये गाएं अपने बछड़ों से मिलने के लिए हूक हूक कर दौड़ी आती हैं. ही ही शब्द कहते हुए ग्वाल बाल उन्हें ले कर इधर उधर भागते हैं. गाएं भी पूंछ उठा कर गले में बंधी घंटियों को घनघना कर, पैरों में पहनी पैंजनियों को ठुमका कर उन के पीछे पीछे दौड़ती हैं. ग्वाल नाचते हैं तो गाएं भी अपने आगे वाले पैर उठा कर नाचने लगती हैं. ये दृश्य आज भी जहां तहां ब्रज के गांवों में देखने को मिल जाते हैं.

दीपावली के अवसर पर नंद के लाला राधा जी के साथ सारपांसे भी खेलते हैं और माता यशोदा के कहने पर बलदाऊ के साथ घर में ही द्यूत क्रीड़ा भी करते हैं, अन्य गोपों के साथ गायों के कान भी जगाते हैं, यानी गायों के कान में जा कर कहते हैं कि कल मैं तुम्हारे साथ खेलूंगा, तैयार रहना. लेकिन इस अवसर पर सब से अधिक महत्व नंद नंदन के हटरी में बिराजने का होता है. दीवाली के पूजन के अवसर पर आज भी घर घर में हटरियां रखी जाती हैं. इन्हें खील बताशों और मेवा मिष्ठान्नों से भरा जाता है और धन धान्य से भरे घर के प्रतीक के रूप में पूजा जाता है.

अन्नकूट. वास्तव में दीवाली ब्रज के चार प्रमुख पर्वों में से एक है. अन्य हैं: होली, जन्माष्टमी और झूलों यानी सावन का. दीवाली की तैयारी यहां दशहरा से ही प्रारंभ हो जाती है. रंग रोगन सफेदी और सजावट तो देश भर में होती है, लेकिन ब्रज की तैयारी का अर्थ दूसरा है. ब्रज की संस्कृति भोग और राग में है. ब्रज में पर्व का अर्थ ही उमंगपूर्ण गायन और दिव्य भोजन का है. ब्रज में दीवाली पर दिए ही नहीं जलते वरन विविध प्रकार पकवान भी बनाए जाते हैं. इन्हीं की तै दशहरा से प्रारंभ हो जाती है. दीपावली समापन समारोह के लिए अनेक प्रकार व्यंजन बनने लगते हैं. दूध धर, अन्नसक सकरन, चार प्रकार की दालें, चार प्रकार कढ़ी, आठ प्रकार के साग, पांच तरह के और तलातली भगवान को भोग धराए जाते दूध धर में बादाम, पिस्ता, मखाने की ब कूटू की सामग्री और नाना प्रकार के व सिद्ध किए जाते हैं.

इस दिन सकरन का विशेष महत्व होता चावल का पोत इतना ऊंचा होता है कि गिरिराज ही समझिए. इस में पांच पुट हो चार चारों कोनों पर और एक बीच में. चारों में विष्णु भगवान की भुजाओं चिह्न —शंख, चक्र, गदा और पद्म बने हैं. बीच में एक गोलाकार चांद जैसा बनाया जाता है. उसे तुलसी और केसर सजा कर अत्यंत शोभायमान बना दिया है. एक ओर जल और दूसरी ओर घी भरी हांडी रखी जाती है. यह है भगवान दिव्य अन्नकूट भोग जो पहले ग्वाल और भक्तों में वितरित किया जाता है आज सर्व साधारण के लिए बाज़ारों में भी जाता है.

तांत्रिकों के अनुसार, दीवाली की रात जाग कर तांत्रिक क्रियाएं की जाती हैं और जगाए जाते हैं. हमारे ब्रज भाषा के कवि भी राधा कृष्ण को माध्यम बना कर अपने के मंत्र जगाए हैं.

इस बार की दीवाली में आप कौन सा जगाएंगे ? परिश्रम कर के लक्ष्मी कमाने या कमाई हुई लक्ष्मी को गंवाने का ? संस्कृति, साहित्य, कला, भाषा के दीपक स्नेह देंगे या उन की उपेक्षा कर के प्राप्त मोमबत्तियों के टिमटिमाते प्रकाश में के कान बहरे करने वाले पटाखे फोड़ें
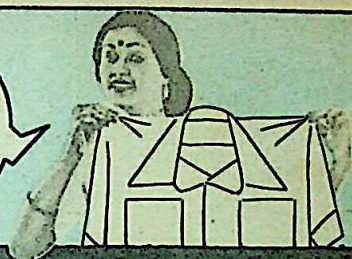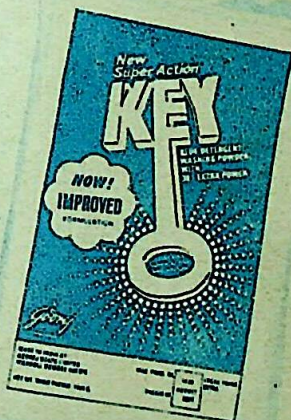
हिम्मत न हा

घोर कठिनाइयों के बी
भी अगर मनोबल ऊं
है, हिम्मत बरकरा
और अर्जुन सी एका
चित्तता है, तो सफ
क़दम चूमेगी

ग्लेन कनिंघम और जार्ज एक्स

हम हरे भरे सपाट मैदान को पैदल पार कर रहे थे. हवा बड़ी निर्ममता से मेरे चेहरे से टकरा रही थी. अंधड़ ने हमें पैर घसीट कर चलने पर मजबूर कर रखा था. "तेज़ी से चलो, ग्लेन, तुम इस हवा का मुक़ाबला तो कर ही सकते हो!" डंक सी मारती हवा के बीच मेरे सब से बड़े भाई फ़्लायड की आवाज़ गूंजी.

फ़रवरी १९१६ की बात है. तब मैं सात साल का था. हम तीन भाई फ़्लायड, रेमंड और मैं तथा हमारी बहन लेथा स्कूल जा रहे थे. १८० व्यक्तियों की जनसंख्या वाले रोला कैनज़ास के हमारे फ़ार्म हाउस से स्कूल तीन किलोमीटर की दूरी पर एक चौराहे के नज़दीक था. स्कूल क्या था, लकड़ियों के खोखे से बने कुछ कमरे थे.

हमारे टीचर नहीं आए थे और न ही बाक़ी १९ विद्यार्थी. लेथा बाहर ही रहना चाहती थी, लेकिन भाई और मैं ठंड से बचना चाहते मुख्य द्वार की इकलौती कुंजी टीचर के रहती थी, इस लिए हमें बग़ल के दरवाज़े इस्तेमाल करना पड़ा, जिसे केवल बाहर से खोला जा सकता था. हमारे अंदर दाख़िल ही दरवाज़ा फिर से बंद हो गया.

रेमंड और मैं ब्लैकबोर्ड पर चील खेलने लगे. फ़्लायड गोल स्टोव जलाने गया.

"क्या स्टोव काम लायक़ है?" पूछा.

"हां, बस, मिट्टी का तेल डालना है ने डब्बे का ढक्कन खोला और उंडेलने अचानक किसी अनजानी शक्ति ने मुझे कर दीवार पर पटक दिया. मुझे फ़्लायड हल्की सी चीख़ सुनाई दी, "आग!" लगा कि मैं भी जल रहा हूं. मैं ने उठने कोशिश की, लेकिन टांगें जवाब दे गईं

लेथा को आवाज़ देता रेमंड बग़ल के दरवाज़े की तरफ़ भागा. लेथा ने दरवाज़ा खोल कर बाहर निकलने में हमारी मदद की. बड़े भाई की तरह मैं भी आग बुझाने के लिए ज़मीन पर लोट लगाने लगा. "हम पर रेत डालो!" फ़्लायड चीख़ा, लेकिन मिट्टी ठंढ से जम गई थी. लपटों से घिरा फ़्लायड पैरों पर खड़ा होने की कोशिश में लड़खड़ाया. "हमें घर पहुंचना ही होगा!" वह चीख़ा और दौड़ने लगा.

हम ने भयभीत नज़रों से उसे देखा. फ़्लायड क़रीब क़रीब नंगा हो गया था. केवल जले कोट का ऊपरी हिस्सा ही शेष बचा था. कोट और धुंआते जूतों के बीच सिर्फ़ काला पड़ता शरीर दिख रहा था.

मैं ने अपनी टांगों की ओर देखा. पैंट की दोनों मोरियां जल चुकी थीं. चलते चलते थोड़ा पिछड़ जाने पर रेमंड ने मेरी हिम्मत बंधाई, "रुको मत, चलते रहो."

पिता जी को भी हम से यही अपेक्षा थी. 'हार कभी मत मानो. हमेशा बढ़ते चलो. अपनी समस्याओं का हल ख़ुद ढूंढ़ो.' क्लाइंट कनिंघम अपने बच्चों से हमेशा यही कहते थे.

किसी तरह हम ने तीन किलोमीटर का फ़ासला तय कर लिया. घर के नज़दीक पहुंचने तक मेरी सहन शक्ति जवाब दे गई और मैं बेहोश हो गया.

जो अगली आवाज़ मैं ने सुनी, वह सांत्वना से भरी एक कोमल सी आवाज़ थी. बिलकुल मेरे चेहरे के क़रीब. "डाक्टर आ रहा है," मेरे तपते ललाट पर गीला कपड़ा रखती मां ने कहा.

मैं ने आंखें खोलीं. पिता जी संजीदगी से फ़्लायड को घूर रहे थे. परिवार के अन्य सदस्य बिस्तर के पैताने खड़े थे. ख़ामोश और भयभीत. पीड़ा से मेरी चीख निकल गई.

डाक्टर फ़र्गुसन ने पहले फ़्लायड पर अपना ध्यान केंद्रित किया. फिर मेरी बारी आई. मां मुझे थामे रही और डाक्टर ने तीसी के तेल मिले घोल को मेरे गहरे ज़ख्मों पर लगाया. दर्द मेरी सहन शक्ति से बाहर था.

बाद में युवा डाक्टर ने पिता को बाहर आने का इशारा किया. उन्हों ने दरवाज़ा बंद कर लिया था, लेकिन डाक्टर के शब्द मैं ने सुन लिए: "ग्लेन के मामले में सब से बड़ा ख़तरा छूत का है. हो सकता है दोनों टांगें काटनी पड़ें. पता नहीं वह फिर कभी चल भी पाएगा या . . . फ़्लायड के मामले में ज़्यादा कुछ नहीं किया जा सकता."

बाद में हमें पता चला कि एक रात पहले स्कूल में किसी सामुदायिक क्लब की सभा हुई थी. अगली सुबह हमारे पहुंचने तक स्टोव की आग पूरी बुझी नहीं थी. और किसी कारण से मिट्टी के तेल वाले कनस्तर में पेट्रोल था. दुःखद परिणाम सामने था.

दिन बीतते गए और हम बिस्तरों में ही पड़े रहे. फ़्लायड तो हिल भी नहीं पाता था. फिर भी वह परिवार के लोगों से बातें करता और उन के साथ भजन भी गाता. घाव हो जाने के कारण मेरी टांगों में दर्द होता रहता था. चमड़ा जल जाने से टांगें लाल हो कर भद्दी दिखती थीं. मैं घुटने मोड़ नहीं पाता था.

नौवीं सुबह को फ़्लायड आंखें बंद किए शांत लेटा था. मां हमारे पास ही बैठी थी. मुझे ज़रूर झपकी आ गई होगी, क्योंकि अचानक चौंक कर जगने पर मुझे लगा कि कहीं कुछ गड़बड़ ज़रूर है. मैं ने इस से पहले मां को कभी रोते नहीं देखा था. मां की आंखों से आंसू बह रहे थे. उसी सुबह फ़्लायड की मौत हो गई थी.

मेरी टांगों की हालत बदतर होती जा रही थी. बाएं नितंब पर एक बड़ा सा फोड़ा हो गया था. जिस का मतलब मुझे मालूम था—मेरे घावों में छूत लग चुकी थी.

एक दिन तीसरे पहर पास के शहर की एक महिला मां से मिलने आईं. वह लौटने लगीं तब मैं ने उन्हें मां से कहते सुना, "सच्चाई का सामना करने के लिए तैयार रहो, यही ठीक है. ग्लेन अब सारी ज़िंदगी असमर्थ रोगी की तरह ही काटेगा."

लौटने पर मां को मेरे चेहरे के भाव से लग गया कि मैं ने बात सुन ली थी. "मैं अपाहिज नहीं होने का," मैं चिल्ला पड़ा, "मैं फिर से चलूंगा, दौड़ूंगा . . .दौड़ूंगा . . ."

मां ने प्यार से मेरे ललाट पर आए बालों को पीछे समेटा और उंगलियां फेरती हुई बोलीं, "हां, ग्लेन, तुम फिर चल सकोगे . . .ज़रूर चलोगे."

दुर्घटना के बाद तीन माह बीत जाने पर भी टांगों के घाव भरे नहीं थे. मां रोज़ उन पर मीठी गंध वाला मरहम लगाती. बड़े धीरज से मवाद वाले घावों को बचा बचा कर मेरी टांगों की निर्जीव मांसपेशियों की मालिश करती.

पीड़ा भूलने के लिए मैं किसी भी चीज़ की तलाश में जुटा रहता. पिता जी हिरन की तरह दौड़ सकते थे और मेरे साथ दौड़ की बात करना उन्हें प्रिय था. दुर्घटना से पहले वे कहा करते कि मुझ में दौड़ने की जन्मजात प्रवृत्ति है. उन्हों ने मुझे सिखाया था कि बेहतर गति हासिल करने के लिए अपनी बांहों को कैसे डुलाया जाए तथा लंबी दौड़ के लिए किस तरह गति निर्धारित करनी चाहिए. मैं कल्पना किया करता कि दौड़ प्रतियोगिताओं में मैं अपने प्रतिद्वंद्वियों को लगातार पीछे छोड़ता जा रहा हूं . . .मैं कब ऐसे दौड़ पाऊंगा?

गरमियां आ गईं और अगस्त की [illegible] उमस भरी दोपहरी में डा. फर्गुसन ने [illegible] अकड़ी टांगों को मोड़ने की नाकाम कोशि[illegible] की. उन्हों ने गंभीर निगाहों से मुझे देखते हु[illegible] कहा "ग्लेन पिछले छः महीनों से तुम फिर [illegible] चलने की बात करते रहे हो, क्या अब [illegible] तुम्हें इस बात का विश्वास है?"

"जी, हां."

"ठीक है. चलो, कोशिश कर के दे[illegible] हैं. अभी इसी वक़्त."

बहुत कोशिश कर के धीरे धीरे मैं [illegible] पहले दाहिनी फिर बाईं टांग को आहि[illegible] आहिस्ता मैं ने बिस्तर के किनारे की [illegible] खिसकाया. मेरा शरीर पसीने पसीने हो [illegible] मेरे पैरों ने धरती छुई तो सिर चकरा रह [illegible]

मैं ने क़दम उठाने की कोशिश की. [illegible] टांगों ने हिलने से इनकार कर दिया. मां [illegible] डाक्टर ने थाम न लिया होता तो मैं गिर पड़[illegible] उन्हों ने उठा कर मुझे वापस बिस्तरे पर [illegible] दिया. अपनी असमर्थता पर मैं फूट फूट कर [illegible] पड़ा.

उस शाम पिता जी के घर वापस लौटने [illegible] मैं ने उन से कहा, "पिता जी, मुझे नीचे [illegible] बड़ी वाली कुरसी चाहिए."

"मैं उसे ऊपर ले आता हूं, ग्लेन," [illegible] ने कहा.

फिर घर में बनी वह मज़बूत कुरसी [illegible] व्यायाम मशीन बन गई. कुरसी के हत्थे [illegible] थामे आहिस्ता आहिस्ता मैं बिस्तर से उठ [illegible] कुरसी पर बैठ सकता था. फिर ख़ुद को [illegible] खड़ा करने के लिए उस की एक बांह [illegible] बैसाखी की तरह इस्तेमाल करता मैं उस [illegible] पीठ पर झुक जाता, फिर घोर यातना [illegible] हुआ धीरे धीरे उस के सामने वाले हिस्से [illegible] ओर पहुंचने की कोशिश करता.

क्रिसमस से एक दिन पहले मां हमेशा की तरह मेरी टांगों पर मालिश कर रही थी, "मेरे पास तुम्हारे लिए एक तोहफ़ा है," मैं ने कहा, "इसे पाने के लिए तुम्हें आंखें बंद कर के दरवाज़े के पास खड़ा होना पड़ेगा." मां ने वैसा ही किया. इस बीच मैं बिस्तर से सरक गया. "अब आंखें खोलो, मां—जल्दी!" मैं लड़खड़ाता हुआ उस की ओर बढ़ा. पहला क़दम . . .दूसरा क़दम . . .सिर घूमने लगा. मां मुझे थामने के लिए झपटी, और हम दोनों एक साथ फ़र्श पर गिर गए. मैं ने दूसरी बार मां को रोते देखा.

मौसम के गरमाने और खुले में जा सकने से पहले मुझे लगा कई युग बीत गए. एक दिन खरगोश के शिकार के लिए पिता जी मुझे अपने साथ हरी दूबों वाले मैदान में ले गए. बड़ी मुश्किल से मैं किसी खिलौने की ही तरह फुदकती चाल से चल पाने में सफल हुआ.

अगली बार बाहर जाते वक्त पिता जी ने घोड़ा गाड़ी का एक घोड़ा खोल लिया. उस की काली दुम उन्हों ने मेरे हाथों में पकड़ा दी. इसी के साथ चलो. घोड़ा आगे बढ़ा, तो मैं ने दांत भींच लिए. बमुश्किल मैं ने कोई दर्जन भर लड़खड़ाते डग भरे होंगे कि पिता जी ने घोड़े को एकाएक रोक दिया. भयभीत सा मैं उन की ओर मुड़ा, लेकिन उन के कठोर चेहरे पर ख़ुशी का भाव था. "तुम तो दौड़ते हो, बेटे!" उन्हों ने कहा, "खीझो नहीं, बस, कोशिश करते जाओ."

अगले बसंत में हम और आगे पश्चिम की ओर रहने चले गए—पैदल स्कूल जाने और आने में तय की गई तीन किलोमीटर की दूरी ने मेरी टांगों को और दमदार बना दिया था, लेकिन दौड़ने में मुझे अब भी तकलीफ़ होती थी. फ़ार्म में अपने काम के अलावा मैं रोज़ व्यायाम करता था. फुदकने वाली मेरी चाल आहिस्ता आहिस्ता सच्ची दौड़ में तब्दील होती गई.

१२ वर्ष की उम्र में मैं ने चौथी कक्षा में प्रवेश किया. हालांकि मैं अब भी बच्चा ही था, लेकिन हट्टा कट्टा था. स्कूल के खेलों का समय आने पर, मैं ने अंतःप्रेरणा के वशीभूत उन में हिस्सा लेने का फ़ैसला कर लिया और इस बात का ख़ास ख़याल रखा कि मेरे माता पिता को इस का पता न चले.

"क्या तुम ऐसे ही दौड़ने की सोच रहे हो?" स्कूल के प्राचार्य ने घर में बनी मेरी ऊनी कमीज़ और पैंट तथा मोटे सोल वाले कैनवास के जूतों की ओर देखते हुए पूछा.

"जी, हां," मैं ने कहा. उन्हों ने मुझे इशारे से उस जगह जाने को कहा, जहां प्रतियोगियों का वज़न लिया जा रहा था. "तुम इतने छोटे हो कि तुम्हें जूनियर वर्ग में दौड़ना पड़ेगा." उन्हों ने कहा.

लेकिन मैं बड़े लड़कों के साथ १६०० मीटर की दौड़ में हिस्सा लेना चाहता था. लिहाज़ा टहलते हुए ही मैं सीनियर वर्ग की पांत में जा खड़ा हुआ. "तुम्हारा वज़न क्या है, बेटे?" मेरी बारी आने पर स्केल के पास खड़े व्यक्ति ने पूछा. उस ने बताया कि सीनियर वर्ग की दौड़ में हिस्सा लेने के लिए मेरा वज़न कम से कम ७० पौंड होना ज़रूरी है.

स्केल पर क़दम रखते वक्त उस ने ज़रूर मेरे चेहरे पर निराशा देखी होगी, क्योंकि स्केल के अंकों को देखे बग़ैर ही उस ने एलान किया. "पूरे ७०. पौंड!"

मेरे प्रतिद्वंद्वियों में लगभग सभी हाई स्कूल के विद्यार्थी थे. यानी सभी मुझ से बड़े. मैं

अकेला ऐसा लड़का था जिस ने दौड़ की पोशाक नहीं पहन रखी थी. मैं यह देख कर हैरान था कि उन्हों ने मेखों वाले जूते पहन रखे थे. इस से पहले मैं ने मेखों वाले जूते नहीं देखे थे.

दौड़ शुरू हुई. सभी अपने पैरों पर उछले और तेज़ी से भाग लिए. पिता जी द्वारा बताई बातें मुझे याद आ गईं. मैं ने उन के साथ साथ दौड़ने की कोशिश नहीं की. आगे दौड़ने वाला एक लड़का मुश्किल से ४०० मीटर तक दौड़ पाया. अब मैं ने अपनी गति थोड़ी तेज़ की. ८०० मीटर का फ़ासला तय करते करते, मैं सब से आगे दौड़ने वाले दो लड़कों के बराबर पहुंच गया. मुझे पता नहीं था कि आगे बढ़ने के लिए ट्रैक के बाहरी ओर से जाना चाहिए. मैं उन के बीच से आगे निकला और दौड़ता चला गया.

जो अगली बात मुझे मालूम थी वह यह कि मैं ट्रैक के आरपार तनी डोरी के क़रीब पहुंच रहा था. डोरी मेरे सिर से टकराती इस से पहले ही मैं सिर झुका कर उस के पार निकलता चला गया. अचानक भीड़ उत्तेजना में हाथ हिला हिला कर मुझे वापस जाने का इशारा करने लगी. "जीतना है, तो डोरी तोड़नी होगी." एक आदमी चिल्लाया.

हड़बड़ाहट में मैं वापस भागा और डोरी तोड़ दी. मैं जीत गया था.

उसी ज़ोश में मैं ने पलट कर घर की ओर दौड़ लगा दी. मैं जानता था, पिता जी को मुझ पर गर्व होगा. दौड़ते वक़्त उन के शब्द मेरे कानों में गूंज रहे थे: "दौड़ते रहो—कभी हार मत मानो!"

ग्लेन कनिंघ्रम बाद में अपने समय का प्रमुख धावक बना और उस ने ओलिंपिक पदक भी जीते. १९३३ और १९४० के बीच उस ने न्यू यार्क सिटी के मेडिसन स्क्वायर गार्डन में आयोजित ३१ दौड़ों में से २१ जीतीं तथा ८०० मीटर और १६०० मीटर की दौड़ में विश्व कीर्तिमान भी स्थापित किए. दौड़ से रिटायर होने के बाद उस ने कैनज़ास के ... पाइंट, में कनिंघम यूथ रैंच की स्थापना की जहां ३० वर्षों तक वह अपनी पत्नी रूथ के साथ ९,००० से भी अधिक विपत्ति में फंसे नवयुवकों की मदद करता रहा.

सौदा

अमरीकी टीवी पर दिन में प्रसारित होने वाली मशहूर नाट्यमाला 'आल माई चिल्ड्रन' और 'वन लाइफ़ टू लिव' की रचयिता एगनेस निक्सन ने एक बार यह कथा सुनाई:

बेटी की शादी का दिन पास आता जा रहा था और मेरी घबराहट बढ़ती जा रही थी. बैठक की छत में पड़ी दरार की मरम्मत शेष थी और घर की सजावट के लिए इंटीरियर डेकोरेटर की भी तलाश थी. आख़िर एक के यहां फ़ोन किया तो उस की पत्नी ने चोगा उठाया. नाम बताने पर पूछने लगी, "आप वही हैं ना जो 'आल माई चिल्ड्रन' लिखती हैं."

मेरे हां करने पर वह बोली, "आप अगर इतना बता दो कि अंत में तारा और फ़िलिप का क्या होगा, तो मैं कल सुबह ही अपने पति को आप के यहां भेज दूंगी."

मैं ने उस की शर्त पूरी की और उस ने अपना वादा.

—बी ...

संप्रति

एक तस्करी यह भी

विदेशों में सांपों की खाल की बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए वेहिसाब सांपों के मारे जाने से भारत के लिए एक और विकट स्थिति पैदा हो रही है और वह है चूहों की आबादी में बढ़ोतरी.

सांप दरअसल चूहों के जन्मजात शत्रु हैं. फिर चूहे भंडारों में रखे अनाज में से हर साल ४५० करोड़ रुपए मूल्य का १.५ करोड़ टन गल्ला खा जाते हैं. पर सांपों की खाल के निर्यात पर प्रतिबंध के बावजूद हर साल ४० करोड़ रुपए से भी अधिक मूल्य का सर्पचर्म विदेश पहुंच जाता है. और इस तस्करी का गढ़ है बंबई.

सांपों को पकड़ने और मारने पर आदिवासियों और भूमिहीन मज़दूरों को प्रति सर्प कुछ ही रुपए मिलते हैं जबकि व्यापारी लोग प्रति ३० सेंटीमीटर खाल पर ७५ रुपए तक बना लेते हैं. विडंबना यह है कि उन्हीं चित्तीदार सांपों की खाल की मांग अधिक है जो चूहे खाने में अपने अन्य बंधुओं से आगे हैं.

तीन साल पहले के अपने असफल प्रयास के बावजूद सांप की खाल के व्यापारी इस नग के निर्यात को क़ानूनी घोषित कराने के लिए सरकार पर पुनः दबाव डाल रहे हैं. वन्य पशु संरक्षण अधिनियम की त्रुटि पकड़ कर वे यह तर्क पेश करते हैं कि संरक्षित जीवों की सूची में (इस) 'धमन' (सर्प) का नाम नहीं है, इस लिए इस की खाल के निर्यात की अनुमति दी जानी चाहिए. परंतु पर्यावरण विज्ञानियों ने चेतावनी दी है कि ऐसी अनुमति देने का अर्थ मात्र देश की पारिस्थितिक व्यवस्था से खिलवाड़ ही होगा.

एक पर्यावरण विज्ञानी ने सुझाव दिया है कि परंपरागत सांप पकड़ने वालों को चूहे मारने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए. वस्तुतः केंद्रीय चमड़ा संस्थान ने मृत चूहे को भी आय का साधन बना दिया है. चूहे की खाल को साफ़ करने और रंगने की नई विधि का विकास कर यह संस्थान उस चमड़े से पर्स और जूते बना रहा है.

—स्टेट्समैन

गंभीर ख़तरा

कुछ प्रदेशों में रक्तबीज की भांति अवैध हथियारों का निर्माण बढ़ रहा है. अतः स्थिति की मांग है कि केंद्र और राज्य सरकार इस की रोकथाम के लिए फ़ौरी कारवाई करें. एक भूतपूर्व पुलिस महानिरीक्षक ने तो माना है कि दंगाग्रस्त मुरादाबाद ज़िले में लाइसेंसशुदा और ग़ैर लाइसेंसशुदा हथियारों की संख्या ब्रिटेन या कहें जापान से भी ज़्यादा थी. फिर एक ब्यौरे के अनुसार बिहार के नालंदा ज़िले में बंदूक निर्माण किसी सुसंगठित कुटीर उद्योग का सा रूप धारण कर चुका है.

इस में शक नहीं कि ग़ैर लाइसेंसशुदा हथियारों को पकड़ने का काम बहुत कठिन है. फिर भी राज्यों और केंद्र में बैठे अधिकारी क़ानून को ढंग से लागू करें तो इस मुसीबत पर अंकुश रखा जा सकता है. लाइसेंसशुदा हथियारों का दुरुपयोग, अपराधी गुटों तक नवीनतम हथियारों का पहुंचना तथा फ़ौजी शस्त्रागारों और बारूद भंडारों से हथियारों की चोरी आदि इस समस्या के ऐसे पक्ष हैं, जो शस्त्रास्त्र संबंधी विनियमों को कड़ा बनाए जाने की मांग करते हैं. ऐसी घड़ी में जबकि वातावरण

अव्यवस्था और सांप्रदायिक तनाव से दूषित है, ग्रामीण क्षेत्रों में पनपती हथियारों की इस होड़ का विचार मात्र भयावह बन पड़ता है.

—इंडियन एक्सप्रेस

बढ़ता चंबल

मध्य भारत में प्रति वर्ष ८०० से १,००० हैक्टेयर उर्वर भूमि जल क्षरण के कारण ऊसर ढूहों में बदल जाती है. फिर उद्योगों के अभाव से ग्रस्त इस क्षेत्र की बढ़ती जनसंख्या के जीवन निर्वाह के लिए उपजाऊ भूमि की ज़रूरत भी कम नहीं. इस समय मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश और राजस्थान की लगभग २८ लाख हैक्टेयर भूमि इन ढूहों की चपेट में आ चुकी है.

यह ऊबड़ खावड़ इलाक़ा इस समय अपराधियों का स्वर्ग बन चुका है, क्योंकि इस के तंग बीहड़ रास्ते डाकुओं के छिपने के लिए उपयुक्त हैं. इस क्षेत्र में अवैध शराब, हथियार उद्योग और वेश्यावृत्ति का धंधा ख़ूब पनप रहा है.

इन सब का एक ही इलाज है, और वह यह कि ढूहों के प्रसार से इन घाटियों का उद्धार किया जाए. परंतु धनाभाव ने ऐसी सरकारी योजनाओं को पंगु बना कर रख दिया है. उदाहरण के लिए पांचवीं पंचवर्षीय योजना में तीनों राज्यों की छः छः हज़ार हैक्टेयर भूमि के उद्धार के लिए आर्थिक व्यवस्था की गई थी; परंतु मध्य प्रदेश में केवल २,५०० हैक्टेयर भूमि का ही सुधार किया जा सका. फिर यह सुधारा गया क्षेत्र इतना भी नहीं जो कि हर साल इन ढूहों की भेंट चढ़ जाता है. अन्य सरकारी योजनाएं भी ठप पड़ी हैं क्योंकि विश्व बैंक से मिलने वाली आर्थिक सहायता प्राप्त नहीं हुई. विशेषज्ञों की मान्यता है कि ढूहों से भरे आलोच्य क्षेत्र के पूर्णोद्धार में ३० वर्ष लगेंगे और यह कार्य १,२०० करोड़ रुपए की लागत पर ही संभव होगा.

विदेशी सहायता के अभाववश सरकार ने इस भूमि के सुधार का विचार ही छोड़ दिया है और इस समय इस प्रक्रिया को रोकने के नाम पर मात्र घास और पेड़ लगा कर ही काम चलाया जा रहा है.

अब इन क़दमों से ढूहों के प्रसार पर थोड़ा बहुत अंकुश भले लग जाए, पर इस से ... भूमि पर विद्यमान दबाव और अपराधी प्रवृत्ति नहीं घटने वालीं. अतः इस तरह के ... कामचलाऊपन को छोड़ सरकार को चाहिए कि ... ढंग से योजना बना कर इस काम के लिए ... धन जुटाए.

—इंडियन एक्सप्रेस

दहेज के विरुद्ध

स्वर्गीय संजय गांधी के दहेज विरोधी अभि... के बावजूद अपर्याप्त दहेज लाने वाली दुल्हनों के कष्ट बढ़ते ही जा रहे हैं. १९८० में दिल्ली पुलिस ने महिलाओं के जलने जलाए जाने के ३९४ मामले दर्ज़ किए. फिर दहेज संबंधी क़ानूनी सुधारों के लिए गठित संसद की संयुक्त समिति ने रपट दी कि देश के अधिकांश भागों में दहेज की कुप्रथा आज भी पहले जितनी ही प्रबल है.

इन मामलों का निकृष्टतम पक्ष यह है कि ... क्षेत्र के अत्याचारियों में प्रायः पढ़े लिखे, मध्य वर्गीय पति होते हैं. हाल के महीनों में एक ... क्लर्क, एक छोटा व्यापारी, एक कालेज प्राध्यापक और एक पुलिस सब-इंसपेक्टर इस तरह के ... से जुड़े मिले. एक अन्य मामले में जलाए जाने से पहले ससुर ने बहू के साथ व्यभिचार तक ... एक अन्य मामले में तलाक़ के इच्छुक पति ने अपनी पत्नी को पागल सिद्ध करने की कोशिश भी की.

इन अत्याचारों का दमन करने के लिए सरकार को चाहिए कि १९६१ के दहेज निषेध अधिनियम में तत्काल सुधार करे. उसे अखिल भारतीय महिला सम्मेलन के इस सुझाव पर भी गंभीरता से विचार करना चाहिए कि विवाह के सात वर्ष के भीतर किसी महिला की मृत्यु होने पर मामले की जांच पुलिस से करवाई जाए. इस के अतिरिक्त अत्याचार से बहादुरी से जूझ रही महिला संस्थाओं को सरकारी समर्थन और आर्थिक सहायता ... चाहिए.

—हिंदुस्तान ...

वाशिंगटन का दल्ला

नैथन एम एडम्स
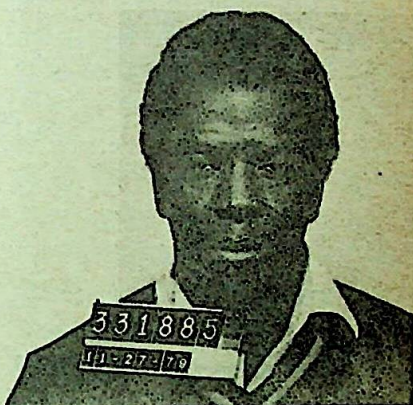
अलबर्ट ब्रीच

खुद को तो वे 'प्लेयर', यानी खिलाड़ी कहते हैं. लेकिन उन का धंधा—जिस्मों की सौदागरी—खेल नहीं है. हर साल इन दल्लों के चंगुल में फंसने वाली हजारों लड़कियों की ज़िंदगी झूठे वादों, अकथनीय व्यथाओं और बर्बर आतंक से भरे दुःस्वप्न, और कभी कभी मौत भी बन जाती है.

इस के बावजूद अधिकारी वेश्यावृत्ति में घसीटने को एक साधारण अपराध समझते हैं जिस में किसी मासूम को 'शिकार' नहीं बनाया जाता. इसी लिए सरकारी रेकार्ड अभी तक यह बताने के आसपास भी नहीं पहुंचे कि अनगिनत मासूम लड़कियों की ज़िंदगी नरक बनाने में इन दुष्टों की वास्तविक भूमिका क्या है. दरअसल, ये 'खिलाड़ी' हैं कैसे?

यहां है भूतपूर्व वेश्याओं की भेंटवार्ताओं और चार देशों की पुलिस की फाइलों से मिली सामग्री के आधार पर संकलित एक अमरीकी दल्ले का शब्द चित्र.

उन्नीस वर्षीय लारा वीडिन* खिन्न प्रकृति की लड़की थी. १९७६ की शरद ऋतु में कालेज छोड़ कर वह कामकाज की तलाश में अपने घर, मांटैना लौट आई थी, मगर अगली गरमियों तक भी उसे कोई ढंग की नौकरी न मिल सकी. वह मोटी थी और महसूस करती थी कि उसे कोई नहीं चाहता. ज़रा से अरसे में ही उस का बायफ्रेंड उसे छोड़ गया था और दादी व दुलारा कुत्ता चल बसे थे. कोई रास्ता उसे नज़र न आता.

इन परिस्थितियों से पलायन का उसे बहाना चाहिए था, जो २ अगस्त १९७६ को उसे अलबर्ट ब्रीच के रूप में मिल गया.

* यह नाम काल्पनिक है

फोटो: मैट्रोपालिटन पुलिस डिपार्टमेंट, वाशिंगटन डी सी के सौजन्य से

ब्रीच से लारा का परिचय एक मित्र ने करवाया था, और उस ने बताया था कि सब लोग उसे 'किट' नाम से पुकारते हैं. अगले दिन वह उस से डिस्को में मिली थी. कई पारियां नाचने के बाद दोनों बैठ गए थे. ब्रीच तब मीठी मीठी बातों से उस की कमज़ोरियों का सुराग़ लगाने लगा.

उसे यह सब जानने में देर न लगी कि लारा अपने जीवन से निराश है. उसे यह भी पता चल गया कि वह एक प्रतिभावान म्यूज़ीशियन है और संगीत कार्यक्रमों में ऐलो बजाती है. उस ने पूछा, "कभी तुम वाशिंगटन डी सी के कैनेडी सेंटर के किसी कंसर्ट में गई हो? कभी यूरोप जा कर संगीत सीखने की भी सोची है?" किट बोला कि यूरोप उस का ख़ूब जाना बूझा है; और उस ने हांकी कि दरअसल, वह ख़ुद भी म्यूज़ीशियन है.

लारा इतनी भोली नहीं थी. उस ने हंसते हुए सिर झटक दिया और बोली, "बनो मत! तुम दल्ले हो."

किट ने सिर झुका कर हामी भरी. पूछा, "तुम्हें ठेस पहुंची! तुम्हें अच्छा नहीं लगा कि तुम गोरी हो और मैं काला?"

वह बोली, "ऐसा कुछ नहीं."

अगले कुछ दिनों में वे कई बार मिले. अंत में किट ने उसे अपने साथ वाशिंगटन चलने को कहा. बोला, "मेरी 'मैडम' बन जाओ और लड़कियों के आने जाने का इंतज़ाम और आमदनी का हिसाब किताब भी संभाल लो. चाहो तो साथ साथ थोड़ी बहुत माडलिंग भी करती रहना."

वह बराबर लारा को मनाता रहा. उस की बातें लुभावनी, निश्छल और विश्वासजनक थीं: "तुम हर हफ़्ते १,००० डालर तक बना लोगी. फिर हो सका तो हम एक जाज़ क्लब खोल लेंगे. या यूरोप चले जाएंगे, ताकि तु[illegible] सेलो बजाने के काम की जुगत भिड़ा सको."

उस के प्रस्ताव की अविश्वसनीयता औ[र] आवेगशीलता ने लारा को बांध लिया: [illegible] पाबंदियों की दुनिया मज़ेदार तो होगी! औ[र] उस ने पाया कि वह किट ब्रीच के प्या[र] में डूबती जा रही है.

ब्रीच से पहली मुलाक़ात के एक स[प्ताह] बाद, ९ अगस्त १९७७ के दिन लारा वीं[ग] अपनी कार में बैठी ब्रीच की लिंकन कांटीनें[टल] के पीछे पीछे, पूर्व की ओर जाने वाले अं[तर]राज्यीय हाइवे पर चल पड़ी.

बलात्कार, यातनाएं, हत्या. लारा वीं[ग] डिस्ट्रिक्ट आफ़ कोलंबिया के दुराचार वि[रोधी] दस्ते—वाइस स्क्वैड—के गुप्तचरों द्वारा तै[यार] की गई 'दल्लों की फ़ाइलें' देख पाई होती [तो] वह मांटैना छोड़ने के फ़ैसले पर ज़रूर फि[र] गौर करती. अलबर्ट ब्रीच की फ़ाइल में [उस] की रोंगटे खड़े कर देने वाली क्रूरता, [illegible] और मानवीय मान मर्यादा के प्रति प्रायः [कोई] स्थान न होने का पूरा इतिहास दर्ज था. [illegible] फ़ाइलों में लारा को दूसरे दल्लों के अत्या[चार] के नमूने भी मिल जाते:.

- नई भगाई युवतियों का आत्म [illegible] नष्ट करने और धंधे की कड़वी सच्चा[ई] सिखाने समझाने के लिए उन के साथ [illegible] हिक बलात्कार किया जाता है.
- अपना 'कोटा' कमाने के लिए [illegible] लड़कियों को चौबीस चौबीस घंटों तक [illegible] तार 'अड्डे' (स्टाल—जहां वेश्याएं [illegible] भुगताती हैं) के गिर्द मंडराते रहना पड़[ता] [illegible]
- यदि किसी लड़की पर संदेह हो [illegible] कि यह अपने दल्ले के चंगुल से छूट नि[कलने] की घात में है तो उसे नृशंसता पूर्वक [illegible] जाता है, यातनाएं दी जाती हैं, उस का [illegible]

भंग कर दिया जाता है, यहां तक कि हत्या भी कर दी जाती है.

इलाक़े के अड्डों की निगरानी करने वाले वाइस स्क्वैड के अफ़सरों के लेखे अलबर्ट ब्रीच शहर के लगभग सौ दल्लों में से महज़ एक था, जो ३०० से ५०० वेश्याओं की कमाई पर पल रहे थे. उस के जाल में फंसने वाली पहली लड़की कौन थी और उस का क्या बना, यह कोई नहीं जानता. यह ज़रूर मालूम हो गया था कि उसे दो बार स्कूल से निकाला गया था और अंत में, १७ साल की उम्र में, उस ने पढ़ना छोड़ दिया था.

मुक्ति असंभव. लेकिन ब्रीच को भी मौक़े मिले थे. वह एक निपुण नर्तक था और कनाडा में आयोजित १९६७ के विश्व मेले में उस ने भाग लिया था. १९६८ में नर्तक के रूप में ही उस ने यूरोप का भ्रमण किया था. मगर अक्तूबर १९६९ में एक दिन, स्पेन में, वह नशीली दवाओं के अवैध व्यापार के अभियोग में पकड़ लिया गया.

लेकिन मार्च १९७१ में वह कोपेनहेगन, डेनमार्क, पहुंच गया. जहां उस ने एक नया पेशा अपना लिया—वेश्याएं पालना. हर संभावित शिकार को पटाते वक़्त वह नया मुखौटा ओढ़ लेता. कभी वह वियतनामी मोरचे का भूतपूर्व सैनिक होता जो युद्ध में घायल हो गया था, कभी जातिवाद का मारा एक शरणार्थी जो सहानुभूति और दया संवेदना के लिए भटकता फिर रहा था और कभी एक ऐसा नर्तक जिस के पास एक नाइट क्लब खोलने लायक़ पैसे नहीं थे.

चंगुल में फंसने के बाद लड़कियों को पता चलता कि मुक्ति का कोई मार्ग नहीं. और ब्रीच की निगाहों में वे इनसान न रह कर पैसा उगलने वाली मशीन भर रह जातीं. उन्हें बेरहमी से पीटना उस के लिए आम था. एक बार एक लड़की ने विरोध किया तो ब्रीच ने उसे कांच की टूटी बोतल से गला काट देने की धमकी दी.

जुलाई १९७२ में कोपेनहेगन पुलिस ने ब्रीच को वेश्यावृत्ति करने, हमला करने और ग़ैरक़ानूनी तौर पर गोली चलाने वाले हथियार रखने के जुर्म में गिरफ़्तार कर लिया. उसे तीन वर्ष की क़ैद हुई. लेकिन १९७४ में उसे वापस अमरीका भेज दिया गया.

अमरीका लौटे उसे हफ़्ता भर भी नहीं हुआ होगा कि उस ने मैनहैटन की एक युवा नीग्रो युवती फांस ली. उसे लिए दिए वह वाशिंगटन डी सी आ गया, जो काफ़ी फ़ायदेमंद जगह साबित हुई. वाशिंगटन में शीघ्र ही संयुक्त राज्य अमरीका की स्वतंत्रता का द्विशताब्दीय समारोह मनाया जाने वाला था और पुलिस वेश्यावृत्ति के अभूतपूर्व ज्वार से पार पाने के लिए संघर्षरत थी.

लेकिन कुल मिला कर पुलिस असहाय थी. वेश्यावृत्ति के जुर्म में सज़ाएं हर वर्ष ६०० (स्त्रियों को) होती थीं, लेकिन दल्ले एक दो ही दोषी ठहर पाते. कारण स्पष्ट था: प्रामाणिक गवाहों—स्वयं वेश्याओं—को इन के विरुद्ध गवाही देने के नाम से ही झुरझुरियां छूटने लगती थीं.

भरती अभियान. यूं ब्रीच के लिए ख़तरा न के बराबर था. १९७७ तक उस के पास तीन लड़कियां हो गईं, जो हर रोज़ उसे ६,००० डालर तक कमा देतीं, उन्हें वह फूटी कौड़ी तक न देता. खाने पीने लायक़ मामूली सा भत्ता दे देता और उन के कपड़े लत्ते और रहने का प्रबंध अपने ज़िम्मे रखता. ख़ुद वह बड़ी शान से रहता. हर रात वह सैकड़ों डालर जुए में हार जाता.

मगर अलबर्ट ब्रीच को इतने पर ही सब्र नहीं था. वह लगातार कमउम्र और नई नवेली लड़कियों की ताक में रहता. अतः १९७७ की जुलाई के अंत में वह भरती अभियान पर पश्चिम की यात्रा पर निकल पड़ा. मिलवाकी, मिनियापालिस, नार्थ डकोटा और वाशिंगटन के नृत्यालयों में उकताई, लल्लो चप्पो से रीझने वाली तरुणियों की सुराग़रसानी करता वह हफ़्ते भर में मांटैना पहुंच गया.

लारा और, मांटैना में ही फंसी दो अन्य लड़कियों को ब्रीच ने बिना समय नष्ट किए धंधे में लगा दिया. इन में से एक रास्ते में, जब वे शिकागो जा रहे थे, चकमा दे कर अपने घर वापस पहुंच गई. मगर लारा और दूसरी—बारबरा—को उस ने मोटलों और सरायों में ठहरने वाले ट्रक ड्राइवरों के साथ सोने के लिए बाध्य कर दिया. मगर शिकागो में उन के साथ जो होना था, उस के मुक़ाबले यह कुछ नहीं था. वहां, शहर के बीचोबीच एक होटल को उस ने मुख्यालय बनाया और दोनों लड़कियों को आदेश दिया कि रात को दोनों में से कोई भी तब तक न लौटा करे जब तक उस के बटुए में २५० डालर न हो जाएं. पहले हफ़्ते उस ने लारा को कई बार पीटा. सितंबर अंत तक वे दोनों उसे क़रीब ३०,००० डालर कमा कर दे चुकी थीं.

चांद की अभिलाषा. वाशिंगटन पहुंच कर ब्रीच ने लारा और बारबरा को एक अपार्टमेंट किराए पर ले दिया और धंधे के लिए तत्काल गली भटकने भेज दिया. उन्हें अश्लील फ़ोटो भी खिंचवाने पड़ते. जल्द ही उन्हें पुलिस ने पकड़ लिया. लेकिन उन से उन के दलाल का नाम पूछा गया तो दहशतज़दा लड़कियों ने कुछ भी बताने से इनकार कर दिया.

वाशिंगटन आने के डेढ़ महीने बाद बार[illegible] की सहनशक्ति जवाब दे गई. अकसर [illegible] भाग निकलने की तरक़ीबों पर भी वि[illegible] विमर्श करतीं. लेकिन ब्रीच सावधान था; [illegible] कभी उन के पास इतने पैसे न छोड़ता [illegible] बस, रेल या हवाई जहाज़ के टिकट की [illegible] भिड़ा सकें. एक मौक़ा तब आया जब [illegible] ग्राहक ने लारा को ३,००० डालर दिए. [illegible] से ५०० डालर लारा ने बारबरा को दे [illegible] जिन्हें उस ने अटैची के अस्तर में छिपा [illegible] और बाक़ी पैसे लारा ने ब्रीच के हवाले [illegible] दिए. बारबरा के बार बार अनुरोध करने पर [illegible] लारा उस के साथ भागने को तैयार न हुई. [illegible] ब्रीच से बुरी तरह भयभीत थी; और उस [illegible] बेहद असर में थी. इस से भी बड़ी बात [illegible] कि लारा अभी तक ब्रीच से इतना प्यार [illegible] थी कि उसे छोड़ने की बात नहीं सोच [illegible] थी.

१९७८ की शरद ऋतु तक वह ब्रीच [illegible] हर रात औसतन ६०० डालर कमा [illegible] लगी थी. लेकिन यूरोप में सैलो सीखने [illegible] बात अभी तक चांद को छूने जैसी [illegible]

अनेक घाव. क्रिसमस से कुछ पहले [illegible] का मोह पूरी तरह भंग हो गया. इस लि[illegible] ने अपनी कमाई में से चोरी चोरी थोड़ी [illegible] बचत शुरू कर दी थी और अपनी चचेरी [illegible] को फ़ोन कर के बताया था कि अगले [illegible] दिन २६ जनवरी तक वह घर पहुंच [illegible] लेकिन वह पहुंच कभी नहीं पाई. १७ [illegible] १९७८ को प्रातः ५ बजे जार्ज वा[illegible] यूनिवर्सिटी हास्पिटल में लारा वीडिन [illegible] अनेक घावों के कारण मर गई. ब्रीच [illegible] अस्पताल के आपात कक्ष में ले [illegible] था; और जल्दी ही पुलिस को उस [illegible] हो गया.

ब्रीच के हरम की भूतपूर्व सदस्याओं और घटना वाली रात अड्डे पर पेशा करने आई अन्य वेश्याओं से महीनों लंबी तहक़ीक़ात के बाद पुलिस जासूस बिल वुड तथा क्लेरेंस म्यून ने उस रात की घटनाओं को यह सिल-सिला दिया :

उस दिन आधी रात के बाद धंधे से लारा जैसे ही अपार्टमेंट लौटी, ऊपर से ब्रीच चला आया. (एक पड़ोसन ने ब्रीच को चिल्लाते सुना था. स्पष्टतः वह लारा पर बिगड़ रहा था.) क्यों लौटी, तुम? सामान के नाम पर ब्रीच ने उस के पास एक ही चीज़ रहने दी थी: एक पिल्ला. उसी को लेने वह लौटी थी. वही उस की मौत का सबब बन गया.

प्रमाण केवल परिस्थिति जन्य थे, मगर दोनों जांच अधिकारियों के अनुसार वे अकाट्य थे. अतः २२ अगस्त १९७९ को पुलिस ने अलबर्ट ब्रीच के विरुद्ध अदालत में अभियोग-पत्र दाख़िल किया, जिस में भड़वेगीरी, घातक हथियार से आक्रमण और 'सेकंड डिगरी' के क़त्ल समेत १९ आरोप थे. मगर ब्रीच तब तक वाशिंगटन छोड़ कर कनाडा चला गया था.

अक्तूबर १९७९ में कनाडा पुलिस ने केलेगरी में उसे एक बिलकुल जुदा क़िस्म के जुर्म में पकड़ कर कनाडा से निष्कासित कर दिया. डेनवर पहुंचते ही उसे गिरफ़्तार कर के वापस वाशिंगटन भेज दिया गया, जहां, मुक़दमा अदालत में होने के कारण उसे जेल में डाल दिया गया.

साफ़ साफ़ सुना. लेकिन गिरफ़्तारी के एक वर्ष बाद, २४ सितंबर १९८० को, अलबर्ट ब्रीच के ख़िलाफ़ दर्ज हत्या का अभियोग वापस ले लिया गया. उस के बाद शुरू हुई सौदेबाज़ी, और फ़ैसला हुआ कि वह दो कमतर जुर्म इक़बाल कर लेगा जिस की एवज़ में बाक़ी सारे आरोप वापस ले लिए जाएंगे. आख़िर तो अलबर्ट ब्रीच महज़ एक दल्ला था; और लारा वीडिन महज़ वेश्या थी.

२३ अक्तूबर को अलबर्ट ब्रीच ने 'दलाली' और 'मामूली पिटाई' के अपराध स्वीकार कर लिए. ब्रीच के वकील ने रहम की दुहाई दी. उस ने न्यायाधीश से कहा कि क़ानून के सामने गली गली संदेश भेजने का यह एक सुनहरा मौक़ा है: ऐसे अपराधी अपराध स्वी-कार कर के रियायत पा सकते हैं.

जज ने हालांकि ब्रीच को क़ानून के हिसाब से ज़्यादा से ज़्यादा सज़ा दी. मगर यह सज़ा थी पांच वर्ष. क्या बाक़ी दल्लों ने क़ानून का यह 'संदेश' सुना? लगता है, ज़रूर सुना. साफ़ साफ़ सुना; और समझ लिया.

वैवाहिक

ओकिनावा, जापान, में आयोजित महिलाओं के एक सम्मेलन में, जहां सुदूर पूर्व और अमरीका से आई प्रतिनिधि भी शामिल थीं, ताइवान की एक वृद्धा ने जीवन साथी चुनने के मसले पर अपना मत व्यक्त किया. उस ने घोषणा की कि वह इस बात से खुश थी कि उस के लिए पति का चयन उस के मां बाप ने किया. उस के वक्तव्य से उलझन में पड़ कर मैं ने पूछा, "ऐसा क्यों?"

"इस लिए," वह बोली, "कि मुझे यह सोचना भी नागवार गुज़रता है कि मैं ने खुद उसे अपने लिए चुना."

—कैरोलिन पीसातूरो

नन्हे परिंदे का जादू

लंबे अरसे तक
भरम बना
कि मैं उस की मां

फ़ेथ मैकनल्टी

कनाडा में हमारे फ़ार्म हाउस के गिर्द ढेरों तेलियर चहचहाते फिरते हैं. हमारे खलिहानों में उन्हों ने घोंसले बना रखे हैं. उन्हें ले कर मेरे मन में प्यार भी है और नफ़रत भी. नफ़रत इस लिए कि वे बारहमासी नहीं, मौसमी चिड़िया होती हैं और ढेर की ढेर होती हैं. और प्यार इस लिए कि जब मैं लान की दूब पर घूम फिर रही होती हूं तो उन का फुरती और लापरवाही से उछलना फुदकना मुझे बहुत सुहाता है. इस के अलावा, वसंत में वे बहुरूपी व अतिशय सुंदर हो उठते हैं. इस साल उन के प्रणय संगीत के तत्काल बाद उन के
की भरपूर चहमह गूंजने लगी : दर्जन भर
का नाद भी भरपूर ही लगता है.

पुआल समेटने में हम पति पत्नी बेहद
थे. एक दिन भुसौरे में घुसते ही मेरी नज़र
गंभीर अंदाज़ में फ़र्श पर बैठे एक नन्हे, तुवे
बदसूरत तेलियर पर पड़ी. या तो वह
गिर पड़ा था, या वह मेरी किसी भुक्खड़
कीं चपेट में आ गया था. उस चूज़े को
चीन्हती मैं उस के प्रति अपने मन की

द वाइल्डलाइफ स्टोरीज़ आफ फ़ेथ मैकनल्टी से संक्षिप्त, कापीराइट १९८१ फ़ेथ मैकनल्टी.

बाक़ायदा खीझती मन ही मन कहती रही, "मुझे तेलियर के चूज़ों से बख़्शो!"

तभी तेंदुए सी खूंख़ार मेरी बिल्ली, भीगी भीगी सी, एक अंधेरे कोने से नुमायां हुई. मुए तेलियर को मैं ने उसी तरह झपट लिया, जैसे कोई बीवी किसी जूठी तश्तरी को उठाने लपकती है—और घर ला कर मैं ने उसे गुसलख़ाने में पड़े एक डब्बे में बसा दिया.

मेरे पास एक किताब है जिस में दीन हीन जंगली जीवों की देख भाल के बारे में हिदायतें दी हुई हैं. पक्षियों के बच्चों के लिए इस की ख़ास सिफ़ारिश यह है कि उन्हें कुत्ते को दिए जाने वाले भोजन के साथ साथ दूध और अंडे की ज़रदी दी जाए. उसे खिलाने में मुझे क़तई दिक़्क़त पेश नहीं आई. पर चिढ़ी हुई मैं इतनी थी कि मैं ने उसे आंख उठा कर भी न देखा. मैं हरगिज़ नहीं चाहती थी कि मेरी 'दया माया' उस के दिल को ज़रा भी छुए. मेरा इरादा था कि वह जंगली तेलियर की तरह ही पले बढ़े, और यह भरम न पाले कि मैं उस की मां वां हूं.

पुआल के गट्ठे बंधवाती और भुसौरे में रखवाती मैं दो दिन तक हलकान रही. मगर हर एक घंटे बाद सारा बखेड़ा जहां का तहां छोड़ मुझे उस निगोड़े को चुग्गा देने आना पड़ता. तीसरे दिन हड़बड़ी कम हुई. तो मैं ने महसूस किया कि पुआल का अंबार इतना ऊंचा हो गया है कि जिस घोंसले से वह गिरा था उस तक सीढ़ी लगा कर पहुंचा जा सकता है. मैं ने पति से आग्रह किया कि वे सीढ़ी चढ़ कर उसे घोंसले में रख दें. और साथ ही राहत की सांस ली—चलो, क़िस्सा ख़त्म हुआ.

पर दो दिन बाद मैं ने भुसौरे की दहलीज पार की तो देखा: वह फ़र्श पर पड़ा मेरी राह ताक रहा है. और मैं ने फिर वही किया: उसे ख़ामोश गुसलख़ाने के उसी डब्बे में ठूंस कर बेदिली से घंटे घंटे बाद खाना खिला आती. इस बार मैं भांप गई कि पर पूरे उगने तक वह मेरे गले पड़ा रहेगा. लिहाज़ा, अनचाहे ही, मैं ने उस का नाम भी रख दिया—अलबर्ट रौस.

मैं ने आचार शास्त्रियों द्वारा वर्णित संस्कार ग्रहण के विषय में कुछ पढ़ा था—कि किस तरह बचपन के अनुभव पक्षियों को अपनी जाति के अनुरूप व्यवहार करना सिखाते हैं. मुझे महसूस हुआ कि अगर यह अभागा बड़ा हो कर तेलियर का मिजाज़ न पा सका तो इस की जान बचाने का भी कोई फ़ायदा नहीं होगा. मैं ने एक पिंजरे में पुआल का घोंसला बनाया और भुसौरे में चूज़े को उस में डाल कर—बिल्लियों से सुरक्षित—एक शहतीर से टांग दिया, ताकि वह अन्य तेलियरों की भाषा और सुर सुनता सीखता रहे.

रोज़ सुबह अलबर्ट को मैं भुसौरे में टांग आती और रात को वापस गुसलख़ाने में लौटा लाती. दिन में पांच छः बार उसे खिला पिला भी आती. हफ़्ते भर यह सिलसिला चला. अब अलबर्ट बेचैनी से पिंजरे में चारों ओर फुदकियां भरने लगा. मुझे लगा कि अब उसे आज़ाद छोड़ देने का वक़्त आ गया है.

मैं ने जीव जंतुओं के एक जानकार को बुलाया. वह बोला, अभी पक्षी को किसी सुरक्षित हाते बाड़े में ही फड़फड़ाते फिरने को छोड़ना चाहिए. फिर उसे ख़ुद ब ख़ुद खाना सिखाना होगा. तब उसे परीक्षण के लिए खुले आसमान में छोड़ना होगा. इस का इंतज़ाम भी रखना होगा कि जब चाहे हमारे बरामदे में लौट आए. समर्थ होते ही वह हमेशा के लिए आकाश में खो जाएगा.

मैं ने बताया कि अलबर्ट पालतू पक्षी नहीं है, क्योंकि मैं ने उसे अपने साथ हिलने मिलने नहीं दिया. इस लिए यह शायद ठीक नहीं होगा कि मैं उस की देख भाल जारी रखूं. इस पर जीव शास्त्री महोदय बोले, "फ़िक्र मत करो. ये पक्षी बहुत जल्दी सब कुछ भूल कर बनैले हो जाते हैं."

अलबर्ट जल्दी ही बाड़दार अहाते में ठीक ठाक उड़ने लगा, लेकिन खाना वह मेरे हाथ से ही खाता. बेहद तेज़ी से वह निहायत पालतू बन गया, और जब देखो बांस की टहनी पर बैठा मेरा इंतज़ार करता रहता. मुझे देखते ही उड़ कर मेरी बांह पर आ बैठता और चहचहाता ठुनकने लगता. मैं खाने के सामने उस की चोंच ले जाती, पर वह गरदन फेर लेता. और यह सिलसिला कई दिन चला. मैं ने फिर जीव शास्त्री से मशवरा किया. वह बोला, इसे सारा दिन भूखा रहने दो और फिर खाना उस के सामने रख दो.

पर वह दिन बड़ा हौलनाक रहा. अलबर्ट निराशोन्मत्त था, और मैं त्रस्त. झुटपुटा घिर आया. उस ने एक दाने पर भी चोंच नहीं मारी. हार कर मैं ही उसे खिलाने लगी. पेट भर कर, ख़रामां ख़रामां ठुनकते, उसे मचान पर बने अपने 'घर' की ओर जाते देख मैं ने राहत की सांस ली.

अगले दिन मुझे ज़रा सी सफलता मिली. मैं ने एक बड़ी ऐश ट्रे पानी से भर कर मचान पर रख दी. अलबर्ट ने उस में भरपूर स्नान किया और डुबकियां मारते मारते ज़रा सा पानी भी पी लिया. मैं ख़ुशी से चीख़ने को हो उठी.

अलबर्ट को मेरे पास रहते दो सप्ताह हो चुके थे. गुदगुदे, भूरे उस पक्षी के सीने पर एक पीला चकत्ता था. उस की रूपाकृति अत्यंत लालित्यपूर्ण थी. पर उस दिन भुसैंरे में जाने पर मैं ने पाया कि उस के भाई बंधु अपने भविष्य के पाठ सीख चुके हैं. भीतर सन्नाटा था, लेकिन अहाते में चहल पहल थी. माताओं के पीछे भूरे बाल तेलियरों के झुंड लगे थे. वे दत्त चित्त सी अपनी जीवन चर्या का अनुशीलन कर रही थीं. भोजन के सुराग़ में वे रह रह कर चोंचें तृण भूमि में गड़ातीं; और शिशु इस क्रिया का अनुकरण करते, आपस में होड़ करने लगते. अलबर्ट के लिए अब मुझे क्या करना है, यह स्पष्ट था.

मैं अलबर्ट को बाहर ले आई. उसे ज़मीं छोड़ पलथी मार कर बैठ गई और खुर्पी से खोदने लगी. वह देखता रहा. जैसे ही एक कें दिखा, वह चट बिजली की सी तेज़ी से कर गया. मैं ने सिलसिला जारी रखा: ए में केंचुए मिलने बंद हो जाते तो मैं आगे जाती. हमें हर तरह के कीड़े मकोड़े मिले. उन्हें उत्साह से चखता रहा. आख़िर उस भर गया और वह उड़ कर पेड़ पर जा बैठा तसकीन हुई कि चलो एक और मुश्कि लेकिन मैं अहाते की ओर लौटने लगी तो भी रिरियाता हुआ मेरे साथ हो लिया.

घर में पहुंचते पहुंचते मुझे नई चिंताओं ने लिया : अलबर्ट को मैं ज़मीन खींच कर तलाशना तो सिखा रही थी, लेकिन उसे को चीन्हना और उन से सावधान करने मारना कैसे सिखाऊंगी? मेरे कुत्ते पर वह विश्वास करता था और ऐन उस की नाक जा बैठता था. दो दिन तक मैं ने बिल्लियों कर के अलबर्ट को खुला छोड़ दिया. नहीं बना. इधर वह अधिकतर अहाते के से लगे पेड़ पर मेरे बाहर आने का इंतज़ार रहता, ताकि हम दोनों साथ साथ भोजन करें. उधर घर में क़ैद बिल्लियां कुपित होती रहीं.

तीसरे दिन शाम तक भी स्थिति परिवर्तन न हुआ. मैं ने तय किया, "इस से मुझे छुटकारा पाना ही होगा."

मुझे याद आया कि हमारे घर से मीटर दूर पर पक्षियों का अभयारण्य है. मैं किया, और जवाब देने वाले आदमी से क्या मैं एक ऐसे तेलियर को उन के सकती हूं, जिस के पंख अभी विकसित वह बोला. "इस का ज़्यादा अनुभव नहीं कोशिश कर सकता हूं." मैं ने अलबर्ट को

डाला और कार में बैठ कर अभयारण्य जा पहुंची.

अभयारण्य के युवा, मैत्रीपूर्ण केयरटेकर ने बताया कि वह अपृष्ठवंशी जीव विज्ञान का विद्यार्थी रहा है. मैं आश्वस्त हुई : उस के लिए अलबर्ट के भोजनार्थ कीड़े पतंगे जुटाना मुश्किल नहीं होगा. मैं ने पिंजरा खोला तो अलबर्ट सीधा मेरी बांह पर बैठ गया. हम दोनों उस पर रीझते रहे. केयरटेकर से मैं ने कहा कि कुछ दिन तक वह अलबर्ट का पालन पोषण करता रहे तो नन्हा पक्षी पुनः वन्य जीवन अपना लेगा. पिंजरा उठा कर चलते हुए मुझे यह देख कर दुगुनी तसल्ली हुई कि अलबर्ट नौजवान केयरटेकर के संग संग कुलांचें भर रहा था.

मगर अगले दिन दोपहर के क़रीब मैं ने अभयारण्य फ़ोन किया तो युवक ने कहा कि क़ल अंधेरा होते ही अलबर्ट पेड़ों में ग़ायब हो गया था और अभी तक कहीं नज़र नहीं आया. उस ने अफ़सोस करते हुए कहा कि भगवान करे पक्षी जहां भी हो, ठीक हो. चोंगा रखते रखते मुझे अपनी ग़लती का अहसास हो गया : घर पर रात को जब मैं बिल्लियों को छोड़ती थी तो अलबर्ट को अहाते के मचान पर बने घर में रखती थी. स्वभावतः रात को सोने के लिए वह वैसी ही जगह तलाश करने गया होगा जिस का वह आदी था; और जंगल में भटक गया होगा. और, मैं ने कल्पना की, सुबह होते ही वह घर के लिए चल पड़ा होगा. रास्ते में पड़ने वाले पहले घर पर ही रुक जाएगा, और जैसे ही कोई बाहर आएगा, वह फुदक कर उस के पैरों पर बैठ जाएगा और उस की हक्कबकाहट से बेख़बर उस से आरज़ू मिन्नत करने लगेगा. मैं मनाने लगी कि जिस घर में भी अलबर्ट पनाह ले, उस में बिल्लियां न हों.

बरामदा बुहारने मैं बाहर आई. मचान पर बने अलबर्ट के घर से मैं ने ऐश ट्रे और खाने की और नहाने वाली तश्तरियां उठा लीं. बाहर लान में तेलियर हंगामा किए हुए थे : माताएं सिखा रही थीं और बच्चे चाव से सीख रहे थे.

कितने उपद्रवी थे, वे सब! जब भी कोई नन्हा तेलियर अलबर्ट की मानिंद चहकता, मेरा हिया लबलबा उठता. मैं सोचती रही कि जब किसी आदमज़ाद पर किसी नन्हे परिंदे की अठखेलियां जादू कर जाएं तो कितने दिनों तक उस का यह वहम बना रह सकता है कि वह उस की मां है.

भूल चूक माफ़

महिलाओं की पत्रिका में छपे लेख पर पाप स्प्रिंग, कैलीफ़ोर्निया, के 'डेज़र्ट सन' में छपी टिप्पणी : वकीलों के भाव तेज़ होते देख अधिकाधिक औरतें क़ानून पढ़ने लगी हैं.

सिएटल के 'पोस्ट इंटेलिजेंसर' से : ''सोमवार के बाज़ार भाव कंपूटर की ख़राबी के कारण नहीं मिल पाए, और कंपूटर में ख़राबी के कारण वे मिल भी नहीं पाएंगे, और कंपूटर में ख़राबी के कारण . . .''

कैंटुकी प्राकृतिक फ़ोटोग्राफ़ी प्रदर्शनी में बतौर जज नियुक्त भूतपूर्व 'नाविक फ़ोटोग्राफ़र' की विशेषताओं का विवरण यह रंग भी लिए था : भूतपूर्व नाविक फोटोग्राफर.

—'कोलंबिया जर्नलिज़्म रिव्यू'

एशियाड

भारत का विजय पर्व

यह खेल अनुष्ठान अंतरराष्ट्रीय स्तर पर शांति और सद्भाव का संदेश लिए है, तो राष्ट्रीय स्तर पर कठिन परिश्रम और महान सफलता का

अशोक महादेवन

इस महीने की उन्नीस तारीख़ को तीसरे पहर तीन बजे के कुछ ही देर बाद राष्ट्रपति ज्ञानी ज़ैल सिंह नई दिल्ली के विशालकाय जवाहर लाल नेहरू स्टेडियम के सलामी मंच पर पधारेंगे. नई दिल्ली के बीचो-बीच ७.५ हैक्टेयर में पसरा यह स्टेडियम ७५,००० दर्शकों से खचाखच भरा होगा. स्टेडियम में जमा इन दर्शकों के अलावा एशिया भर में अपने अपने टीवी सेटों के सामने बैठे दसियों लाखों लोग भी नवीं एशियाई खेल प्रतियोगिता के उद्घाटन समारोह की व्यग्रता से प्रतीक्षा कर रहे होंगे. इस में एशिया के हज़ारों चुस्त दुरुस्त युवक युवतियां भाग लेंगे और ये खिलाड़ी उद्घाटन के अवसर पर राष्ट्रपति को सलामी देते हुए मार्च पास्ट करेंगे. इस के बाद राष्ट्रपति द्वारा इन खेलों के उद्घाटन किए जाने की घोषणा स्वरूप सारा वातावरण बिगुलों के मनोरम नाद से गूंज उठेगा. और ५,००० रंग बिरंगे गुब्बारों और २,००० लकदक सफ़ेद कबूतरों से आच्छादित आकाश के नीचे राष्ट्रपति नवम एशियाड के समारंभ की औपचारिक घोषणा करेंगे.

इस के बाद के १५ दिनों तक अधिकांश भारतीयों का ध्यान इसी ओर लगा रहेगा कि इस बार भारतीय खिलाड़ी कितने पदक जीतते हैं. बैंकाक में आयोजित १९७८ की एशियाई खेल प्रतियोगिता में भारत के खिलाड़ियों ने २८ पदक प्राप्त किए थे. अब भारतीय खिलाड़ियों का प्रदर्शन चाहे जैसा हो, इतना तय है कि इतने बड़े खेल अनुष्ठान के आयोजन मात्र से भारत ने सफलता का सेहरा पहन लिया है. इस प्रतियोगिता के आयोजन में जिस तरह की दिक़्क़तें पेश आई हैं उन्हें देखते हुए यह साफ़ ज़ाहिर है कि देश में काम पूरा करने की क्षमता है और वह अवसर पड़ने पर कठिनाइयों का सामना कर सकता है. एशियाई खेल महासंघ

इंद्रप्रस्थ स्टेडियम : निर्माण कथा

स्टेडियम का माडल है सब से ऊपर के चित्र में. आठों स्तंभ बन जाने के बाद (बीच का चित्र) दो हज़ार टन भार के लोहे के गर्डरों से शहतीरें डाली गईं. अतिरिक्त भार के डर से छत कंकरीट के बजाए अलूमीनम की चादरों से बनाई गई. तैयार स्टेडियम (नीचे) किसी अंतरिक्ष यान जैसा नज़र आता है.

के प्रधान राजा भलिंदर सिंह भी कहते हैं "इस तरह की खेल प्रतियोगिताओं के आयोजन और तैयारी के लिए पांच छः साल का समय चाहिए और भारत ने केवल दो वर्षों में यह काम पूरा कर चमत्कार कर दिखाया है."

वास्तविकता तो यह है कि नवें एशियाड के आयोजन के लिए भारत को काफ़ी समय भी मिला था. जुलाई १९७६ में ही यह दायित्व भारत को सौंप दिया गया था. किंतु साल भी नहीं हुआ होगा कि सरकार बदल गई. बस, देश के नए वीतरागी प्रधान मंत्री मोरारजी देसाई ने कह दिया कि इस तरह की प्रतियोगिताओं के आयोजन के लिए भारत जैसे ग़रीब देश के पास पैसा नहीं है. अतः इस निर्णय का विरोध हुआ और उन्होंने अपना निश्चय बदल भी दिया, किंतु मोरारजी देसाई के बाद सत्तारूढ़ प्रधान मंत्री चरण सिंह ने भी विरोध का ऐसा ही स्वर-बुलंद किया और फिर जनवरी १९८० में श्रीमती इंदिरा गांधी के पुनः प्रधान मंत्री बनने के बाद भारत में एशियाई खेल प्रतियोगिता आयोजित करने का सुस्पष्ट निश्चय किया गया.

सब से पहले यही सुनिश्चित करना था कि सभी तरह की आवश्यक सुविधाएं निश्चित समय पर जुट जाएं. दिल्ली में १९५१ में पहली एशियाई खेल प्रतियोगिता भी हो चुकी थी, किंतु उस का आयाम बड़ा सीमित था. तब कुल छः प्रतियोगिताएं एक ही स्टेडियम और उस के पास बने तरण ताल में संपन्न कर ली गई थीं. लेकिन नवें एशियाड में २१ खेल-कूद प्रतिस्पर्धाएं हैं और गोल्फ, हैंडबाल, घुड़सवारी और नौका दौड़ जैसी चार प्रतियोगिताएं पहली बार आयोजित की जा रही हैं. दिल्ली में ऐसे १२ क्रीड़ांगन उपलब्ध थे जिन में थोड़ा बहुत परिवर्तन कर के अधिक

प्रतियोगिताएं की जा सकती थीं, किंतु पांच नए स्टेडियम बनाने पड़े हैं और कोई ५,००० की तादाद में जुटने वाले खिलाड़ियों तथा उन के साथ आने वाले अधिकारियों के ठहरने का प्रबंध भी करना पड़ा. इन के अलावा खेल देखने के लिए ५०,००० से ले कर १,००,००० की संख्या में बाहर से आने वाले खेल प्रेमियों के राजधानी पहुंचने की संभावना को देखते हुए शहर की सड़कें चौड़ी की गई हैं. नए फ़्लाईओवर व होटल बनाए गए तथा पानी तथा बिजली का अतिरिक्त इंतज़ाम किया गया. इन में से कुछ कार्यों से सबंधित योज-नाएं वर्षों पहले बनाई जा चुकी थीं, किंतु धनाभाव के कारण इन पर अमल नहीं हो पा रहा था. एशियाड के कारण इन योजनाओं को मूर्त रूप देने की स्वीकृति मिल गई.

बड़े पैमाने पर निर्माण कार्य शुरू करने से जो असंख्य समस्याएं पेश आईं; उन का अनुमान लगाने के लिए जवाहर लाल नेहरू स्टेडियम का उदाहरण पर्याप्त होगा. उद्घाटन व समापन समारोह के अलावा एथलेटिक्स यानी खेलकूद व फुटबाल प्रतियोगिताओं के आयोजन की दृष्टि से अभिकल्पित इस स्टेडियम को बनाने की ज़िम्मेदारी केंद्रीय लोक निर्माण विभाग को सौंपी गई. किंतु इस विभाग के इंजीनियरों और वास्तुकारों ने पहले कभी कोई अंतरराष्ट्रीय स्टेडियम देखा तक नहीं था. मुख्य इंजीनियर एन सी जयरामन ने बताया, "हम ने मेक्सिको, म्यूनिक और मौंटरीयल ओलिंपिक प्रतियोगिताओं की ढेरों विवरण पुस्तिकाएं देखीं ताकि हमें स्टेडियम के डिज़ाइन के बारे में कुछ जानकारी मिल सके."

स्टेडियम की योजना स्वीकृत होते ही मज़दूरों ने झाड़ झंखाड़ साफ़ करने शुरू कर दिए और इसी दौरान उन्हें चार प्राचीन स्मारक

आधुनिक सुख सुविधाओं के बावजूद ग्रामीण जीवन के रंग संजोने वाला खेल ग्राम निर्माण के अंतिम चरण में
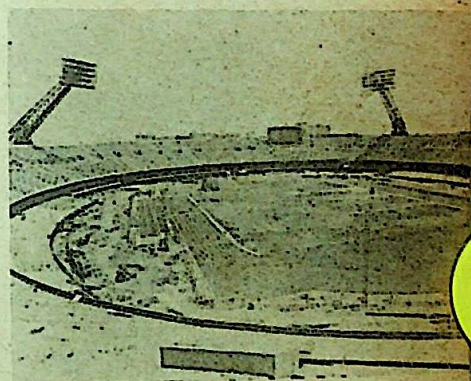
७.५ हैक्टेयर में पसरे जवाहर लाल नेहरू स्टेडियम की चौमुखी आलोक व्यवस्था का निर्माण करते हैं जिराफ़ की गरदन की तरह झुके प्रकाश स्तंभ

तालकटोरा तरण ताल अपने खंभों और सीढ़ियों के कारण किसी प्राचीन ग्रीक या रोमन क्रीड़ांगन जैसा लगता है

फोटो: अनु पुष्करण
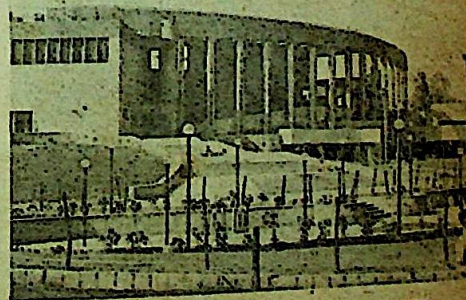
मिले. बाद में जांच से मालूम हुआ कि वे ४०० साल पुराने एक विशाल क़ब्रिस्तान के हिस्से हैं. अतः क़ब्रों को सुरक्षित रखने के लिए स्टेडियम स्थल ४० मीटर परे हटाना पड़ा और स्टेडियम तक आने वाली सड़कों के नक़्शे भी बदलने पड़े. इस तरह स्टेडियम का काम शुरू करने में एक महीने की देर हो गई.

इस के बाद एक समस्या और खड़ी हो गई. स्टेडियम में रात्रिकालीन प्रतियोगिताओं के लिए चार विशाल प्रकाश स्तंभ लगने थे. किंतु नागरिक उड्डयन विभाग के अधिकारियों ने इस पर आपत्ति की कि ये ऊंचे प्रकाश स्तंभ पास के सफ़दरजंग हवाई अड्डे पर आने जाने वाले विमानों के लिए ख़तरनाक होंगे. इस लिए इन खंभों की ऊंचाई कम करनी ज़रूरी हो गई. पर प्रकाश स्तंभों की ऊंचाई घटाने से स्टेडियम में एशियाई खेल संघ की आवश्यकता के अनुरूप पर्याप्त रोशनी नहीं हो पाती. स्टेडियम की बिजली फ़िटिंग व्यवस्था के प्रभारी इंजीनियर बी गुप्ता शर्मा ने कई दिन तक इस समस्या पर माथापच्ची कर इस का उपयुक्त समाधान ढूंढ निकाला. उन्हों ने जिराफ़ की गरदन जैसे झुके प्रकाश स्तंभ बनाने का निर्णय किया. ये प्रकाश स्तंभ ५७.५ मीटर ऊंचे हैं और आकाश में सीधे नहीं खड़े, बल्कि ऊपर आगे जा कर ज़मीन की ओर झुके हुए हैं.

एशियाड से संबद्ध अधिकांश निर्माणात्मक गतिविधियां तड़के ही शुरू हो जातीं और दिन छिपने के बाद तक जारी रहतीं. सप्ताह में सातो दिन काम चलता. ज़ोर शोर से काम करने में कहीं न कहीं गड़बड़ हो ही जाती है और वही बात यहां भी हुई. कुछ कार्यों में विघ्न पड़ गया. उदाहरण के लिए शुरू में निश्चय किया गया था कि तरण ताल के ऊपर छत होगी, किंतु विशेषज्ञों की राय में छत का डिज़ाइन निरापद नहीं था अतएव तरण ता[ल] खुला ही बनाना पड़ा. इसी तरह एक पुल [की] एक मेहराब गिर पड़ी, पर इस दुर्घटना [में] किसी की मृत्यु नहीं हुई.

एशियाड के इन असीम निर्माण कार्यों [के] कारण दिल्ली के निवासियों को काफ़ी परे[शानी] उठानी पड़ी. शहर के कुछ इलाक़ों में सड़[कों] पर रोज़ यातायात जाम हो जाता, तो कहीं कई [कई] सप्ताह तक टेलीफ़ोन ख़राब पड़े रहे क्[योंकि] मज़दूरों की लापरवाही से ज़मीन में बिछी [टेलीफ़ोन] की तारें कट गई थीं. सड़कें चौड़ी करने [के] नाम पर सैकड़ों पेड़ काट दिए गए. (कि[ंतु] अधिकारियों का कहना है कि बहुत से [नए] नए पेड़ लगा दिए गए हैं और इन के [कारण] शहर पहले से कहीं अधिक हरा भरा दिखे[गा].) यों एक परेशान दिल्लीवासी ने यह सुझा[व] डाला : "नवम एशियाड के शुभंकर अप्[पू का] नाम बिगड़ैल हाथी रखना चाहिए."

इस बीच आयोजन व्यय भी ब[ढ़ता] हुआ. अब सरकार का यही कहना है कि [उस] ने लगभग ७० करोड़ रुपए ख़र्च किए हैं [जो] [इस] से अधिक नहीं. किंतु इस राशि में कई [अन्य] मदों के ख़र्च शामिल नहीं हैं. जैसे दिल्[ली में] नागरिक सुविधाओं के विस्तार पर किया [गया] ख़र्च या खेल ग्राम के निर्माण का ख़र्च (खेल ग्राम प्रतियोगिताओं के बाद गैरसर[कारी] कालोनी बन जाएगा). बहरहाल यह [ख़र्च] १९८० के शुरू में आंके गए ख़र्च से दो[गुने] से भी अधिक है, क्योंकि तब अनुमान [था कि] कुल ३३ करोड़ रुपए ख़र्च होंगे. कुछ [लोगों] के अनुसार एशियाड के आयोजन पर देश [को] दो एक अरब रुपए अवश्य लगाने पड़े.

किंतु जो राशि इन कामों पर ख़र्च हु[ई] वह अकारथ नहीं जाने वाली. देश को [पहली] बार अंतरराष्ट्रीय स्तर के क्रीड़ांगन उपल[ब्ध]

और इन में साइक्लिंग वेलोड्रोम से ले कर एथलेटिक्स प्रतियोगिताओं के लिए सिंथेटिक ट्रैक और हाकी के लिए एस्ट्रोटर्फ़ की सुविधा तक जुटा दी गई है. एशियाड संचालन समिति के भूतपूर्व महासचिव एस एस गिल के अनुसार इन सुविधाओं से भारत के खिलाड़ियों को अपने खेल का स्तर ऊंचा उठाने में मदद मिलेगी, लंबे अर्से से वे इन के अभाववश त्रस्त थे. इस के अलावा इन सुविधाओं के कारण भारत में समय समय पर अन्य अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं का आयोजन भी किया जा सकेगा जिस से लोगों में खेलों के प्रति रुचि बढ़ेगी. गिल का कहना है, "और सच तो यह है कि हम ने रुपया एशियाड में नहीं लगाया है, बल्कि देश के नवयुवकों और देश के भविष्य पर यह राशि ख़र्च की है."

एशियाड के अवसर पर दिल्ली में खेल प्रतियोगिताओं के लिए जो नई सुविधाएं जुटाई गई हैं उन में से भविष्य में सब से अधिक काम आने वाला है इंद्रप्रस्थ स्टेडियम. २६ करोड़ रुपए की लागत से बना यह स्टेडियम दिल्ली में उसी स्थान पर अवस्थित है जहां १४वीं सदी में शहंशाह फ़िरोज़शाह तुग़लक़ हाथियों की लड़ाई देखा करता था. इस स्टेडियम में २५,००० दर्शक बैठ सकते हैं. एशिया में इतना बड़ा इनडोर स्टेडियम दूसरा नहीं और संसार में इस का स्थान तीसरा है. स्थापत्य की दृष्टि से भी यह स्टेडियम अद्वितीय है और इसे वातानुकूलित रखने का ख़र्च ही ३,००० रुपए प्रति घंटा होगा. इस्पात के गर्डरों से बनी इस की छत का लौह भार २,००० टन है और ये गर्डर ४०,००० नट बोल्टों से आपस में जुड़े हैं. इन के ऊपर अलूमीनम की नालीदार चादरों का ढलवां छप्पर है. यह सारी छत रीइनफ़ोर्स्ड कंक्रीट के आठ विशाल खंभों पर टिकी है. ये [illegible] आकार में इतने बड़े हैं कि इन के अंदर [illegible] चलती है और सीढ़ियां तक बनी हैं. [illegible] स्टेडियम में बैडमिंटन, वालीबाल और [illegible]नास्टिक प्रतियोगिताएं होंगी और दो प्रति[illegible]ताएं साथ साथ करने के लिए स्टेडियम को [illegible] भागों में बांटने की भी व्यवस्था है. कुछ [illegible] मिनटों में स्टेडियम के बीचोबीच परदे की [illegible] दीवार खिंच जाती है जिस के आरपार [illegible] नहीं जा सकती. स्टेडियम की खिड़कियों [illegible] शक्ल किसी जलयान के गोल झरोखों [illegible] है. इन्हें और इस की ४४ मीटर ऊंची [illegible]माती छत को देख ऐसा लगता है मानो [illegible] बहुत बड़ा बाह्य अंतरिक्ष यान नभ में [illegible] भरने को प्रस्तुत हो. ज़ाहिर है कि यह स्टे[illegible] एशियाड १९८२ का स्थायी स्मृति चिह्न [illegible] जाएगा. चीफ़ इंजीनियर वी पी चैतल ने [illegible]या, "इस स्टेडियम को बनाना मेरे जीवन [illegible] सब से अधिक चुनौती भरा अनुभव है [illegible]

इंद्रप्रस्थ स्टेडियम और राजधानी [illegible] अन्य खेल केंद्रों में आयोजित प्रतियोगि[illegible] भाग लेने के बाद खिलाड़ी सीरी क़िले के [illegible] बने एशियाई खेल ग्राम में विश्राम के [illegible] लौटा करेंगे. खेल ग्राम उसी जगह बना [illegible] है जहां सन १३०४ के आसपास [illegible] बादशाह अलाउद्दीन ख़िलजी ने दूसरी [illegible] आबाद की थी. मास्को और मौंट्रियल [illegible] आयोजित ओलिंपिक प्रतियोगिताओं में [illegible] ड़ियों को अनेक फ़्लैटों वाले बड़े बड़े [illegible] में ठहराया गया था. किंतु एशियाई खेल [illegible] इस तरह से बनाया गया है कि वहां रहने [illegible] खिलाड़ियों को आपस में मिलनेजुलने [illegible] अवसर मिले और वे गांव जैसे आनंद[illegible] वातावरण में रह सकें. खेल ग्राम का को[illegible] मकान चार मंज़िल से अधिक ऊंचा नहीं [illegible]

गलियां बहुत संकरी हैं अतएव मोटर कार आदि वाहन नहीं चल सकते. यह खेल ग्राम ६० हैक्टेयर में, फैला है और इस में जगह जगह पर ५० तरह के पेड़ और झाड़ियां लगाई गई हैं. यहां के ८५३ फ़्लैटों में आधुनिक सुविधाओं की कमी नहीं. इन सब में ठंडे और गरम पानी के नलों का प्रबंध है (१५० फ़्लैटों में सौर हीटर लगाए गए हैं). फ़र्नीचर के लिए एक अखिल भारतीय प्रतियोगिता की गई. इस में विशेष बड़े आकार के पलंग भी हैं और ये लंबे खिलाड़ियों और विशेषकर बास्केटबाल के खिलाड़ियों के लिए जुटाए गए हैं. कमरों की दीवारें आकर्षक चित्रों से सजी हैं और इन में ललित कला अकादमी के प्रतिष्ठित चित्रों से ले कर बंबई की गंदी बस्तियों में रहने वाले बच्चों के बनाए चित्र तक शामिल हैं. खेल ग्राम में बैंक, डाकघर, डिस्कोथेक, ब्यूटी पार-लर, कला दीर्घा, २० बिस्तरों वाला अस्पताल और २,५०० लोगों के बैठने लायक़ सभागृह भी बनाया गया है. खेल ग्राम में ५५ मीटर ऊंची पानी की टंकी है जिस पर दो मंज़िला रेस्तोरां और दिल्ली के दृश्यावलोकन के लिए दीर्घा भी बनाई गई है. दीर्घा में शक्तिशाली दूरबीनें सुलभ हैं.

खेल ग्राम के भोजन प्रबंधक बी के पाहवा और उन के ५०० साथी कर्मचारियों को ऐसा भोजन तैयार करना होगा जिस से प्रत्येक खिलाड़ी को प्रति दिन कम से कम ५,००० कैलोरी पोषक तत्व मिल सकें. पांच सौ को एक साथ भोजन करवाने की क्षमता वाले हर भोजन कक्ष में भारतीय, चीनी और यूरोपीय; तीन प्रकार के व्यंजन परोसे जाएंगे. खिलाड़ियों के लिए प्रति दिन काफ़ी बड़ी मात्रा में तरह तरह की भोजन सामग्री जुटानी होगी. उदाहरण के लिए प्रति दिन औसतन ३०,००० अंडों और १,२०० किलोग्राम ताज़े फलों की खपत होगी. तरह तरह की भोजन सूचियां तैयार की गई हैं ताकि १५ दिन की प्रतियोगिताओं के दौरान खिलाड़ियों को एक ही तरह की चीज़ दोबारा न परोसी जाए. रसोई के काम को सरल बनाने के लिए स्वीडन से १.५ करोड़ रुपए के उपकरण मंगाए गए हैं. इन में ऐसी मशीनें भी हैं जिन से डबलरोटी के २,४०० स्लाइसों पर एक साथ मक्खन लगाया जा सकता है. एक मशीन तो कुछ ही मिनटों में १५ किलो आलू छील देती है.

कुल मिला कर नवें एशियाड में नवीनतम प्रौद्योगिकी पर आधारित विविध सुविधाओं का बड़े पैमाने पर उपयोग किया जाएग.. उदाहरण के लिए इतने अधिक कंपूटर इस्तेमाल किए जाएंगे जितने कि आज तक भारत में एक साथ देखे तक नहीं गए—फिर किसी खेल प्रति-योगिता में कंपूटरों के ऐसे व्यापक प्रयोग की तो बात ही क्या. प्रत्येक क्रीड़ांगन सहित विभिन्न स्थानों पर कुल २४ कंपूटर टर्मिनल होंगे. ये कंपूटर टर्मिनल पत्रकारों और अधिकारियों की सुविधा के लिए भी लगाए जा रहे हैं और ये दक्षिण दिल्ली में लगे नेशनल इंफ़ारमैटिक्स सेंटर के विशाल कंपूटर से जुड़े होंगे. इन से प्रत्येक प्रतियोगिता की प्रगति की क्षण क्षण की जानकारी और उन के परिणामों की ताज़ा सूचना लगातार मिलती रहेगी. साथ ही ये कंपूटर बताएंगे कि महत्वपूर्ण अंतरराष्ट्रीय खेल प्रतियोगिताओं में विभिन्न खेलों के क्या कीर्ति-मान स्थापित किए जा चुके हैं.

जवाहर लाल नेहरू स्टेडियम में दौड़ की प्रतियोगिताएं होंगी. यहां पर एक विशेष कमरा बनाया गया है जो दौड़ के ट्रैक से १८ डिगरी के कोण पर है और इस कमरे में फ़ोटो-फ़िनिश कैमरे होंगे जो प्रत्येक खिलाड़ी के प्रदर्शन के

एक सेकंड के एक सौवें भाग तक का विवरण बताएंगे. चक्का, गोला व भाला फेंकने की प्रतिस्पर्धाओं के परिणाम गुनने के लिए इंची टेप फ़ीतों से दूरियां नहीं मापी जाएंगी, बल्कि प्रिज़्म की सहायता से दूरी मापने वाले उपकरण इस्तेमाल किए जाएंगे. इन से एक सेंटीमीटर से लघुतम भाग की दूरी जानी जा सकेगी और यह सही पता चल जाएगा कि भाला, चक्का या गोला कितनी दूर तक फेंका गया है. ये उपकरण इन दूरियों को छाप भी देंगे. प्रत्येक प्रतियोगिता के बाद स्टेडियम में लगे २१,००० बल्बों वाले विशाल इलेक्ट्रानिक परिणाम फलक पर अंगरेजी और हिंदी में परिणामों की एक साथ घोषणा की जाएगी. और यदि स्टेडियम के किसी भाग में बैठी भीड़ बहुत शोर व बदअमनी फैलाने लगी, तो स्टेडियम में लगे विशेष प्रकार के लाउडस्पीकरों की सहायता से अधिकारी भीड़ तक अपनी बात पहुंचा सकेंगे. ये लाउडस्पीकर ऐसे हैं कि आसपास शोर होने पर उन की आवाज़ उस शोर से अपने आप ऊंची हो जाती है.

दिर भर की थकान के बाद खिलाड़ियों के मनोरंजन के लिए और उन्हें भारत की समृद्ध सांस्कृतिक परंपरा से परिचित कराने के लिए खेल ग्राम के सभाभवन में हर शाम देश के लोक और शास्त्रीय नृत्यों के कार्यक्रम प्रस्तु[illegible] किए जाएंगे. दरअसल इन १५ दिनों के [illegible] राजधानी में तरह तरह के अन्य सांस्कृ[illegible] कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया [illegible] राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय से ले कर दि[illegible] स्कूल आफ़ प्लानिंग एंड आर्किटेक्चर [illegible] विभिन्न संगठन और संस्थाएं अपने कार्य[illegible] प्रस्तुत करेंगी, प्रदर्शनियां आदि लगाएंगी. [illegible] अवसर के लिए शहर के अनेक ऐतिहा[illegible] स्मारकों को भी सजाया संवारा गया है. [illegible] क़िले की भीमकाय दीवारें साफ़ की गई हैं [illegible] अठारहवीं शताब्दी में बनाई गई वेधश[illegible] जंतर मंतर के वर्षों से सूखे फ़व्वारे एक [illegible] फिर फुहारें छोड़ते दिखेंगे. वैसे जंतर मं[illegible] एशियाई खेल प्रतियोगिताओं का प्रतीक [illegible] भी है.

नवें एशियाड से भारतीय खेलों में नि[illegible] ही नए प्राणों का संचार होगा. राजा [illegible] सिंह तो कहते भी हैं, "एशियाड के स[illegible] आयोजन से हम में भारी आत्मविश्वास [illegible] हो गया है. हमारी कोशिश होगी कि [illegible] १९९२ की ओलिंपिक प्रतियोगिताओं [illegible] आयोजन दिल्ली में ही करें. मुझे विश्वास है [illegible] हम ओलिंपिक प्रतियोगिताओं का भी [illegible] आयोजन कर सकते हैं."

नुक्ते

ऐसे अर्थशास्त्री से बचिए जिस की बीवी ही सारी ख़रीदारी करती हो.

—'सिटी स्टार', कैन[illegible]

धूम्रपान से छुटकारे के लिए : शुरू शुरू में सफलता न मिले तो न सही, आप सिगरेट की लत बारंबार छोड़िए, छोड़ते रहो. —'क्लीयरिंग द एयर : ए गाइड टू क्विटिंग स्मोकिंग'

हर चीज़ को सही परिप्रेक्ष्य में लें. आज हम कई घटनाओं को लेकर चिंतित होते रहते हैं, पर अब से पचास साल बाद इन्हीं घटनाओं को सुन कर इतिहास की कक्षा में विद्यार्थी जम्हाई लेंगे.

—'आरबंज़ करंट कमेडी'

इस्पाती आधार पर
उठती ये इमारतें
जब सारा राष्ट्र 19 नवम्बर 1982 की प्रतीक्षा उत्सुकता के साथ कर रहा है, एशियाई खेलों का उल्लास हम पर छा रहा है।
इस बड़े प्रयत्न के पीछे है इस्पात की ताकत। 70,000 टन इस्पात जो विभिन्न स्टेडियम, फ्लाईओवर तथा एशियाई ग्राम आदि के निर्माण में लगा और जो निश्चित कार्यक्रम के अनुसार स्टील अथॉरिटी के प्लान्टों द्वारा सप्लाई किया गया। यह प्रतीक है उस लगन का जो इस कार्य में लगे हर व्यक्ति में निहित है।
स्टील अथॉरिटी ऑफ इण्डिया लिमिटेड
(भारत सरकार का प्रतिष्ठान)
इस्पात भवन, लोधी रोड, नई दिल्ली-110003
एशियाई खेल 1982
नया उत्साह, नया उल्लास
CONTAD/S 2/82/A HIN
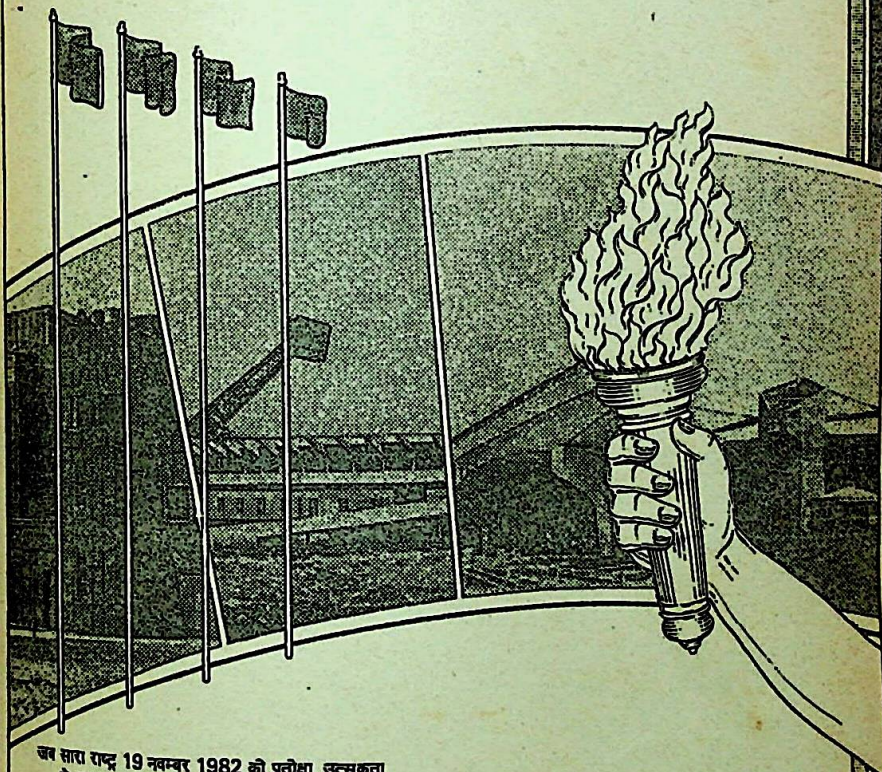
मेरे लायक़ कुछ हो तो बताइए

यह पूछ कर किसी का दुःख कहां बांटा जा सकता है? शोक वेला में किसी की सहायता करना मैं अब सीख गई हूं—एक बार ऐसी ही घड़ियों में कोई मेरे जूते साफ़ करने लगा था

मैज हारा

सदमे की मारी अभी तक मैं घर में ठोकरें खाती भटक रही थी. समझ नहीं आ रहा था कि सूटकेसों में क्या क्या रखूं, क्या क्या नहीं. शाम को गांव से फ़ोन कर के मां ने बताया था कि भैया, भाभी, भाभी की बहन एवं उन के दोनों बच्चे कार एक्सीडेंट में मर गए हैं. मां ने आग्रह किया था; "जितनी जल्दी बन पड़े, चली आओ."

मैं भी चाहती थी कि जल्दी से जल्दी मायके पहुंच जाऊं. बदली हो जाने के कारण मेरे पति लारी और मैं सामान बांधने में लगे थे. सारा घर कबाड़खाना बना था.

लारी सुबह की फ़्लाइट से टिकटें बुक करवाने के लिए दोस्तों को फ़ोन कर रहे थे. और मैं जायज़ा ले रही थी निपटाए जाने वाले तमाम कामों का—मगर मुझ से कुछ भी करते नहीं बन रहा था. किसी चीज़ पर ध्यान नहीं टिक रहा था. बीच बीच में आने जाने वाले पूछते, "कोई काम हो तो बताओ." मैं कहती, "जी, बहुत बहुत शुक्रिया." मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि उन से क्या कहूं. मैं कुछ भी सोच पाने की हालत में नहीं थी.

दरवाज़े की घंटी बजी. खोला तो पड़ोसी इमर्सन किंग खड़े दिखे. कहने लगे, "द... के कारण डोना तो नहीं आ सकी, लेकिन ... लोग तुम्हारी कुछ मदद करना चाहते हैं ... याद है, जब मेरे पिता गुज़रे थे तो शव ... लिए जूते पालिश करने में ही मुझे घंटों लग... थे. तुम्हारे पास मैं इसी लिए आया हूं. स... जूते मुझे दें दो."

जूतों के बारे में मैं ने अभी सोचा भी ... था. अब याद आया, रविवार को एरिक के ... से चलता आया था और तभी से उस के ... जूते लिथड़े पड़े थे. मेगहैन ने पत्थरों ... ठोकरें मार मार कर अपने जूतों की नोकें ... ली थीं. उन्हें बाद में किसी दिन साफ़ ... करने के ख़याल से मैं ने उन्हें कहीं रख ... था.

इमर्सन के अनुरोध ने मुझे कम से ... एक काम तो सुझा ही दिया. उन्हों ने रसोई ...

फ़र्श पर अखबार बिछाया और मैं सारे जूते ढूंढ़ने लगी—लारी के दफ़्तर वाले और शाम को पहनने वाले, अपने ऊंची एड़ी वाले और बिना एड़ी के तथा बच्चों के धूल कीचड़ से सने बूट वग़ैरह. इमर्सन फ़र्श पर पालथी मार कर सब पर पालिश करने लगे. उन्हें तन्मय हो कर काम करते देख मुझे ख़यालों पर क़ाबू पाने में सफलता मिली. 'पहले कपड़े धो लेने चाहिए.' मैं ने ख़ुद से कहा और मैले कपड़े मशीन में डाल कर मैं बच्चों को नहलाने धुलाने और सुलाने में जुट गई.

रात को मैं जूठे बरतन धोती रही और इमर्सन चुपचाप दूसरे काम करते रहे. मैं ने शिष्यों के पांव धोते ईसा मसीह की कल्पना की. अपने मित्रों की सहायता करते इमर्सन मुझे उसी परम पिता की याद दिलाने लगे. उन की तत्परता में छिपा स्नेह लख कर मेरी आंखें बरस पड़ीं. आंसुओं ने मन पर छाया दुःख का कोहरा धो डाला. मैं चलने फिरने, सोचने समझने के क़ाबिल हो गई. एक एक कर के सभी काम क़रीने से होने लगे.

धुले हुए कपड़ों को कपड़े सुखाने वाली मशीन में डाल कर रसोई में लौटी तो देखा कि इमर्सन चले गए हैं. साफ़ सुथरे, चम चम करते जूते दीवार के साथ एक पांत में लगे थे.

अब कभी किसी परिचित को प्रियजन शोक होता है तो मैं उस के यहां जा कर ऐसी बेतुकी बात नहीं करती—"मेरे लायक़ कुछ हो तो बताइए . . ." मैं उस की आवश्यकता के अनुसार कोई भी काम चुपचाप करने लगती हूं. मसलन, कार की सफ़ाई, कुत्ते को उस की कोठरी तक पहुंचाना अथवा अंतिम क्रिया के समय घर ठहर कर ज़रूरी देखभाल करना.

और जब कोई पूछता है कि "तुम्हें कैसे पता चला कि मुझे इसी की ज़रूरत है." तो मैं कहती हूं, "यूं, कि एक बार किसी ने मेरे जूते पालिश किए थे."

कृष्य

मेरे एक चाचा ने ख़रगोश फ़ार्म खोल रखा है और उन की चार वर्ष की पोती इन नन्हें नन्हें जानवरों से बहुत प्यार करती है. एक बार हम उन के यहां गए, तो रात खाने से पहले परिवार के सभी बड़े सदस्यों से कह दिया गया कि सालन में ख़रगोश ही पका है, पर सब उसे मुर्ग़ा ही कह कर पुकारें.

चचा जान यानी मेज़बान ने जब गोश्त की प्लेट आगे बढ़ाई, तो हम सब ने ऊंचे स्वर में बता दिया कि हमें मुर्ग़ का कौन सा हिस्सा चाहिए. अब वह हमारी भतीजी के पास आ कर बोले, "बेटे तुम्हें क्या चाहिए ?"

"मुझे मुर्गे के पंख दे दो," नन्हीं का उत्तर था.

—वी बी

मेरी बेटी एक फ़ार्म पर रहती है. हाल ही में उस ने सूअर के तीन बच्चे लिए कि बड़े हो जाने पर उन्हें झटका करेगी. फिर वह यह भी चाहती है कि उस का तीन वर्षीय बेटा जीवन के सत्यों को समझने बूझने लगे, सो उस ने उन तीनों के नाम रख छोड़े हैं—ब्रेक फ़ास्ट, लंच और डिनर.

—एम बी

कहां तो तय था चराग़ां हरेक घर के लिए
कहां चराग़ मयस्सर नहीं शहर के लिए

—दुष्यंत कुमार

चोर दरवाज़े से काम कराना एक आम बात है. धांधलियों का बाज़ार गरम है. पूरे समाज में असंतोष का साम्राज्य है. लोग पंगु हो गए हैं. आख़िर कैसा है

जनवादी चीन का यथार्थ

जेम्स कॅनेसन

चीनी क्रांति के तीन दशक बाद जनवादी चीन के लोगों का वास्तविक जीवन कैसा है? उत्तरी चीन के विस्तृत मैदानी इलाक़े में बसे झेंगझू के लिए इस का उत्तर अत्यंत दुखदायी है. झेंगझू हनान प्रांत की राजधानी है. वहां प्राध्यापकों और छात्रों के बीच में सपत्नीक तक़रीबन एक साल (अक्तूबर १९८० से सितंबर १९८१) ... कुछ हद तक इस का कारण वहां की ग़रीबी है ... अधिकांशतः यह एकदलीय शासन व्यवस्था ही परिणाम है.

बीजिंग, शंघाई और ग्वानझू से झेंगझू की ... कुछ घंटों की रेलयात्रा के बाद तय की जा ...

हारपर (अप्रैल ८२) से संक्षिप्त ...

है. लेकिन चिंतन के स्तर पर यह (तीनों) शहरों से कई दशक पीछे है. अधिकांश विदेशी अपना समय यहीं व्यतीत करते हैं. १९४९ की मुक्ति के बाद इस की जन संख्या चालीस हज़ार से बढ़ कर सात लाख हो गई. परिणाम स्वरूप सभी रिहायशी इमारतें नई और एक तरह की हैं.

आवासों के अंदर की सारी चीज़ें मसलन फ़र्श, छत और दीवारें पक्की हैं. फ़र्नीचर अपर्याप्त है. फ़र्श पर कोई दरी या क़ालीन नहीं बिछी होती. केवल एक या दो सीधी कुरसियां, लकड़ी के कुछ छोटे स्टूल, एक मेज़, एक पलंग, एक डेस्क, लैंप और बिना शेड का एक बल्ब. एक घर में कुल इतना ही सामान होता है. सांस्कृतिक क्रांति (१९६६-७६) के दौरान घर सजाए जाने की अत्यंत कटु आलोचना की गई. फलस्वरूप अधिकांश परिवार अब भी ऐसा दुस्साहस नहीं करते.

चार सदस्यों वाले परिवार को अगर दो कमरे भी मिल जाएं तो लगेगा जैसे उन्हें कोई विशेष सुविधा मिल गई हो. कुछ वरिष्ठ प्राध्यापकों, फ़ैक्टरी प्रबंधकों और अधिकारियों को अच्छी सुविधाएं प्राप्त हैं लेकिन कनिष्ठ प्राध्यापकों का बुरा हाल है. यहां तक कि चार सदस्यों वाले दो परिवारों को तीन कमरे के मकान में रहना पड़ता है. यह बदहाली एक आम बात है. यद्यपि सभी प्राध्यापकों के घरों में पानी के लिए नलकों की व्यवस्था है, पर झेंगझू की अधिकांश जनता को सामूहिक नलकों से ही पानी भरना पड़ता है.

उठो सोने वालो. चीन में दिनचर्या भोर से ही शुरू हो जाती है. लोगों को जगाने के लिए ५.३० बजे पूरे देश में लाउड स्पीकरों पर सैनिक बिगुल की तरह तुरही बजाई जाती है. विश्वविद्यालय परिसर और शहर के अनेक कारख़ानों में तुरही की उस आवाज़ को दैनिक गतिविधियों का नियामक माना जाता है. जैसे ही तुरही बजती है लोग जग जाते हैं. फिर कपड़े बदलते हैं और मुंह हाथ धो कर छः बजे तक दैनिक व्यायाम के लिए तैयार हो जाते हैं.

विश्वविद्यालय में कक्षाएं ८ से ९.५० तक चलती हैं. फिर दूसरे व्यायाम का समय होता है. फिर वही लाउड स्पीकर, संगीत और व्यायाम मास्टर. लाउड स्पीकर ही २.३० बजे आप की झपकी भी तोड़ता है. फिर ५.३० बजे के क़रीब लाउड स्पीकर से ही संगीत, विभिन्न घोषणाएं, समाचार और अन्य प्रचार सामग्रियों का प्रसारण शुरू हो जाता है.

रात्रि भोजन के बाद विद्यार्थी या तो पढ़ते हैं या अपनी कक्षाओं में चले जाते हैं, जहां मनोरंजन के लिए टेलीविज़न लगे होते हैं. चीन के शहरी भागों में ६.८ परिवारों और देहाती इलाक़ों में प्रत्येक ५३ परिवारों पर एक टेलीविज़न है. झेंगझू के कुछ टेलीविज़न कार्यक्रम इस प्रकार के हैं: शंघाई जेनरल पेट्रोकेमिकल्स की एक यात्रा; गुनगुने पानी में मछली पालन (जो 'मातृभूमि के नए दृश्य' कार्यक्रम का एक अंश होता है) और सफ़ाई एवं स्वास्थ्य, आदि. टेलीविज़न पर दिखाई जाने वाली बहुत सी चीनी और उत्तरी कोरियाई फ़िल्मों को हर आदमी एक बार से ज़्यादा देख चुका होता था. बहरहाल उन्हें कोई पसंद नहीं करता क्योंकि सारी फ़िल्में अत्यंत राजनीतिक और भविष्यवाणियों से भरी होती हैं. विश्वविद्यालय सहित सारा शहर रात १० बजे तक सो जाता है. कुछ रेस्तरां तो आठ बजे ही बंद हो जाते हैं.

कारख़ाने के मज़दूरों को सप्ताह में छः दिन काम करना पड़ता है. रविवार को छुट्टी रहती है. विश्वविद्यालयों में शनिवार को दोपहर के बाद छुट्टी हो जाती है. शुक्रवार का अपराह्न सार्वजनिक रूप से अरुचिकर माना जाता है. यह राजनीतिक अध्ययन का समय होता है. १ से ४ बजे तक कमोबेश पूरे देश में बैंक, कार्यालय, दुकान,

स्कूल और कारख़ाने का काम बंद कर के लोग नवीनतम सरकारी दस्तावेज़ों की व्याख्याएं सुनते हैं, और समूह अथवा किसी व्यक्ति की कमियों की सार्वजनिक आलोचना में भाग लेते हैं.

पार्टी के सदस्यों के अलावा किसी से हम ने राजनीतिक अध्ययन की प्रशंसा नहीं सुनी. पूरी जनसंख्या का दो प्रतिशत पार्टी सदस्यों का है. यहां तक कि उन के विचार भी एक नहीं होते. यह अपेक्षित है, जिसे सब को करना है.

सिनेमा, टेलीविज़न, साहित्य और राजनीतिक उमंग का स्तर घटिया होने के कारण ऊब वाक़ई एक समस्या बन गई है. सांस्कृतिक क्रांति के दौरान किसी प्रकार की रुचि या शौक़ रखना वर्जित माना जाता था. लाल सिपाहियों ने डाक टिकट के संग्रहों, चिड़िया पालने वाले पिंजरों और ग़ैर मार्क्सवादी पुस्तकों को ज़ब्त कर के जला दिया. अनुमोदित पाठ्य सूची इतनी कम थी कि अगर साफ़ कहा जाए तो आज के युवा शिक्षक भी किसी चीज़ के बारे में बहुत कम जानते हैं. और न ही जानने की उन की ख़्वाहिश है. नई जानकारियों का उन के लिए कोई विशेष आकर्षण नहीं होता. संभवतः वे उन से भयभीत रहते हैं.

समकालीन चीनी समाज

कार्य इकाइयां आज चीनी जीवन का आवश्यक अंग बन गई हैं. कारख़ानों तथा दुकानों की अपनी कार्य इकाइयां हैं. विश्वविद्यालय का विदेशी भाषा विभाग भी एक ऐसी कार्य इकाई है. किसी ऐसी इकाई का सदस्य बन जाने का मतलब है जीवन भर के लिए बंध जाना. इस दौरान तबादले की गुंजाइश बिलकुल नहीं होती. इस के चलते कुछ परिवारों के सदस्य आजीवन एक दूसरे से अलग रहने के लिए बाध्य कर दिए जाते हैं. पिता एक शहर में, मां किसी दूसरे शहर में और नौकरी पेशा लड़का किसी और शह[र में] कार्यरत होता है.

ये कार्य इकाइयां लोगों की रुचि से सं[बंधित] ऐसे निर्णय भी ले लेती हैं, जो अन्य दे[शों में] नितांत निजी पसंद की बातें हो सकती हैं. [ये] इकाइयां मकानों की व्यवस्था करती हैं, [वेतन] बढ़ाने और बोनस देने संबंधी निर्णय ले[ती हैं,] राशन कार्ड बांटती हैं. रोज़ाना होने वाले [कामों को] निर्धारित करती हैं. विवाहित जोड़ों को [गर्भ] निरोधक औषधियां देने की ज़िम्मेदारी [भी इन] इकाइयों पर है. कभी कभी विवाहित जोड़ों [को] यह भी बताती हैं कि उन्हें संतोनोत्पादन की छू[ट कब] मिलेगी.

पार्टी प्रत्येक इकाई के सदस्य की एक [गुप्त] फ़ाइल रखती है. इस में उन की पिछली ज़िं[दगी] और काम से संबंधित रिकार्ड, पार्टी द्वारा कि[या] गया उन का मूल्यांकन और उन से संबंधि[त] गुमनाम शिकायतें रखी रहती हैं. ये शिकायतें [कई] बार जान लेवा साबित होती हैं.

इकाइयों के नेता पार्टी के प्रभावशाली [सदस्य] होते हैं. विदेशी भाषा विभाग का नेता चीनी [के] अलावा कोई दूसरी भाषा नहीं जानता और [प्राइमरी] स्कूल के आगे उस की पढ़ाई लिखाई [नहीं] हुई. यह विचित्र स्थिति है. अस्पतालों, कार[ख़ानों] और प्रशासकीय अनुभागों के नेताओं का [चुनाव] पार्टी सेवा के आधार पर किया जाता है [न कि] दक्षता के आधार पर. वित्तीय और सै[द्धांतिक] मसलों में भी किसी ख़ास इकाई का नेता [स्थानीय] दफ़्तर से बीजिंग तक के अधिकारियों की [एक] लंबी शृंखला के प्रति उत्तरदायी होता है. [सभी] स्तरों पर ये वास्तविकता से दूर होते हैं. [इस] संरचना के परिणाम स्वरूप दक्षता की निरं[तर कमी] और समय की फ़िज़ूलख़र्ची होती है. उदा[हरण के लिए] अगर हमारे विभाग के डीन को टेप की ज़रू[रत हो] तो उन्हें एक कर्मचारी के पास जा कर यह [...]

होगा कि उन्हें इस की ज़रूरत क्यों है ? संबंधित कर्मचारी उचित फ़ार्म भर कर उस पर पार्टी सचिव की स्वीकृति लेगा. फिर पार्टी सचिव यह फ़ार्म दूसरी इमारत के प्रशासकीय अधिकारी को देगा. अगर आवेदन पत्र कहीं खोया, भुलाया या अस्वीकृत न हुआ, तब जा कर अंतिम स्वीकृति मिलेगी और टेप ख़रीदने के लिए पैसे मिलेंगे. विलंब के लिए खोजबीन करने पर प्रायः जवाब मिलता है, "मामला विचाराधीन है." आम तौर पर इस का मतलब होता है, "नहीं."

अगर इकाई के नेता से आप की नहीं पटती है तो चीनी लोगों के अनुसार आप को आजीवन मुसीबतें झेलनी पड़ेंगी. मसलन आप को मकान नहीं मिलेगा, साप्ताहिक मीटिंगों में आप की आलोचना की जाएगी और जब आप अपने मकान में बिजली के तार लगाने के लिए किसी बिजली मिस्त्री को खोजेंगे तो एक महीने तक उस का अता पता नहीं मिलेगा.

धांधलियों का घेरा

'चोर दरवाज़े' से काम कराना ज़्यादा प्रचलित है. थोड़ा इधर उधर कर के, ग़लत हथकंडे अपना कर पार्टी अधिकारी अनुपलब्ध सामानों और अन्य सेवाओं का धड़ल्ले से उपयोग करते हैं. द चाइना डेली ने फूसान के किराना स्टोर से संबंधित ऐसी कई घटनाओं का ज़िक्र किया है. जब स्टोर को अतिरिक्त पेट्रोल की ज़रूरत होती है तो संबंधित विभाग के नेताओं को भेंट स्वरूप शराब और तंबाकू दी जाती है. एक कर्मचारी की बांह टूट जाने पर अस्पताल के रेडियोलाजिस्ट ने कहा कि अगर स्टोर से उसे सूअर की चार टांगें मिल जाएं तो एक्सरे बीस मिनट में हो जाएगा वरना चार घंटे लगेंगे.

कुछ धांधलियां तो संस्थागत बेईमानियों से पैदा हो गई हैं. हमारे विश्वविद्यालय में २० कार और ४० ड्राइवर थे. प्रशासनिक अधिकारी वर्ग आसानी से गाड़ियां मंगवा सकते थे, जबकि प्राध्यापक और विद्यार्थियों को सख़्त ज़रूरत पड़ने पर भी कार नहीं मिलती. विद्यार्थियों के एक अख़बार ने एक छात्र की प्रशंसा छापी. एपेंडिक्स से पीड़ित उस के एक दोस्त का तुरंत आपरेशन करवाना था. रोगी मित्र को ३० ब्लाक दूर अस्पताल तक ले जाने के लिए उस ने एक बैलगाड़ी का जुगाड़ कर लिया था. विश्वविद्यालय की कार मांगना तो दूर, उस के इस्तेमाल की कल्पना वे सपने में भी नहीं कर सकते थे.

व्यापक स्तर पर चोर दरवाज़े से काम कराने की आदत का भयंकर परिणाम काम के प्रति उन के दृष्टिकोण से ज़ाहिर होता है. हम में से अधिकांश लोग मानते हैं कि चीनी बड़े परिश्रमी होते हैं. विदेशों में रहने वाले चीनी परिश्रमी हैं भी. पर जनवादी चीन के बारे में इसे सच नहीं माना जा सकता. सच कहा जाए तो हलके फुलके काम पाना और यथा संभव उस में भी कटौती करना उन की शाश्वत आकांक्षा है. लोग जब यह देखते हैं कि पार्टी के सदस्य और अधिकारी वर्ग कुछ काम धाम नहीं करते हुए भी अच्छे मकानों में रहते हैं, अच्छा खाना खाते हैं, तो उन का क्षुब्ध होना लाज़िमी है. असंतोष की अभिव्यक्ति न कर पाने के कारण वे काम कम करना ही उचित समझते हैं. 'जनता की सेवा करो' नारे पर लोग हंसते हैं.

ज़्यादा काम होने के कारण विद्यार्थी हाई स्कूलों में शिक्षक पद पाने के विचार मात्र से भयभीत रहते हैं. यह जान कर आश्चर्य हुआ कि हफ़्ते में हमें कुल १२ से १८ घंटे ही काम करना है. विश्वविद्यालय के कुछ वरिष्ठ प्राध्यापकों को मात्र २ घंटे पढ़ाना पड़ता है. चार घंटे का औसत ठीक ठाक माना जाता है जबकि आठ घंटे बहुत ज़्यादा

छात्र भविष्य में मिलने वाली नौकरियों को लेकर सब से ज़्यादा चिंतित रहते हैं. उन से कभी भी उन की रुचि और इच्छाओं के बारे में सलाह मशविरा नहीं किया जाता. इस के पीछे यह सिद्धांत काम करता है, "राष्ट्र उस से जैसी सेवा की अपेक्षा करता है, उसे वैसा ही होना चाहिए." इस का मतलब है पार्टी के नेताओं और उन के मित्रों को आरामदेह काम देना. इस प्रकार समूचे समाज में असंतोष व्याप्त है. बस ड्राइवर डाकख़ाने का मुंशी बनना चाहता है, बिजली मिस्त्री लोहे लक्कड़ का काम करना चाहता है और दुकान का किरानी बस ड्राइवर बनने के सपने देखता है.

आप ने समझ लिया होगा कि हम चीन की इन चीज़ों को पसंद नहीं करते. आप बिलकुल सही हैं. संभव है कि कुछ अच्छी चीज़ों पर हमारी नज़रें न पड़ी हों, पर हम ने जो बुराइयां देखीं या सुनीं, उसे न तो ग़लत ढंग से ग्रहण किया और न ही उस की कोई मनगढ़ंत तसवीर पेश की. यह सच है कि इतिहास के इस मोड़ पर वे आपस में अच्छा सलूक़ नहीं करते. शासक शासित, दुकानदार ग्राहक और मित्रों के बीच परस्पर विश्वास के अभाव में 'ख़ुशी' किन्हीं स्वप्निल क्षणों में ही संभव है. एक समाज की पूरी अधिरचना जब व्यक्तियों को 'समुदाय' में बदल दे तो व्यक्ति यह सोचने पर मजबूर हो जाता है कि उस का कोई महत्व नहीं है. जहां व्यक्तिगत आज़ादी इतनी कम हो वहां अपनी क्षमताओं को तलाश लेना बहुत मुश्किल है, भले ही इस का उपयोग राज्य के हित में ही क्यों न हो. 'नियंत्रण' की यह नीति है कि दमन को अनिवार्य घोषित करो. बिना किसी अंकुश के मनमाने ढंग से इस का प्रयोग कर सरकार एक तरफ़ अपने नागरिकों की योग्यताओं के उपयोग से स्वयं को वंचित रखती है और दूसरी तरफ़ लोगों को योग्यतानुसार काम न दे कर उन्हें धोखा देती है.

आधे मन से किसी सही जगह की तलाश... मृत्युपर्यंत रहने की इच्छा से ही हम चीन गए... हम खुले दिमाग़ से न सही पर कई आशा... कर ज़रूर गए थे. लेकिन जा कर मालूम हुआ... वहां के वातावरण ने लोगों को बिलकुल पंगु... दिया है, जो सब से ज़्यादा सभ्य थे वे ही सब... ज़्यादा अपमानित भी थे. जो ईमानदार थे, ... ज़्यादा फ़रेब के शिकार भी थे. कल्पना शक्ति... दम घोंट दिया गया था और योग्यता नौकर... से दबा दी गई थी. लोग दिमाग़ी तौर पर विद... पाने की ख़्वाहिश से भरे थे.

यह दलील दी जा सकती है कि मैं ने चीन... ग़रीबी को मद्देनज़र नहीं रखा है. चीन जाने... पहले हम ने दो वर्ष मिस्र में बिताए थे. जो ... की अपेक्षा ज़्यादा घनी आबादी, कम प्राकृ... संपदा और कम कृषि योग्य भूमि वाला दे... फिर भी वहां हम ने ग़रीबी से प्रताड़ित लोगों... हंसी, प्रेम, विश्वास आतिथ्य, मित्रता और ... से परिपूर्ण देखा. मेरी पत्नी सूसन ने द... अमरीका के सब से ग़रीब देश बोलीविया... इंडियनों के बीच दो वर्ष बिताए हैं. वहां इं... को अधिकृत रूप में १९५२ तक मानव... समझा जाता था. उन का आहार मात्र उबल... था. हम ने निर्धन देश देखे हैं. पर चीन इन ... गया गुज़रा है.

कितना सच, कितना झूठ

चीन भ्रमण करने वाले पर्यटक यह कहते... अघाते कि चीनी कितने विनम्र होते हैं. ... अपने लोगों के लिए चीनी बहुत रूखे और ... होते हैं. ख़ास कर के सेल्स मैन जो अपने ... के कारण काफ़ी बदनाम हैं.

उदाहरणार्थ, बुज़ुर्गों को कम इज़्ज़त मिल... बस स्टैंड की पागल भीड़ में उन्हें एक किनारे...

दिया जाता है. और ये बेचारे सर लटकाए अगली बस की प्रतीक्षा करने लगते हैं. वास्तव में बुज़ुर्गों को 'मौत का इंतज़ार करने वालों' की श्रेणी में रखा ज़ाता है. यह बेरोज़गार युवकों के लिए प्रचलित 'नौकरी की प्रतीक्षा करने वाले लोग' नामक मुहावरे का अत्यंत घिनौनी नक़ल है.

कदाचित यह सोचा जा सकता है कि निराशा में डूबे चीनियों की औसत तसवीर को मैं ने बढ़ा चढ़ा कर लिखा है. मुझे यह स्वीकार करने में कोई हिचक नहीं है कि झेंगझू की अपेक्षा देश के कुछ अन्य भागों में भौतिक रूप से जीवन सुखद है. पर यह भी सच है कि चीन के एक बड़े हिस्से की हालत इस से भी बदतर है, जहां जाने की अनुमति पर्यटकों को नहीं दी जाती.

अतिरंजना की बात नहीं, मैं ने कई कष्टों को उन के सही रूपों में बयान किया है. इस के बावजूद मैं ने सैकड़ों दुःखदायी कहानियों [illegible] जिक्र नहीं किया. क्योंकि परिवेश के वर्णन [illegible] आधार पर उन लोगों को दंडित करने [illegible] लिए उन का पता लगाया जा सकता है. गलि[illegible] के लोगों की उदास और कांतिहीन आंखों के [illegible] में मैं ने कुछ नहीं लिखा. हांग कांग की आंखों [illegible] कितनी अलग हैं ये आंखें ? छोटे छोटे बच्चों [illegible] घुटनों पर की उन खरोचों के बारे में मैं ने कुछ न[illegible] लिखा, जो अप्रैल से सितंबर तक ठीक नहीं [illegible] पाई, और मवाद से भरी रहीं. और न ही मैं ने [illegible] मरियल भिखारी की कहानी लिखी जो अनथ[illegible] परिश्रम के बाद गटर से निकाले तरबूज़ [illegible] छिलकों में बचे गुलाबी गूदे को खुरच रहा [illegible] अतिशयोक्ति की बात नहीं, पर यह सच है [illegible] जैसा मैं ने वहां देखा, ये तथ्य भी चीनी दैनि[illegible] जीवन की बर्बरता को पूरी तरह नहीं बता पाएं[illegible]

आंख की किरकिरी

वह कामकाजी महिला थीं और उन्हों ने शादी तक नहीं की थी. हां, उन की एक बहन थीं जो विवाहिता थीं और उन के जीवन के केंद्र बिंदु अगर कुछ था तो उन का घर परिवार, पति [illegible] वच्चे. एक दिन इन दोनों महिलाओं की माता जी अपनी अविवाहिता पुत्री से बतिया रही थीं. "अब तुम ने शादी तो की नहीं," वह बोलीं, "तुम्हारी देखभाल करने वाला कोई नहीं. तुम्हारा आख़िर क्या होगा ?

"भगवान के लिए बस भी करो मम्मा," बिटिया खीज कर बोलीं. "मैं अपनी ज़िंदगी आप जिउंगी. अच्छा ख़ासा कमा रही हूं. जैसा चाहे ख़र्च कर रही हूं और मुझे किसी को जवाब नहीं देना पड़ता, न ही देखना पड़ता है कि कौन मर्द क्या चाहता है. मैं देश विदेश घूमती हूं, ठाठ से रहती हूं. घर बार, चूल्हे चौके का झंझट है नहीं—मज़े की ज़िंदगी है, मज़े में गुज़र रही है."

इतना सब सुनना था कि मां के मुंह से निश्वास निकला, बोलीं, "वो तो ठीक है बेटी, पर यह सब छोटी को मत बताना!"

—'द मदर बुक' (डवल डे)
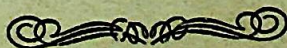
मैं तो हर चीज़ धीरे धीरे पढ़ना पसंद करता हूं, ताकि उस दुर्भेद्य दुर्ग के हर गर्भगृह और गुप्त रास्तों को देख परख लूं. पर फ़रफ़र पढ़ने वाले एक कंगूरे से दूसरे कंगूरे पर कूदते रहते हैं और दावा यह करते हैं कि उन्हों ने तमाम क़िला देख लिया.

—जिम फ़्लीबिग, 'नाना'

रावर्ट मैसी की पुस्तक पीटर द ग्रेट से संक्षिप्त
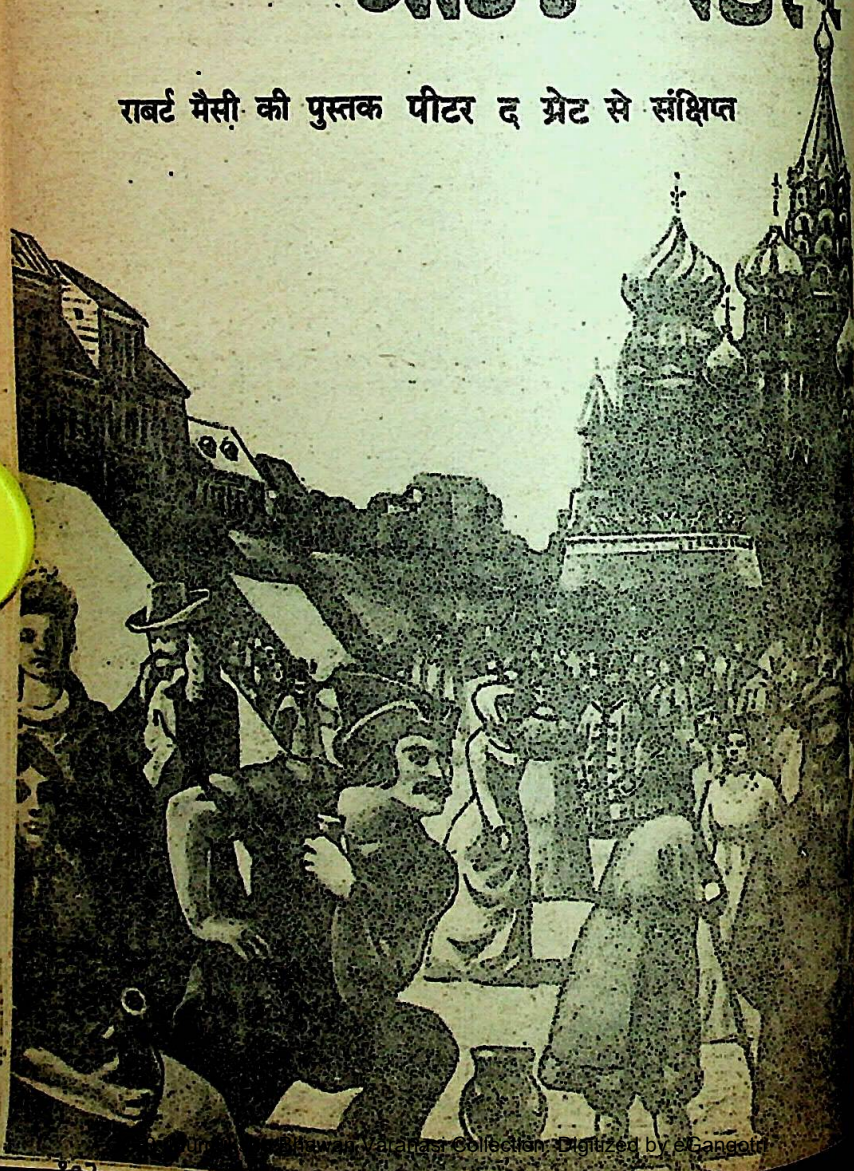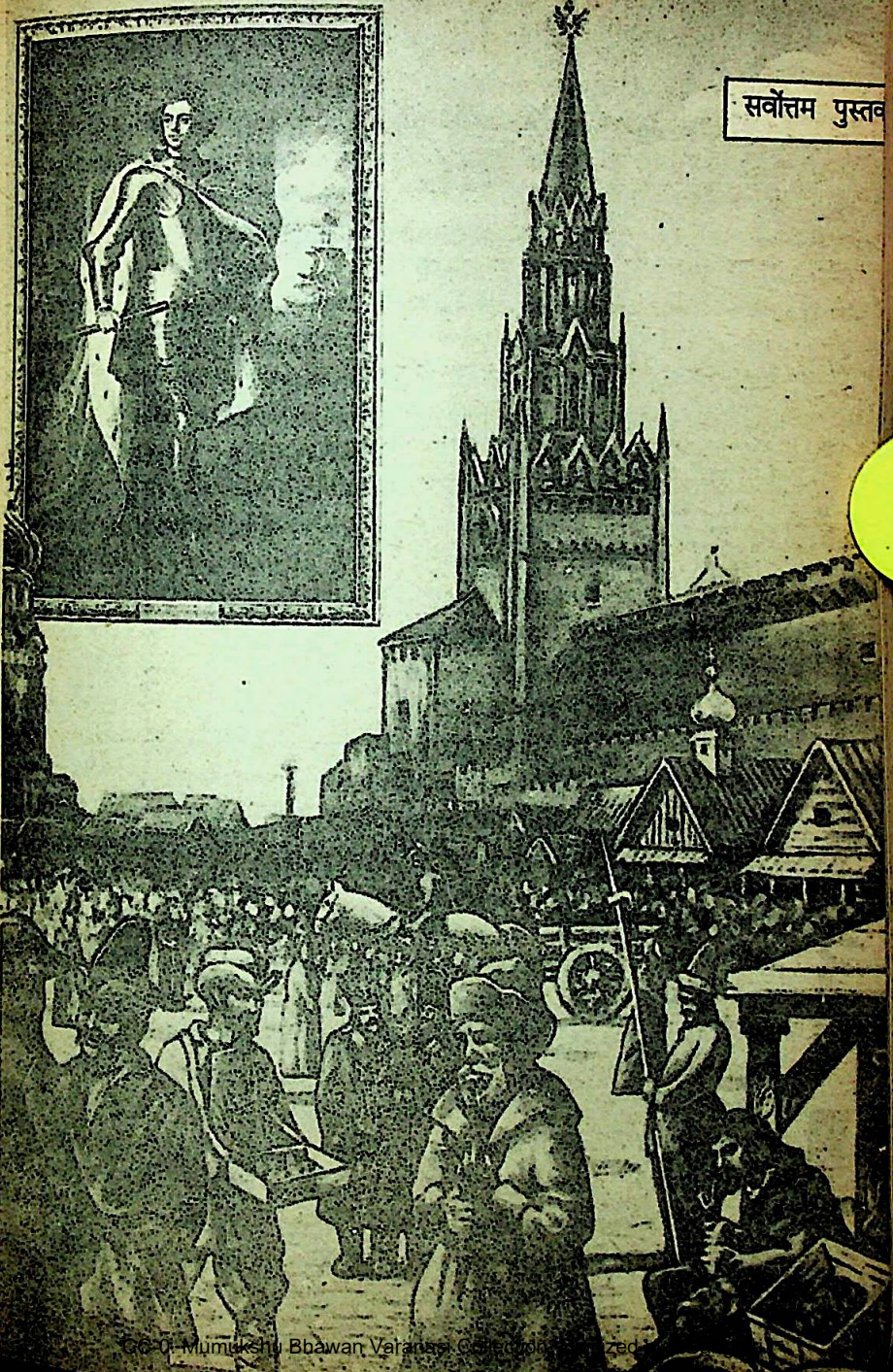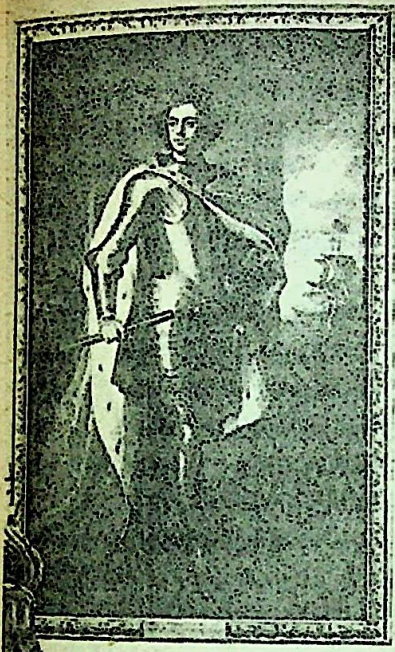
एक था ज़ार पीटर महान

रार्बट मैसी की पुस्तक **'पीटर द ग्रेट'** से संक्षिप्त

आधुनिक रूस को सही सही समझने के लिए हमें लेनिन और स्टालिन से बहुत पीछे जाना पड़ेगा, जब सतरहवीं सदी के अंत में सम्राट पीटर ने वहां के जीवन में सामाजिक, राजनीतिक और बौद्धिक क्रांति ला दी. अमरीका का उच्चतम साहित्यिक पुरस्कार पुलिट्ज़र (१९८१) जीतने वाली राबर्ट मैसी की पुस्तक **पीटर द ग्रेट** इतिहास को सम्मोहकतम रूप में प्रस्तुत करती है. यहां दिए गए उद्धरण में जो पीटर के प्रारंभिक वर्षों को रेखांकित करता है, हम युवा ज़ार को क्रेमलिन के षड्यंत्र तथा रक्तपातपूर्ण वैमनस्य की खलबली भरी पृष्ठभूमि में अपने बेचैन व्यक्तित्व को स्थापित करने के लिए संघर्षरत देखते हैं. ज्ञान के लिए उस की अमिट प्यास, उस की धमाचौकड़ी और रंगरलियां, उन्मुख ऊर्जा तथा उल्लास में अद्भुत जीवंतता है. तभी तो पीटर इस धरती के सब से बड़े देश पर अपनी अमिट छाप छोड़ सका.

मैसी कथात्मक इतिहास के सुस्पष्ट, पूर्णतया आडंबरहीन मास्टर हैं .त्वरित पठनीय."

—न्यूज़वीक

किसी भी उपन्यास की तरह मोहक, और अधिकांश उपन्यासों से धिक रोचक."

—न्यू यार्क टाइम्स बुक रिव्यू

सतरहवीं सदी की तीसरी चौथाई में पश्चिमी यूरोप से आने वाला यात्री मास्को के आसपास के ख़ुशनुमा ग्रामीण इलाक़ों से हो कर एक उभरे स्थल पर पहुंचता था, जिसे गौरैया पर्वत या स्पैरो हिल्स के नाम से जाना जाता था. इस पहाड़ी से नीचे मास्को की ओर देखने पर उसे अपने क़दमों के नीचे 'दुनिया का सर्वाधिक समृद्ध और ख़ूबसूरत शहर' नज़र आता था. सैकड़ों सुनहरी गुंबदों के ऊपर लगे स्वर्णिम क्रासों का एक हुजूम पेड़ों की फुनगियों से ऊपर दिखाई देता था; और जब धूप इस सारे स्वर्ण का स्पर्श कर रही हो, तो रोशनी की चौंध आंखें बंद करने को मजबूर कर देती थी. इन गुंबदों के नीचे सफ़ेद दीवारों वाले गिरजाघर उस शहर में छितरे थे, जो लंदन जितना बड़ा था. मध्य में था क्रेमलिन, मास्को का गौरव. तीन शानदार गिरजाघरों, विशाल घंटाघर, वैभवशाली महलों, चैपलों और सैकड़ों मकानों वाला क्रेमलिन अपने आप में एक शहर ही था, जिस के चारों तरफ़ सफ़ेद परकोटा बना था.

इस दुर्ग के शाही कक्षों पर उन दिनों शासन था रोमानोव वंश के द्वितीय ज़ार अलेक्सिस मिकेलोविच का, जो समस्त महान और क्षुद्र और श्वेत रूस का महाप्रभु, ज़ार एवं महासामंत और निरंकुश शासक था. प्रजा से अलग और उस की पहुंच से बाहर, यह भव्य व्यक्तित्व अर्ध दैविकता के प्रभा मंडल से आवेष्टित था. मद्धम प्रकाशमुक्त कक्षों और सुगंधित गिरजाघरों से वह इस धरती के सब से बड़े राष्ट्र पर शासन करता था.

राबर्ट मैसी ने येल यूनिवर्सिटी में अमरीकी इतिहास तथा आक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी में आधुनिक यूरोपीय इतिहास का अध्ययन किया. वह निकोल्स एंड अलेग्जांड्रा के लेखक हैं तथा पत्नी सूजान मैसी के साथ मिल कर उन्हों ने एक अन्य पुस्तक 'जर्नी' भी लिखी है

मार्च १६६९ में, जब अलेक्सिस ४० वर्ष
था, उस की पत्नी, ज़ारित्सा मार्या मिलोस्
व्स्काया अपनें अनिवार्य वंशानुगत कार्य अ
संतानोत्पत्ति को सरंजाम देने की कोशिश
काल कवलित हो गयी. उस का गहन शो
मनाया गया, सिर्फ़ उस के पति द्वारा ही न
उस के अनगिनत मिलोस्लाव्स्की संबंधि
द्वारा भी, जिन की दरबारी शक्ति का दरोमदार इ
बात पर था कि ज़ार से उस की शादी हुई थ

उन की डावांडोल स्थिति इस तथ्य से औ
भी बदतर हो गई कि ज़ार के पास सिर्फ़ दो
बेटे रह गए थे— जिन की संभावनाएं ब
अशक्त थीं. फ़्योदोर तब आठ का था अ
बड़ा कमज़ोर था; तीन वर्षीय ईवान आ
अंधा था और उस की ज़बान भी साफ़ न
थी.

अगर पिता की मृत्यु से पहले या उस
कुछ ही समय बाद दोनों की मृत्यु हो जा
तो उत्तराधिकार का झगड़ा खड़ा हो जाता अ
यह कोई नहीं जानता था कि गद्दी की त
कौन झपट पड़ेगा. अतः मिलोस्लाव्स्की परि
के अलावा सारा रूस चाहता था
अलेक्सिस जल्दी ही दूसरी बीवी ढूंढ ले

उदास और अकेला अलेक्सिस अक
शामें अपने आत्मीय मित्र और प्रधान म
आर्तामोन मातवीव के घर गुज़ारता था. सत
हवीं सदी के मास्को के लिहाज़ से आर्ताम
असाधारण व्यक्तित्व था. वह किसी बोय
(उच्च) वंश से नहीं था, बल्कि योग्यता
बल पर शक्तिशाली बना था. विद्वताप
विषयों में उस की रुचि थी और पाश्चा
संस्कृति उसे मोहित करती थी.

ऐसी ही एक शाम ज़ार की नज़र नताल
नारीश्कीना पर पड़ी, जो तब १९ वर्ष की थ
वोद्का के प्याले और कैवियार तथा भुनी

...ली की तश्तरियां लिए नताल्या कमरे में ...ई. अलेक्सिस ने उस की स्वस्थ सुंदर कांति, बादाम जैसी (बड़ी बड़ी) कजरारी आंखों, शांत और सौम्य व्यक्तित्व को देखता ही गया. रात विदा लेते वक़्त ज़ार ने मातवीव पूछा कि उसे अपने संरक्षण में पलने वाली ... लड़की की शादी की फ़िक्र है या नहीं. ...तवीव ने कहा, फ़िक्र तो है लेकिन न तो ...ाल्या के पिता अमीर हैं, न वह खुद, इस ...ए दहेज बहुत कम होगा और निस्संदेह ...वाहार्थी भी कम ही थे.

फिर कुछ दिन बाद ज़ार ने मातवीव से ...ा कि उसे कोई सफलता मिली या नहीं. ...तवीव ने उत्तर दिया, "मेरी आश्रिता का रूप अनेक को भाता है, लेकिन शादी की बात ...ई सोचता नहीं लगता."

"यह तो अच्छा ही है," ज़ार ने कहा. मैं ने एक खानदानी वर ढूंढ़ निकाला है, जो ...यद उसे स्वीकार कर लेगा, वह बड़ा आदर-...य व्यक्ति है, योग्यता की भी उस में कमी ...ीं है और उसे दहेज की भी कोई ज़रूरत ...ीं है. मेरा ख़याल है, वह उसे स्वीकार कर ...गी."

मातवीव ने कहा कि इस में कोई शक नहीं ... कि नताल्या उस किसी भी व्यक्ति को ...ीकार करेगी "जिस का सुझाव महामहिम ने ...या हो. फिर भी अपनी स्वीकृति देने से पहले ...यद वह जानना चाहे कि वह कौन है."

"ठीक है," अलेक्सिस ने घोषणा की, कहो—वह व्यक्ति मैं हूं, और मैं उस से ...ादी कर के ही रहूंगा."

मातवीव ने अपने आप को प्रभु के चरणों ... डाल दिया. उस ने अलेक्सिस के फ़ैसले ...ी भव्य संभावनाओं और अपरिमेय आशं-...ाओं को तुरंत पहचान लिया. अपनी आश्रिता को ज़ारित्सा की पदवी तक पहुंचा देने से उस की अपनी सफलता पर मुहर लग जाती: नताल्या के संबंधी और मित्र भी उस के साथ साथ ऊपर उठ जाएंगे और दरबार में शासक सत्ता के रूप में मिलोस्लाव्स्कियों का स्थान ग्रहण कर लेंगे लेकिन इस का यह मतलब भी था कि मिलोस्लाव्स्कियों से दुश्मनी ख़तरे की सीमा तक बढ़ जाएगी.

शादी के दिन से ही स्पष्ट हो गया कि ज़ार को अपनी काले केशों वाली युवा सुंदर पत्नी से गहरा प्रेम था. और जब १६७१ के शरद में पता चला कि नताल्या गर्भवती है, तो अलेक्सिस के हर्ष की सीमा न रही. दोनों ही पुत्रजन्म की कामना करते रहे. नताल्या ने एक अति स्वस्थ बेटे को जन्म दिया. बच्चे का नाम पीटर रखा गया.

स्नेहमयी मां, गर्वीले पिता और हर्षित मातवीव के बीच बच्चे को उपहार देने के लिए होड़ सी लगी रहती और पीटर का कक्ष जल्दी ही सुंदर नमूनों और खिलौनों से भर गया. एक कोने में लकड़ी का उत्कीर्ण घोड़ा खड़ा था, जिस की चमड़े की ज़ीन में चांदी की मेखें जड़ी थीं और लगाम में पन्ने लगे थे. खिड़की के पास वाली मेज़ पर चमकती तसवीरों वाली एक किताब थी, जिसे छः चित्रकारों ने बड़ी मेहनत से बच्चे के लिए तैयार किया था. लेकिन पीटर के प्रिय खिलौने और उस के प्रिय खेल सेना से संबंधित थे, घंटे और ढोल पीटना उसे पसंद था. खिलौने के सिपाही और दुर्ग, बरछे, तलवार, तोप और पिस्तौल उस की मेज़ों और फ़र्श पर फैले रहते. बिस्तर के पास पीटर अपना सब से क़ीमती खिलौना रखे रहता, जो मातवीव ने उसे दिया था: नौका का माडल.

केवल साढ़े तीन साल की उमर में पीटर का सुरक्षित शैशव नष्ट हो गया. फ़रवरी

१९७६ में ज़ार अलेक्सिस, जो तब ४७ वर्ष का था और पूर्णतः स्वस्थ तथा सक्रिय था, बीमार पड़ा और चल बसा. अब तक पीटर था अपने पिता का लाडला, अब वह एक मृत पिता की दूसरी पत्नी की संभावित ख़तरनाक संतान बन कर रह गया. सिंहासन का वारिस था १५ वर्षीय फ़्योदोर मार्या मिलोस्लाव्स्काया का अर्ध रोगी, ज्येष्ठ पुत्र. मिलोस्लाव्स्की बड़े जोश ख़रोश से वापस पदासीन हो गए.

इस क़बीले का मुखिया था ईवान मिलोस्लाव्स्की, जो अस्त्राख़ान की सूबेदारी छोड़ कर मातवीव के स्थान पर मुख्य मंत्री बनने के लिए भागा चला आया था. मातवीव ख़ुद किसी नाम मात्र के पद पर निर्वासित कर दिया जाएगा, यह बात अपेक्षित थी. मातवीव को आदेश दिया गया कि वह सुदूर साइबेरिया के एक प्रांत के सूबेदार के रूप में प्रस्थान कर जाए. ज़ारित्सा नताल्या ने सब कुछ भाग्य के सहारे छोड़ दिया. यह जान कर वह और भी त्रस्त व भयभीत रह गई कि मातवीव अपने नए पद को ग्रहण करने के लिए जा ही रहा था कि ईवान मिलोस्लाव्स्की ने नए आदेश जारी कर दिए कि उसे गिरफ़्तार कर के सारी संपति छीन ली जाए तथा शाही बंदी के रूप में उसे आर्कटिक वृत्त के उत्तर में स्थित एक दूरस्थ क़सबे में ले जाया जाए.

हरम से निकली राजकुमारी

अपने शक्तिशाली समर्थक से वंचित, और अन्य समर्थकों के अपदस्थ हो जाने के कारण नताल्या और पीटर सार्वजनिक स्तर पर लुप्त हो गए. उन्हें अपनी सुरक्षा तक ख़तरे में लग रही थी.

वक़्त के साथ ज़ारित्सा के भय कम होने लगे राजकुमारों का अस्तित्व तब तक दै[illegible] माना जाता था, तथा नए ज़ार फ़्योदोर ने अप[illegible] नव कंगाल संबंधियों के प्रति हमेशा सहानुभू[illegible] और दयालुता का भाव बनाए रखा. [illegible] क्रेमलिन में ही बने रहे, अपने निजी निवास स्थलों में बंद. वहीं पीटर की शिक्षा शुरू हु[illegible] वह अध्यवसायी तो नहीं था, लेकिन असा[illegible] धारण रूप से खुले मन वाला और जिज्ञा[illegible] ज़रूर था.

फिर—ज़ार बनने के छः साल बाद फ़्योदो[illegible] की मृत्यु हो गई—निस्संतान. ज़ार की गद्दी [illegible] दो बचे प्रत्याशी थे १६ वर्षीय ईवान और उ[illegible] का १० वर्षीय सौतेला भाई, पीटर. सामान्यतय[illegible] ईवान का चुनाव निर्द्वंद्व होना चाहिए थ[illegible] लेकिन वह लगभग अंधा और लंगड़ा था औ[illegible] बोलने में उसे कठिनाई होती थी, जब कि पीट[illegible] सक्रिय था, स्वस्थ और उम्र के हिसाब [illegible] काफ़ी बड़ा भी. ज़्यादा महत्वपूर्ण बात यह थ[illegible] कि बोयार जानते थे कि सिंहासन पर कोई भ[illegible] लड़का बैठे, सत्ता किसी रीजेंट के हाथों में [illegible] रहेगी. अब तक, उन में से अधिकांश ईवा[illegible] मिलोस्लाव्स्की के विरोधी बन चुके थे औ[illegible] मातवीव को वरीयता देने लगे थे, जो पीटर के ज़ार बनने की स्थिति में ज़ारित्सा नताल्या को रीजेंट बना कर सत्ता का संचालन करता.

चुनाव पीटर के पक्ष में हुआ लेकिन बोया[illegible] जन को ध्यान नहीं रहा था कि पीटर की सौतेल[illegible] बड़ी बहन ज़ारेव्ना सोफ़िया भी कोई हस्ती है.

तत्कालीन मास्को की नारी संबंधी धारणाओ[illegible] पर पश्चिमी यूरोप का असर कम था औ[illegible] इसलामी तुर्की का प्रभाव अधिक था. नारी को मूर्ख, नैतिक कर्तव्यों से हीन और व्यभिचार की खान समझा जाता था. पूजा पाठ के साथ साथ घरेलू कलाएं, जैसे कढ़ाई बुनाई, सीखते समय उन पर कड़ी नज़र रखी जाती थी और पति के

थ सौंप देने तक उन्हें ताले चाबी में बंद
वा जाता था. पति के घर में नारी का स्थान
जीव नौकर से अधिक नहीं होता था. उन्हें
स वही अधिकार प्राप्त होते जो पति के द्वारा
न्हें मिल पाते.

सतरहवीं सदी की रूसी नारी के लिए
विवाह वांछनीय स्थिति थी या नहीं, इस पर
बहस हो सकती है. लेकिन कुछ नारियों के
भाग्य में विवाह तक नहीं होता था—जैसे ज़ार
की बहनें और बेटियां. उन की उच्च स्थिति ही
न की अवरोधक थी. ज़ारेव्ना के नाम से
कारी जाने वाली इन राजकुमारियों में से कोई
भी अपने शाही रुतबे से नीचे किसी से विवाह
नहीं कर सकती थी और विदेशियों से विवाह
र धार्मिक प्रतिबंध था. विदेशी का अर्थ था
अनास्थावादी और अधर्मी. अतः उन की
नियति थी जन्म से ले कर पूरा जीवन हरम के
अंकरे अंधेरों में बिताना. उन्हीं में वे अपना
वक़्त बिता देती थीं—प्रार्थना, कढ़ाई, गप-
बाज़ी और बोरियत में.

हरम को ही सोफ़िया की दुनिया होना
चाहिए था. १६५७ में अपने जन्म के बाद
शुरू का बचपन उस ने वहीं बिताया था. दर्जन
भर राजकुमारियों—ज़ार अलेक्सिस की बहनों,
बुआओं, और बेटियों—में से एक; सब की
सब छोटी छोटी खिड़कियों के पीछे बंद. पर
सोफ़िया कुछ भिन्न थी. उस में वह बुद्धिमत्ता,
महत्वाकांक्षा, निर्णयशीलता मौजूद थी, जिन का
उस के कमज़ोर भाइयों और बेनाम बहनों में
सर्वथा अभाव था.

पिता के देहांत तथा अपने १५ वर्षीय भाई
फ़्योदोर के राज्याभिषेक के समय तो वह १८
साल की थी. धीरे धीरे, ज़ारेव्ना हरम की
गुमनामी से बाहर आने लगी और ऐसे हालात
में देखी जाने लगी जो तब तक औरतों के
लिए पूर्णतया अपरिचित थे. वह बोयार परिषद
के सत्रों में भाग लेती, उस के मामा इवान
मिलोस्लाव्स्की और प्रमुख मंत्री उसे अपने
वार्तालाप तथा फ़ैसलों में शामिल करते, जिस
से उस के राजनीतिक विचार परिपक्व होते गए.
उसे यह एहसास होने लगा कि उस की
बौद्धिक उपलब्धियां और इच्छा शक्ति उस के
आसपास के पुरुषों की बराबरी कर सकती
थी, बल्कि उन से आगे ही थी, और यह भी
कि सर्वोच्च सत्ता तक पहुंचने के उस के रास्ते
में उस के स्त्री होने के अलावा और कोई चीज़
बाधा नहीं बन सकती थी.

फ़्योदोर की मृत्यु और सौतेले भाई का
अचानक सिंहासन आरूढ़ होना सोफ़िया के
लिए भयंकर आघात थे. फ़्योदोर की मृत्यु का
उसे सच्चा दुख था. दरबार में नारीश्कीन वंश
की पुनर्स्थापना का अर्थ यह भी था कि
सोफ़िया की विशिष्ट स्थिति का अंत हो जाए,
क्योंकि वह मिलोस्लाव्स्की राजकुमारी थी.
हताश सोफ़िया कोई दूसरा हल ढूंढ़ने लगी.

उन दिनों क्रेमलिन की सुरक्षा की ज़िम्मेदारी
थी स्त्रेलेत्सी सैनिकों पर. पीटर के जीवन के
पूर्वार्ध में रूस में सत्ता की कुंजी इन अक्खड़
और दढ़ियल बरछैत और बंदूकधारियों के हाथ
में थी. देश के ये पहले पेशेवर सैनिक पुराने
ढंग की ज़िंदगी जीने वाले, ज़ार और धर्माधि-
कारी दोनों में श्रद्धा रखने वाले, नवीनताओं से
घृणा और सुधारों का विरोध करने वाले सीधे
सादे रूसी थे. सेना को नए शस्त्र और युद्ध
प्रणालियों का प्रशिक्षण देने के लिए मंगवाए
गए विदेशियों के प्रति स्त्रेल्त्सी के अफ़सर और
जवान, दोनों तरह के लोग शंकालु और नाराज़
थे. राजनीति से वे अनभिज्ञ थे, लेकिन जब
उन्हें लगता था कि देश सही पारंपरिक रास्तों
से भटक रहा है, तो वे बड़ी आसानी से अपने

आप को यह समझा लेते थे कि उन का कर्तव्य है कि वे राज्य के मामलों में हस्तक्षेप करें.

मई १६८२ में जब युवा ज़ार फ़्योदोर मृत्युशैया पर पड़ा था, एक स्त्रेल्त्सी रेजिमेंट ने आधिकारिक याचिका पेश की, जिस में उन्हों ने अपने कर्नल पर आधा वेतन रोक लेने का आरोप लगाया. कमांडर ने याचिका पेश करने वाले सैनिक को अवज्ञा के लिए कोड़े लगाए जाने का आदेश दिया. लेकिन जब सैनिक को कोड़े लगाने के लिए ले जाया जा रहा था, तो स्त्रेल्त्सी लोग संतरियों पर झपट पड़े और उन्हों ने क़ैदी को मुक्त करा लिया.

इस घटना ने स्त्रेलेत्सी शिविर को भड़का दिया. सतरह रेजिमेंटों ने अविलंब अपने कर्नलों पर धोखाधड़ी और दुर्व्यवहार का आरोप लगाया और सज़ा की मांग की. नताल्या की कमउम्र सरकार को, जो अभी सत्ता संभाल ही रही थी, यह संकट विरासत में मिला. सैनिकों के विरोध को कुंद बनाने के लिए अति उत्सुक नताल्या ने कर्नलों की बलि दे दी. बिना खोज बीन किए उस ने कर्नलों को हिरासत में लेने और उन के पद समाप्त कर देने का आदेश दे दिया. दो कर्नलों को सरे आम कोड़े लगाए गए, जब कि १२ अन्य को स्त्रेल्त्सियों के ही आदेश पर डंडों से पिटाई की कम सख़्त सज़ा दी गई.

उस समय तो स्त्रेल्त्सी शांत हो गए, लेकिन, उन के बीच दुष्टता भरी कहानियां फैला दी गई थीं. एक अफ़वाह यह थी कि फ़्योदोर स्वाभाविक मौत नहीं मरा था, बल्कि वोवार और नारीशिकन लोगों ने विदेशी चिकित्सकों के साथ मिली भगत कर के उसे ज़हर दिया था. फिर इन्हीं छिपे दुश्मनों ने सही उत्तराधिकारी ईवान के बजाय पीटर को गद्दी दे दी थी. अब इस साज़िश की कामयाबी पर विदेशियों को सेना और सरकार में सत्ता दे दी जाएगी, परंपरा को अपमानित किया जाएगा, उसे कुचला जाएगा, और बदतरीन बात यह कि मास्को में पुराने मूल्यों के रक्षक स्त्रेल्त्सी सैनिकों को भयंकर सज़ाएं दी जाएंगी.

२५ मई को सुबह ९ बजे सुलगती चिनगारी लपट बन गई. दो घुड़सवार, जो दोनों ही सोफ़िया के आत्मीय वृत्त के सदस्य थे, स्त्रेल्त्सी क्वार्टर में दाख़िल हुए और चिल्लाए, "नारिश्किनों ने राजकुमार ईवान की हत्या कर दी ! क्रेमलिन चलो ! हथियार उठाओ ! देशद्रोहियों को दंड दो !"

स्त्रेल्त्सी विद्रोह

स्त्रेल्त्सी शिविर में जैसे विस्फोट हो गया. घंटियां बज उठीं, युद्ध के नगाड़े गरजने लगे. कफ़्तान धारी पुरुषों ने दस्तारें कसीं और फरसे, भाले और खड्ग उठा लिए. चौड़ी रेजिमेंट पताकाओं को फहराते, और नगाड़े बजाते, वे क्रेमलिन जाने वाले मार्गों पर आगे बढ़ने लगे. महल के सामने की लाल सीढ़ियों के सामने एकत्र हो कर वे चिल्लाने लगे, "ज़ारेविच ईवान कहां हैं? नारिश्किनों और मातवीव को हमारे हवाले करो. उन्हों ने ज़ारेविच की हत्या की है. देशद्रोहियों का नाश हो !"

यह समझते हुए कि यह विद्रोह अंशतः एक ग़लती का परिणाम था, मातवीव ने नताल्या से कहा कि वह पीटर और ईवान को लाल सीढ़ियों के शिखर पर ले जाये और उन का दर्शन स्त्रेल्त्सी भीड़ को कराए. नताल्या कांप उठी. उस के परिवार का सफाया करने की धमकी देती, चीख़ती चिल्लाती भीड़ के समक्ष, अपने दस वर्षीय बेटे के साथ खड़े होना

भयानक काम था. पर कोई और रास्ता नहीं था.

उस ने एक हाथ में पीटर को पकड़ा और दूसरे में ईवान को, और सीढ़ियों के शिखर पर ड्योढ़ी में आ खड़ी हुई. उस के पीछे धर्माधिकारी और बोयार खड़े थे. स्त्रेल्त्सियों ने ज़ारित्सा और दोनों लड़कों को देखा, तो चिल्लाहट रुक गई और पूरा चौक एक अस्पष्ट फुसफुसाहट से भर उठा. जाहिर था, उन्हें धोखा दिया गया था—ईवान की हत्या नहीं हुई थी.

अब सफ़ेद दाढ़ी और लंबे वस्त्रों वाला मातवीव आगे आया. ज़ार अलेक्सिस के अधीन वह स्त्रेल्त्सियों का एक लोकप्रिय सेनानायक रहा था. अनेक के मन में अब भी उस की याद अच्छे व्यक्ति के रूप में बाक़ी थी. बड़ी शांति से उस ने उन्हें अतीत में उन की स्वामिभक्ति तथा ज़ार के रंक्षकों के रूप में उन की ख्याति की याद दिलाई. उस ने उन्हें घर लौट जाने और अपनी क्रियाओं के लिए माफ़ी मांगने की सलाह दी.

ऐसा लगा जैसे संकट टल गया हो. मातवीव ने स्त्रेल्त्सियों को सलामी दी. घूमा और उद्विग्न ज़ारित्सा को ख़ुश ख़बर देने के लिए वापस महल में चला गया. उस का जाना एक घातक भूल थी.

ज्यों ही मातवीव गया, स्त्रेल्त्सी सेनापति का बेटा प्रिंस मिखाइल दोल्गोरूकी लाल सीढ़ियों के शिखर पर दिखाई दिया. सैनिकों के बग़ावती रवैये से अपमानित, इस समय वह आग बबूला हो रहा था. कठोर शब्दों में उस ने सैनिकों को कोसा और घर लौट जाने का आदेश दिया वरना, उस ने धमकी दी : कोड़ा बरसने लगेगा.

मातवीव द्वारा स्थापित शांति तुरंत भंग हो गई. क्रुद्ध स्त्रेल्त्सियों का तूफ़ान सीढ़ियों पर चढ़ने लगा. उन्हों ने शाहज़ादे को पकड़ा और उसे जंगले के पार, नीचे खड़े साथियों के भालों पर पटक दिया. भीड़ ने गरज कर अपनी स्वीकृति दी और चिल्लाई, "टुकड़े टुकड़े कर दो!" कांपता हुआ शरीर कुछ सेकंड में ज़िबह कर दिया गया और आसपास के लोग रक्त से नहा उठे.

और ख़ून के प्यासे स्त्रेल्त्सियों की क्रुद्ध भीड़ अब लाल सीढ़ियों पर तूफ़ान की तरह चढ़ी और महल में घुस गई. मातवीव एक उपकक्ष में खड़ा नताल्या से बात कर रहा था. नताल्या अब भी पीटर और ईवान को थामे खड़ी थी. नताल्या ने पीटर का हाथ छोड़ा और मातवीव को बचाने के लिए उसे अपनी बांहों से घेर लिया. स्त्रेल्त्सियों ने दोनों लड़कों को एक ओर धकेला, बुजुर्ग को खींच कर नताल्या की बांहों से अलग किया और घसीटते हुए सीढ़ियों के जंगले तक ले आए. हर्ष ध्वनि की चीख़ों के साथ उन्हों ने मातवीव को ऊंचा उठाया और फिर ऊपर उठे बरछों की नोकों पर पटक दिया. क्षणों में ही, पीटर की मां के संरक्षक, अंतरंग मित्र और प्रमुख समर्थक के टुकड़े टुकड़े कर दिए गए.

भयाक्रांत बोयार भाग कर जहां तहां छिपने लगे. अधिकांश के बचाव का कोई रास्ता नहीं था. स्त्रेल्त्सियों ने तालाबंद दरवाज़ों को तोड़ डाला, बिस्तरों के नीचे और वेदियों के पीछे झांक कर देखा—जिस किसी अंधेरे कोने में कोई इंसान छिप सकता था, वहां उन्हों ने भालों से कोंचा. जो पकड़े गए उन्हें क्रेमलिन से घसीट कर लाल चौक में लाया गया और काट पीट कर मानवीय अंगों से लगातार ऊंचे उठते ढेर पर फेंक दिया गया.

बग़ावत दो दिनों तक और चलती रही.

लेकिन उन की नफ़रत का एक पात्र, ईवान नारीश्कीन, नताल्या का भाई, उन के हाथ नहीं आया. तीसरे दिन इस इरादे से कि अब उन्हें और इंतज़ार नहीं करना है, स्त्रेल्त्सी नेता लाल सीढ़ियों पर चढ़े और उन्हों ने चेतावनी दे दी: ईवान नारीश्किन तुरंत आत्मसमर्पण नहीं करता, तो वे महल में मौजूद प्रत्येक बोयार की हत्या कर देंगे. ख़ुद शाही परिवार भी नहीं बच सकेगा.

सोफ़िया ने कमान अपने हाथ ले ली. भयाक्रांत बोयारों की मौजूदगी में वह नताल्या के पास पहुंची और ऐलान किया: ''बचाव का कोई रास्ता नहीं है. हम सब की जान बचाने के लिए तुम्हें अपना भाई उन्हें सौंपना ही होगा.''

नाताल्या ने सेवकों को आदेश दिया कि वे उस के भाई को उस के पास ले कर आएं वह आया और नताल्या उसे महल के एक गिरजे में ले गई, जहां उस का ईसाई अंतिम संस्कार किया गया. वह स्त्रेल्त्सियों से मिलने चला तो रोती नताल्या ने ईसा मसीह की मां की पवित्र प्रतिमा उस के हाथों में थमा दी.

ईवान नारीश्किन को देखते ही भीड़ के गले से विजय का हर्षनाद गूंज उठा. भीड़ आगे बढ़ी. ज़ारित्सा नताल्या की आंखों के सामने उन्हों ने अपने शिकार को पकड़ा और पीटने लगे. उसे पैरों से पकड़ कर घसीटते लाल सीढ़ियों से नीचे लाया गया, फिर महल के आंगन को पार कर के एक यातना कक्ष में ले जाया गया, जहां उन्हों ने कई घंटों तक उसे यह स्वीकारोक्ति करने के लिए यंत्रणा दी कि उस ने ज़ार फ़्योदोर की हत्या की है और गद्दी हथियाने के लिए साज़िश भी की है.

फिर उसे घसीट कर लाल चौक में लाया गया और भीड़ के समक्ष अंतिम भेंट के रूप में उसे भालों की नोकों पर उठा लिया गया. फिर उस के शरीर को नीचे उतार कर टुकड़ों में काट डाला गया और घृणा के अतिरेक के तौर पर उस के अवशेषों को कीचड़ में कुचल डाला गया.

नर संहार समाप्त हो गया. लेकिन तमाम नर संहार के बावजूद पीटर अब भी ज़ार था. स्पष्ट था कि पीटर की उम्र बढ़ने के साथ साथ उस की शक्ति भी बढ़ेगी और नारीश्किनों का प्रभाव भी बढ़ेगा और मिलोस्लाव्स्कियों की यह विजय क्षणिक सिद्ध होगी. अतः २ जून को सोफ़िया के एजेंटों की शह पर स्त्रेल्त्सियों ने मांग की कि पीटर और ईवान संयुक्त ज़ारों के रूप में शासन करें. उन्हों ने धमकी दी कि अगर मांग स्वीकार नहीं की गई, तो वे पुनः क्रेमलिन पर आक्रमण कर देंगे. धर्माधिकारी और बोयारों के सामने कोई विकल्प नहीं था: स्त्रेल्त्सियों का विरोध नहीं किया जा सकता था. फिर ५ जून को स्त्रेल्त्सियों का एक और प्रतिनिधि मंडल अंतिम मांग लिए सामने आया. दोनों ज़ारों की सुकुमारता और अनुभवहीनता को देखते हुए ज़ारेव्ना सोफ़िया रीजेंट बने. धर्माधिकारी और बोयारों ने तुरंत अपनी स्वीकृति दे दी. उसी दिन एक आदेश द्वारा घोषणा की गई कि ज़ारित्सा नताल्या के स्थान पर ज़ारेव्ना सोफ़िया अलेक्सीव्ना रीजेंट होंगी. अगले सात वर्षों तक इस असाधारण महिला ने रूस पर शासन किया.

पीटर के खेल

क्रेमलिन से दूर रहने के लिए नताल्या ने मास्को से क़रीब पांच किलोमीटर दूर उत्तर पूर्व में स्थित प्रिओब्राज़ेंस्को की शिकारगाह में ज़्यादा वक़्त बिताना शुरू कर दिया. यहां

खेतों और जंगल के बीच पीटर अध्ययन को भूल कर खेलता रह सकता था. बचपन से ही उस का प्रिय खेल था युद्ध. और युद्ध के खेल के लिए पीटर के पास था सरकारी युद्ध सामग्री का भंडार. चौदह वर्ष का होते होते पीटर के युद्ध खेलों ने ग्रीष्म निवास स्थल को एक किशोर सैनिक शिविर में परिवर्तित कर दिया था. पीटर के प्रथम 'सैनिक' उस के खेल के साथियों का छोटा सा समूह थे, जिन्हें बोयार परिवारों में से चुना गया था. अंततः ऐसे ३०० लड़के और युवक प्रिओब्राज़ेंस्को जागीर में एकत्र हो गए. वे बैरकों में रहते थे, सैनिकों की तरह प्रशिक्षण प्राप्त करते थे और सैनिकों का सा वेतन भी उन्हें मिलता था. पीटर उन्हें अपने ख़ास साथी मानता था, और बाद में, इसी समूह में से, उस ने गर्वीले प्रिओब्राज़ेंस्की रेजिमेंट का निर्माण किया. १९१७ में राजतंत्र के पतन के पूर्व तक रूसी शाही गारद में इस रेजिमेंट का स्थान सब से ऊपर था.

अपने आप को कर्नल के पद पर स्थापित करने के बजाए, पीटर ने रेजिमेंट में अपना नाम निम्नतम श्रेणी में बतौर ढोल वादक लिखवाया, जहां वह अपने प्रिय वाद्य को बड़े उत्साह से बजा सकता था. बाद में उस ने अपनी प्रोन्नति तोपची या गोलंदाज़ के पद तक कर ली ताकि वह उस तोप को चला सके, जो सब से ज़्यादा शोर करती थी और सब से ज़्यादा नुक़सान भी पहुंचाती थी. बैरकों में और मैदान में वह अपने और दूसरों के बीच किसी तरह का भेद भाव नहीं होने देता था. वह उन्हीं जैसा भोजन करता, रात हो या दिन, अपनी बारी पर चौकीदारी करता, और तंबू में सोता. औरों के साथ वह भी फावड़े से मिट्टी खोदता. रेजिमेंट की परेड में वह भी सैनिक पंक्ति में खड़ा होता. वह दूसरों से लंबा ज़रूर था, लेकिन वैसे उन से भिन्न नहीं था.

इस उन्मुक्त बचपन का एक परिणाम [illegible] हुआ कि पीटर की नियमबद्ध शिक्षा अवरुद्ध [illegible] गई. कक्षा के बजाए चारागाहों और नदियों [illegible] उस का सरोकार ज़्यादा रहा; काग़ज़ [illegible] क़लम के बजाए भालों और तोप से. [illegible] महत्वपूर्ण था, लेकिन नुक़सान भी गंभीर [illegible] उस की पढ़ाई शून्य के बराबर थी. उस [illegible] हस्तलेख, हिज्जे और व्याकरण बचपन के [illegible] से आगे कभी नहीं बढ़ पाए. इस के बावजूद [illegible] उस ने बहुत कुछ सीखा.

उदाहरण के लिए प्रस्तुत है १६८८ का [illegible] अनुभव. कोई आदमी फ़्रांस से एक सेक्सटेंट (कोण यंत्र) ले आया, लेकिन पीटर [illegible] साथियों में किसी को इस्तेमाल मालूम नहीं [illegible] तलाशने पर एक बूढ़ा डच व्यापारी मि[illegible] जिस का नाम था फ़्रांज़ टिमरमैन. उस [illegible] यंत्र को उठाया और बड़ी तेज़ी से हिसाब [illegible] कर पड़ोस के एक मकान का फ़ासला [illegible] दिया. उस के परिणाम को जांचने एक [illegible] भेजा गया, जिस ने लौट कर लगभग [illegible] आंकड़ा बताया, जो टिमरमैन ने बताया [illegible] उत्सुक पीटर ने कहा कि वह इस यंत्र [illegible] उपयोग सीखना चाहता है. टिमरमैन मान [illegible] लेकिन उस ने भी कहा कि पहले पीटर [illegible] अंकगणित तथा ज्यामिति सीखना होगा. [illegible] को तो इतना भी याद नहीं था कि घटा [illegible] भाग कैसे किया जाता है. अब, सेक्सटेंट [illegible] अनुप्राणित हो कर वह अंकगणित, ज्यामिति [illegible] और प्राक्षेपिकी (बलिस्टिक्स) सीखने [illegible] और जितना ही वह आगे बढ़ता गया, उतने [illegible] अधिक रास्ते उसे खुलते नज़र आते गए.

टिमरमैन सलाहकार और मित्र बन [illegible] और ज़ार हमेशा उसे अपने साथ रखता. [illegible] दिन वे नज़दीक की शाही जागीर में टहल [illegible]

थे. पुराने माल से भरे एक गोदाम को देख कर पीटर की जिज्ञासा जाग्रत हो गई. मद्धिम रोशनी में एक बड़ी सी चीज़ पर उस की नज़र पड़ी : एक पुरानी जर्जर नौका कोने में उलटी पड़ी थी. उसे मालूम था कि रूसी लोग चौड़ी नदियों में माल के वहन के लिए दुर्वह, कम गहरी नौकाओं का इस्तेमाल किया करते थे. यह नौका भिन्न थी. उस का गहरा गोल पेटा, भारी नौतल और नुकीला अग्रभाग नदियों के लिए नहीं बना था.

"नया मस्तूल और पाल हो, तो यह हवा के रुख के साथ ही नहीं, उस के ख़िलाफ़ भी चल सकती है," टिमरमैन ने बताया.

पीटर दंग रह गया. वह नौका को तुरंत चला कर देखना चाहता था. टिमरमैन ने एक और बुज़ुर्ग डच मैन, कार्स्टेन ब्रांट, को ढूंढ़ निकाला, जिस ने नई लकड़ी लगा दी, तल में जोड़ भर दिए और तारकोल पोत दिया. मस्तूल और बादबान, पाल बंध और चादर लगा दीं. फिर नौका को रोलरों के सहारे यौज़ा नदी तक ले जाया गया और पानी में उतार दिया गया. पीटर की आंखों के सामने, ब्रांट ने हवा और लहरों के विरुद्ध नौका को दाहिने बाएं दिशा देना शुरू किया. पीटर ने चिल्ला कर कहा, "मुझे भी बैठाओ."

इस के बाद से पीटर हर रोज़ नौकायन के लिए जाने लगा. उस ने बादबानों और हवा का इस्तेमाल सीखा, लेकिन यौज़ा का पाट चौड़ा नहीं था और नौका लगातार किनारे जा धंसती. पानी का निकटतम विस्तार—१५ किलोमीटर चौड़ा—मास्को के उत्तर पूर्व में १४० किलोमीटर दूर स्थित था, यानी प्लेश्चीव झील. लेकिन वहां नौकाएं नहीं थीं. उस ने ब्रांट से पूछा कि क्या झील पर नौकाएं बनाना संभव है.

"हां, वहां नौकाएं बन सकती हैं," बूढ़े बढ़ई ने उत्तर दिया. "लेकिन हमें बहुत सारी चीज़ों की ज़रूरत होगी."

"चिंता की क्या बात है?" पीटर बोला, "हर चीज़ मिलेगी."

लकड़ी काटी गई, सीज़न की गई और उसे आकार दिया गया. सुबह से ले कर शाम तक, पीटर और अन्य कर्मिक, दोनों डच बुज़ुर्गों के निर्देशन में बड़ी मेहनत से लकड़ी चीरते और हथौड़ा चलाते. उन्हों ने पांच नौकाओं के नौतल बना लिए—दो छोटे फ्रिगेट और तीन पाल नौकाएं—सब के अग्रभाग और दुंबाल डच शैली में गोलाकार थे. सितंबर में नौकाओं के ढांचे उभरने लगे. लेकिन कोई भी नौका पूरी नहीं बन पाई थी कि पीटर को मजबूरन मास्को लौटना पड़ा. बेमन से उसे जाना पड़ा. जाते जाते वह डच जहाज़ बनाने वालों से कहता गया कि वे कड़ी मेहनत करें और वसंत तक नौकाएं तैयार करवा लें.

राजसी परिधान

१६८८ के अंत तक पीटर १६½ का हो चुका था और अब लड़का नहीं रह गया था. उस ज़माने में, जब जीवन अल्पकालिक होता था, पुरुष अकसर छोटी उम्र में ही पिता बन जाते थे. राजकुमारों के मामले में यह बात ख़ास तौर पर सही थी. उत्तराधिकार की ज़रूरत को पूरा करना उन की पहली बड़ी ज़िम्मेदारी थी. पीटर का फ़र्ज़ भी स्पष्ट था. शादी का वक़्त आ गया था.

लड़की का नाम था यूदोक्सिया लोपूख़ीना. वह १९ की थी और सुंदर बताई जाती थी, हालांकि उस का कोई चित्र बच नहीं ... शालीन यूदोक्सिया किसी पारंपरिक ज़ार ... आदर्श ज़ारित्सा साबित हो सकती थी. लेकिन

उस के पति की प्रतिभा की निर्बंध और निर्बाध कौंध उसे विमूढ़ बना देती. राज्य के भव्य आयोजनों में तो वह सहकार करने को तैयार थी, लेकिन नौका निर्माण में नहीं. उस की बातों से पीटर शुरू से ही ऊबने लगा था, जल्दी ही उस की प्रेमक्रीड़ा भी उसे उबाने लगी; फिर कुछ अरसे बाद उस की सूरत तक को बरदाश्त करना उस के लिए मुश्किल हो गया.

शादी के कुछ ही सप्ताह बाद, अप्रैल १६८९ के शुरू में पीटर छूट कर प्लेश्चीव झील की ओर दौड़ पड़ा. उस ने देखा कि झील की बर्फ़ टूट रही है और अधिकांश नौकाएं पानी में उतरने के लिए तैयार हैं.

दो बार उसे मास्को में होने वाले सार्वजनिक आयोजनों के लिए लौट कर आने का आदेश दिया गया. दूसरी बार उस की माता ने ज़ोर दिया कि वह वहीं रहे. बोयार गट के सदस्य रीजेंट सोफ़िया की सरकार को चुनौती देने की तैयारी कर रहे थे. सात वर्षों के अविवाहित सक्षम शासन के बाद उस का प्रशासन लड़खड़ाने लगा था और पीटर के अनुचरों का विश्वास था कि अंत अब निकट ही है. लेकिन अपने उद्देश्य के प्रतीक को वे अपने पास ही देखना चाहते थे. घुटनों वाले ब्रीचिज़ पहने, मास्को से दो दिन की दूरी पर पोतागार में लकड़ी के लट्ठे पर बैठा पीटर सोफ़िया के लिए लड़का ही था. शाही लिबास पहन कर वह ज़ार पद के प्रभुसत्ताक वैभव को आसानी से वहन कर सकता था.

सोफ़िया की रीजेंसी का महानतम व्यक्तित्व था उस का सलाहकार, मुख्य मंत्री और बाद में उस का प्रेमी प्रिंस वासिली गोलित्सिन, रूस के प्राचीनतम अभिजात कुलों में से एक का वंशज. सोफ़िया की उस से मुलाक़ात तब हुई, जब वह २४ की थी—और हरम की पंज[illegible] से विद्रोह कर रही थी.

गोलित्सिन तब ३९ का था, नीली आंखें[illegible] छोटी छोटी मूंछों वाला, ख़ूबसूरती से त[illegible] वानडाइक में सज्जित. वह विवाहित था और उस के बच्चे बड़े हो चले थे. लेकिन वि[illegible]हिणी सोफ़िया को इस से कोई फ़र्क़ नहीं पड़[illegible] था. सत्ता और प्रेम दोनों के ही खेल में उस[illegible] निडरता से भाग लिया था. उस ने तय क[illegible] लिया था कि वह और वासिली दोनों का[illegible] समान रूप से करेंगे.

रीजेंसी की एक बड़ी उपलब्धि थी उस[illegible] विदेश नीति. सोफ़िया और गोलित्सिन ने शु[illegible] से ही रूस के सभी पड़ोसी देशों के स[illegible] शांति की नीति अपनाने का इरादा कर लि[illegible] था. स्टाकहोम में राजा चार्ल्स एकादश य[illegible] जान कर आनंदित था कि १६६१ में स्वी[illegible] को समर्पित किए गए रूसी बाल्टिक प्रदेशों [illegible] पुनःप्राप्ति के लिए ज़ार ईवान और पीटर को[illegible] प्रयास नहीं करेंगे. लेकिन वारसा में सोफ़िया[illegible] दूतावास को जटिलतर स्थिति का सामना कर[illegible] पड़ा. पोलैंड और रूस परंपरागत शत्रु थे. [illegible] सदियों तक उन में युद्ध चलता रहा था, [illegible] में अकसर पोल लोग ही भारी साबित हुए थे.

अब पोलैंड और आस्ट्रिया तुर्की साम्रा[illegible] से लड़ रहे थे और दोनों ही रूसी सहय[illegible] पाने को उत्सुक थे. लंबी बातचीत के [illegible] दोनों पक्षों को अपने अपने ध्येय में सफल[illegible] मिली. पोलैंड ने यूक्रेन की राजधानी, की[illegible] रूस को लौटा दी और उस पर अपने दावे [illegible] भी हमेशा के लिए समाप्त कर दिया. लेकि[illegible] इस विजय की क़ीमत रूस को चुकानी प[illegible] सोफ़िया ने तुर्की साम्राज्य के विरुद्ध जंग क[illegible] एलान करना स्वीकार कर लिया.

सोफ़िया और गोलित्सिन से तुर्कियों [illegible]

नहीं, उन के जागीरदारों, यानी क्रीमियाई तातारों, पर आक्रमण करने को कहा गया. मई १६८७ में गोलित्सिन के सेनापतित्व में एक लाख सैनिकों की रूसी सेना ने दक्षिण की ओर कूच किया. १३ जून को रूसियों ने लोअर नीपर में शिविर लगा रखा था और तातार प्रतिद्वंदियों का अभी तक कहीं कोई संकेत नहीं था. लेकिन गोलित्सिन के आदमियों को उन से भी बदतर चीज़ दिखाई दी : क्षितिज पर धुआं. रूसी घोड़े और बैलों को चारे से वंचित रखने के लिए तातार घास के मैदानों को जला रहे थे. सेना तब तक गिरती पड़ती आगे बढ़ती रही, जब तक, क्रीमिया अंतरीप से १०० किलोमीटर ऊपर एक स्थान पर गोलित्सिन ने और आगे न बढ़ने का फ़ैसला नहीं कर लिया. जुलाई और अगस्त की धूल और गरमी में भोजन और चारा प्राप्त कर सकने में असमर्थ लड़खड़ाती सेना घर की ओर लौट चली.

लेकिन मास्को भेजी रपटों में गोलित्सिन ने अभियान को सफल बताया था. १४ सितंबर को वह मास्को पहुंचा और किसी हीरो की तरह उस का स्वागत हुआ., जबकि वस्तुस्थिति यह थी कि वह चार माह तक मार्च करता रहा था, ४५,००० सैनिक उस ने खोए थे और मुख्य तातार सेना से युद्ध तो दूर की बात है, उन्हें देखे बग़ैर ही वह लौट आया था.

पीटर ने शुरू से ही 'विजय' के दिखावटी नाटक को स्वीकार करने से इनकार कर दिया था. उस ने घर लौटते 'हीरो' का ईवान के साथ क्रेमलिन में स्वागत करने से भी इनकार कर दिया. जब १६८९ में दूसरा अभियान भी इसी तरह के अनर्थकारी परिणाम में समाप्त हुआ, और सोफ़िया ने अपने प्रेमी का स्वागत फिर नायक के तौर पर किया, तो पीटर ने खुले आम उस का तिरस्कार किया. दोनों पक्षों के बीच तनाव बढ़ता जा रहा था; दोनों को डर था कि दूसरा पक्ष कोई अप्रत्याशित चाल चलेगा, और दोनों को विश्वास था कि उन के लिए बेहतर यही है कि वे सुरक्षात्मक रुख़ अपनाए रहें. दोनों में से कोई भी पहला आघात पहुंचा कर अनुकूल नैतिक परिस्थिति को खोना नहीं चाहता था.

निर्णायक क्षण

संकट का विस्फोट १७ अगस्त १६८९ को हुआ. उस अपराह्न सोफ़िया ने स्त्रेल्त्सी सेनानायक फ़्योदोर शाकलोवीती से कहा कि अगली सुबह उसे क्रेमलिन से तीन किलोमीटर दूर दोंस्कोय मठ जाना है और फ़्योदोर उस के लिए मार्गरक्षकों का प्रबंध करे. मठ के निकट चूंकि हाल ही में एक हत्या हुई थी, इस लिए शाकलोवीती ने जिस स्त्रेल्त्सी टुकड़ी को क्रेमलिन आने का आदेश दिया, वह अपेक्षाकृत बड़ी और सामान्य से अधिक शस्त्रों से लैस थी. यह सैनिक टुकड़ी क्रेमलिन के भीतर पड़ाव कर रही थी, कि एक गुमनाम पत्र उन के पास आया जिस में चेतावनी दी गई थी कि उसी रात पीटर के खिलाड़ी सैनिक क्रेमलिन पर हमला करेंगे तथा ज़ार ईवान और रीजेंट सोफ़िया की हत्या का प्रयास करेंगे. उद्विग्न सोफ़िया को शांत करने के लिए शाकलोवीती ने क्रेमलिन के विशाल कपाट बंद करने का आदेश दिया और दुर्ग की रक्षा के लिए और स्त्रेल्त्सियों को बुलवा भेजा. मास्कोवासी संत्रास और भय से देखते रहे. सात साल पहले के नर संहार की याद उन्हें हो आई.

इस बीच पीटर का एक चैंबरलेन नित्य की तरह साधारण सा संवाद लिए शहर में

दाख़िल हुआ. घबराए हुए स्त्रेल्त्सियों में से कुछ ने उस के आगमन का ग़लत अर्थ निकाला. उन्हों ने चैंबरलेन को घोड़े से नीचे खींच लिया. पीटा और घसीटते हुए ला कर महल में शाकलोवीती के सामने पेश कर दिया. स्त्रेल्त्सियों के बीच के ही एक मुख़बिर को जब इस बात का पता चला, तो उस ने सोचा कि पीटर पर हमले की शुरुआत हो गई है. दो घोड़ों पर ज़ीन कसी गई और दो स्वामिभक्तों को आदेश दिया गया कि वे जल्दी से जाएं और ज़ार को चेतावनी दे दें.

आधी रात बीत चुकी थी. प्रिओब्राज़ेंस्को में सब तरफ़ शांति थी. अचानक घुड़सवार संवादी दालान में दाख़िल हुए. पीटर तुरंत बिस्तर से उछला और नाइटगाउन में ही अस्तबल की तरफ़ भागा. घोड़े पर सवार हो कर वह एक गुप्त स्थल में जा छिपा. साथियों द्वारा कपड़े लाए जाने तक वह वहीं इंतज़ार करता रहा. फिर एक छोटे से गिरोह के साथ वह त्रोयत्स्की मठ की ओर चल दिया. यह मठ मास्को से ७५ किलोमीटर दूर उत्तर पूर्व में था.

झूठे ख़तरे से अनुप्रेरित पीटर ने एक निर्णायक क़दम उठा लिया था. त्रोयत्स्की मठ एक अभेय दुर्ग था. १० से १५ मीटर ऊंची और छः मीटर चौड़ी विशाल सफ़ेद दीवारें मठ को घेरे खड़ी थीं. उन की परिधि १६०० मीटर थी. परकोटों और कोनों में स्थित विशाल मीनारों से पीतल की बीसियों तोपों के मुंह ग्राम्य प्रांतर की ओर झांकते रहते थे. संभवतः यह रूस का पवित्रतम स्थल भी था—शाही परिवार के लिए पारंपरिक शरण स्थल. जनता में यह धारणा फैलाने से कि आज के ज़ार को अत्याचारियों से अपनी जान बचाने के लिए भागना पड़ रहा है और वह तमाम रूसियों को अपनी रक्षा का आवाहन कर रहा है, पीटर को बहुत लाभ हो सकता था.

पीटर ने अपने हाथ से स्त्रेल्त्सी रेजिमेंटों के सभी कर्नलों को पत्र लिख कर आदेश दि[illegible] कि वे हर रेजिमेंट के दस लोगों को साथ [illegible] कर त्रोयत्स्की पहुंचें. सोफ़िया की प्रति[illegible] क्रोधपूर्ण थी. उस ने एलान किया कि जो [illegible] जाने की कोशिश करेगा. उस का सर क[illegible] कर दिया जाएगा.

अगले दिन पीटर ने दबाव और बढ़ा दि[illegible] उस ने कहा कि रीजेंट के तौर पर सो[illegible] का काम है पीटर के आदेशों का [illegible] करवाना. सोफ़िया ने धर्माधिकारी योआकि[illegible] निवेदन किया कि वह त्रोयत्स्की जाएं [illegible] झगड़े के निपटारे का प्रयास करें. धर्माधि[illegible] मान गए, लेकिन पीटर के पास पहुंच[illegible] उन्हों ने अपना समर्थन उसी को दे दिया. [illegible] के द्वारा सोफ़िया का साथ छोड़ देने से [illegible] लोगों को भी उन का अनुसरण करने [illegible] प्रोत्साहन मिला.

इस प्रकार पहल प्राप्त कर लेने के [illegible] पीटर ने आदेश दिया कि सभी विदेशी अ[illegible] शस्त्रास्त्र से सज्जित हो कर अपने घोड़ों [illegible] त्रोयत्स्की आएं. इन विदेशी सैनिकों [illegible] अनुबंध सरकार के साथ था. लेकिन [illegible] अराजक स्थिति में सरकार किस को [illegible] जाए? विदेशी अफ़सरों के नेता जनरल [illegible] गोर्डन ने गोलित्सिन से बात की और उ[illegible] सलाह मांगी. गोलित्सिन ने कहा कि वह [illegible] सोफ़िया और ईवान से परामर्श करेगा [illegible] शाम तक जवाब देगा. लेकिन गोलित्सि[illegible] हिचकिचाहट देख कर गोर्डन ने अपना [illegible] कर लिया. यदि रीजेंट का प्रिय पात्र और [illegible] का सर्वोच्च कमांडर आदेश जारी करने [illegible] असमर्थ था, तो मास्को की सत्ता ध्वस्त [illegible] के क़रीब ही होनी चाहिए. उस रात [illegible]

१६८९

अफ़सरों का एक लंबा जुलूस घोड़ों पर सवार हो कर राजधानी से निकला और प्रभात तक मठ में जा पहुंचा. पीटर उन के स्वागत में उठ खड़ा हुआ और चुंबन के लिए उस ने अपना हाथ बढ़ा दिया.

विदेशी अफ़सरों का प्रस्थान निर्णायक रहा. संघर्ष समाप्त हो गया; रीजेंसी का भी अंत हो गया. गोलित्सिन को बोयार पद से वंचित कर दिया गया. उस की सारी संपत्ति ज़ब्त कर ली गई और उसे आर्कटिक के एक गांव में निर्वासित कर दिया गया. कुछ ही समय बाद पीटर का दूत क्रेमलिन पहुंचा. उस ने ज़ार ईवान से गुज़ारिश की कि वह सोफ़िया से निवेदन करें कि वह शहर के बाहर स्थित एक धर्म विहार में चली जाएं. सोफ़िया ने प्रतिरोध किया. लेकिन दबाव बढ़ता गया और उसे पूरी धूमधाम से कानवेंट में पहुंचा दिया गया. कानवेंट की चारदीवारी के पीछे एक आरामदेह निवास कक्ष में ही उस ने अपने जीवन के शेष १५ वर्ष बिताए.

आख़िरकार १६ अक्तूबर को पीटर राजधानी में दोबारा दाख़िल हुआ. रास्ते के दोनों ओर स्त्रेल्त्सी रेजिमेंटें खड़ी थीं—क्षमा मांगने की मुद्रा में झुकी हुईं. क्रेमलिन में दाख़िल होने के बाद वह अपने भाई ईवान को आलिंगन में लेने के लिए उस्पेंस्की गिरजाघर पहुंचा. फिर शाही परिधान में वह लाल सीढ़ियों के शिखर पर उपस्थित हुआ. वहां खड़ा होने वाला वह ऊंचे क़द, गोल चेहरे और काली आंखों वाला युवक पहली बार पूरे रूसी राज्य का स्वामी था.

मस्त मंडली

हैरानी की बात यह थी कि विजयी युवा अधिनायक ने शासन करना अब भी शुरू नहीं किया. पांच और वर्षों तक ज़ार ने रूस के शासन की ओर कोइं ध्यान नहीं दिया और प्रफुल्ल मन से उसी किशोर जीवन की ओर लौट गया जिसे उस ने त्रायत्स्की की ओर भागने से पहले अपने लिए निर्मित कर रखा था—सैनिकों और नौकाओं का, मस्ती और लापरवाही का जीवन.

सरकारी प्रशासन उस छोटे से गुट द्वारा चलाया जा रहा था, जिस ने रीजेंट से मुक़ाबले में पीटर का समर्थन किया था. नताल्या, जो अब ४० की थी, नाममात्र की नेत्री थी. वह सोफ़िया जितनी स्वतंत्र नहीं थी. लोग बड़ी आसानी से उस से अपनी बात मनवा लेते थे. धर्माधिकारी योआकिम रूढ़िवादी पुजारी था. विदेशियों के प्रति उस की शत्रुता अटूट थी—वह हमेशा नताल्या के बग़ल में खड़ा रहता, इस बात के प्रति दृढ़ प्रतिज्ञ कि सोफ़िया और गोलित्सिन के ज़माने में रूस में घुस आए पाश्चात्य के कीटाणुओं का उसे विनाश कर देना है.

दरअसल, किसी भी धर्माधिकारी की इच्छा अथवा आदेश के बावजूद क्रेमलिन से केवल तीन मील दूर पश्चिम पूरी तरह जड़ें जमा चुका था. मास्को के बाहर प्रिओब्राज़ेंस्को के मार्ग पर अपने आप में पूर्ण पश्चिमी यूरोपीय क़स्बा अवस्थित था, जिसे जरमन बस्ती के नाम से जाना जाता था. (अधिकांश रूसी विभिन्न विदेशी भाषाओं में फ़र्क़ न कर पाने के कारण, सभी विदेशियों को जरमन ही मानते थे.) उस के हरे भरे चौड़े मार्गों पर टहलते यूरोपीय शैली की बड़ी खिड़कियों वाले, ईंटों से बने दुमंज़िले और तिमंज़िले मकानों के पास से गुज़रते अथवा फुहार बिखेरते फ़व्वारों वाले शाही चौकों से गुज़रते पर्यटकों को यक़ीन ही नहीं हो सकता था कि वे रूस के किसी केंद्रीय इलाक़े में हैं. वहां
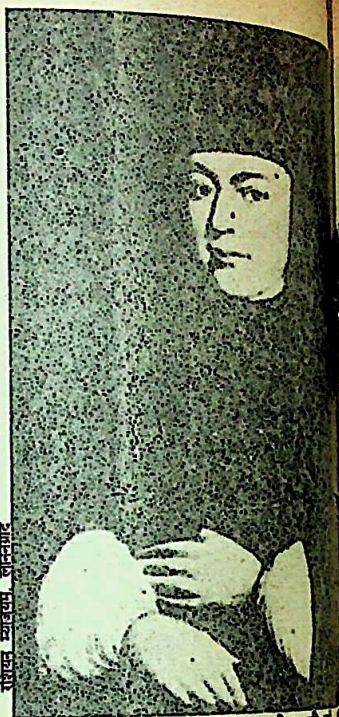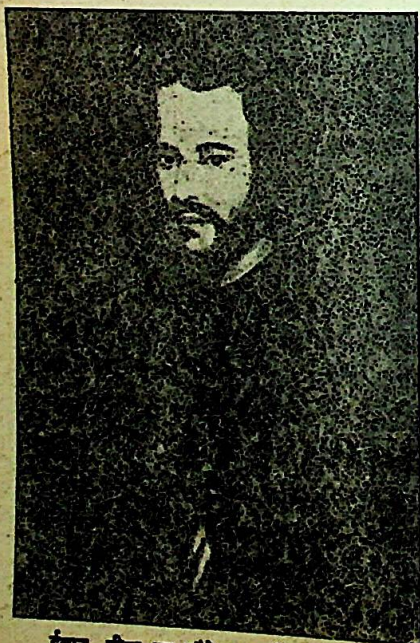
पीटर के पिता ज़ार अलेक्सिस

नेशनल म्यूज़ियम, स्टाकहोम

ज़ारित्सा नताल्या पीटर की मां

रशियन म्यूज़ियम, लेनिनग्राद

इवान, पीटर का सौतेला भाई और सह-ज़ार

रशियन म्यूज़ियम, लेनिनग्राद

रीजेंट ज़ारेव्ना सोफ़िया, पीटर की सौतेली

जनरल पैट्रिक गोर्डन

मेरी इवान्स ... लाइब्रेरी, लंदन

फ़्रांसिस लेफ़ोर्ट

के निवासी विदेशी पोशाकें पहनते थे, विदेशी पुस्तकें पढ़ते थे. उन के अपने लूथर और कालविनवादी चर्च थे. वे अपनी भाषाएं बोलते थे. ज्ञान और बुद्धिमत्तापूर्ण संवाद के प्यासे साहसी रूसी उन से मेल मिलाप करते. विदेशी आदतें रूसी जीवन पर छाने लगीं. जो रूसी घास खाने के लिए विदेशियों का मज़ाक़ उड़ाया करते थे, जल्दी ही खुद सलाद खाने लगे. तंबाकू का धूम्रपान करने और नसवार लेने की वे आदतें फैल रही थीं, जिन्हें धर्माधिकारी ने प्रतिबंधित कर रखा था. कुछ रूसियों ने तो अपने बालों और दाढ़ी को काटना छांटना भी शुरू कर दिया था.

बचपन से ही पीटर की जरमन बस्ती के प्रति जिज्ञासा रही थी. लेकिन १६९० में हुई धर्माधिकारी योआकिम की मृत्यु तक उस बस्ती से उस के संपर्क सीमित ही रहे थे. उस के बाद युवा ज़ार के दौरे इतने साधारण हो गए कि लगने लगा कि वह रहता ही वहां है. वहां उसे अच्छी शराब, अच्छी बातचीत और संगत का सिर चढ़ कर बोलने वाला मिश्रण मिलता था. जब रूसी कोई शाम साथ साथ बिताते, तो वे तब तक सिर्फ़ पीते ही रहते, जब तक सब लोग सो न जाते. विदेशी भी खूब पीते थे, लेकिन तंबाकू के धुएं के धुंधलके और बीयर मगों की खनखनाहट में दुनिया, उस के शासकों, राजनीतिज्ञों, वैज्ञानिकों और योद्धाओं के बारे में बातें भी चलती रहतीं.

ऐसे समाज में जिस में स्काटिश सैनिक, डच व्यापारी और जरमन इंजीनियर एकमेक हो जाते थे, पीटर को स्वाभाविक रूप से ऐसे भी कई लोग मिले, जिन के विचार उसे सम्मोहित करते थे. इन में से एक था कठोर बुंजुर्ग भाड़े का सैनिक स्काटिश जनरल पैट्रिक गोर्डन. ५४ वर्षीय, साहसी, स्वामिभक्त और चतुर गोर्डन

प्रिंस वासिली गोलित्सिन

पीटर को भाया, तो इस में ताज्जुब की कोई बात नहीं है, ताज्जुब की बात यह है कि १८ वर्षीय, ज़ार भी गोर्डन को भा गया. गोर्डन अन्य ज़ारों की सेवा करता रहा था. लेकिन उस के मन में उन के प्रति मित्र भाव कभी नहीं आया था. पीटर के रूप में उस बुज़ुर्ग सैनिक को एक दक्ष तथा प्रशंसक शिष्य मिला, और उस ने एक प्रकार के अनौपचारिक सैनिक शिक्षक के तौर पर पीटर को युद्ध कला के सभी पहलुओं का प्रशिक्षण दे दिया. सोफ़िया के पतन के बाद के पांच वर्षों में गोर्डन पीटर का भाड़े का जनरल ही नहीं बना, उस का मित्र भी बन गया.

मिलनसार धनी स्विस सैनिक फ़्रांसिस लेफ़ोर्ट से भी पीटर की दोस्ती थी. १६९० में, जब पीटर १८ का था, लेफ़ोर्ट ३४ का था. ऊंचे क़द का, ख़ूबसूरत, बड़ी सी तीखी नाक तथा भावपूर्ण और समझ भरी आंखों वाला.

लेफ़ोर्ट में गहराई नहीं थी, लेकिन उस का दिमाग़ बड़ी फुरती से चलता था और वार्तालाप उसे प्रिय था. उस की ज़बान में पश्चिम, वहां की ज़िंदगी, तौर तरीक़े और तकनीक भरी पड़ी थी.

पीटर के लिए लेफ़ोर्ट के घर में क़दम रखना किसी दूसरे ग्रह पर उतर जाने के समान था. वाग्वैदग्ध्य, आकर्षण, आतिथ्य, मनोरंजन, विश्रांति और आम तौर पर महिलाओं की उत्तेजक उपस्थिति वहां रहती. कभी कभी उन में विदेशी व्यापारियों और सैनिकों की आदरणीया पत्नियां और ख़ूबसूरत बेटियां भी होतीं, जो नवीन्नम पश्चिमी गाउन पहने रहतीं, अधिकांश मौक़ों पर वहां ख़ुशमिज़ाज छोकरियां रहतीं, जिन का काम था कि कोई व्यक्ति उदास न रहे—गुदाज़, हट्टी कट्टी औरतें, जो बैरकों की भाषा या खुरदरे पुरुष हाथों के स्पर्श से नाराज नहीं होती थीं.

पीटर, जो केवल हरम द्वारा उ... मादा प्राणियों से ही परिचित था, ... दुनिया में दाख़िल हो गया. कुछ ... बाद उस की नज़र पटसन जैसे ... वाली एक जरमन लड़की अन्ना मेन्स ... अन्ना वेस्टफालिया के एक शराब ... बेटी थी. उस की नेकनामी दाग़दार ... उस पर पहले ही फ़तह हासिल कर ... लेकिन लेफ़ोर्ट ने अपनी जीत को ... समर्पित कर दिया. सरल सहज ... वैसी ही थी जैसी पीटर चाहता था: ... हर गिलास और लतीफ़े में वह ... मुक़ाबला कर सकती थी. अन्ना मेन्स ... उप पत्नी बन गई.

पीटर के अधिकांश साथी ... रूसी ही थे. कुछेक उस के बचपन ... थे, जो प्रिओब्राज़ेंस्को के उस के ... के दौरान हमेशा उस के साथ रहे ... लोग ऐसे थे, जो उम्र में बड़े थे, ... वाले, प्राचीन नाम वाले, जो ... उच्छृंखल व्यवहार और उस के ... के बावजूद उस की ओर आकर्षित ... वह अभिषिक्त ज़ार था. शैली ... रलियां मनाने वाले युवाओं तथा ... सियों का रंग बिरंगा समूह था ... वक़्त ने उन्हें एक सुगठित समूह ... कर दिया; वे अपने आप को मस ... नाम से पुकारते थे और हर जगह ... साथ जाते थे. उन का जीवन ... जीवन था. वे ग्राम्य प्रांतरों में घूमते ... पूर्व सूचना दिए, किसी भी ... व्यक्ति के यहां खाने पीने, सोने ... पहुंचते.

जहां कहीं भी पीटर जाता ...

उस के साथी होते, जिन की तादाद ८० २०० के बीच कुछ भी हो सकती थी. पीटर की मस्त मंडली की सदस्यता के एक ज़रूरी योग्यता थी पीने की क्षमता. इस नशाख़ोरी में नया या असामान्य नहीं था. चिरकाल से ही मद्य सेवन, वीं सदी के कीव के महासामंत व्लादीमीर शब्दों में "रूसियों का आनंद" चला आ था. नशे में धुत हो जाना रूसी आतिथ्य एक विशेष गुण था. अतिथि नशे में धुत कर घर वापस नहीं भेजे जाते, तो शाम को कामयाब ख़याल किया जाता था.

विदूषक और मसखरे

धीरे धीरे अंतस्फूर्त पियक्कड़ी मुक़ाबलों दावतों से यह मस्त मंडली अधिक व्यवस्थित भंड़ैती और छद्मवेश समारोहों की अग्रसर होती गई. पीटर ने खिलवाड़ के में अपने अधिकांश साथियों को उपनाम डाले थे, जो धीरे धीरे छद्मवेश (मास्करेड़, में अतिथि छद्मवेश धारण कर के आते समारोहों की उपाधियों में परिवर्तित होते बोयार ईवान बुतुर्लिन को 'द पोलिश ' का उपनाम दिया गया, क्योंकि प्रिओब्रा-को के एक युद्धाभ्यास में वह शत्रु सेनापति था. प्रेसबर्ग के दूसरे खेल में दुर्ग के धिपति राजकुमार फ़्योदोर रोमोदानोव्स्की पदोन्नति 'प्रेसबर्ग के राजा' और फिर कुमार सीज़र' के रूप में की गई. पीटर मैजेस्टी' कह कर उसे संबोधित करता और उसे लिखे पत्रों में हस्ताक्षर करते हुए ता था: "आप का बंधुआ और शाश्वत पीटर." यह नाटक पीटर के पूरे शासन में चलता रहा.

लेकिन इहलौकिक सत्ता की पीटर द्वारा की गई यह पैरोडी उस बेतुके मज़ाक़ की तुलना में बड़ी हलकी थी, जो वह और उस के साथी चर्च के साथ करते नज़र आते थे. मस्त मंडली को 'विदूषकों और हंसोड़ों की अखिल मज़ाकिया, अखिल पियक्कड़ धर्म सभा' के रूप में संगठित किया गया था, जिस में एक बनावटी 'प्रिंस पोप', कार्डिनलों का समूह, बिशपों, पुजारियों और डीकनों का दल भी शामिल था. पीटर ने, हालांकि वह महज़ डीकन ही था, इस मंडली के नियमों और निदेशों का आकलन करने का काम अपने ऊपर ले लिया. उसी उत्साह के साथ जिस से बाद में वह रूसी साम्राज्य के क़ानून बनाने वाला था. उस ने पियक्कड़ सभा की रीतियों और अनुष्ठानों को परिभाषित किया.

पियक्कड़ सभा का मद्यप अस्तित्व ज़ार के शासन काल के अंत तक बना रहा. परिपक्व अवस्था में पहुंचने के बाद भी सम्राट उसी गंवार मसख़रेपन को जारी रखे रहा, जिस की शुरुआत उस ने निर्बंध किशोर के रूप में की थी. पीटर का यह व्यवहार विदेशी कूटनीतिज्ञों को अश्लील और लज्जाजनक नज़र आता था, और उस के अनेक प्रजा जनों को धर्म निंदा लगता था. पीटर की निगाह में ईश्वर इतना महान था कि वह पीटर की छोटी छोटी पैरोडियों और खेलों से नाराज़ नहीं हो सकता था—आख़िर इस मंडली के खेल इस के अलावा और थे भी क्या!

कप्तान पीटर

किसी गुफ़ा में बंद दैत्य की तरह, जहां प्रकाश और वायु के लिए सिर्फ़ एक बारीक़ सा छिद्र हो, मास्को साम्राज्य के महान भूखंड के पास बस एक ही बंदरगाह था: ह्वाइट सी में आर्केंजल. यह अद्वितीय बंदरगाह आर्कटिक

वृत्त से दक्षिण में केवल २०० किलोमीटर दूर स्थित है. साल के छः माह यहां बर्फ़ जमी रहती है. कोई ज़ार आर्केंजल नहीं गया था, लेकिन किसी ज़ार को जहाज़ों में कभी कोई रुचि भी तो नहीं रही थी.

११ जुलाई १६९३ को पीटर मास्को से आर्केंजल के लिए रवाना हुआ. उस के साथ १०० से ज़्यादा लोग थे, जिन में लेफ़ोर्ट और मस्त मंडली के कई अन्य सदस्य भी शामिल थे, तथा आठ गायक, दो बौने और सुरक्षा के लिए ४० स्त्रेल्त्सी थे. नक़शे में राजधानी से यह फ़ासला ९६५ किलोमीटर था, लेकिन चूंकि इनसानों को सड़क और नदी मार्ग से यात्रा करनी होती थी, इस लिए यह यात्रा लगभग १६०० किलोमीटर लंबी थी.

वसंत में बर्फ़ पिघलना शुरू होने पर आर्केंजल में जीवंतता आ गई. गरमियों के हलचल भरे महीनों में बंदरगाह में कई बार सौ तक विदेशी जहाज़ देखे जा सकते थे, जो अपने पश्चिमी माल उतार रहे होते और रूसी माल लदवा रहे होते. पीटर जैसे युवा के लिए, जिसे पश्चिम मुग्ध करता था और समुद्र अपनी ओर खींचता था, यहां की हर चीज़ आह्लादकारी थी. मोइसीव द्वीप के अपने निवास स्थल से वह नदी में आते जाते जहाज़ों को देख सकता था. बड़ी उत्सुकता से वह बंदरगाह के प्रत्येक जहाज़ पर सवार होता और निरीक्षण करता; घंटों वह कप्तानों से सवाल जवाब करता रहता; पाल बंधाई के अध्ययन के लिए मस्तूल पर चढ़ जाता; पेटे के निर्माण का बारीकी से अध्ययन करता.

यह देख कर पीटर को बड़ी हताशा होती कि उस की अपनी छोटी नौका सेंट पीटर के अलावा उस बंदरगाह में रूसी नाविकों द्वारा चालित कोई रूसी जहाज़ नहीं था. उस ने अपने हाथों से नन्ही सेंट पीटर से... जहाज़ का नौतल बनाया और आदे... सर्दियों के दौरान उस का निर्माण पू... जाए.

मास्को लौटने पर पीटर को... आघात लगा. ४ फ़रवरी १६९४ ... पांच दिनों की अस्वस्थता के ब... उम्र में उस की मां का देहांत हो... दिनों तक कुछ भी बोलने की क्ष... आंसू उस की आंखों में उमड़ ... प्रिओब्राज़ेंस्को पहुंचा, तो उस ने ... 'अत्यंत उदास और निराश' ... नताल्या की शवयात्रा शानदार ... के साथ की गई, लेकिन पीटर ने ... लेने से इनकार कर दिया. उसे ... बाद ही वह उस की क़ब्र पर ... प्रार्थना करने के लिए.

१६९४ के वसंत में पीटर ... उस की नन्हीं नौका सेंट पीटर ... थी. पाल बंधे थे. वह समुद्र में ... तैयार थी. और वह नया जहाज़ ... शुरुआत उस ने पिछली गरमियों ... पूरा बन चुका था और पानी में ... लिए उस का इंतज़ार कर रहा ... हथौड़ा उठाया, खूंटों को तोड़ ... निगाहों से जहाज़ के पेटे को ... देखने लगा. नए जहाज़ का ना... रखा गया था. उस में मस्तूल ... लगाए जा रहे थे. अतः पीटर ने ... स्थित एक टापू पर बने सोलोवे... जा कर वक़्त बिताने का फ़ैसला ... जून की रात वह सेंट पीटर पर ... अपने साथ वह आर्क बिशप ... साथियों और सैनिकों के एक छोटे से ... लेता गया.

अगले दिन आकाश गहरा गया और हवा गति तेज़ होने लगी. आर्केंजल से १३० किलोमीटर दूर उस नन्ही सी नौका को तेज़ तूफ़ान ने घेर लिया. गरजती हवाओं ने बादलों को चीर डाला और पहाड़ सा हरा जल मस्तूल के ऊपर तक उछलने लगा. अनुभवी नाविकों का दल दुबक कर प्रार्थना करने लगा. वे यह सोचते हुए कि उन का अंत आ गया क्रूस बनाते हुए डूबने की तैयारी करने लगे. तरह भीगा आर्कबिशप अस्थिर डेक पर संघर्ष करते अंतिम परम प्रसाद देते हुए उन के पास से गुज़रा.

पतवार पर डटे पीटर ने भी परम प्रसाद लिया, लेकिन उस ने उम्मीद नहीं छोड़ी. हर बार, जब भी नौका किसी बड़ी लहर पर ऊपर उठती और फिर उस के बाद के गहरे खड्ड में गिरती, वह अग्र भाग को हवा में रखने की कशमकश में लगा रहता. उस का दृढ़ निश्चय प्रभावशाली रहा. पायलट रेंग कर उस के पीछे आया और उस ने पीटर के कान में चिल्ला कर कहा कि उन्हें दांस्कोय खाड़ी के बंदरगाह की ओर बढ़ने का प्रयास करना चाहिए. पायलट की मदद से वे नौका को एक संकरे गलियारे के बीच से उन चट्टानों के पार ले गए जिन पर विशाल समंदर उबल और फुफकार रहा था, और बंदरगाह में जा पहुंचे. १२ जून की दोपहर को २४ घंटों के संत्रास के बाद उस नन्ही सी नौका ने छोटे से पर्तोमिंस्क मठ के घाट के शांत जल में अपना लंगर डाल दिया.

जहाज़ के सारे लोग मठ के चैपल में अपनी निजात के लिए धन्यवाद व्यक्त करने ईश्वर की ओर चल दिए. व्यक्तिगत धन्यवाद के लिए पीटर ने अपने हाथों तीन मीटर ऊंचा एक क्रूस बनाया और अपने कंधे पर डाल कर उसे उस स्थल पर ले गया, जहां वह उतरा था. क्रूस पर डच भाषा में उस की यह इबारत अंकित थी: "यह क्रूस १६९४ की गरमियों में कप्तान पीटर द्वारा बनाया गया."

पहली जंग

पीटर अब २२ का था. जो कोई उसे पहली बार देखता वह उस की लंबाई से चकित रह जाता. २०० सेंटीमीटर (६ फुट ७ इंच) के क़द वाला सम्राट अपने आसपास के प्रत्येक व्यक्ति से ऊंचा नज़र आता था. पीटर का चेहरा अब भी युवक का सा था, और क़रीब क़रीब ख़ूबसूरत भी, और उस के भरे भरे हाथ सशक्त खुरदरे और शिप यार्ड में काम करते रहने के कारण स्थाई रूप से गांठदार हो गए थे. उस की मूंछें छोटी छोटी थीं और वह विग नहीं लगाता था, इस के बदले वह सीधे सुनहरे भूरे बालों को कानों और कंधों के अधबीच झूलने देता था.

उस का सब से अधिक असाधारण गुण उस की मानवातीत ऊर्जा थी. वह शांत नहीं बैठ सकता था, न ही किसी एक जगह लंबे समय तक टिका रह सकता था. उस की चाल इतनी तेज़ होती थी कि उस के साथ चलने वालों को फुदक फुदक कर चलना पड़ता था. जब लिखने पढ़ने के काम की मजबूरी आ पड़ती, तो वह एक ऊंचे डेस्क के चारों ओर चहल क़दमी करता रहता. भोज के दौरान वह कुछ मिनटों के लिए खाता, फिर यह देखने के लिए कि दूसरे कमरों में क्या हो रहा है या सिर्फ़ बाहर टहलने के लिए ही उठ कर चल देता.

१६९५ की सरदियों में इस घोषणा ने मास्को को चकित कर दिया कि आगामी

गरमियों में रूस तातारों और उन के संरक्षक तुर्क साम्राज्य के विरुद्ध एक नई मुहिम छेड़ेगा. कहा गया है कि इस तरह की क्रियाशीलता में अचानक कूदने के पीछे पीटर की बेचैनी ही थी. और यह भी कि इस से उस की ऊर्जा और जिज्ञासा को ही मुख्यतः निष्कासन द्वार प्राप्त हुआ. लेकिन सच यह भी है कि रूस का एकाकी बंदरगाह साल में पूरे छः महीनों तक जमा रहता था. निकटतम सागर बाल्टिक पर अब भी स्वीडन का मज़बूत क़ब्ज़ा था. स्वीडन उन दिनों उत्तरी यूरोप की प्रमुख सैन्य शक्ति था. खारे पानी का एक ही रास्ता शेष था : दक्षिण की ओर कृष्ण सागर.

गोलित्सिन के दो असफल अभियानों ने घास के मैदानों के पार क्रीमिया अंतरीप की ओर से हमले के प्रति रूसियों के मन में शंकाएं पैदा कर दी थीं. उस के बदले द्विमुखी रूसी हमला अंतरीप में स्थित गढ़ के दो ओर से हो सकता था. दो लक्ष्य होते नीपर और डोन नदियों के मुहाने, जहां तुर्की क़िले कृष्ण सागर के रास्ते को अवरुद्ध किए हुए थे. शुष्क मैदानों के पार मार्च करने में हज़ारों गाड़ियों से रसद का वहन करना पड़ता था. अतः इस बार रूसी सेनाएं बजरों से दक्षिण की ओर यात्र करने वाली थीं.

पूर्वी सेना, जिस की तीन डिवीज़नों में ३१,००० सैनिक थे और जिन की बागडोर लेफ़ोर्ट, जनरल ए एम गोलोविन और गोर्डन के हाथ में थी, डोन नदी द्वारा नीचे की ओर बढ़ कर आज़ोव के सशक्त गढ़ पर हमला करने वाली थी. हमले की पश्चिमी भुजा जो नीपर नदी के साथ साथ नीचे की ओर बढ़ कर नदी के मुहाने की रखवाली करने वाले तुर्की दुर्गों पर आक्रमण करने वाली थी, गोलित्सिन की सेना की विशालता की याद दिलाती थी : १,२०,००० सैनिक, जिन में से
किसान थे और अभियान के लिए
मौसम के वास्ते अनिवार्यतः भर्ती
था.

गोर्डन की डिवीज़न ने मार्च
छोड़ा. दक्षिण की ओर वह घास के
पार बढ़ती गई. मुख्य सेना पीटर, ले
गोलोविन के साथ मई में रवाना हु
नदी में बजरों पर सवार. वे नी
वोल्गा नदी तक जा पहुंचे; फिर
कर अपनी तोपों तथा रसद को
में डाल दिया.

कृष्ण सागर पर तुर्कियों के सं
की मुख्य कड़ी था आज़ोव का दु
नदी की सुदूरतम दक्षिणी प्रशाखा
सागर से क़रीब २५ किलोमीटर
था. दो तुर्की दुर्ग आज़ोव से डेढ़
ऊपर नदी के दोनों ओर स्थि
नौकाओं को नगर के पार समंदर
से रोकने के लिए उन क़िलों के
आर पार लोहे की ज़ंजीरें तनी

पीटर की उपस्थिति में रूसी
बारी शुरू की और १४ सप्ताह
चलती रही. गोर्डन, जो वहां उपस्थि
अनुभवी सैनिक था, नगर की
चाहता था, लेकिन लोगों की
रूसी आज़ोव के थलीय छोर की
नहीं कर पाए और जहाज़ों के
पर भी नियंत्रण नहीं रख सकते
नौकाएं नदी में आईं और तुर्की
रसद और नए सैनिक दे गईं.
बना देखता ही रह गया.

घेराबंदी के लंबे हफ़्तों के
जो अपने आप को पीटर
था, नगर पर बम और गोले
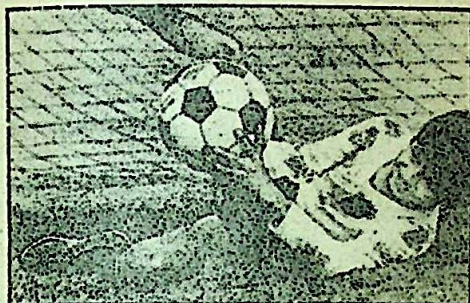
करने में मदद पहुंचाता रहा. ज़ार के रूप में वह वरिष्ठ युद्ध समिति की अध्यक्षता करता और सभी योजनाओं और अभियानों की चर्चा में भाग लेता और उन का पुनरीक्षण करता. विभाजित कमान की समस्या रूसियों के लिए बाधा थी. लेफ़ोर्ट और गोलोविन के साथ पीटर ने बड़ी अधीरता से नगर पर भारी हमला करने का फ़ैसला कर लिया. गोर्डन ने दलील रखी कि इस तरह की मज़बूती वाले दुर्ग पर क़ब्ज़ा करने के लिए उन्हें दीवारों के और निकट खाइयां खोदनी होंगी. उस की चेतावनियों को मक्खी की तरह उड़ा दिया गया और १५ अगस्त के दिन हल्ला बोल दिया गया. जैसी कि गोर्डन ने भविष्यवाणी की थी, हमला नाकामयाब रहा. एक अंतिम आक्रमण भी ख़ास सफल नहीं हुआ, और १२ अक्तूबर को, जब कि सैनिकों का मनोबल बहुत घट चुका था और मौसम लगातार ठंडा होता जा रहा था, पीटर ने घेराबंदी उठा ली.

उत्तर की ओर वापसी बड़ी त्रासद रही. पूरी गरमियों के अभियान से भी अधिक जान माल का नुक़सान उस में हुआ. सात हफ़्तों तक भारी बारिश के बीच रूसी सैनिक घास मैदानों के पार लड़खड़ाते, गिरते पड़ते चलते रहे, जब कि तातार घुड़सवार उन का पीछा कर के उन्हें बुरी तरह परेशान करते रहे. बारिश के कारण नदियों में बाढ़ आ गई थी. घास गरमियों में जल चुकी थी. जानवरों के लिए खाने को कुछ था ही नहीं. और मनुष्यों को आग जलाने के लिए सूखी लकड़ियां ढूंढ़ने में मुश्किल होती. सेना के साथ चल रहे एक आस्ट्रियाई कूटनीतिज्ञ ने विएना को एक दुख भरी कहानी भेजी : "८०० किलोमीटर के घास के मैदानों में आदमी और घोड़े मरे पड़े थे—भेड़ियों द्वारा आधे खाए हुए . . .यह दृश्य देख कर आंसू रोक पाना असंभव था."

२ दिसंबर को सेना मास्को पहुंची. [illegible] और गोलित्सिन की नक़ल पर ही [illegible] राजधानी में किसी विजेता की तरह [illegible] किया. पूरे नगर का उस ने चक्कर [illegible] उस के आगे आगे एक अकेला तुर्की [illegible] चल रहा था.

फिर भी हार ने उसे हतोत्साहित नहीं [illegible] था. कोई बहाना पेश किए बग़ैर, [illegible] २३ वर्षीय ज़ार एक दूसरे प्रयास की तैयारी [illegible] संलग्न हो गया.

भागीरथ प्रयास

पीटर ने फ़ैसला किया कि नदी पर [illegible] करने के लिए उसे और जहाज़ चाहिए. [illegible] आदेश दिया कि मई तक —पांच महीने [illegible] छोटी सी अवधि में—सैनिकों और [illegible] वहन के लिए २५ सशस्त्र पोत और [illegible] बजरे तैयार हो जाने चाहिए. समय [illegible] रूप से कम था और वे महीने साल के [illegible] से ख़राब महीने थे. नदियां और रास्ते [illegible] जमे पड़े थे. दिन छोटे थे. खुली हवा में [illegible] करने वाले लोग सर्दी से सुन्न अंगुलि[illegible] हथौड़ा और आरा चलाते. ऊपर से न [illegible] समंदरी बंदरगाह था, न पोत निर्माण [illegible]

लेकिन पीटर काम में जुट गया. [illegible] स्थल के तौर पर उस ने ऊपरी [illegible] स्थित वोरोनेज़ के क़स्बे को चुना, जो [illegible] से क़रीब ५०० किलोमीटर नीचे की ओर [illegible] समुद्र से क़रीब ८०० किलोमीटर [illegible] ओर था. नदी के निचले पूर्वी किनारे पर [illegible] ने नए शिपयार्ड बनवाए, पुरानों का [illegible] किया तथा प्रशिक्षणहीन मज़दूरों की [illegible] सेना को ज़बरी भरती करने का [illegible] किया. २८,८२८ व्यक्ति बेलगोरोद प्रांत [illegible]

लिए गए, जहां वोरोनेज़ अवस्थित था. निपुण बढ़ई और जहाज़ निर्माता उस ने आर्केंजल से बुलवाए और विदेशी तथा रूसी कारीगर भी बुलवा लिए. वेनिस के शासक से उस ने नौका विशेषज्ञ भिजवाने का अनुरोध किया.

इस भागीरथ प्रयास के मध्य में ८ फ़रवरी १६९६ के दिन ज़ार ईवान का आकस्मिक निधन हो गया और पीटर को मास्को बुलवाया गया. कमज़ोर, नासमझ और भद्र ईवान ने अपने २९ वर्षों का अधिकांश भाग एक जीवित प्रतिमा की तरह व्यतीत किया था, जिसे समारोहों में पेश किया जाता था—अथवा संकट की घड़ियों में क्रुद्ध भीड़ को शांत करने के लिए आगे घसीट लाया जाता था. उस की मृत्यु का कोई सक्रिय राजनीतिक महत्व नहीं था, लेकिन इस ने पीटर की प्रभुता पर अंतिम और आधिकारिक मुहर लगा दी. अब वह पूर्ण ज़ार था, रूसी राज्य का अकेला सर्वोच्च शासक.

पीटर जब वोरोनेज़ लौटा, तब तक इमारती लकड़ी के अंबार काट कर निर्माण स्थलों तक लाए जा चुके थे तथा दर्जनों बजरे आकार भी ले चुके थे. पीटर ख़ुद भी काम में जुट गया. वह शिपयार्ड के पास ही लकड़ी के एक छोटे मकान में सोता और सूर्योदय से पहले ही जाग जाता. अपने बढ़इयों के निकट ही जलती आग को सेंकते हुए, कुल्हाड़ी, हथौड़े और मुद्‌गर की चोटों की आवाज़ों से घिरा पीटर एक पोत पर काम करता रहता, जिसे वह डच शैली के अनुरूप बना रहा था. अपने काम में वह निपुण था. ''बाबा आदम को मिले दैवी आदेश के अनुसार हम पसीने की ही कमाई खा रहे हैं,'' उस ने लिखा.

मार्च तक मौसम में सुधार हो गया और मध्य अप्रैल में तीन पोतों को पानी में उतार दिया गया. सैकड़ों नए बजरे नदी में बंधे खड़े थे, लड़ाई के लिए तैयार. कुल मिला कर साज सामान पिछले साल से कम था; इस दूसरी मुहिम में नीपर नदी पर मार्च नहीं होने वाला था. लेकिन आज़ोव पर हमला करने वाली वास्तविक सैन्य शक्ति पिछली गरमियों से दोगुनी थी—४६,००० रूसी सैनिकों के साथ १५,००० यूक्रेनी कज़ाक, ५,००० डोन कज़ाक और ३,००० कालमक भी चलने वाले थे. एक अकेले अधिकारी बोयार अलेक्सिस शीन को अभियान का प्रधान सेनाध्यक्ष नियुक्त किया गया था.

१ मई को शीन पोत पर सवार हुआ और महीने के अंत तक पूरी सेना आज़ोव पहुंच गई. जंग फ़ौरन शुरू हो गई. २८ मई को, डोन कज़ाकों के नेता ने संदेश भेजा कि दो विशाल तुर्की जहाज़ नदी के मुहाने में लंगर डाले खड़े हैं. पीटर ने हमला करने का निश्चय किया लेकिन उसे दो नहीं, ३० तुर्की जहाज़ नज़र आए, जिन में युद्ध पोत, बजरे और लाइटर भी शामिल थे. अपनी छोटी नौकाओं के लिए यह बल उसे बहुत भारी लगा और वह रूसी शिविर में लौट आया. अगली रात कज़ाक छापामारों ने १० छोटी तुर्की नौकाओं पर कब्ज़ा कर लिया. शेष तुर्की सेना मुख्य लंगर की ओर भाग गई, जहां तुर्की कप्तान इतना अधिक चिंतित हो उठा कि हालांकि उन की माल उतराई अभी अधूरी थी, फिर भी पूरे बेड़े ने लंगर उठाया और खुले समंदर की ओर कूच कर गया. आज़ोव नगर को मिलने वाली यह अंतिम रसद थी.

कुछ दिन बाद पीटर नदी के मुहाने की ओर लौटा और अपने २९ गेलियों के पूर्ण बेड़े को आज़ोव दुर्ग के पार सुरक्षित ले गया. शहर अब कट चुका था और तुर्की सुलतान द्वारा भेजी

गई किसी भी सहायता को नदी में आगे बढ़ने के लिए पीटर के बेड़े से जूझना ज़रूरी हो गया था.

आश्चर्यजनक विजय

सागर के सुरक्षित हो जाने और नगर के कट जाने से पीटर के जनरल और इंजीनियर घेराव की ओर अग्रसर हो सकते थे. उन की ख़ुश क़िस्मती थी कि आज़ोव के सैनिकों ने यह सोच कर कि पिछली असफलता के चलते रूसी लौट कर नहीं आएंगे, न तो रूसियों की पुरानी घेराबंदी को ढहाने की फ़िक्र की थी, न ही रूसी खाइयों को पाटने की. पीटर के सैनिकों ने बड़ी तेज़ी से उन पर दुबारा अधिकार कर लिया. पहले से दोगुनी संख्या होने के कारण, उस की सेना अब स्थल की ओर से भी नगर का घेरा डालने में पूरी तरह सफल रही.

जैसे ही उस की गोलंदाज़ फ़ौज ने स्थान ग्रहण किया, पीटर ने तुर्की पाशा से कहलवाया कि वह आत्म समर्पण कर दे. उस ने इनकार कर दिया और रूसी तोपों के मुंह खुल गए. इसी बीच गोर्डन के निर्देशन में १५,००० रूसी बेलचे लिए मशक्क़त कर रहे थे. वे मिट्टी की टोकरियां भर भर कर मिट्टी के ऊंचे, और ऊंचे, ढेर बनाते जा रहे थे, और तुर्की दीवारों के निकट, और निकट, पहुंचते जा रहे थे. अंततः मिट्टी का एक विशाल मंच तैयार हो गया, जहां से नगर की सड़कों को सीधे देखा जा सकता था और उन पर गोलाबारी की जा सकती थी.

२७ जुलाई को जनरलों के आदेशों के बग़ैर ही, २,००० कज़ाक बेलचों और टोकरियों के अंतहीन काम से ऊब कर मिट्टी के टीले से उतरे और नगर की ओर दौड़ पड़े. अगर उन्हें नियमित सैनिकों या स्त्रेल्त्सियों का संग प्राप्त होता, तो वे सफल हो सकते थे. लेकिन मौजूदा स्थिति में तुर्की जवाबी हमले ने उन्हें पीछे धकेल दिया; फिर भी दीवार के [illegible] कोने की मीनार को अपने क़ब्ज़े में लेने में किसी तरह सफल हो गए, जहां अंततः [illegible] विन द्वारा भेजे गए सैनिक उन से आ मिले. इस दुर्ग भेद का फ़ायदा उठाने के लिए [illegible] दिन शीन ने संपूर्ण हमले का आदेश दिया, लेकिन हमला शुरू होने से पहले ही तुर्कों ने झंडों को उतार और लहरा कर यह संकेत दिया कि वे आत्म समर्पण के लिए तैयार हैं.

आज़ोव से विजय के समाचार ने मास्को को आश्चर्य चकित कर दिया. अलेक्सिस के शासन काल के बाद पहली बार किसी रूसी सेना ने जीत हासिल की थी. मास्को ने [illegible] का, सेनापति का और सेना का स्वागत करने की तैयारियां शुरू कर दीं.

राजधानी में प्रवेश के अवसर पर [illegible] अक्तूबर को ज़ार अपने सैनिकों से आ मिले. मास्को वासी यह देख कर हैरान रह गए [illegible] इस मार्च का आयोजन परंपरागत धार्मिक [illegible] से नहीं किया गया था जिस में चर्च के विशिष्ट लोग प्रतिमाएं लिए चलते थे, [illegible] ग्रीक और रोमन पौराणिकी से प्रेरित [illegible] ईसाई शोभा यात्रा के रूप में किया गया [illegible] मास्को नदी के निकट बनाया गया विजय [illegible] क्लासिकीय रोमन था, जिसे हरकुलीस और मार्स के विशाल बुत संभाले हुए थे और [illegible] के नीचे ज़ंजीरों में जकड़ी तुर्की पाशा की प्रतिमा थी.

जुलूस कई किलोमीटर लंबा था. [illegible] आगे १८ घुड़सवार थे जिन के पीछे [illegible] घोड़ों वाली बग्घी में कवच, तलवार और ढाल से सज्जित मस्त मंडली के प्रिंस [illegible] सवारी चल रही थी. फिर १४ और घुड़[illegible] के पीछे पीछे लेफ़ोर्ट की स्वर्ण मंडित [illegible]

अगले महीने

जयपुरिया पांव

सवाई मानसिंह अस्पताल के शोध एवं पुनर्वास केंद्र के ५५ वर्षीय निदेशक और पद्मश्री तथा मेगासेसे पुरस्कार प्राप्त डा. प्रमोद करन सेठी ने भारतीय स्थितियों के अनुरूप ऐसी हलकी और आरामदेह कृत्रिम टांग बनाई है जिसे लगा कर पैदल चला जा सकता है, आलथी पालथी मार कर बैठा भी जा सकता है

डारविन की भूल

विकास का सिद्धांत तो सही है, लेकिन डारविन द्वारा प्रतिपादित सहज प्रक्रिया कसौटी पर खरी नहीं उतरी है. अब विज्ञान के हर क्षेत्र में खोज हो रही है नए सूत्र की

लपटों में जनमे बच्चे

उन्हें भूखों मारा गया, पाशविकता का शिकार बनाया गया, माता पिता और प्यार से वंचित रखा गया, फिर भी उन के दिलों में नफ़रत घर नहीं कर पाई. उलटे पीड़ा ने उन्हें उदार बना दिया है और उन में जगा दिया है विश्व शांति का संकल्प

विवाहेतर प्रेम संबंध

जब किसी प्रेम प्रसंग का मामला उठता है तो लोग सामान्य विवेक को ही स्वीकार करना चाहते हैं. दुर्भाग्य से यह सामान्य विवेक अधकचरा होता है. विवाहेतर प्रेम संबंधों के बारे में छः प्रचलित धारणाएं

विशेष रचना

पोप की हत्या का षड्यंत्र

रोमन काथलिक चर्च के पहले पोलिश पोप की हत्या के प्रयास ने विश्व भर के शांति प्रेमियों को दहला दिया. **सर्वोत्तम रीडर्स डाइजेस्ट** के लिए इस अंतरराष्ट्रीय षड्यंत्र की विशद रपट को शृंखलाबद्ध किया है क्लेयर स्टर्लिंग ने. इस खोज से जो महत्वपूर्ण पक्ष सामने आता है, वह है इस षड्यंत्र में बलगेरिया की रहस्यपूर्ण भूमिका

यह सब तथा और बहुत कुछ सर्वोत्तम के दिसंबर अंक में

चल रही थी. लेफ़ोर्ट किरमिजी रंग का सुनहरी गोट वाला कोट पहने थे. उस के बाद जनरल गोलोविन था; फिर रजत कवच धारी ३० अश्वारोही सैनिक. बिगुल बजाने वालों की दो कंपनियां ज़ार के शाही ध्वज के आगे चल रही थीं. ध्वज को भालों से लैस गारद घेरे थी. ध्वज के पीछे एक और स्वर्ण मंडित गाड़ी में प्रधान सेनाध्यक्ष अलेक्सिस शीन चल रहा था, जिस के पीछे पीछे १६ तुर्की ध्वज थे. इन ध्वजों को उलटा कर के लाया जा रहा था और झंडे मिट्टी में घिसटते आ रहे थे.

इस वैभवशाली जुलूस में ज़ार कहां था? अपनी सेना के आगे किसी सफ़ेद घोड़े अथवा सुनहरी गाड़ी में नहीं. पीटर अन्य पोत कप्तानों के साथ लेफ़ोर्ट की गाड़ी के पीछे पीछे पैदल चल रहा था. अपने लंबे, ऊंचे क़द और जरमन कप्तान की वरदी से ही पहचान में आ जाने वाला पीटर एक चौड़ा काला हैट लगाए था, जिस में विशिष्ट ओहदे के एकाकी प्रतीक के तौर पर उस ने एक सफ़ेद पंख लगा रखा था. इस तरह विजयी ज़ार ने राजधानी की पैदल यात्रा की.

युवा ज़ार की विजय की ख़बर बड़ी तेज़ी से पूरे यूरोप में गूंज गई. लोगों को हैरानी हुई. उन्हें ने ज़ार की सराहना भी की. लेकिन आज़ोव तो सिर्फ़ शुरुआत थी. जिन लोगों ने यह उम्मीद की थी कि तीन दशकों के बाद रूस को मिली पहली विजय के बाद पीटर शांत हो कर बैठ जाएगा, उन्हें जल्दी ही अपने सम्राट के दिमाग़ में उफनती नई योजनाओं और विचारों का पता चल गया. पीटर असली जहाज़ चाहता था. अभी तक आज़ोव के निकट के सागर का रास्ता ही. उस के लिए खुला था. आज़ोव के समुद्र और कृष्ण सागर की धारा के ऊपर सागर में प्रवेश के मार्ग
अब भी तुर्की खड़ा था. इस धारा पर क़
करने के लिए पीटर को समुद्र में चल स
लायक़ जहाज़ों की ज़रूरत थी.

वेनिस के शासक से निवेदन कर
बुलवाए गए १३ पोत विशेषज्ञ काम पर ल
दिए गए; ५० अन्य पश्चिमी पोत नि
मास्को पहुंचे और उन्हें वारोनेज़ भेज दि
गया. लेकिन ये विदेशी केवल शुरुआत
पीटर की कल्पना का बेड़ा बनाने के
अनेक अन्य पोत निर्माताओं की ज़रूरत
और एक बार पोतों के पानी में उतर जाने
बाद उन की कमान संभालने के लिए
नौसेना अधिकारियों की भी ज़रूरत थी. इ
कुछेक तो रूसी होने ही चाहिए. पोत नि
अभियान की घोषणा के कुछ ही सप्ताह
नवंबर १६९६ में पीटर ने ऐलान किया कि
५० से अधिक रूसियों को, जिन में
अधिकांश धनाढ्य परिवारों के युवा बेटे
जहाज़रानी, नौ संचालन तथा पोत निर्मा
अध्ययन के लिए पश्चिमी यूरोप भेज र
और ये ५० युवक महज़ पहली लहर

इस के बाद २५० लोगों से भी अधिक
एक 'महा दूतावास' १८ महीनों से भी अ
समय के लिए रूस से अनुपस्थित रहने
था. घोषणा के कुछ ही समय बाद दो
श्वसनीय अफ़वाहें मास्को में फैल गईं.
दूतावास के साथ ख़ुद ज़ार का भी
जाने का विचार है, और यह कि वह
बेनाम सदस्य के रूप में जाने वाला है
का कोई भी ज़ार शांति पूर्वक विदेश
पहले कभी नहीं गया था.

पश्चिमी यूरोप का भ्रमण पीटर की
का अंतिम चरण था; बचपन से ले कर
विदेशियों से जो कुछ सीखा था, उ

उत्कर्ष. यात्रा का असर ज़बरदस्त हुआ, क्योंकि पीटर इस इरादे को मन में धर कर रूस लौटा कि वह अपने देश को पश्चिमी प्रणाली के अनुरूप ढालेगा. सदियों से बाक़ी दुनिया से कटा मस्कवी राज्य अपने द्वार यूरोप के लिए खोल देगा. एक तरह से प्रभाव वृत्तात्मक रहा: पश्चिम ने पीटर को प्रभावित किया; ज़ार का प्रभाव रूस पर पड़ा और आधुनिकीकृत और उभरते रूस का नया प्रभाव यूरोप पर पड़ा. पीटर, रूस तथा यूरोप—तीनों के लिए महा दूतावास एक नया मोड़ साबित हुआ.

पीटर नौ सेना चाहता था, गठबंधन चाहता था, परिवर्तन चाहता था. लेकिन अब तक वह इन चीज़ों को सादे साधारण रूप में देखता था. प्रस्थान से पहले उस ने अपने लिए एक मुहर बनवाई.

उस पर लिखा था: 'मैं शिष्य हूं, और सीखना चाहता हूं.''

कार्टून धुन

पत्नी से पति: यह रहा सब से अच्छा आर्थिक सूचकांक: मेरा खाली बटुआ.
—'द वाल स्ट्रीट जरनल'

एक व्यक्ति टेलिफ़ोन पर: हेलो, नेशनल ज्योग्राफ़िक सोसाइटी? मुझे यक़ीन है कि हिम मानव हमारी ऊपर की मंज़िल पर ही रहता है. —'न्यूज़पेपर एंटरप्राईज़ एसोसिएशन

महिला अपने नवीनतम प्रेमी से: मैं पहले भी तीन प्रेम के चक्कर में पड़ चुकी हूं. अब तो कोई ऐसी व्यवस्था चाहती हूं कि ज़्यादा झंझट न हो, जैसे कि शादी. —'सैवी'

रेस्तोरां में बैठी एक महिला अपनी मित्र से: खाने के बाद मुंह मीठा करने का गुनाह करना ही है तो फिर शरबत से बढ़ कर कुछ और ही होना चाहिए. —'फ़ील्ड न्यूज़पेपर सिंडीकेट'

प्रार्थना के बाद पादरी से भक्त: थोड़े बदलाव के लिए ही सही, पर किसी रविवार को ज़रा यह भी बताईए कि दुनिया में हम कभी कोई अच्छा कर्म करते हैं तो वह क्या है.
—'द रोटेरियन'

कला सामग्री की दुकान से ब्रुश और कैनवस ख़रीदने के बाद वह व्यक्ति सेल्समैन से बोला: मुझे दो पहाड़ों, पांच पेड़ों और एक छोटी झील के लायक़ रंग भी चाहिए.
—यूनिवर्सल प्रेस सिंडीकेट

हाथों में कुछ शीशियां थामे एक रिटायर्ड व्यक्ति अपने पड़ोसी से: यह गोली तो मैं ताक़त के लिए लेता हूं और यह भूख के लिए. यह गोली मैं धैर्य के लिए खाता हूं और जब इन सब की क़ीमत का हिसाब लगाता हूं तो यह गोली गटक लेता हूं. —ट्रिब्यून कंपनी सिंडीकेट

डाक्टर से मरीज: पहले परीक्षण के बाद आप ने मेरी सिगरेट बंद करा दी कि मैं बहुत ज़्यादा धूम्रपान करता हूं. अगली बार आप ने मेरी शराब छुड़वा दी, क्योंकि मैं बहुत पीता हूं. अब, इस बार मैं ताज़ादम हनीमून से लौटा हूं, और आप के उपचार की सोच सोच कर मेरी जान निकली जा रही है.
—'मेडिकल इकानौमिक्स'

आइए
मधु मुसकान लाइए

सर्वोत्तम में विभिन्न स्तंभों के लिए रचनाएं भेजिए. प्रकाशित रचनाओं पर पारिश्रमिक निम्न दरों से दिया जाता है :

जीवन की यह रीत : रु. १५०
रचनाएं आप के निजी अनुभव पर आधारित और पूर्णतः अप्रकाशित होनी चाहिए. उन से वयस्क मानव स्वभाव या दैनिक भारतीय जीवन का कोई आकर्षक पक्ष उजागर होना चाहिए. अधिकतम शब्द : ३००

जय जवान ! जय मुसकान ! : रु. १५०
सैनिक जीवन के सच्चे अनुभवों पर आधारित अप्रकाशित रचनाएं. अधिकतम शब्द : ३००

पाठशाला हास्यशाला : रु. १५०
विद्यार्थी जीवन से संबंधित सच्ची अप्रकाशित रचनाएं. अधिकतम शब्द : ३००

मेरा काम तेरा काम : रु. १५०
काम के क्षणों में होने वाली सच्ची मनोरंजक घटनाओं पर अप्रकाशित रचनाएं. अधिकतम शब्द : ३००

लच्छे भाषा के : रु. ४०
हिंदी उर्दू लेखकों द्वारा लच्छेदार चित्रण, रवानीदार, मज़ेदार और दिलचस्प मुहावरे, वाक्य या छंद. उद्धरणों के साथ लेखक का नाम, पुस्तक या रचना का शीर्षक, और प्रकाशन संस्था का नाम या पत्रिका का नाम एवं प्रकाशन तिथि अवश्य लिखें. स्वरचित रोचक वाक्य अथवा वर्णन भी भेज सकते हैं. अधिकतम शब्द : १००

इसी प्रकार झलकियां (प्रसिद्ध व्यक्तियों के जीवन की उल्लेखनीय घटनाएं), सोचने की बात (पुस्तकों, पत्रपत्रिकाओं, भाषणों में उठाए गए ऐसे मुद्दे जिन पर सब को विचार करना चाहिए) आदि स्तंभों के लिए, तथा लेखों के अंत में प्रकाशित की जाने वाली लघु रचनाओं के लिए भी आप अपनी पसंद के उद्धरण भेज सकते हैं. प्रत्येक उद्धरण के साथ लेखक, पुस्तक या पत्रपत्रिका का नाम व प्रकाशन तिथि अवश्य लिखें. प्रकाशित उद्धरणों को हमारे पास सर्वप्रथम पहुंचाने वालों को प्रति उद्धरण रु. ४० दिए जाएंगे.

हर रचना पर अपने नाम व पते के साथ भेजने की तारीख अवश्य लिखें. जिस रचना पर भेजने की तारीख नहीं लिखी होगी, उस पर क़तई विचार नहीं किया जाएगा. संपादक का निर्णय अंतिम व पूर्णतः मान्य होगा. रचनाओं के संबंध में किसी प्रकार का कोई पत्र. व्यवहार नहीं किया जाएगा, न ही अस्वीकृत रचनाएं लौटाई जाएंगी. रचनाएं भेजने का पता :

संपादक, सर्वोत्तम,
बी-१५, झिलमिल इंडस्ट्रियल एरिया,
दिल्ली-११००३२

लिफ़ाफ़े पर ऊपर के बाएं कोने पर संबंधित स्तंभ का नाम लिखना न भूलें.

बीज को प्यासा न मरनें दें

जब आप उस वर्षा का इंतजार कर रहे हों जो न आनेवाली हो तब खेत में पड़े बीज को सूखने न दें। आखिर आपने बीज एक सुनहरी फसल की उम्मीद में बोया है। किसान खाद इस्तेमाल कीजिए। यह अपने अदंर सोखी हुई नमी बीज को प्रदान करेगा, उस वक्त तक जब तक कि प्रकृति वर्षा के द्वारा बीज की प्यास न मिटाए।

अन्य उर्वरकों से भिन्न, किसान खाद की ख़ास खूबी यह है कि यह वातावरण की नमी को अपने में ज़ज्ब कर लेता है तथा भूमि के अंदर जाकर बीज को वह नमी प्रदान करता है।

जब धरती भट्ठी की तरह तप रही हो, जमीन में दरारें पड़ रही हों, बादल दूर-दराज़ तक नज़र न आ रहे हों और आप खेत में पड़े बीज के सूख जाने की बात से बेहद चिंतित हो रहे हों, तब किसान खाद छिड़किए। जब तक बारिश नहीं आती, यह आपके खेत में पड़े बीज को नमी प्रदान करता रहेगा। और आपकी खेती पर विलम्बित वर्षा का कुप्रभाव नहीं पड़ने देगा।

NFL
नेशनल फर्टिलाइज़र्स लिमिटेड
कम्यूनिटी सेंटर, ईस्ट ऑफ कैलाश
दिल्ली-110065

किसान
खाद

किसान खाद-क्योंकि बारिश का कोई ठिकाना नहीं

Sobhagya/1056/82

गुलाबी लेलिया आरकिड (पटचित्र) : केल्डा मिकास

रु. ६.०

सर्वोत्तम
रीडर्स डाइजेस्ट

जून १९८२

सर्वोत्तम पुस्तक
आदिमानव की खोज
पृष्ठ १०

चीन की सब से बड़ी भूल
पृष्ठ ४४

म: दो रूप
पृष्ठ १७

दं शरणं
यापारम
पृष्ठ २४

संसा की सर्वाधिक लोकप्रिय पत्रिका
प्रति मास १७ भाषाओं और ४१ संस्करणों में
३.१ करोड़ से अधिक प्रतियां

Reader's Digest : Hindi Edition : June

आइए
मधु मुसकान लाइए

सर्वोत्तम में विभिन्न स्तंभों के लिए रचनाएं भेजिए. प्रकाशित रचनाओं पर पारिश्रमिक निम्न दरों से दिया जाता है:

जीवन की यह रीत : रु. १५०
रचनाएं आप के निजी अनुभव पर आधारित और पूर्णतः अप्रकाशित होनी चाहिए. उन से वयस्क मानव स्वभाव या दैनिक भारतीय जीवन का कोई आकर्षक पक्ष उजागर होना चाहिए. अधिकतम शब्द : ३००

जय जवान ! जय मुसकान ! : रु. १५०
सैनिक जीवन के सच्चे अनुभवों पर आधारित अप्रकाशित रचनाएं. अधिकतम शब्द : ३००

पाठशाला हास्यशाला : रु. १५०
विद्यार्थी जीवन से संबंधित सच्ची अप्रकाशित रचनाएं. अधिकतम शब्द : ३००

मेरा काम तेरा काम : रु. १५०
काम के क्षणों में होने वाली सच्ची मनोरंजक घटनाओं पर अप्रकाशित रचनाएं. अधिकतम शब्द : ३००

लच्छे भाषा के : रु. ४०
हिंदी उर्दू लेखकों द्वारा ... चित्रण, रवानीदार, मज़ेदार और ... मुहावरे, वाक्य या छंद. उद्धरणों के साथ लेखक का नाम, पुस्तक या रचना का शीर्षक, ... प्रकाशन संस्था का नाम या पत्रिका का नाम ... प्रकाशन तिथि ... य लिखें. स्वरचित ... वाक्य अथवा . न भी भेज सकते ... अधिकतम शब्द : १००

इसी प्रकार **झलकियां** (प्रसिद्ध व्यक्तियों ... जीवन की उल्लेखनीय घटनाएं), सोचने ... बात (पुस्तकों, पत्रपत्रिकाओं, भाषणों में ... गए ऐसे मुद्दे जिन पर सब को विचार ... चाहिए) आदि स्तंभों के लिए, तथा लेखों ... अंत में प्रकाशित की जाने वाली लघु रचना ... के लिए भी आप अपनी पसंद के उद्धरण ... सकते हैं. प्रत्येक उद्धरण के साथ लेखक, पु... या पत्रपत्रिका का नाम व प्रकाशन तिथि ... लिखें. प्रकाशित उद्धरणों को हमारे पास ... प्रथम पहुंचाने वालों को प्रति उद्धरण रु. ४० ... जाएंगे.

हर रचना पर अपने नाम व पते के ... भेजने की तारीख़ अवश्य लिखें. ... रचना पर भेजने की तारीख़ नहीं ... होगी, उस पर क़तई विचार नहीं ... जाएगा. संपादक का निर्णय अंतिम ... पूर्णतः मान्य होगा. रचनाओं के संबंध ... किसी प्रकार का कोई पत्र व्यवहार ... किया जाएगा, न ही अस्वीकृत रचनाएं ... लौटाई जाएंगी. रचनाएं भेजने का पता

संपादक, सर्वोत्तम,
बी-१५, झिलमिल इंडस्ट्रियल एरिया,
दिल्ली-११००३२

लिफ़ाफ़े पर ऊपर के बाएं कोने पर संबंधित स्तंभ का नाम व भेजने की तारीख़ लिखना न भूलें.

सर्वोत्तम सूक्तियां

मूर्ख मनुष्य लोगों को उन के उपहारों से तोलता है. —चीनी कहावत

मैं ने तुम्हें खोजा [illegible]द को पा लिया. —फ़्रांज़ ग्रिलपार्ट्सर

किसी प्रतिभाशाली के साथ सब से बुरी यही बात हो सकती है कि लोग उस की बात समझने लगें.

—एन्यो फ़्लेयानो

युद्ध वस्तुतः व्यक्ति के अंदर होता है—एक ही व्यक्ति के अंदर, दूसरों में संचरित नहीं होता. यही इस का दुर्भाग्य है, और शायद सौभाग्य भी. हजारों भयंकर ज़ख़्म वास्तव में एक होते हैं, लाखों शहीद हो जाएं तो भी एक ही घर का चिराग़ बुझता [illegible]. इस लिए व्यक्ति अंततः लड़ाई होने [illegible] हैं और इस तरह देश युद्ध से [illegible] निकलते हैं और जीवित रहते हैं.

—'नाट सो [illegible] [illegible] डांस' (एथेनियम)

आवरण
लोक नर्तकी
कृति
विनय त्रिवेदी
चित्र
एन टी रैयन

सर्वोत्तम रीडर्स डाइजेस्ट

वर्ष २ : अंक १७ जून १९८२

भारतीय संस्करणों के प्रमुख संपादक : राहुल सिंह
संपादक : अरविंद कुमार
सहायक संपादक : ललित सहगल, सुशील कुमार
संपादन मंडल :
अरुण कुमार, राम अरोड़ा, महेश नारायण भारती

विज्ञापन विभाग :
चंद्रन थरूर (निदेशक)
राम दत्ता (क्षेत्रीय प्रबंधक, बंबई)
विवियन डी सूज़ा (क्षेत्रीय प्रबंधक, दिल्ली)
कुमार माधवन (क्षेत्रीय प्रबंधक, मद्रास)
अमिताभ मजूमदार (क्षेत्रीय प्रबंधक, कलकत्ता)
सुमित्रा मालवीय (लखनऊ)
अन्य विभाग :
विनायक उकिडवे (वित्त नियंता)
संजय जौहरी (वितरण प्रबंधक)
अजय कुमार दयाल (वितरण अधिकारी)
शुल्क :
रु. ७२.०० प्रति वर्ष, डाक व्यय अतिरिक्त
जानकारी के लिए लिखें : सर्वोत्तम रीडर्स डाइजेस्ट, बी-१५, झिलमिल इंडस्ट्रियल एरिया, दिल्ली-११००३२
'सर्वोत्तम रीडर्स डाइजेस्ट' आर डी आई प्रिंट एंड पब्लिशिंग प्राइवेट लिमिटेड द्वारा प्रकाशित किया जाता है.
पंजीकृत कार्यालय : ओरियंट हाउस, मंगलौर स्ट्रीट, बलार्ड एस्टेट, बंबई ४०००३८
प्रकाशक तथा प्रबंध निदेशक : अनील गोरे

रीडर्स डाइजेस्ट
प्लेज़ेंट विल, न्यू यार्क
संस्थापक : डी विट वालेस और लीला एचेसन वालेस

रीडर्स डाइजेस्ट के अंतरराष्ट्रीय संस्करण
प्रमुख संपादक : एडवर्ड टी टामसन
संचालन संपादक : आलें द लाइरो
अध्यक्ष : जान ए ओ'हारा
अंतरराष्ट्रीय संस्करण १७ भाषाओं में प्रकाशित किए जाते है और उन के प्रमुख कार्यालय इस प्रकार है : अम्सटर्डम (डच), एथेंस (ग्रीक), ओसलो (नारवेजियन), केप टाउन (अंगरेजी), कोपेनहेगन (डेनिश), ज़ूरिख़ (जरमन और फ्रेंच), तोकियो (जापानी), दिल्ली (हिंदी), पेरिस (फ्रेंच और अरबी), बंबई (अंगरेजी), मिलान (इटालियन), मेक्सिको सिटी (स्पेनिश), मैड्रिड (स्पेनिश), मौंटरीयल (अंगरेजी और फ्रेंच), लंदन (अंगरेजी), लिसबन (पुर्तगाली), सिडनी (अंगरेजी), सीयोल (कोरियन), स्टटगार्ट (जर्मन), स्टाकहोम (स्वीडिश), हांगकांग (चीनी) हेलसिंकी (फ़िनिश).

Published by Anil Gore for RDI Print & Publishing Pvt. Ltd., from B-15, Jhilmil Industrial Area, Delhi 110 032 and printed by him at Tej Press, Bahadur Shah Zafar Marg, New Delhi 110 002.

शब्द संपदा सर्वोत्तम धन

—कुसुम कुमार

संस्कृत में 'हृ' धातु से बने शब्द 'हार' के अनेक अर्थ हैं: हरण; ले जाना; ज़ब्ती; युद्ध; पराजय; थकान; माला. आंचलिक हिंदी में 'हार' का प्रयोग 'वाला' और 'दिन' या 'वार' के लिए भी होता है. अब देखना यह है कि आप हार से हारेंगे या गले में विजय का हार पहनेंगे.

नीचे दिए २० शब्दों में से हर एक के सामने लिखे चार अर्थों में से निकटतम सही अर्थ पर निशान लगाइए और पृष्ठ पलट कर सही अर्थ देख कर स्वयं निर्णय कीजिए.

१. आहार—अ. महंगा हार. आ. बुलावा. इ. भोजन. ई. सामग्री.
२. विहार—अ. एक प्रदेश. आ. स्तूप. इ. भिक्षु. ई. मठ.
३. प्रहार—अ. प्रहरी का काम. आ. दिन का आठवां भाग. इ. आघात. ई. प्रहर का घंटा.
४. नीहार—अ. आकाश गंगा. आ. कोहरा. इ. देखना. ई. प्रेम.
५. कहार—अ. कहने वाला. आ. कहासुनी. इ. कहा करने वाला. ई. पानी लाने वाला.
६. संहार—अ. महाभारत. आ. मृत्यु. इ. ध्वंस. ई. सहभोज.
७. मल्हार—अ. वर्षा ऋतु का राग. आ. मल त्याग. इ. एक कपड़ा. ई. तानसेन.
८. त्योहार—अ. पर्व का दिन. आ. व्रत. इ. आनंद मेला. ई. छुट्टी का दिन.
९. चंद्रहार—अ. अमावस्या. आ. कंठहार. इ. दूज का चांद. ई. सोमवार.
१०. अपहार—अ. बुरी माला. आ. अपहरण. इ. दुर्व्यवहार. ई. गाली.
११. अवहार—अ. पीटना. आ. जलाना. इ. युद्धविराम. ई. माला पिरोना.
१२. उपहार—अ. पान फूल. आ. सौग़ात. इ. संधि. ई. हलका भोजन.
१३. उपाहार—अ. भेंट. आ. गाय का भोजन. इ. जलपान. ई. पूजा.
१४. प्रतिहार—अ. बदला. आ. करारी हार. इ. चौकीदार. ई साक्षी.
१५. व्यवहार—अ. ख़र्चा. आ. संबंध. इ. चालचलन. ई. बरताव.
१६. मनिहार—अ. मुक्तामाला. आ. चूड़ी बनाने वाला. इ. चमकीला. ई. मणि चोर.
१७. मनुहार—अ. मनु की आलोचना. आ. ख़ुशामद. इ. मनुस्मृति. ई. नीच मनुष्य.
१८. अनुहार—अ. ख़ुशामद. आ. पिछलग्गूपन. इ. जूड़े का आभूषण. ई. सादृश्य.
१९. परिहार—अ. त्यागना. आ. नाट्य भूमि. इ. एक जाति. ई. मद्य शाला.
२०. समाहार—अ. संग्रह. आ. सत्यानाश. इ. संतुलित भोजन. ई. आलोचना.

उत्तर अगले पृष्ठ पर

शब्द संपदा
सर्वोत्तम धन

पिछले पृष्ठ के उत्तर

१. **आहार**—इ. भोजन, खाद्य पदार्थ; भोजन करना.

२. **विहार**—ई. मठ, आश्रम; घूमने फिरने तथा आनंद लेने की जगह, उद्यान, बाग़ीचा; घूमना, मौज लेना; रति क्रीड़ा. बिहार प्रदेश में कभी इतने बौद्धमठ थे कि पूरे प्रदेश का नाम विहार पड़ गया, जिस का उच्चारण कालांतर में बिहार हो गया.

३. **प्रहार**—इ. आघात, वार, आहत या हत करने के लिए किसी पर किया जाने वाला आघात.

४. **नीहार**—आ. कोहरा, धुंध; पाला, भारी ओस. आकाश गंगा को नीहारिका कहते हैं क्योंकि वह आकाश में कोहरे सी दिखाई देती है. देखना के लिए निहारना क्रिया है, जो संस्कृत के 'निभालन' का अपभ्रंश समझी जाती है.

५. **कहार**—ई. पानी लाने वाला, पानी ढोने का और डोली ढोने का काम करने वाली एक जाति और उस का सदस्य. 'कं' और 'क' का अर्थ है जल, उसे लाने वाला = कहार.

६. **संहार**—इ. ध्वंस, संपूर्ण नाश, विनाश; अंत, समाप्ति; नाटक में विनाशयुक्त अंत. अन्य महत्वपूर्ण अर्थ : बटोरना, एकत्र करना; समूह, मंडली; कुशलता, अभ्यास.

७. **मल्हार**—अ. वर्षा ऋतु का राग, मल्लार, मलार, मेघ मल्हार. इस शब्द का उद्गम अस्पष्ट है. कुछ कोशकार इसे संस्कृत 'मल्लार' से निकला मानते हैं.

८. **त्योहार**—अ पर्व का दिन, प्रति वर्ष निश्चित तिथि को मनाया जाने वाला कोई धार्मिक या जातीय उत्सव. यह शब्द तिथि + वार का अपभ्रंश माना जाता है.

९. **चंद्रहार**—आ. कंठहार, एक प्रकार की माला जिस में धातु के कई अर्धचंद्र के डिज़ाइन वाले टुकड़े लगे रहते हैं और बीच में पूर्ण चंद्र जैसा गोल लाकेट लगा होता है.

१०. **अपहार**—आ. अपहरण, छीनना; क़ानून की दृष्टि से धोखे या बेईमानी से किसी के धन या संपत्ति पर अधिकार करना और उसे भोगना (एंबेज़्ल...

११. **अवहार**—इ. युद्धविराम, अस्थायी रूप से ... होना. अन्य अर्थ : प्राप्य अंश का विशेष ... कुछ अंश छोड़ दिया जाना, छूट; आमंत्र... त्याग; घंटा घड़ियाल; चोरी.

१२. **उपहार**—आ. सौग़ात, भेंट, प्रसन्न हो कर ... पूर्वक किसी को कोई वस्तु देना, विशेष अवसर ... दिया जाने वाला स्मृति चिह्न.

१३. **उपाहार**—इ. जलपान, हलका भोजन, नाश्ता ... रेस्तोरांओं में पूरा भोजन (लंच, डिनर आदि) ... मिलता वे उपाहारगृह या जलपानगृह कहे जाते ...

१४. **प्रतिहार**—इ. चौकीदार, द्वारपाल, चोबदार; राजा के संदेश ले जाने वाला. इसे प्रतिहारी भी ... थे. स्त्रीलिंग में इस का रूप होता था : प्र...

१५. **व्यवहार**—ई. बरताव, आचरण; दूसरों से ... रीति, प्रथा, रिवाज; प्रयोग; उपयोग, उपभोग; ... कार्य, अनिवार्य कार्य; विवाहादि संस्कारों के ... कुछ देने की रीति; मुक़दमा; विवाद; दंड.

१६. **मनिहार**—आ. चूड़ी बनाने या बेचने ... वाला; चूड़ी टिकली सिंदूर आदि की फेरी ... वाला. इसे कभी कभी मनियार भी लिखते हैं, ... मणिहार भी.

१७. **मनुहार**—आ. ख़ुशामद, किसी रूठे को ... तथा उस का मान छुड़ाने के लिए की जाने ... विनती. मान हरना.

१८. **अनुहार**—ई. सादृश्य, समानता; किसी के ... रूप होने की क्रिया या भाव; नक़ल ... अर्थ : चेहरे की बनावट, मुखारी; रचना, ...

१९. **परिहार**—अ. त्यागना, छोड़ना; दोष आदि ... निराकरण; गांव के चारों ओर छोड़ी गई ... परती भूमि; लगान की माफ़ी.

२०. **समाहार**—अ. संग्रह., बहुत सी चीज़ों को ... करना; ढेर; राशि; मिलन, मिलाप, जोड़, ... संक्षेप; विषयों से इंद्रियों को पृथक करना.

मूल्यांकन :

१८ या अधिक सही ....

१५ से १७ सही ....

११ से १४ सही ....

—मैलविन मैडक्स

छोटा सा छल्ला : मीनार की ऊंचाई जैसे आंकड़े ...

यह ख़ुशी की बात है कि सत्तरादि दशक में रबड़ बैंड का प्रयोग पुराना नहीं पड़ा और इस दशक में भी उस की उपयोगिता पहले की तरह बनी हुई है. सुबह सवेरे किसी भी अख़बार वाले को देखिए. वह आप के मुहल्ले में आएगा, साइकिल टिकाएगा, अख़बार को लपेट कर रबड़ बैंड चढ़ाएगा और अगर आप नीचे की मंज़िल में नहीं रहते तो वहीं से उछाल कर अख़बार आप की बालकनी में फेंक देगा. रबड़ बैंड आज भी लाब्स्टर के पंजों को बांधने और प्याज़ की अलग अलग क़िस्मों को वर्गीकृत करने का सब से सीधा और सस्ता साधन है. कुछ दंदानसाज़ टेढ़े मेढ़े दांतों पर चांदी का तार लगाने की जगह रबड़ बैंड इस्तेमाल करने लगे हैं. अब आप मीनार क़ी ऊंचाइयों जैसे आंकड़ों पर निगाह डालिए और अगर ... पहनते हों तो रबड़ बैंड चढ़ा लीजिए.

आंकड़ों की मीनार. हर साल दुनिया ... लगभग १ अरब २८ करोड़ और ६२ ... रुपए के रबड़ बैंड बिकते हैं. इस हिसाब ... लगता है कि मोटे तौर पर हर साल दुनिया ... ७५ अरब रबड़ बैंड बिकते हैं.

आप पूछेंगे, रबड़ बैंड इतना लोकप्रिय ... है? इस का कारण है कि मुरगे के ... काम आने वाले तार, बिजली के नंगे तारों ... चढ़ने वाले टेप और हेयरपिन की तरह ... बैंड भी गठन की परंपरा में अपना स्थान ... हुए है. अगर रात को आप की बरसों ... कार के इंजन के तार निकल जाते हैं तो ...

द क्रिश्चियन साइंस मानीटर (मार्च ?, १९८?) से ... १९८१ द क्रिश्चियन साइंस पब्लिशिंग सोसायटी, बोस्टन

बैंड लगा कर उन्हें अस्थायी रूप से टिकाया जा सकता है और घर पहुंचा जा सकता है. ग्रामोफ़ोन के हत्थे का अगर कोई पेंच निकल जाए और वैसा पेंच उस समय पास न हो तो रबड़ बैंड चढ़ा कर उस की थरथराहट दूर की जा सकती है.

पेपर क्लिप की तरह रबड़ बैंड भी हमेशा चढ़ा रहता है. उसी रबड़ बैंड को कहीं और काम में लाना हो तो ज़रा सा खींच कर दूसरी चीज़ पर चढ़ाया जा सकता है. हां, अगर आप पेपर क्लिप को खींचेंगे तो वह टूट जाएगा.

हथकड़ी या बेड़ी की तरह रबड़ बैंड काम नहीं आ सकता. यह तो केवल अस्थायी रूप से एकत्र रख सकता है. यह कुत्ते के उस पट्टे के समान है जो उसे घूमने फिरने तो देता है, लेकिन पूरी तरह से खोने नहीं देता. रबड़ बैंड देखने में सुंदर या साफ़ सुथरा नहीं होता, लेकिन अपनी क़ीमत पूरी पूरी चुका देता है. यह बिखरी हुई चीज़ों को नियंत्रण में रखता है या उन का बिखरापन दिखने नहीं देता.

रबड़ बैंड हुक्म देता, सवाल करता है—सब संभाल लिया?

रबड़ बैंड से अनेक कृत्य संबद्ध हैं. कुछ लोग अलबेट लगाने की अपेक्षा रबड़ बैंड को सपाट रखना पसंद करते हैं. दूसरों को समुचित आकार या ग़लत आकार के रबड़ बैंड छांटना पसंद होता है. दफ़्तर का कोई और काम इतना रोमांचकारी नहीं होता जितना छोटे से रबड़ बैंड को ज़्यादा से ज़्यादा खींचने का काम. जब वह टूटता है तो उसी तरह दिल धक से रह जाता है जैसे बम की आवाज़ सुन कर होता है, लेकिन मज़ा आता है.

बच्चों को रबड़ बैंड चबाना अच्छा लगता है. अगर कोई देख न रहा हो तो बहुत से सयाने रबड़ बैंड की सुगंध का आनंद लेते हैं. दफ़्तर की मेज़ पर प्राकृतिक गंध महकाने वाली दो ही चीज़ें होती हैं—रबड़ बैंड और मिटाने वाला रबड़. बाक़ी सब—टाइपराइटर साफ़ करने वाले रसायन आदि—कृत्रिम गंध फैलाते हैं.

दो हज़ार उपयोग. एक निर्माता का दावा है कि रबड़ बैंड के २,००० उपयोग हैं. हम किसी से यह नहीं सुनना चाहते, "अरे, क्यों बात को रबड़ बैंड की तरह बढ़ा चढ़ा कर कह रहे हो?"

हम ने जो कहा है, बिलकुल सही है. आप चाहें तो गिना सकते हैं. इस से एक कम नहीं निकलेगा.

रबड़ बैंड के बारे में सब से बड़ी बात है कि टिकाऊ रबड़ बैंड ढीला ही सही, लेकिन हमारे वर्तमान को अतीत से जोड़ता है. रबड़ बैंड की अनवरत गंध भांति भांति की स्मृतियां टहोरती हैं.

घर की मियानी में रबड़ बैंड से ३० साल पुराने पारिवारिक पत्र बंधे पड़े हैं. वह रबड़ बैंड लाल रंग का, मोटा और चटका हुआ है जैसे सूखी मिट्टी. किसी दिन गरमी में यह अपने आप टूट जाएगा. या शायद वसंत ऋतु की किसी मुखर प्रभात में कोई पूरा जोखिम उठाएगा, कोमलता से उस रबड़ बैंड को खोल डालेगा और उन पत्रों तथा उन में बंद स्मृतियों को बिखेर देगा. जब तक ऐसा नहीं होता, तब तक रबड़ बैंड पत्रों को सहेज कर रखने का सब से सहज ढंग है.

—जरमन टिप्पणी
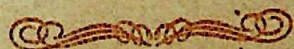
आज की मशक़्क़त कल का सुखद सुहाना विगत है.

क्रिकेट का तीर्थ

लार्ड्स

पचास साल पहले जहां भारत के खिलाड़ियों ने पहला टेस्ट मैच खेला

—पीटर ब्राउन

वसंत ऋतु का एक दिन. बर्फ़ीनी हवा टेस्ट मैच की निर्जन पिच पर निरंतर प्रहार कर रही थी, लार्ड्स के पैविलियन में पनाह लिए इंग्लैंड के बल्लेबाज़ बिल एडरिच ने हाल ही में दौरे पर आए भारतीय टीम के एक सदस्य को विश्व के इस प्रख्यात क्रिकेट मैदान में पहली बार उन्हें देखा.

"उस के दांत किटकिटा रहे थे और चेहरे पर बर्फ़ का पलस्तर जमा था," याद करते एडरिच कहते हैं, "फिर भी उस का टोप उस के हाथ में था. मेरे अचरज को भांप कर वह बोला, "मैं ने तो अपने जूते तक उतार दिए होते. हमारे लिए तो यह स्थल बड़ा पवित्र है."

दुनिया भर के क्रिकेट खिलाड़ी लार्ड्स के

टामस लार्ड
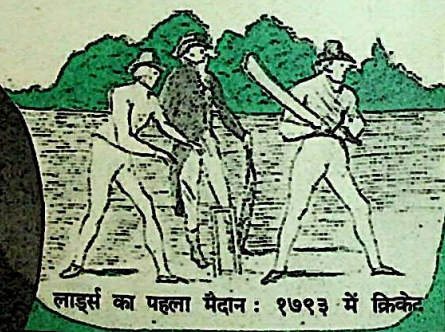
लार्ड्स का पहला मैदान : १७९३ में क्रिकेट
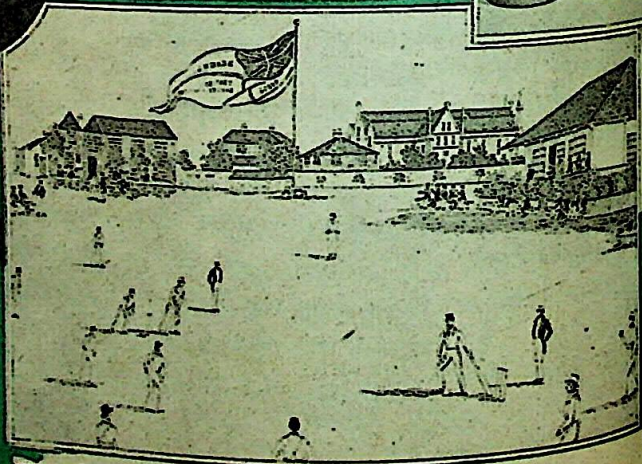
डब्ल्यू जी ग्रेस

लार्ड्स—१८३७ में

अपना तीर्थ मानते हैं. क्रिकेट के लती लंदन के सेन जांस वुड तथा लार्ड्स के हरीतिमा भरे नख़लिस्तान की तीर्थ यात्रा के सपने देखते हैं, जो अब इस महानगर के सब से क़ीमती इलाक़ों में से हैं: इस मैदान ने १२ एकड़ से भी ज़्यादा धरती ऐसे क्षेत्र में घेर रखी है, जहां इमारतों के लिए ज़मीन इतनी दुर्लभ है कि एक तिहाई एकड़ की क़ीमत लाखों में हो सकती है.

अपनी ऊंची जेलनुमा दीवारों के पीछे, पहली नज़र में लार्ड्स, समरूप घास के विस्तार को अपने घेरे में लिए, पंक्तिबद्ध स्टैंडों के साथ, किसी भी अन्य क्रीड़ा स्टेडियम जैसा दिखाई देता है. लेकिन खिलाड़ियों, प्रेक्षकों और क्रिकेट लेखकों, सब के लिए यह समान रूप से 'पवित्र तृणभूमि' है; और ग्रैंड स्टैंड के शिखर पर लगे बादनुमा—कालपिता की दरातीनुमा कंधों वाली, स्टंपों के ऊपर से गिल्लियां उठाती हुई पार्श्व छायाकृति—से इस का ध्येय भी स्पष्ट कर दिया गया है. निबंधकार नेवील कार्ड्स ने एक बार इसे क्रिकेट खिलाड़ियों का स्वर्ग बताया था: ''महान कार्यों के लिए प्रख्यात अनगिनत महान दिनों को लार्ड्स में समाधि मिली है.''

ऐसा ही एक दिन था सितंबर १९७१ में जिलेट कप फ़ाइनल का दिन. जब अपराह्न बाद के क्षणों में ऐसा लग रहा था कि कैंट निश्चित रूप से लंकाशायर को हरा देगा. उस समय तक कैंट ने छः विकेट पर १९७ रन

लांग रूम

गैरी सोबर्स

आज का लार्ड्स मैदान
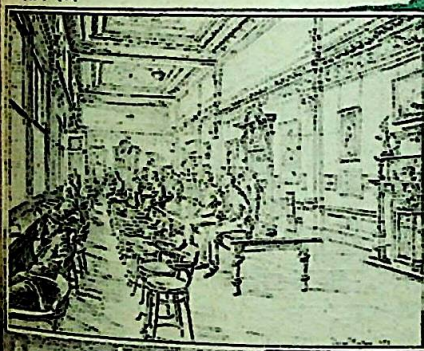
विल एडरिच और डेनिस कांप्टन

बनाए थे और जीत के लिए उसे केवल २८ रन और बनाने थे,. जीत को निश्चित जान, कैंट के नामी पाकिस्तानी खिलाड़ी आसिफ़ इक़बाल ने, जो तब तक ८९ रन बना चुके थे, इतने जोर से हिट जमाई कि हर दर्शक का सिर बाउंड्री की तरफ़ घूम गया. लेकिन लंकाशायर के कप्तान जैकी बौंड ने गेंद को कैच करने के भरसक प्रयास में हवा में उलटबाज़ी खाई, फिर पीछे गिरे और लुढ़कते चले गए. जब वह रुके, तो उन का एक हाथ ऊंचा उठा हुआ था, जिस में गेंद क़ैद थी. बात इतनी अनपेक्षित थी कि अचानक ख़ामोशी छा गई: फिर एक साथ २५,००० कंठों से तुमुल ध्वनि उभरी.

उस एक चमत्कारी क्षण ने सारे मैच का रुख़ ही बदल दिया. कैंट के शेष तीन विकेट लेने के लिए केवल चौदह और गेंदों की ज़रूरत पड़ी—मात्र तीन रन दे कर. आह्लादित लंकाशायर वासियों की भीड़ प्रथम श्रेणी के क्रिकेट में देखे गए महानतम कैचों में से एक कैच लेने वाले जैकी बौंड को अपने कंधों पर उठाने के लिए पिच की ओर दौड़ पड़ी.

इस तरह के करतबों को देखने की उम्मीद प्रेक्षकों की भीड़ को लार्ड्स की ओर खींच ले जाती है, ख़ास तौर पर पांच दिवसीय टेस्टों के लिए. इसी वर्ष १० जून का यहां इंगलैंड और भारत का पांच दिवसीय मैच शुरू होने वाला है. अगस्त में पाकिस्तान से भी पांच दिवसीय मैच होगा. ऐसे मौक़ों पर लगभग ३०,००० दर्शक मैदान को भर देते हैं, जिन में से ८,००० बाउंड्री के चारों ओर की घास पर बिछ कर बैठ जाते हैं, जैसे लार्ड्स गांव का कोई प्रशस्त मैदान हो; लाखों अन्य लोग अपने घरों में टेलीविज़न पर मैच देखते हैं. "इंगलैंड के किसी क्रिकेट खिलाड़ी के लिए," प्रख्यात टेस्ट खिलाड़ी कोलिन काउंड्री कहते हैं, "इस से ज्यादा नाटकीय क्षण और कोई नहीं है कि [illegible] खचाखच भरा हो, अगले बल्लेबाज़ के [illegible] आप की बारी हो और तभी विकेट का [illegible] जाए."

लार्ड्स किसी ऐसे क्रिकेट मैदान से [illegible] ज़्यादा बड़ी चीज़ है, जहां हर सीज़न में [illegible] अधिक मैच खेले जाते हैं. यह उस खेल [illegible] विश्व मुख्यालय भी है, जिस के, अकेले [illegible] में ही, ५०,००० क्लब और ५,००,००० [illegible] वाले हैं. द मेरिलिबौन क्रिकेट क्लब (एम सी) को, १८१४ से लार्ड्स जिस का [illegible] आ रहा है, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर क्रिकेट [illegible] परंपराओं का परिरक्षक और उस की [illegible] नियामक माना जाता है. इस के अलावा [illegible] क्लब इस खेल के प्रशासन में भी महत्त्वपूर्ण [illegible] अदा करता है. फिर भी एम सी सी के पास [illegible] शाही अधिकारपत्र नहीं है, न ही संविधान [illegible] तहत क्लब की शक्तियों को परिभाषित [illegible] गया है; इस का प्राधिकार सर्वत्र [illegible] क्रिकेट खिलाड़ियों के सद्भाव पर ही [illegible] करता है.

एम सी सी का चित्रण एक ऐसे निर्वा[illegible] के रूप में किया गया है, जिस का [illegible] सार्वजनिक है. इस की सदस्यता—जो [illegible] आभिजात्य वर्ग और विशिष्ट लोगों तक [illegible] थी—अब हर ऐसे व्यक्ति के लिए खुली [illegible] जिसे दो सदस्यों ने प्रेषित किया है—[illegible] इस की इतनी प्रतिष्ठा अब भी है कि इस [illegible] प्रतीक्षा सूची पांच साल पुरानी है.

स्पृहणीय लाल और पीली टाई पहने [illegible] अधिकारी १८,००० लोगों में से [illegible] १,८०० के करीब खिलाड़ी सदस्य हैं. [illegible] सी के एक भूतपूर्व सचिव बिली ग्रिफ़िथ ने [illegible] था, "अधिसंख्य लोग यह मानते हैं कि [illegible] को समर्थन दे कर वे खेल को ही समर्थ[illegible]

हैं." ३५ पौंड सालाना (लगभग ६३० रुपए) शुल्क (लंदन के बाहर रहने वालों के लिए २४ पौंड—लगभग ४३२ रुपए.)दे कर वे लाइर्स में किसी भी समय निःशुल्क प्रवेश पा सकते हैं. जनता के लिए टेस्ट मैचों का प्रवेश शुल्क ग्रैंडस्टैंड की सीट के लिए लगभग १५३ रुपए है, जबकि खड़े होने की जगह ७२ रुपए में मिल सकती है.

लाइर्स का केंद्रीय स्थल ९२ वर्ष पुराना, लाल ईंटों से बना, विशाल पैविलियन है, जो मैदान पर हावी है. इस के दफ़्तरों की भूल-भुलैया में एम सी सी, नेशनल क्रिकेट एसोसिएशन तथा टेस्ट एंड काउंटी क्रिकेट बोर्ड के कर्मचारी काम करते हैं और ये तीनों संस्थाएं खेल के प्रत्येक पहलू के प्रशासन का काम देखती हैं.

पैविलियन अपने सामने वाले टैरेस, बालकनी और छत पर बनी दीर्घा में लगी सीटों से एम सी सी के ३,००० सदस्यों को क्रिकेट देखने का विशेषाधिकार प्रदान करता है—लाइर्स के इतिहास की सशक्ततम हिट का निशाना पैविलियन की दीर्घा ही थी, जब १८९९ में एल्बर्ट ट्रौट ने गेंद को बड़ी सफ़ाई से ड्राइव शाट द्वारा ६६ फुट ऊंची छत के पार पहुंचा दिया था. पैविलियन में रखी कचरे की टोकरियां तक एम सी सी के लाल और पीले रंगों में बुनी गई हैं. पैविलियन में पुरुषों का ही राज है, जहां प्रसाधन कक्ष के द्वारों पर भी **आउट** तथा नाट आउट के लेबल चिपके हैं और किसी मैच के दौरान महिलाओं को वहां क़तई नहीं आने दिया जाता—वास्तव में, महिलाओं को १९६९ के बाद से वहां प्रविष्ट ही नहीं होने दिया गया है. एम सी सी अपनी प्राथमिकताओं को ले कर बड़ा दृढ़ है. "हमें उन को देख कर बड़ी ख़ुशी होती है," बिली ग्रिफ़िथ का कहना है, "लेकिन खेल ख़त्म होने के बाद."

पैविलियन की दीवारों का एक एक इंच क्रिकेट से संबंधित प्रिंटों, व्यक्तिचित्रों और छायाचित्रों से ढका है. चौड़ी सीढ़ियों के ऊपर बार हैं, रेस्तोरां हैं, रेडियो पर आखोंदेखा विवरण सुनाने वालों के लिए कांच के आमुख वाला बाक्स है और कपड़े बदलने के लिए कमरे हैं; नीचे १०० फुट लंबा लांग रूम है, जिस से हो कर खिलाड़ी मैदान में उतरते हैं.

लांग रूम भी बेशक़ीमती स्मृतिचिह्नों से भरा है—मसलन "लंपी" स्टीवेंस का एक तत्कालीन व्यक्तिचित्रः दो विकेटों वाले ज़माने में "लंपी" की गेंदें अकसर विकेटों के बीच से निकल जाती थीं; इसी वजह से १७७६ में तीसरी मध्यवर्ती स्टंप को विकेटों में जोड़ना पड़ा; और संभाल कर रखी गई संभवतः सब से पुरानी क्रिकेट गेंद , जिस से विलियम वार्ड ने एम सी सी की ओर से नोरफ़ोक के विरुद्ध १६२ साल पहले २७८ रन बनाए थे.

पैविलियन में भावनाओं का प्रदर्शन उतना ही असहनीय है, जैसे गरमी की लहर में कालर और टाई का उतारा जाना. लाइर्स में उस दिन की कहानी आज भी दोहराई जाती है कि कैसे स्वर्गीय सी आब्री स्मिथ, जो हालीवुड का सितारा बनने से अरसा पहले प्रख्यात क्रिकेट खिलाड़ी थे, पैविलियन में अपनी सीट पर बैठे बैठे खेल का ज़ोरदार आंखों देखा हाल बयान किए जा रहे थे कि दो चिड़चिड़े सदस्यों को इस गड़बड़ की भनक लग गई.

एक ने पूछा "यह ऊंची आवाज़ वाला आदमी है कौन ?"

दूसरे ने एक पल के लिए विश्व विख्यात अभिनेता की ओर देखा. "स्मिथ," उस ने कहा. "कभी ससेक्स के लिए खेला करता था."

क्रिकेट के प्रति इस तरह की एकाग्रचित्त श्रद्धा लाइर्स तथा उस के ८० पूर्णकालिक कर्मचारी सदस्यों की ख़ासियत है. अधिकांश समय प्रकाशबिंदु होते हैं ग्रांउड्समेन, जिन के जीवन का एक ही ध्येय होता है—६३×३० गज़ की क्रिकेट टेबल पर आदर्श पिचों का निर्माण, उन समस्याओं के बावजूद जो उस दुर्दांत दशक तक लाइर्स में अज्ञात रही हैं. १९७० में दक्षिण अफ़्रीका की भ्रमणकारी टीम के विरोध में रंगभेद विरोधी प्रदर्शनकारियों का सामना करने के लिए टेबल को कंटीले तारों और फ़्लडलाइटों से घेर देना पड़ा था. अगस्त १९७३ की घटना है. उस दिन बम की धमकी की वजह से दर्शकों को मैदान से चले जाने का कहा गया था, लेकिन जाने के बजाए हज़ारों दर्शक मैदान में आ गए थे. गरिमामयी पिच को अनधिकृत बूटों से बचाने के ख़याल से उस पर तत्काल बारिश के समय ढकने के काम आने वाला कवर बिछा दिया गया था. और अंपायर बड़ी दृढ़ता से कवर पर जम कर खड़े रहे थे.

कम महत्व के खेलों के लिए मुख्य ग्राउंड्समैन जिम फ़ेयरब्रदर टेबल पर बनी अन्य १८ पिचों में ज़रूरी परिवर्तन करते रहते हैं, लेकिन टेस्ट पिच का उपयोग और किसी काम के लिए कभी नहीं होता. शरद्‌ ऋतु में ताज़े बीज और नई घास से प्रोत्साहित, सरदी और वसंत के दौरान बड़े लाड़ प्यार से पोषित इस पिच का टेस्ट पूर्व विशिष्ट तैयारी के १० दिनों में बड़ा ही सूक्ष्म निरीक्षण किया जाता है—कहीं ज़रा सा भी ऊंचाई नीचाई या खर पतवार तो नहीं रह गया है और क़रीब ३० घंटों तक इस की रोलिंग की जाती है.

पीढ़ियों की देख रेख के बावजूद, लाइर्स की क्रिकेट टेबल जितने छोटे ज़मीन के टुकड़े ने जितने विवादों का जन्म दिया है, उतना [illegible] ही धरती के ऐसे किसी टुकड़े पर हुआ [illegible] ढलवां, मिट्टी जमा कर बनाए गए मैदा[illegible] बारिश के बाद पानी भर जाने से इस की [illegible] की भर्त्सना सवा सौ साल पहले सन १८[illegible] भी की गई थी, क्योंकि भयावह रूप से [illegible] लेती गेंदों ने उन्हें देश की सर्वाधिक ख़ूंख़ा[illegible] पिच बना दिया था. अब इसे खोद कर, [illegible] कर दिया गया है, साथ ही इस की ऊंचाई [illegible] क़रीब १५ सेंटीमीटर बढ़ा दिया गया और [illegible] पर नई घास बिछा दी गई है. और अंत[illegible] पिचें लाइर्स की प्रतिष्ठा के अनुरूप हो [illegible]

क्रिकेट के अतीत के नायक एक अ[illegible] संग्रहालय में अवस्थित हैं. यह संग्रहालय [illegible] के लिए खुला है. इस में खेल के [illegible] प्राचीनतम रेकार्ड सुरक्षित हैं, जैसे सन १७[illegible] कैंटरबरी के निकट केनफ़ील्ड हाल में खेले [illegible] एक मैच की पेंटिंग : दो स्टंप वाली विकेट, [illegible] लगाए खड़े अपायर, अंडर आर्म गेंद[illegible] विचित्र वक्राकार बल्ले. वह गेंद भी है जि[illegible] डब्ल्यू जी ग्रेस ने सन १८९५ में प्रथम [illegible] क्रिकेट का अपना सौवां शतक पूरा किया [illegible] सट्क्लिफ़, हेंड्रेन, कांप्टन और हटन जैसे [illegible] इंगलिस्तानी खिलाड़ियों द्वारा इस्तेमाल कि[illegible] बल्लों का पूरा एक रैक है : डान ब्रैड[illegible] बूट हैं, जैक हाब्स की टोपी है. झक्की [illegible] के प्रति इंगलिस्तानियों का अनुराग एक [illegible] टिकी, भूसा भरी चिड़िया के रूप में प्रति[illegible] किया गया है. गेंद पर लेबल लगा है: [illegible] गौरैया ३ जुलाई १९३६ को लाइर्स में टी[illegible] पीयर्स (एम सी सी) को जहांगीर खां ([illegible] विश्वविद्यालय) द्वारा फेंकी गई एक गेंद से [illegible] गई थी.

लेकिन सर्वाधिक गौरव प्राप्त है एक [illegible] लाल कलश को, जिस की ऊंचाई छः [illegible]

भी कम है. इस के लिए दोनों देश सौ साल से प्रतीकात्मक स्तर पर भिड़ते आ रहे हैं. १८८२ में इंगलैंड पहली बार अपनी ही भूमि पर पराजित हुआ था. उस दिन के द स्पोर्टिंग टाइम्स ने खिल्ली उड़ाने के लिए इंगलिश क्रिकेट की निधन सूचना प्रकाशित की; साथ ही लिखा : "शव का दाह संस्कार किया जाएगा और भस्म को आस्ट्रेलिया ले जाएंगे," अगले साल इंगलिश टीम आस्ट्रेलिया गई और उस ने हार का बदला चुका लिया. तब उन के कप्तान को एक कलश भेंट किया गया, जिस में पिछले मैच की एक गिल्ली की राख भरी थी. तब से कढ़ाईदार मख़मली थैलीसहित यह कलश यहीं रखा है, क्योंकि इस कलश को वैजयंती मान कर इस के लिए कभी मुक़ाबला नहीं किया जाता.

संग्रहालय में लार्ड हैरिस, लार्ड हाक तथा अर्ल आफ़ बेसबारा जैसे एम सी सी के भूतपूर्व महत्वपूर्ण व्यक्तित्वों के व्यक्तिचित्र भी मौजूद हैं, जिस से इस सामान्य धारणा को रंगत मिलती है कि एम सी सी के अभिजात सदस्यों की वजह से ही इसे 'लार्ड्स' की संज्ञा मिली थी. वस्तुतः इसे यह नाम यार्कशायर वासी किसान घराने के क्रिकेट प्रशिक्षक टामस लार्ड से मिला है, जिन के संरक्षकों ने लार्ड द्वारा वर्तमान मेरिलिबोन स्टेशन के पास एक मैदान प्राप्त कर लेने पर सन १७८७ में मेरिलिबोन क्रिकेट क्लब की स्थापना की. मध्य लंदन के तीव्र विकास ने लार्ड को दो बार अपनी टर्फ़ को उठा कर कहीं और चल देने को मजबूर किया और अंततः उन्हों ने उसे ग्राम्य सेंट जोंस वुड पर बिछा दिया, जहां एम सी सी ने १८१४ में अपना पहला मैच खेला और १८६६ में १८,३३३ पौंड (लगभग ३,२९,९९५ रुपए) के ख़र्च से मैदान की मिल्कियत प्राप्त की. पैविलियन को विस्तार दिया गया, स्टैंड बनाए गए और मिडलसेक्स काउंटी क्रिकेट क्लब को आमंत्रित किया गया कि वह लार्ड्स का इस्तेमाल अपने घरेलू मैदान के रूप में करे. मिडलसेक्स क्लब अपने साथ प्रथम श्रेणी क्रिकेट की प्रचुरता ले आया.

पिच का झगड़ा. उस के बाद से लार्ड्स पहले नंबर का मैदान बन गया. इंगलैंड का दौरा करने वाले पहले औपनिवेशिक क्रिकेट खिलाड़ी थे सन १८६८ में वहां खेलने वाले आस्ट्रेलिया के मूल निवासी, जिन्हों ने अंतरालों के दौरान बूमरैंग प्रक्षेपण के प्रदर्शन पेश किए. दस साल बाद प्रथम आस्ट्रेलियाई भ्रमणकारी टीम आई जो मूलनिवासियों की नहीं थी. तब एम सी सी की एक सशक्त टीम तितर बितर हो गई, क्योंकि केवल साढ़े चार घंटों के खेल में ही वह पराजित हो गई. जैसा कि लार्ड्स के इतिहासकार सर पेल्हैम वार्नर ने लिखा है : "आधुनिक क्रिकेट की शुरुआत-इसी आस्ट्रेलियाई धावे से मानी जा सकती है और इस से हमारा अपार कल्याण हुआ, यह बात निश्शंक हो कर कही जा सकती है."

यह क्रिकेट के स्वर्णिम युग का प्रारंभ था, जब खेल पर डब्ल्यू जी ग्रेस छाए थे, "एक महाकाय, शक्तिशाली व्यक्ति, जिन की चमकदार काली दाढ़ी लगभग उन की कमर तक पहुंचती थी, कुछ कुछ झुकी आंखें, लंबी बलिष्ठ बांहें और बड़े बड़े हाथ."

अपने बल्ले से. ग्रेस पहली बार १८६४ में लार्ड्स पर खेले, अपने सोलहवें जन्मदिन के कुछ ही समय बाद और १९०८ में, ६० की उम्र में रिटायर हुए. इस बीच यह महामानव खेल को लोकप्रिय बनाने के लिए इतना कुछ कर चुका था, जितना और किसी ने नहीं किया था. अपने खेल जीवन में उन्हों ने ५४,८९६ रन बनाए. इन में से १२,६९० रन उन्हों ने लार्ड्स में ही, जहां

उन्हों ने १९ शतक बनाए—और एम सी सी के लिए ६५४ विकेट भी लिए.

ग्रेस को लार्ड्स के सदस्यों के प्रवेश द्वार 'ग्रेस गेट' पर खुदे शब्दों 'महान क्रिकेट खिलाड़ी, १८४८-१९१५' द्वारा स्मृतिबद्ध कर दिया गया है. उन्हों ने अपने जीवन काल में ही इस मैदान के व्यक्तित्व को एक छोटे से, सामाजिक स्तर पर विशिष्ट क्लबं के स्थल से क्रिकेट के सर्वमान्य अतरराष्ट्रीय केंद्र के रूप में विकसित होते देख लिया था. जब उन्हों ने १८९६ में आस्ट्रेलिया के विरुद्ध इंगलैंड का नेतृत्व किया, तो द टाइम्स ने "मैदान का अतिक्रमण करती भीड द्वारा प्रदर्शित शोर-गुल और हुल्लड़बाज़ी" के ख़िलाफ़ बड़ा बावेला मचाया था. दर्शक संभवतः इस दृश्य से सम्मोहित हो गए थे कि एक गेंद बड़ी सफ़ाई से ग्रेस की दाढ़ी के पार निकल गई थीं.

ग्रेस ने जितनी कल्पना की होगी, क्रिकेट का खेल संभवतः उस से कहीं ज़्यादा विस्तृत हो चुका है. आस्ट्रेलियाइयों के बाद दक्षिण अफ्रीका, न्यू ज़ीलैंड, भारत, पाकिस्तान तथा वेस्ट-इंडीज़ के दल लार्ड्स मैदान में उतर चुके हैं. अनेक अन्य महान खिलाड़ी उसी मैदान पर ख्याति अर्जित कर चुके हैं मसलन डान ब्रैडमैन, जैक हाब्स और गैरी सोबर्स.

लेकिन 'द ओल्ड मैन' (ग्रेस) के लिए क्रिकेट प्रेमियों के मन में हमेशा विशिष्ट स्थान रहा है. एक क़िस्सा ख़ूब चलता है: १९३९ की गरमियों में लांग रूम में बैठे एम सी सी के दो संदस्य मैच देख रहे थे. दोनों ख़ामोश बैठे रहे—एक मज़दूर अंदर आया, उस ने डब्ल्यू जी ग्रेस की आवक्ष मूर्ति को पीठिका से उतारा, झोले में डाला और चलता बना. तब एक बाला: "हे ईश्वर! इस का मतलब [illegible] गई."

इंगलैंड की किसी भी अन्य संस्था [illegible] लार्ड्स भी परिवर्तन की हवाओं से [illegible] रहा है. एम सी सी के सदस्यों को तब [illegible] फ़र्क़ नहीं पड़ा, जब १९६२ में १५६ [illegible] चले आ रहे इस फ़र्क़ का उन्मूलन [illegible] गया कि ग़ैर पेशेवर खिलाड़ी को जेंटल[illegible] नाम से परिभाषित किया जाए; १९६२ [illegible] खेल का हर खिलाड़ी महज़ क्रिकेटर [illegible] यहां तक कि १९७३ में वेस्टइंडीज़ की [illegible] विजय प्राप्त की, और उस के गिरा[illegible] कैलिप्सो गाते वेस्ट इंडियन समर्थकों ने [illegible] नाचते हुए आनंदोत्सव मना डाला, तब [illegible] असमंजसकारी दृश्य के बावजूद पैविलि[illegible] मूंछें फड़कने के अलावा कुछ नहीं [illegible]

मनोरंजन ही अंततः इस सुहाने [illegible] एकमात्र और भव्य उद्देश्य है, जो इंग[illegible] राष्ट्रीय खेल का केंद्र है. लंबे अरसे तक [illegible] के सर्वाधिक ख्यातनामा बल्लेबाज़ [illegible] एक बार प्रशस्तिगान किया था: "[illegible] और एक बार फिर क्रिकेट! यह [illegible] मात्र ही जादुई है, यह हमें एक ही [illegible] और लंबी छलांग में उस दुनिया में ले [illegible] जिस का इतज़ार हम पूरी सर्दियों में [illegible] हैं."

ऐसी ही बात भीड़ के बीच [illegible] एक छोटे क़द के आदमी ने कही थी. [illegible] सी के सचिव जैक बेली ने उस से [illegible] स्वर में पूछा था—'खेल नज़र भी आ [illegible] या नहीं?' उत्तर मिला: 'पूरी तरह तो [illegible] लेकिन मैं इसी बात से खुश हूं कि मैं [illegible] हूं.'

चित्रांकन, कीथ रिचेंस, ऐतिहासिक सामग्री एम सी सी के सौजन्य से; पारदर्शियां, कूपर ब्रिजमैन लायब्रेरी; कालपिता का छायाचित्र, [illegible]
लार्ड्स का छायाचित्र: पैट्रिक ईगर.

पाठशाला : हास्यशाला

मुझे संगीत के इतिहास की क्लास में ख़ासा मज़ा आता था, क्योंकि इस के प्राध्यापक बड़े विनोदप्रिय थे. एक परीक्षा में उन्हों ने निम्नलिखित प्रश्न को भी शामिल किया : बाक के २० बच्चे थे और उन्हों ने अपना अधिकांश जीवन . . .में बिताया.

कुछ छात्रों ने मौक़े का मज़ा लेने के ख़याल से रिक्त स्थान में भरा 'बिस्तर'. कुछ अन्य ने, गंभीरता दरशाते लिखा. 'जरमनी'. लेकिन जो उत्तर मुझे सटीक लगा वह एक ऐसे छात्र द्वारा दिया गया था, जिसे बड़े परिवारों की दुर्दशा का व्यक्तिगत अनुभव था, उस ने लिखा : 'ऋण'

—पी ज़ेड

मिशिगन स्टेट यूनिवर्सिटी में हमारी अर्थशास्त्र की कक्षा में ५०० विद्यार्थी थे और कक्षा एक बड़े से हाल में लगती थी. एक सत्र के दौरान प्राध्यापक ने हम से कहा कि हम जिन प्रश्नों के उत्तर जानना चाहते हों, वे उन्हें लिख कर दे दें. उस के बाद उन्हों ने कई प्रश्न पढ़े और उन के उत्तर दिए. फिर एक ऐसे प्रश्न की बारी आई, जिस में पूछा गया था : 'क्या आप पता लगाने की मेहरबानी करेंगे कि दूसरी पंक्ति के मध्य में उपस्थित वह मोहक व्यक्तित्व कौन है जिस के सुनहरे बाल हैं?'

"ओ के," प्राध्यापक बोले. "जिस व्यक्तित्व का ज़िक्र इस नोट में है, क्या वह खड़े होने का कष्ट करेंगे?"

इस पर एक लड़का कुछ हैरान परेशान सा उठ खड़ा हुआ और हाल पुरुषों की तालियों की गड़गड़ाहट से भर गया.

—पैटी स्मिथ

मैं सुपर बाज़ार जाने वाली थी कि मेरा बेटा, जो विश्वविद्यालय का छात्र है और बड़े कम बजट में गुज़र करता है, मुझ से बोला कि मैं उस के लिए कोई शेविंग क्रीम लेती आऊं.

"कौन सी ले आऊं?" मैं ने पूछा.

"मुझे नहीं पता," उस ने कहा.

"तुम कौन सी इस्तेमाल करते हो?"

"पिता जी की," उस का जवाब था.

—एलिज़ाबेथ किंग

टेनेसी के एक विश्वविद्यालय की एक लाइब्रेरी के बाहर की दीवार पर कुछ खूंटियां लगी हैं. वहीं पर एक तख़्ती भी लगी है : 'केवल संकाय के सदस्यों के लिए.' किसी विनोदी छात्र ने पेंसिल से जोड़ दिया : 'आप यहां हैट और कोट भी टांग सकते हैं.'

—'लाफ़ डे' (डबल डे)

मेरा बेटा जब कभी छुट्टियों में घर आता है, मैं उस की पैंटें ख़ुद रगड़ रगड़ कर धोती हूं. फिर हमेशा यह भी होता है कि उस की जेबों में ठुंसे रुपए भी पैंट के साथ धुल जाते हैं. एक बार जिज्ञासावश मैं ने उस से पूछा कि वह अपने पैसे बटुए में क्यों नहीं रखता. इस पर उस ने जो जवाब दिया उस की तार्किकता में कोई कमी ढूंढ़ पाना कठिन था. "ममी," वह बोला, "बटुआ तो मैं भूल भी सकता हूं कि कहां रखा है, लेकिन पैंट कैसे भूलूंगा."

—एम जेड

मुनिया रानी बढ़ती जाये
घने काले, बालों का जादू जगाये
मोती से सफ़ेद दांतों को चमकाये
गाय छाप ब्राह्मी आमला केश तैल
—उसके बालों को और घने बनाये
सबको सुहाये मन में भाये
बालों का ये कालापन, घना व चमकीलापन
गाय छाप काला दन्त-मंजन
—उसके दांतों को चमकाये
मोती से सफ़ेद व मज़बूत बनाये
सेवाश्रम के गाय छाप ब्राह्मी आँवला केश तैल
और काला दन्तमंजन
COW BRAND
BLACK
TOOTH POWDER
heros -AS-151 F HN

प्रेम के दो रूप

१. कौन समझेगा

—एलिज़े मैक्ले

'एप्रोचिंग आटम' से संक्षिप्त

पति उवाच :
सत्तर बरस का कोई आदमी
दर्जन भर उच्च पदों का अधिकारी
पति, पिता, दादा
कैसे कर सकता है स्वीकार कि वह डरता है रिटायरमेंट से?
पैंसठ साल की उमर में भरोसा था मुझे
कि पांच साल के एक्सटेनशन के बाद
रिटायर होने के लिए मैं हो जाऊंगा तैयार.
सच तो यह है कि तब
मन में था जाने तब तक जिऊंगा भी या नहीं.
लेकिन पलक झपकते साल दर साल गुज़रते चले गए ...
मेरे डेस्क पर रखा कलेंडर कहता है—अब बस महीना भर बाकी है...
जाने से इनकार कर दूं—तो क्या हो?
कुरसी से ख़ुद को बांध लूं?
दफ़्तर में भीतर से ताला लगा लूं?
धरना दूं? अनशन कर दूं?
आज पहली बार समझा हूं असहायता क्या होती है?
मुझ असहाय को अब कोई तो सहारा दे!

पत्नी उवाच :

मानना तो नहीं चाहती, पर मानना पड़ता है
मुझे मनचाहा करने की आदत पड़ गई है.
और अब ये सारा दिन घर में घुसे रहेंगे
तो क्या होगा ?
ये कमरे को बेहद घेर लेते हैं.
हां, मेरा कुछ काम भी कराएंगे.
पर कहां थे ये ज़ब बच्चों के खिलौनों से घर अटा था,
और तब ...
जब बच्चों के साथ साथ मुझे भी चेचक निकल आई थी.
कहां थे ये जब जेनीफ़र के दांत निकल रहे थे
कहां थे जब टिम का हाथ टूट गया था,
और तब कहां थे जब दिन भर मैं इस को उस को
कार से यहां वहां पहुंचाती फिरती थी ?
हां, तब ये दफ्तर जो जाते थे !
और दफ्तर के काम से दौरे लगाते थे !
इन को बस यही आता है.
ये नहीं जानते—
नन्ही उंगलियों की पकड़, जौन के तैराकी के सबक़,
उस के पुष्ट शरीर का धूप में चमकना,
पांचवीं कक्षा में जेनी का स्कूली नाटक की लाइनों को रटना,
संगीत का अभ्यास, घर का काम, हंसी मज़ाक, खेल कूद...
इन्हों ने कब देखी हर चीज में वह चमक
जो बच्चों के संपर्क से आती है.
इन्हें तो यह तक पता नहीं कि
बड़े हो कर बच्चे सब चले गए हैं.
और अब इस अजनबी जगह में जिसे हम घर कहते हैं
ये कैसे वक्त काटेंगे ? क्या करेंगे ?
देखने में ये सहमे सहमे लगते हैं.
जैसे पहली कक्षा में स्कूल जाते समय टिम
अपना डर छिपाता रहता था.
हे भगवान, मुझे सहारा दो
कि मैं फिर से घर में इन का स्वागत कर सकूं.

पति उवाच :

दुनिया घूमने की तमन्ना हमें न जाने कब से थी
पर महंगाई हमारी बचत को खा जाती

और हम यात्रा वर्णनों या पिछवाड़े की दावतों से
संतोष कर लेते.
और फिर हमें पोते पोतियों से
पिक्चर पोस्टकार्ड मिलने लगे—
एम्स्टर्डम, कोपेनहैगन, एथेंस, रोम.
"शानदार! वाह! हम शायद कभी घर न लौटें!"
"इन के पास अपनी फूटी कौड़ी नहीं,"
पत्नी ईर्ष्या से कहती,
"और दुनिया भर की सैर कर रहे हैं!"
और अब उस दिन उस की आंखें दमकने लगीं.
उस ने पूछा, "हम नहीं जा सकते क्या?
सस्ते जहाज़ों से, रेल के दूसरे दर्जों से
काम चला लेंगे.
कामचलाऊ होटलों, गेस्ट हाउसों, सरायों में
ठहर लेंगे.
और नाश्ते में डबलरोटी काफ़ी से काम चला लेंगे.
लंच और डिनर भी ऐसे ही निपटा लेंगे."
मैं उस से कभी ना नहीं कर पाया.
पर आप से क्या छिपाना, मैं डरता था.
किस से? कहते हुए शर्म आती है, असुविधा से.
मुझे ख़ास तरह रहने की आदत है—
ब्रेकफ़ास्ट पर अंडा.
इतवार को भेड़ की टांग.
सुबह का अख़बार.
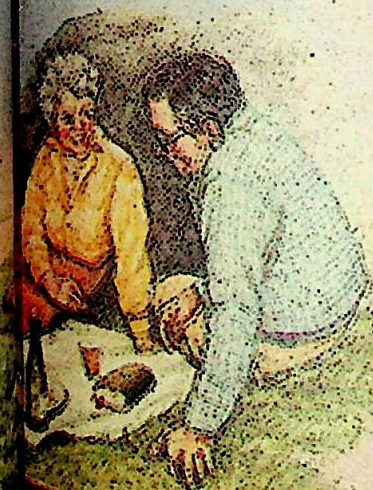
जानी पहचानी ज़िंदगी सुखदाई है और उत्साह की विनाशक भी.
मैं ने अपनी बगिया के फूल तक ध्यान से नहीं देखे.
आज जो लहलहाते भुट्टों को और गमकते फूलों को देखा
तो विस्मय से मानो सांस ही रुक गई!
पिछले हफ़्ते आलप्स पर्वत के हिमाच्छादित शिखर को देख कर
मुझे इतना उत्साह और बल मिला
जितना कभी किसी पौष्टिक भोजन से नहीं मिला.
हालांकि उस शाम हम डिनर नहीं कर पाए,
बस, लंच के बचे सामान से गुज़ारा करना पड़ा.
पर किसी खेत की मुंडेर से लग कर
मोटी रोटी के उस टुकड़े को कुतरना चबाना
शांति और संतोष, हर्ष और काव्य का सर्वोत्तम अनुभव था
क्योंकि मेरे पास थी मेरी प्रिया सूखे पनीर को कुतरती हुई
एक हाथ से सफ़ेद बालों की नटखट लट को पीछे हटाती हुई.
उस की आंखों में दमक थी.

पत्नी उवाच :

पिछली रात हमारी रेलें छूट गईं
एक स्टेशन पर यह थे और दूसरे पर मैं थी.
पहले तो मैं शांत थी. फिर फ़िक्र बढ़ने लगी.
और एक नई समझ कौंधी.
मैं ने जाना कि मेरी सार्थकता इन पर निर्भर है कितनी
ये न आएं तो मैं घर नहीं जाना चाहती
कहीं नहीं जाना चाहती, कुछ नहीं चाहती.
मैं अपने आप से कहती रही
कुछ नहीं हुआ है, बस, कहीं पर ट्रैफ़िक जाम है,
या इन की घडी ग़लत है.
मुझे शांत प्रतीक्षा करनी है, चेहरे को निरुद्विग्न रखना है
क्योंकि यह जगह सरे आम है.
लेकिन भय ने गला बंद कर दिया, सांस रुकने लगी.
मैं ने सोचा—यही सब होगा इन की मृत्यु पर भी.
न मैं रो सकूंगी, न बाल नोच पाऊंगी.
पूरी तरह शांत और गंभीर बने रहना पड़ेगा.
इन के पद की गरिमा को निभाना पड़ेगा.
हमारे जितनी उमर वालों से धैर्य ही अपेक्षित है.
कौन समझेगा कि सत्तर की सीढी पर
यह संभव है कि
प्रेम तेईस की उमर से कहीं ज्यादा हो ?

२. बर्फ़ में उगा फूल

—यूजीनिया गिंज़बर्ग

यूजीनिया गिंज़बर्ग उन लाखों निर्दोष सोवियत नागरिकों में से थीं जिन्हें तीसादि दशक के अंत में स्तालिन के शुद्धि आंदोलनों का शिकार हो कर साइबेरिया के बर्फ़ानी बीहड़ों में निष्कासित जीवन व्यतीत करना पड़ा. अधिकांश समय वे कोलीमा के स्वर्ण खदानों के क्षेत्र में रहीं. वहां उन्हें ने कल्पनातीत अत्याचार देखा, लेकिन मानव की अदम्य इच्छाशक्ति का दर्शन भी उन्हें वहीं मिला.

कंटीले तारों, पहरे के मचानों, ख़ाना तलाशियों, कर्फ़्युओं और काल कोठरियों की इस दुनिया में भी क्या यह संभव है कि कोई किसी से प्यार कर पाए?

मुझे याद आते थे अपनी जवानी के वे दिन जब नारवे के उपन्यासकार नूत हामसुन की प्रेम परिभाषा पढ़ कर मैं विभोर हो उठती. उस ने लिखा था: "प्रेम क्या है? गुलाब की लतरों के बीच सरसराती मादक बयार . . .तन बदन में दपदपाती सुनहरी लौ . . ."

लेकिन कोलीमा के शिविरों में 'प्रेम' का मतलब था काम के दौरान मौक़ा देख कर किसी कोने या फिर संभव हो तो शिखर से दूर किसी झोंपड़े में गंधाते परदे के पीछे झटपट निपटाई गई ख़तरनाक मुलाक़ात. हर वक़्त डर लगा रहता था पकड़े जाने का, और पकड़े जाने पर किसी ऐसी जगह मज़दूरों के दल में शामिल कर दिए जाने का जहां उस क्षणिक प्रेम प्रसंग की क़ीमत अकसर अपनी जान दे कर चुकानी पड़ती थी.

मेरे कई कामरेडों ने इस समस्या का हल निकाल लिया था. वे 'क्रांतिकारी नैतिकता' में विश्वास करने लगे थे. वे कहते, "कोलीमा में सच्चा प्रेम असंभव है—क्योंकि यहां मानवीय अस्मिता को ओतपोत कर डालने वाला प्रेम ही पनप सकता है."

हमारे सिद्धांतवादी अपनी गरमागरम बहसों में कुछ भी बघारते रहें, प्रेम वहां भी होता था. कभी कभार वह हमारी झोपड़ियों में आता—लांछित, लज्जित, कलुषित—लेकिन फिर भी सच्चा प्यार, वही गुलाब की लहरों के बीच सरसराती मादक बयार . . .

वह अभिनेता था और वह थी नर्तकी. एक समय था जब अपने पेशे के कारण उन का समाज में ऊंचा स्थान था. मगादान लेबर

कैंप में उन्हें सांस्कृतिक दल में रखा गया. था. इन बंदी कलाकारों का काम था अधिकारियों का मनोरंजन करना. क़ैदी कलाकारों को औरों के मुक़ाबले बेहतर खाना मिलता और किसी न किसी बहाने वे पहरेदारों के बिना इधर उधर आ जा सकते थे.

जब तक वे दोनों शिविर के बाहर मिल लिया करते थे. कैसा सुख था! ऐसे अवसरों की दुर्लभता और क्षणभंगुरता के कारण सुख की प्रतीति और भी तीव्र होती थी. पांच महीने यह चलता रहा. अधिकारियों को इस का पता तब चला, जब वह मां बनने वाली हो गई. गर्भवती स्त्रियों के लिए एक ही राह थी. यह राह एलगिन कैंप को जाती थी, जहां प्रसूताओं का शिविर था.

नर्तकी की पोशाक और नाज़ुक सैंडिलों के बदले अब उसे मिले क़ैदियों के मोटे जूते और फटी पुरानी रूई की बंडी. छः महीने का होते होते उस का नन्हा बेटा चल बसा.

नर्तकी से मिलने के लिए अभिनेता ने बहाना लगाया कि उस की आवाज़ जाती रही है. उस ने कहा कि अब अभिनय उस के बस का नहीं रहा. जान पहचान के एक मुक़ादम ने उसे बुरखाला के लेबर कैंप में भिजवा दिया. ये स्वर्ण खदानें एलगिन के पास ही थीं.

अभिनेता के सुखमय जीवन के बदले अब बेचारे को बुरखाला की खदानों में कड़ी मेहनत करनी पड़ती. आख़िर वह बुरी तरह बीमार पड़ गया. लेकिन कुछ समय बाद बहुत कह सुन कर वह उत्तरी शिविरों के सांस्कृतिक दल में शामिल हो ही गया. यह दल कभी कभी शिविर अधिकारियों के मनोरंजन के लिए एलगिन भी जाता था.

वे मिले! आमने सामने, प्रत्यक्ष! हर्ष और वेदना से उन की बोलती बंद हो गई. एलगिन शिविर के सभागार के विंग्स में वह खड़ी [illegible] सुंदरता साथ छोड़ चुकी थी. २६ वर्ष की [illegible] में वह बेहद बूढ़ी नज़र आती थी. हड्डियों [illegible] बस ढांचा भर. पर उस के मन की मुराद [illegible] आई थी.

फिर वह बह पड़ी. बार बार कहती रही [illegible] कैसे उस का बेटा बिलकुल अपने पिता [illegible] गया था. उस के नन्हे नन्हे नाख़ून तक [illegible] के नाख़ूनों जैसे थे. बेचारा कुपोषण से [illegible] गया. मुझ अभागन मां की छाती में [illegible] नहीं उतरता था. बोलते बोलते [illegible] रुकती न थी. अभिनेता ने बेचारी के हाथ [illegible] उसे चुप कराने की कोशिश की. कहा कि [illegible] के और बच्चे होंगे. उस ने जो रोटी [illegible] शक्कर बचा रखी थी, वह प्रेमिका की बंडी [illegible] जेब में डाल दी.

शिविर के अधिकारियों में अभिनेता [illegible] कुछ रसूख़ हो गया था. कह सुन कर [illegible] प्रेमिका को 'आसान' काम दिलवा दिया— [illegible] अस्तबल में घोड़ों की निगरानी करने [illegible]

धीरे धीरे वह अच्छी होने लगी. [illegible] फिर से निखरने लगा. नियमित रूप से [illegible] पत्र मिलने लगे. पर भविष्य में उन के [illegible] था क्या? दोनों को दस दस वर्ष की [illegible] मिली थी और उस के बाद पांच वर्षों [illegible] नागरिक अधिकारों का अधिहरण. फिर [illegible] उस के पत्रों को सौ सौ बार पढ़ती और [illegible] से दमकने लगती.

एक दिन रसूख़ लड़ा कर अभिनेता [illegible] अपने लिए एक नक़ली ड्यूटी लगवा ली [illegible] शिविर से पांच किलोमीटर दूर निर्जन [illegible] प्रेमिका और उस के घोड़े के आने की [illegible] करने लगा. मरियल घोड़े को एक पेड़ से [illegible] दिया गया. लेकिन किसी दुष्ट ने उन्हें [illegible] लिया और अधिकारियों से शिकायत [illegible]

अगले दिन हाज़िरी के समय ड्यूटी गार्ड क़ैदियों के अपराधों की सूची ज़ोर ज़ोर से पढ़ कर सज़ा की घोषणा कर रहा था. सूची के बीच उस ने पढ़ा, "मर्द और औरत के बीच संबंध. उस दौरान दो घंटे तक घोड़ा निष्क्रिय खड़ा रहा. पांच दिन की काल कोठरी." इस अपराध की घोषणा से सब हंसने लगे. पर तुरंत ही हमारी हंसी बंद हो गई. हमारे दिल डूबने लगे. काल कोठरियों के बदबूदार सर्द तख़्तों पर पांच रातों में इन बेचारों पर क्या गुज़रेगी? ये दोनों तो गए काम से.

हाज़िरी पूरी हुई. जल्द ही एक गार्ड आएगा और नर्तकी को काल कोठरी ले जाएगा. वहां के सर्द एकांत की कल्पना मात्र से ठिठुरती नर्तकी ने चिथड़ों को शरीर से लपेट लिया. वह कहने लगी, "काश, वे उसे छोड़ दें. उस बेचारे को तो खदान के दिनों से प्लूरिसी है."

अचानक नर्तकी ने सुना—कोई कह रहा था, "कहां है वह! मैं उस के लिए ख़त लाई हूं." यह आवाज़ पानी वाली छोकरी की थी. शिविर के उस पार से वह एक पत्र छिपा लाने में सफल हो गई थी.

नर्तकी ने पत्र पढ़ा. ख़ुशी से दीवानी हो गई. बोली, "भगवान का शुक्र है! सब ठीक हो गया! वह काल कोठरी नहीं जा रहा. यागोद-नोय के शिविर अधिकारियों के मनोरंजन के लिए उस की ज़रूरत है. रही मैं—मेरा क्या है! मैं सब झेल लूंगी."

•

उस दिन जिन अपराधियों को सज़ा सुनाई गई थी, उन में सब से पहले वही दंड शिविर पहुंची. वह जीवित नरक के पांच दिन भोगने आई थी, पर उस की चाल में गर्वीली नर्तकी वाली ठसक थी.

उन दोनों से आखिर किसे ईर्ष्या न होगी!

बुद्धं शरणं व्यापारम्

—स्टैनले कारनो

दुनिया में दूसरी जगह ऐसे कार्य व्या...

पेड़ों से झरती चांदनी तले, भूमि पर मौलि सूत्र के घेरे से बनाए चौकोर आसन पर तीन भिक्षु सफ़ेद लबादा पहने व पद्मासन लगाए एक व्यक्ति के गिर्द बैठे हुए थे. लोबान की महक दीपदानों और धूपबत्तियों की सुगंध में मिल जुल गई थी. मुरगों, बत्तखों व हरे नारियलों की बलि चढ़ाने के बाद तीनों भिक्षु वेदी पर स्तुति गान गाने लगे. स्तुति का प्रथम चरण समाप्त होने पर सफ़ेद लबादे वाले व्यक्ति ने पुष्प पंखुड़ियां और मुरमुरे आकाश पर न्यौछावर किए; और हवा के एक झोंके ने सहसा उस वन प्रांगण को भक्ति स्नात कर दिया.

श्वेत परिधान वाला व्यक्ति—उडौम यनरुडि (उदयम अनिरुद्धि)—मेरा मि... भागीदार था. इस अनुष्ठान का आयोज... ने दक्षिणी थाईलैंड में खाओ सून स्थित ... खदानों से दुष्टात्माओं को भगाने के ... किया था. चोर मंडलियों ने हमारे साथ ... को इस क़दर दबोच लिया था कि ... दीवालिया हुए जा रहे थे. उडौम इंगलैं... लिखा पढ़ा अत्याधुनिक आदमी है. न्यू ... के व्यापारियों के साथ उस का उठना बैठ... साथ ही प्रेतात्माओं, अप्सराओं व जादू ... में उस का बराबर विश्वास है.

"इस से कुछ फ़ायदा होगा?" अ... के बाद मैं ने उस से पूछा.

उडौम बोले, "कम से कम हमें उ...

... (अगस्त १९८१) से संक्षिप्त. कापीराइट, १९८१ प्रनर एंड यार, यू एस ए, इनकारपोरेटेड न्यू यार्क

बैंकाक के एक बैंक का उद्घाटन समारोह. भिक्षुओं के मंत्रोच्चार के बीच ग्राहक खाते खोल रहे हैं

...यद नाक भौं सिकोड़ी जाए, लेकिन थाईलैंड में....

ज़रूर ज़्यादा मिलने लग जाएगा."

वाल स्ट्रीट में ऐसी हरकत पर भले ही कोई नाक भौं सिकोड़े, पर थाईलैंड में यह आम है. धर्म और अंध विश्वास में थाई लोगों को कोई विरोध नहीं दिखता. सदियों पहले भारत से ग्रहण किए कर्मकांड एवं परंपरागत बौद्ध रीति रिवाजों को उन्हों ने आदिकालीन जीववाद से मिला दिया है. ज्योतिष, हस्तरेखा विज्ञान, मुखाकृति विज्ञान, पारेंद्रिय संवादों, तिलों मस्सों के तात्पर्य और छींकों के शकुन अपशकुन से ये हमेशा आक्रांत रहते हैं. वशीकरणों और तावीज़ों, चमत्कारी ज़ादुई जड़ी बूटियों, व खानपान और अजेय, सर्वव्यापी एवं शुभ अशुभ शक्तियों के गोरखधंधे से उन की चेतना हमेशा घिरी रहती है.

सियामेरिकन माइनिंग एंटरप्राइज़ नामक हमारी कंपनी भी, जिस में उडौम और मेरे अलावा दर्जन भर अन्य भागीदार हैं, अलौकिकता में गहन आस्था का परिणाम है. १९६१ में, उडौम और मैं एक लब्धप्रतिष्ठित भविष्यवक्ता भिक्षु केओ* के दर्शन करने

*रोमन हिज्जों के अनुसार यह नाम केओ है. मगर थाई जनता व स्थानों के नामों का मूल संस्कृत अथवा उन भाषाओं में है जिन में प्रारंभिक बौद्ध शास्त्र लिखे गए थे. ऐसा लगता है कि केओ (या किव) संस्कृत के किंपुरुष या किंनर (किन्नर) का अपभ्रंश अथवा अवशेष है. संस्कृत में रचे शास्त्रों में किंनर वैभव देव कुबेर के दूत बताए गए हैं, जिस का मतलब यह हुआ कि वे लाभ अथवा हानि संबंधी भविष्यवाणियां कर सकते हैं.

फिलिप जौंस ग्रिफिथ्स/मैग्नम फोटोज़, टाइम लाइफ बुक्स के सौजन्य से

गए थे. थाईलैंड की खाड़ी में बान सैन नामक गांव के मंदिर में रहने वाले केओ बैंकाक के सर्वोच्च व्यापारी वर्ग में अत्यंत सम्मानित व लोकप्रिय हैं.

केओ ने उडौम की दाहिनी हथेली पर एक नज़र डाली, उस के जन्म का समय और तिथि पूछी और तत्काल उस की कुंडली बना कर नक्षत्र स्थिति का अध्ययन करने लग गए. कुछ ही मिनट बाद वह पुनीत स्वर में बोले, "तुम्हारा वैभव धरती के गर्भ में है."

श्वान वर्ष में जनमा आदमी

उस रात बैंकाक लौटते समय उडौम कार में स्तब्ध बैठा रहा. उस का एक पुराना साथी एक अरसे से उसे दक्षिणी सागर तट पर, मलयेशियाई सीमा से लगी बन सौंग की एक एंटिमनी खदान के प्रति लुभाता आ रहा था. पर अब इस प्रस्ताव के प्रति उस के सारे संशय मिट गए. कुछ ही दिन बाद उस ने सियामेरिकन माइनिंग एंटरप्राइज़ का गठन कर डाला.

उडौम को अतिरिक्त पूंजी की ज़रूरत पड़ी तो केओ ने फिर भविष्यवाणी की कि श्वान वर्ष में जनमा आदमी ही उस का संभावित हिस्सेदार होगा. और लो, होनालूलू का एक साहूकार सहसा बैंकाक पहुंच कर कंपनी के शेयर ख़रीदने की पेशकश कर बैठा. उडौम ने उस की जन्म तिथि पूछी : वह श्वान वर्ष में ही जनमा था!

मंदिर में बैठे बैठे ही केओ ने खदान के नक़्शे देख कर वे जगहें दरशा दीं, जहां खुदाई की जानी चाहिए. पर इस बार उडौम ने भिक्षु के मशवरे की उपेक्षा कर दी और वर्षों भू-भौतिकीय सर्वेक्षण पूरा होने की प्रतीक्षा करता रहा. पर सर्वेक्षण ने जब भिक्षु के बताए स्थानों में ही कच्चा एंटीमनी मिलने की पुष्टि की [illegible] उडौम पश्चात्ताप से बिंध गया.

उत्खनन क्षेत्र में सर्वाधिक महत्व दिया [illegible] दुष्टात्माओं से खदान की रक्षा करने वाले [illegible] चैत्य के निर्माण को. इस के लिए डैंग नाम [illegible] एक चैत्य विशेषज्ञ नियुक्त किया गया. [illegible] क़दम था कतिपय हितैषी आत्माओं की [illegible] जो व्यवसाय की रक्षा कर सकें.

समाधि मग्न हो कर डैंग ने दो पेशे[illegible] लुटेरे भाइयों की प्रेतात्माएं ढूंढ़ निकालीं. [illegible] शताब्दी पूर्व ये भाई इसी क्षेत्र में रहते [illegible]

उडौम ने केओ से मंत्रणा की तो [illegible] दैवी संधान के बाद उस ने अनुमोदन [illegible] दिया. अतः डैंग ने फिर से समाधि [illegible] और उठने के साथ उस ने सूचना दी कि [illegible] प्रेत चौकीदारी के लिए राज़ी हैं.

चैत्य का उद्घाटन पर्व अत्यंत [illegible] रहा. अगरुधूम के बादलों में फलों व [illegible] पदार्थों के चढ़ावे और परंपरागत मंत्रोच्चा[illegible] साथ भिक्षुओं के अनुष्ठान शुरू होते ही [illegible] असबाब लादे परेशान मुसाफ़िरों के [illegible] आते दिखाई दिए—पास ही कहीं एक रे[illegible] चलते चलते अचानक बिगड़ गई थी. अ[illegible] समाप्त होने के कुछ ही मिनट बाद [illegible] रेलगाड़ी ठीक हो कर चल भी दी. उडौ[illegible] इस से निष्कर्ष निकाला कि प्रेत बंधु[illegible] रेलगाड़ी इस लिए रोक दी थी कि अनुष्ठा[illegible] व्याघात न हो.

शुद्धाचारी प्रेत

अतीत में दुर्व्यसनी होने के बावजू[illegible] बंधु कालांतर में शुद्धाचारी हो गए थे [illegible] अशोभन व्यवहार के प्रति असहनशील [illegible] थे. इस लिए किसी के गाली गलौज [illegible] वे खदान में छोटी मोटी दुर्घटना करवा [illegible]

धीरे धीरे मामूली से मामूली ख़ता पर भी वे बेइंतहा भड़कने लगे. खदानों का अमरीकी मैनेजर एक बार चैत्य के वार्षिक समारोह में शामिल होने से चूक गया. कुछ ही दिन बाद शाम ढले कुत्तों की एक टोली उस के घर को घेर कर रात भर हूकती रही. और फिर यह हर रात का दस्तूर हो गया. त्रस्त मैनेजर ने आख़िर इस्तीफ़ा दे दिया.

केओ ने अब अपना धंधा बंद कर दिया है. पर उडौम अब भी दिव्य पुरुषों की भविष्यवाणियों पर निर्भर करता है. इन में से एक है भूतपूर्व सरकारी अफ़सर चलौर चउडी, जो ख़ुद को १६वीं सदी के प्रसिद्ध भिक्षु लुआंग पू थुअड के एक प्रिय शिष्य का अवतार बताता है. बहुत से थाई यह मानते हैं कि २४०० ईसवी तक अक्षुण्ण रहने वाली वर्तमान बौद्ध विचारधारा के बाद लुआंग पू थुअड का बौद्ध मत ही व्याप्त होगा. इस अटकल ने चलौर के आभा मंडल को और भी दीप्त कर दिया है.

एक दिन हम लोग चलौर के निवास स्थान पर भी गए थे. क़रीब दो वर्ष पहले उसी के माध्यम से उडौम ने पुराने दोस्त सुकिच निमानहिमिंदा की आत्मा से संपर्क स्थापित किया था. अमरीका के थाई राजदूत सुकिच का हृदय गति रुक जाने से इस से कुछ ही दिन पहले स्वर्गवास हो गया था. तीनों के बीच हुए इस संवाद से सुकिच की जायदाद संबंधी अनेक जटिलताएं एकदम सुलझा ली गई थीं. चलौर की एक अन्य विलक्षणता है मानवीय व्याधियों और यांत्रिक अवरोधों का निदान कर लेने वाली उस की प्रज्ञा दृष्टि.

चलौर की सभा प्रति दिन निवास स्थान से संलग्न एक मंडप में होती है. हम पहुंचे तो भीड़ हो चुकी थी. चलौर ने नौ बजे दर्शन दिए—लगभग ७० वर्ष के, ऊंचे पूरे, झीने शुभ्र वस्त्रों में वे शांति, करुणा व ज्ञान की प्रतिमूर्ति लग रहे थे.

वाहनों को आशीर्वाद

दुर्घटनाओं से बचे रहने के लिए वाहनों को आशीर्वाद देना चलौर की अनेक विशेषताओं में से एक है. सभा का प्रारंभ भी इसी से हुआ. एक सहायक ने लुआंग पू थुअड की प्रतिमाओं से उतरे मंत्रपूत धागे बाहर ख़ड़ी कारों आदि से लटका कर उन्हें अभय प्रदान किया. उपरांत प्रार्थनाएं बुदबुदाते और सस्पर्श आशीर्वाद देते चलौर हर कार तक गए. एक कार की बोनेट को कुछ ग़ौर से देख कर वे उस के स्वामी से बोले, "इस की इग्नीशन सुधरवाओ."

मैं ने चलौर से अपना डाक्टरी मुआयना कराना चाहा. फ़र्श पर पालथी मार कर मैं उन के सामने बैठ गया. आंखों के सामने एक सिक्का कर के उस के पार से मुझे देखते हुए उन्हों ने कहा, "तुम्हारे साथ इस के अलावा कोई गड़बड़ी नहीं कि बेहद मेहनत करते हो और अंधाधुंध सिगरेट पीते हो."

धूम्रपान वाली बात हमें विचलित कर गई. उडौम ने भिक्षु चमरुन पानचन के पास चलने का प्रस्ताव रखा जो इल्लती नशेड़ियों का वमनकारी जड़ी बूटियों से उपचार करते हैं. अवज्ञाकारी रोगी को वे जन्म जन्मांतर तक नरक में पड़े रहने का अभिशाप दे देते हैं.

अगले ही दिन हम हरे भरे धान के पहाड़ी खेतों से हो कर बैंकाक से १०० किलोमीटर उत्तर पूर्व में, सारावुरी प्रांत में चमरुन के मठ में जा पहुंचे.

चमरुन बोले, यदि मैं ने चंगा होने की ठान ली हो तो ही वे उपचार करेंगे. मुझे सामने

बैठा कर उन्हों ने अपने साथ साथ एक दीर्घ थाई मंत्र दोहराने का आदेश दिया. पहले तो बिना समझे मैं शब्द दोहराता रहा—पर शीघ्र ही कर्मकांड की प्रक्रिया और कमरे में फैली धूप व फूलों की सुगंध मुझ पर जादू सा करने लगी. उपचार के बाद बमुश्किल खड़े होते हुए मैं आशा कर रहा था कि मंत्रोपचार ने मुझे चंगा कर दिया है. और मैं चंगा रहा भी—पूरे तीन घंटों तक, जब तक लौट नहीं आया.

डिनर के वक़्त मेरे हाथ यंत्रवत सिगरेटों [illegible] चले गए. उडौम ने भौंहें तरेरीं तो मैं [illegible] असमर्थता से कहा, "सुनो, नरक [illegible] अभिशाप का मुझ पर कोई असर [illegible] होगा—क्योंकि मैं बौद्ध नहीं हूं." पर [illegible] की त्योरियां चढ़ी ही रहीं.

इस के एक दिन बाद बैंकाक में मेरी [illegible] एक बस से भिड़ गई तो उडौम बड़ी [illegible] से बोला, "अब भी चेत जाओ."

कार्टून धुन . . .

कार विक्रेता अपने ग्राहक से : बस, क़ीमत को छोड़ दें तो यह हर तरह से किफ़ायती पड़ेगी.

—'फ़ील्ड न्यूज़पेपर सिंडिकेट'

एक रूसी दूसरे से : सच पूछो तो हर सर्दी हमारे असंतोष की तरह ठंडी है. —'[illegible]

वकील जेल में पड़े अपने मुवक्किल से : पैसे जुटाने के मामले में तुम कितने रचनात्मक हो?

—'फ़ील्ड न्यूज़पेपर सिंडिकेट'

प्रेयसी प्रियतम से : हमारी अब और नहीं निभने वाली—मैं मसाले वाली चाय और दही [illegible] पर तुम कोला और आइसक्रीम कोन.

—'कासमोपालिटन'

दुखी पति से पत्नी : हमेशा उज्ज्वल पक्ष देखा करो, प्रिय. संगीतकार मोज़र्ट तुम्हारी उम्र के [illegible] तो उन्हें गुज़रे पंदरह साल हो चुके थे.

—'पंच', इंग्लैंड

हाथ में सूई लिए दंत रोग विशेषज्ञ अपने मरीज़ से : मामूली डंक सा महसूस होगा. या [illegible] ऐसा भी लग सकता है कि घोड़ी ने दुलत्ती झाड़ दी हो.

—'कैंपस लाईफ़'

मेज़बान महिला मेहमानों से बातों बातों में : और फिर कई साल तक घाटे पर घाटा खाने के बाद मेरे पति ने आख़िरकार डाकख़ाने वालों को तख़्तियां बेच बेच कर अपनी क़िस्मत बनाई, [illegible] पर लिखा रहता था—क्षमा करें, यह काउंटर बंद है.

—'सैटरडे [illegible]

सर्वेक्षणकर्ता अपने सहयोगी से : हमारे सर्वेक्षण से साफ़ है कि ७४ प्रति शत लोग [illegible] होने पर उपलब्ध होने वाली रोज़मर्रा की सरकारी सुविधाओं से लाभ उठाने की नहीं सोचते. [illegible] ये बंद कर दी जाएं तो केवल २६ प्रतिशत ही को निराशा होगी.

—'फ़ील्ड न्यूज़पेपर सिंडिकेट'

जब जान पर आ बने

सोलह संकटों के प्राथमिक उपचार

—टामस जे माजेस्कीं

हर वर्ष हज़ारों व्यक्तियों के जीवन में ऐसे क्षण आते हैं जब उन की जान पर आ बनती है. बहुतों की मृत्यु भी हो जाती है. लेकिन समय पर सही चिकित्सा सहायता मिल जाए तो उन में से बहुतों की जान बच भी सकती है. हम यहां स्वास्थ्य संबंधी कुछ ऐसी स्थितियों का वर्णन कर रहे हैं जिन में जान जोखिम में पड़ जाती है. साथ ही यह सलाह भी दी गई है कि ऐसी स्थितियों का सामना कैसे करना चाहिए. हर स्थिति में यह मान कर चला गया है कि डाक्टरी सहायता पाने के लिए या तो ख़बर दी जा चुकी है या दी जाने वाली है.

पेट दर्द

आप के बच्चे के पेट में दर्द है. उस का पेट सख़्त लगता है और आप के छूने पर उसे दर्द महसूस होता है. उस का जी मिचला रहा है और उसे हलका बुख़ार भी है, तो . . .

अपेंडिसाइटिस का पहला प्रमुख लक्षण है सारे पेट में बेचैनी. बच्चे को बिस्तर पर लिटा दीजिए और बर्फ़ की थैली दर्द वाले हिस्से में लगाइए. डाक्टर से बिना पूछे उसे खाने पीने को कुछ न दें. खाने पीने से अपेंडिक्स के फट जाने का ख़तरा बढ़ जाता है और स्थिति गंभीर हो सकती है. किसी भी तरह के पेट दर्द में जुलाब वाली दवा न दें.

कुत्ते का काट लेना

कोई अनजान कुत्ता आप की बच्ची की टांग में काट खाए तो . . .

किसी भी कुत्ते को तब तक पागल समझना चाहिए जब तक कि यह साबित न हो जाए कि वह पागल नहीं है. इस लिए कुत्ते के काट लेने पर तुरंत कारखाई कीजिए. कुत्ते की लार हटाने के लिए काटी जगह को नल के पानी से धो डालिए. इस के बाद गाज़ (पट्टी के टुकड़े) ले कर घाव पर साबुन मलिए और पानी से धोइए. फिर उस पर रोगाणु रहित पट्टी बांध दीजिए. साथ ही उस कुत्ते को पकड़वाने की कोशिश कीजिए और परीक्षण द्वारा यह मालूम करवाइए कि वह पागल है या नहीं.

दम घुटना

पड़ोस के घर में आग लग गई है. पड़ोसी को आग से बचा कर निकाल लिया गया है, पर फेफड़ों में धुआं भर जाने से वह बेहोश हो गया है, तो . . .

ऐसे व्यक्ति को होश में लाने के लिए उस

फैमिली सर्कल (१३ अक्तूबर १९८१) से संक्षिप्त, कापीराइट १९८१ फैमिली सर्कल इनकारपोरेटेड, न्यू यार्क

के मुंह में अपने मुंह से सांस पहुंचानी होती है. पर इस के लिए पहले उस का सिर पीछे की ओर झुका कर निचला जबड़ा उठा दें. इस से सांस आने जाने के रास्ते खुल जाएंगे. इस के बाद उस की नाक बंद कर दें. अब जोर लगा कर मुंह से उस के मुंह में इतनी हवा भरते जाएं कि उस की छाती फूल उठे. प्रति मिनट १२ बार प्राण फूंकते हुए इस क्रिया को जारी रखें.

जल्दी ही निराश हो कर कोशिश न छोड़ दें. कई बार ऐसा हुआ है कि रोगी कई घंटों के प्रयत्न के बाद होश में आ पाया.

छाती के दर्द

आप अपने दोस्त के साथ धीमी गति से दौड़ते चले जा रहे हैं. अचानक उस की सांस उखड़ने लगती है और वह छाती में तेज़ दर्द की शिकायत करता है, तो . . .

उसे लगभग ४५ अंश का काण बनाती स्थिति में लिटा दीजिए. अगर दर्द तेज हो, लगातार हो रहा हो, और कंधों, बांहों और गरदन की ओर जा रहा हो तो उस का मतलब है कि आप के दोस्त को दिल का दौरा पड़ गया है. तुरंत एंबुलेंस बुलवाएं.

जल जाना

गैस जलाते समय अगर कोई थोड़ा बहुत जल जाता है, तो . . .

इस के कई इलाज हैं: जले भाग पर बर्फ का पानी डालना, बर्फ़ या बर्फ़ की थैली लगाना या भीगा कपड़ा ले कर उस भाग का दबाना, सूजन रोकने के लिए जले भाग से चिपक कपड़े के छोटे छोटे टुकड़ों को हटा देना और उस पर कीट नाशक स्प्रे कर देना. लेकिन ज्यादा जल गया हो तो उस की देखभाल डाक्टर द्वारा ही की जानी चाहिए और वह भी तुरंत. डाक्टर के आने से पहले [illegible] हिस्से पर न चिपकने वाली पट्टी या नए [illegible] कपड़े की पट्टी हलके से बांध दें. ज्यादा [illegible] हिस्सा या तो काला पड़ जाता है या [illegible] बिलकुल सफ़ेद.

सांस में अवरोध

दोपहर के भोजन के समय अचानक [illegible] के साथी के गले में गोश्त या खाने का [illegible] टुकड़ा फंस जाता है, तो . . .

ऐसी हालत में उस से पूछिए, वह [illegible] सकता है या नहीं. अगर वह बोल सकता [illegible] तो इस का मतलब है कि हवा जा रही है [illegible] वह कोशिश कर के उस टुकड़े को [illegible] सकता है. अगर बोल नहीं पा रहा है तो [illegible] के कंधों के बीच अपनी गदेली से ज़ोर [illegible] चार धौल जमाइए. गले में फंसे टुकड़े [illegible] हाथ से निकालने की या कुछ पिला कर [illegible] गले में उतारने की कोशिश न करें. इस पर [illegible] अगर उस का गला न खुले तो तुरंत उस [illegible] पीछे खड़े हो कर उस की कमर में बांहें [illegible] दें. एक हाथ की मुट्ठी बांध कर उस [illegible] अंगूठे वाला सिरा नाभि और पसलियों [illegible] बीच उस के पेट पर रखें. अपने दूसरे हाथ [illegible] मुट्ठी पकड़ कर पेट पर दबाएं और जल्दी [illegible] ऊपर की ओर ले जाएं. जब तक अटका [illegible] निकल न जाय, यही क्रिया दोहराते [illegible]

कट जाना

औज़ारों से काम करते हुए आप के [illegible] का हाथ कट जाता है और तेज़ी से ख़ून [illegible] लगता है, तो . . .

उन की घड़ी और अंगूठी उतार [illegible] बांह को सीधा ऊपर उठाइए और [illegible]

सीधा दबाव डालिए. अगर कोई बड़ी नस कट न गई हो तो सिर्फ़ दबाव से ही रक्त बहना बंद हो जाएगा. अगर न हो तो बांह की रक्तवाहिनी शिरा को ज़ोर से दबाएं. (टांग से ख़ून बह रहा हो तो टांग की रक्तवाहिनी शिरा को दबाना चाहिए.) रक्तबंध का प्रयोग तभी करना चाहिए जब और सब उपाय असफल हो जाएं क्योंकि इसे लगाने से घाव की ओर रक्त का प्रवाह बिलकुल रुक जाता है और स्थाई क्षति की आशंका बनी रहती है.

मधुमेह के संकट

मधुमेह के मरीज़ को कंपकंपी आने लगे, पसीना बहने लगे और उस का व्यवहार उलझा उलझा हो जाए, तो . . .

उसे न तो इनसुलीन का इंजेक्शन दें और न मधुमेह से संबंधित कोई और दवा. हो सकता है, उस पर इनसुलीन की ही प्रतिक्रिया हो रही हो और रक्त शर्करा का स्तर एकाएक बहुत तेज़ी से गिर गया हो. ऐसा अकसर ज़्यादा इनसुलीन लेने से ही होता है. रोगी को फलों का रस, हलके पेय, टाफ़ी, चाकलेट अर्थात किसी भी रूप में शक्कर दे कर उस की रक्त शर्करा का स्तर बढ़ाने की कोशिश करें.

बिजली का झटका

तूफ़ान में किसी दोस्त पर टेलीफ़ोन का ऐसा तार गिर जाए जिस में विद्युत प्रवाहित हो रही हो, तो . . .

सब से पहले तो तार के साथ शरीर का संपर्क तोड़ना ज़रूरी है. तार हटाने के लिए सूखी लकड़ी या टहनी काम में लानी चाहिए. व्यक्ति को तार से अलग खींचने के लिए उस के ऊपर अपने शरीर का कोई कपड़ा डाल कर, कपड़े के ऊपर से उसे पकड़ना चाहिए. उस के कपड़े या जूते पकड़ कर खींचने की कोशिश नहीं करनी चाहिए. आप के लिए ऐसी कोशिश ख़तरनाक साबित हो सकती है क्योंकि हो सकता है, उस में विद्युत प्रवाह हो रहा हो. आप जिस चीज़ का भी प्रयोग करें, उस के बारे में पहले यह निश्चित कर लें कि वह विद्युत पकड़ने वाली चीज़ नहीं है. आप स्वयं भी सूखी जगह पर खड़े हों.

बिजली के तार से छूट जाने के बाद अगर आप के मित्र की नब्ज़ चल रही हो तो अपने मुंह से उस में प्राण फूंकें और बाहर से उस के हृदय और फेफड़ों को मलते रहें.

कार स्कूटर दुर्घटनाएं

स्कूटर या कार दुर्घटना स्थल पर पहुंचने वाले आप पहले व्यक्ति हों, तो . . .

दुर्घटनाग्रस्त व्यक्तियों को तब तक न हटाएं जब तक कि ऐसा करना सुरक्षा की दृष्टि से आवश्यक न हो. उन्हें शांत रखने और आराम पहुंचाने की कोशिश करें. अगर दुर्घटनाग्रस्त व्यक्ति के कानों, नाक या मुंह से ख़ून आ रहा हो तो हो सकता है कि उस की खोपड़ी कहीं से टूट गई हो. उसे हिलने डुलने न दें. इस से ज़्यादा ख़ून नहीं बहेगा, हालत और ज़्यादा नहीं बिगड़ेगी. अगर उस की टांगों में सनसनाहट हो रही हो या वे सुन्न पड़ गई हों तो समझ लीजिए कि उस की पीठ या गरदन में गंभीर चोट आई है. ऐसी हालत में अनावश्यक हिलाने डुलाने का नतीजा हो सकता है लकवा या मृत्यु.

घायल व्यक्ति को सांस लेने में तकलीफ़ हो रही हो तो उस का सिर पीछे की ओर झुका लें ताकि हवा आने जाने के रास्ते खुले रहें. अगर हो सके तो

ख़ून बहने, जल जाने, आघात लगने या बेहोश हो जाने जैसे मामलों का प्राथमिक इलाज उन रीतियों से करें जो हम ने इसी लेख में दी हैं.

ठंड से अकड़ जाना

पर्वतीय प्रदेश में रहने वाली कोई किशोरी अगर सहेली के घर से लौटते हुए बर्फ़ के तूफ़ान में फंस जाए और ठंड से अकड़ी कांपती घर पहुंचे, तो . . .

उस के शरीर का तापमान बढ़ाने की कोशिश तुरंत शुरू कर दीजिए. अंगूठियां और गीले कपड़े उतार कर उसे गरम पानी के टब में लिटा दें, पर पानी बहुत ज़्यादा गरम न हो. चाय काफ़ी आदि पिला कर उस के शरीर का भीतरी तापमान बढ़ाने की कोशिश करें. उस की सांस की जांच बारीक़ी से करें और अगर आवश्यक हो तो कृत्रिम सांस भी पहुंचाएं. वह बेहोश हो जाए तो उसे फ़ौरन अस्पताल पहुंचाएं.

लू लगना

आप की पत्नी को गरमी में सारी दोपहर बाग़-बाग़ीचा लगाते अचानक चक्कर आने लगें, कमज़ोरी महसूस होने लगे तथा त्वचा गरम और खुश्क हो गई हो, तो . . .

खुश्क, गरम त्वचा तथा मानसिक उलझन लू लग जाने के लक्षण हैं. उन्हें शीतल पेय पिलाइए, लेकिन वे उत्तेजक नहीं होने चाहिए. उन के शरीर का तापमान कम करने के लिए उन्हें हलके गुनगुने पानी के टब में लिटा दीजिए और इस पानी में धीरे धीरे बर्फ़ डाल कर उस को ठंडा करते रहिए. लू या गरमी लग जाने से बहुत शीघ्र मृत्यु हो सकती है.

गरमी के मारे शिथिल पड़ जाना दूसरी स्थिति है. यह कम घातक है. इस के लक्षण हैं ठंडी और पसीनेदार त्वचा. इस के रोगी को सब से शीतल जगह पर रखिए. उसे पानी या संतरे का रस देते रहिए और उस के सिर पर तौलिया ठंडा कर के रखिए.

डूबते का प्राथमिक उपचार

अगर आप ने अभी अभी किसी डूबते को पानी से निकाला हो और उस की सांस चलती न लगती हो, पर नब्ज़ हलकी हलकी चल रही हो, तो . . .

उसे तुरंत सांस संबंधी सहायता देनी शुरू कर दें. अगर आप पहले वह पानी निकालने के फेर में पड़ गए जो वह गटक गया है तो समझ लीजिए कि आप क़ीमती समय बरबाद कर रहे हैं.

बेहोशी

आप का कोई साथी मेज़ पर लुढ़क कर बेहोश हो जाता है, तो . . .

उस का इलाज उस के लक्षणों के अनुरूप कीजिए :

— अगर बेहोश व्यक्ति का चेहरा लाल या रक्तिम हो और नाड़ी की गति तेज़ हो तो उसे उत्तान अवस्था में (औंधा) लिटा दें, लेकिन उस का सिर तथा कंधे थोड़े ऊंचे उठा दें. सिर पर ठंडी पट्टी रखें.

— अगर उस का चेहरा पीला पड़ गया हो और नब्ज़ कमज़ोर चल रही हो तो उसे फ़र्श पर धीरे से लिटा दें और उस का सिर शरीर के मुक़ाबले कुछ नीचा रहने दें. उस का शरीर गरम रखने की भी व्यवस्था करें.

— अगर उस के होंठ या चेहरा नीला

पड़ गया हो, नब्ज़ कमज़ोर हो और सांस उखड़ी हुई हो तो अपने मुंह से उस के मुंह में प्राण फूंकने चाहिए.

संकट की घड़ी में अधिकांश लोग स्तब्ध रह जाते हैं. इन सहायता निर्देशों को काट कर किसी ऐसी जगह रखिए जहां ये वक़्त बेवक़्त आप के काम आ सकें.

ज़हर खा लेना

अगर आप के तीन वर्षीय बच्चे ने अभी अभी फर्नीचर की पालिश चाट ली हो और वह आभास दे रहा हो कि उस के मुंह में जलन हो रही है, तो . . .

मुंह में जलन (और पेट की ऐंठन) क्षार अथवा तेज़ाब के विष के सामान्य लक्षण हैं. तेज़ाब या क्षार की तेज़ी हलकी करने के लिए बच्चे को जितना ज़्यादा हो सके, पानी या दूध पिलाते जाएं. इस से उस के शरीर में विष फैलने की प्रक्रिया धीमी पड़ जाएगी. उसे कै कराने की कोशिश हरगिज़ न करें. इस से भोजन नलिका को और ज़्यादा नुक़सान पहुंच सकती है.

आघात

दुर्घटनाग्रस्त व्यक्ति की रंगत पीली पड़ गई हो, त्वचा लिजलिजी हो रही हो, सांस उखड़ी सी और अनियमित व तेज़ हो तथा नाड़ी की गति भी तीव्र हो, तो . . .

इन लक्षणों का अर्थ है कि उसे आघात लगा है. गंभीर चोट की प्रतिक्रिया से अकसर ऐसा हो जाता है. उसे कुछ गरमी पहुंचाने की व्यवस्था करें. उसे इस तरह लिटाएं कि उस के पैर उस के सिर की अपेक्षा ३० सेंटीमीटर ऊंचे रहें. इस से शरीर का तापमान ठीक बना रहेगा और चिकित्सा सहायता पहुंचने तक रक्त का संचालन बना रहेगा.

स्वनाम धन्य

अमरीकी नेशनल ब्राडकास्टिंग कंपनी के टीवी कार्यक्रम 'टूनाईट शो' के संचालक जान कार्सन ने एक बार गुमशुदा की तलाश संबंधी एक विज्ञापन पढ़ कर सुनाया. छपा था : कुत्ता खो गया है—भूरे रंग के बाल जिन में से अधिकांश खुजली के कारण उड़ चुके हैं, आंख से काना है और कानों से बहरा. हाल की दुर्घटना के कारण लंगड़ाता है और किसी हद तक संधि शोथ से भी पीड़ित है. उस का नाम है 'लकी'.

उस अंतरिक्ष यात्री ने स्वागत समारोह में मिली लेखिका को ख़ुश कर दिया. "मादाम," उस ने पुस्तक की सराहना में कहा, "हम कक्षा में थे तो मैं ने आप ही की पुस्तक पढ़ने को उठाई—और उसे उठा कर रख न सका."

—'रिव्यू जरनल', लास वेगास

दाद

अमरीकी उपन्यासकार डेविड चैंडलर को एक क़ैदी का पत्र मिला : आप की पुस्तक 'द एफ़ोडाईट' बहुत प्यारी लगी. तीन वर्ष, चार महीने और सात दिन में यही पढ़ने लायक़ चीज़ मिली.

—'फ़नी फ़नी वर्ल्ड'

जीवन की यह रीत
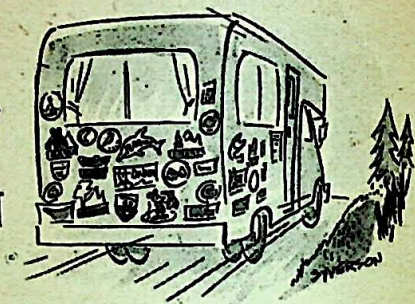
मेरी सब से छोटी बिटिया अपना वज़न घटाने को उत्सुक थी. फिर वह इस में मेरी मदद चाहती थी कि मैं उसे नियमित रूप से व्यायाम करते रहने के लिए कहता रहूं ताकि वह अपने संकल्प से विचलित न हो. उस का सुझाव मुझे जंचा और मैं जुट गया उस के लिए नए नए व्यायामों की खोज में, एकनिष्ठ. पर मेरी यह निष्ठा कब अति उत्साही सनक बन गई, इस का पता उस दिन चला जबकि मैं ने एक पत्रिका में प्रकाशित 'तेज़ चलने के लाभ' संबंधी लेख वाला पन्ना खोला.

पूरे पृष्ठ पर मोटे अक्षरों में लिखा था: "मैं सब जानती हूं, मैं ने देख लिया है."

—एल एन

मैं भीड़ भरे चौराहे से गुज़र रहा था कि दो लड़के साइकिल लिए तेज़ी से मेरे सामने से निकले. मेरे अचानक ब्रेक लगा देने से पीछे वाली कार मेरी कार के बंपर से आ भिड़ी और लड़के साइकिलें भगाते आगे निकल गए. ख़ैर, मैं ने कार एक ओर खड़ी की तो पीछे वाली कार का चालक भी मेरे पीछे पीछे वहीं आ गया. हम दोनों ने कारों का निरीक्षण किया और क्षति का अनुमान लगाया.

"काश! मैं इन बदमाशों को पकड़ पाता," उस ने कहा.

"चलिए छोड़िए, अब तक तो वो बहुत दूर निकल गए होंगे."

"सो तो है. पर रात को तो वे घर आएंगे. तब मैं उन्हें देख लूंगा. मैं उन का पिता हूं."

—डी डी के, एरिज़ोना

मैं सारी उम्र हकलाने का गंभीर समस्या से घिरा रहा. अब बावन वर्ष की आयु में आ कर बात कुछ बनी है. परंतु अब भी होटल में खाने का आर्डर देते समय केवल 'टूना सैंडविच ...' ही मंगा पाता हूं—मुंह से कुछ और निकल ही नहीं पाता.

—टाम, न्यू जर्सी

शनिवार को रात भर दांत में दर्द होने के कारण सोमवार की सुबह मैं दंत चिकित्सक के द्वार पर जा पहुंचा. परंतु मुझ से पहले ही एक अत्यंत सुंदर उन्नीस वर्षीय कन्या पहुंची हुई थी, जो स्कीइंग करते समय फिसली और अपने आगे के दो दांत गंवा बैठी. वह घबराहट और डर से बुरी तरह कांप रही थी.

पर डाक्टर साहब भी शांति सांत्वना देने में माहिर प्रतीत होते थे. वह बोले, "आप देखती रहिएगा, इस सफ़ाई से दांत बन ज़ाएंगे कि बीस साल की छुट्टी हो जाएगी. बाद में आप नए बनवा सकती हैं. नहीं नहीं, घबराने की ज़रा ज़रूरत नहीं. रत्ती भर तकलीफ़ नहीं होगी, और आप ठाठ से मुसकरा सकेंगी. किसी को कुछ पता भी नहीं चलेगा."

पर नहीं. डाक्टर की बातों से युवती को चैन नहीं आ रहा था, वह बुरी तरह कांपे जा रही थी.

मैं ने सोचा कि अब डाक्टर को बेहोशी की दवा देनी ही पड़ेगी. डाक्टर ने किया भी वही, और इस के साथ ही झुक कर लड़की के कान में फुसफुसाया, "उसे भी चुंबन लेते समय इस का पता नहीं चलेगा!" बस, लड़की शांत! —जे राम

एक दिन मैं किसी इमारत के मुख्य द्वार पर पहुंचा तो एक भद्र पुरुष मेरे पीछे ही थे. तभी एक महिला भी आ पहुंची, तो वह उस के लिए द्वार खोल खड़े रहे.

इस पर वह बोली, "मैं महिला हूं, केवल इसी लिए आप मेरे लिए द्वार खोले मत खड़े रहिए."

वह सज्जन एक क्षण को ठिठके, फिर बोले, "जी नहीं, मैं दरवाज़ा इस लिए नहीं खोले रहा कि आप भद्र महिला हैं, बल्कि इस लिए कि मैं भद्र पुरुष हूं." —जे एच

एक बर्फ़ीनी तूफ़ान के अगले दिन भारी ठंड पड़ रही थी. दोपहर में मौसम की मार से पिटा

एक लकड़हारा पटरी पर लगी दुकान पर पहुंचा और बोला, "आधी टोकरी सेब मेरे खच्चर के लिए दे दो."

"तुम्हारे खच्चर के लिए!" हैरान पटरी वाले ने प्रश्न किया.

"हां, बात यह है कि कल मैं ने उस से वादा किया था कि वह एक गट्ठर लकड़ी ढो देगा तो मैं उसे आधी टोकरी सेब दिलाऊंगा. उस ने लकड़ी का बोझा ढो कर पहुंचा दिया, अब मैं अपना वादा पूरा कर रहा हूं." —पी बी

उस दिन हमारे पास पड़ोस की बहुत सी माताएं एक जगह बैठीं, तो बच्चों के लालन पालन में पेश आने वाली दिक़्क़तों के साथ साथ यह भी चर्चा चली कि किस उम्र में वे सर्वाधिक फ़ज़ीता करते हैं.

"अरे, बच्चा दो साल तक ठीक ठाक पल जाए तो बस!" एक दुखी सी बोली.

"पर स्कूल जाते समय. बाप रे बाप! ऐसा फ़ज़ीता कोई दो साल का बच्चा नहीं कर सकता," दूसरी तुरंत बोली.

"और किशोरावस्था! भगवान ही बचाए," तीसरी ने कहा.

तभी बातचीत ज़रा थमी, तो वहीं बैठी एकमात्र दादी मां गुरु गंभीर स्वर में बोलीं, "अरे अभी क्या है, ज़रा चालीस बयालीस का होने दो. फिर देखना क्या क्या दिन दिखाते हैं ये सब." —आर के

कालेज के दफ़्तर में अपने पासपोर्ट साइज़ फ़ोटो जमा करने चला, तो बाबू कभी फ़ोटो को और कभी मेरे लंबे हीरो कट बालों और गझिन मूछों को ताकने लगा. फिर बोला कि अपनी कोई हाल की तस्वीर लाओ. दरअसल फ़ोटो में मेरी मूछें साथ थीं और बाल ज़रा ज़रा से थे.

ख़ैर, मैं ने फ़ोटो वापस ले लिए और कोई आधे घंटे बाद लौटा तो बाबू ने वही तस्वीरें हाथों हाथ ले लीं. मैं बस पास के सैलून तक गया था. —पद्मनाभन रंगप्पा, सिकंदराबाद

हेनरिक इब्सन

व्यक्तित्व और कर्तृत्व

बहुत थोड़े लेखक अपने जीवन में इब्सन (हेनरिक योहान इप्सन) जितने निंदित और संम्मानित हुए होंगे. कुछ की दृष्टि में वह महान सत्यवादी था, कुछ की दृष्टि में नैतिकताओं को भ्रष्ट करने वाला. २३ मई १९०६ को क्रिस्चियानिया (आज कल आसलो) में अंतिम सांस लेने तक वह "आधुनिक नाट्य शिल्प का पिता" बन चुका था.

विद्वानों, समीक्षकों और प्रशंसकों के लिए वह अभी तक पहेली है: एक नन्हा सा आदमी, जो शरमीला होने के साथ साथ असाधारण अहंकारी और घोर आत्मश्लाघावादी था; लेखन में परंपरागत नैतिकता पर प्रहार करता था, पर रहन सहन में धड़ल्ले का बूर्जुआ था; एक ऐसा मूर्तिभंजक व विद्रोह साहित्यिक जो मान्यता पाने का परम लोभी था.

ये अंतरंग संस्मरण इब्सन के जटिल, उपद्रवी व्यक्तित्व की झलक देते हैं.

इब्सन २० मार्च १८२८ को शीएन (नार्वे) में जनमा था. आठ वर्ष का था कि उस के ख़ासे व्यवसायी पिता दिवालिया हो गए. ग़रीबी को बिसरे रहने के लिए लड़के ने दामन पकड़ा सपनों, किताबों और नाटकबाज़ी का.

इतवारों की शाम पड़ोसियों को न्योत कर वह पेटबोलियों के प्रदर्शन करता. एक कमरे में एक लंबी चौड़ी तिजोरी रखी थी. इसी के पीछे खड़ा वह तरह तरह की आवाज़ें निकाल कर श्रोताओं को मुग्ध करता रहता. किसी को भनक भी न लगती कि तिजोरी में हेनरिक का छोटा भाई छिपा बैठा है.

—हेडविग इब्सन, बहन

बाल्य काल में वह चित्रकार बनने के सपने देखता था, किंतु पारिवारिक दारिद्र्य के कारण १५ वर्ष की उम्र में घर छोड़ दिया और समुद्र तट पर बसे गांव ग्रिमस्टाड के औषधि विक्रेता के यहां अप्रेंटिस बन गया. उस की दिनचर्या कोल्हू में जुते बैल सी थी.

वह अक्षरशः दिन रात जुता रहता. दुकान में खटने के बाद वह लेखन तथा पेंटिंग भी करता था. सोने का समय उसे कम मिलता था.

—क्रिस्टफ़र ड्यू, ग्रिमस्टाड का एक मित्र

छः वर्ष बाद, भीतर उमड़ते विक्षोभ का निर्गम ढूंढ़ता, इब्सन राजधानी क्रिस्चियानिया चला आया. अपना पहला नाटक उस ने ख़ुद ही छपवाया था, जिस की बहुत कम प्रतियां बिकी थीं. शेष को रद्दी में बेच कर उस ने पीछा छुड़ाया. उस के दूसरे नाटक का १८५० में किसी प्रकार क्रिस्चियानिया थिएटर में मंचन हो गया. और वह अगले साल बरगन की एक नई नाट्य शाला में सहायक नाट्य लेखक नियुक्त हो गया. यहीं उसे १५ वर्षीय रिकी हाल्स्ट से प्रेम हुआ. उस ने रिकी के सामने शादी का प्रस्ताव रखा तो रिकी के पिता ने बेटी के कंगले लेखक से मिलने पर पाबंदी लगा दी. मगर वह लुके छिपे इब्सन से मिलती रही. एक दिन रिकी के पिता ने दोनों को साथ साथ देख लिया तो इब्सन भाग खड़ा हुआ.

वर्षों बाद, जब रिकी सद्गृहिणी व मां बन चुकी थी और वह ख़ुद भी नामचीन हो गया था, इब्सन उस से मिलने गया. "मैं हैरान हूं कि हमारे रिश्ते का कोई अंजाम क्यों नहीं निकला?" वह सोचता हुआ बोला. रिकी हंस पड़ी, "निकलता कैसे? तुम तो भाग गए थे." इस पर इब्सन बोला, "हां, सो तो है. मैं हिम्मती आदमी नहीं हूं."

—गेरहार्ड ग्रान, इब्सन का जीवनीकार

३० वर्ष की उम्र में इब्सन ने बरगेन के एक पादरी की बेटी सुज़ान्ना थोरज़न से शादी कर ली. १८५९ में उन के बेटा हुआ. तब तक इब्सन आधे दर्जन से ज़्यादा नाटक लिख चुका था, पर उस मान्यता से वह वंचित ही रहा जिस का वह अधिकारी था.

निर्धनता उसे फटे पुराने वस्त्रों से ही काम चलाने पर विवश करती. लोगों के लेखे वह अहंकारी व दिशाहारा जीनियस था जिस के फूलने फलने के दिन लद चुके थे. कभी कभी रात में छात्रावासों को लौटते विद्यार्थी काली दाढ़ी वाले इब्सन को धुत्त हो कर नाली में पड़ा देखते.

—ए ई त्सुकर, इब्सन का जीवनी लेखक

बुरी तरह हताश इब्सन ने पांच वर्ष तक कुछ नहीं लिखा. ३६ वर्ष की उम्र में उस के जीवन में एक महत्वपूर्ण मोड़ आया. तिकड़म भिड़ा कर उस ने सरकार से थोड़ा सा अनुदान प्राप्त कर लिया और नार्वे छोड़ गया, जहां, उस के शब्दों में, "मेरी मेधा के सभी मार्ग अवरुद्ध हैं." इटली और जरमनी में व्यतीत उस का आत्म निष्कासन २७ वर्ष तक चला. इस दौरान उस की रचना शक्ति का जम कर विकास हुआ. उस ने नाटकों की एक श्रृंखला रच डाली, जिस की प्रारंभिक कृतियां थीं ब्रैंड और पियर जिंट जिन्हों ने उसे प्रसिद्धि के शिखर पर पहुंचा दिया.

उन दिनों मैं रोम में था और अपने डेस्क पर मैं ने बियर के गिलास में एक बिच्छू पाल रखा था. अकसर वह बीमार पड़ जाता, और तब मैं पके फल का एक टुकड़ा बोतल में टपका देता जिस पर वह बुरी तरह टूट पड़ता और डंक मार मार कर अपना सारा विष उगल देता; और एकदम चंगा हो जाता. क्या हम कवियों के साथ भी ठीक ऐसा ही नहीं होता?

—इब्सन द्वारा डेनिश साहित्यिक इतिहासकार पीटर हैनसन को लिखे पत्र का अंश

इब्सन को यह भय सताता रहता कि लक्ष्य पाने से पहले ही कोई दुर्घटना उस के जीवन का अंत कर देगी. न तो वह डांकी गाड़ी* पर चढ़ता न पर्वतों पर. यहां तक कि समुद्री तूफ़ान के डर के मारे उस ने कभी नेपिल्स की खाड़ी के प्रवेश मार्ग पर बसे रंजन द्वीप काप्री की यात्रा भी नहीं की.

—ए ई त्सुकर

उम्र के साथ साथ इब्सन काम में ही रमता चला गया. गिने चुने मुलाकातियों और परिवार वालों से वह भोजन के समय ही मिलता.

मित्र-मंडली एक महंगी ऐयाशी है; और अपना सर्वस्व धंधे में झोंक देने के बाद कोई भी मित्रों का बोझ नहीं ढो सकता.

—इब्सन, डेनिश समालोचक और इतिहासकार गिआर्ग ब्रांड्स को लिखे पत्र में

हलका सा कलेवा कर के वह अध्ययन कक्ष में बंद हो जाता और ग्यारह बजे तक निर्व्याघ व्यस्त रहता. इस के बाद टेल कोट व टाप हैट पहन कर हाथ में छाता लिए घूमने फिरने निकल जाता. अपने पसंदीदा कहवा घर में पहुंच कर वह दीवार पर लगे विशाल आईने के सामने जम जाता, जिस में से वह हर आने जाने वाले की ख़बर पाता रहता. फिर एक जेबी शीशे में—जिसे वह हमेशा अपने हैट में लिए रहता था—अपना स्वरूप निरख कर बाल संवारता और अल्पाहार करता, तथा काफ़ी चुसकता मुख पृष्ठ की हेड लाइन से ले कर अंतिम पृष्ठ की प्रिंट लाइन तक जिस तिस समाचार पत्र को पढ़ने में डूब जाता.

—जान पाउलज़न, मित्र व जीवनी-लेखक

*छोटे इंजन वाली एक गाड़ी.

मैं जानता हूं मुझ में एक दोष है: मैं उन लोगों से घनिष्ठ नहीं हो सकता जो चाहते हैं कि कोई मिले तो बेलागलपेट व बेतक़ल्लुफ़ी से मिले.

—इब्सन, समकालीन लेखक व साहित्यिक प्रतिद्वंद्वी ब्यर्नस्त्यर्न व्यर्नसन को लिखे पत्र में

दुनिया वाले उसे और न सताएं, इस मारे उस ने अपने मर्म की हर सुकुमार व सुभेद्य भावना पर व्यंग्य का रक्षा कवच चढ़ा लिया था. उस का हृदय धीरे धीरे निर्जीव हो गया, जिस के साथ ही उस के सुख स्वप्नों ने भी दम तोड़ दिया. स्नेह और मैत्री के संसार से उस का नाता एकदम टूट गया.

—जान पाउलज़न

उम्र के साथ साथ इब्सन की मान सम्मान पाने की भूख भी बढ़ गई. नवंबर १८६९ में केदीव* के आमंत्रण पर वह स्वेज़ नहर के उद्घाटन समारोह में शामिल हुआ था, जिस के लिए, १८७० में, उस ने घोर निर्लज्जता से पदक दिए जाने की आरज़ू मिन्नत भी की थी. और यह एक विदेशी पुरस्कार था.

इस सम्मान से नार्वे में मेरी साहित्यिक प्रतिष्ठा को बढ़ाने में अथाह सहायता मिलेगी और उस की भी कुछ क्षतिपूर्ति हो जाएगी जो मुझे बराबर झेलनी पड़ी है.

—इब्सन, मिस्र दरबार के एक प्रतिनिधि को लिखे पत्र में

*अंगरेज़ी व फ्रेंच में 'केदीव' लेकिन फ़ारसी में 'ख़ेदीव' जिस का मतलब होता है राजा या राजकुमार. १८६७ से १९०७ के दौरान मिस्र के बादशाह के तुर्क वायसराय को भी ख़ेदीव कहते थे. इब्सन संभवतः इसी के निमंत्रण पर स्वेज़ समारोह में गया था.

१८८२

अठारहवीं शताब्दी के सत्तरादि दशक में इब्सन ने अपनी विख्यात विषय वस्तु का प्रतिपादन करने वाले नाटकों की झड़ी लगा दी. वह विषय वस्तु है : व्यक्ति और समाज का द्वंद्व. १८७९ में रचित 'ए डाल्स हाउस' (गुड़िया घर) ने उसे अंतरराष्ट्रीय ख्याति दिलाई और चारों ओर "इब्सनवाद"—नाट्य क्षेत्र में रूढ़िवाद पर किसी भी तरह के प्रहार—पर धुआंधार बहस छिड गई.

तीन क्रांतियों, छः जिहादों, दो विदेशी आक्रमणों और एक भूचाल ने इंगलैंड पर जितना प्रभाव डाला है, लगभग उतना ही इब्सन ने भी डाला है, नार्मनों द्वारा नारमंडी की ज़बरदस्त फ़तह इस नार्वेजियाई की इंगलिस्तान फ़तह के सामने ख़ाक भी नहीं थी.

—जार्ज बरनार्ड शा

चरित्र चित्रण की बारीक़ियों, कथानक के विकास तथा संवादों की तराश के प्रति इब्सन आजीवन गहरी सतर्कता बरतता रहा.

नाटक की पहली लिखत जांचते हुए मुझे यूं लगता है जैसे किसी रेल यात्रा के दौरान मिले लोगों का ब्यौरा पढ़ रहा हूं. दूसरा मसौदा पढ़ते वक़्त मैं ऐसा महसूस करता हूं जैसे महीने भर तक किसी झरने के किनारे उन के साथ रह चुका हूं. तीसरी व आख़िरी बार संशोधन करते वक्त मुझे ऐसा लगता है, मानो ये चरित्र मेरे दीर्घकालीन, अंतरंग मित्र हैं—इतने घनिष्ठ हैं कि कभी धोखा नहीं देंगे.

—इब्सन, एक नाटक पर लिखी अपनी टिप्पणियों में

किसी ने कह दिया कि 'ए डाल्स डाउस' की नायिका का नाम—नोरा—बड़ा विचित्र है. इब्सन तुरंत बोला, "अरे! उस का पूरा नाम ल्योनारा था, पर बचपन से ही लोग उसे नोरा कहने लगे. तुम उसे जानते हो, मां बाप के लाड प्यार ने उसे बहुत बिगाड़ दिया था." इन बातों की नाटक में कहीं कोई झलक नहीं मिलती.

—एडमंड गोस, इब्सन का जीवनी लेखक

६३ का हो कर १८९१ में, इब्सन नार्वे लौटा तो राष्ट्रीय नायक बन चुका था. क्रिस्चियानिया के ग्रांड कैफ़े में उस का दैनिक बियर पान अनुष्ठान का रूप लेता.

ठीक एक बजे विशाल, श्वेत गलमूंछों वाला उस का कठोर एवं रोमांचक व्यक्तित्व सनसनाया हुआ वहां नुमायां हुआ— जैसे रग रग से बिजली फूट रही हो और तत्काल सारा काफ़ी हाउस अभिवादनार्थ एक साथ खड़ा हो गया. मेरे पास खड़ा एक अजनबी बोला, "यह हमारे महान कवि हेनरिक इब्सन हैं."

—रिचर्ड ली गालियन, अंगरेज समीक्षक

नार्वे आने के बाद इब्सन ने चार अंतिम नाटक लिखे—'द मास्टरबिल्डर', 'लिटिल इयोल्फ़,' 'जान गैब्रियल बोकेमैन,' और 'व्हेन वी डेड अवेकेन.' १९०० ईसवी में पक्षाघात के दौरे ने उसे अपंग कर दिया. जीवन के अंतिम छः वर्षों में उस की चेतना आती जाती रही.

सवाल यह उठता है कि आधुनिक काल में विचार जगत पर किसी अन्य व्यक्ति ने भी इतना कठोर शासन किया है या नहीं.

—जेम्स जायस

सच,
पूरा सच, और
सच के सिवा
कुछ भी नहीं!

मेरा पहला हिरन

—पैट्रिक मैकमानूस

शिकारी की कल्पना ऐसी हरी भरी चरागाह है जिस की रस भरी घास चर चर कर उस का पहला शिकार साल दर साल आकार और वज़न में बढ़ता रहता है. एक दिन ऐसा आता है कि वह भरा पूरा जवान हो जाता है. मतलब यह कि वह इतना लंबा चौड़ा हो जाता है कि दोपहरी में जब सूरज सिर पर होता है तो उस हिरन की छाया में लद्दू घोड़ों का पूरा का पूरा दल शरण ले सकता है.

मेरे दोस्त रेच स्वीनी और उस के मारे पहले हिरन को ही लीजिए. शिकार के वक़्त मैं स्वीनी के साथ था. पहले तो मैं समझा कि उस की गोली किसी बड़े ख़रगोश को लगी है. पास जा कर देखा तो वह हिरन का बच्चा निकला. हम दोनों तब १४ बरस के थे और रेच का यह कारनामा हमारे लिए हर्ष और उत्तेजना की बात थी—हालांकि बेचारा हिरन डबल रोटी रखने के डब्बे से बस कुछ ही बड़ा था.

महीना भर भी न बीता था कि कुछ दोस्तों से रेच कह रहा था कि उस का हिरन बहुत बड़ा था. बाद में एकांत में मैं ने रेच से कहा कि कमाल है, उस का हिरन इतनी तेज़ी से बढ़ने

'द शूट कैनोज़, डॉट द' से संक्षिप्त. कापीराइट १९८१ पैट्रिक एल मैकमानूस, प्रकाशक: होल्ट राइनहार्ट ऐंड विंस्टन, न्यू यार्क

लगा! इस पर वह बोला कि हिरन के विकास पर आश्चर्य तो उसे भी हो रहा है. पर हिरन का बढ़ना है तो ख़ुशी की ही बात! उस ने यह भी कहा कि उसे यह तो शुरू से मालूम था कि उस का हिरन बढ़ेगा, पर इतनी जल्दी बढ़ेगा इस की कल्पना उसे भी नहीं थी.

और अभी कुछ दिन पहले की बात है. रेच और मैं बार में बैठे चंद दोस्तों के साथ शिकार की बातें कर रहे थे. बात 'पहले हिरन' पर आ पहुंची. कई हिरन ऐसे निकले जो कठिन से कठिन परिस्थिति से बच निकलने में जादूगर हूदीनी को भी मात देते थे. और कई तो इतने बड़े थे कि आश्चर्य होता था कि उन के शिकारी ने कोई हिरन मारा था या चालाक आदमी. और उन हिरनों का आकार! उन में कोई भी हिरन ऐसा न था जो अपने सींगों पर भारी भरकम पियानो न उठा सके.

मैं फ़िक्र में था कि रेच की बारी आएगी तो क्या होगा. क्या उस का हिरन इन हिरनों का मुक़ाबला कर सकेगा? लेकिन मेरी चिंता बेकार थी. रेच ने जो बयान किया उस के अनुसार उस का हिरन काई साधारण हिरन न था. वह तो भूत प्रेतों की तरह पेड़ों के बीच इधर से उधर चला जाता था. ज़मीन में उस के खुरों से गहरे खड्डे पड़ जाते थे. और चालाक इतना कि बड़े बड़े उस्तादों को भी पैतरेबाज़ी सिखा सकता था.

सब के सब उस की बातों पर विश्वास कर के सिर हिला रहे थे. मैं खीझ उठा. मैं-ने मेज़ पर मुक्का दे मारा. मैं ने कहा, "अब मैं सुनाता हूं हिरन के पहले शिकार का सच्चा क़िस्सा! बिलकुल सच्चा. न राई रत्ती झूठ, न कोई बात मनगढ़ंत!"

सब के चेहरे फक्क हो गए. जब रोमांचकारी बातें सुनाई जा रही हों तो सच, पूरा सच और सच के सिवा कुछ नहीं सुनाने वाले पर खीझना स्वाभाविक है.

रेच स्वीनी ने मेरी तरफ़ अनुनय भरी आंखों से देखा—मानो कह रह हो कि मेरे पहले हिरन का रहस्य मत ताड़ डालना.

लेकिन बड़ी बेरहमी से मैं रहस्य की परत दर परत उघाड़ता हुआ अपनी कहानी कहता रहा और पहले हिरन की मिथ को बेनकाब करता चला गया :

मैं तब १४ साल का था—यानी शिकार का लाइसेंस तो मिल सकता था और मिल गया था, लेकिन ड्राइविंग लाइसेंस नहीं मिल सकता था. और जाना था ३० किलोमीटर दूर पहाड़ी की चोटी पर जहां बड़े हिरन मिलते थे.

मैं ने साइकिल उठाई और पहाड़ी चढ़ने लगा. मेरे पीछे से दो शिकारी जीप में आ रहे थे. उन की गाड़ी निकलने देने के लिए मैं एक ओर हट गया. मुझे देख कर वे हंसे, जैसे पहले साइकिल सवार शिकारी को देखा ही न हो.

कुछ देर बाद मैं भी वहां पहुंचा जहां वे शिकार के लिए तंबू गाड़ रहे थे. कुछ और शिकारी भी वहां थे. मैं साइकिल के पैडल मारता हांफता उन के पास से गुज़रा तो सब के सब मुझे देख पेट पकड़ कर हंसने लगे. मैं बेताब हो उठा कि जल्दी से जल्दी हिरन मार कर अपनी साइकिल पर डालूं और ढलान पर साइकिल सरसराता हुआ इन के सामने से गुज़र जाऊं. आंखें फटी की फटी रह जाएंगी बेचारों की!

और हुआ यह कि जैसे ही मैं शिकार की जगह पहुंचा और साइकिल के हैंडिल से बंदूक खोलने लगा तो देखा कि एक भरा पूरा हिरन सामने की झाड़ी में से नाचता फुदकता निकला. २० मीटर से भी कम की दूरी थी. तभी मुझे

समझ जाना चाहिए था कि यह हिरन खतरनाक है. बड़ा संभल कर मैं ने हैंडल से बंधी राइफ़ल खोली और जेब से कारतूस निकाला. इस बीच वह मेरे चारों तरफ अठखेलियां करता रहा. जैसे ही मैं ने बंदूक में कारतूस भरा और निशाना साधा, पट्ठा पेड़ के पीछे हो गया. मैं भाग कर एक तरफ़ गया, जंभाई ले कर वह दूसरी तरफ़ चला गया. मैं दबे पांव पेड़ के पास गया, टखने फटकारता वह दूसरे पेड़ के पीछे चला गया. पूरे एक घंटे तक वह मुझ से खिलवाड़ करता रहा.

आखिर वह झांसे में आ ही गया—मैं तो यही समझा था. मैं पलट कर साइकिल की तरफ़ चलने लगा. हिरन ने सिर निकाल कर झांका कि मैं कर क्या रहा हूं. तभी तेज़ी से पलट कर मैं ने उस के सिर का निशाना साधा और गोली दाग़ दी. वह गिर पड़ा.

कमाल की बात यह थी कि मुझे उस के सिर में गोली का छेद दिखाई नहीं दिया, उस के सींग से एक छोटा सा टुकड़ा उखड़ा हुआ था. मै ने अंदाजा लगाया कि सींग में लगी गोली के आघात से वह चल बसा है. जो भी हो, मैं ने सोचा, अपना पहला हिरन मैं ने मार ही डाला.

हिरन को साइकिल पर लादना आसान नहीं था.

पहले मैं ने उसे पिछले पहिए के बंपर पर डाला. एक तरफ़ उस का सिर और अगले पैर ज़मीन तक लटक गए और पिछला हिस्सा दूसरी तरफ़. फिर मुझे एक बढ़िया तरक़ीब सूझी. मैं ने पिछले बंपर पर हिरन को ऐसे बैठा दिया कि उस के पिछले पैर पहिए के इधर उधर हो गए. इस पोज़ीशन में उसे साधने के लिए मैं ने उस के अगले पैर हैंडल की दोनों मूठों से बांध दिए. फिर मैं उन के बीच से घुस कर अपनी सीट पर बैठ गया और उस का सिर अपने दाहिने कंधे पर टिका लिया.

हिरन को पीछे बैठा कर साइकिल चलाना ख़ाला जी का घर नहीं था. लड़खड़ाती साइकिल बड़ी तेज़ी से ढलान पर उतरने लगी. सड़क तंग और घुमावदार थी. एक तरफ़ गहरा खड्ड था. धड़धड़ाते हम उस मोड़ की तरफ़ बढ़ रहे थे जिस के नीचे शिकारियों ने डेरा जमा रखा था. इतनी दूर से भी उन की फटी आखें मुझे दिखाई दे रही थीं.

हम मोड़ के पास पहुंच रहे थे कि अचानक मेरा दिल कांप उठा. हिरन ने चौंक कर ज़ोर का सांस खींचा. या तो उसे होश आ गया था या सामने गहरी खड्ड देख वह मरने का नाटक करना भूल कर घबरा उठा था. हम दोनों ने एक साथ साइकिल से कूदने की कोशिश की. लेकिन उस के अगले पैर हैंडिल से बंधे थे और मैं उन के बीच फंसा था.

हम शिकारियों के डेरों के पास से गुज़रे तो सब कुछ भूल कर मैं उन के चेहरे देख रहा था. बाद में मैं ने सुना कि कई घंटे बाद भी एक फ़ारेस्ट रेंजर ने उन्हें कैंप के सामने वाली सड़क को ताकते पाया था.

अगर मैं ने अक़ल से काम लिया होता और हिरन के पिछले पैर भी बांध दिए होते तो साइकिल रोकना मेरे लिए आसान हो जाता. पर अब कोई चारा न था. घबराहट में उस ने इधर उधर पैर फटकारे तो उस के खुर साइकिल के पैडलों पर टिक गए थे. तलहटी तक पहुंचते पहुंचते उसे पैडल मारने का तरीक़ा आ गया था और इस में उसे पूरा मज़ा भी आ रहा था. मैदान में उतर आने पर भी हिरन पूरे ज़ोर से पैडल मारे जा रहा था और मैं साइकिल को क़ाबू में रखने की नाकाम कोशिश कर रहा था.

आखिर हम कद्दू के खेत में जा गिरे.

वह साइकिल से छूट कर सीधे जंगल की तरफ़ भाग गया. वह पूंछ ऐसे हिला रहा था, जैसे मुझे अंगूठा दिखा रहा हो. मैं ने राइफ़ल उठा कर कंधे से लगाई और गोली दाग दी. निशाना ठीक बैठ सकता था—पर राइफ़ल अभी तक साइकिल से बंधी थी!

"देखा!" मैं ने सब लड़कों से कहा. "हिरन के पहले शिकार की कहानी इस तरह सुनाई जाती है—सच, पूरा सच, और सच के सिवा कुछ भी नहीं."

लेकिन उन पर कोई असर नहीं पड़ा था. वे क्रोध में भुनभुना रहे थे. उन का क्रोध शांत करने के लिए मैं ने उन्हें अपने दूसरे हिरन की घटना बताई—यह हिरन इतना बड़ा था कि अपनी सींगों पर भारी पियानो उठा सके और दोपहरी में उस की छाया में लद्दू घोड़ों का दल शरण ले सके.
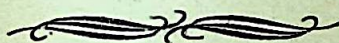
नितांत निजी

न्यू यार्क के पत्र 'विलेज वायस' में छपा निजी विज्ञापन: शुक्रवार को 'नहीं' और शनि को 'कभी नहीं' कहने और मैक्सवेल के 'प्लम' रेस्तोरां में काम करने वाली लड़की क्या मुझे तुरंत पत्र लिख सकती है? अब मेरे पास वे ठोस तर्क हैं कि वह मुझे ही पत्र क्यों लिखा करे.

—चार्ली

'फ़ीनिक्स उपभोक्ता निदेशिका' से: एक कामकाजी महिला को ५५ से ऊपर के ऐसे भले पुरुष के संग की जरूरत है जो न शराब पीता हो, न सिगरेट और न ही अपने को २५ वर्ष का छोकरा समझता हो. संपर्क करें —बाक्स १००.

बीमारी के दौरान घर पर ही रहने वाले एक मित्र ने बताया कि खाना अच्छा था, बिस्तर आरामदेह और टीवी पर दिखाए जाने वाले नाटकों की कृपा से दिन भर डाक्टरों और नर्सों के भी दर्शन होते रहे.

—'नाना'

'द डेली कैलिफ़ोर्नियन' से: सर्वहारा वर्ग का मर्द बुर्जुआ वर्ग की महिलाओं से मुलाक़ात चाहता है. उद्देश्य: वर्ग संघर्ष.

—'फ़नी फ़नी वर्ल्ड'

दर्द

एलन बैनेट के नाटक 'फ़ोर्टी ईयर्ज़ आन' में हेडमास्टर की भूमिका निभा रहे थे सर जान गिलगुड. हर रात मंच के एक स्कूली बच्चे से वह कुछ न कुछ कहते नेपथ्य में निकल जाते. कभी कहते, "मज़ा आ गया जेनकिंस हमारी टीम स्विमिंग कप जीत गई." कभी बोलते, "जेनकिंस इस बार की क्रास कंट्री हमें मारनी होगी." एक रात वे बड़े उदास स्वर में यह कह गए, "इस बार तो इनकम टैक्स वालों ने तबाह कर दिया, जेनकिंस."

—डेली टेलीग्राफ़ मैगज़ीन, लंदन

चीन की सब से बड़ी भूल

चीन की अधीनता में संकट के बाईस वर्ष भुगतने के बाद अब शायद तिब्बत के दुःखों का अंत निकट है. सवाल यह है कि क्या चीनी नेतृत्व में परिवर्तन से नीति फिर नहीं बदल जाएगी

—हेरीसन ई सेलिसबरी

लगभग बाईस वर्ष पहले जब चीनी कम्युनिस्टों ने तिब्बत पर क़ब्ज़ा किया था. तब से १४वें दलाई लामा तेंज़िन ग्यात्सो हिमाचल प्रदेश के शहर धर्मशाला में आत्म निर्वासित जीवन बिता रहे हैं. शायद वे शीघ्र ही अपना निर्णय बदलें और इस पर्वतीय देश की क़िस्मत बदलें. कभी इसे शांग्री-ला कहा जाता था यानी शांति और संतोष की पवित्र धरती. आज यह देश अंधकार और निराशा का पर्याय बन गया है.

लगता है कि यह देश परिवर्तन के चौराहे पर खड़ा है. चीन ने क़बूल किया है कि तिब्बत के "दस वर्ष घोर विपत्ति में" गुज़रे हैं. चीन के ७० वर्षीय उपप्रधान मंत्री देंग ज़ियाओ पिंग, जो अपनी कर्मठता के लिए मशहूर हैं, उन चीनी अधिकारियों को पदों से हटा रहे हैं जिन्हों ने तिब्बत में आतंक मचा रखा था. उन्हों ने नई नीति की घोषणा की है जिस का सार यह है कि "तिब्बत तिब्बतियों के लिए है."

हज़ारों की तादाद में चीनी सैनिक ट्रकों पर लद कर अपने देश वापस लौट रहे हैं. कई पुराने लामा तिब्बत आ गए हैं, जीर्ण शीर्ण मठ खुल गए हैं और उन में बौद्ध भक्तों का जमघट लगने लगा है. निजी व्यापार पनप रहा है, कृषि पर से कर हटा लिए गए हैं. मतलब यह कि चीन पुरानी भूलें सुधार रहा है.

मगर तिब्बत में पुराने हालात लौटाना बरसों का काम है. चीन चाहता है कि उसे इस काम में ४९ वर्षीय दलाई लामा की मदद मिले. चीन के एक उच्चाधिकारी का कहना है कि दलाई लामा अपनी शर्तों पर वापस लौट सकते हैं, अगर वह तिब्बत की स्वतंत्र सत्ता का दावा छोड़ दें, चीन की प्रभु सत्ता स्वीकार कर लें

कुछ तिब्बती

फोटो: हैरीसन ई सेलिसबरी

और यह मान लें कि तिब्बत की रक्षा और विदेश नीति तय करने का अधिकार चीन को है, मगर दलाई लामा के लिए ये महत्वपूर्ण मसले हैं और इन पर उन्हें गहराई से सोचना होगा.

चीन का रुख़ मैत्रीपूर्ण लगता है मगर इस के पीछे दोनों देशों की शताब्दियों पुरानी शत्रुता की अभेद्य दीवार खड़ी है. क्या बीजिंग दलाई लामा और उन के हज़ारों समर्थकों पर भरोसा कर पाएगा, विशेष कर उन पर जिन्हों ने निर्वासन के दौरान शिक्षा पाई है और जिन के मन में चीन के प्रति घृणा भरी है? और क्या दलाई लामा चीन पर विश्वास कर पाएंगे जहां एक शीर्षस्थ व्यक्ति के बदल जाने से नीतियों में आमूल परिवर्तन आ जाता है? दोनों ओर आशंका है. कोई नहीं जानता कि चीन और तिब्बत जिस नाटकीय क्षण में एक दूसरे के क़रीब आए हैं, उस की परिणति क्या होगी.

इस बदक़िस्मत देश ने इतनी मुसीबतें भुगती हैं कि अगर तिब्बती चीनियों से घृणा करने लगे हैं तो इस में कुछ अजूबा नहीं और न ही इस घृणा का कारण जानना मुश्किल है.

वास्तव में यह देश कभी शांग्री-ला रहा ही नहीं. १९५९ में जब चीन ने तिब्बत में जन विद्रोह को कुचला था, उस समय भी एशिया में कोई मध्य युगीन राष्ट्र नहीं था. मध्य युग से ही तिब्बत में बौद्ध भिक्षुओं का सामंती धर्मराज्य रहा है. बड़े बड़े मठों में उस समय भी ७,००० से ८,००० तक बौद्ध भिक्षु एक साथ रहते थे. ब्रिटेन, रूस तथा चीन के शासकों के लिए तिब्बत सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण क्षेत्र रहा है. वे इसे विश्व में प्रभुता हासिल करने की कुंजी मानते रहे हैं. फिर भी ४,३०० मीटर तथा ५,८०० मीटर ऊंचे दर्रों के कारण यह बाक़ी दुनिया से कटा हुआ देश है. तिब्बत में एक आदिम सौंदर्य है. यहां के लोग नृत्य तथा छंग के शौक़ीन हैं.

१९६६ में चीन में सांस्कृतिक क्रांति के दौरान चार की चौकड़ी का दबदबा था. उस समय चीन ने तूफ़ान की सी गति से तिब्बत को रौंदा था. उन बरसों में तिब्बत में जो कुछ घटा, उस के आगे नरक की कल्पना भी ओछी पड़ जाएगी. आइए, हम तिब्बतियों से ही उन की व्यथा कथा सुनें, जिन्हों ने सारा दुःख दर्द झेला है. वे ही अपनी कहानी ठीक से बता पाएंगे.

मैं राजधानी ल्हासा के गेस्ट हाऊस नंबर १ में ४२ वर्ष की एक तिब्बती महिला से बातचीत कर रहा था. १९५९ में जैसे ही दलाई लामा ने तिब्बत छोड़ा, इस स्त्री के पति को गिरफ़्तार कर लिया गया और उसे १६ वर्ष क़ैदख़ाने और श्रम शिविर में गुज़ारने पड़े. इस शिक्षित महिला ने भारत के एक स्कूल में अंगरेजी पढ़ी थी. इसे घृणा और अपमान भुगतना पड़ा. इसे भरी सभा में सिर झुका कर यह क़बूल करना पड़ा: "मैं ने जनता की पीठ में छुरा भोंका है." इस ने सड़क पर काम कर के जैसे तैसे अपना गुज़ारा किया. किसी तरह इस ने और इस के पति ने ये बुरे दिन काटे.

पिछले कुछ महीनों में इन के जीवन में काफ़ी बदलाव आया है. पति पत्नी का पुनर्मिलन हो गया है. क़ैदख़ाने से रिहाई के बाद पति को स्थानीय राजनीतिक परिषद का सदस्य बनाया गया है और वह अंगरेजी के एक प्राथमिक स्कूल में अध्यापक है. लेकिन अतीत की याद आने पर यह ठंडी आवाज़ में कहती है: "भगवान वे दिन फिर न दिखाएं."

उच्च वर्ग की एक तिब्बती महिला के माता पिता को लाल सैनिकों की चीख़ चिल्लाहट के
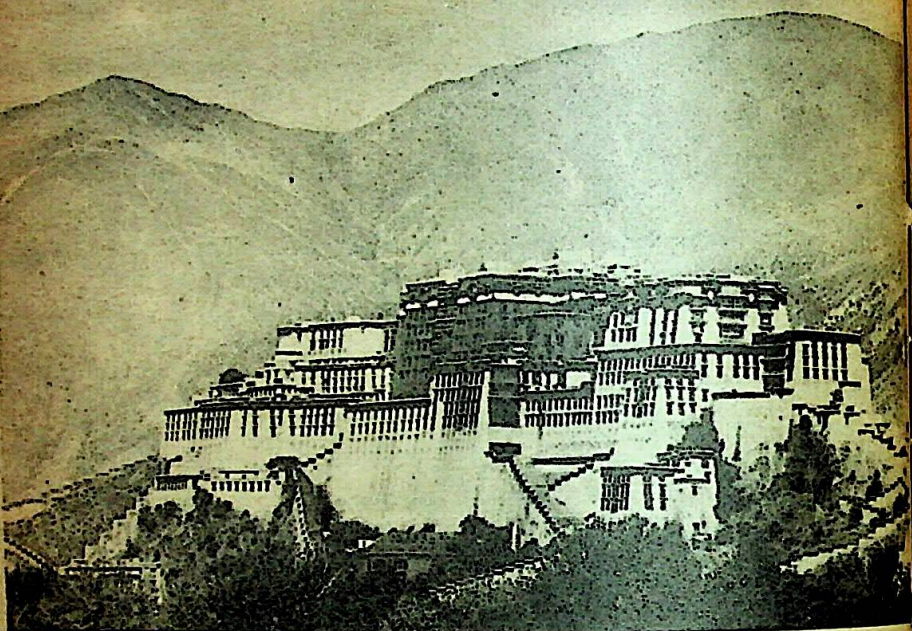
ल्हासा स्थित दलाई लामा का शीतकालीन प्रासाद पोताला.

बीच जन सभाओं में 'जनता के प्रति अपराध' स्वीकार करने पड़े थे. उस के बूढ़े मां बाप को मंच पर खड़ा कर दिया जाता. बच्चों को थोड़े थोड़े पैसे दे कर कहा जाता, इन पर पत्थर फेंको. उस महिला का कहना है, "सब से भयानक दृश्य वह होता था जब गोली मारने से पहले शहर के बीचोबीच घुमाया जाता." मौत के जुलूस में कुछ लड़के लड़कियां तो इतने छोटे क़द के होते थे कि वे ट्रक से बाहर झांक कर देख भी नहीं सकते थे. मगर चीनी उन्हें इतना ख़तरनाक मानते थे कि उन्हें गोली से उड़ा कर ही निश्चित हो सकते थे.

तेंज़िन ग्यात्सो

एक विधवा ने बताया कि उसे बरसों भुखमरी की सी हालत में जीना पड़ा. (यह कोई संयोग नहीं कि ये सभी कहानियां औरतों ने सुनाईं. उन नारकीय वर्षों में अधिकतर पुरुष या तो क़ैदख़ाने में थे या बंदी शिविरों में. ल्हासा क़रीब क़रीब औरतों का शहर बन गया था.) उक्त विधवा की बहन भी जेल में थी, इस लिए उस के पांच बच्चों का बोझ भी इसी के सिर आ पड़ा था. ये सब चीनी सैनिक शिविर के सूअरबाड़े में अनाज के दाने बीन बीन कर पेट भरते रहे.

आतंक के इन दिनों में अलबानिया और रूमानिया के कूटनीतिज्ञों का एक दल ल्हासा आया. एक तिब्बती बुज़ुर्ग ने बताया कि उन के आने पर कई रास्ते रस्से से बंद कर दिए गए थे. दो तीन सौ तिब्बतियों को नई नई पोशाकें

पहनने के लिए दी गईं. अरसे से बंद पड़ी दुकानों को फिर से खोला गया और उन में माल भरा गया. विदेशियों के आने पर नए नए कपड़े पहने तिब्बतियों से दुकानों में ग्राहक का स्वांग रचाया गया. फिर भी उन्हें नई देग़चियां, डब्बाबंद खाद्य पदार्थ तथा छंग की बोतल छूने की इजाज़त नहीं थी. एक आदमी को सिगरेट का पैकेट चुराने के आरोप में जेल भेज दिया गया.

तिब्बत में चीनियों के आगमन के साथ जो अंधकार का युग शुरू हुआ, वह इन दुःखद कहानियों तक आ कर ही ख़त्म नहीं हुआ. बीजिंग द्वारा थोपी गई ग़लत कृषि नीति के कारण बीमारी और भुखमरी ने तिब्बत पर धावा बोल दिया. तिब्बती लोग हज़ारों साल से भेड़, बकरी तथा लंबे बालों वाले दीर्घजीवी याक से अपनी आजीविका चलाते रहे हैं. ये पशु छः हज़ार मीटर की ऊंचाई पर चरने जा सकते हैं. कितनी ही तेज़ बर्फ़ पड़े, ये मरते नहीं.

तिब्वतियों का मुख्य भोजन दूध और पनीर है. उन की आमदनी का मुख्य स्रोत ऊन है. याक से तिब्बतियों को ये तीनों चीज़ें मिलती हैं. जब लाल सैनिक तिब्बत में घुसे तो उन्हों ने याक मरवा डाले. तिब्बती लोग जिस ज़मीन पर जौ और बाजरा बोते थे, वहां चीनियों ने अपना प्रिय खाद्यान्न धान और गेहूं बुवाया, लेकिन तिब्बत की ख़राब मिट्टी और ऊंचाई के प्रतिकूल वातावरण में ये फ़सलें उगी नहीं और तिब्बत में भुखमरी फैल गई.

चीनियों ने तिब्बतियों को कम्यून में संगठित किया. निजी व्यापार वर्जित कर दिया गया. नतीजा यह हुआ कि उत्पादन लगभग शून्य हो गया. निर्यात के लिए न ऊन रही, न कोई और चीज़.

ल्हासा तो कभी स्वर्णिम नगर था—रहस्यवादियों और जिज्ञासुओं का तीर्थ—आज वह झोपड़ पट्टी बन गया है. चारों तरफ़ गंदगी है. सड़कों पर भिखारी, अपंग और भूख से बिलबिलाते बच्चे बैठे रहते हैं.

चीनियों ने तिब्बत की आत्मा पर भी उतनी ही गहरी चोट की. तिब्बत के बौद्ध धर्म का अपना अलग स्वरूप है. दलाई लामा बौद्धों का मुखिया होता है. लेकिन लाल सैनिकों ने पागलपन में देश के उन पुराने बौद्ध मठों और मंदिरों को तुड़वा दिया, जो तिब्बती संस्कृति के अनमोल रत्न थे. चीनियों ने दलाई लामा के ग्रीष्मकालीन प्रासाद नोर्बुलिंका को जेल में बदल दिया. हज़ारों भिक्षुओं को पीटा गया, उन्हें यंत्रणा दी गई, उन से मेहनत मज़दूरी करवाई गई.

अब चीनियों को लगता है कि तिब्बती संस्कृति पर उन के वहशियाने हमले से तिब्बतियों का राष्ट्रीय संकल्प टूटा नहीं बल्कि दृढ़ ही हुआ है. बीजिंग में एक चीनी अधिकारी ने मुझे बताया, "यह हमारी सब से बड़ी भूल थी."

देंग ज़ियाओ पिंग की नीतियों के अनुसार धार्मिक रोक टोक हटा ली गई है. बौद्ध भिक्षु मठों में लौट आए हैं. तिब्बत के सब से पुराने मंदिर जोखांग में भक्त गणों की भीड़ लगने लगी है. यहां दुर्गम रास्तों पर सैकड़ों किलोमीटर चल कर लोग आते हैं. रास्ते में उन के जूते फट जाते हैं, कपड़े मैले कुचैले हो जाते हैं. मगर उन्हें इस की परवाह नहीं होती.

चीनी कई क्षतिग्रस्त मठों मंदिरों को नया रूप देने का गंभीर प्रयास कर रहे हैं. पागलपन के दौर में बुद्ध की जिन मूर्तियों को उन्हें ने गोदामों और कूड़ेदानों में फेंक दिया था, अब उन्हें फिर से खोजा जा रहा है. प्राचीन मूर्तियों

की अनुकृतियां प्लास्टर में उकेर उकेर कर जगह जगह लगाई जा रही हैं.

दूसरी जगह भी परिवर्तन हो रहे हैं. गांवों में 'याक की वापसी' का नारा फिर लोकप्रिय बनाया जा रहा है. गेहूं और चांवल बोने के प्रयोग नहीं होते. सरकार पशुपालकों को ऋण देने लगी है. इस के लिए किसी तरह के सवाल नहीं पूछे जाते. व्यापार एवं कृषि उत्पादनों पर से कर हटा लिए गए हैं. सरकार अब लोगों से एक ही बात कहती है: उत्पादन करो और पैसा कमाओ.

क्या दलाई लामा अपने देश वापस लौटेंगे? जितने भी तिब्बतियों से मेरी बात हुई, उन में से लगभग हरेक ने कहा कि उन्हें अब लौट आना चाहिए. लेकिन १ लाख १० हज़ार निर्वासित तिब्बतियों में से अधिकांश इस मत से सहमत नहीं हैं. महत्वपूर्ण प्रश्न यह उठता है कि कब, कैसे और किन परिस्थितियों में दलाई लामा की वापसी होगी?

चीनी अधिकारी मानते हैं कि दलाई लामा के नेतृत्व के बिना तिब्बत की हालत अच्छी नहीं हो पाएगी और इस से चीन की कमज़ोर अर्थ व्यवस्था पर भार बढ़ता जाएगा. अपनी ओर से दलाई लामा स्पष्ट कर चुके हैं कि अगर वे राजा बन कर तिब्बत नहीं लौटना चाहते तो कठपुतली बन कर भी लौटना उन्हें पसंद नहीं.

तिब्बत के लोग अपने देश के पुनर्निर्माण में लगे हैं. वे जानते हैं, इस में बरसों लग जाएंगे— शायद सैकड़ों बरस. मगर उन्हें विश्वास है कि पुनर्निर्माण हो कर रहेगा. अगर उन के ज़िंदा रहते यह काम पूरा नहीं हुआ तो उन के बच्चे और उन के बच्चों के बच्चे यह काम पूरा करेंगे. उन्हों ने विश्वास और दृढ़ता का परिचय दिया है और चीन के नेता देंग ने उन की बात सुनी है. तिब्बतियों का मत है कि अब दलाइ लामा को ल्हासा लौटने के बारे में सोचना चाहिए. उन्हों ने मानवीय साहस और समर्पण का जो उदाहरण प्रस्तुत किया है, वह सभी के लिए अनुकरणीय है.

नींबू चालित

अमरीकी लोग खटारा कार के लिए अकसर कहते हैं कि कार तो 'लेमन' हो गई. पर वे दिन अब लदते लगते हैं. किडरमिंस्टर, इंगलैंड, के घड़ीसाज़ एंटनी ऐशहिल को एक दिन ठाले बैठे ख़याल आया कि इसी लेमन यानी नींबू के दोनों सिरों को छील कर एक ओर तांबे का टुकड़ा और दूसरी ओर जस्ते का टुकड़ा लगा दें, तो नींबू में विद्यमान सिट्रिक अम्ल के कारण एक नन्ही सी बैटरी काम करने लगेगी और उस में इतनी शक्ति भी अवश्य होगी कि किसी छोटी मोटी मोटर को चला सके. यूरेका! वह एकदम ठीक सोच रहा था. ऐशहिल ने चटपट बैटरी बनाई और अपनी दुकान में लटका दी. आप मानें या न मानें, मगर वह मोटर १२० चक्कर प्रति मिनट की गति से साल भर बाद भी बदस्तूर चल रही थी. "मैं ने तो सोचा भी नहीं था कि नींबू में इतना रस होता होगा," ऐशहिल ने कहा. इस स्थिति में मोटर चलाने वाले नींबू को उपर्युक्त अमरीकी कुख्याति से अविलंब मुक्ति मिलनी चाहिए. वैसे नींबू की यह बला ख़रबूज़े के सिर मढ़ दी जाए तो कौन बुरा है. और तब कोई अमरीकी कहेगा: बेचारा चार्ली! गाड़ी ख़रीदी, पर वह भी ख़रबूज़ा निकली.

—'क्वेस्ट /८१'

जीवन का रोमांच

उसे बचाने के लिए वह ख़ुद भी मौत के गर्त में उतर गया

पत्थर की खदान में जीवट

—जोसेफ़ पी ब्लैंक

मंगलवार, ७ जुलाई १९७७, को प्रातः स्क्रिवेंस को ग़ुमान तक नहीं था कि वह ज़िंदगी की सब से मुश्किल व ख़तरनाक घड़ियों से गुज़रने वाला है. छः बच्चों का पिता स्क्रिवेंस अत्यंत शांत स्वभाव का निरभिमानी आदमी था.

वह इतना धीमा बोलता था कि कई बार सुनाई भी न देता. २५ वर्षों से वह ब्रुकविल फ़्लोरिडा स्थित क्रश्ड स्टोन कंपनी की सेवा में था, और सुपरवाइज़र बिल ग्रैंड के शब्दों में फ़ोरमैन स्क्रिवेंस जितना विश्वसनीय और भरोसे का आदमी "हमारे यहां दूसरा कोई नहीं था."

उस दिन स्क्रिवेंस के साथ थे २५ वर्षीय शैली हैमंड्स, जिसे वहां काम करते अभी छः हफ़्ते ही हुए थे, और बोझ उठाने की मशीन पे लोडर के आपरेटर जान ब्रांच व रोजर

मैसर. सब आधा इंची रोड़ी के १८ मीटर ऊंचे ढेर को निपटाने में लग गए.

३ बज कर ४५ मिनट पर कन्वेयर बेल्ट चलनी शुरू हुई. ज़मीन के भीतर लगी यह कन्वेयर बेल्ट ३० × ४५ सेंटीमीटर की ढालू पनाली (शूट) के द्वारा रोड़ी को ट्रकों व मालगाड़ी के डिब्बों तक ले जाती थी. हैमंड्स ने सुरंग में जा कर शूट का ढक्कन खोल दिया. फिर रोड़ी के ढूह पर चढ़ कर वह सीलन से पड़ गए थक्के और मिट्टी के लौंदे—जो शूट में फंस कर बजरी की चाल रोक सकते थे—बीन बीन कर फेंकने लगा. पे लोडरों की भारी भरकम बालटियां रोड़ी को उलीचती उलीचती ढूह की तलहटी तक पहुंच गई थीं. स्क्रिव बुलडोज़र चला कर रोड़ी को शूट की ओर धकेल रहा था.

नीचे गिरने वाली रोड़ी को औंधा घूमता एक शंकु यूं छिन्नाता जैसे पानी में भंवरें पड़ रही हों. कुछ हफ़्ते पहले सुरक्षा विचार गोष्ठी में हैमंड्स और उस के साथियों को चेतावनी दी गई थी कि वे शंकु यंत्र के किनारे से कम से कम एक मीटर परे रहा करें. वजह यह कि दिखने में तो शंकु वाला यह खड्ड निरापद लगता था, पर जब रोड़ी झर रही हो तो उस में गिरे आदमी का किसी भी तरह से बाहर निकलना शायद नामुमकिन ही था. हालांकि ऐसी दुर्घटना कभी हुई नहीं थी.

पांच बजे होंगे. हैमंड्स मिट्टी के एक ढेले को झपटने के लिए शंकु वाले खड्ड की ओर लपका. पर वह बहुत ही क़रीब जा पहुंचा. उस के भार से शंकु का मुंह फैल गया, पांवों तले रोड़ी घसक गई, और उसी के साथ धंसता चला गया वह ख़ुद.

क़रीब चार मीटर दूर अपने काम में डूबा स्क्रिवेंस चीख़ सुन कर पलटा तो उसे हैमंड्स की ऊपर उठी बांहें शंकु में अदृश्य होती दिखाई दीं. पे लोडर आपरेटरों ने अभी तक न कुछ देखा था, न सुना था. स्क्रिवेस बुलडोज़र से कूद कर रोड़ी को रौंदता हुआ शंकु तक पहुंचा. हैमंड्स तब तक कमर तक कंकड़ों में डूब चुका था. स्क्रिव ने चिल्ला कर पे लोडर आपरेटर जान ब्रांच से कहा, "कन्वेयर बंद करवाओ!" और जान ने कंट्रोल स्टेशन को हिदायत देने के लिए तुरंत इंटरकाम का चोगा उठा लिया. और बिना यह जाने कि उस की बात किसी ने सुनी है या नहीं स्क्रिव कोन की ढलान पर उतर गया और हैमंड्स से भिड़ कर स्वतः थम गया. रोड़ी ने उसे यूं दबोचा हुआ था जैसे सूखी कंकरीट में कोई खिलौना चिन गया हो; भय ने उस की वाणी लील ली थी.

कुछ ही पलों में स्क्रिव भी फंस गया. रोड़ी भयावह तेज़ी से झर रही थी. हैमंड्स का सिर तक भी ढक गया. जल्दी ही स्क्रिव के भी गले तक पहुंची. रोड़ी के उस की ठुड्डी को छूते ही कन्वेयर बेल्ट तो रुक गई पर कोन से बजरी के पनाले बहने बंद नहीं हुए. ठुड्डी तान तान कर, कंकड़ मुंह में न घुसने देने के लिए स्क्रिव दारुण संघर्ष कर रहा था. आख़िर पनाले बंद हुए. तत्काल मृत्यु में कुछ ही क्षणों की कसर रह गई थी.

स्क्रिव ने अपने हृदय स्थल पर हैमंड्स का चेहरा गड़ता महसूस किया. रोड़ी में समाधिस्थ युवक जीने मरने की जद्दोजहद में तेज़ तेज़ सांसें भर रहा था. स्क्रिव बदहवासी से कंकड़ कुरेदता उस की नाक तक हवा पहुंचने का रास्ता बनाने

था. इस में उसे सफलता तो मिली, पर रोड़ी रह रह कर ढह पड़ती और वायु द्वार रुंध जाता. स्क्रिव के पास जी तोड़ गति से अनवरत रोड़ी कुरेदे रहने के सिवा कोई उपाय न था.

तभी स्क्रिव को रोड़ी पर चढ़ते लोगों की चीख पुकार सुनाई दी. उन में से बहुत से कोन के ऐन कगार पर आ कर झांकने लगे तो बजरी भी और ढहने लगी. हैमंड्स की सांस बनाए रखने के लिए स्क्रिव को कंकड़ कुरेदने की गति दुगुनी ही कर देनी पड़ी. पहलू से गड़ते युवक ने प्राण रक्षा के लिए रोड़ी में पंजे बोड़ता देख वह रिरियाया, "किनाने से परे रहो. हैमंड्स मेरे तले है. और मरने को है."

"हम रस्सी लटका रहे हैं," सुपरवाइज़र एल्विन ग्रइमर ने कहा, "तुम बांहें फंदे में फंसा लो और हैमंड्स को भी पकड़ लो. शायद हम तुम दोनों को खींच सकें."

स्क्रिव ने कुहनियां रस्सी के फंदों में फंसा लीं; उस की टांगों ने पहले से ही हैमंड्स की बांहों को जकड़ा हुआ था. पर ऊपर वालों ने धीरे धीरे खींचना शुरू किया तो रोड़ी की जबर्दस्त जकड़न में भिंचे असहाय आपदग्रस्तों को सूत भर भी न सरका सके. तिस पर रस्सी की गतिविधि के मारे दोनों पर और भी रोड़ी ढहने लगी.

"मत खींचो," स्क्रिव गिड़गिड़ाया. "मेरे तो टुकड़े हो जाएंगे." और रस्सी ढीली पड़ गई.

बिल ली ग्रैंड ने पे लोडर आपरेटरों से कहा कि वे मशीनें यूं चलाएं कि ढुलवैया बालटे रोड़ी की तलहटी पर उतर कर केन्द्र से ज़्यादा से ज़्यादा सट जाएं; और जितनी तेज़ी से हो सके रोड़ी उचालते जाएं. लेकिन मशीनें चलीं तो दो टन वज़न लादने वाले बालटे ऊपर उठते वक़्त रोड़ी के ढूह को बुरी तरह धकियाने लगे.

रोड़ी के बोझ के सतत दबाव से गड़े स्क्रिव और हैमंड्स के शरीर पहले से ही चीस रहे थे. अब, बालटों के धकियाने से, ढूह का भिंचाव बढ़ गया और उन दोनों की हालत और भी पतली होने लगी. स्क्रिव को लगा कि वे यह भिंचाव दबाव और नहीं सह सकेंगे.

"बालटे रोको!" वह तड़क कर चीख़ा.

बिल समझ गया. उस ने आपरेटरों को बालटे परे हटा ले जाने का इशारा किया और कहा कि दबे हुए आदमियों से क़रीब ३० मीटर दूर, घेरे के पास से वे रोड़ी हटाना जारी रखें. अब उन का लक्ष्य यह था रोड़ी उलीच उलीच कर ढूह का शिखर भाग गड़े हुए बेचारों के सिरों से नीचे तक खिसका दें. उधर लगभग २० आदमी फावड़ों और हाथों से मौत का वह टीला खोदने में पहले से ही जुटे हुए थे. एक हांफ उठता तो दूसरा तत्काल उस की जगह ले लेता.

हैमंड्स के नथुने अवरुद्ध न होने देने के मारे स्क्रिव अपनी जगह कंकड़ कुरेदे जा रहा था. उस ने बुलंद आवाज़ से दुआ मांगी, "हे भगवान! हमें निकाल लो!"

रोड़ी की समाधि में समाने के डेढ़ घंटे बाद, ६.३० बजे भी स्क्रिव के पंजे कंकड़ों से जूझ ही रहे थे. हैमंड्स के प्राण तो स्वरहीन हो चले थे, पर उस के सिर को हरकत करता व नाक को सांस भरता वह अभी तक महसूस कर रहा था. वह समय की न सोचने का यत्न करने लगा. बांहें बोझिल होने लगीं व टांगें सुन्न पड़ने लगीं. फिर सुन्न पड़ने की अनुभूति भी जाती रही, मानो टांगें रहीं [illegible] के लिए भी

संघर्ष करना पड़ रहा था. अब मैं नहीं टिक सकूंगा, उसे लगा.

मशीनों और आदमियों के पिले रहने से कंकड़ों का वह टीला ज़रा ज़रा भुरभुराने लगा. सुबह सात बजे बिल तथा दो अन्य आदमी किसी तरह घिसटते हुए स्क्रिव तक पहुंचे और उस के सिर के गिर्द उन्हों ने रक्षात्मक पट्टियां लगा दीं. फिर वे पट्टियों के इर्द गिर्द गुड़ाई करने लगे. पर पट्टियों की दरारों से रह रह कर रोड़ी झड़ पड़ती.

दुर्घटना के ढाई घंटे बाद, ७.३० बजे यह स्थिति बन पाई कि दोनों गड़े हुए अभागे बाहर खींचे जा सके. कंपनी के एक अफ़सर रेजिनाल्ड मिलर का अंदाज़ा है कि इस बीच क़रीब ३०० टन रोड़ी हटाई गई होगी. अस्पताल ले जाने के लिए दोनों को एंबुलेंस पर लादा गया. टांग पैर इस क़दर सूज गए थे कि जूते चाक़ू से काट कर ही उतारे जा सके. स्क्रिव को अब भी यही लग रहा था कि उस की टांगें गईं; और हैमंड्स बेहोशी में अंडबंड बड़बड़ाए जा रहा था.

हैमंड्स हफ़्ते भर तक अस्पताल में रहा. गरदन, पीठ और बांहों की रगों व पेशियों में शूल उठा करते, और इलाज के बाद कई हफ़्तों तक गलबंधनी पहने रहा. नौकरी पर वह फिर नहीं लौटा, तीन महीने बाद अलबामा चला गया.

अस्पताल पहुंचने के कुछ घंटे बाद स्क्रिव की टांगों में चेतना लौटने की पीड़ा शुरू हुई. फ़ोन कर के उस ने अपनी पत्नी आइरीन को धुले कपड़े लाने व घर लिवा ले जाने को कहा.

दोपहर को एक आराम कुरसी पर पसरा वह टी वी देख रहा था. आइरीन घर भर में दौड़ती भागती रह-रह कर उस से पूछती, "ठीक तो हो?" वह उसे यक़ीन दिलाता, "मैं बिलकुल ठीक हूं. टांगें पिरा रही हैं. पर वैसे बिलकुल दुरुस्त हूं."

आख़िर वह फूट पड़ी, "बड़ी भयानक घटना थी. तुम मर भी सकते थे." वह इस विचार से लगातार बच रहा था, पर अब सहसा बेहद डर गया.

अगले दिन भी वह घर पड़ा सुस्ताता रहा, पर फिर बेचैन हो उठा. बृहस्पतिवार को दुर्घटना के दो दिन बाद, तड़के ३.३० पर वह सीधा काम पर जा पहुंचा. पुरानी दिनचर्या शुरू कर के उसे ख़ूब संतोष हुआ. उसे कुछ बदला हुआ नहीं लगा.

परंतु उस के साथ काम करने वालों में ज़रूर बदलाव आ गया था; मिलर बोले, "यूं तो हम हमेशा ही स्क्रिव की इज़्ज़त करते रहे हैं, पर अब इज़्ज़त के साथ साथ उस का दबदबा भी हो गया है. अब वह एक ऐसे आदमी के तौर पर जाना जाता है जिस ने एक अन्य आदमी की जान बचाने के लिए अपनी ज़िंदगी दांव पर लगा दी थी—और एक तरह से गंवा ही दी थी."

एच.बी. स्क्रिवेंस को कार्नेगी हीरो फंड कमीशन के शीर्ष पुरस्कार सिलवर मैडल और युनाइटेड स्टेट्स ब्यूरो आफ़ माइंस की जोसेफ़ ए होम्ज़ सेफ़्टी एसोसिएशन के मैडल आफ़ आनर से सम्मानित किया जा चुका है.

लखटकिया सवाल : ऐसा क्यों होता है कि टेप रिकार्डर पर अपनी आवाज़ हमें अपनी नहीं लगती, लेकिन दर्पण में अपना चेहरा अपना ही लगता है? —फ़ील्ड न्यूज़पेपर सिंडीकेट

चोरी माल की नहीं, माल के नाम की

—जोनाथन फ़ेनबी

...ल से सावधान! नक़ली माल से सावधान! नक़ली माल से सावधान! नक़ली माल से ...

इंगलैंड की बस कंपनी हैंट्स एंड डोरसेट (पूरा नाम हैंट्स एंड डोरसेट मोटर सर्विसेज़ लिमिटेड) के मैकेनिक हैरान परेशान थे. कारण यह था कि उन के एक वाहन के ब्रेक फ़ेल हो गए थे और जांच की तो पता चला कि उस का एयर ब्रेक सिस्टम बहुत ही ख़तरनाक स्थिति में था. उन्हों ने इस की निश्चयित ब्रिटिश कंपनी क्लेटन ड्यूएंड्र से की जिस के यहां से ये पुरज़े मंगवाए जाते थे. छानबीन करने पर पता चला कि ब्रेक का वह ख़राब डायाफ़्राम क्लेटन ड्यूएंड्र कंपनी को हांग कांग की एक ट्रांसपोर्ट कंपनी द्वारा लौटाए गए उस माल में से था, जिस का इस्तेमाल नहीं किया गया था. गहरी छानबीन करने पर पता चला कि इस के अतिरिक्त ऐसे ही ७९ डायाफ़्राम और थे. सब के सब नक़ली थे, जिन्हें घटिया सामग्री से ताइवान में बनाया गया था.

इस समय दुनिया भर में नक़ली चीजों की जो बाढ़ आई हुई है, यह उस का एक मामूली उदाहरण है. मशहूर ट्रेड मार्क वाली नक़ली चीज़ों को असली बता कर बेचा जाता है. इन नक़ली चीज़ों में विलास की महंगी वस्तुओं से ले कर कीटनाशी दवाएं और तालों जैसी तमाम मामूली वस्तुएं भी आ जाती हैं. हर वर्ष नक़ली माल का कोई १० करोड़ रुपए का धंधा होता है. ऊंचे दर्जे के तकनीकी उपकरण भी इस जालसाज़ी से अछूते नहीं रहे. १९७६ में नासा स्पेस शटल (अंतरिक्ष यान) में इस्तेमाल किए जाने वाले उपकरणों में नक़ली ट्रांजिस्टरों का पता चला था.

व्यापक धंधा. जितनी विविधता वस्तुओं में है, नक़ली वस्तुओं का धंधा भी उतना ही व्यापक है. अधिक मंहगी वस्तुओं की बिक्री अमरीका, पश्चिम यूरोप, दक्षिण अमरीका, जापान तथा पश्चिम एशिया के तेल समृद्ध देशों में होती है. सस्ती क़िस्म की नक़ली वस्तुओं की खपत अफ़्रीका तथा एशिया के ग़रीब देशों में अधिक होती है. इन वस्तुओं के उत्पादन और निर्यात के मामले में ताइवान और इटली सब से आगे हैं. इन के बाद हांग कांग, दक्षिण कोरिया, भारत तथा दक्षिण पूर्व एशिया

के छोटे बड़े देशों का नंबर आता है.

सदियों तक यह जालसाज़ी केवल मुद्रा तक सीमित थी. लेकिन पिछले कुछ दशकों से हर वह चीज़ नक़ली बनने लगी है, जिस का ट्रेड मार्क मशहूर होता है. घड़ियां इस का पहला शिकार बनीं. पचासादि और साठादि दशकों में इटली तथा हांग कांग में बनी स्विस और फ्रांसीसी घड़ियों के मशहूर माडल पूरी दुनिया में बिकने लगे थे.

सत्तरादि दशक में फ्रांस के फ़ैशनेबल रेडीमेड वस्त्रों एवं विलास की वस्तुओं के निर्माताओं को पता चला कि मैक्सिको से ले कर तोक्यो तक के बाज़ारों में उन के नाम से नक़ली माल बेचा जा रहा है. जालसाज़ों का शिकार बनने वाली कंपनियों में फ्रांस की १०० वर्ष पुरानी लुई वितों कंपनी भी थी जो यात्रा सामग्री का निर्माण करती थी. १९७९ में स्विट्ज़रलैंड और फ्रांस की सीमा पर एक सामान्य जांच पड़ताल के दौरान कस्टम अधिकारियों ने वितों कंपनी की ३६३ नक़ली चीज़ें पकड़ीं. कार में सो रहे दो व्यक्तियों के सामान पर वितों कंपनी का विशिष्ट चिह्न बना था. उन नक़ली वस्तुओं को ज़ब्त कर लिया गया और दोनों यात्रियों को बंदी बना लिया गया. बाद में उन्हें जुरमाना और जेल की सज़ा हुई.

छापे बढ़ते गए, ढेरों नक़ली सामान पकड़ा जाने लगा. मगर यह रहस्य समझ में नहीं आ रहा था कि वितों चिह्न वाला वह विशेष कपड़ा जालसाज़ों तक कैसे पहुंच जाता था? मार्च १९८० में पुलिस ने इटली के लेको नगर में स्थित एक कपड़ा मिल से ३७,६०० मीटर कपड़ा बरामद किया. वह वितों कपड़े की बहुत ही बढ़िया नक़ल थी. इस मिल का कपड़ा यूरोप, एशिया और अन्य क्षेत्रों में कुल मिला कर २२० ग्राहकों को जाता था. इसी से अनुमान लगाया जा सकता है कि जालसाजी का धंधा कितने बड़े पैमाने पर चल रहा है.

नक़ली लेबल. अब जालसाज़ ऐसी नक़ली चीज़ें भी बनाने लगे हैं जो बहुत ज़्यादा महंगी तो नहीं हैं, मगर उन से भारी लाभ होता है. अफ्रीका में हर वर्ष ब्रिटिश मिलफ़ोर्ड कंपनी के ५० लाख नक़ली ताले बेचे जाते हैं. सितंबर १९७९ और जून १९८० के बीच हांग कांग के एक व्यवसायी ने ६० लाख नक़ली अमरीकी बैटरियां शंघाई में तैयार कर के पश्चिम एशिया में बेचीं. दक्षिणी यूरोप तथा एशिया में संगीत के रिकार्डों की स्थिति इतनी अधिक ख़राब है कि नक़ली रिकार्डों और कैसेट टेपों की गिनती असली के मुकाबले में कहीं ज़्यादा है. भौंडा नक़ली माल कभी कभी अफ़गानिस्तान जैसे देशों में भी मिल जाता है, जहां इस की उम्मीद नहीं की जाती. हाल ही में यहां एक ब्रिटिश कंपनी मार्क्स एंड स्पेंसर स्टोर के एजेंट ने देखा कि उस की कंपनी के नाम से घटिया नक़ली जुर्राबें और टाइयां बिक रही हैं. उन सब पर कंपनी का सेंट माइकेल नामक लेबल लगा था.

नक़ली वस्तुएं कई विधियों से बनाई जाती हैं. ताइवान की मोटर पार्ट बनाने वाली एक कंपनी में १०० से भी अधिक आदमी काम कर रहे हैं. जून १९८० में छापा डालने से पहले फ़्लोरेंस स्थित एक फ़ैक्टरी कार्टीयर के नाम से प्रति माह चमड़े की १५,००० नक़ली वस्तुएं तैयार कर रही थी. इसी तरह भारत की सीमा से लगे पाकिस्तानी शहर सियालकोट में फुटबालों पर हाथों से 'अदीदास' के नक़ली लेबल लगाए जाते हैं. इंडोनेशिया के जावा नामक द्वीप के दो गांवों में कुछ समय तक

[illegible], पेतो और नीना रिकी नामों से नक़ली इत्र आदि बनते रहे.

प्रायः होता यह है कि नक़ली वस्तुओं पर लेबल उसी समय लगाए जाते हैं जब ये उन देशों में पहुंच जाती हैं जहां इन की बिक्री होती है. इस प्रकार रास्ते में यदि माल पकड़ा भी जाता है तो कस्टम अधिकारी उसे ज़ब्त नहीं कर सकते. कस्टम अधिकारियों को चकमा देने का एक तरीक़ा और भी है. अकसर जाने माने नामों के आगे पीछे एकाध अक्षर फ़ालतू जोड़ दिया जाता है, जैसे जापान की सस्ती घड़ियों के ऊपर 'एसीकोन' की छाप लगा दी जाती है. जब ये घड़ियां खुदरा विक्रेता के पास पहुंचती हैं तो वह उन पर से ए तथा न मिटा देता है और उन्हें 'सीको' के नाम से बेचता है.

अधिकांश नक़ली वस्तुएं बहुत कम क़ीमत पर ख़रीदी और बेची जाती हैं. यह ख़रीद फ़रोख़्त छोटी छोटी जगहों पर होती है, जैसे घरों के पिछवाड़े गलियों में, बाज़ार के छोटे छोटे स्टालों में, या फिर राह चलते पटरी पर बेचा जाता है. लेकिन कुछ जालसाज़ तो इतने धूर्त होते हैं कि वास्तविक उत्पादक के नाम से ही अपनी दुकान खोल कर बैठ जाते हैं. फिर वे धड़ल्ले से नक़ली चीज़ें बेचते हैं. फ़्रांस की कार्टीयर और लाकास्ट स्पोर्ट्सवियर कंपनियों के नाम से मैक्सिको में जाली मगर शानदार दुकानें खुलने लगीं तो बेचारे असली कंपनी के मालिक सिवाय बेबस मूक दर्शक बने रहने के कुछ न कर सके. दोनों कंपनियों ने अपने ट्रेड मार्क मैक्सिको में रजिस्टर्ड करवा रखे थे और उन्हों ने बहुत से केस भी जीते थे, मगर स्थानीय प्रशासन पर इन बातों का कोई असर नहीं हुआ था. हार कर असली कंपनी कार्टीयर ने नवंबर १९८० में मैक्सिको में नक़्क़ालों से कुछ ही फ़ासले पर अपनी दुकान खोल दी और असली नक़ली का फ़ैसला ग्राहकों पर छोड़ दिया. अंततः गत दिसंबर में कार्टीयर ने नक़्क़ालों के खिलाफ़ मुक़दमा जीत लिया और वे अपनी दुकानों पर से कार्टीयर का नाम हटाने के लिए सहमत हो गए. अब कंपनी ने उनमें से कुछ को अपना खुदरा एजेंट बना लिया है.

असल से बढ़िया. कई बार तो नक़ल इतनी बढ़िया होती है कि स्वयं असली निर्माता असली नक़ली में फ़र्क़ नहीं कर पाते. फ़्रांस की हेडलाइट बनाने वाली कंपनी सीबी बड़ी मुश्किल से जान पाई कि उन के द्वारा निर्मित विश्वसनीय हेडलाइट और घटिया क़िस्म की नक़ली हेडलाइट में केवल एक 'रिपट' का अंतर था. ऐसी स्थिति में नक़ली चीज़ का पता केवल उस की क़ीमत से लगाया जा सकता है.

नक़ली चीज़ सस्ती होती है. सामान्य उपभोक्ता को शायद यह लगे कि नक़ली चीजों का धंधा उतना बुरा नहीं, जिस से नुक़सान होता हो. मगर इस का एक पक्ष वास्तव में बड़ा घातक है. अमरीका में दो दुर्घटनाग्रस्त बेल हेलीकाप्टरों के मूल में नक़ली स्पेयर पार्ट थे. बाद में बेल की मुख्य कंपनी ने उड़ान के लिए अनुपयुक्त नक़ली स्पेयर पार्ट बनाने के लिए तीन व्यक्तियों के विरुद्ध ४ करोड़ १२ लाख डालर का मुक़दमा भी जीता. साइप्रस और फ़ारस की खाड़ी के देश दुबई में एक ऐसे कीटनाशक की बड़ी मांग है जो दिखने में यूरोप के सुप्रसिद्ध कीटनाशक पिफ़ पैफ़ जैसा लगता है. मगर उस में एक ऐसा तत्व शामिल है जिस से स्वास्थ्य को काफ़ी नुक़सान हो सकता है, यदि इस का छिड़काव खान पान की चीज़ों के आप पास किया जाए. यूरोप, अफ़्रीका तथा अन्य महाद्वीपों में मोटर

गाड़ियों के बिकने वाले पुर्ज़ों में एवरश्योर के जैक और फेरोड के नक़ली ब्रेक भी हैं. यदि कभी अचानक, गाड़ी रोकनी पड़ जाए तो असली पुर्ज़ों वाली गाड़ियों के मुक़ाबले में नक़ली पुर्ज़ों वाली गाड़ियों के रुकने में पांच गुना अधिक समय लगता है.

नक़ली वस्तुओं के निर्माण से वास्तविक निर्माताओं को दोहरा ख़तरा है. कुछ कंपनियों के लिए उन का जाना माना नाम ही उन का सब कुछ होता है. ट्रेड मार्क इस बात की गारंटी होते हैं कि माल बढ़िया और ऊंचे स्तर का है. कुछ एक कंपनियां विदेशों में अपने माल की साख बनाने के लिए, जिस से कि उन का माल देखते ही पहचान लिया जाए, लाखों डालर ख़र्च कर देती हैं.

इस से भी बढ़ कर जो नुक़सान होता है, वह धन का है. फ़्रांस की फ़र्मों का अनुमान है कि इस से उन्हें हर वर्ष २० अरब फ्रेंच फ्रैंक का और पूरे देश को २०,००० नौकरियों का नुकसान होता है. स्विस घड़ी उद्योग का अनुमान है कि हर वर्ष एक करोड़ नक़ली घड़ियों के कारण उन्हें दस अरब स्विस फ्रैंक का नुक़सान होता है. ब्रिटेन के मोटर पार्ट निर्माताओं का विचार है कि उन्हें हर वर्ष निर्यात में १० करोड़ पौंड का नुकसान होता है.

अंतरराष्ट्रीय काररवाई. पहले कंपनियां अलग अलग ढंग से जालसाज़ों के विरुद्ध काररवाई करती थीं. लेकिन अब जालसाजी इस हद तक बढ़ चुकी है कि सब मिल कर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर इस से निबटने में लगी हैं. अप्रैल १९८० में द फ्रेंच मैन्यूफ़ैक्चरर्स यूनियन फ़ार द इंटरनेशनल प्रोटेक्शन आफ़ इंडस्ट्रियल एंड आर्टिस्टिक प्रापर्टी के महानिदेशक आलें थ्रिए ने संयुक्त रूप से उठाए जाने वाले क़दमों पर विचार विमर्श क़रने के लिए विलास का सामान तैयार करने वाली २० देशों की २०० कंपनियों के प्रतिनिधियों की एक बैठक बुलाई. इस दिशा में पहले क़दम के रूप में उन्हों ने ब्रिटेन की एक प्राइवेट गुप्तचर संस्था को अनुबंधित किया. इस गुप्तचर संस्था के संचालक स्काटलैंड यार्ड के भूतपूर्व फ्राड स्कवाड अधिकारी विंसेंट काराटू थे.

जिस समय एक अन्य केस के सिलसिले में काराटू मिलान में छानबीन कर रहे थे, उन्हें जालसाज़ी के बहुत बड़े धंधे का पता चला. बाद में उन्हों ने इस की तह तक पहुंचने के लिए अपने एक जासूस को वहां भेजा. एक दिन वह ग्राहक के रूप में व्या ब्रामांत पर बने उन के मुख्यालय फेरारी ची जा पहुंचा. ऊपर की मंज़िल पर विशाल वर्कशाप में फ़्रांस और इटली की चोटी की फ़र्मों के नक़ली माल के ढेर देखे तो वह हैरान रह गया.

उस के ३ सप्ताह बाद इटली की फ़ाइनेंस पुलिस टास्क फ़ोर्स ने उस स्थान पर छापा मार कर सारे नक़ली सामान सहित ३३ वर्षीय ग्यांफ्रेंकोचि को गिरफ़्तार कर लिया. उस पूरे माल की ढुलाई के लिए ६ बड़े बड़े ट्रकों की ज़रूरत पड़ी. पकड़े गए इस सामान में १,१५० देयर डिज़ाइन वाली पेटियों के बकसुए और ४,००० मीटर कैनवस था जिस पर ,फेरारी ची प्रेमिसिस (एफ़ सी पी) छपा था. इस माल पर देयर तथा एक अन्य फ़्रांसीसी फ़ैशन कंपनी सेलीन के ट्रेड चिह्न अंकित थे. पिछले वर्ष दिसंबर में ची को १९ महीने की क़ैद तथा ८ लाख लीरा जुरमाना हुआ. इस के अलावा उसे जालसाज़ी की शिकार फ़र्मों को ५ करोड़ लीरा मुआवज़ा भी देना पड़ा. ची ने अपनी सज़ा के खिलाफ़ अपील की. लेकिन इस के पहले कि मुक़दमे की सुनवाई शुरू होती, उसे आम माफ़ी के तहत रिहा कर दिया गया.

ब्रिटेन में कैसेट और रिकार्डों के निर्माता इन की रक्षा स्काटलैंड यार्ड के भूतपूर्व गुप्तचरों के एक जालसाज़ी विरोधी दस्ते की सहायता से करने का प्रयत्न कर रहे हैं. आयुर्विज्ञानियों की सहायता से यह दस्ता देश भर से नक़ली टेप और रिकार्डों का सफ़ाया करने में लगा है. १९८० में मारे एक छापे में उन के हाथ भारी मात्रा में नक़ली सामान लगा. अपराध जगत से प्राप्त एक गुप्त सूचना के आधार पर नक़ली कैसेट और रिकार्डिंग करने वाले यंत्रों का एक ज़ख़ीरा बरामद किया. हाईकोर्ट ने १९ व्यक्तियों तथा उन के द्वारा संचालित फ़र्मों को बंद करने और भविष्य में जालसाज़ी न करने के आदेश जारी किए.

सान फ्रांसिस्को स्थित नीली जींस की सब से बड़ी निर्माता कंपनी लेवी स्ट्रास एंड कंपनी ने १९७८ में अमरीकी वकील विलियम एन वाकर की नियुक्ति की थी. तब से ही वे जालसाज़ी के विरुद्ध लड़ रहे हैं. तभी इस कंपनी ने ऐसे जालसाज़ों का भंडा फोड़ा जो बहुत ही सधे ढंग से नक़ल करते थे. उस से पहले उन्हों ने ऐसी बढ़िया नक़ल करने वाले कभी नहीं देखे थे. लंदन स्थित यह कंपनी लेवी की जींस ताइवान में तैयार करवा कर यूरोप में वितरित करती थी. विभिन्न देशों में लेवी स्ट्रास के प्रतिनिधियों द्वारा किए गए क़ानूनी दावों के फलस्वरूप ताइवान, स्विट्ज़रलैंड, नीदरलैंड तथा बेल्जियम से १,५०,००० नक़ली जींस पकड़ी गईं. कंपनी को ५ लाख डालर का मुआवज़ा मिला और ताइवान में ३ व्यक्तियों को सज़ा हुई.

लेवी स्ट्रास में नियुक्ति से पहले वाकर ने वर्षों तक यू एस डिप्टी स्पेशल ट्रेड रेप्रिज़ेंटेटिव की हैसियत से बहुदेशीय व्यापार वार्ताओं में भाग लिया. इस कानफ़्रेंस का आयोजन तोक्यो में किया जाता था. १९७८ में तोक्यो कानफ़्रेंस के वसंतकालीन अधिवेशन में वाकर ने जालसाज़ी से निबटने के लिए क़ानून को अधिक व्यापक बनाने की सरकारी मांग का समर्थन किया. उस से अगले वर्ष के अधिवेशन में पारित क़ानून के प्रारूप को अमरीका, साझा बाज़ार के ९ देशों और न्यू ज़ीलैंड तथा आस्ट्रेलिया ने अपनी स्वीकृति दे दी. इस नियम के अनुसार उपभोक्ता देशों ने तय किया कि वे नक़ली सामान को ज़ब्त कर के नष्ट कर देंगे.

वाकर को आशा है कि अब जापान, कनाडा और स्विट्ज़रलैंड सहित अन्य देश भी इस क़ानून को मान लेंगे और इस वर्ष के अंत तक इस की शर्तों पर हस्ताक्षर कर देंगे.

समस्या सुलझेगी. लेकिन समस्या यह है कि जिन देशों में मुख्य रूप से नक़ली वस्तुओं का निर्माण होता है, वहां अभी तक प्रभावशाली ढंग से कुछ किया नहीं गया है. यहां पुलिस इस से भी अधिक गंभीर मसलों से उलझी है. सज़ाएं बहुत ही मामूली होती हैं. कभी कभी ऐसा लगता है मानो स्वयं सरकारी अफ़सर जालसाज़ी को बढ़ावा देते हों. उदाहरण के लिए ताइवान अंतरराष्ट्रीय पेरिस समझौते का सदस्य नहीं है, जिस के अंतर्गत ट्रेड मार्क को मान्यता दी जाती है. जब कभी जालसाज़ों को छोटी मोटी सज़ाएं होती भी हैं तो उन्हें बड़ी सरलता से थोड़े से जुरमाने में बदल दिया जाता है. यह जुरमाना प्रायः ३० डालर तक होता है. यही कारण है कि वाकर ने यह निराशाजनक भविष्यवाणी की है: ''जालसाज़ी बढ़ती ही जाएगी. वर्तमान क़ानूनों के आधार पर आप उसे नहीं रोक सकते.''

हां, लेकिन यदि हम सभी उपभोक्ता आलें

थ्रिए की निम्न बातों को ध्यान में रखें तो जालसाज़ों से अवश्य बच सकते हैं:

— मशहूर कंपनियों की वस्तुओं पर मन ललचाने वाली भारी छूट से सचेत हो जाएं.

— ध्यान रखें कि ख़रीदारी कहां की जाए. पटरी से ख़रीदने के बजाय दुकान से चीज़ ख़रीदें.

— भारी छूट पर बिक रहे सामान की यथासंभव बारीक़ी से जांच करें.

— सामान की रसीद अवश्य मांगें और रसीद पर वस्तु का ब्रांड ज़रूर लिखवा लें ताकि बाद में अगर वह चीज़ नक़ली निकले तो दुकानदार मुकर न सके.

इस प्रकार सचेत ग्राहक बन कर न केवल हम घटिया नक़ली माल ख़रीदने से बच जाएंगे, बल्कि इस से हम उन निर्माताओं की सहायता भी करेंगे जो हमारे लिए विश्वसनीय वस्तुएं बनाते हैं.

याद रहे कि उन के पास सैकड़ों हज़ारों लोगों को रोज़गार भी मिलता है.

चलते चलते

कुमारी कन्याओं के क्लब की सदस्या: अब तक मैं किसी उत्तम कुमार की खोज करती रही, पर अब किसी सर्वोत्तम कुमार की तलाश है. —हे अ

पानी के कूलर के पास: काम के वक़्त काफ़ी पीना मुझे कभी अच्छा नहीं लगता. क्योंकि उस के बाद सारा दिन सीट पर पड़ी बल खाती रहती हूं. —'टाइम्स', लास एंजलस

मरीज से डाक्टर: माफ़ कीजिए, पर अभी आप अच्छी स्थिति में आने की स्थिति में नहीं हैं. —'गज़ेट', चार्ल्सटन

साथी से सहयोगी: अपने बेटे के मक्खन लगाते ही मैं समझ जाता हूं कि वह कुछ चाट कर दम लेगा. —आर ब्रेड

लाल लगाम

मैं ने अपने ४०वें जन्म दिन पर कुछ मित्रों को आमंत्रित कर रखा था. मेरे पति मेरे लिए तोहफ़ा ख़रीदने गए. उन्हें सुंदर सा म्यूज़िक बाक्स दिखा. नीले रंग की इस मंजूषा से 'हैपी बर्थ डे टू यू' की धुन निकल रही थी. साथ ही बहुत सी मंजूषाएं रखी थीं सो सभी को एक सी समझ कर, उन्हों ने नीले के बजाए लाल वाली मंजूषा ख़ूबसूरती से पैक करने को कह दिया. रात हम सब खाने पर बैठे तो पति ने उपहार मुझे थमा कर उसे खोलने को कहा. खोलते ही उस में से एक गीत बज उठा: सुन अरी ओ बूढ़ी घोड़ी, तेरी उम्र बड़ी ही थोड़ी . . .

—श्रीमती ई डी
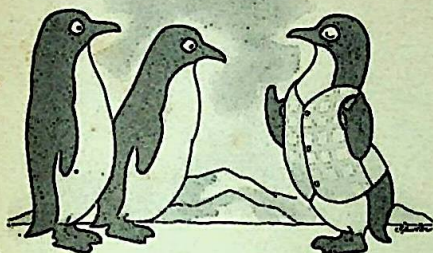
सोचने की बात

हेनरी किसिंजर के अनुसार नेता के गुण :

नेता का दायित्व लोगों को उन की वर्तमान स्थिति से उठा कर ऊपर ले जाना है, उस ऊंचाई तक जो अब तक उन की पहुंच के बाहर रही हो. जनता पूरी तरह नहीं जानती कि वह किस दौर से गुज़र रही है. नेता में इतनी क्षमता होनी चाहिए कि वह लोगों में आशाएं और आकांक्षाएं जगा सके. अतः जिन में यह क्षमता नहीं, वह अंततोगत्वा असफल माने जाते हैं, भले वह कभी कितने ही लोकप्रिय क्यों न रहे हों. —'टाइम'

फ्रेंकलिन डी रूज़वेल्ट :

चार या पांच हज़ार वर्ष की चीनी सभ्यता व संस्कृति इस कथा से उजागर होती है: दो चीनी कुली वह ज़ोरों से तूतू मैंमैं कर रहे थे कि उन के इर्द गिर्द तमाशाई जमा हो गए. एक अजनबी ने इस पर आश्चर्य व्यक्त किया कि इन में इस कदर बहसाबहसी हो रही है तो हाथापाई क्यों नहीं हो रही. उस के चीनी मित्र ने बताया, "एक के हाथ उठाने का मतलब होगा कि दूसरे में तर्क शक्ति नहीं. उस के तर्कों में दम नहीं."

साशा कारनेगी ने 'द डार्क नाईट' में स्वप्नों के विषय में कहा है :

मुट्ठी पर रेत उठाने पर क्या आप को कभी यह लगा कि कुछ आप के हाथ लग गया है? आप मुट्ठी जितने ज़ोर से भींचते हैं, रेत उतनी ही तेजी से हाथ से निकलती जाती है. अंत में कुछ हाथ नहीं रहता. हां, इतना ज़रूर है कि उसी रेत के कुछ कण आप की हथेली से चिपके रह जाते हैं. ये स्वप्नों के अवशेष हैं. कुछ देर आप इन बचे खुचे कणों को भी बचाने की पुनज़ोर कोशिश करते हैं कि अचानक वे भी हाथ से खिसक जाते हैं और आप के हाथ कुछ नहीं लगता.

—पीटर डेविस, लंदन

आल्डो लीओपोल्ड, 'राउंड रिवर' में :

इतिहास के दस्तावेज़ पर हमारे हस्ताक्षर हैं हमारी संतानें. मैं उन के लिए अच्छे स्वास्थ्य, अच्छी शिक्षा और संभव हो तो प्रतिभा व कार्यकुशलता की भी वसीयत करना चाहूंगा. पर वे इन सब चीज़ों को ले कर क्या करेंगे यदि वनों में मृग ही न हों अथवा झुरमुटों में तीतर न रहें? चरागाहों में चहा की गूंज न हो, झीलों के पास भूरी बादामी बत्तख़ विजन की पीप न रहे और पंक प्रदेश पर ढलती शाम हरी भूरी पनमुर्ग़ी की चहचहाहट से चहक न रही हो. या फिर पूर्व में धुंधलाते भोर के तारे के साथ पक्षियों के कलरव और मृदुल पांखों की फरफराहट का विधान न हो! और जब प्राचीन चिनारों को सुरसुराती सुबह की बयार बह रही हो, और रुपहली किरणें पहाड़ी के पीछे से उभर कर बूढ़ी नदी के तट पर बिखरी रुपहली रेत के वितान को धीमे से स्पर्श कर रही हों—ऐसे में हंस ध्वनि का अभाव न खलेगा?

हरियाला गरुड़

रूखी धरती हरीतिमा के लिए तरस रही थी लेकिन वह अजनबी गरुड़ जैसे वरदान बन कर उस पर उतरा. देखते ही देखते समूचे इलाक़े में मानो बहार उग आई

—जान पावर्स

आस्ट्रेलिया के दक्षिणी मेलबोर्न जिले का उद्यान व्यवस्थापक ब्रायन कार्टर धरती के रूखेपन से परेशान था. उसे कोई ऐसा गुर नहीं मिल रहा था कि वह अपने १५ वर्ग किलोमीटर क्षेत्र के २२ हज़ार बाशिंदों को वृक्षारोपण कार्यक्रम से जोड़ सके. वह जब भी बाज़ारों या रेस्तोराओं में वृक्षारोपण में सहयोग करने की बात उठाता तो बार बार सुनने को मिलता, "यहां कोई भी तुम्हारे लिए एक तिनका उठाने वाला नहीं है. कोई रत्ती भर परवाह नहीं करता."

तब जैसे उस के सपने को दैवी सहयोग मिला.

चित्र : फिल बलविन

तैंतीस वर्षीय कार्टर अक्तूबर १९७५ के व्याव-सायिक दौरे से लौट कर आया ही था कि एक माली वहां आ धमका. "उस दुष्ट गरुड़ से कैसे निपटें?"

"गरुड़? कौन सा गरुड़?" कार्टर ने पूछा. माली ने सेंट विंसेंट प्लेस की खिड़की की तरफ़ इशारा किया. "वह जो पेड़ पर बैठा है. चार दिनों से वहीं जमा है."

अजीबोग़रीब दृश्य

सेंट विंसेंट प्लेस दो हेक्टेयर का पार्क है और यहीं में कार्यालय स्थित है.

दक्षिणी मेलबोर्न के वैभव के दिनों में उपनिवेश के अमीर उमरा द्वारा तैयार करवाए गए हरे भरे क्रिकेट के मैदान के पास से गुज़र कर कार्टर ने पार्क पार करते ही एक अजीबोग़रीब दृश्य देखा. देवदार के पेड़ पर बहुत ऊंचे एक पच्चड़नुमा दुम वाला गरुड़ चुनौती सी देता हुआ बड़े रोब से बैठा था—काला, विशालकाय और राजसी आन बान वाला गरुड़.

उस शानदार पक्षी को एकटक देखते कार्टर को लगा कि यह कोई देवदूत है. स्वस्थ वातावरण, स्वतंत्रता और स्वावलंबन का प्रतीक गरुड़ दक्षिणी मेलबोर्न के उदासीन निवासियों को खोए हुए मूल्य फिर से पाने के लिए प्रेरित कर सकता है.

लेकिन सब से पहले कार्टर को यह निश्चित करना था कि गरुड़ वहां टिका भी रहेगा या नहीं. उस का मन लगाने के उद्देश्य से कार्टर ने सेंट विंसेंट प्लेस के सामने ही रहने वाले जार्ज डीन नाम के एक अवकाश प्राप्त चौकीदार की मदद ली. जिस दिन से पक्षी वहां आया था, डीन उसे खरगोशों की ताज़ा टांगें और भेड़ों की कलेजी खिलाता रहा था. पीने के पानी वाले फ़ौआरे से थोड़ा पानी भी छोड़ा करता ताकि गरुड़ नहा सके.

कार्टर ने उस गरुड़ का नाम साम रख दिया. लेकिन यह पक्षी हर किसी को नहीं भाया. सीगल, कौए और अन्य पक्षी उस पर रह रह कर हमला करते. बिल्लियां झपट्टे मारतीं. कुछ लोगों को गरुड़ अपने छोटे बच्चों के लिए ख़तरनाक लगा. वे गरुड़ को गोली मार देने की मांग कर रहे थे.

जो भी हो, साम बहादुर डिगे नहीं. अपने पंजों, चोंच और परों पर उसे काफ़ी भरोसा था, इस लिए वह किसी से डरता नहीं था—नोक झोंक करने वाले सीगलों से तो बिलकुल नहीं. पंजा फैलाते ही तगड़े से तगड़ा माल पकड़ में आ जाता. फिर वह आराम से किसी पेड़ या छत पर जा बैठता और मज़े ले कर दावत उड़ाता.

वैसे यह अचंभे की बात थी कि आस्ट्रेलिया के आकाश के राजा विशाल पक्षिराज गरुड़ ने बसने के लिए ८००० घरों और ५० रेस्तोराओं और बारों से घिरे उस दो हेक्टेयर के पार्क में ही रहने की क्यों ठानी जब कि वहां से मुश्किल से दो किलोमीटर की दूरी पर मेलबोर्न का भीड़ भड़क्के वाला केंद्रीय व्यापार क्षेत्र है? एक मत्स्य एवं वन्य जीवन अधिकारी ने दलील दी कि शायद साम पहले किसी के यहां पालतू पक्षी के रूप में ऐसी जगह रहता होगा जो सेंट विंसेंट प्लेस से मिलती जुलती हो.

अस्तु, साम का अतीत कुछ भी रहा हो, वह जल्दी ही उस इलाक़े का प्रमुख आकर्षण बन गया. डीन जैसे लोगों की दोस्ती पा कर अब वह मैदान में इधर उधर फुदकता रहता और अपने निकट फेंकी जाने वाली टहनियों पर झपटता रहता. जब वह सर्राटा भरता दफ़्तरों की खिड़कियों के पास से गुज़रता तो वहां काम करने वाले कर्मचारी क़लम रख देते. वन्य जीवन के इस अद्भुत प्रतीक को भरपूर देख पाने के लिए बच्चे सेंट विंसेंट प्लेस की ओर दौड़ते. समाचार पत्र, रेडियो और टेलीविज़न वालों को भी साम की गंध मिल गई.

परिणाम स्वरूप समूचे मेलबार्न से झुंड के झुंड लोग साम की उड़ान या देवदार पर आसन लगा कर बैठे गरुड़ को देखने के लिए भागे चले आने लगे.

सब से बड़ी बात यह रही कि कार्टर की आशा के अनुरूप साम दक्षिणी मेलबोर्न में सुंदरीकरण कार्यक्रम का माध्यम बन गया. कुछ ही दिनों में लोगों की सामुदायिक भावना इस क़द्र बढ़ी कि देखते ही देखते उस क्षेत्र में हरियाली बढ़ने लगी. १९७७-७८ के सत्र में हर छात्र ने कम से कम एक पेड़ लगाया. दो वर्षों में ही दक्षिणी मेलबोर्न की वृक्ष संख्या वहां की जन संख्या से अधिक हो गई.

इस कार्यक्रम में सब के सब आस्ट्रेलियाई पौधे ही रोपे गए. पहले इस क्षेत्र में यूरोपियन वनस्पतियों की बहुलता थी. नए देशी पेड़ों के कारण यहां के कीट पतंग फिर आ बसे, जो स्थानीय पक्षियों के भोजन थे. फिर वे बड़े बड़े पक्षी भी आने लगे जो छोटे पक्षियों पर गुज़ारा करते हैं. परिणाम स्वरूप साम का साथ देने को गाला, अबाबील, काकतुआ और रजकाक्षी जैसे फलाहारी और बाज़ तथा खेरमुतिया (कैस्ट्रल) जैसे शिकारी पक्षी आने लगे, जो एक मुद्दत से इस इलाक़े में दिखाई नहीं पड़े थे.

इस से पहले सेंट विंसेंट प्लेस में सप्ताह में मुश्किल से २०-३० व्यक्ति आते थे, अब हर सप्ताह छुट्टियां मनाने के लिए वहां आने वालों की संख्या हज़ार तक जा पहुंची. बड़े वहां सुस्ताने आते और बच्चे नई नई उगी झाड़ियों में आंख मिचौनी खेलते. पक्षी प्रेमी स्थानीय पक्षियों की बढ़ती संख्या का हिसाब लगाते.

साम की मौजूदगी से कार्टर तथा स्थानीय परिषद को इस क्षेत्र में ऐसे उत्सवों का आयोजन करने की भी प्रेरणा मिली जिन से लोगों में घनिष्ठता बढ़े. उन्हों ने तत्काल संगीत और खेल संध्याओं का नियमित कार्यक्रम शुरू कर दिया. जो लोग वहां आते उन्हें खाने को मुफ़्त सासेज और भुना गोश्त मिलता, और देखने सुनने को मसखरों का तमाशा तथा बैंड की धुन इस के अलावा बच्चों की मज़ेदार 'अंडा चम्मच' तथा 'चोरी' दौड़ भी देखने को मिलती. और हां, उन का अपना गरुड़ साम तो देखने को मिलता ही था.

इन कार्यक्रमों के साथ साथ दोपहर तीन बजे के क़रीब साम की उड़ान का कार्यक्रम रहता. तीन बजे कि विशाल गरुड़ पेड़ों के बीच मंडराता. भीड़ के ऊपर दो चार चक्कर लगा कर अपने पेड़ पर जा बैठता और नीचे की चहल पहल को देखता रहता.

१५ अक्तूबर साम का जन्म दिन घोषित किया गया, क्योंकि इसी दिन वह मेलबोर्न आया था. हर साल कुछ उत्साही लोगों की छोटी सी टोली सवेरे छः बजे ही अपने लिए शराब और साम के लिए ताजा गोश्त ले कर सेंट विंसेंट प्लेस पहुंच जाती और 'तुम्हें जन्म दिन मुबारक हो' गाती रहती.

फुलबगिया पर बहार

१९७६ के अक्तूबर में साम की थोड़ी बदनामी फैल गई. अब तक तो उसे पार्क का संरक्षक समझा जाता था, लेकिन एक दिन उसे जाने क्या सूझी कि उस ने बढ़िया नस्ल के एक पिल्ले को ज़मीन से उठाया और ऊपर ले जा कर अचानक छोड़ दिया. उस के इलाज पर कुत्ते के मालिक को २०० डालर ख़र्च करने पड़ गए. उसे बहुत गुस्सा आया और उस ने अर्ज़ी दाख़िल कर दी कि साम को वहां से हटाया जाए. लेकिन वहां के निवासियों ने साम की हिमायत में पत्र लिखे. एक बच्चे का कहना था कि "कहां एक मामूली से पिल्ले पर २०० डालर का ख़र्च और कहां शानदार गरुड़—कोई मुक़ाबला है?" परिषद ने अर्ज़ी रद्द कर दी. साम को बनाए रखने का फ़ैसला हुआ.

इस फ़ैसले से परिषद के मालियों को भी ख़ुशी हुई. वे काफ़ी दिनों से परेशान थे कि लोग कुत्तों को खुला छोड़ देते और वे पार्क में छुट्टा दौड़ते, फूलों की क्यारियों को ग़ैंद डालते. साम ने दो चार बार झपट्टे मारे तो बाड़ा रौंदने वाले छुट्टे कुत्ते लगभग ग़ायब ही हो गए. फिर तो फुलबगिया पर बहार ही आ गई.

सहचरी की तलाश

साम को प्यार करने वाले लोगों को लिए सब से तूफ़ानी प्रसंग रहा साम द्वारा सहंचरी की तलाश. साम को दक्षिणी मेलबोर्न में आए दो साल हो गए थे. उसे लगा कि वह कुछ ज़्यादा समय से अकेला रह रहा है. उसे दुलहिन की चाहत थी. उस की यह चाह और तलाश घौंसला बनाने के साथ शुरू हुई. दरअसल, हर नर गरुड़ घोंसला बनाने से ही शुरुआत करता है. साम ने एक पेड़ की ऊंची शाखाओं के बीच लकड़ियां जमा जमा कर कुछ दिनों में घोंसला तैयार करं लिया. फिर उस ने साथी की तलाश में उड़ानें भरनी शुरू कीं. वह दो तीन हज़ार मीटर की ऊंचाई तक उड़ता, मंडराता, डुबकी मारता और तरह तरह की कलाबाज़ियां खाता, जिस से वह कई किलोमीटर के दायरे तक मौजूद किसी मादा गरुड़ की निगाह में आ सके.

लेकिन कोई बात नहीं बनी.

कई महीनों तक साम ये उड़ानें भरता रहा. अब उस का तलाश क्षेत्र हाबसन की खाड़ी से ले कर डांडेनांग की पर्वत शृंखलाओं तक फैल गया था. एक बार वह चार दिन तक ग़ायब रहा और लौटा तो भूख से बेहाल था—पर दुलहिन उसे नहीं मिली थी. जो गरुड़ एक दिन में बिना कठिनाइ के ३०० किलोमीटर तक उड़ लेते हैं, वे साथी की तलाश में कितनी दूर की उड़ान भरते होंगे, इस का अंदाज़ा लगाना मुश्किल है.

आख़िर, जब वह यह मानने पर मजबूर हो गया कि इनसानों की आबादी वाले इस इलाक़े में कोई और गरुड़ नहीं है, तो साम ने अपनी लुभावनी कलाबाज़ियां दिखानी बंद कर दीं. उसे मान लेना पड़ा कि अब तनहाई ही झेलनी है, इस लिए उस ने वे ऊंची उड़ाने भरनी भी छोड़ दीं जो गरुड़ों के लिए ही संभव हैं.

नगर परिषद बिना रुके काम करती रही. दक्षिणी मेलबोर्न की सड़कों को अब ऐसा रूप दिया जाने लगा कि उस क्षेत्र में यातायात प्रवाह को सीमित किया जा सके. और भी पेड़ तथा झाड़ियां लगाई गइं. जो पौधे पहले रोपे गए थे, वे अब पनप कर छतनार हो चले थे. ख़स्ताहाल पुरानी मारकेट को भी सुधारा संवारा गया. गरुड़ के आने से दक्षिणी मेलबोर्न का सन्नाटा टूटा था और वहां गरमजोशी आ गई थी. लोग पार्क में एक दूसरे से मिलते, बातें करते, ठहाके लगाते, समूचे क्षेत्र में आत्मीयता रस गई थी. चार वर्ष भी नहीं लगे, साम ने मेलबोर्न की कायापलट कर दी थी.

साम के आगमन की चौथी वर्षगांठ अभी तीन सप्ताह दूर थी कि वह सहसा ग़ायब हो गया. मेलबोर्न में शोक की लहर दौड़ गई. साम हर किसी का अपना था. लोग बेताब हो कर आकाश की ओर निहारते, साम की बाट जोहते रहे. दिन बीतते गए. जार्ज डीन ने अपने को तसल्ली देने की कोशिश की कि साम को आख़िर दुलहिन मिल गई होगी और वह उस के साथ डांडेनांग के पहाड़ों में सुहागरात का आनंद ले रहा होगा.

१५ अक्तूबर १९७९ को साम का जन्म दिन था. ब्रायन कार्टर इस विश्वास के साथ जगा कि आज वह ज़रूर वापस आएगा. वह हमेशा की तरह सवेरे छः बजे ही पार्क में पहुंच गया. शराब की बोतल और गरुड़ का चुग्गा (मांस) उस के पास था. कार्टर के शब्दों में: ''मैं आध घंटे तक बाग़ के चक्कर लगाता रहा. इस बीच उदास मन

से मैं ने शराब के कुछ घूंट भी भरे, पर साम नहीं आया. मैं हताश घर लौट गया."

बारह बजे कार्टर के टेलीफ़ोन की घंटी बज उठी. डीन बोल रहा था. उसे अपनी आवाज़ को संतुलित रखने में कठिनाई हो रही थी. "साम मर गया." उस ने कहा, "वह एक कार से टकरा गया." कार्टर हतप्रभ! उस ने धीरे से चोंगा नीचे रख दिया. कुछ ही देर बाद टेलीफ़ोन फिर बजा. इस बार रेडियो स्टेशन से बाब रोजर्स बोल रहा था, "कल सवेरे हम साम की स्मृति में कार्यक्रम प्रसारित करने जा रहे हैं. उस में आप भी भाग लें." उस ने कार्टर से कहा.

अगले दिन कार्यक्रम के दौरान पृष्ठभूमि में नील डायमंड की 'स्काईवर्ड' नाम की धुन बज रही थी और कार्टर साम पर लिखी अपनी कविता पढ़ रहा था.

बाद में रेडियो स्टेशन को समूचे देश से लगभग ६०० फ़ोन आए—फ़ोन करने वालों में से अधिकतर सिसक रहे थे.

दक्षिणी मेलबोर्न की परिषद ने साम के शरीर को प्राप्त कर के उसे भरवाने की व्यवस्था की. साउथ मेलबोर्न टैक्नीकल स्कूल के छात्रों ने इसे अपने यहां प्रदर्शित करने के लिए शीशे का बक्सा तैयार किया और इस प्रकार गरुड़ साम को अपने क्षेत्र में स्थायी आवास दिया. साम का सही स्मारक तो वास्तव में कहीं और था—नगर का वह सौंदर्यपूर्ण कोना जहां उस ने अपना राज स्थापित किया था और ४०,००० से भी ज़्यादा वे पेड़ जो उसी की बदौलत यहां लहलहा रहे हैं, उन बाज़ारों और पार्कों, में गूंजता पक्षियों का कलरव जहां कभी नीरवता व्यापी रहती थी

वहां आ कर बसे गरुड़ का उस क्षेत्र के लोगों के लिए क्या महत्व था, इस का प्रत्यक्ष प्रमाण है ब्रायन कार्टर, जिस के सपने साम की प्रेरणा से ही साकार हुए.

"यह सब उस क्षेत्र में संपन्न हुआ जहां लोग इसे असंभव मानते थे." ब्रायन कार्टर विजय भाव से कहता है. "मुझे पूरा विश्वास है कि साम यहां विशेष उद्देश्य से आया था—वह हमें कुछ सीख देना चाहता था. मुझे सचमुच इस बात का पूरा विश्वास है. समय भी अनुकूल था, हर तरह से, इसे महज़ इत्तफ़ाक नहीं कहा जा सकता. साम ने हमें अपने वातावरण के प्रति सजग होना सिखाया और यह भी बताया कि यह होना कैसा चाहिए. उस ने यह भी सिखाया कि नगर में झाड़ियां कैसे उगाई जाती हैं, और यह भी कि पड़ोसी के साथ आत्मीयता कैसे पनप सकती है. उस ने यह भी सिखाया कि नगर में रहते हुए भी आप को शांति के क्षण प्राप्त हो सकते हैं. आप स्वयं शांति के क्षण पनपा सकते हैं. उस ने हमें उस वन्य भावना की अनुभूति कराई जो नितांत अंतरंग थी.

"लेकिन सब से बड़ी बात तो हमारे लिए यह थी कि साम यहां रहा . . .और वह इतना महान था. आप ने कभी उड़ता हुआ गरुड़ देखा है तो आप को पता होगा कि यह पंख फड़फड़ाता नहीं, बस तैरता है . . .मंडराता है . . .गरुड़ आज़ाद पक्षी है, बिलकुल आजाद . . .राजसी!"

कार्टर उड़ते हुए गरुड़ की आन बान को शब्दों में बांधने की कोशिश कर रहा था, तब उस के चेहरे पर जो भाव आ रहे थे वे शब्दों की अपेक्षा कहीं अधिक अर्थवान थे—साम के प्रति आस्था एवं कृतज्ञता के अमर मूल्य वाले भाव.

क़सबों में रहने में एक कष्ट यह भी है कि आप का घर हमेशा आप से पहले वाले किराएदारों के नाम से जाना जाता है.

—आरबंस कामेडी फ़िलर

साइबेरियाई गैस

कूटनीति में उलझता अर्थशास्त्र

—जोसेफ़ ए हैरिस

मक्खी से मकड़ी बोली, "मेरे अंगना में तुम्हारा ही काम है."

दो साल बाद १९८४ में साइबेरियाई आर्कटिक महासागर से पश्चिमी यूरोप तक ५,५०० किलोमीटर लंबा स्टील पाइप लग जाएगा. इस का निर्माण पूरा होने पर सात यूरोपीय राष्ट्रों को प्राकृतिक गैस मिलने लगेगी. इन सात देशों* में नाटो (उत्तर अतलांतक संधि संगठन) के पांच देश भी शामिल हैं. साइबेरियाई गैस की नीली लौ अभी घरों और कारख़ानों में जल भी नहीं पाई है कि इस पाइप लाइन परियोजना के कारण अमरीका और नाटो के सदस्य राष्ट्रों के बीच मतभेद उत्पन्न हो गए हैं. साइबेरियाई गैस संबंधी विवाद ने सोवियत संघ के बारे में अमरीकी और यूरोपीय दृष्टिकोणों की बढ़ती हुई खतरनाक खाई को उभार कर रख दिया है. हाल ही में जब पोलैंड में दमन चक्र चला तो पश्चिमी देशों के दृष्टिकोणों का अंतर सामने आया.

यही बात फिर यूरोप के मध्यम लक्ष्य विधि प्रक्षेपास्त्रों के आधुनिकीकरण पर हुए मतभेद के समय सामने आई.

इस परियोजना की कुल लागत १० अरब डालर की विशाल राशि होगी. पूर्वी और पश्चिमी यूरोप के बीच यह सब से बड़ा व्यावसायिक सौदा है. पाइप लाइन बिछाने में इंजीनियरी का कौशल अपने ढंग का निराला है. मास्को से ४,००० कि.मी. पूर्व में आर्कटिक वृत्त के आरपार ३०० मीटर की ऊंचाई तक जमे हुए टुंड्रा प्रदेश में पश्चिमी साइबेरिया का गैस क्षेत्र पड़ता है. यहां साल में दस महीने सर्दी पड़ती है और उन दिनों तापक्रम शून्य से ५४ डिगरी सेलशियस तक नीचे चला जाता है. इस ठंड में रबड़ इस्पात की तरह कठोर हो जाता है और धातु की छड़ें तक सींकों की तरह टूट जाती हैं. कुल पाइप लाइन में १४२ सेंटीमीटर व्यास का ४० लाख टन इस्पाती पाइप लगेगा. यह लंबाई अलास्का की तेल पाइप लाइन की चार गुना होगी.

राजनीतिक महत्त्व. सोवियत संघ इस विराट परियोजना में निहित अपने हितों को भली

*आस्ट्रिया, इटली, नीदरलैंड्स, पश्चिम जरमनी, फ्रांस, बेलजियम स्विट्ज़रलैंड. इन में आस्ट्रिया और स्विट्ज़रलैंड नाटो के सदस्य नहीं हैं.

भांति समझता है. सोवियत राष्ट्रपति लियोनिद ब्रेज़नेव ने गत वर्ष साम्यवादी दल के २६ वें महासम्मेलन में घोषणा की थी: "साइबेरियाई गैस के उत्पादन में तेज़ी के साथ वृद्धि का बहुत भारी आर्थिक और राजनीतिक महत्व है."

सोवियत संघ में ३४० खरब घनमीटर गैस भंडार हैं. यह संसार के कुल ज्ञात गैस भंडार का एक तिहाई है. पिछले दशक में सोवियत संघ ने तेल की खुदाई की धुन में प्राकृतिक गैस की अवहेलना की. उस की ओर उन का ध्यान हाल ही में गया है और वह चरमराती सोवियत अर्थ व्यवस्था के लिए आशा का स्रोत बन गया है. सोवियत संघ में तेल के उत्पादन का स्तर अब स्थिर सा हो गया है, परंतु गैस का उत्पादन इस दशक में १३० प्रति शत तक बढ़ जाएगा. फलस्वरूप १९८४ तक गैस के उत्पादन में सोवियत संघ अमरीका से बाज़ी मार ले जाएगा.

सोवियत संघ गैस का सब से अधिक मात्रा में निर्यात करने वाला देश बन चुका है. यूरोप को अपनी आवश्यकता की लगभग १२ प्रति शत गैस सोवियत संघ से मिलती है. नई पाइप लाइन के चालू हो जाने पर उस में ४० अरब घन मीटर प्रति वर्ष की वृद्धि हो जाएगी अर्थात् उस की मात्रा दोगुनी हो जाएगी. पश्चिम जरमनी और फ्रांस जैसे देश कम से कम ३० प्रति शत गैस की पूर्ति के लिए सोवियत संघ पर निर्भर रहने लगेंगे.

यही मूल समस्या है. यह सौदा पिछले वर्ष शरद ऋतु में ब्रेज़नेव की जरमनी यात्रा के दौरान शुरू हुआ. तब पश्चिम जरमनी की कंपनियों ने आरंभिक अनुबंधों पर हस्ताक्षर किए थे. इस समझौते से यूरोप ऊर्जा के मामले में रूस पर निर्भर हो जाएगा. वाशिंगटन में ४५ अमरीकी सीनेटरों और कांग्रेस सदस्यों ने १९८१ में राष्ट्रपति रीगन के नाम एक विरोध पत्र भेजा जिस में इस परियोजना को 'पश्चिमी जगत की सुरक्षा के लिए एक स्पष्ट और तात्कालिक ख़तरा' बताया.

एकता भंग. परंतु १९८१ में ओटावा आर्थिक शिखर सम्मेलन के समय जब राष्ट्रपति रीगन ने यूरोपीय नेताओं से मुलाक़ात की और उन्हें इस परियोजना के बारे में अमरीका के आलोचनापूर्ण दृष्टिकोण से परिचित कराया तो उन का तर्क उसी समय अस्वीकार कर दिया गया. शिखर सम्मेलन के बाद राष्ट्रपति रीगन ने पाइप लाइन का विकल्प खोजने के लिए अमरीकी विशेषज्ञों का एक दल जरमनी भेजा. परंतु जरमनी के अर्थ मंत्री औटो लैंसडोर्फ़ ने ताना कसा कि अमरीकी योजना सोवियत संघ का विकल्प नहीं है.

उस के बाद जरमनी की सरकार ने घोषणा की कि वायोमिंग में अमरीका और जरमनी के संयुक्त तत्वावधान में कोयले से गैस बनाने का संयंत्र लगाने का कार्य स्थगित किया जा रहा है. उस संयंत्र का प्रयोजन यह था कि कोयले से सस्ती गैस तैयार की जा सकती है या नहीं. इस के बाद यह ख़बर आई कि सोवियत जरमन ऊर्जा आयोग की स्थापना की जा रही है. इस के अंतर्गत सब से पहले साइबेरिया में जरमन कोयला-प्रशोधन प्लांट लगाया जाना था.

पोलैंड में सोवियत संघ प्रेरित मार्शल ला लागू होने पर जब नाटो पश्चिमी देशों को उस के विरुद्ध आवाज़ उठाने के लिए तैयार कर रहा था तो २२ जनवरी को इन देशों की एकता को एक और धक्का लगा. उसी अवसर पर फ्रांस के राष्ट्रपति फ्रांस्आ मितरां ने प्रति वर्ष आठ अरब घन मीटर गैस की अतिरिक्त सप्लाई पाने के लिए सोवियत संघ के साथ २५ वर्षीय अनुबंध पर हस्ताक्षर किया. इस सप्लाई के साथ सोवियत संघ से फ्रांस को मिलने वाली
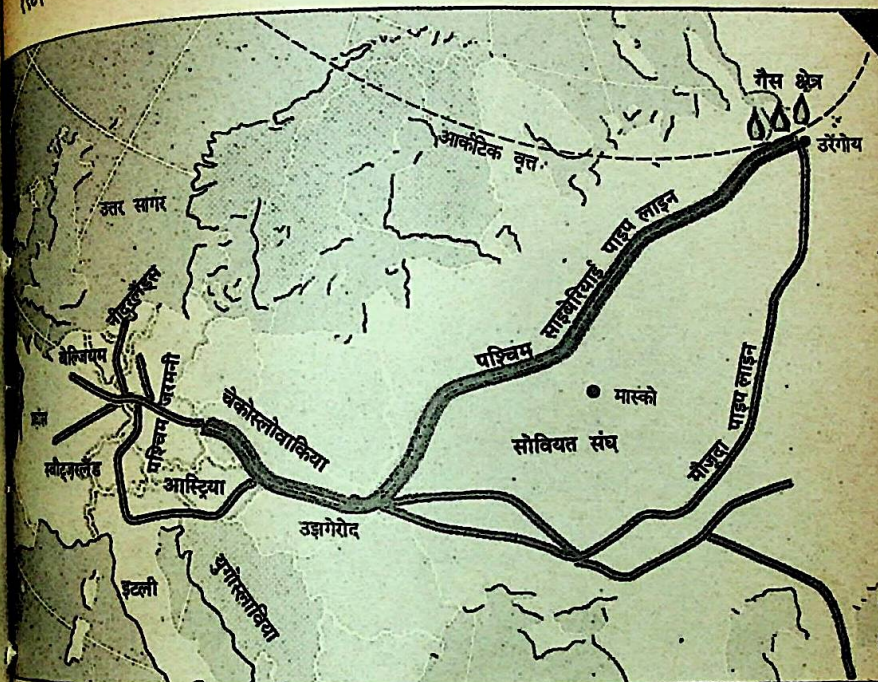
गैस की मात्रा तिगुनी हो जाएगी. इस के कुछ दिनों बाद इटली ने घोषणा की कि आठ अरब घन मीटर गैस के लिए उस की सोवियत संघ से जो वार्ता चल रही है, वह अनुबंध का रूप लेने वाली है. स्पेन ने भी साइबेरियाई गैस ख़रीदने में रुचि दिखाई है, हालांकि उस ने नाटो की सदस्यता के लिए आवेदन दे रखा है.

अमरीका और पश्चिमी यूरोप के बीच इतना गंभीर मतभेद कैसे उठ खड़ा हुआ ? इस का एक कारण यह है कि यह समझौता महज़ गैस के सौदे तक ही सीमित नहीं है. औद्योगिक क्षमता की कमी तथा इतनी बड़ी परियोजना को पूरा करने के लिए आवश्यक तकनीकी जानकारी और साधनों के अभाव के कारण सोवियत संघ ने यूरोपीय देशों के सामने गैस पूर्ति के आकर्षक अनुबंध पेश किए हैं. सोवियत संघ ने वादा किया है कि पाइप लाइन बजट का अधिकांश भाग पश्चिमी यूरोप में निर्माण उपकरण और अन्य सामग्री व साधनों पर ख़र्च किया जाएगा. यह राशि ब्याज की अत्यंत नीची दरों पर यूरोपीय बैंकों से कर्ज़ के रूप में मिल रही है. महाद्वीप के व्यवसायियों के लिए इतने बड़े आर्डर दैवी देन सिद्ध हुए हैं.

यूरोप की जिन कंपनियों को इस सौदे से तगड़ा मुनाफ़ा होने वाला है, उन में एक है मेंसमेन—पश्चिमी जरमनी का भारी उपकरण निर्माता. यह कंपनी सोवियत पाइप लाइन के लिए बड़े व्यास के १२ लाख टन पाइप सप्लाई करेगी. इटली के नूवो पिगनोन, ब्रिटेन के जान ब्राउन इंजीनियरिंग और पश्चिमी जरमनी के एग कानिस नामक गैस टरबाइन के निर्माताओं ने सोवियत संघ से लगभग ८० करोड़ डालर के

आर्डर प्राप्त किए हैं. बेल्जियम के एक इस्पात निर्माता यूज़ीन अ तूबे द ला म्युज़ को पहले अपने प्रयत्नों में सफलता नहीं मिली थी, लेकिन अब वह भी ७० करोड़ डालर का आर्डर लेने में सफल हो गया है. यह उस की चरमराती अर्थव्यवस्था के लिए आशा का स्रोत बन गया है.

दूसरा कारण यह है कि यूरोप के देशों ने कुछ वर्ष पहले जब सोवियत संघ से ऊर्जा की ख़रीद शुरू की थी, तब से उन का व्यापारिक संतुलन घाटे में चला आ रहा है. तेल और गैस की क़ीमतों में भारी वृद्धि होने से पहले सोवियत संघ के साथ फ्रांस का निर्यात उस के आयात की अपेक्षा अधिक रहता था. अब स्थिति यह है कि अन्य यूरोपीय देशों की भांति फ्रांस भी हिसाब बराबर करने के लिए पूर्व के हाथों अपना औद्योगिक उत्पादन और तकनीकी जानकारी अधिक मात्रा में बेचने के लिए संघर्ष कर रहा है.

कमज़ोर कड़ी. पश्चिमी जरमनी नाटो के मोर्चे पर सब से आगे तैनात रहा है. इस सौदे का सब से ज़्यादा लाभ उसी को हुआ है. पश्चिमी जरमनी का १० से १५ प्रति शत विदेश व्यापार सोवियत संघ और पूर्वी गुट के देशों के साथ ही होता है. पिछले दशक में चौगुनी वृद्धि हुई है. मई १९८० में चांसलर हेलमुट शिमट मास्को गए और वहां उन्हों ने सोवियत संघ के साथ औद्योगिक और आर्थिक सहयोग के कार्यक्रम पर हस्ताक्षर किए. सौहार्द उत्पन्न करने की दृष्टि से ब्रेज़नेव ने शिमट को बताया कि सोवियत संघ पाइप लाइन संबंधी समझौते पर पहले की तरह तैयार है. यह परियोजना जरमनी के उद्योगों के लिए वरदान सिद्ध हो सकती है. पूर्वी गुट के साथ उस के व्यापार पर २,२०,००० जरमन नागरिकों का रोज़गार निर्भर है. यह उस देश के लिए शुभ समाचार ही माना जाएगा जहां १९८१ में बेरोज़गारी की दर १९५५ से भी बढ़ कर थी.

इस परियोजना में साझेदारी और ऊर्जा के मामले में सोवियत संघ पर उस की बढ़ती हुई निर्भरता को ले कर देश में कुछ आलोचनाएं हुई हैं. वहां के प्रतिष्ठित पत्र फ्रैंकफुर्तर आल्जेमीन ज़ीतुंग ने अपने संपादकीय में लिखा है, "कुछ वर्ष पहले इस से कम निर्भरता भी विवेक की कसौटी पर ख़तरनाक मानी जाती." एक विरोधी दल के नेता फ्रांज़ जोज़ेफ़ स्ट्रास ने अपनी रोषपूर्ण प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा, "पश्चिमी देश तो पाइप लाइन जुटा रहे हैं, लेकिन सोवियत संघ उसे बंद करने के लिए डाट तैयार कर रहा है."

इस सौदे के यूरोपीय समर्थक इस संभावना की हंसी उड़ाते हैं कि सोवियत संघ गैस देना बंद कर देगा. उन का कहना है कि अगर सोवियत संघ ने ऐसा किया तो वह व्यापारी के रूप में अपनी साख गंवा बैठेगा. ये लोग इस तथ्य को भुला रहे हैं कि सोवियत संघ ने अपनी ऊर्जा के ग्राहक देशों को पहले भी दबाया है. १९४८ में यूगोस्लाविया, १९६१ में अलबानिया और १९६२ में चीन के साथ संबंधों में कटुता उत्पन्न होने पर सोवियत संघ ने उन देशों को तेल देना बंद कर दिया था.

सोवियत संघ पर यूरोप की बढ़ती हुई निर्भरता में सब से बड़ा ख़तरा यह है कि सोवियत संघ अत्यंत सूक्ष्म रीतियों से "दबाव डालना शुरू कर देगा. जब से लेनिन ने यह कहा था कि वह पूंजीपतियों को उन्हीं की बेची रस्सी से लटका देगा, तब से व्यापार के माध्यम से राजनीतिक दबाव डालना सोवियत संघ का लक्ष्य रहा है. अब यूरोप के व्यापारी, साहूकार और श्रमिक नेता सोवियत संघ पर व्यापारिक

रूप से निर्भर हो कर लेनिन की चाल में स्वयं ही उलझ रहे हैं. यूरोपीय बैंक सोवियत संघ को जितना अधिक ऋण देंगे, उस के साथ मधुर संबंध बनाए रखने में उन का स्वार्थ उतना ही अधिक निहित हो जाएगा. बोन में पाइप लाइन समझौते के सब से उत्कट समर्थक हैं ऐसोसिएशन आफ़ वेस्ट जरमन चैंबर्स आफ़ इंडस्ट्री एंड कामर्स और फ़ेडरेशन आफ़ जरमन इंडस्ट्रीज. सोविमत संघ के प्रति अपनी नीति का निर्धारण करते समय यूरोपीय नेताओं को ऋणों के मकड़ी जाल, टेकनालाजी के निर्यात और ऊर्जा के आयात को स्पष्ट रूप से ध्यान में रखना चाहिए.

अमरीकी विरोध के बावजूद साइबेरियाई पाइप लाइन का काम आगे बढ़ता जा रहा है. बहुत से प्रक्षकों का ख़याल है कि यूरोपीय सरकारों को सोवियत दबाव की मात्रा कम करने के लिए हर संभव प्रयत्न करना चाहिए. विशेष कर:

● यूरोपीय देशों को साइबेरियाई प्राकृतिक गैस के विकल्प के रूप में अपने कोयला भंडारों की क्षमता को ज़्यादा से ज़्यादा बढ़ाना चाहिए और अगर हो सके तो २ करोड़ ५० लाख (मीट्रिक) टन प्रति वर्ष के वर्तमान साझे उत्पादन की वृद्धि करनी चाहिए. इस सिलसिले में लाभकारी खानों में तो उत्पादन बढ़ाना चाहिए और उन खानों को धीरे धीरे वंद कर देना चाहिए जहां सिर्फ़ रोज़गार देने की ख़ातिर काम चलाया जा रहा है. अकेले अमरीका के कायला भंडार साइबेरियाई गैस क विकल्प के रूप में प्रति वर्ष लगभग नौ करोड़ टन कोयला आसानी से यूराप भेज सकते हैं.

● सोवियत गैस की सप्लाई में रुकावट का मुकाबला करने के लिए यूरोप का गैस के अतिरिक्त भंडारण की व्यवस्था करनी चाहिए. इस दिशा में पश्चिमी जरमनी का विशेष ध्यान देने की ज़रूरत है क्योंकि वहां भंडारण की क्षमता फ़्रांस से आधी है. इस के अलावा सरकारों को यह भी देखना चाहिए कि उन के उद्योग पर्याप्त दोहरी क्षमता वाले हों ताकि ज़रूरत पड़ने पर गैस की जगह कोयले या तेल से काम चलाया जा सके.

● गैस की अधिक मात्रा के लिए यूरोप को पश्चिमी अफ़्रीका, विशेष कर नाइजीरिया और केमरून की ओर उन्मुख होना चाहिए. सोवियत संघ में जो पूंजी लगाई जा रही है, उस से बहुत कम में यूरोप गैस की सप्लाई के लिए आवश्यक पत्तन सुविधाओं और द्रवीकरण प्लाटों के निर्माण में इन देशों की सहायता कर सकता है.

● हाल ही में नार्थ सी में तेलकूपों की खुदाई से यह सिद्ध हो गया है कि नारवे के एक अकेले क्षेत्र में उतनी ही गैस है जितनी पश्चिमी साइबेरिया के एक क्षेत्र में है. अब तक नारवे ने ऊर्जा उत्पादन की सीमित नीति अपनाई है. संभव है कि उस की नई रूढ़िपंथी सरकार नीति बदलने के लिए तैयार हो जाए. नाटो को इस मामले में प्रयत्न करना चाहिए ताकि नार्थ सी की गैस के बारे में नई नीति बनाई जा सके.

एक बात निश्चित है. साइबेरियाई गैस के लिए यूरोप की धक्का मुक्की पश्चिमी जगत की एकता और सुरक्षा के लिए घातक सिद्ध होगी. जब फ़्रांस ने सोवियत संघ के साथ अनुबंध पर हस्ताक्षर किए तो फ़्रास के राजनीतिक टीकाकार ओलिव्ये शव्रिलों ने कहा, "एक ओर तो पश्चिमी कूटनीतिज्ञ पोलैंड की एक दलीय शासन पद्धति की निंदा करते हैं और आर्थिक नाकेबंदी पर व्यर्थ ही सहमत होने का प्रयत्न करते हैं, दूसरी ओर फ़्रांस सोवियत उद्योग की सहायता के लिए हाथ बढ़ा रहा है. यह अनुबंध अतलांतक मैत्री को शायद तेज़ी से नष्ट करने में सहायक सिद्ध होगा." ◆

हर्पीज़ पर क़ाबू कैसे पाया जाए

करोड़ों व्यक्ति हर साल इस छूत के शिकार होते हैं, अब तक इस का कोई अचूक इलाज नहीं

—स्टेनले एल एंगलबार्ट

इसकी शुरुआत हुई मेरे निचले होंठ के किनारे एक खुजलीनुमा लाल धब्बे के रूप में. दूसरे दिन तक वह छोटे से फफोले में बदल गया जिस का भार मुझे तोप के गोले जैसा लगता था. जल्द ही यह कष्टदायी फफोला छिछले रिसते जख़्म में बदल गया और गिलटियां उभर आईं. बेचैनी होने लगी.

"चिंता न करो," मेरे एक मित्र ने कहा, "जुकाम या बुखार से मुंह पर ऐसे दाने निकल ही आते हैं. कुछ ही दिनों में ठीक हो जाएंगे."

सचमुच यह विकार, जिसे चिकित्सीय शब्दावली में होंठ का हर्पीज़ कहते हैं और जिसे लोग अकसर जुकाम या बुखार से हो जाने वाले दाने समझ बैठते हैं, दो सप्ताह में गायब हो चुका था. जिस विषाणु से यह छूत लगी थी, उसे एच एस वी-१ कहते हैं. यह विषाणु न तो निश्चेष्ट है और न इतना अस्थायी जितना मेरे मित्र ने मुझे विश्वास दिलाया था.

उत्तरी कैरोलिना विश्वविद्यालय के प्रोफेसर युंग-ची चेंग का कहना है, "हम हर्पीज़ विषाणु जाति पर बरसों से काम करते आ रहे हैं, लेकिन कुछ समय पहले तक इस के बारे में कोई विशेष जानकारी नहीं हो पाई थी. अब भी जो जानकारी मिली है, उसे क़ाफ़ी नहीं कहा जा सकता."

पहली बात तो यह है कि हर्पीज़ से ग्रस्त लोगों की संख्या लोगों के अनुमान से बहुत ज्यादा है. लाखों लोगों को साल में एक बार बुख़ार से दाने निकलते हैं, हज़ारों लोगों को एच एस वी-२ विषाणु द्वारा उत्पन्न जननेंद्रिय का सिंप्लेक्स हर्पीज होता है; और अन्य लोगों को मोनोन्यूक्लिओसिस. हर्पीज़ जोस्टर तथा छोटी चेचक सहित हर्पीज़ से संबंधित अलग अलग विषाणु रोग होते हैं. 'द हर्पीज बुक' के लेखक डा. रिचर्ड हैमिल्टन का कहना है, "हालांकि हर्पीज के रोगियों की दशा शायद ही कभी चिंताजनक होती है, लेकिन इस रोग के संक्रमण से परेशान व्यक्तियों की संख्या बढ़ती ही जा रही है. कुछ लोग मर भी जाते है."

चिंता का दूसरा कारण यह है कि हर्पीज़ सिंप्लेक्स के विषाणु आम तौर पर होंठ तथा जननेंद्रिय के व्रणों से संबद्ध होते हैं. और अब तक उन्हें जितना समझा जाता था, उस से कहीं ज़्यादा हानिकर होते हैं. हम जानते हैं कि जिस विषाणु से होंठ का हर्पीज़ होता है, उसी से हर्पीज़ कैराटाइटिस भी होता है जो आंखों के रोग का प्रमुख कारण होता है. और यही दिमाग पर हावी हो कर स्नायु तंत्र के घातक रोग हर्पीज़ इनसिफ्रेलाइटिस (मस्तिष्क शोथ) का कारण बनता है. अब ऐसा लगता है कि इसी विषाणु से आमाशय तथा आंतों के विकार भी हो सकते है.

सही निदान नहीं. डेनमार्क के सूक्ष्म जीव वैज्ञानिक वी फ्रेबर वेस्टरगार्ड ने रिकरेंट डुओडिनल अलसर (प्रत्यावर्ती ग्रहणी व्रण) से पीड़ित रोगियों के एक वर्ग के ९४ फ़ी सदी लोगों में हर्पीज़ सिंप्लेक्स एंटीबाडीज़ (प्रतिपिंडों) की उपस्थिति पाई. लेकिन वेस्टरनार्ड तथा अन्य वैज्ञानिक चेतावनी देते हैं कि यह पक्के तौर पर नहीं कहा जा सकता कि अलसर या आंतों के अन्य विकार हर्पीज़ विषाणुओं के कारण होते हैं. "फिर भी," वेस्टरगार्ड का कहना है, "इस बात के प्रबल प्रमाण मिलते हैं कि इन में से बहुत से रोग कोल्ड सोर (शीत व्रण) ही होते हैं जिन का सही निदान नहीं हो पाता."

चिंता की एक और बात है, जननेंद्रिय हर्पीज़ का दिन ब दिन बढ़ता जा रहा ख़तरा. जननांग हर्पीज़ एक रतिज रोग है जिस ने विश्वव्यापी महामारी का रूप धारण कर लिया है. यह प्रायः यौन संसर्ग के ज़रिए फैलता है. सूज़ाक और उपदंश के मुक़ाबले हर्पीज़ के कहीं अधिक रोगी डाक्टरों के पास जाते हैं. पुरुषों में यह छूत आम तौर पर पहले शिश्न, उदर के निचले भाग, जांघों तथा नितंबों पर छोटे छोटे फफोलों और फिर खुरंट के रूप में मुखर होता है. महिलाओं में, द्रव से भरी विक्षतियां जल्द ही अलसर में बदल जाती हैं तथा शरीर के भीतर भी पैदा हो सकती हैं.

और यहीं पर स्वास्थ्य की भयावह समस्या सामने आती है. यदि गर्भवती महिला के प्रसव के समय ऐसे फोड़े हो जाएं तो मुमकिन है कि विषाणु चार में से एक पैदा होने वाले शिशु को या तो बुरी तरह क्षत विक्षत कर दें या फिर मार ही दें. जो महिलाएं अकसर जननेंद्रिय हर्पीज़ की शिकार बनती हैं, उन्हें उन महिलाओं की अपेक्षा जिन्हें यह रोग कभी नहीं होता, गर्भाशय ग्रीवा एवं भग के कैंसर हो जाने की आशंका आठ गुना अधिक होती है.

यहां यह बात कहना भी ज़रूरी है कि हर्पीज़ विषाणुओं तथा उन रोगों में जिन के बारे में यह ख़याल है कि वे विषाणुओं से नहीं होते, सबंधों की निश्चित रूप से पुष्टि नहीं हो पाई है. लेकिन चिकित्सक उन संकेतों को अब और नज़रअंदाज नहीं कर सकते जो इस विषाणु परिवार को शीजोफ्रेनिया (द्विमनस्कता), रुमेटाइड आर्थाइटिस तथा असमय बुढ़ापे के रोग अलज़ीमर जैसी चिकित्सीय समस्याओं से जोड़ते हैं.

यद्यपि हर्पीज़ जाति में ५० से अधिक विषाणु हैं, लेकिन इस के केवल ५ सदस्य मानव ऊतकों पर आक्रमण करते हैं. एच एस वी-१ तथा एच एस वी-२ के अलावा ये हैं:

वैरिसेला ज़ोस्टर विषाणु (वी ज़ेड वी). पांच हर्पीज़ विषाणुओं में सब से अधिक जाना पहचाना तथा असाधारण है वी ज़ेड वी जो बच्चों में छोटी चेचक तथा बड़ों में बिलकुल अलग क़िस्म की बीमारी शिंगल्स पैदा करता है.

एपस्टीन बार विषाणु (ई बी वी). ई वी वी का जो रूप सब से ज़्यादा देखने में आता है वह है मोनोन्यूक्लिओसिस, यह 'चुंबन रोग' का पर्याय होता है. प्रायः लार के ज़रिए संचारित होने वाला रोग 'मोनो' ३० वर्ष की अवस्था होने से पहले कभी भी लोगों पर आक्रमण कर सकता है.

ई बी वी इस से भी ज़्यादा बुरा व ख़तरनाक साबित होता है. इसी से 'बर्किट लिंफ़ोमा' (जबड़े का कैंसर) होता है जो हर साल हज़ारों अफ़्रीकी बच्चों की मृत्यु का कारण बनता है. अतः हर्पीज़ जाति के कम से कम एक सदस्य के बारे में यह पुष्टि हो चुकी है कि उस से इस तरह का कैंसर होता है.

साइटोमेगालो विषाणु (सी एम वी). कुछ माह पहले तक सी एम वी इस परिवार का सब से कम छूत फैलाने वाला सदस्य समझा जाता था. इस से केवल बच्चों को रोग होता था और वह भी विरले ही. लेकिन अब अनुसंधानकर्ता इस बात का पता लगाते जा रहे हैं कि अलज़ीमर रोग, हंटिंग्टन कोरिया तथा शीज़ोफ्रेनिया के साथ साथ स्नायु तंत्र के तमाम तीव्र विकारों से ग्रस्त रोगियों के मस्तिष्क के ऊतकों में सी एम वी के कण पाए जाते हैं. एक विषाणु वैज्ञानिक का कहना है, "इस बात का कोई पक्का प्रमाण नहीं है कि इन रोगों तथा विषाणुओं के बीच कोई संबंध है, लेकिन अब तक हाथ आए सूत्रों में यह सब से अधिक विचारोत्तेजक है."

इन पांचों हर्पीज़ विषाणुओं में एक समान विशेषता है और वह है इन की अंतर्निहितता. साल्ट लेक सिटी स्थित यूटा कालेज आफ़ मेडिसिन विश्वविद्यालय के डा. जेम्स सी ओवर-आल जूनियर का कहना है, "हर्पीज़ विषाणु मनुष्य के शरीर में विभिन्न तरीक़ों से स्थायी, और शायद आजीवन संक्रमण का कारण बनता है."

हालांकि मेरा शीत व्रण अब केवल अतीत की स्मृति भर रह गया है, विषाणु प्रसुप्तावस्था में मेरे भीतर मौजूद है और यदि कभी थकान अथवा तनाव के कारण मेरे भीतर की प्रतिरोधी शक्ति क्षीण होती है तो यह मेरे जीवन को दुश्वार बनाने को तैयार बैठा है. जो लोग जननेंद्रिय हर्पीज़ जैसी अशक्त कर देने वाली क़िस्मों के कोपभाजन बन चुके हैं उन्हें यह जानना चाहिए कि विषाणु उन के शरीर में हमेशा घात लगाए बैठे रहते हैं.

कोई इलाज नहीं. तो क्या इस का यह मतलब है कि हर्पीज़ का इलाज नहीं हो सकता? एक डाक्टर के अनुसार, इस का सशक्त उत्तर है, "न". वह मजाक नहीं कर रहा था. हजारों वर्षों से चिकित्सक हर्पीज़ रोगों का इलाज और इस के प्रकोप को सीमित तो करते आए हैं, लेकिन इस का उपचार अभी खोजा जाना बाक़ी है.

आज वैज्ञानिक इस रोग से मुक्त करने वाली औषधियों को पाने के लक्ष्य के निकट आते जा रहे हैं. कम से कम दो औषधियां, आइडाक्सूरिडिन तथा विडाराबिन या आरा-ए हर्पीज़ केराटाइटिस जैसे आंख के संक्रमणों के इलाज के लिए उपलब्ध हैं. विडाराबिन को हर्पीज़ मस्तिष्क शोथ के उपचार हेतु इस्तेमाल किया जा चुका है; और यह वी ज़ेड वी के संक्रमणों को रोक पाने में कुछ हद तक कारगर होती पाई गई है. जननेंद्रिय हर्पीज़ के उपचार के लिए असिक्लोविर नामक एक नई औषधि पर खोजबीन जारी है. प्रारंभिक परिणाम उत्साहवर्धक हैं.

आज के सारे इलाज विषाणुओं को केवल द्विगुणित होने से रोकते हैं. इन विकारों का चाहे

कैसा भी इलाज किया जाए, कुछ विषाणु शरीर में रह ही जाते हैं. जब तक कि चिकित्सा जेनिटल हर्पीज़ संक्रमणों के उपचार अथवा उन पर नियंत्रण पाने की निरापद विधि खोज नहीं निकलता, हम इस विषाणु पर अंकुश लगाने के लिए बहुत कुछ कर सकते हैं:

१. विषाणु की छूत से दूसरे व्यक्ति को बचाने के लिए सिंप्लेक्स हर्पीज़ से पीड़ित व्यक्ति को कुछ दिनों तक—लगभग ५ से १४ दिन तक—किसी का चुंबन नहीं लेना चाहिए, न यौन संबंध स्थापित करना चाहिए. इस बात के प्रमाण मौजूद हैं कि फफोलों के न होने पर भी संक्रमण दूसरे तक पहुंच सकता है. इस लिए बहुत से चिकित्सक संभोग के समय अतिरिक्त सुरक्षा के रूप में डायफ्राम या निरोध के उपयोग की सलाह देते हैं.

२. शरीर के दूसरे भागों तक विषाणुओं का फैलाव कम करने के लिए हर्पीज़ के रोगियों को यह सलाह दी जाती है कि वे ज़ख्म को हाथ से न छुएं और अगर ऐसा करें तो फ़ौरन साबुन से हाथ धो लें. चश्मा या कंटैक्ट लेंस लगाने वालों के लिए तो यह सफ़ाई और भी ज़रूरी है.

३. इस के शिकार हो चुके लोगों को अपने शरीर के प्रतिकार तंत्र को उम्दा हालत में रखना चाहिए ताकि यह रोग बार बार न हो. डा. हैमिल्टन के अनुसार, "स्वास्थ्य के सामान्य नियम यानी संतुलित आहार, सुपोषण, पर्याप्त आराम और तनावहीनता से शरीर के प्रतिकार तंत्र को अच्छी हालत में रखा जा सकता है."

४. संबद्ध बीमारियों के जोखिम को कम करने के लिए रोगियों को अपनी नियमित जांच कराते रहना चाहिए. यह नियम मुख्यतः उन महिलाओं पर लागू होता है जो बार बार जननेंद्रिय हर्पीज़ का शिकार होती हैं. स्तनाग्र-लेप परीक्षण विधि सरल, त्वरित तथा सस्ती होती है. हालांकि हर्पीज़ के रोगियों को गर्भाशय ग्रीवा अथवा भग के कैंसर हो जाने का डर एक प्रति शत से भी कम होता है, फिर भी वार्षिक परीक्षण द्वारा इस जोखिम को कम किया जा सकता है.

आज विषाणु विरोधी कारगर दवाइयों और टीकों की खोज ज़ोर शोर से की जा रही है. लेकिन इस काम में देश विदेश की सरकारों तथा दवा की आवश्यकता है.

डा. ओवरआल का कहना है, "हर्पीज़ के बार बार हो जाने से एच एस वी शरीर में ही रहते हैं. वर्तमान चिकित्सा विधियों द्वारा इस का उन्मूलन नहीं किया जा सकता मुंह तथा जननेंद्रिय के एच एस वी संक्रमणों का 'उपचार' जल्द ही हाथ आ जाने की भी अभी कोई आशा नहीं दिखाई देती. फिर भी हमें यह आशा है कि कुछ नई प्रायोगिक औषधियां रोग की तीव्रता तथा इस की पुनरावृत्तियों को कम करने में सफल हो सकेंगी. इन से विषाणु के व्यक्तिपरक विस्तार की संभावना भी कम हो सकेगी.

फ़िलहाल रोगियों के हक में यह अच्छा रहेगा कि वे इस बीमारी के बारे में ज़्यादा से ज़्यादा जानकारी पाएं, उन परिस्थितियों से बचें जो इस रोग की पुनरावृत्तियों का कारण बनती हैं, और अवैज्ञानिक चिकित्सा पद्धतियों से दूर रहें. अगर ज़्यादा से ज़्यादा लोग इन बातों पर चलें तो हम इस महामारी को रोकने में सफल हो सकेंगे और समय से हर्पीज़ विषाणु पर क़ाबू पा सकेंगे. ◆

चलने में सबसे ज़्यादा आसान,
आपकी उँगली के इशारे पर चलते जाएँ

रत्नद्वीप श्रीलंका

इस सुहाने द्वीप की धरती रत्नगर्भा है जहां रातोरात आप लाखों के मालिक बन सकते हैं—बशर्ते आप मेहनती हों और साथ ही क़िस्मत के सिकंदर

—अकोश चरनश

श्रीलंका में यदि किसी को अपने घर के पिछवाड़े भी खुदाई करनी हो तो सरकार से अनुमति पत्र लेना होता है. खुदाई करने का प्रलोभन बहुत स्वाभाविक है क्योंकि वहां प्रायः हर जगह रत्न दबे पड़े हैं. श्रीलंका के निवासी एक विशाल ख़ज़ाने के ऊपर बैठे हैं.

वहां ऐसे लोगों के क़िस्से अनगिनत हैं जो कभी चिथड़े लपेटे रहते थे और अब मालदार हो गए हैं. श्रीलंका में जवाहरात के प्रमुख क्षेत्र रत्नपुर के एक किसान का क़िस्सा बहुत प्रचलित है. उस ने जवाहरात की खुदाई में अपनी तक़दीर आज़माने का फ़ैसला किया. एक बार की ही खुदाई में उसे लगभग १८ लाख रुपए के क़ीमती पत्थर मिले. नौ साल हुए विश्व का तीसरे नंबर का धवल नीलम श्रीलंका में मिला था. तराशने और चमकाने के बाद वह ताराकार नीलम ३९२ कैरट का बैठा. श्रीलंका की राजधानी कोलंबो स्थित राजकीय रत्न निगम के रत्न संग्रह में उसे विशेष स्थान प्राप्त हुआ.

कौड़ियों के मोल. दस बीस साल पहले जब किसी जौहरी को यह पता चलता कि अमुक गांव वाले को विशाल नीलम और साधारण पत्थर के अंतर की जानकारी नहीं है, कि असली नीलम को वह पत्थर समझ कर झांवे की तरह इस्तेमाल करता है तो वह उस की नासमझी का फ़ायदा उठाता और उस नीलम को कौड़ियों के मोल ख़रीद कर स्वयं रातोरात मालदार हो जाता था. लेकिन आज यहां का हर व्यक्ति जानता है कि उस के पांवों तले दौलत दबी पड़ी है.

श्रीलंका हिंद महासागर में, भारत उपमहाद्वीप के दक्षिण पूर्व की ओर, एक उष्णकटिबंधीय द्वीप है. पहले इसे सीलोन कहा जाता था. इस द्वीप का एक प्राचीन नाम रत्नद्वीप भी था. इस की आकृति भी ऐसे अनगढ़ पत्थर जैसी है जो तराशे जाने के बाद सुंदर रत्न बन सकता है. संभवतः श्रीलंका में अपने जैसे किसी भी क्षेत्र की अपेक्षा ऐसे खनिजों की मात्रा अधिक है जो रत्नों की कोटि में आते हैं.

इस द्वीप पर दो दर्जन से अधिक क़िस्मों के जवाहरात पाए जाते हैं. मूल्यवान पत्थरों में कठोरता की दृष्टि से हीरे के बाद कोरंडम जाति के रत्न हैं—माणिक, पुखराज और नीलम आदि. क्रिसोबे-

फ़ोटो : के चरनश

तेल अलेग्ज़ेंड्राइट नामक मणि का दाम लगभग १०,००० रुपए प्रति कैरट है. यह मणि दिन में हरी रहती है और रात को बिजली की रोशनी में रसभरी के रंग की हो जाती है. यहां नीले, बैंजनी, सुनहरे और गुलाबी रंग के लहसुनिए, हलके और मध्यम हरे रंग के वेरूज, याकूत (रक्तमणि), जंबूमणि जैसे चमकीले स्फटिक, सतरंगी स्पिनेल, ज़रकान और तुरमली, लाल तथा गुलाबी टोपाज़, और दूधिया रंग का चंद्रकांत भी पाया जाता है जिस के बारे में माना जाता है कि वह पागलपन से रक्षा करता है.

रत्नों का ढेर. कोलंबो के राजकीय रत्न निगम के अध्यक्ष टी जी पुंचीअप्पूहामी का कहना है, "हमारे देश की ९० प्रति शत भूमि भूगर्भीय दृष्टि से पुराकैंब्रियन चट्टान से बनी है. यह सब से पुरानी चट्टान है जिस का निर्माण लाखों बरसों में हुआ." धूप, हवा और पानी के लगातार आघात से चट्टानें धीरे धीरे टूटने लगीं और तेज़ी से बहने वाली नदियों ने कंकड़ों को पहाड़ों से बहा कर निचले इलाक़ों में परत दर परत जमा कर दिया. इन्हीं परतों में रत्न मिलते हैं जिन्हें खनिक यहां की भाषा में **इल्लम** कहते हैं.

खदान खोदने के तरीक़ों में सदियों से कोई परिवर्तन नहीं हुआ है. उन में एक ही नई चीज़ शामिल हुई है—पानी खींचने का पंप, जिस की मदद से कुछ खनिक ४० फ़ुट की गहराई तक चले जाते हैं. खुदाई से पहले धरती में १५ फ़ुट लंबी छड़ गाड़ कर यह पता लगाया जाता है कि जवाहरात वाली परत अर्थात इल्लम कितनी गहरी है. यदि वह कुछ ही फ़ुट गहरी हो तो खनिक गोलाकार कलशीय गड्ढा खोदते हैं. ज़्यादा गहरी परत तक पहुंचने के लिए चौकोर गड्ढे तैयार किए जाते हैं. जैसे जैसे गड्ढा गहरा होता जाता है वैसे वैसे उस की दीवारों को गिरने से रोकने के लिए पाड़ बनाई जाती है.

खनिकों के औज़ार कुदाली, फावड़े, वेलचे और सब्बल आदि—सीधे सादे होते हैं, फिर भी खुदाई का काम बहुत दक्षता से होता है. कुछ ही क्षणों में युवा खनिक अपनी गोल और बड़ी सी टोकरी, जिसे स्थानीय भाषा में **वट्टी** कहा जाता है, मिट्टी से भर लेता है और अगले मज़दूर की ओर उछाल देता है, साथ ही उस की ओर से उछाली गई ख़ाली टोकरी को पकड़ भी लेता है. जब गड्ढा गहरा हो जाता है तो एक चरखी के सहारे भीतर की मिट्टी और पानी को कनस्तरों में भर कर बाहर निकाल लिया जाता है.

और नहीं, और सही. कठोर परिश्रम के बावजूद गड्ढे के आसपास उत्तेजना और आशा से भरा जीवंत वातावरण रहता है. जिस समय मज़दूर अपनी टोकरी में गड्ढे के भीतर की **इल्लम** को धोते हैं तो उन के बच्चे और संबंधी वहां जमा हो जाते हैं. **वट्टी** को जैसे जैसे हिलाया जाता है, वैसे वैसे मिट्टी और छोटे कंकड़ पानी के साथ निकल जाते हैं, केवल भारी पत्थर ही उस में रह जाते हैं. उस के बाद सब से अधिक अनुभवी खनिक अवशिष्ट पत्थरों में रत्नों की खोज करता है. खदान मालिक डैन राजपक्ष का कहना है, "यह एक तरह का जुआ है, लेकिन हर बार कुछ न कुछ हाथ लग ही जाता है. अगर क़ीमती रत्न हाथ नहीं लगते तो कुछ रक्तमणि और टोपाज़ ही मिल जाते हैं."

रत्नपुर के बाहर एक घर में दो खनिकों ने मुझे छः सप्ताह की मेहनत की कमाई दिखाई. कुल मिला कर १४१ जवाहरात थे: ३६ ताराकार नीलम, ५१ नीलम, १७ माणिक, १४ हलके रंग के नीलम, ११ पुखराज, ५ दूधिया नीलम, २ कैट्स आई और ५ अन्य रत्न. उन में से कोई भी रत्न न तो बड़ा था और न बहुत ही अच्छी क़िस्म का था. इस के बावजूद वे सब ५०० कैरट के आसपास बैठते थे. उन जवाहरात को ख़रीदने के लिए दर्जनों व्यापारी, तराशने वाले और खोजी वहां पहुंच गए.

एक युवा खनिक 'वट्टी' उछालता है, दूसरा उसे थाम लेता है.

रगड़ते और फिर रोशनी के सामने रख कर देखते. ९४ कैरट का एक सुंदर नीलम जो कुछ दिन पहले ही खनिकों के हाथ लगा था, लगभग २ लाख ७० हज़ार रुपए में बिका.

कई बार खनिकों को हफ़्तों कोई रत्न हाथ नहीं लगता.
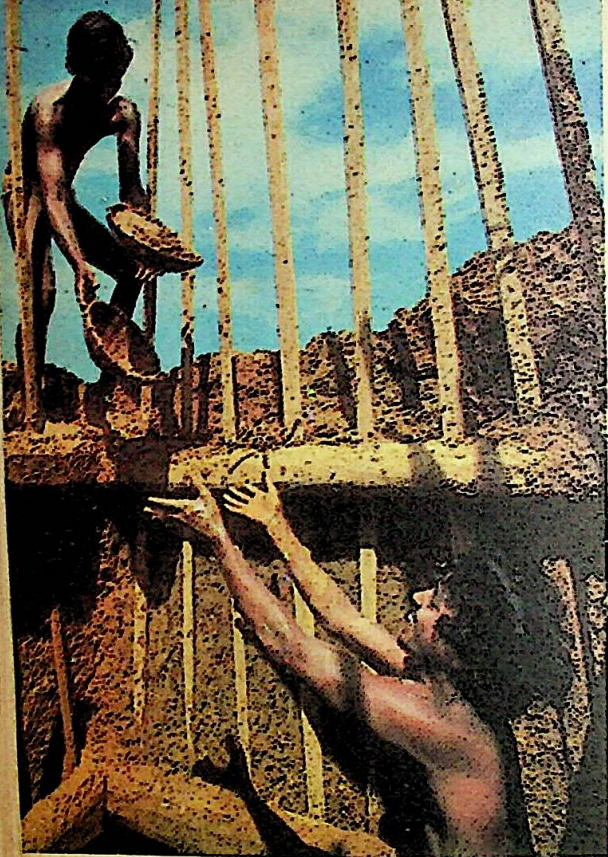
पर इस अनिश्चितता के बावजूद रत्नों की खोज अधिकाधिक स्पर्धात्मक व्यवसाय बनती जा रही है. पिछले पांच वर्षों में श्रीलंका से रत्नों के निर्यात की मात्रा दोगुनी हो गई है. रत्नों का निर्यात चाय, रबड़ और नारियल के बाद चौथे नंबर पर आ गया है. रत्नों की बाढ़ के फलस्वरूप मणिकारों, जौहरियों, टोकरी बुनने वालों और रत्न विज्ञानियों की संख्या भी बढ़ गई है. देश के १ करोड़ ४० लाख निवासियों में से कोई ५ लाख लोग अब इस धंधे में लगे हैं.

वे आंगन में उन रत्नों की जांच करने लगे. उधर जो खनिक कई सप्ताह तक मिट्टी से सने कपड़े पहने थे, उस दिन रंग बिरंगे सारम धारण किए थे.

नीलामी ख़त्म होने पर उन में से अनेक क़च्ची सड़क के किनारे जंगल में बने राजपक्ष के घर पर होने वाली नीलामी में भाग लेने चले गए. घंटों तक अनगढ़ जवाहरात व्यापारियों और मणिकारों के हाथों में इधर से उधर होते रहे. वे लोग हर पत्थर की क़ीमत आंकने की कोशिश कर रहे थे. वे उन पर फूंक मारते, उन्हें पानी में डुबाते, माथे के पसीने से

खनन से ले कर निर्यात तक रत्न व्यापार के सभी पक्षों के नियमन और विकास का कार्य राजकीय रत्न निगम के हाथों में है. निगम एक सरकारी संस्था है. इस की स्थापना १९७१ में हुई थी. इस के अध्यक्ष पुंचीअप्पूहामी का मत है कि रत्नों के तस्कर व्यापार में भारी कमी का निगम की प्रमुख सफलता माना जा सकता है. निगम की स्थापना से पहले वैध निर्यात का कुल मूल्य केवल
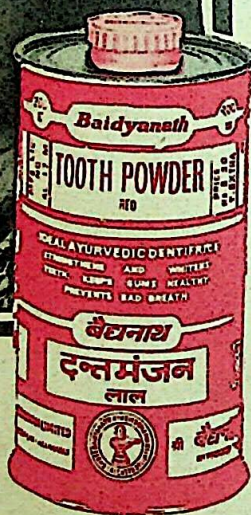
१८ लाख रुपए था. १९८० में वही लगभग ३५ करोड़ १० लाख रुपए था. इस निर्यात में निजी व्यापारियों और निगम का संयुक्त प्रयास शामिल था.

पत्थर का वज़न. निगम की गतिविधि से सम्बन्धित होने वाला एक मुसलिम रत्न व्यापारी कहता है कि उस ने इस व्यापार के रहस्य बचपन में ही सीख लिए थे. "स्कूल के बाद मैं जवाहरात काटने वालों के साथ बैठ कर काम करता था. मैं पत्थर को देख कर ही वज़न बताना सीख गया था."

किशोरावस्था में पहुंचने पर उस ने पहला बड़ा सौदा किया और लाभ कमाया. उस के पास एक व्यक्ति सोने की अंगूठी ले कर आया जिस में एक रत्न था. अंगूठी के मालिक का कहना था कि वह नक़ली है, लेकिन किशोर व्यापारी को पूरा यकीन था कि वह असली है. उस ने वह अंगूठी थोड़े से रुपयों में ख़रीद ली और उस रत्न को जांच के लिए जरमनी भेज दिया. जरमन रत्न विज्ञानी ने उस के असली होने की पुष्टि की. उस ने वह रत्न उस समय चार हज़ार पांच सौ रुपए में बेच दिया. आज ३५ वर्ष की अवस्था में वह प्रति वर्ष दो तीन करोड़ रुपए के रत्न बेचता है.

जौहरियों की नई पीढ़ी में एक जौहरी हैं पुरंदर श्रीदर्शपण. उन के पिता सिंहली ज़मींदार थे. उन्होंने रत्नों का व्यापार २५ वर्ष पहले थोड़े से रुपयों से शुरू किया था. उन दिनों वे रत्नपुर की सड़कों पर अनगढ़ पत्थर ख़रीदा बेचा करते थे. आज वे एक बड़े उद्योग समूह के स्वामी हैं जिस में एक होटल, रेस्तोरां, रत्न संग्रहालय और कला वीथी, मणिकारी, सर्राफ़ा तथा एक खुदरा शोरूम शामिल हैं. रत्न व्यापार की गोपनीय और रहस्यमय दुनिया में भी वे सच्चे इनसान हैं—मुक्तहृदय, बुद्धिवादी, और व्यवसायी कम, दार्शनिक अधिक. अपने आभूषणों के डिज़ाइनों के बारे में चर्चा करते हुए पुरंदर इस बात पर बल देते हैं, "मुझे व्यापारिक पक्ष में दिलचस्पी नहीं है. मेरी प्रवृत्ति कलाकार जैसी है." इस के बावजूद जब वे पर्यटकों का स्वागत, दस्तकारों का निरीक्षण, होटल के जड़ी बूटी उद्यान का नियोजन और उस के साथ ही नए पत्थरों की जांच करते जाते हैं, खोजियों और दलालों से मिलते हैं तथा ख़रीद और बिक्री करते हैं, तब ऐसा लगता है कि वे बहुत ही चतुर हैं.

श्रीलंका का रत्न व्यापार रंगीन व्यक्तित्वों और विलक्षण रत्नों के समुच्चय से कहीं अधिक विशद है. वह विश्व अर्थव्यवस्था का परिमाप बन गया है. पूंजी निवेश की प्रवृत्ति वाले स्विस व्यापारियों ने १९८० में श्रीलंका के रत्नों में दोगुनी राशि लगाई. अरब देशों के तेल सम्राट भी रत्न ख़रीद रहे हैं. थाई व्यापारी दूधिया नीलम निहायत सस्ते दामों पर ख़रीद कर उपचार द्वारा उन्हें नीले नीलम में बदल कर दौलत बना रहे हैं. श्रीलंका के रत्नों का सब से बड़ा ख़रीदार जापान है, लेकिन गए साल उस की ख़रीद शिथिल रही. इस के बावजूद उस की ख़रीद अमरीकी ख़रीद से तीन गुना थी. आजकल श्रीलंका के निवासियों की अपेक्षा और कोई यह बात इतनी अच्छी तरह नहीं जानता कि कौन अमीर है और कौन ग़रीब.

फल की दुकान पर एक ओर तख़्ती लगी थी : "कमसिन, ख़ूबसूरत कश्मीरी सेब. हाथ मत लगाएं."

इस के अलावा टपका आमों की एक पेटी पर लिखा था : "पुराने लंगड़े आम. इन्हें भी हाथ न लगाएं."

—ए डब्लू

डच कलाकार ऐशर का विलक्षण संसार
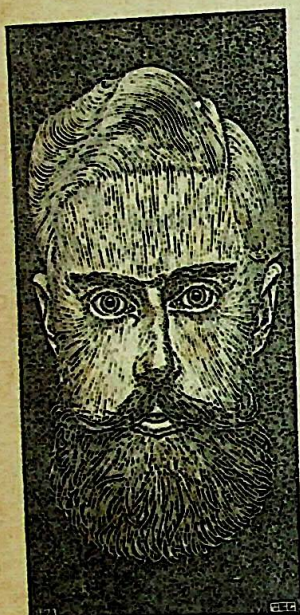
कल्पना के आगे कल्पना और भी है

१९२३ में ऐशर का बनाया आत्म चित्र

दिमाग़ को छकाने और नज़र को खिझाने वाला यह महान कलाकार हम सब को हंसने, बोलने और सोचने पर मजबूर कर देता है

—ग्रेग कीस

डच कलाकार हमेशा से ही कुछ अजीबो-ग़रीब क़िस्म के रहे हैं. उदाहरण के लिए मस्त पियक्कड़ों के चित्र बनाते बनाते फ्रांस हाल्स स्वयं आंसू बहाने लगते थे और विनसेंट वान गाग ने जानबूझ कर अपने एक कान की लव काट डाली थी. लेकिन मौरित्स कर्नेलिस ऐशन कई माने में सब से विलक्षण थे. आरनेम में जब वे स्कूल में पढ़ते थे तो हिसाब में एकदम कोरे थे, मगर बाद में अपने काष्ठ चित्रों और लिथोग्राफ़ों के कारण ऐशर पूरे विज्ञान जगत के आराध्य देव बन गए. कला के माध्यम से उन्होंने गणित के ऐसे रहस्यमय नियमों और तर्कों को खोजा और प्रस्तुत किया कि बड़े बड़े गणितज्ञ स्तंभित रह गए, साथ ही जन साधारण में भी व्यापक लोकप्रियता प्राप्त हुई.

ऐशर का जन्म १८९८ में लेवार्डन (फ्रीज़लैंड) के एक समृद्ध सिविल इंजीनियर के यहां हुआ था. पचपन साल की उम्र तक कला माध्यम से उन्हों ने जीविकोपार्जन के लिए जी तोड़ कोशिश की, लेकिन असफलता ही हाथ लगी. काष्ठ चित्रों और लिथोग्राफ़ के प्रिंटों से उन्हें १० डालर से ले कर ४० डालर तक प्राप्त हो पाते थे. उन्हों ने पत्रिकाओं के मुखपृष्ठों, डाक टिकटों, बैंक नोटों, दीवार पर लगाए जाने वाले काग़ज़ और यहां तक कि क़ब्रिस्तान के लिए भित्ति चित्रों के डिज़ाइन भी तैयार किए, लेकिन लगभग ३० वर्षों के दौरान इन सब कामों से उन्हें जो राशि मिली, वह शायद ही ५ हज़ार डालर से अधिक रही हो. यही कारण है कि जीवन यापन के लिए उन्हें पिता की सहायता पर निर्भर रहना पड़ा.

फिर पचासादि दशक में ऐशर का भाग्य पलटा और रायल्टी का अंबार लगना शुरू हो गया. एक वर्ष में उन के लगभग २० अलग अलग प्रिंटों की छः लाख प्रतियां बिक गईं. देखते देखते वे अमीर बन बैठे.

चित्र: "... एम सी ऐशर"
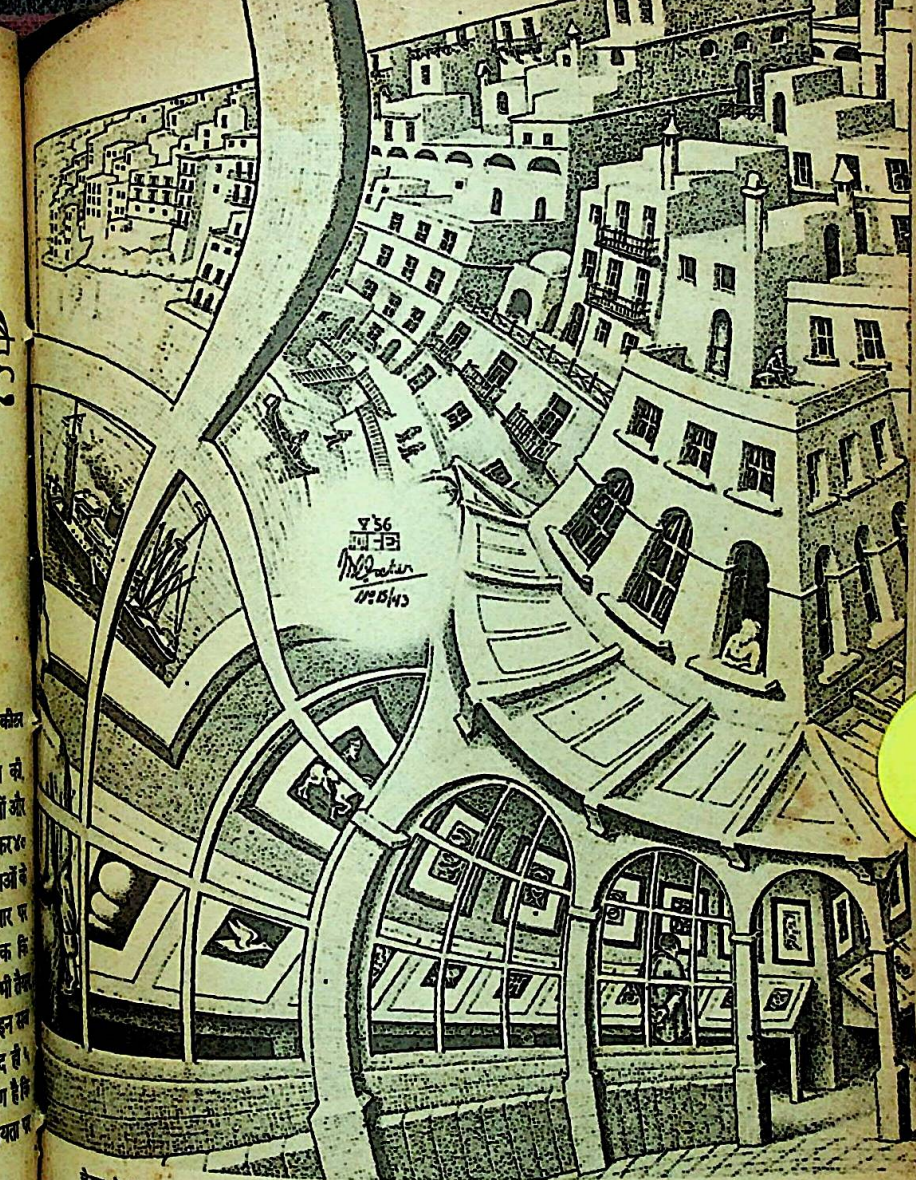
चेतना के विभिन्न स्तरों को बदलते हुए ऐशर परिदृश्यों के साथ जो खिलवाड़ करते हैं प्रिंट गैलरी (१९५६) उसी का एक नमूना है.

शुरू शुरू में ज़्यादातर अमरीकी पौप गायक [illegible] ही उन की कृतियों के ख़रीददार थे. वे [illegible] सबसे पहला प्रामाणिक अतींद्रिय (साइकेडेलिक) [illegible] मानते थे. उन के बनाएं डिज़ाइन टीशर्ट, पोस्टर और रिकार्ड के एलबमों पर दिखाई देने लगे. धीरे धीरे अन्य वर्गों ने भी उन की कला को अपनाना शुरू कर दिया. १९७२ में वाशिंगटन, डी सी स्थित नेशनल गैलरी आफ़ आर्ट में उन की
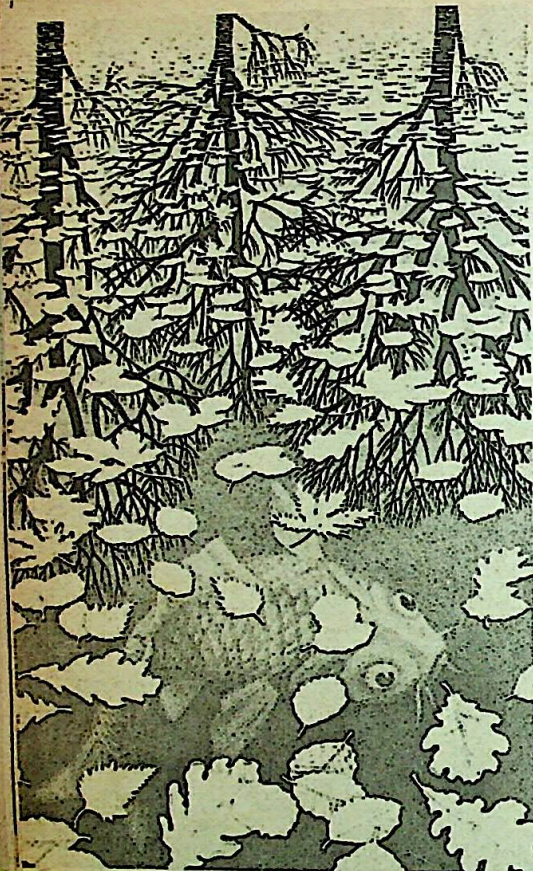
'त्रिलोक' (१९५५) में अस्तित्व के तीन विभिन्न चरणों का चित्रांकन है. प्रतिबिंब के रूप में प्रस्तुत तीन वृक्ष; उन से झड़ी पत्तियों से ढकी तालाब की सतह; और सतह के नीचे विचरण करती मछलियों का स्वतंत्र जलमय जगत

'दिन रात' (१९३८) ऐशर का सर्वाधिक प्रसिद्ध प्रिंट है. इस के सृजन में कलाकार का यह विश्वास निहित था कि "बुराई के बिना अच्छाई का अस्तित्व असंभव है" यहां काले पक्षी दिन के उजाले की ओर उड़ते दिखाए गए हैं जब कि उन के प्रतिबिंब सफ़ेद पक्षी रात्रि के अंधकार की दिशा में उड़ रहे हैं

'अद्वैत बंधन' (१९५६) में चित्रित स्त्री (बाएं) का पुरुष (दाहिने) में विलय दिखाया गया है. स्वयं कलाकार के शब्दों में 'दुहरी अन्विति' को आकार दिया गया है

प्रदर्शनी आयोजित हुई. उसे देखने जितने लोग आए, ग्राफ़िक कला के क्षेत्र में संभवतः वह एक अभूतपूर्व घटना थी.
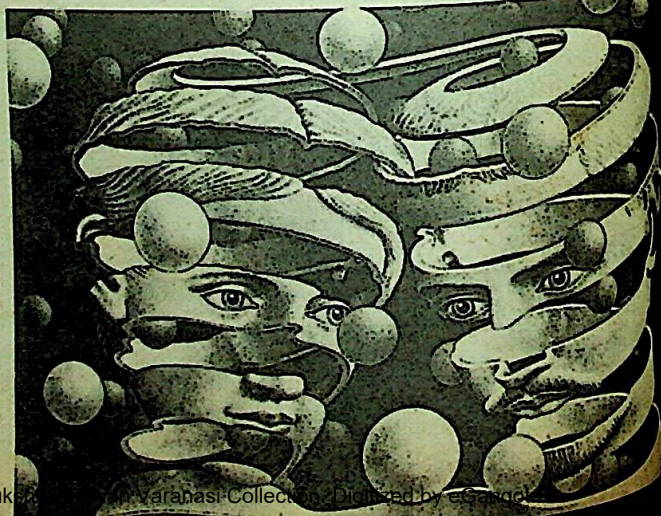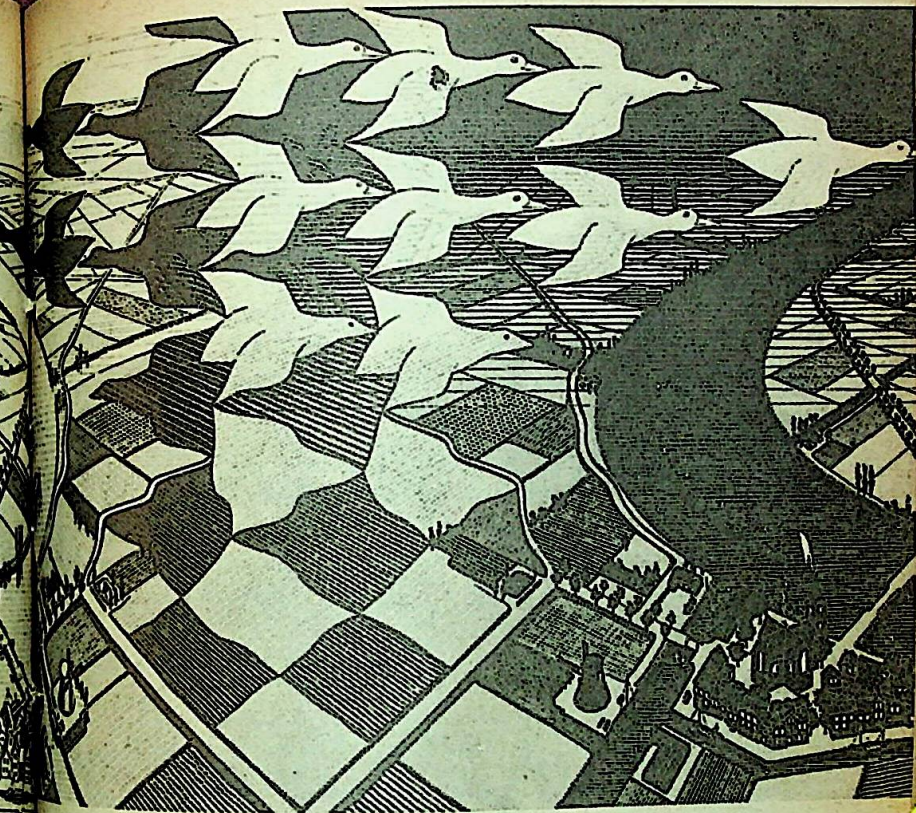
हॉलैंड और शेष यूरोप में उन्हें ज़रा देर से मान्यता मिली. ऐशर के पिता भी विभिन्न कलाकारों की कृतियों का संग्रह करते थे, लेकिन उन के संग्रह में अपने पुत्र की कोई कलाकृति उपलब्ध नहीं थी. अन्ततः ऐशर की ख्याति अतलांतक सागर को पार कर गई.

ऐशर के मित्र उन की जुमलेबाज़ी की क़द्र करते थे. यह गुन अकसर उन के प्रिंट में भी मौजूद रहता था. उदाहरण के लिए, 'सेंट फ्रांसिस' नामक कृति में केवल संत के सिर के पीछे बल्कि कुछ पशुओं के सिर के पीछे भी प्रभामंडल दिखाई देता है. एक बार उन्हों ने कहा था, ''मेरा उद्देश्य है लोगों में कौतुक पैदा करना, उन्हें उत्तेजित करना. मैं उन्हें इतना ख़ुश नहीं करना चाहता जितना कि चिढ़ाना चाहता हूं.''

यद्यपि स्वयं ऐशर को गणित की कोई समझ नहीं थी, लेकिन गणितज्ञों में उन की कृतियों के प्रति बड़ा उत्साह था. एक बार उन्हों ने कहा, ''मुझे एक ऐसे प्रोफ़ेसर से पत्र व्यवहार करने का अवसर मिला जो पेचीदा फ़ार्मूलों की मदद से मुझे मेरे चित्रों का रहस्य समझाने के प्रयास करते थे. लेकिन उन का एक अक्षर भी मेरे पल्ले नहीं पड़ा.'' इस के बावजूद ऐशर परिदृश्य का सटीक उपयोग कर के हमें त्रिविममिति (स्टीरियोमीट्रिक्स) के मूल सिद्धांतों का साक्षात्कार कराते हैं और 'असंभव

चित्र (पृष्ठ ८४, ८५ और ८६): "द ग्राफ़िक वर्क आफ़ एम सी ऐशर"

इमारतों का निर्माण कर के वैज्ञानिकों को भी सकते में डाल देते हैं.

१९७२ में ७३ वर्ष की आयु में ऐशर का लारेन में देहांत हो गया लेकिन उन की कला जीवित है, जीवित रहेगी. लीडेन विश्वविद्यालय में नृसंस्कृति विज्ञान के प्रोफ़ेसेर जी डब्लू लोकर का कहना है, ''ऐशर की प्रदर्शनी में सब से बड़ी जो बात लगती है, वह यह कि वहां उपस्थित लोगों में वह औपचारिकता और मूक अज्ञान नहीं होता जो आम तौर पर कला प्रदर्शनियों में पाया जाता है. कई लोग तो मारे ख़ुशी के ज़ोर ज़ोर से हंसने लगते हैं, कई शुरू हो जाते हैं और अकसर नौजवान लोग अपने बड़े बूढ़ों को बहुत सी बातें समझाते दिखाई पड़ते हैं.'' लोकर कहते हैं कि ऐसे ही कारणों से ऐशर के लिथोग्राफ़ और काष्ठ चित्र आधुनिक युग में एक विशेष स्थान रखते हैं. वे हमें चुनौती देते हैं, हमारी मानसिकता को बदलते हैं और प्रायः हमेशा ही हमें परम आनंद देते हैं.

''अवतल और उत्तल'' (१९५५) में बाईं ओर के मकान का बाहरी और दाहिने के मकान का भीतरी दृश्य दिखाई देता है. बीच के मकान को रुचि के अनुसार बाहरी या भीतरी कोई भी दृश्य मान सकते हैं.

एक संदेश जो हर पिता की ओर से हर पुत्री को मिलना चाहिए

—ऐलन आल्डा

सुनो बेटी

१९८० के मई में अमरीका के लोकप्रिय टेलीविज़न स्टार ने अपनी बेटी और उस के साथ पढ़ने वाली लड़कियों को कालिज में यह हृदयस्पर्शी संदेश दिया

महत्वपूर्ण विचार अंत में ही कहे जाते हैं. लोग घंटों निरर्थक बातें करते रहते हैं, लेकिन जब चलने को होते हैं तो काम की बातें होठों पर आ जाती हैं—एक के बाद एक.

आज कुछ वैसा ही अवसर है. लगता है बहुत सी अनर्गल बातें करने के बाद अब हम चलने के लिए दरवाज़े पर आन खड़े हुए हैं और दरवाज़े की मूठ पर हाथ रखे अब वैसी ही बातें शुरू कर रहे हैं जैसी 'हेमलेट' नाटक के पहले अंक के तीसरे दृश्य में पोलोनियस ने लारटीज़ से कही थीं: 'न तो महाजन बनो और न कर्ज़दार. सौ बातों की एक बात, अपने प्रति ईमानदार रहो.'

अच्छी बातें अकसर दिमाग़ से निकल जाती हैं और फिर 'अरे हां, याद आया' के मुखड़े के साथ कही जाती हैं. आज अगर पोलोनियस होता तो अपने बेटे को, जो शायद अपने बाप की बात पर कान न धर रहा हो, काम की सारी बातें बताने के बाद इस तरह कहता, 'और हां, अगर तुम किसी चक्कर में पड़ जाओ तो मुझे दफ़्तर में फ़ोन कर देना.'

आज हम दरवाज़े की चौखट पर खड़े हैं और विदाई के इस अवसर पर बेटी के लिए यह मेरी सीख है. बेटी, मैं तुम्हें बहुत सी बातें बताना चाहता हूं.

निरंतर गतिशील. पहली बात तो यह कि निर्भय रहो. तुम एक ऐसे संसार में क़दम रखने जा रही हो जो अनेक विघ्न बाधाओं के बावजूद चार पहियों की गाड़ी के समान निरंतर गतिशील है. अनिश्चित होना बुरी बात नहीं है. तुम ऐसे समय में

'कौस्मिक [illegible] (मई १९८०) से संक्षिप्त, सर्वाधिकार १९८० ऐलन आल्डा

बड़ी हुई हो जब संसार के नेता बच्चों की तरह व्यवहार कर रहे हैं. जब वातावरण में आतंक का साम्राज्य हो तो मानवोचित भावनाएं अमानवीय ढंग से अभिव्यक्त की जाती हैं. फलस्वरूप ऐसा क्रोध व्याप्त हो जाता है जिस का कोई असर नहीं होता. अगर तुम थोड़ी बहुत अनिश्चय की स्थिति में न होतीं तो मुझे तुम्हारी चिंता होने लगती.

तुम बड़ी तो हो गई हो, लेकिन लगता है, तुम अभी इस के लिए तैयार नहीं थीं. कभी कभी तो मैं अब भी बच्चा बनी रहना चाहता हूं और अपने आप को अपनी या तुम्हारी वयस्कता के लिए तैयार नहीं पाता.

कल ही की तो बात है, तुम बच्ची थीं. तुम इतनी कोमल थीं कि तुम्हें उठाते डर लगता था. नौ साल की उम्र में जब तुम्हारी बांह की हड्डी टूट गई थी तो मैं अपने आप को कितना असहाय महसूस कर रहा था. आज की सुबह तक तुम किशोरी थीं. बढ़ती उम्र के साथ मुझे लगता है कि वक़्त की रफ़्तार तेज़ होती जा रही है. लेकिन वक़्त हमारी उम्र चुराता है, तो बदले में हमें अनुभव देता है. यह अनुभव ही वह शिक्षक है जो हमें तुम्हें अपने अपने कार्यक्षेत्र में आत्मविश्वास के साथ कार्य करने की प्रेरणा देता है.

अपने काम से प्यार करो. अगर तुम हमेशा हर काम मन लगा कर करोगी तो तुम्हें असफलता नहीं मिलेगी. मन लगा कर काम करने से भले ही तुम्हें अपार धन प्राप्त न हो, लेकिन उस से जो संतोष प्राप्त होगा, वह कोई भी तुम से छीन नहीं पाएगा.

विदाई के इस अवसर पर मैं छोटी बड़ी सभी बातें संक्षेप में कह देना चाहता हूं. एक तो यह कि हमेशा हंसती रहो. जब तुम हंसती हो तो घंटियां बज उठती हैं. तुम्हारा हित इसी में है कि तुम दिन में तीन बार ज़रूर घंटियां बजाती रहना. अगर तुम अपनी हंसी में दूसरों को भी शरीक़ कर सको तो डगमगाती नाव को भी खे जाओगी क्योंकि हंसने वाले आम तौर पर एक दूसरे की जान नहीं लेते.

गहरी पैठ. मैं तुम्हें वे सब अच्छी बातें बता देना चाहता हूं जिन के द्वारा तुम अपना जीवन सफलतापूर्वक व्यतीत कर सको. लेकिन अपनी बेटी को सुनहरे से सुनहरे नियम का बोध कराते हुए भी ऐसा लगता है जैसे वह पर्याप्त न हो. उस में भी कुछ और जोड़ना होगा. मनोमालिन्य से भरे इस युग के लिए बाइबिल (लूका ६ : ३१) के शब्दों में मेरा संदेश है: "जैसा तुम चाहते हो कि लोग तुम्हारे साथ करें, वैसा ही तुम उन के साथ करो." दूसरों के साथ सच्चाई से पेश आओ और जब तक वे भी तुम्हारे साथ सच्चाई से पेश न आने लगें, तब तक उन का पिंड न छोड़ो.

यह संसार बड़ा विचित्र है, बड़ा जटिल. आशा है, तुम ठीक पहचान करना सीख जाओगी. आड़ू की पहचान उस के रुओं से नहीं होती. मेढ़क भी चकत्तों से नहीं जाना जाता. इसी तरह किसी व्यक्ति का सनकीपन उस का असली व्यक्तित्व नहीं होता. अगर हम पहचान करना सीख लें तो हम में सहनशीलता आ जाएगी और तब मात्र समस्याओं के बाह्य पक्ष से उलझने के स्थान पर हम उन में गहरे

पैठ कर आसानी से उन्हें सुलझा सकेंगे.

एक बार जब पहचान करने की तुम्हारी आदत बन जाएगी तो तुम अपनी ही बंधी टिकी मान्यताओं को चुनौती देने लगोगी. अपनी मान्यताओं से ही हम संसार को समझते हैं. समय समय पर अपनी मान्यताओं का परिमार्जन करते रहना चाहिए ताकि वे पुरानी न पड़ें. जब तुम अपनी ही मान्यताओं को चुनौती देने लगोगी तो तुम दूसरों की रूढ़ मान्यताओं को भी सहज ही स्वीकार नहीं करोगी. तब दूसरों के पक्षपातपूर्ण दृष्टिकोण और पूर्वग्रहों से तुम्हारे शिकार होने की आशंका बहुत कम रह जाएगी. तुम उन लोगों से भी प्रभावित नहीं होगी जो तुम से अपनी बुद्धि, आत्मा और धन प्रदान करने को कहते हैं क्योंकि उन्हों ने तुम्हारी सारी समस्याओं के हल खोज रखे हैं.

होशियार बनो, लेकिन एक बात याद रखो कि होशियार बनने के स्थान पर बुद्धिमान बनना ज़्यादा अच्छा रहता है. यह सच है कि बुद्धिमान बनने में बहुत समय लगता है लेकिन इससे तुम निराश मत होना. बुद्धि सहसा ही आती है और अधिकतर अनुकंपाशील और समझ बूझ रखने वाले लोगों को ही प्राप्त होती है.

दरवाज़ा बंद होने वाला है और मैं अभी तक पूरी बात नहीं कह पाया हूं. थोड़ा और प्रयत्न करता हूं. जब तक तुम अपने जीवन को कोई अर्थ नहीं देतीं, इसे कुछ नहीं बनातीं, तब तक यह अर्थहीन और असंगतियों से भरा है. अपनी हस्ती बनाना हमारे ही हाथ में है.

लोग हमें कितना भी चाहें, कितना भी प्यार करें, फिर भी हम में से अधिकांश लोगों को अंततः लगता है कि भीतर ही भीतर हम बिलकुल अकेले हैं. यह अकेलापन हर व्यक्ति का अपना अपना दानव है. अगर तुम्हारा ऐसे दानव से कभी पाला पड़ जाए तो तुम उस का मुक़ाबला करने से पीछे न हटना, उस की ताक़त का अंदाज़ा लगा कर उस पर वार करना और उस के घुटने टिका देना.

दुनिया का संधान. २५ वर्ष पहले जब मैं कालिज में था. तब अस्तित्ववादी दर्शन का बोलबाला था. उस समय बातें तो हम निस्सारता की करते थे, लेकिन रहते थे परिश्रम और प्रयत्नों की दुनिया में. यद्यपि अब निस्सारता की बहुत कम चर्चा होती है, पर वह संसार में पूरी तरह व्याप गई है.

इस से पहले कि कभी तुम्हें संसार निस्सार लगे, तुम उस के लिए तैयार रहो. अगर तुम तैयार होगी तो तुम पर क़ाबू पाने में उसे कठिनाई होगी. तुम अपने व्यावसायिक तथा अन्य कौशल को इस दुनिया का संधान करने और इसे बेहतर बनाने में लगा सकती हो.

तुम पर्यावरण को शुद्ध बनाने की कोशिश कर सकती हो. तुम ऐसी भी कोशिश कर सकती हो कि न्याय प्रणाली ठीक से काम करने लगे. तुम उस दिन को और पास लाने की कोशिश कर सकती हो जब अमीरी ग़रीबी का भेद मिट जाएगा और सुविधा संपन्न तथा अभावग्रस्त व्यक्तियों का जीवन स्तर एक जैसा होगा.

तुम संगठित अपराधों का अंत करने का प्रयास भी कर सकती हो. इन अपराधियों का मुख्य लक्ष्य अपने न होने का

विश्वास दिलाना है ताकि वे हमारे अज्ञान का लाभ उठा कर समाज की अर्थ व्यवस्था को नष्ट भ्रष्ट कर सकें.

तुम यह जानने का प्रयत्न भी कर सकती हो कि एक देश और धर्म के लोगों ने दूसरे देश और धर्म के लोगों पर क्यों अत्याचार किए. (यदि तुम सचमुच विसंगतियों का अंत करना चाहती हो तो यह समझने की कोशिश करो कि वे लोग जो एक ओर पालन पोषण करते हैं, वही दूसरों को यंत्रणाएं कैसे दे लेते हैं, जो एक नन्ही सी लड़की को कठिनाई में फंसी देख कर तो चिंतित और परेशान हो जाते हैं, लेकिन बिला झिझक पूरे के पूरे गांव और वहां के सभी रहने वालों को कैसे नष्ट कर डालते हैं) इस से पहले कि आगामी युद्ध हो, तुम उसे रोकने की कोशिश कर सकती हो ताकि बूढ़े मां बाप अपने बच्चों को युद्ध में मरने के लिए न भेज सकें.

यह सब करते हुए याद रखना कि आज तुम्हें स्त्री के नाते जो जो अधिकार हैं, वह सब तुम्हारे लिए तुम से पहले की स्त्रियों ने कठिन संघर्ष द्वारा प्राप्त किया है. आज जितनी भी बच्चियां जन्म ले रही हैं, उन्हें तुम्हारे जैसे अधिकार नहीं मिलेंगे, यदि तुम ने समानता के दायरे को बढ़ाने और बनाए रखने की कोशिश नहीं की. सभ्य जीवन की राहें स्वतः प्रशस्त नहीं हो जातीं. तुम्हें उन के लिए प्रयास करना होगा ताकि तुम्हारे पीछे आने वाले उस से लाभ उठा सकें.

जीवन में व्यस्त रहने के लिए अनेक काम हैं. मैं यह वादा तो नहीं करता कि इस से असंगति की भावना पूरी तरह समाप्त हो जाएगी, लेकिन यह ज़रूर कह सकता हूं कि वह काफ़ी हद तक कम हो जाएगी. इस से तुम्हें कभी कभी ऐसा लगता रहेगा कि दुनिया आगे बढ़ रही है.

तुम्हारी भृकुटी उसी तरह तन रही है जिस रूप में मुझे अच्छी लगती है. तुम्हारी भौंहों के बीच जो शिकन है, उस से तुम्हारे अविश्वास और संदेह का पता चलता है. तुम सोच रही होगी कि उत्साह और आशा के इस अवसर पर मैं जीवन की विसंगतियों और निस्सारता की चर्चा क्यों ले बैठा हूं. मैं चाहता हूं कि तुम उस आशा को केंद्रित करो और उत्साह को सार्थकता की उन किरणों में बदल दो जो लेसर किरण की भांति हमारे असंतोष के लक्ष्य को बींध दें.

मैं चाहता हूं, तुम शक्तिशालिनी बनो ताकि जब भी बन पड़े, तुम दूसरों का भला कर सको और अपने वाग्चातुर्य तथा समझदारी से अपने आप को दूसरों की लंपटता से बचाती रहो. इस के अतिरिक्त स्वनिर्मित संसार में अपनी पसंद की ज़िंदगी जिओ और हंसती रहो. मैं चाहता हूं तुम सशक्त और दृढ़ निश्चयी बनो, लेकिन इस के साथ ही लचीली बनो और तुम्हारा हृदय कोमल भावनाओं से परिपूर्ण रहे. मैं चाहता हूं तुम वह बनो जो तुम वास्तव में भीतर से हो.

सिर्फ़ तुम्हारी. मैं चाहता हूं तुम संकोचहीन और दृढ़निश्चयी बनो. आज तक कोई भी महत्वपूर्ण कार्य दृढ़ता के बिना नहीं किया जा सका. कोलंबस में यही दृढ़ता थी. स्वतंत्रता के घोषणापत्र पर हस्ताक्षर करने वालों में यही दृढ़ता थी. अपने ऊपर हंसो, लेकिन कभी संदेह मत करो. जब तुम विचित्र स्थानों की यात्रा पर

निकलो तो अपना कोई अंश किनारे पर सुरक्षित रूप से न छोड़ जाओ. अनजाने और अनखोजे स्थानों में जाने का साहस रखो.

रचनात्मक रूप से जीने के लिए सदा तैयार रहो. सुख और आराम की नगरी छोड़ कर तुम्हें अंतर्दृष्टि के वनवास को जाना है. तुम वहां बस से नहीं, कठिन परिश्रम और जोखिम उठा कर ही पहुंच सकती हो. तुम वहां उसी हालत में पहुंच सकती हो जब तुम्हें मालूम न हो कि तुम क्या कर रही हो, कहां जा रही हो. इस प्रकार जो भी खोज तुम करोगी, वह अद्भुत होगी और वह सिर्फ़ तुम्हारी होगी.

हमारे बीच दरवाज़ा धीमे धीमे बंद होता जा रहा है. इस विदाई के अवसर पर यही है मेरा संदेश. फिर मिलेंगे. सदा प्रसन्न रहो.

अरे हां, यह कहना तो मैं भूल ही गया कि मैं तुम्हें कितना प्यार करता हूं.

सौभाग्य

दूसरे विश्व युद्ध की समाप्ति के कुछ सप्ताह बाद मित्र देशों के अधिकारियों को जरमनी में नाज़ियों द्वारा तैयार की गई एक सूची प्राप्त हुई. यदि नाज़ियों का इंगलैंड पर आक्रमण सफल हो जाता तो इंगलैंड में घुसने के साथ किन किन को गिरफ़्तार करना है और किन किन को मौत के घाट उतारना है—इसी की थी वह काली सूची, जिस का सार्वजनिक प्रकाशन करने में ज़रा भी देर नहीं की गई. उस काली सूची में राजनीतिज्ञ तो थे ही, साहित्यकार भी थे. साहित्यकारों के बीच रेबेका वेस्ट और नोअल कावर्ड के नाम काफ़ी ऊपर थे. "ज़रा कल्पना तो कर के देखो !" काली सूची का प्रकाशन होने के बाद रेबेका वेस्ट ने नोअल कावर्ड के नाम एक पत्र में लिखा, "अगर नाज़ियों की जीत हो गई होती तो हम लोगों को कितने महान लोगों के साथ मरने का सुअवसर मिलता."

—ए टेलेंट टू एम्यूज़ : ए बायोग्राफ़ी आफ़ नोअल कावर्ड' (हाइनमान)

संकल्प परायण

उस साल मैं ईस्टर से पहले पड़ने वाले लेंट यानी ४० दिन के रोज़े उपवास के दिनों में सपरिवार एक मित्र के यहां गया. हमारी मित्र का चर्च बड़ा सुंदर था और हम उस की खिड़कियों में प्रयुक्त कांच की शोभा निहार रहे थे कि नज़र लकड़ी के एक सलीब पर पड़ी उस पर दर्जनों कागज़ के पुरज़े लटक रहे थे. पूछने पर पता चला कि चर्च में आने वाले भक्तों ने भक्ति भाव से वहां उन सब चीज़ों के नाम लिख लिख कर टांक दिए थे जो वे त्यागने छोड़ने वाले थे. आशय यही था कि वे साप्ताहिक प्रार्थना के लिए आएं तो उन्हें अपना संकल्प याद आ जाए.

बात समझ कर हम सब मुसकराए. तभी सब से ऊपर के पुरज़े पर नज़र पड़ी—किसी का बहुत पुराना, घिसापिटा 'क्रेडिट कार्ड' लटक रहा था कि अब उधार खाते की ज़िंदगी छोड़ दूंगा.

—चार्ल्स मिल्स

ये खूंख्वार चौपाए इस बस्ती में
मस्त घूमते या खर्राटे भरते हैं

कनाडा में चर्चिल नाम का एक क़स्बा ध्रुवीय भालुओं की सैरगाह बन गया है. वहां से कुछ किलोमीटर दूर मैनिटोबा की ओर मारिस (मो) बेलरीव ग्रीष्म आवास की मरम्मत कर रहा था कि उस की नज़र एक ध्रुवीय भालू पर पड़ी, जो आसपास के केबिनों के दरवाज़े सूंघता फिर रहा था. पास ही एक टूटा फूटा टेलीफ़ोन बूथ था. मो उसी में लपक गया. बूथ के किवाड़ एक ज़माने से ग़ायब थे और पास ही खड़ा भालू उसे घूर रहा था. किसी तरह मो ने आपरेटर को सारी स्थिति बताई. आपरेटर ने तत्काल पुलिस को ख़बर दी, जिस ने मो को छुटकारा दिलाया.

— दोपहर के वक़्त, भूतपूर्व सैनिकों के क्लब में लोग डार्ट* खेल रहे थे कि एक ध्रुवीय भालू चहलक़दमी करता आ धमका, लेकिन क्लब के ख़िदमतगार की नाराज़गी भरी घुड़की सुनते ही वह भाग गया.

इस से कुछ ही दूर, ऐसा ही एक अन्य भालू एक मकान की खिड़की फलांग कर खाने की मेज़ पर जा बिराजा—और लगा हाथ साफ़ करने. पर घर के मालिक ने एक डंडा जमाया और वह रास्ता नापता नज़र आया.

चर्चिल में साल के कई महीने ऐसे होते हैं कि ध्रुवीय भालू दिन रात किसी भी गली कूचों में टहलते मिल जाएंगे. कभी कभी उन के पीछे कुत्ते और तस्वीर खींचने वाले सैलानी लग जाते हैं. तब, मनुष्य व पशु के बीच सुरक्षात्मक दूरी बनाए रखने की ख़ातिर, पुलिस व जीव रक्षा अधिकारियों की आफ़त हो जाती है. यह काम मुश्किल इस लिए है कि इस धवल पशु पर गोली चलाने की मनाही है— दुनिया भर में

* डार्ट एक तरह का नेज़ा होता है. इस खेल में खिलाड़ी डार्ट से पट पर वार कर के लक्ष्य बींधते हैं

स्मिथसोनियन. (फ़रवरी १९७८) से संक्षिप्त. कापीराइट १९७८ स्मिथसोनियन इंस्टीट्यूशन

ध्रुवीय भालुओं की अनोखी सैरगाह

—रिचर्ड सी डेविस

शायद कुल १२,००० ध्रुवीय रीछ रह गए हैं.

चर्चिल की खाड़ी जितने ध्रुवीय भालू और कहीं नहीं मिलते. सर्दियों में, मध्य कनाडा के इस बर्फ़ानी इलाक़े में, रीछों के झुंड के झुंड अपने मुख्य भोजन—सील मछलियों की घात में डेढ़ डेढ़ सौ किलोमीटर या और भी दूर तक भटकते निकल जाते हैं. मगर, सतत हवाएं और बहाव बर्फ़ के साथ इन भालुओं को भी दक्षिण की ओर खदेड़ते रहते हैं. गरमियों में हडसन की खाड़ी के दक्षिण पश्चिमी दलदले छोरों पर पिघलती बर्फ़ के अंतिम अंशों के पच्चर जमा हो जाते हैं और जुलाई में बेचारे भालू बरबस तट पर छूट जाते हैं. इन में से ज़्यादातर किनारे किनारे ३०० किलोमीटर उत्तर में चर्चिल की ओर चलते चले जाते हैं, इस की वजह सिर्फ़ एक है: चर्चिल नदी का हिमीभूत पानी, उन की भूख जगाने व मिटाने वाली सील मछलियों से भरपूर एक विशाल शिकारगाह बना चुका होता है.

अधिक उम्र वाले भालू चर्चिल से ६५ किलोमीटर पूर्व में खाड़ी पर रुक कर ही बर्फ़ जमने का इंतज़ार करते हैं, और तरुण, मादाएं व शावक खाड़ी के पश्चिमी तट पर बसे इस क़सबे में धकिया दिए जाते हैं. स्थिति अविश्वसनीय है: १,६०० आबादी वाला यह क़सबा उत्तरी अमरीका के सब से ख़तरनाक मांसाहारी जानवरों का प्रवास स्थल बनता जा रहा है.

अक्तूबर १९७७ में मैं चर्चिल हवाई अड्डे पर उतरा तो एक निठल्ला भालू वहां मटरगश्ती कर रहा था—और यह वही था जिस ने मो बेलरीव को घेरा था. बाद में, उसी सुबह मैं और वन्य जीवन विकास विशेषज्ञ राय बुकोव्स्की भालुओं के लिए गश्त लगाने वाले एक ट्रक पर चले जा रहे थे तो रेडियो से चेतावनी मिली कि एक और भालू क़सबे में घुस आया है, जो हमें एक घर की दीवार से लगा यूं सोता मिला जैसे किसी बच्चे का कोई लहीम शहीम खिलौना सपने में लोरी सुन रहा हो. पटाख़े छुड़ाने वाले एक भीमकाय हथियार से उसे खदेड़ दिया गया. दो रातों बाद पुलिस को फिर ख़बर मिली कि एक भालू ने कहीं आफ़त कर रखी है. पुलिस दल गली के नुक्कड़ पर उस मकान तक पहुंचा तो भालू ने खिड़की से थूथन निकाल कर बाहर झांका. पुलिस ने भोंपू बजा बजा कर और खड़खड़ भड़भड़ करने वाले एक उपकरण से उसे धमकाना शुरू किया तो वह लुका छिपी खेलने लगा. कोई आधा घंटे बाद घर से निकल कर वह रास्ते में खड़ी टूटी फूटी बस में जा छिपा.

इस के एक दो दिन बाद हम खाड़ी के एक १२ मीटर ऊंचे निरीक्षण स्तंभ से २५ महाकाय नर भालुओं का मुआयना कर रहे थे. वे उकताए से लग रहे थे. और ज़्यादातर सरपतों के झुरमुटों

निर्भीक, धूर्त और शक्तिशाली शिकारी

ध्रुवीय भालू एक भव्य प्राणी है. संभ्रांत और निर्भीक, आधे टन भारी व २.५ मीटर विशाल वयस्क नर के कंधे १.५ मीटर ऊंचे होते हैं. ऊंचे पूरे, तन कर खड़े नर का कद ३.५ मीटर तक भी होता है.

एक हट्टा कट्टा वयस्क नर ९० किलो भारी घुंडैया सील को इतनी सहजता से झपटता है मानो बिल्ली चूहे को दबोच रही हो और २२५ किलो भारी दढ़ियल सील को अपने ५० पौंड भारी पंजे के एक ही झापड़ से मार डालता है.

और ये भालू बहुत तेज़ चलते हैं. एक बच्चे को एक बार ५५ किलोमीटर प्रति घंटे की रफ़्तार से सड़क पर कुलांचे भरते देखा गया. १० किलोमीटर तक बिना रुके थके तैरते निकल जाते हैं. इन की घ्राण शक्ति इतनी विलक्षण होती है कि—एस्कीमो लोगों के अनुसार—३० किलोमीटर दूर से ही ये सील की गंध पा जाते हैं.

सांस लेने के लिए बर्फ़ में सीलें सूराख़ कर लेती हैं. इन्हीं पर ये उन की घात में खड़े रहते हैं. सील के पास फटकते ही भालू उस पर झपट पड़ता है और बर्फ़ फोड़ता हुआ उसे बाहर खींच लेता है. खुला पानी आते ही सीलें बर्फ़ पर निकल आती हैं और धूप सेंकती ऊंघने लगती हैं. ऐसे में ध्रुवीय भालू दबे पांव जा कर उसे धर दबोचता है. एस्किमो कहते हैं, छिपने को कुछ न होने पर ध्रुवीय भालू बर्फ़ के ढूह ही घसीट कर आड़ कर लेता है. ज़रूरत होने पर वह पानी में यूं डुबकी मारेगा कि बुलबुला भी न फूटे, और, पानी के भीतर भीतर, काले नथुने भर बाहर निकाले, वह चुपचाप सोई हुई सील के पीछे जा पहुंचेगा.

में या तो घूम फिर रहे थे या सो रहे थे. घंटे भर की उड़ान के बाद हम एक ऐसी जगह पहुंचे जहां ६७ बेहद खूबसूरत भालू थे. ये या तो आवारागर्दी कर रहे थे, या जल घास में टांगें पेट में दिए सो रहे थे.

ये रोमिल भालू कितने ख़तरनाक हैं? मां अपने छौनों की रक्षा के लिए किसी पर भी हमला कर बैठेगी, लेकिन अधिकांश, पहली बार आदमी को देखने पर उस के नज़दीक हमले के इरादे से नहीं, उत्सुकता के मारे आते हैं. उत्तरी ध्रुव के विख्यात खोजी विलह्यूलमर स्टेफ़नसन ने लिखा है: 'ध्रुवीय भालुओं को यदि पता हो कि आदमी क्या है, तो वे शायद उस के पास भी न फटकें. लेकिन वे तो उसे अकसर सील मछली समझ बैठते हैं.''

पिछले बारह साल में, चर्चिल में कुल मिला कर इन के आक्रमण से दो व्यक्तियों के अंग भंग होने और एक के मारे जाने की दुर्घटनाएं हुई हैं. १९६६ में एक कम उम्र भालू बारह साल के बच्चे पर झपट पड़ा था. उस से अगले साल एक अन्य ने क्री क़बीले के दो इंडियनों को धर दबोचा था; और तीसरे साल एक युवा नर भालू ने एक १९ वर्षीय एस्कीमो को मार डाला. तीनों हमलावर भालुओं को अफ़सरों ने मरवा डाला, उन के हिंस्र व्यवहार के कारण मालूम किए गए. पहले भालू की शव परीक्षा से पता चला कि हमले वाले दिन किसी ने बार बार २२ की राइफ़ल से उस पर गोली चलाई थी. दूसरा भालू दो महीनों से लगातार कसबे में भटकते भटकते आदमी का भय खो बैठा था. तीसरा एक स्कूल

प्रांगण की शिलाओं पर सो रहा था कि मृत तरुण व उस के दो दोस्त अनजाने ही ठोकर खा कर उस की पीठ पर गिर पड़े थे.

१९७७ में हवाई अड्डे का एक कर्मचारी मरते मरते बचा था. एक जहाज़ को उतरने के संकेत देता देता वह चकरा उठा कि पायलट बार बार रोशनियां क्यों चमकाए जा रहा है. फ़्लैश लाइट कंधों से ऊपर उठा कर जलाते ही उस की नज़र पड़ी अपनी ओर झपटते एक भालू पर. वह बच्चे को पेट से चिपकाए एक मादा थी. जैसे ही मादा कर्मचारी को दबोचने को हुई, पायलट ने सहसा इंजन तेज़ कर दिए. उस की गड़गड़ाहट से घबरा कर मादा अपने बाक़ी छौनों की ओर भाग गई.

लेकिन ऐसे ख़तरों से कभी कभार ही दो चार होना पड़ता है. चर्चिल हेल्थ सेंटर के भूतपूर्व चिकित्सक शैरन कोहन के अनुसार, "क़सबे भर के लोगों को एकजुट करने वाला इन भालुओं से बढ़ कर कोई नहीं." और मो वेलरीव कहता है: "मैं ने सैकड़ों भालू देखे हैं, पर कभी कोई फ़साद पर उतारू नहीं लगा." हालांकि एक बार रीछ उस की बत्तख़ें खा गए थे, और उस का घर तोड़ कर भीतर भी घुस आए थे, "पर ऐसा १५ सालों में सिर्फ़ एक बार हुआ."

क़सबे के एकमात्र काफ़ी हाउस में लोग आप को ऐसी टिप्पणियां क़रते मिलेंगे: "भालू तो आदमियों से भी पुराने जीव हैं." या "भालुओं से ज़्यादा आफ़त तो कुत्तों ने मचा रखी है." चर्चिल की नगर परिषद का इन्हें ख़त्म करने का कोई इरादा नहीं है; क्योंकि इन की मौजूदगी से जन जीवन में वह सनसनी, लज़्ज़त और ख़ुसूसियत पैदा हो गई हैं जिन के सरहदी लोग इस्तती है. और पशु विज्ञानियों के तो पौ बारह यूं हो गए हैं कि एक अच्छा ख़ासा विषय अपने पैरों पर चल कर उन की दहलीज़ तक चला आया है.

समस्या पैदा की है कूड़े कचरे के ढेरों ने. कूड़े में गिराए खाद्यावशेषों की महक और ज़ायकों के ये भालू बेहद धती हैं. एक बार एक भालू बंदरगाह के कामगारों की रसोई में घुस गया. सूअर के मांस के ढेर को रौंदता छितराता, बिना कहीं मुंह मारे, कचरे की बोरी उठा कर चलता बना. हालांकि क़सबे में कचरा जलाने की भट्ठी भी बना दी गई है, लेकिन ये भालू कचरे के ढेरों में रमने के ऐसे दीवाने हैं कि कूड़ा ढोने वाले ट्रकों पर चढ़ जाते हैं, और कर्मचारियों का रास्ता रोक लेते हैं. कई बार ये कर्मचारी डर के मारे अपने सीढ़ीदान वग़ैरह छोड़ कर भाग गए और सहायता पहुंचने तक पास नहीं फटके.

पर्यटक, आगंतुक समाधान जुटाते नहीं थकते: कूड़ा क़सबे से दूर फेंको; बल्कि अच्छा हो कि शहर ही दूर ले जाओ; आबादी के चारों ओर जाली या बिजली के तारों की बाड़ खड़ी कर दो; भालुओं को हवाई जहाज़ों में बैठा कर दूर छोड़ आओ. अंतिम उपाय अंतरराष्ट्रीय वन्य पशु कल्याण कोष की सहायता से आज़माया जा रहा है. ख़र्च है लगभग ९,००० रुपए प्रति भालू. फ़िलहाल वही भालू 'निष्कासित' किए जा रहे हैं जो बहुत सताते हैं और आसपास छोड़ आने पर बार बार लौट आते हैं. कोई चारा न बचने पर ही उन का वध किया जाता है. हाल ही में एक ऐसा बाड़ा बनाया गया जिस में २५ भालू एक साथ रखे जा सकते हैं. बहुत दुःती करने वाले ये सफ़ेद गुलगपाड़िए बर्फ़ जमने तक इसी में क़ैद रखे जाएंगे. उम्मीद है तब ये लौट जाएंगे.

खुदाई करने वाले हमारे छः मज़दूर फावड़े से सख़्त मिट्टी को खोद रहे थे. यह मिट्टी सपाट चट्टानों पर पपड़ी के रूप में जम कर बैठ गई थी. इन्हीं पत्थरों के सामने एक दीवार थी. मैं दीवार पर बैठा खुदाई के काम का निरीक्षण कर रहा था. मेरा जोड़ीदार टेनर तंबू में लेटा था. उसे मलेरिया ने जकड़ रखा था.

जोर्डन की पहाड़ियों पर शाम का धुंधलका फैलने लगा था. तभी आसमान से सूखी धरती पर मोटी मोटी बूंदें पड़ने लगीं. मज़दूरों के मुक़ादम हसन ने कमर सीधी की, और मेरी तरफ़ देख कर मुसकराया. मज़दूरों ने पत्थरों पर जमी मिट्टी की मोटी परत खोद कर फ़र्श या छत का उघाड़ लिया था. वह जगह लगभग छः मीटर

चोरों के चंगुल में

कथा कहानी

खुदाई में पुरातत्वविदों को एक प्राचीन नारी मूर्ति मिली जिसे बेच कर समूचा जीवन ऐश्वर्य में बिताया जा सकता था. बस, उसे चोरी छिपे सीमा पार ले जाना था

—राबर्ट एडमंड आल्टर
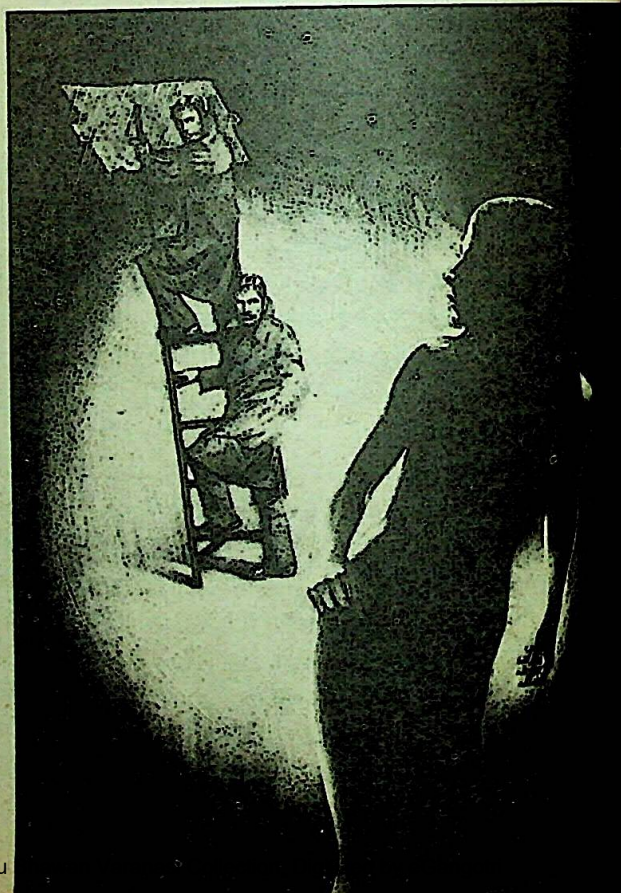
लंबी और साढ़े चार मीटर चौड़ी थी. आयताकार थी. मैं और नज़दीक से उस की जांच करने के लिए दीवार से उतरा और ज़मीन पर उकड़ूं बैठ गया.

वह छत ही थी. उसे प्राचीन काल के कारीगरों ने विस्मृत शताब्दियों के गर्द गुबार को सह सकने लायक़ बनाया था.

"बहुत अच्छे," मैं ने हसन से कहा, "अब यह पत्थर हटाओ."

अब मज़दूरों ने एक काफ़ी बड़ी सिल्ली तोड़ कर निकाल ली. सिल्ली हटते ही वहां ... अंधकारपूर्ण ख़ाली स्थान दिखाई दिया. "सीढ़ी और टार्च लाना," मैं ने हसन से कहा. "तुम अपने साथियों के साथ यहां ठहरो. ...? इन्हें सिगरेट पिलाओ."

मैं सीढ़ी के सहारे नीचे उतरा. उस जगह ... तो नहीं थी, लेकिन भीतर की हवा ठंडी ... से ऐसा लगता ज़रूर था. मैं ठंड से कांपने लगा. मैं ने टार्च का प्रकाश पुरानी पथरीली ... पर फेंका. दीवारों पर यहां वहां चित्रकारी ... गई थी, जो अब धुंधली पड़ गई थी.

टार्च की रोशनी का गोला एक गोरी स्त्री की ... देह पर पड़ा. उसे देख कर मैं ऐसा ... कि मेरे मुंह से बेसाख़्ता निकल गया, "...कीजिए!" और कहने के साथ ही मुझे ... आप पर हंसी आ गई, जिसे मैं जीवित ... देह समझ बैठा था, वह वास्तव में ... की आदमक़द प्रतिमा थी. वह चांदनी ..., उज्ज्वल और शीतल दिखाई दे रही ...

मैं ने जीवन में अनेक मूर्तियां देखी हैं, लेकिन ... स्वाभाविक, सर्वांग सुंदर और अनुपम ... कभी नहीं देखी थी. हर अंग सांचे में ... था—केश, पलकें, नाख़ून—सभी कुछ ... अद्वितीय. वह पांवों को ज़रा सा फैलाए खड़ी थी. बदन नितंबों के पास कुछ बल खाया था, और गरदन मोड़ कर वह कंधे के ऊपर से पीछे की ओर देख रही थी. उस के मुख मंडल पर अंकित भाव ने मुझे जकड़ लिया. वह आश्चर्य की अभिव्यंजना थी या आतंक की या परमानंद की? ऐसा कौन सा अचरज था, जिस की ओर वह यूं एकटक देख रही है? किस शिल्पी ने गढ़ी होगी यह प्रतिमा और यह यहां इस अंधकारपूर्ण जगह में कैसे आई? कब आई?

उत्तेजना से मेरे कान दहक रहे थे. वह पाषाण सुंदरी अंगूरी शराब की तरह मुझे चढ़ गई थी. मुझे लग रहा था कि कोई अनमोल निधि मिल गई है. मैं सीढ़ी चढ़ कर ऊपर पहुंचा. मज़दूरों को विदा किया और तुरंत टेनर के तंबू में जा पहुंचा.

"तुम ने सपने में भी ऐसी मूरत नहीं देखी होगी," मैं ने टेनर को बताया. "बड़ी ख़ूबसूरत है, बड़ी ही ख़ूबसूरत!"

टेनर कुछ बड़बड़ाया और उस ने क़ुनैन की एक गोली मुंह में डाल ली. वह गोलमटोल और बलिष्ठ था. मेक्सिको सरकार टेनर के पीछे हाथ धो कर पड़ी थी, क्योंकि उस ने खुदाई के दौरान प्राप्त बहुत सी प्राचीन कलाकृतियां चोरी छिपे यूकातन के बाहर भेज दी थीं. ऐसी ही तस्करी के कारण टेनर को कंपूचिया से भागना पड़ा था. टेनर दुनिया के तमाम नामी पुरातत्व दलों में बदनाम हो चुका था और वे उस से कोई संबंध नहीं रखना चाहते थे. मैं नया नया था. हालांकि मैं टेनर को दिल से पसंद नहीं करता था, फिर भी मैं उस की पुरातत्व संबंधी व्यावसायिक जानकारी का क़ायल था. मेरा ख़याल था कि मैं कम से कम एक चीज़ तो टेनर से सीख ही सकता हूं: पुरातत्व खोजों से प्राप्त होने वाला आर्थिक लाभ.

रात में मूसलाधार बारिश हो रही थी. हम बरसाती पहन कर तंबू से बाहर निकले. टेनर ने सफ़ेद बुत पर एक नज़र डाली. उस पर कंपकंपी का दौरा पड़ गया. "अद्भुत! विलक्षण! यह बुत बहुत बहुत पुराना है, मिलर! इतना पुराना कि तुम अंदाज़ तक नहीं लगा सकते. मिलर, यह स्त्री न तो यूनानी है, न रोमन. महान से महान यूनानी और रोमन मूर्तिकार भी इस के चेहरे की भाव भंगिमा को पकड़ नहीं सकता था. कमाल है, त्वचा का एक एक रोमकूप तक देखा जा सकता है."

बुत की पीछे देखती निगाह ने मुझे फिर पकड़ लिया. क्या देख लिया था उस ने? मैं ने उस पर से नज़रें हटाईं.

"मूर्तिकार ने ज़रूर किसी यहूदी सुंदरी को माडल बनाया होगा," टेनर ने कहा. शायद यह बाइबिल के 'ओल्ड टेस्टामेंट' के समय की है. जानते हो, इस की क्या क़ीमत होगी?" उस की बुख़ार से चढ़ी आंखों से लोलुपता झांक रही थी.

मैं ने उस की ओर देखते हुए सिर हिलाया.

"खुदाई के धंधे में मैं ने जो ३० वर्ष लगाए हैं, यह मूर्ति उसी का परिणाम है. ख़ज़ाने की खोज करने वाले ऐसी ही चीज़ पाने का तो सपना देखते हैं. मिलर, इस की क़ीमत लाखों लाखों रुपए है. मैं ऐसे ख़रीदारों को जानता हूं जो इस का उचित मूल्य दे सकते हैं. वे नाहक़ पूछताछ भी नहीं करते. मिलर, आधा हिस्सा मेरा आधा तुम्हारा, अगर तुम . . ."

"अगर मैं चोरी छिपे इसे यहां से बाहर ले जाने में तुम्हारी मदद करूं," मैं ने उस का वाक्य पूरा किया. वह हंस पड़ा. वह कभी मुझे और कभी बुत को देख रहा था.

"और कोई रास्ता भी तो नहीं है," टेनर ने कहा. "हासिन और उस के मज़दूरों को इस की जानकारी है?"

"मेरा ख़याल है, नहीं है. वैसे तो मैं अकेला ही नीचे आया था, लेकिन हो सकता है, मेरे पीछे हासिन ने ताक झांक की हो."

टेनर ने सहमति प्रकट की. वह कांप रहा था. "अगर उस ने देखा है तो तुरंत अधिकारियों को ख़बर कर देगा. मिलर, हम इसे रातोरात यहां से पार कर देते हैं. हम ट्रक ले लेंगे और डैड सी* के किनारे किनारे इज़राइल पहुंच जाएंगे. कंटीले तारों के बीच से कई रास्ते हैं."

हम ने किसी तरह उस बुत को बाहर निकाला. बुत भारी था, लेकिन उतना नहीं जितना संगमरमर का होता है. "क्या ख़याल है तुम्हारा? बुत कहीं स्फटिक का तो नहीं है?" मैं ने टेनर से पूछा. "देखा नहीं, रोशनी में कैसे चमकता है?"

"हो सकता है, नमी के कारण हो," टेनर बुड़बुड़ाया. "उस अंधेरे तहख़ाने में युगों युगों से सील भरी है." हो सकता है, यही कारण हो, लेकिन तहख़ाना राजा तुत के मक़बरे की तरह ही सीलबंद था.

हमारा वाहन पुराने माडल का जर्जर ट्रक था. उस के पिछले भाग में चारों ओर लोहे के ऊंचे पार्श्व थे, लेकिन ऊपर से खुला था. बड़बड़ाते, हांफते और ठेलते हम ने सावधानी से चमकती आदमक़द मूर्ति को ट्रक में रखा. "ट्रक मैं चलाऊंगा," टेनर ने कहा और मुझे अंदर धकेल दिया.

बाहर बारिश हो रही थी. भीतर बूंदें चू रही थीं. ट्रक के दरवाज़े और सामने के शीशे के किनारों पर भी नमी फैल आई थी. जगह जगह फिसलता, मुड़ता, खड़खड़ाता ट्रक चला जा रहा था. यह सब मुझे पागलपन सा लगा—बरसाती

*इज़राइल और जोर्डन की सीमा के बीच ५१ मील लंबी और अधिकतम ११ मील चौड़ी नमक की झील.

रात में हड़बड़ी से भागना, कीचड़ भरे अनजान रास्ते पर ताबड़तोड़ बारिश में ट्रक चलाना, बाज़ू में बैठा ड्राइवर बुख़ार से तप रहा था, लेकिन उस पर भूत सवार था. दूर, घोर अंधकार में हमारे सामने बिल्लौरी चमकती आंख प्रकट हुई.

"कोई मोटर साईकिल है," मैं ने कहा. "हमें रुकने का इशारा कर रहा है."

सहसा मुझे लगा कि टेनर मोटर साईकिल और उस के सवार को कुचलता हुआ आगे निकल जाना चाहता है. मैं ने जूता ब्रेक पर रखे उस के पैर पर मारा. "बेवकूफ़! हत्या नहीं!"

द्रुत गति से भागते ट्रक को अचानक ब्रेक लगा. वह दूर तक फिसलता चला गया. पिछला हिस्सा काफ़ी दूर तक कीचड़ उछालता चला गया. बरसाती पहने एक अरब कीचड़ में फिसलता घिघलता हमारी ओर बढ़ा. वह समुद्र तट पर गश्त लगाने वाला सैनिक था. उस के हाथों में द्वितीय महायुद्ध के दौरान प्रयुक्त पुराने माडल की मशीनगन थी. मैं उसे घूस देने के लिए ट्रक के पीछे मिलना चाहता था. पर . . . .

"खोलो," उस ने आदेश दिया.

ट्रक का पिछला हिस्सा टब की तरह पानी से लबालब भर चुका होगा. दरारों और छिद्रों से बारिश का पानी चू रहा था. मैं ने दाहिनी ओर की चटखनी पर हाथ रखा और गश्ती सैनिक की ओर देख कर मुसकराया. मैं ने बात शुरू की, "देखिए . . ."

तभी टेनर की छाया अरब सैनिक के पीछे प्रकट हुई. मैं ने देखा, टेनर की दाहिनी बांह घूमी. अरब सैनिक के सिर पर तड़ाक से रैंच आ पड़ा. कीचड़ में गिरते गिरते उस की मशीनगन हवा में चल गई.

"टेनर! पागल, वहशी! हम इसे घूस दे कर

पटा सकते थे."

टेनर ने अरब सैनिक के हाथ से मशीनगन झटक ली और बोला, "इसे घसीट कर झाड़ियों में डाल दो. जल्दी करो, जल्दी!"

"टेनर, पता नहीं यह घायल है या मर गया है. इसे इस हालत में यहां छोड़ना . . ."

सहसा मशीनगन की नली ने मेरी ठुड्डी को स्पर्श किया. उस के ठंडेपन से मेरा ख़ून जमने लगा. मैं कांप उठा, टेनर मेरी छाती को मशीनगन का निशाना बना रहा था.

"इसे झाड़ी में फेंक दो और ट्रक चलाओ," टेनर ने कहा. मेरे मुंह से 'लेकिन वेकिन' भी नहीं निकला. मशीनगन ने मेरी बोलती बंद कर दी थी.

मैं त्रस्त था—पेट में हड़बड़ी सी मची थी. मशीनगन की गोलियों की घड़घड़ाहट अब भी कानों में गूंज रही थी. टेनर की बात न मानने पर गोलियां मेरे शरीर को चीर कर पार हो जाएंगी. मैं ने अरब सैनिक का शरीर झाड़ी में छिपा दिया और ट्रक चलाने लगा.

वर्षा थमने का नाम ही नहीं ले रही थी. लगता था, आज की रात महाप्रलय की रात है.

टेनर ने हिसाब लगाया कि हम दक्षिण की ओर काफ़ी दूर निकल आए हैं और जोर्डन तथा इज़राइल की सीमावर्ती कंटीले तारों की बाड़ समीप आ गई है. "पहले मोड़ पर पश्चिम की ओर ट्रक मोड़ना." लेकिन ट्रक मोड़ने का अवसर ही नहीं आया. जिस रास्ते पर हमारा ट्रक जा रहा था, वह सीधे जा कर एक सीमावर्ती चौकी पर समाप्त हो गया. एक अधिकारी दरवाज़े से बाहर निकला. टेनर ने लपक कर मशीनगन उठा ली. मैं ने संत्रस्त हो नली ही पकड़ ली.

"नहीं, नहीं, ऐसा मत करना. यहां पूरी की पूरी गारद है. हमारी धज्जियां उड़ा देंगी."

टेनर मानो बहुत थक गया था. उस ने आह भरी. वह बड़बड़ाया, "इस कमबख़्त दुनिया में मैं एक आदमी के अस्तित्व का उद्देश्य समझता था, लेकिन अब . . ."

अफ़सर के पीछे पीछे संतरी था. उस के हाथ में पुराने ढंग की राइफल थी. जो मेरी तरफ़ तनी थी.

"आप लोग कहां जा रहे हैं?" लेफ़्टिनेंट ने पूछा.

"हम अमरीकी पुरातत्व वैज्ञानिक हैं. हम सीमा के उस पार बएरशेबा नगर जाना चाहते हैं."

"आप इज़राइल में क्या सामान ले जा रहे हैं?"

"कुछ नहीं."

वह ज़रा घूमा, "मैं ट्रक की जांच करता हूं, तब तक तुम राइफ़ल इस के सिर पर ताने रखो." अफ़सर ने संतरी को आदेश दिया.

मैं राइफ़ल को सूनी आंखों से देख रहा था. मेरी उम्मीदों की दुनिया धीरे धीरे उलट पुलट होती जा रही थी. मुसीबत सिर्फ़ इतनी नहीं थी कि हम जोर्डन देश से चोरी छिपे एक मूर्ति ले जा रहे थे. यह भी हो सकता है कि हमें जोर्डन के अरब सैनिक की हत्या के जुर्म में गोली से उड़ा दिया जाए.

मैं ने घूम कर टेनर को देखा. वह थर थर कांप रहा था. "मूर्ति मेरी है," उस ने फटी आवाज़ में कहा, "ये लोग उसे नहीं छीन सकते. मैं मर जाऊंगा, लेकिन इसे हाथ से नहीं जाने दूंगा."

अरब लेफ़्टिनेंट पांव घसीटता लौटा. "ठीक है," उस ने कहा, "आप लोग सीमा पार कर सकते हैं."

मैं आश्चर्य चकित रह गया. फिर मैं ने कहा, "शुक्रिया!"

मैं ने ट्रक का इंजन चालू किया. ट्रक घड़घड़ाता हुआ जोर्डन की सीमा पार कर 'नो मैन्स लैंड' के घुप्प अंधकार में प्रविष्ट हो गया. मैं अब तक उलझन में था. निःसंदेह अरब अफ़सर ने ट्रक के पिछले भाग को देखा था. फिर उसे मूर्ति क्यों नहीं दिखाई दी? उस ने हमें चोरी छिपे मूर्ति ले जाने के अपराध में गिरफ़्तार क्यों नहीं किया?

सहसा हमने स्वयं को इज़राइल देश की सीमा दर्शाने वाली कंटीले तारों की बाड़ के सामने पाया. इज़राइली सैनिक हम से मिलने के लिए चौकियों से निकल कर आए. मैं ने ट्रक रोका. एक यहूदी लेफ़्टिनेंट चलकर मेरी खिड़की के पास आया. "हम आप के ट्रक की जांच पड़ताल करेंगे," उस ने कहा.

टेनर ट्रक का दरवाज़ा खोल कर पहले ही उतर चुका था. मैं भी ट्रक से उतरा. टेनर और मैं ने ट्रक के पिछले दरवाज़े की सिटकिनी खोली. पटिया नीचे क्या गिरा, पानी का धारा बह निकली. अब वहां पानी ही पानी था. पानी छोड़ कर और कुछ नहीं था.

"चोरी हो गई," टेनर चीख़ा. "उन्हों ने मूर्ति चुरा ली."

"नहीं. ऐसा नहीं हो सकता, "मैं ने उस की बांह पकड़ते हुए कहा. "उन्हें चोरी करने का अवसर ही कहां मिल सकता था! अगर वे चोरी करते तो हमें ट्रक का पाटिया खुलने की आवाज़ ज़रूर सुनाई देती. अरब लेफ़्टिनेंट पाटिये के पास कुछ पल ही तो ठहरा था. और वह अकेला मूर्ति को निकाल भी नहीं सकता था. मूर्ति बहुत भारी थी."

"तो फिर कहां चली गई?" टेनर विलाप करने लगा. "कहां ग़ायब हो गई? हे भगवान! वह घुल गई! कमबख़्त बारिश में घुल गई!"

टेनर ट्रक के खुले हुए पिछले भाग से हटा और पागलों की तरह हंसने लगा. उस की हंसी आसमान को छूने लगी. वह हंसते हंसते कीचड़ में बैठ गया और हंसता चला गया. हंसते हंसते उस की सांस फूलने लगी. वह हिचकियां लेने लगा. फिर उस की हंसी सुबकियों में बदल गई.

मैं और लेफ़्टिनेंट टेनर को डाक्टर के पास छोड़ आए. हम सिगरेट पीने के लिए बाहर निकले. वर्षा हलकी हो कर कुहासे में बदल गई थी. कहने को कुछ था नहीं. बस एक प्रश्न था. मूर्ति कहां चली गई?

डाक्टर बाहर आया. उस ने लेफ़्टिनेंट से सिगरेट ले ली.

"उसे शांत करने के लिए मैं ने इंजेक्शन लगा दिया है," डाक्टर ने हमें बताया. फिर उस ने मेरी ओर देखा और दवाख़ाने की तरफ़ अंगूठे से संकेत कर के पूछा, "वह धर्मांध है?"

"कौन? टेनर? नहीं. क्यों?"

"क्योंकि वह बाइबिल के एक चरित्र लूत की पत्नी के बारे में निरंतर प्रलाप कर रहा है," डाक्टर ने कहा. "लूत की पत्नी ने सदोम और अमोरा के विनाश के समय ईश्वर की आज्ञा का उल्लंघन करते हुए पीछे मुड़ कर देख लिया था और वह नमक का खंभा बन गई थी."

दर्दवत्ती

आठ वर्ष की बच्ची का टांसिल का आपरेशन होने वाला था. आपरेशन से पहले उस ने अपनी मां से पूछा, "मम्मी, आपरेशन के बाद डाक्टर कोई नन्हा मुन्ना थमा दे तो मैं उसे घर ले आऊं?"

—श्रीमती एम मैकिनन

कहीं जाऊं, कहीं आऊं
हाईलैंड की पहाड़ियां भूल न पाऊं

—राबर्ट बर्न्स
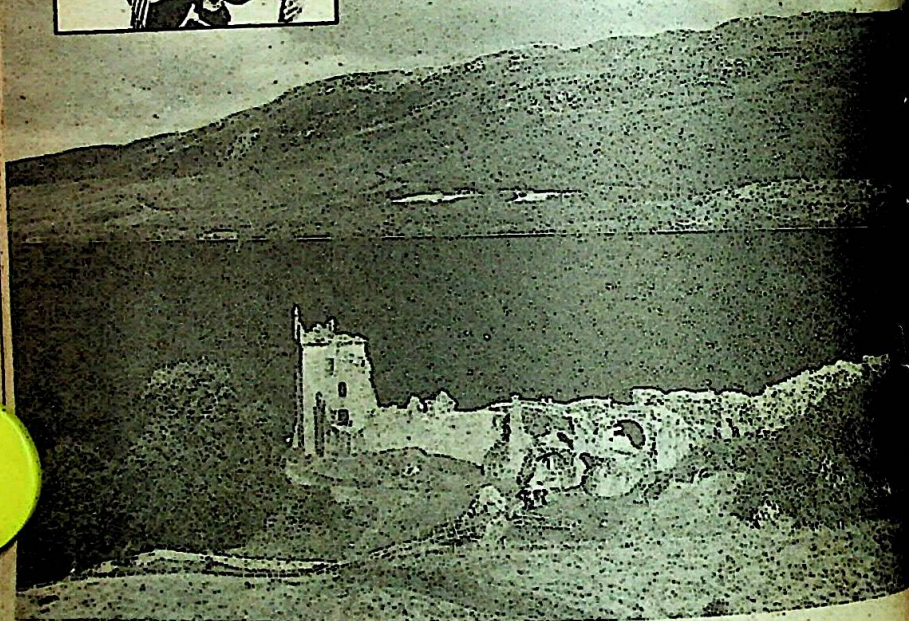
लाक नेस झील में झांकता उर्क हार्ट कैसल

स्काटलैंड की फ़िज़ाओं में आवाज़ें, इतिहास और दंत कथाओं की प्रतिध्वनियां, कविता और गीतों की तानें तैरती रहती हैं.

स्काटलैंड निवासी आंशिक रूप से उस प्राचीन सेल्टिक नस्ल के वंशज हैं जो न जाने कब आयरलैंड से यहां आ कर बस गई थी. कभी आप ब्रिटिश राज्य के इस उत्तरी भाग की यात्रा पर जाएं तो स्काटलैंड निवासी आप को उन आवाज़ों का अर्थ समझाएंगे और स्थानीय जनश्रुतियों से भर देंगे. ५१ लाख की आबादी वाला स्काटलैंड उत्तर से दक्षिण तक ४४२ किलोमीटर लंबा है और इस की न्यूनतम चौड़ाई ४० किलोमीटर है. आप कहीं भी हों, समुद्र कभी ६५ किलोमीटर से ज़्यादा दूर नहीं होता और चीख़ते चिल्लाते सीगल नामक समुद्री पक्षी शायद ही कभी आप की आंखों से ओझल होते हैं. पहाड़ों, संकरी घाटियों और टूटे फूटे अंतरीपों, बलूत, बीजफल, भोज और चीड़ के जंगलों वाले स्काटलैंड को दिन प्रति दिन ज़्यादा से ज़्यादा सैलानी खोज रहे हैं.
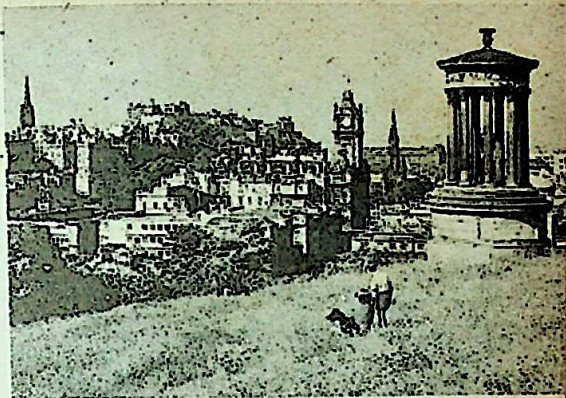
स्काटलैंड के रूमानी इतिहास का साक्षी एडिनबरा

शोषण की भावना से ग्रस्त सुरम्य स्काटलैंड

—अर्नेस्ट ओ हाउज़र

बीहड़ एकाकी और रूमानी—द आइज़ल आफ़ स्काई

कार से एक दिन के ही सफ़र में आप को तरह तरह के आधे दर्जन नज़ारे देखने को मिलेंगे और शायद उतनी ही मनःस्थितियों से गुज़रना पड़ेगा. ऊबड़खाबड़ सागर तट पर तेज़ धूप खिली हो तो लगता है भूमध्य सागर उत्तर में खिसक आया है. गरमियों की बारिश में चारों ओर धूमिल नीले से ले कर विवर्ण रुपहले जैसे रंग फैल जाते हैं. सैर सपाटे के अलावा सैलानी ट्राउट और सामन मछलियों का शिकार, नौका विहार, पर्वतारोहण, स्कीइंग, हिरनों का शिकार और पक्षी अवलोकन करते हैं. और हां, वे स्काटलैंड का पुराना शाही खेल गोल्फ़ खेलते हैं. यह खेल ४०० मैदानों में खेला जाता है. उन में से ४० तो एडिनबरा में ही हैं.

परंपरा के पुजारी

एडिनबरा एक ऐसी चारु महिला के समान है जिस की आंखें भूरी हैं और जिस का क़द न छोटा है और न बड़ा. उस की शाही निगाहें फ़र्थ आफ़ फ़ोर्थ नामक इस्पाती नीली तंग खाड़ी पर टिकी रहती हैं. मध्ययुगीन क़िले, ऐतिहासिक महत्व का रायल माइल और व्यस्त प्रिंसेस स्ट्रीट के कारण वह पूरी तरह से राजधानी प्रतीत होती है फिर भी उसे अधिकार प्राप्त नहीं है. स्काटलैंड वासी सदियों तक अपनी आज़ादी के लिए लड़ते रहे, लेकिन १७०७ में अंततः वे इंगलैंड में विलीन हो गए. यूं स्काटलैंड की अपनी शिक्षा प्रणाली है, अपने क़ानून हैं और अपनी मुद्रा प्रणाली. स्काटलैंड के प्रेसबीटेरियन चर्च पर अनुशासन, निष्ठा, मितव्यय और कठोर परिश्रम जैसे सद्गुणों के पालन कराने का भार है. यही गुण स्काटलैंड के जीवन के मूल आधार हैं. लेकिन ब्रिटेन का एक भाग होने के कारण स्काटलैंड का शासन लंदन से ही होता है. लंदन ही उस पर कर लगाता है और प्रायः वित्तीय सहायता देता है.

स्काटलैंड निवासी हालांकि अपनी परंपरा के पुजारी हैं, फिर भी उन्हें 'किल्ट' (हाईलैंड निवासियों का छोटा कोट) पहन कर भौंडे ढंग से कर्णकटु स्वर में गाना बजाना पसंद नहीं है. हाईलैंड रेजीमेंट की फ़ौजी पोशाक अब भी किल्ट पहनती है. मुझे बताया गया कि अगर आप किसी नागरिक को सड़क पर किल्ट पहने देखें तो समझ लीजिए, वह अमरीकी सैलानी है. किल्ट बनाने वाले एक ही दिन में २५० क़िस्मों के ऊनी चारख़ाने के परंपरागत कपड़ों में सैलानियों की पसंद के कपड़े सी कर दे देते हैं.

स्काटलैंड के प्राचीन क़बीले उन परिवारों से बने थे जिन में मित्र और पड़ोसी भी शामिल हो जाते थे. उन के अपने निश्चित इलाक़े होते थे. उन की सेनाएं अपने सरदारों के प्रति पूर्ण रूप से वफ़ादार होती थीं और राजा के लिए हमेशा सिरदर्द बनी रहती थीं. स्टुअर्ट राजगद्दी के तथाकथित दावेदार 'रंगीले राजकुमार चार्ली' के नेतृत्व में क़बीलों का विद्रोह अंगरेजों ने १७४६ में दबा दिया था. फिर वर्षों तक किसी भी तरह की हाईलैंड पोशाक़ पहनने की सज़ा थी देशनिकाला.

लेकिन बैगपाइप (मशक बीन) की लोकप्रियता कभी ख़त्म नहीं हुई. तीक्ष्ण ध्वनि उत्पन्न करने वाले बैगपाइप से अब पहले जैसा उत्तेजक, ख़ून का दौरा तेज़ करने वाला संगीत नहीं बजाया जाता. कहा जाता है कि स्काटलैंड का प्रतीक यह बाजा एक गड़रिए की बीन में सुधार कर के बनाया गया था और शायद सीज़र की फ़ौजों द्वारा स्काटलैंड में लाया गया था.

स्काटलैंड की ७३ प्रति शत खेतिहर भूमि चरागाहों के लिए ही उपयुक्त है. इसी लिए ग़रीबी वहां के जीवन में व्याप्त है. स्काटिश कहलाने वाले अधिकतर खाद्य पदार्थ—जैसे हैगिस (भेड़ के उदर में जई के आटे, कड़े गोश्त और प्याज़ के साथ कलेजी का क़ीमा, फेफड़े और जिगर उबाल कर तैयार किया गया खाद्य विशेष) और दलिया—ग़रीब लोगों की द्योतक हैं.

आधी दुनिया के लिए

ग्लासगो में ग़रीबी के दर्शन होते हैं. १० लाख आबादी वाला यह शहर देश में सब से बड़ा है, फिर भी अब वह पहले जैसा ख़ुशहाल नहीं रह गया है. एक पत्रकार ने समृद्ध अतीत के कुछ महत्वपूर्ण स्थान दिखाए. एक था—वेनिस के डोज महल की नक़ल पर बनी फ़ैक्टरी, और दूसरा था—गुंबदों वाला विशाल सिटी चैंबर्स जिस का उद्घाटन महारानी विक्टोरिया ने किया था. "हमारे बंदरगाह यूरोप में सब से ज़्यादा व्यस्त रहते थे," उस ने कहा. "हम आधी दुनिया के लिए भाप से चलने वाले रेल इंजन बनाते थे, लेकिन अब वे दिन बीत गए."

स्काटलैंड की समृद्धि की आशा अब बनती है नार्थ सी के तेल से. इस तेल के कारण ब्रिटेन पेट्रोलियम के मामले में पिछले वर्ष आत्मनिर्भर हो गया था. एबरडीन, जहां एक विश्वविद्यालय है और जो कभी मछलियां पकड़ने वाला शांत बंदरगाह था, अब ब्रिटेन की तेल राजधानी बन गया है. जब से यहां तेल निकाला जाना शुरू हुआ है, लगभग [illegible]० तेल कंपनियां स्थापित हो चुकी हैं और [illegible],००० मज़दूर तथा मिस्तरी यहां आ चुके हैं. इन में १,००० अमरीकी भी हैं. हवाई अड्डे पर लाल लाल गालों वाले कारीगर हैलीकाप्टरों की प्रतीक्षा करते रहते हैं जो उन्हें तेल निकालने के लिए स्काटलैंड के समुद्र तट पर फैले ५०० किलोमीटर लंबे स्थान पर जगह जगह पहुंचाते हैं.

स्काटलैंड से २१७ किलोमीटर उत्तर स्थित शेटलैंड द्वीपसमूह पर सलाम वो में ब्रिटेन का सब से बड़ा तेल बंदरगाह बन रहा है. इस में प्रति वर्ष ७०० जहाज़, जिन में ३,००,००० टन वाले टैंकर भी शामिल हैं, आ जा सकेंगे. समुद्र तट के पास से तेल ले जाने के लिए दो पाइपलाइन पहले ही लग चुकी हैं. एक इंजीनियर ने गर्व से कहा, "हम लगभग १५ लाख बैरल तेल इन पाइपलाइनों से रोज़ाना ला सकेंगे."

स्काटलैंड के समुद्र से प्राप्त होने वाला तेल स्काटलैंड के लिए नहीं ब्रिटेन के लिए ख़ज़ाना है. यह बात बहुत से स्काटलैंड वासियों को सालती है. स्काटलैंड में फिर से राष्ट्रवाद की भावना जाग्रत होने का यही कारण है. स्काटिश नेशनल पार्टी के एक प्रवक्ता ने बताया, "हमारा ध्येय केवल स्वायत्तता ही नहीं है. हम पूर्ण रूप से एक राष्ट्र बनना चाहते हैं."

अक्तूबर १९७४ में ब्रिटेन के आम चुनावों में दस में से तीन स्काटिश मतदाताओं ने नेशनल पार्टी के पक्ष में वोट डाला था. ऐसा लगा था कि अंगरेजों की सहमति से एक स्काटिश असेंबली स्थापित हो जाएगी जिसे काफ़ी क्षेत्रीय अधिकार प्राप्त होंगे. लेकिन १९७९ में जब इस मामले का जनमत संग्रह द्वारा तय करना चाहा तो नेशनल पार्टी को आवश्यक ४० प्रति शत मत नहीं मिले. दो महीने बाद, ब्रिटिश चुनावों में नेशनल पार्टी के सदस्यों की संख्या पार्लियामेंट

में ११ से घट कर २ रह गई. निकट भविष्य में स्काटलैंड को स्वतंत्रता मिलने की कोई संभावना दिखाई नहीं देती.

हां, यह निश्चित है कि सैलानियों के लिए स्काटलैंड का आकर्षण बराबर बढ़ता जाएगा. अधिकांश सैलानियों के लिए यह आकर्षण शुरू होता है लाक लामंड झील के चमचमाते पानी और हाईलैंड्स की सुंदर पहाड़ियों से. अगर आप क़िस्मत वाले हैं तो आप को बाज़ की एक दुर्लभ जाति सुनहरे गरुड़ या एक विशाल हिरन के दर्शन भी हो सकते हैं.

झील का दैत्य

ग्रेट ग्लेन नामक गहरी और प्राचीन कटाव हाईलैंड्स के बीच से हो कर जाती है. इस की लंबाई है ९७ किलोमीटर. इस के साथ साथ २९ जलराधों वाली कैलिडोनियन नहर बहती है. यह नहर जब १८२२ में खोली गई थी तो एक अजूबा थी. नार्थ सी पर इनवरनेस बंदरगाह और अतंलांतक को जोड़ने वाली यह नहर कई लंबी और संकरी झीलों में से हो कर गुज़रती है, जिन में स्काटलैंड की सब से अधिक आकर्षक झील लाक नेस भी है. सुनने में आता है कि छठी शताब्दी से अब तक यहां लाक नेस दैत्य या उस के पुरखे देखे गए हैं. हालांकि मैं ने बड़े ध्यान से झील के किनारे वाली सड़क से उस दैत्य को देखना चाहा, पर वह कहीं भी दिखाई नहीं दिया.

भीड़भाड़ से दूर सैलानी हाईलैंड के केंद्र के गुप्त कक्षों का देख पाता है. ग्लेन एफ़्रिक नामक घाटी में जई उगती है. यहां चाफ़िंच चिड़िया जई चबाना छोड़ कर आप के हाथों पर से डबलरोटी के टुकड़े खाने लगती है. कौरीश लाक पर झूला पुल बना है. पुल के ऊपर से आप मीसाक झरने का साफ़ पानी ६० मीटर नीचे पेड़ों से घिरे ख़ूबसूरत महाखड्ड में गिरते देख सकते हैं.

इन हरियाले स्थानों के बीच बीच में चट्टानों वाली बंजर भूमि फैली है जो उसे और भी वीरान बना देती है. यहां पर मांटी घास, कूंची, कंटीली झाड़ियां, थिसल नामक स्काटलैंड का राष्ट्रीय प्रतीक कंटीला पौधा और हीदर नामक लाल रंग की झुकी हुई झाड़ियों के सिवा कुछ नहीं उगता. हीदर तो पहाड़ियों पर क़ालीन की तरह बिछ जाती है. इन बंजर स्थानों पर या तो ईंधन के लिए या ख़ुशबूदार धुएं के लिए पांस (पीट) काटा जाता है जिस से स्काच व्हिस्की को ख़ास स्वाद मिलता है. चरागाहों में भेड़ों को सारे साल चरने के लिए छोड़ दिया जाता है. ये चरागाहें इतनी लंबी चौड़ी होती हैं कि अगर कोई भेड़ इधर उधर हो जाए ता उसे ढूंढने के लिए गड़रियों का दूरबीन इस्तेमाल करनी पड़ती है.

ब्रिटिश आइल्स (ब्रिटेन, आयरलैंड तथा अन्य निकटवर्ती द्वीप समूह) की शानदार दृश्यावली के बीच में से होती हुई जो भी सड़कें गुज़रती हैं, उन में एकतरफ़ा रास्ता ही है. ऊंची ऊंची पहाड़ी चोटियां भूतों की तरह धुंध में से सिर निकालती हैं और फिर कोहरे में छिप जाती हैं. ऊंची ऊंची पहाड़ियों के बीच गहरी उपखाड़ियां समुद्र की लहरों के थपेड़ों से गूंजती रहती हैं.

हाईलैंड्स स्काटलैंड की आधी भूमि पर हैं, लेकिन उस की आबादी का कुल ६ प्रति शत भाग वहां रहता है. ज़्यादातर हाईलैंड निवासी कुछेक छोटे छोटे आरामदेह क़सबों में रहते हैं. उलापूल, लाकिनवर और किनलाकबरवी जैसे समुद्र तट पर बसे स्थानों की चहल पहल, जहां बंदरगाहों में रंग बिरंगी नावें दिखाई देती हैं, बंजर भूमि की नीरवता से मुक्ति दिलाती है.

हाईलैंड्स के पश्चिम में पांच सौ टापू, झुरमुटों और ख़ाली शैल भित्तियां हैं जिन के समूह को हैब्रीडीज़ कहते हैं. इन की ऊबड़-खाबड़ पहाड़ियों पर ऊंचे ऊंचे श्वेत प्रकाश स्तंभ और तेवर चढ़ाए क़िले बने हैं. उन्हें देख कर लगता है मानो समय रुक गया हो. दूर दराज़ गांवों में, जहां अतलांतक की लहरें गरजती रहती हैं, आप को गैलिक भाषा सुनाई देगी. हैरिस और लूइस टापुओं पर झोंपड़ियों में हैरिस ट्वीड (एक प्रकार का गरम कपड़ा जिस के कोट बनते हैं) बुना जाता है.

कोहरे से ढका द्वीप

मुख्य भूमि से ४०० मीटर दूर स्काई नामक 'मिस्टी आइज़ल' (कोहरे से ढका द्वीप) है, जो उत्तर से दक्षिण तक ८० किलोमीटर लंबा है. कैसल मायल के अंधेरे किनारे के नीचे से एक सड़क गुज़रती है. दंत कथा है कि यहां नार्स राजा की बेटी सौसी मेरी की गुफ़ा थी. वह यहां जंजीर से जहाज़ों को रोक कर चुंगी वसूल करती थी. स्काई के साथ साथ ९०० मीटर लंबी ब्रिटेन की सब से दुर्जेय पर्वत माला कूलीन में गरमियां भर व्यस्तता बनी रहती है.

स्कॉटलैंड को जो देखता है, उसे प्यार हो जाता है और वह उस के बारे में सोचने लगता है. नार्थ सी. में तेल मिल जाने के बावजूद स्कॉटलैंड अभी संपन्न नहीं है. फिर भी आशा तो है ही. कहा जाता है, "तेल से हमारा भविष्य तो नहीं संवरेगा, लेकिन संवरने के लिए जितना समय चाहिए, वह ज़रूर मिल जाएगा."

स्कॉटलैंड में तेल मिलने के बाद ब्रिटेन यहां की उन्नति की ओर ध्यान दे रहा है. करों में छूट दी जा रही है. आधुनिक लघु उद्योगों और पनबिजली शक्ति को प्रोत्साहन दिया जा रहा है. लेकिन इस बात का ध्यान रखा जा रहा है कि स्कॉटलैंड के पर्यावरण या सदियों से चले आ रहे जीवन के तौर तरीक़े को कोई नुक़सान न पहुंचे. प्राकृतिक सौंदर्य और लोगों का नैतिक बल ही स्कॉटलैंड के गौरवपूर्ण साधन स्रोत हैं.

कैसी रही ?

फ़ौजी पुस्तिका से : 'छाती के दर्द, टांगों की गंभीर ऐंठन, सांस फूलने या अधिक थकान अनुभव करने वाले व्यक्तियों को न तो परेड करने दी जाए और न इस के लिए प्रोत्साहित किया जाए. इन लक्षणों से ग्रस्त लोगों की ध्यानपूर्वक देखरेख की जाए जब तक कि वे पूरी तरह मिट न जाएं.

—'कैथलिक डाइजेस्ट'

ब्रेमरटन, वाशिंगटन, से प्रकाशित 'सन' यानी 'सूर्य' में छपी सूचना : कंप्यूटर की ख़राबी के कारण आज 'सूर्य' के आने में देर हो गई. पाठकों को असुविधा के लिए हमें हार्दिक खेद है.

अख़बारी कतरन से : संदिग्ध व्यक्तियों ने सिर पर जुराबें पहन रखी थीं ताकि उन की उंगलियों के निशान न रह जाएं.

चर्च के बोर्ड पर लगी सूचना : निर्द्वंद्व यौन व्यवहार के लिए पादरी साहब से मिलें.

—सी एल एन

—लारेंस इलियट

संगीत शिरोमणि स्ट्राविंस्की

यह दृश्य हम ने देखा है १९२६ में. हमारे समय के महानतम संगीतज्ञ ईगोर स्ट्राविंस्की अपने १६ वर्षीय पुत्र सूलिमा को पियानो पर शूमान की एक रागिनी बजाते सुन रहे हैं. दुर्बल काया पर उदास बिल्ली जैसा उन का चेहरा एकाग्रता की प्रतिमा लग रहा है. जैसे ही रागिनी ख़त्म हुई, संगीत शिरोमणि बोले, "तुम्हारे मास्टर जी को शूमान की कोई तमीज़ नहीं. उन्हें कहो, वे तुम्हें मेरी रचनाएं बजाना सिखाएं—शूमान तुम्हें मैं सिखाऊंगा."

यह हैं महारथी स्ट्राविंस्की. तीखी आलोचना और गहन आत्मविश्वास से परिपूर्ण. इस के बाद वह ठेठ अपने अंदाज़ में युगल रचना में जुट जाते हैं, ताकि बाप बेटा साथ साथ बजा सकें.

कालांतर में संगीत प्रवर की एक मुख्य रचना—कंसर्टो फ़ार टू सोलो पियानोज़—का आधार भी यह स्थिति बनी: दो एकल पियानो पर एक समवेत रचना. पिता पुत्र ने पेरिस की एक संगीत सभा में इसे प्रस्तुत किया तो अपार सफलता मिली.

ठीक १०० वर्ष पूर्व ज़ार के रूस में जनमे ईगोर फ़ेदोरोविच स्ट्राविंस्की ने अप्रैल १९७१ में इहलोक त्याग दिया था, किंतु बीसवीं सदी के संगीत पर वह अब भी हावी हैं. बहुत पहले समालोचकों ने माधुर्य की परंपरा तज देने के कारण उन की भर्त्सना की थी. श्रोता इस से चकित थे. 'द फ़ायरबर्ड' की स्वरलिपि वाद्यों की कर्कशता और कर्णभेदी लयों से भरपूर थी. 'द राइट आफ़ स्प्रिंग' इस से भी बढ़ चढ़ कर निकली. इस के विशाल वादक दल में ११ ताल वाद्य थे, और लय रचना इतनी दुरूह कि प्रदर्शन के १६ रिहर्सल करने पड़े. दो पीढ़ियों बाद वह वाद्यों में कटौती और भाव और राग की अवहेलना करते एकदम विरोधी दिशा की ओर बढ़ने लगे. इस काल की उन की रचनाएं गणितीय सूत्रों सी हैं, जिन के स्वर प्रभाव उघड़े उघड़े, गड़ने वाले

...गलत हैं. लेकिन इन में कोई बेहूदगी ...थी. कनाडा के संगीतज्ञ हैरी समर्ज़ के ...में, "यह संगीत उन लोगों के लिए है, ...शराब बिना पानी मिलाए ही पसंद करते हैं. ...जिस तरह पिकासो के बिना चित्रकला ...और आइंस्टाइन के बिना अणु भौतिकी ...कल्पनीय है, इसी तरह स्ट्राविंस्की के बिना ...समकालीन संगीत."

स्ट्राविंस्की जीवन भर अपनी रचनाओं को ...कर पैदा होने वाले सभी विवादों से विमुख ...का दिखावा करते रहे. ख़ुद को वह संगीत ...आविष्कारक कहते. उन का अध्ययन कक्ष ...व्यवस्थित था: दो पियानो, मोत्सर्ट ...और हाइडन के चित्रों से सजी लिखने की मेज़, ...कागज़ों की गड्डियों, क़लमों, दावातों, पैमानों, ...स्टाप वाच, कैंचियों, और गोंद आदि से ...पटी एक कामकाज़ी मेज़; और दोपहर ...झपकी लेने के लिए एक कोच. पूरा ...एक कार्यकुशल, शांत प्रकृति व्यक्ति ...झलक देता था.

लेकिन यह सर्दमिजाज़ी दिखावा भर थी. ...यह है कि स्ट्राविंस्की हर चीज़ के प्रति ...थे—अपने बच्चों, प्रेमिकाओं, स्वादिष्ट ...और—सब से बढ़ कर—अपने काम ...प्रति. वह ऐसे पहले संगीतज्ञ थे जिन्होंने ...हर रचना रिकार्ड की थी और जिस ने ...के संगीत की 'व्याख्या' की, वह उन ...का ...वना. १९६६ में लेओनार्ड ...'राइट आफ़ स्प्रिंग' का एक सफल ...प्रदर्शन करने के तुरंत बाद उन से मिलने ...और बड़े नाटकीय अंदाज़ से उन के ...घुटनों झुक कर श्रद्धा अभिव्यक्त करने ...स्ट्राविंस्की बोले, "लेनी, तुम्हारे कंसर्ट ...टेंपो ग़लत थे."

लेकिन इस उग्र आत्मविश्वास की तह में था कई बार सहज ही आहत हो जाने वाला एक अतिशय मानवीय व्यक्ति. शयन कक्ष के बाहर रोशनी न होती तो उन्हें नींद न आती; वहम हो जाए कि कोई सुन रहा है, तो वह रियाज़ न कर पाते. वह एक मेधावी कंडक्टर एवं पियानो वादक थे, लेकिन श्रोताओं के सामने कार्यक्रम प्रस्तुत करते समय कभी कभी इतने घबरा जाते कि कई बार अपनी ही रचनाएं भूल जाते.

वह एक कुख्यात रोगभ्रमी थे. जहां जाते, दवाखानों के चक्कर काटते, लेकिन गोलियां वही खाते जो उन्हों ने अपने लिए ख़ुद तय कर रखी थीं. १९३४ में उन के बड़े लड़के थियोडोर के ज़ख़्मी अपेंडिक्स का फ़ौरी आपरेशन हुआ तो उन्हों ने अपने अच्छे ख़ासे अपेंडिक्स को भी 'एहतियातन' निकलवा फेंका. इस के साथ ही उन्हों ने बाकी तीनों बेटों के भी अपेंडिक्स ग्रंथियों के आपेरेशन का हुक्म जारी कर दिया.

रुपये पैसे के मामले में उन की व्यग्रताएं दंतकथाएं बन चुकी हैं. अपने ब्रिटिश प्रकाशकों से उन्हों ने एक बार तक़ाज़ा किया कि उन की भेजी चिट्ठी लेते समय उन्हें १५ सेंट बैरंग फ़ीस के तौर पर चुकाने पड़े हैं. पर यह भी सच है कि वह भूतपूर्व स्वदेशवासियों और विपदाग्रस्त कलाकारों की आजीवन सहायता करते रहे. रूसी क्रांति के बाद वह किसी भी देश के नागरिक नहीं रहे, तब फ़्रांस ने उन्हें फ़्रांसीसी नागरिकता दी. इस सम्मान के लिए वह हृदय से आभारी थे, लेकिन इस बात पर हमेशा ज़ोर देते रहे कि उन का पारिश्रमिक अमरीकी डालरों या ब्रिटिश पौंडों में ही अदा किया जाए. एक बार उन्हों ने लिखा भी, "मेरी कोशिश रही है कि अपनी कला के बूते पर हासिल होने वाली दमड़ी दमड़ी वसूल लूं."

लेकिन संगीत के प्रति उन की सत्य निष्ठा अमूल्य थी. १९४४ में उन्हों ने ब्राडवे नाट्य प्रहसन विभाग के लिए 'द सेवेन लिवसी आर्ट्स' नामक नया बैले लिखा था. इस के प्रथम प्रदर्शन के बाद आयोजकों ने उन्हें तार द्वारा सूचित किया कि प्रहसन एक महान सफलता साबित हुआ है, पर वाद्य संयोजन में मामूली हेरफेर से इस के डंके बज उठेंगे. स्ट्राविंस्की ने जवाब दिया, "मैं महान सफलता से ही संतुष्ट हूं."

ईगोर फ़ेदेरोविच स्ट्राविंस्की का जन्म सेंट पीटर्सबर्ग (अब लेनिनग्राद) के बाहर एक ग्रीष्मकालीन विहार स्थल में हुआ था. उस के पिता रशियन इंपीरियल आपेरा के प्रधान मंद्र गायक थे. दो साल की उम्र से ही ईगोर गांव कीं औरतों से सुनी लोक धुनों को गुनगुनाने लगा था. लेकिन उस की प्रतिभा वर्षों तक प्रायः उपेक्षित ही रही. स्ट्राविंस्की के एक मात्र वास्तविक गुरु थे निकोलस रिम्स्की कोर्साकोव, जिन से उस ने २१ वर्ष की आयु में वाद्य सीखना शुरू किया. १९०८ में स्ट्राविंस्की ने गुरु दुहिता के विवाह के स्मरण स्वरूप गुरु को एक मुक्त वाद्य रचना भेजी. जवाब में तार आया : 'रिम्स्की गुज़र गए.'' स्ट्राविंस्की के प्रारंभ काल का भी अंत हो गया.

स्ट्राविंस्की को प्रसिद्धि के आलोक में पहुंचाने का श्रेय जाता है संयोजक सर्जी दियागिल्येव को, जो उन दिनों पेरिस आपेरा के लिए एक बेले समारोह का आयोजन कर रहे थे. यह समारोह २० वर्ष तक चला, और इस अवधि में दियागिल्येव के उस व्यामोहकारी रूसी बैले के दुनिया भर के बड़े बड़े शहरों में प्रदर्शन हुए. इस के नर्तकों में से थे निजिंस्की और पावलोवा; सेट सज्जा पिकासो, ब्राक, ऊट्रीलोव रवा ने की थी; और इस के संगीतकार थे देबूसी, रैवेल, प्रोफ़ोफ़िएव तथा स्ट्राविंस्की.

कालांतर में ये सभी युगांतरकारी सितारे बने, लेकिन सब से अधिक देदीप्यमान हुए स्ट्राविंस्की. १९१० में एक निर्णायक रिहर्सल के दौरान दियागिल्येव ने कहा था, "यह व्यक्ति प्रसिद्धि की दहलीज पर पहुंच चुका है." सर्जी ने स्ट्राविंस्की को रूसी परी कथाओं पर आधारित एक बैले—द फ़ायरबर्ड—का संयोजन सौंपा. मेहनताना दिया १,००० रूबल. बदले में स्ट्राविंस्की ने पेश किया एक शाहकार.

'द फ़ायरबर्ड' प्यार की जीत की पारंपरिक कहानी है, लेकिन स्ट्राविंस्की का संगीत कुछ और ही था. इस के स्वरों की जीवंतता ने पेरिस के ढुलमुल श्रोताओं को चकरा दिया. आमफ़हम नहीं समझ सका कि इस संगीत का क्या महत्व है, पर संगीतज्ञ समझ गए : स्ट्राविंस्की ने आर्केस्ट्रा की यथार्थ, अकल्पनीय संभावनाएं उजागर कर दी थीं.

१९१३ के आयोजनों के लिए स्ट्राविंस्की ने दियागिल्येव को ग़ैर ईसाइयों के वसंतोत्सव पर आधारित एक ऐसा बैले भेंट किया जिस में एक युवती नाचते नाचते देवता के चरणों में अपने प्राणों की बलि दे देती है. परंपरागत लय ताल का इस से कोई संबंध नहीं था. इस का संगीत आदिम, विसंगतिपूर्ण और विशुद्ध रूप से कामोद्दीपक था. संक्षेप में, यह उस युग से बहुत आगे की रचना थी जिस युग के श्रोताओं पर—२९ मई १९१३ की उस अविस्मरणीय शाम को—यह बम की तरह फूटी थी.

परदा उठने के दो मिनट बाद दर्शकों ने हो हल्ला मचा दिया. हुल्लड़बाज़ों और कार्यक्रम के मुट्ठी भर पैरोकार हाथापाई पर उतर आए तो

पुलिस ने आ कर ख़तरनाक उपद्रवियों पर आख़िर क़ाबू पाया. सीटियां और फब्तियां फिर भी जारी रहीं, पर मानो न मानो कार्यक्रम भी जारी ही रहा. मगर बैले ख़त्म होने से बहुत पहले स्ट्राविंस्की वहां से भाग निकले और खिन्न मन पेरिस की गलियों में भटकने लगे.

अगले दिन 'ला फ़िगारो' नामक समाचार पत्र ने इस संगीत को "कष्टसाध्य, बचकाना उजड्डता" कह कर ख़ारिज कर दिया, लेकिन लेखक ज़ां काक्तो ने इसे, "कला जगत की एक महानतम घटना" बताया. कुछ समय बाद की एक समालोचना में इसे बीसवीं सदी के संगीत की सब से सुंदर तथा सब से गहन संगीत रचना कहा गया.

कटुता का दुर्ग. १९०६ में स्ट्राविंस्की ने अपनी रिश्ते की बहन कैथरीन नूसेंको से विवाह किया. उन के दो बेटे और दो बेटियां हुईं. उन का जीवन बड़ा उल्लासमय एवं पर्यटनपूर्ण था. सेंट पीटर्सबर्ग व पेरिस में उन के अपने मकान थे. यूक्रेन में एक ग्रीष्म आवास था. इन के अलावा स्विट्ज़रलैंड और फ्रेंच रिवीएरा में कई किराए के घर लिए. १९१४ की गरमियों में वे स्विट्ज़रलैंड में थे कि सुख समृद्धि भरे इस जीवनक्रम का अंत हो गया.

प्रथम महायुद्ध शुरू हो गया था. इस के बाद आई रूसी क्रांति. उन की रूसी नागरिकता छीन ली गई; भावी अध्ययन संबंधी सारी सामग्री ज़ब्त कर ली गई और अपने देश से कुछ भी कमाने के अधिकार से उन्हें वंचित कर दिया गया. इसी वर्ष कैथरीन को तपेदिक हो गया.

स्ट्राविंस्की कटुता के दुर्ग में छिपे साधना करते थे. पर जैसे जैसे संगीत जगत उन की रचनाओं को मान्यता देता गया वैसे वैसे वह सहज अनुभव करने लगे और उन्हों ने एक ऐसी संयमपूर्ण जीवन शैली अपना ली जिसे वह नव शास्त्रीयतावाद (निओ क्लासिसिज़्म) कहा करते थे. लेकिन इस से अग्रगामियों को लगा कि वह उन का परित्याग कर गए हैं; और वे उन पर पिल पड़े. मगर अविचलित स्ट्राविंस्की सतत साधनारत रहे. तभी आईं १९३८ की सर्दियां: तीन महीनों के अंदर अंदर उन की ३० वर्षीय बेटी लुडमिला और पत्नी तपेदिक से मर गईं; वसंत आया तो मां भी चल बसीं. यह उन के एक और अध्याय का अंत था; एक अन्य अध्याय का प्रारंभ. उसी वर्ष सितंबर में ५८ वर्षीय स्ट्राविंस्की अमरीका ले जाने वाले एक जलपोत पर सवार हो गए.

नए वातावरण ने सृजन के नए द्वार खोले. लोकप्रिय अमरीकी संगीत की धुनें उन में सदा उत्सुकता जगाती रही थीं, अतः वूडी हरमैन के फड़कदार संगीत दल के लिए उन्हों ने एक क्लैरिनेट कंसर्ट दे डाला. १९४२ के प्रारंभ में बैले मास्टर ज़ोर्ज़ बालांशीन ने फ़ोन पर स्ट्राविंस्की से पूछा कि क्या वह उस के दल के लिए एक बैले रचना चाहेंगे? दोनों में यह बातचीत हुई:

बा. : हो सके तो एक पोल्का*
स्ट्रा. : किस के लिए?
बा. : कुछ हाथियों के लिए.
स्ट्रा. : (कुछ रुक कर) किस उम्र के?
बा. : छोटे छोटे.
स्ट्रा. : ठीक है.

यूं जन्म हुआ रिंगलिंग बंधुओं बारनम और बेली के कार्यक्रम—"५० हाथियों और ५०

*पोल्का एक तरह का बोहीमियन नृत्य होता है. यहां तात्पर्य इस नृत्य की धुन से है.

लड़कियों के लिए रचे बैले''— सरकस पोल्का का. वसंत में न्यू यार्क के मेडिसन स्क्वेयर गार्डन में उस का उद्घाटन हुआ तो ४२५ खचाखच प्रदर्शनों का तांता लग गया.

ईश्वरीय गाथाएं. अमरीका पहुंचने के कुछ ही बाद स्ट्राविंस्की ने वीरा सूदीकिन, जो कभी दियागिल्येव की कास्ट्यूम डिज़ाइनर थी, से विवाह कर लिया. दोनों लास एंजेलस में रहने लगे; और २८ दिसंबर १९४५ को स्ट्राविंस्की अमरीकी नागरिक बन गए. यह व्यवस्था उन की सृजन शक्ति के लिए संभवतः आवश्यक थी. शरद ऋतु में ही उन की प्रतिभा के ख़जाने से कई रत्न निकले, जिन में से कई का आधा इश्वरीय गाथाएं थीं. जन्मतः रूसी आर्थोडाक्स चर्च के सदस्य स्ट्राविंस्की कई बार आस्था डगमगाने के बावजूद ईश्वरनिष्ठ बने रहे. उन के संगीत में इस निष्ठा की झलक समय के साथ बढ़ती ही गई.

१९४८ में उन्हों ने पूरी लंबाई के अपने पहले आपेरा 'द रेक्स प्रोग्रेस' की रचना शुरू की. इस की शब्द रचना डब्लू एच आडेन और चेस्टर कालमान ने की. बेनिस में, सितंबर १९५१ में हुए इस के प्रथम प्रदर्शन का १२ वर्ष बाद स्ट्राविंस्की के यूरोप 'लौटने' का प्रतीक माना गया. सब कुछ बदल गया था, पर स्ट्राविंस्की वही थे. 'द रेक्स प्रोग्रेस' एक मृदु एवं अत्यंत प्रभावशाली संगीत नाटिका थी. वेनिस के बाद दुनिया भर के अनेक नगरों में इस का प्रदर्शन हुआ और इस महानतम समकालीन आपेरा माना गया.

७० की उम्र में वह संगीत की एक नितांत नई विधा में डूब गए. यह थी क्रमिक संगीत. यह विधा जाने माने संगीत से उतनी ही भिन्न और दुरूह थी, जितनी परंपरागत चित्र कला से अमूर्त चित्र कला होती है. इस में सुर निर्दिष्ट अनुक्रमों में बजाए जाते थे—शास्त्र सम्मत विधि से, अत्यंत अल्प काल के लिए; और राग आदि की क़तई चिंता न की जाती. इस से एक नया विवाद छिड़ गया, लेकिन स्ट्राविंस्की अब प्रौढ़ हो चले थे. बड़े काइयांपन से बोले, ''मेरा संगीत कसौटी पर कसा जाए तो मुझे क्या एतराज़ हो सकता है! युवा और होनहार संगीतकार के रूप में मुझे अपनी प्रतिष्ठा बनाए रखनी है तो यह सब मुझे स्वीकारना ही होगा.''

१९६० तक वह संगीत जगत के भीष्म माने जाने लगे. उन के ८०वें जन्म दिवस पर देश विदेश में स्ट्राविंस्की समारोह आयोजित किए गए. इसी वर्ष उन्हें मास्को में अपनी कृतियों का एक कार्यक्रम संचालित करने का निमंत्रण मिला. लगभग आधी सदी के बाद वे रूस लौटे तो उन का वीरोचित स्वागत किया गया : उन के संगीत के कंसर्ट हुए, बैले खेले गए; विद्यार्थियों और संगीत विशारदों के साथ उन की गोष्ठियां रखी गईं. प्रधान मंत्री खुश्चेव ने भी उन से भेंट की. लेकिन सोवियत शासन प्रणाली के प्रति उन की अरुचि फिर भी कम नहीं हुई.

बढ़ती उम्र उन्हें निष्क्रिय न कर सकी. वह यात्राएं करते, अपने संस्मरण लिखते. ८६ वर्ष की आयु में उन्हों ने एक और लंबा आपेरा रचने की योजना बना डाली. लेकिन नियति ने इसे पूरा नहीं होने दिया. १९७१ में, वसंत की एक रात वह सोए तो सुबह उठे ही नहीं. तब वह लगभग ८९ वर्ष के थे.

उम्र के १००वें जन्म दिवस पर हुए संसार भर में स्ट्राविंस्की समारोह, संगीत गोष्ठियां और बैले प्रदर्शन इस बात का प्रमाण हैं कि उन की रचनाएं अमर रहेंगी.

—जी श्रीनिवास राव

मेरी डाक सहेली

पत्र व्यवहार में मैं ने पूरी सावधानी बरती. कभी ऐसा कुछ नहीं लिखा जो किसी अनजान लड़की को बुरा लग सके. और अंत में . . .

अक्सर ऐसा होता है कि छोटी छोटी बातों में जीवन के महान अनुभव छिपे रहते हैं. यह सत्य जीवन से मिले एक ऐसे पाठ के ज़रिए मेरे सम्मुख प्रकट हुआ जिस का रहस्य उद्घाटित होने में बीस साल लग गए.

तब मैं कालिज का २१ वर्षीय छात्र था. एक सुबह मेरी नज़र बंबई से प्रकाशित एक लोकप्रिय पत्रिका के उस पृष्ठ पर पड़ी, जिस पर दुनिया भर के ऐसे नवयुवकों के नाम पते छपे थे जो आपस में पत्र मित्र बनाना चाहते थे. मैं ने सहपाठियों को अनदेखे लोगों से मोटे मोटे रंगीन लिफ़ाफ़े प्राप्त करते देखा था. उन दिनों इस का बहुत प्रचलन था. मेरे मन में आया क्यों न मैं भी ऐसा ही प्रयास कर के देखूं.

बस, मैं ने लास एंजेलस की रहने वाली ऐलिस एच नाम की लड़की का पता चुन लिया और पत्र लिखने के काग़ज़ का एक क़ीमती पैड भी ख़रीद डाला. मेरी कक्षा की ही एक लड़की ने एक बार मुझे यह बताया था कि उसे गुलाबी काग़ज़ पर लिखे पत्र पढ़ने में बहुत मज़ा आता है. किसी महिला का दिल जीतने का गुर तभी से मेरे हाथ लग गया था. मैं ने तय कर लिया कि मैं भी गुलाबी काग़ज़ पर ही ऐलिस को पत्र लिखूंगा.

"प्रिय पत्र मित्र" लिख कर शुरू करते हुए मेरे मन में वैसी ही अधीरता उत्पन्न हो रही थी जैसी किसी स्कूली लड़के को अपनी पहली परीक्षा देते समय होती है. लिखने को ज़्यादा कुछ नहीं था. पहले तो क़लम चलने का नाम ही न लेती थी, मगर फिर धीरे धीरे लिखना शुरू हो गया. डाक पेटी में पत्र डालते हुए मुझे ऐसा लग रहा था जैसे मैं किसी दुश्मन की गोली का सामना कर रहा होऊं.

जितनी उम्मीद थी, सुदूर कैलिफ़ोर्निया से उस से पहले ही उत्तर प्राप्त हो गया. ऐलिस ने लिखा था, "मुझे आश्चर्य है कि मेरा नाम पता हिंदुस्तान में छपी पत्रिका में पत्र मित्रों के कालम में कैसे पहुंच गया . . .ख़ास तौर पर इस लिए कि मैं ने तो पत्र मित्र बनाने की इच्छा भी प्रकट नहीं की थी." पत्र में आगे लिखा था, "लेकिन किसी अनदेखे और अनजाने व्यक्ति से पत्र पा कर बड़ी प्रसन्नता हुई. आप मुझे अपना पत्र मित्र बनाना चाहते हैं—लीजिए, मैं तैयार हूं."

मुझे याद नहीं कि वह छोटा सा पत्र मैं ने कितनी बार पढ़ा. उस में जीवन का सारा संगीत

भरा था. मुझे लगा मैं सातवें आसमान से बातें कर रहा हूं.

पत्र व्यवहार में मैं ने पूरी सावधानी बरती और कभी ऐसा कुछ नहीं लिखा जो एक अनजान अमरीकी लड़की को बुरा लग सके. ऐलिस को अंगरेजी भाषा पर सहज अधिकार प्राप्त था, लेकिन मेरे लिए वह एक विदेशी भाषा थी और मैं ने बड़े प्रयास से उसे सीखा था. मेरे शब्दों और वाक्यांशों में बड़ी भावुकता होती थी और अकसर संकोच का भाव रहता था. मेरे मन के किसी कोने में रोमांस का माद्दा भी छिपा था, किंतु मैं कभी उसे व्यक्त करने का साहस नहीं जुटा पाया. ऐलिस अपनी सधी सुंदर लिखावट में लंबे लंबे पत्र लिखती थी. मगर उन में उस के व्यक्तिगत जीवन के बारे में ज़्यादा कुछ नहीं होता था.

हज़ारों किलोमीटर की दूरी से मुझे पुस्तकों और पत्र पत्रिकाओं से भरे लिफ़ाफ़े और कभी कभी छोटे मोटे उपहार प्राप्त होते रहे. मेरे मन में ज़रा भी संदेह नहीं था कि ऐलिस कोई समृद्ध अमरीकी लड़की है और तय है कि वह उस के द्वारा भेजे गए उत्तम उपहारों जैसी ही सुंदर भी होगी. हमारी पत्र मैत्री कितनी सफल साबित हुई थी!

एक सवाल बराबर मेरे मन को सालता रहा. किसी लड़की से उस की आयु पूछना अशिष्टता की बात हो सकती है, लेकिन मैं उस की तसवीर मंगवा लूं तो उस में क्या बुराई हो सकती है? मैं ने अपना अनुरोध लिख भेजा और आख़िरकार मेरे पत्र का जवाब भी आ पहुंचा. ऐलिस ने सिर्फ़ इतना ही लिखा कि तत्काल उस का कोई चित्र उपलब्ध नहीं है. शायद कभी बाद में वह मुझे अपना चित्र भेज सके. उस ने यह भी लिखा, "कोई भी साधारण अमरीकी लड़की मुझ से ज़्यादा सुंदर होगी."

वह कैसी लुकाछिपी थी? औरतों के इस छलावे की बात ही क्या है!

वक़्त बीतता गया और बरसों निकल गए. धीरे धीरे ऐलिस से मेरा पत्र व्यवहार कम आवेगपूर्ण और अधिक अनियमित होता गया. मगर बिलकुल बंद नहीं हुआ. जब भी वह अस्वस्थ होती तो मैं उसे स्वास्थ्य संदेश भेजता रहता, क्रिसमस के शुभकामना पत्र भेजता रहा और, अपनी सामर्थ्य के अनुसार, कभी कभी उपहार भी भेजता रहता. इसी बीच मैं दुनियादारी के तकाजों में फंस गया, मेरी आयु बढ़ती गई, मुझे नौकरी मिल गई, मेरी शादी हो गई और बच्चे भी हो गए. ऐलिस के पत्र मैं ने अपनी पत्नी को भी दिखाए. स्वयं मेरे और मेरे परिवार के मन में ऐलिस से मिलने की इच्छा बराबर बनी रही.

फिर, एक दिन मुझे एक बड़ा सा पैकेट मिला जिस की लिख़ावट एकदम नई थी और निश्चित रूप से किसी महिला के हाथ की थी. वह पैकेट अमरीका से मेरी सुपरिचित ऐलिस के शहर से ही आया था. पैकेट को खोलते समय मैं मन ही मन इस आश्चर्य में डूबा रहा कि यह नया पत्र मित्र कौन हो सकता है.

पैकेट में कुछ पत्रिकाएं थीं और था एक छोटा सा पत्र. लिखा था, "आप की सुपरिचित ऐलिस एच की घनिष्ठ मित्र के नाते मुझे यह सूचित करते हुए बड़ा खेद है कि पिछले रविवार को एक कार दुर्घटना में उन की मृत्यु हो गई. वे चर्च हो कर और कुछ छोटी मोटी ख़रीदारी कर

...घर लौट रही थीं. काफ़ी उम्र हो जाने के कारण—पिछली अप्रैल में उन की आयु ७८ वर्ष की हो गई थी—वे तेज़ी से आती कार देख नहीं पाईं और उस से टकरा गईं. ऐलिस अकसर मुझे बताती थीं कि आप का समाचार मिलने पर उन्हें कितनी ख़ुशी होती थी. वे एकदम अकेली थीं और उन की एकमात्र धुन थी दूसरों की मदद करना—चाहे वे लोग परिचित हों या अपरिचित, दूर के हों या नज़दीक के."

पत्र के अंत में यह अनुरोध किया गया था कि मैं साथ भेजा गया ऐलिस का चित्र स्वीकार कर लूं. उन्हों ने यह इच्छा प्रकट की थी कि वह चित्र उन की मृत्यु के बाद ही मुझे भेजा जाए.

उस चित्र से झांकता चेहरा अपार सौंदर्य और अनुकंपामय चेहरा है. वह एक ऐसा चेहरा है जिस से मैं उस समय भी स्नेहान्वित हुए बिना न रह पाता जब मैं कालिज का एक संकोची छात्र भर था और वे तब भी वृद्ध हो चुकी थीं.

आप ने कभी सोचा . . .

...कि आज की बहुत सी आर्थिक समस्याएं बीते कल के समाधान का परिणाम हैं?

—ए एच जी

...कि प्रलोभन की फुसकार, कर्तव्य की चिंघाड़ की अपेक्षा कोसों तक सुनाई दे जाती है?

—'फ़ील्ड न्यूज़पेपर सिंडीकेट'

...कि कुछ दुकानों पर आप को अपनी सेवा स्वयं करनी पड़ती है और कुछ में आप की उपेक्षा के लिए नौकर रखे जाते हैं?

—'शिकागो ट्रिब्यून'

...कि जिन होटलों में आप के लिए आंखें बिछाई जाती हैं, वहीं के बिल देख कर आप की आंखें फटी रह जाती हैं.

—बी जी

...कि मेहनत मशक़्क़त के लिए पगलाए रहने वाले किसी सज्जन से जब भी आप का सामना होता है, वह प्रायः आप का अफ़सर निकलता है?

—'मेनार्ड प्रिंटिंग'

...कि हवाई जहाज़ जितने आधुनिक होते और जितने अधिक सधते जा रहे हैं, उतने ही उन कागज़ी तीरों के पास आ रहे हैं जो हम दूसरी क्लास में बनाया करते थे?

—'न्यूज़ एंड कूरियर', चार्ल्सटन

आह प्रशासन! वाह प्रशासन!

क्या आप जानते हैं कि कोई अमरीकी २१ वर्ष का हो, और पढ़ लिख लेता हो, आय की दृष्टि से मध्यमवर्गीय (लगभग १३,००० डालर वार्षिक) हो, और वह पूरे ६५ वर्ष की उम्र तक काम भी करता रहना चाहता हो, तो इस वाक्य का शेष अंश पढ़ने तक संघीय सरकार उस की सारे जीवन की कमाई से भी बड़ी धनराशि इधर उधर व्यय कर चुकी होगी.

—'गुड रीडिंग'

आइए पृथ्वी के अंतिम रहस्य वन को चलें और इस के एकांत सौंदर्य में तैरें

पाताल वन

—जान कलीनी

धरती पर अब भी एक जंगल ऐसा है जिस का विस्तार विपुल है पर जिस का पर्यवेक्षण अब तक नहीं हुआ है. यहां उन्नत शिखर और गहरी घाटियां हैं, अंधेरे मैदान हैं. मानव यहां रह नहीं सकता, बस पर्यटक बन कर आ सकता है.

यह जंगल वहां है जहां धरती समाप्त होती है और सागर शुरू होता है. इसे समुद्रों की कंटीनेंटल शेल्फ़ यानी महाद्वीपीय कगार कहते हैं. किनारे पर समुद्र की गहराई अकस्मात नहीं बढ़ती. काफ़ी दूरी तक समुद्र तल धीरे धीरे नीचे होता जाता है, फिर गहराई लगभग सीधी दीवार की तरह नीचे चली जाती है. कम गहराई वाले इसी भाग को कंटीनेंटल शेल्फ़ कहते है. अधिकांश स्थलों पर शेल्फ़ की अधिकतम गहराई २०० मीटर है जब कि इस

द फ़ारेस्ट्स आफ़ द सी से संक्षिप्त. कापीराइट जान एल कलीनी. सियरा क्लब बुक्स, सान फ़्रांसिस्को, कैलिफोर्निया द्वारा प्रकाशित

के आगे समुद्र की औसत गहराई ३,८०० …टर है. माना जाता है कि पृथ्वी पर जीवन का उद्गम बहुत पहले खनिजीय पृथ्वी तट के आसपास किसी प्राचीन महाद्वीपीय शेल्फ़ में हुआ होगा. इस विराट शेल्फ़ में जीवाणु से ले कर स्तनपायी तक हर तरह के प्राणियों का …वास होता है.

दर्पण के उस पार. मध्य ग्रीष्म की एक …चमकीली दोपहर में मैं पहली बार इस शेल्फ़ के न्यू इंगलैंड वाले हिस्से की ओर गया. …तट दूर नहीं था. हम ने बोट का इंजन बंद कर दिया. इस आकस्मिक ख़ामोशी ने दृश्य को अवास्तविक और स्वप्निल बना दिया. मेरे साथी नेड और मैं ने अपना साज़ सामान पीठ पर कसा, फिर हम ने बोट के दोनों ओर अपने …को संतुलित किया और एक साथ ठंडे …पानी में पीठ के बल पैठ गए. हम धीरे धीरे गहराई में धंसने लगे.

ऊपर देखने पर लगा जैसे हम मंद गति से लहराते किसी विशाल दर्पण से धीरे धीरे दूर होते जा रहे हों. कुछ क्षण बाद दर्पण को पार कर के हम एक मंथर और शिथिल नए आयाम में उतर आए. दो एक मीटर नीचे नेड रजत बुलबुलों का एक प्रपात सा निःश्वासित करता दिखाई पड़ रहा था. फिर किसी छाताधारी की तरह हमारे पांव धीरे धीरे नीचे जा टिके. अब हम भूरी समुद्री शैवाल के लहलहाते खेत में कमर तक आ धंसे थे.

जहां हम उतरे थे, वह जगह पानी की सतह से क़रीब छः मीटर नीचे थी. यह एक पहाड़ी का शिखर था, जिस के चारों ओर गहरा पानी था. हम पहाड़ी के शिखर के ऊपर तथा सिर पर तने शैवाल के चंदोवे के नीचे तैरने लगे. मुझे एक ऐसी जगह मिल गई, जहां मैं शैवाल वृंत के बीच रेंग गया. अब पानी स्फटिक सा निर्मल तथा पूरी तरह स्थिर था.

इस समुद्री वन प्रदेश की तली पर अन्य वनस्पतियों का नितांत अभाव था. लेकिन अनेक पत्थर और शंख ऐसे नज़र आ रहे थे जैसे किसी ने सुकुमार गुलाबी रंग से उन्हें वहां अंकित कर दिया हो. उन पर शैवाल जैसी प्रवालीय वनस्पति की एक परत सी चढ़ी थी. लगता है यह वनस्पति छायादार स्थलों में ख़ूब पनपती है.

समुद्री शैवाल के नीचे प्राणी जीवन भी दुर्लभ लगता था, लेकिन यह एक और भ्रम था. प्रथम दृष्टि में ख़ाली लगने वाली चट्टान की सतह का ग़ौर से निरीक्षण करने पर पता चला कि वहां कोमल, रोमिल, आवरणयुक्त और चर्मयुक्त संरचनाएं थीं.

दुनिया के अंदर दुनिया. धीरे धीरे बहुत कुछ स्पष्ट होने लगा—सूक्ष्म स्पर्शक; सतह के नीचे की ओर जाते बराबर बराबर दूरियों पर बने छिद्र. एक पूर्णतया भिन्न सूक्ष्म जीव जगत यहां बसा था—दुनिया के अंदर दुनिया—एक वर्ग मीटर में संभवतः हज़ारों लाखों जीव थे. वास्तव में कोई शक्तिशाली अणुवीक्षण यंत्र ही इस स्थान की जैविक जटिलताओं को पूरी तरह उद्घाटित कर सकता था.

घोंघों के हौले हौले हिलते झुंड की परिचित प्राणी थे. बीच बीच में कोई पेगुराइडे (यति केकड़ा) अपने पुराने घोंघा शंख में तेज़ गति से भागता निकल जाता—उस स्तब्ध संसार में यह चौंकाने वाली बात लगती. मैं वर्षारण्य में पसरे किसी दैत्य जैसा था—सांस के बुलबुले छोड़ता. इन बुलबुलों को शैवाल की छाजन पार करने में कड़ा संघर्ष करना पड़ रहा था.

समुद्री शैवाल क्षेत्र से निकल कर मैं ने गैस की जांच की. फिर गहराई की ओर बढ़ा. एकाएक पानी बेहद ठंडा हो उठा. यह परिवर्तन बड़ा तीव्र था. मुझे अपने होंठों और मास्क के आसपास चेहरे की अनढकी त्वचा पर ऐसा महसूस हुआ, जैसे अचानक जनवरी में कड़ाके की ठंडी तीखी हवा चुभने लगी हो. इसे ताप रेखा कहा जा सकता है—पानी की उस सीमा का संकेत चिह्न. गरमियों का सूर्य इस गहराई तक जल को गरम कर चुका था. मैं जैसे पूरी तरह सर्दियों में वापस पहुंच गया था. ताप रेखा के नीचे पानी एक ऋतु परे रहता है, जबकि कुछ ही फ़ुट ऊपर गरमियों का समुद्र सक्रिय रहता है. गहराई में वसंत पतझड़ में ही आता है, और ग्रीष्म ऋतु आती ही नहीं.

तापमान एकाएक घट जाने से पानी की स्वच्छता भी बहुत ज़्यादा बढ़ गई मानो धुंध छंट गई हो. अब मैं ख़ूबसूरत संगमरमरी दर्रे में तैर रहा था, जिस की सीधी, सफ़ेद, और लगभग दीप्तिमान दीवारें विलक्षण सी दीख रही थीं—मानो आवरण से ढकी हों. मैं देख रहा था कि दीवारें जीवधारियों की तह से ढकी थीं—चिकने, श्वेत, लचकीली त्वचा वाले शल्कधारी प्राणियों की तह. इन बस्तियों में वे एक ऐसी प्रक्रिया से प्रजनन करते हैं जिसे बडिंग (मुकुलित होना) कहा जाता है—जनक के परिवर्धित भाग से एक नया प्राणी विकसित होता है और फिर सहज ही अलग हो जाता है. हज़ारों की संख्या में बहुगुणित होते ये अद्भुत जीव चट्टान के विस्तृत भाग में फैल जाते हैं. जिस चट्टान पर एक बार इस जीव का विकास हो जाए, उस पर कुछ और नहीं उगता.

विशालकाय महाचिंगट. सतह से १८ मीटर नीचे मैं बड़े बड़े पत्थरों के एक ढेर के पास पहुंचा. तभी एक अद्भुत घटना हुई. पत्थरों के इस ढेर के अधबीच एक दरार से सहसा दो मीनपक्ष उभरे. उन्हों ने क्षण भर के लिए आघात किया, मुड़े और ग़ायब हो गए.

मैं ने द्वार में झांका. अंदर रोशनी का एक धुंधला लहराता नज़र आया, जिस से संकेत मिलता था कि वह कोई बड़ी गुफा थी. कुछ देर बाद एक विशालकाय महाचिंगट (होमारस अमेरिकानस) मेरे सामने था, जिसे नेड ने अपने दस्ताने वाले हाथ में बड़ी मज़बूती से जकड़ रखा था.

वह जीव आधा मीटर से भी ज़्यादा लंबा था. उस के पंजे आदमी के हाथ से भी बड़े थे. नेड ने उस की पूंछ के चौड़े पंख की ओर इशारा किया. उस के सिरे में मुझे दो कटाव से नज़र आए—झींगा पकड़ने वाले मछुआरे, बड़ी मात्रा में अंडे देने वाली मादा झींगा की पहचान के लिए इस चिह्न का उपयोग करते हैं. इस झींगे को दो बार पकड़ कर मुक्त किया जा चुका था. अन्य मछुआरों को सावधान करने के लिए उस पर कटाव के चिन्ह लगा दिए गए थे.

हम ने मादा झींगा को गुफा के द्वार के पास छोड़ दिया. वह धीरे धीरे नज़रों से ओझल हो गई.

नेड ने पत्थरों से अटी हलकी ढलान की तरफ़ इशारा किया जो नीचे तरल अंधकार में उतर गई थी. हम मानो किसी कल्पनातीत ग्रह की गवेषणा करते अंतरिक्षयात्री थे. मैं नेड के ठीक पीछे चल रहा था और उस की टार्च की रोशनी में विलक्षण चमत्कारी वर्णों—पीले, नारंगी, लाल, बैंगनी रंगों का एक सीमाहीन अपार उद्यान दिखाई पड़ रहा था. फूलों जैसी दिखने वाली अधिकांश आकृतियां वस्तुतः जीव थीं: दीपवृक्षों की तरह फैले ख़ूबसूरत स्पंज (पोरीफ़ेरा) तथा पत्थरों के शिखरों पर टिके गगरियों जितने बड़े सी-एनीमोन (एक्टीनिएरिया) हमारे सामने प्रशस्त जीवों ने जीव मंडल की अवधारणा का स्पष्ट सा आभास करा दिया : भूमंडल पर पसरी जीवन की गहन परत.

मेरी कलाई पर बंधे माप यंत्र के अनुसार अब हम २७ मीटर की गहराई तक पहुंच चुके थे. इस बिंदु पर तली समलत हो गई थी. आगे एक रेतीला मैदान दृष्टि सीमा से परे तक प्रशस्त था. चारों ओर गहन निस्तब्धता व्याप्त थी—जो धरामंडल के किसी भी विस्तार में व्याप्त सन्नाटे से कहीं तीखी थी.

यह भी अछूती नहीं. दुर्भाग्य से उस शांत दृश्यावली में और भी बहुत कुछ था. तली में सामने ही बीयर का एक डब्बा पड़ा था. साफ़ सुथरा, नया नकोर अलूमीनम का बना वह डब्बा ऊबड़ खाबड़ पत्थरों के एकदम प्रतिकूल था, और पास से गुज़रती काडफ़िश की प्रवहमान रूपाकार के भी. हम ने प्रदूषण का यह पहला उदाहरण देखा. बेशक यह अनजाने में ही हुआ होगा, मगर इनसान यहां भी पहुंच गया था. जिस वनस्थली की हम खोज कर रहे थे वह भी अछूती नहीं थी.

वस्तुतः मानवीय गतिविधियों ने जलीय जीवन पद्धति को भी आघात पहुंचाना शुरू कर दिया हैं. उदाहरण के लिए जार्जेस बैंक झींगा मछली का एक प्रमुख प्रजनन स्थल है. लेकिन इस के शिकार के व्यवसाय के कारण इस की संख्या बहुत कम हो गई है. न्यू इंगलैंड सागर में तट से परे तेल के लिए की जाने वाली ड्रिलिंग से भी क्षति हो सकती है. तेल के चकत्ते मछली के लार्वा के लिए, जो मई और जून में सागर की सतह पर ही रहते हैं, ख़ास तौर पर ख़तरनाक होते हैं.

गंदगी के निकास, ऊर्जा संयंत्रों और अन्य तकनीकी हस्तक्षेपों से तैरने वाले जीव समूह को होने वाले ख़तरों को ले कर समुद्री परिस्थिति विज्ञानी काफ़ी चिंतित हो उठे हैं. इन विशाल एवं प्रवहमान जीव जातियों की रक्षा

अवश्य की जानी चाहिए, मात्र इस लिए नहीं कि वे स्पंजों और अतलांतिक एवं भूमध्य सागर में पाई जाने वाली बड़ी मछली सोर्ड-फ़िश जैसी विभिन्न जातियों की नर्सरियां हैं, वरन इस लिए भी कि सागर के संपूर्ण जीवन के साथ उन की अनिवार्य निरंतरता है. प्रत्येक आदि जीव का अपने से दुर्बल जीव जाति से संबंध इस बात पर निर्भर करता है कि (छोटी मछली द्वारा बड़ी मछली के शिकार की प्रथा के अनुसार) उस का प्राकृतिक भोजन क्या है. समुद्री खाद्य पदार्थों के पोषक हैं सागर तल के प्रकाश संश्लेषी पौधे—ख़ासकर एक कोषाणु वाली वनस्पतियों (काई आदि) तथा दुहरे कोषाणुओं वाले पौधों (क्रसोफ़ाइटा) जैसी सूक्ष्म वनस्पतियां. सूर्य द्वारा आलोकित सागर की त्वचा यानी ३० मीटर की गहराई तक की ऊपरी परत ही इस लायक़ होती है, जिस में ये जीव रह सकते हैं. लेकिन अधिक से अधिक गहराई में व्याप्त जीवन भी अंततः कई किलो-मीटर ऊपर स्थित प्रकाश संश्लेषियों पर ही निर्भर करता है. और वह बचे खुचे उस भोजन की मामूली बारिश पर जीवित रहता है जो नीचे की ओर अपनी लंबी यात्रा में कई बार पचाया जा चुका होता है.

ख़तरा! ख़तरा!! अभी तक मानव ने इस विशाल प्राकृतिक प्राणिजगत के जीवन में थोड़ी सी ही अव्यवस्था उत्पन्न की है, लेकिन इस की आशंकाएं बढ़ती ही जा रही हैं. वस्तुतः मानव का अपना भविष्य ख़तरे में है. निरंतर घटते साधनों के इस युग में, समुद्रों का महत्व भोजन के स्रोत के रूप में निरंतर बढ़ता जा रहा है. सब से बड़ा ख़तरा महाद्वीपीय शेल्फ़ के इन क्षेत्रों पर मंडरा रहा है, क्योंकि ये संभावित भोजन उत्पादन के सर्वाधिक समृद्ध अंचल हैं.

पीठ पर लगे उपकरण में आक्सीजन ख़त्म होने को थी. अतएव नेड और मैं तेज़ी से ऊपर की ओर बढ़े. कुछ देर हम शैवाल क्षेत्र के साथ साथ तैरते रहे, फिर उस के ऊपर. शीघ्र ही हम सतह पर अपनी बोट के पास आ गए. तीसरे पहर सुनहरी धूप चारों और फैली थी.

आसमान में बादल नहीं थे. दूर किसी जेट की भाप से बनी एक लकीर भर नज़र आती थी. नाव के एक तरफ़ लटके लटके मैं विश्राम करता रहा और पास आते विमान को देखता रहा. हमारी गोताख़ोरी क़रीब ५० मिनट तक चली थी, लेकिन इस बीच हम ने कुल इतना फ़ासला तय किया था, जितना तकनीकी यंत्रों से सज्जित अन्य लोग आधे सेकंड से भी कम समय में पार कर जाते हैं.

उस ऊंचे परिदृश्य से नीचे झांकने पर उन्हों ने क्या देखा होगा? क्या उन्हों ने कभी उपजाऊ रह चुके नम स्थलों की कुम्हलाहट, ग्रीष्मकालीन स्थलों द्वारा परिवर्तित की जा चुकी तटीय रेखाएं, यहां वहां बने स्टोरेज टैंक, कूड़े के ढेर और तैलाक्त बंदरगाह देखे होंगे? क्या वे पानी में डूबी उन घाटियों और चट्टानों की कल्पना कर पाए होंगे—अनंत निस्तब्धता के मैदानों में उतरते महाद्वीप के लंबी संधिरेखा वाले ढलवां पार्श्व की कल्पना—जिन के ऊपर से वे गुज़रने वाले थे?

सिर के ऊपर क्षीण होती धुएं की लकीर को देखते हुए मैं सोच रहा था कि किसी महत्वाकांक्षी निर्मिति, तेल टर्मिनल अथवा तैरते हवाई अड्डे के नीचे बसे प्राकृतिक जीव जगत को कब्ज़े में करने या उन्हें नष्ट करने के लिए यहां पहुंचने में कितना समय लगेगा. क्या समय रहते कोई ऐसी योजना बनाई जा सकती है कि इन जीवों को विनाश से बचाया जा सके? हम ऐसी आशा कर सकते हैं. ♦

लूसी
आदिमानव की खोज

डोनाल्डसी जोहान्सन और मैटलैंड ए ई डी की पुस्तक से संक्षिप्त

लूसी

आदिमानव की खोज

—डोनाल्ड सी जोहान्सन
और मैटलैंड ए ईडी

अफ़्रीका के बीहड़ों के बीच अचानक एक अनोखा कंकाल मिला, जिस ने मानव जाति के इतिहास को कम से कम ३० लाख साल और पीछे धकेल दिया. एक मीटर से ज़रा ज़्यादा लंबाई वाला यह पुरा मानव कंकाल एक स्त्री का था. खोजियों ने इस स्त्री का नाम रख दिया—लूसी. लघु मानव लूसी अपने पैरों खड़ी हो कर चलती थी, दौड़ती थी, लेकिन उस का दिमाग़ वानरों जैसा छोटा था...इतने पुराने ज़माने में मानवी दोपाए होते थे—इस के सबूत से मानव विकास के इतिहास की कई धारणाएं धराशायी हो गईं...यहां प्रस्तुत है उसी लूसी की खोज की रोमांचक कहानी खोजी वैज्ञानिक डोनाल्ड की ज़ुबानी
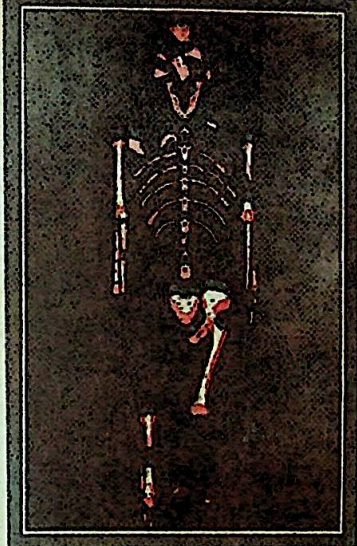
लूसी का ३५ लाख साल पुराना अस्थिपंजर

पौं फटते ही मैं जाग गया. क्षेत्र अभियानों के दौरान मेरे साथ अकसर यही होता है. मैं इथियोपिया में था. अदीस अबाब के उत्तर पूर्व में क़रीब २४० किलो मीटर दूर, हडार नामक स्थान पर, एक छोटी, कीचड़ भरी नदी आवाश के किनारे हम ने शिविर लगा रखा था. कई हफ़्तों से मैं वहां था और जीवाश्मों की तलाश कर रहे एक वैज्ञानिक समूह के सह नेता का कार्य कर रहा था. *

तंबू से बाहर निकल कर मैं ने साफ़ आसमान की ओर ताका. टाम ग्रे काफ़ी पीने मेरे साथ आ बैठा. टाम एक अमरीकी स्नातक छात्र था, जो उस क्षेत्र के पशु एवं वनस्पति जीवाश्मों के अध्ययन के लिए आया था. मेरा अपना लक्ष्य मानवी (होमीनिड) जीवाश्म थे:

* 'मैं' का संबंध डोनाल्ड सी जोहान्सन से है, जो प्रख्यात पेलियोएंथ्रापालाजिस्ट हैं. मेटलैंड ए एडी विज्ञान लेखक हैं और उन्हों ने पेलियोएंथ्रापालाजी से संबंधित विषय पर दो अन्य पुस्तकें भी लिखी हैं.

मानव के विलुप्त पूर्वजों और उन के निकट संबंधियों की अस्थियां.

"तो आज क्या इरादा है?" मैं ने पूछा. टाम ने बताया, वह एक नक़्शे पर जीवाश्म स्थलों का अंकन कर रहा है.

"तुम लोकैलिटी १६२ का अंकन कब करने वाले हो?" मैं ने पूछा.

"मुझे पक्का पता नहीं है कि १६२ है कहां," उस ने कहा.

"तो मेरा ख़याल है, मुझे वह जगह तुम्हें दिखानी पड़ेगी." उस सुबह ग्रे के साथ जाने को मैं उत्सुक नहीं था. मुझे काफ़ी सारा लिखने पढ़ने का काम पूरा करना था. मुझे शिविर में ही रहना चाहिए था—लेकिन मैं रहा नहीं. मुझे टाम के साथ जाने के लिए एक सशक्त अवचेतन प्रेरणा का अहसास हो रहा था और मैं ने उस का पालन किया. अपनी डायरी में मैं ने लिखा :

३० नवंबर, १९७४. ग्रे के साथ लोकैलिटी १६२ की ओर सुबह सबेरे प्रस्थान. अच्छा लग रहा है.

मानव के पूर्वजों के जीवाश्मों का अध्ययन करने वाले मानव जीवाश्मशास्त्री के रूप में मैं भाग्यवादी हूं. हम में अनेक होते ही हैं, क्योंकि हमारा काम काफ़ी हद तक भाग्य पर निर्भर करता है. जिन जीवाश्मों का अध्ययन हम करते हैं, वे बड़े दुर्लभ होते हैं तथा अनेक लब्धप्रतिष्ठ मानव जीवाश्मशास्त्री पूरे जीवन में एक जीवाश्म तक तलाश पाने में असफल रहे हैं. मैं सौभाग्यशाली शास्त्रियों में से हूं. हडार के क्षेत्र में यह मेरा दूसरा ही वर्ष था और अब तक मैं कई जीवाश्म खोज चुका था. यही वजह थी कि मैं ने डायरी में लिखा कि "अच्छा लग रहा है." उस सुबह जब मैं सो कर उठा था, तो मुझे लगा था, यह उन दिनों में से एक है, जब आदमी को अपने भाग्य की आज़माइश करनी चाहिए.

ग्रे और मैं लैंड रोवर में सवार हुए और धीमी गति से लोकैलिटी १६२ की ओर चल दिए. हडार अफ़ार रेगिस्तान के मध्य में है. कभी यहां झील हुआ करती थी, जो अब सूख चुकी है. इस की तलछट में अतीत की भौमिकी संबंधी घटनाओं के अनेक प्रमाण भरे पड़े हैं. यहां आप को ज्वालामुखी राख के झरनों के संकेत मिलते हैं. दूर के पहाड़ों से बह कर आए कीचड़ और गाद की तहें जमी नज़र आती हैं. पुरानी झील की सूखी सतह पर नई नदियों ने गहरे कटान कर दिए हैं, मानो किसी ने कोई केक बीच में से आधा काट दिया हो और उस की स्लाइस की तहों में धरती के इतिहास की परतें दिखाई दे रही हों. ग्रे और मैं ने उन गलियों में से एक की ढलान पर गाड़ी रोक दी और दो एक घंटों तक सर्वेक्षण किया. दोपहर होने को थी और तापमान ११० डिग्री फ़ारेनहाइट को छू रहा था. हमें ख़ास कुछ नहीं मिला था. "चलो, इस रास्ते से वापस चलें," मैं ने सुझाया, "और उस छोटी सी गली के तल का सर्वेक्षण करें."

पहले भी अन्य लोग इस गली का कम से कम दो बार पूर्ण निरीक्षण कर चुके थे. उन्हें कोई रुचिकर बात नज़र नहीं आई थी. मैं ने एक अंतिम बार उस घुमावदार मार्ग का निरीक्षण करने का फ़ैसला किया. गली में हड्डी जैसी कोई चीज़ कहीं नहीं थी. लेकिन जब हम लौटने के लिए घूमे, तो मुझे ढलान के साथ, ज़मीन पर कोई चीज़ पड़ी नज़र आई.
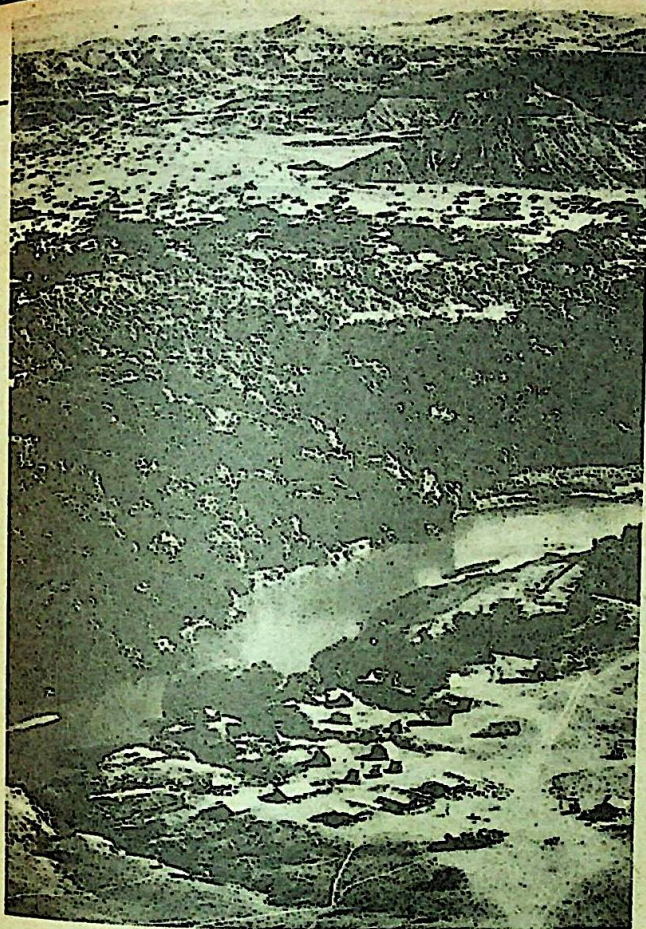
हडार में आवाश नदी के पास खोजी दल का पड़ाव.

"यह तो किसी मानवी बांह का टुकड़ा है," मैं ने कहा.

"हो नहीं सकता," ग्रे बोला, "बहुत छोटा है. किसी क़िस्म का वानर रहा होगा." हम दोनों उस के निरीक्षण के लिए झुक गए. "बहुत ही छोटा है," ग्रे ने फिर कहा.

मैं ने सिर हिलाया. "मानवी जीवाश्म है."

"कैसे?"

"तुम्हारे पास का वह टुकड़ा. वह भी मानवी है."

"गुड लार्ड!" ग्रे के मुंह से निकला. उस ने उसे उठा लिया. वह छोटी सी खोपड़ी का पिछला भाग था. एक मीटर दूर जांघ की एक हड्डी पड़ी थी. हम ढलान पर पड़ी अन्य हड्डियों को देखने लगे: दो एक कशेरुकाएं, श्रेणि प्रदेश का एक भाग—सब के सब मानवी. एक अविश्वसनीय, असंभव सा विचार मेरे मन में कौंध गया. 'मान लो

कि ये सब एक दूसरे में फ़िट बैठते हों? क्या ये सब किसी एक अत्यंत आदिम अस्थिपंजर के हिस्से हो सकते हैं?' ऐसा कोई अस्थिपंजर कभी, कहीं नहीं मिला था.

"उधर देखो," ग्रे बोला, "पसलियां."

एक अकेला कंकाल? "मुझे यक़ीन नहीं होता," मैं ने कहा.

"भगवान क़सम, यक़ीन कर ही डालो!" ग्रे चिल्लाया. "तुम्हारे सामने तो है! बिलकुल यहीं!" उस की आवाज़ चीख़ में बदल गई. एक दूसरे को बांहों में लिए, तपती चमकती रेती पर, हम उछलने लगे.

"हमें उछल कूद बंद करनी चाहिए," आख़िर मैं ने कहा. "हमें पूरी तरह पता लगाना ही होगा. मान लो हमें दो बाईं टांगें मिल जाएं? मुमकिन है, यहां कई लोगों की हड्डियां मिल जुल गई हों. हमें शांति से काम करना चाहिए; उत्तेजित नहीं होना चाहिए."

हम ने जबड़े के दो एक टुकड़े इकट्ठे किए, सही स्थान का अंकन किया और शिविर में लौटने के लिए तपती लैंड रोवर में सवार हो गए. रास्ते में हम ने दो खोजी भूशास्त्रियों को भी साथ ले लिया.

"बड़ा दांव हाथ लगा है!" ग्रे उन से कहता रहा. "बहुत बड़ा दांव!"

"हमें शांत रहना है," मैं ने कहा. शिविर से क़रीब आधा किलो मीटर पहले ही ग्रे का आत्म नियंत्रण जवाब दे गया. उस ने लैंड रोवर के भोंपू पर अपना अंगूठा दवा दिया. भोंपू की लंबी आवाज़ सुन कर नदी में नहाते वैज्ञानिक दौड़ते चले आए. "मिल गया," वह चिल्लाया. "पूरा कंकाल मिल गया."

उस अपराह्न शिविर का प्रत्येक व्यक्ति घाटी पहुंच चुका था; स्थल का विभाजन किया जा रहा था; संचयन के भारी काम की तैयारियां चल रही थीं—अंततः इस काम में तीन सप्ताह का समय लगा. काम पूरा होने तक हमें हड्डियों के सैकड़ों टुकड़े मिले. इन में से अनेक टुकड़े बहुत छोटे छोटे थे, जो एक अकेले व्यक्ति के अस्थिपंजर का क़रीव ४० प्रति शत थे. टाम का और मेरा मूल अनुमान सही था. कोई हड्डी दो बार नहीं मिली थी. इस तरह की खोज पहले कभी नहीं हुई थी.

शिविर उत्तेजना से झूम रहा था. पहली रात तो हम बिलकुल सोए ही नहीं. रात भर बीयर पी जाती रही. शिविर में एक टेप रिकार्डर था, जिस पर बीटल्स द्वारा गाए गए गीत 'लूसी इन द स्काई विद डायमंड्स' (हीरों जड़े आकाश में लूसी) वाला टेप रात भर, बार बार बजता रहा—पूरे ऊंचे स्वर में—और रात के आसमान को झंकृत करता रहा. उस अविस्मरणीय रात में किसी समय—मुझे अब याद नहीं है कि किस समय—नए जीवाश्म का नामकरण हो गया—लूसी. तब से उस का यही नाम चला आ रहा है.

एक सवाल

"औरत?"

यही है वह सवाल, जो पहली बार इस जीवाश्म को देखने वाले द्वारा मेरी ओर उछाला जाता है. मुझे कैफ़ियत देनी पड़ती है: "हां, वह एक औरत ही थी. हमें एक पूर्ण श्रोणीय हड्डी और उस की त्रिकास्थि मिली थी. चूंकि महिलाओं का श्रोणीय द्वार पुरुषों की अपेक्षा बड़ा होता है ताकि वह बच्चे को जन्म दे सके, इस लिए औरत और मर्द में हम पहचान कर सकते हैं."

हडार के समीप स्थल ३३३ पर डोनाल्ड जोहान्सन

लोगों को सब से ज़्यादा हैरानी उस के आकार को देख कर होती थी. उस का सिर सॉफ़्टबाल से ज़्यादा बड़ा नहीं था. लूसी का अपना क़द बस एक मीटर से कुछ ही अधिक था—१०७ सेंटी मीटर—हालांकि वह पूर्णतया विकसित हो चुकी थी. यह निष्कर्ष उस की अक़्ल दाढ़ों से निकाला गया था, जो पूरी तरह उग चुकी थीं और कई वर्षों तक उन का इस्तेमाल हो चुका था; घिसने के लक्षण उन में मौजूद थे.

लूसी में ख़ास बात क्या थी? उस ने खोजकर्ताओं की कल्पना को, जैसा कि अभियान के एक सदस्य ने कहा, इतने, महीनों तक उत्तेजित क्यों बनाए रखा?

तीन बातें थीं: एक, वह क्या है—या क्या नहीं है? वह अपने से पहले मिली हर चीज़ से भिन्न है. उसे कहीं फ़िट नहीं किया जा सकता.

दूसरी बात है उस की पूर्णता. लूसी की खोज से पहले बहुत पुराने अस्थिपंजर थे ही नहीं. प्राचीन मानवी जीवाश्म हैं ज़रूर, लेकिन वे सब टुकड़े टुकड़े हैं—किसी का एक दांत, किसी के जबड़े का एक अंश. पूर्ण जीवाश्म मानव को देखते ही बेसाख़्ता मुंह से निकल जाता है, "क्या यह सचमुच का है?" लूसी के मामले में आप जानते हैं.

तीसरी बात है उस की उम्र. लूसी लगभग ३५ लाख साल पुरानी है. दो टांगों पर चलने वाले, किसी भी मानवी पूर्वज का प्राचीनतम, सर्वाधिक संपूर्ण, सर्वाधिक सुरक्षित अस्थिपंजर.

लेकिन लूसी चाहे कितनी भी अद्वितीय हो, उस का कोई अर्थ नहीं है, अगर उसे मानव विकास की प्रक्रिया में वैज्ञानिक तर्क के आधार पर फ़िट नहीं किया जाता, जिसे एक सदी से भी अधिक समय में चार महाद्वीपों के सैकड़ों विशेषज्ञों ने बड़ी मेहनत से जुटाया है. उन की जीवाश्म संबंधी खोजों, उन की अंतः-दृष्टि—कभी प्रेरित, कभी मूर्खतापूर्ण—ने मिल कर वानर से मानव के विकास की निरंतर स्पष्ट और बारीक़ियों भरी तसवीर को उभारने में कोई कोर कसर नहीं रहने दी है—और यह कहानी इस सदी के नवें दशक में आ कर सही लगनी शुरू हो गई है.

इस कहानी के बयान की शुरुआत भी शायद न हो पाती अगर १८५७ में चार्ल्स डार्विन ने यह मत प्रकट न किया होता कि हम वानरों के उत्तराधिकारी हैं और बाइबिल का यह कथन ग़लत है कि मानव को ईसा पूर्व ४००४ सन में बनाया गया था. डार्विन ने यह धमाका स्वयं अपने हाथों नहीं किया था, बल्कि कहना चाहिए कि उस ने बंदूक़ किसी और के कंधों पर रखी थी. डार्विन बड़ा

रस्फोला था और उस में उस तरह की लड़ाई का साहस नहीं था; जो, उस की अंतश्चेतना उसे बता रही थी, कि उस के विकासवाद के सिद्धांत के समकालीन राजनीतिक और धार्मिक रूढ़ियों से टकराव से छिड़ जाएगी.

खुशकिस्मती से डार्विन को एक योग्य चैंपियन मिल गया—कल्पनाशील वैज्ञानिक टामस हेनरी हक्सले. हक्सले ने ही सार्वजनिक रूप से मानव को वानर से संबद्ध किया. उस ने मानव और मानव के निकटतम जीवित संबंधियों, गोरिल्ला और चिंपांजी, के बीच की अनेक समानताओं की ओर संकेत किया. इसी से उस ने तर्क दिया कि तीनों का पूर्वज एक ही था. और चूंकि ये वानर केवल अफ्रीका में ही रह रहे थे, हक्सले ने सुझाव दिया कि उस पूर्वज के जीवाश्म भी वहीं कहीं मिलने चाहिए.

दुर्भाग्यवश, अफ्रीका में कोई जीवाश्म पूर्वज नहीं मिला था. सच तो यह है कि किसी भी तरह के पूर्वज बड़े दुर्लभ थे. केवल एक ही था : एक खोपड़ी का हिस्सा और कुछ अन्य अंगों की हड्डियां, जो डार्विन के क्लासिक ग्रंथ 'आन द ओरीजिन आफ़ स्पीशीज़ बाइ मींस आफ़ नेचुरल सिलेक्शन' के प्रकाशन से कुछ ही समय पूर्व जरमनी की नेआंडर घाटी की एक गुफ़ा से खोद कर निकाली गई थीं. हालांकि इस नमूने ने जिसे बाद में नेआंडरटाल मानव का नाम दिया गया, खोज के समय काफ़ी दिलचस्पी पैदा की, फिर भी इसे वैज्ञानिक सम्मान की प्राप्ति नहीं हो सकी. १९वीं सदी के मस्तिष्कों के लिए, जो मानवीय अस्थिपंजरों की संभव भिन्नताओं के बारे में सोचने के आदी नहीं थे, यह नमूना इतना अधिक अमानवीय था कि इसे प्रामाणिक विकासवादी उदाहरण नहीं माना जा सकता था. नेआंडरटाल मानव को एक ओर डाल दिया गया और नज़रअंदाज़ कर दिया गया.

लेकिन ज़िद्दी क़िस्म के अतीत के अध्यवसायी गुफ़ाओं और नदी तलों की खुदाई करते रहे. उन्हें क्रोमैन्यों मानव मिला; उस का नामकरण दक्षिण फ़्रांस के उस इलाक़े के नाम पर किया गया, जहां सब से पहले उस की हड्डियां खोदी गई थीं. अनेक नमूने मिले, जिन में बहुत से पूर्ण अस्थिपंजर भी थे और आज के अस्थिपंजरों से इतना अधिक मिलते जुलते थे कि बड़े से बड़े शक्की इनसान को भी मानना पड़ा कि वे मानवी थे. अब विवाद इस बात की ओर मुड़ गया कि वे कितने पुराने थे, और १९वीं सदी के अंत तक, पश्चिमी यूरोप में घटित घटनाओं का एक अपरिष्कृत किंतु उपयोगी कैलेंडर तैयार कर लिया गया था. इस से यह पता चला कि क्रोमैन्यों का गुफ़ा मानव वहां ४०,००० से ५०,००० साल पहले था.

नेआंडरटाल मानव भी वास्तविक निकला. अगर विकास के सिद्धांत में कोई वैधता है, तो जैसे जैसे हम समय की गहराई में नीचे उतरते जाएं, मानवीय जीवाश्मों का ज्यादा से ज़्यादा आदिम होते जाना प्रकट होना चाहिए. नेआंडरटाल मानव निश्चित रूप से अधिक गहराई की ओर जाता था—५०,००० या १,००,००० वर्ष गहरे, संभव है २,००,००० वर्ष गहरे.

फिर १८९३ में एक डच वैज्ञानिक यूजीन दूब्वा ने घोषणा की कि उसे जावा में एक 'वानर मानव' मिला है. दूब्वा की खोज में ये चीज़ें शामिल थीं—एक काफ़ी बड़ी दाढ़, आदिम खोपड़ी का ऊपरी भाग (जो इतना चपटा और भारी था कि मानव का नहीं लगता था), और टांग की ऊपरी हड्डी, जो आधुनिक मानव की टांग की हड्डी जैसी थी. उस ने अपनी विजय का तार यूरोप भेजा और दावा किया कि उस ने 'विलुप्त कड़ी' (मिसिंग

लिंक) को खोज निकाला है—एक ऐसा प्राणी, जो नर और वानर के बीच का रहा होगा.

लेकिन दूब्वा को विजयोल्लास के बजाय कटु विवाद का अनुभव मिला. कुछ लोगों का विचार था कि उस ने ग़लती से किसी लुप्त वानर की खोपड़ी को किसी ऐसे मानव की टांग से जोड़ दिया है, जो बाद में कभी मरा होगा और अश्मीभूत हो गया होगा. दूब्वा खोई कड़ी की अपनी परिकल्पना से चिपका रहा और अपने जीवाश्मों को इंगलैंड ले गया, जहां सर आर्थर कीथ ने, जो अपने समय के प्रमुख पेलियोंटालाजिस्ट के रूप में उभर रहे थे, उन का सुविस्तृत पुनरीक्षण किया. जितना ही दूब्वा के जीवाश्मों का कीथ अध्ययन करते, उतना ही उन्हें विश्वास होता जाता कि वे किसी आदिम मानव की अस्थियां थीं, न कि नर और वानर के बीच की कड़ी की.

इस बीच नए साक्ष्य एकत्र होते रहे. जरमनी में हाइडलबर्ग मानव की खोज हुई, जिस का वानर जैसा भारी जबड़ा मिला. उस में मानव के से दांत थे. उस के बाद बीजिंग (पीकिंग) मानव मिला, जो चीन की एक गुफा शृंखला चोकोत्येन में एक दशक लंबे उत्खनन का परिणाम था. बाद में जावा, हाइडलबर्ग तथा बीजिंग की खोजों में मिले मानव को होमो इरेक्टस (खड़ा मानव) की संज्ञा दी गई. होमो (मानव) वे थे, भले ही हम से थोड़ा भिन्न थे. उन के मस्तिष्क अपेक्षाकृत छोटे थे, उन की खोपड़ियां मोटी थीं, उन की भवों के किनारे काफ़ी बड़े और हड्डियां भारी थीं.

इन निष्कर्षों को हम ने कुछेक पैराग्राफ़ों में ही बयान कर दिया है, लेकिन उन तक पहुंचने में लगभग ४० या ५० वर्षों का अध्ययन लगा. मेरा ख़याल है, जावा नर वानर के बारे में जो बात स्वीकार करने में लोगों को सब से ज़्यादा कठिनाई हो रही थी, वह थी उस की प्राचीनता—कम से कम ५,००,००० साल. इस का मतलब यह था कि वह नेआंडरटाल मानव से पांच गुना पुराना था—और लोग तो नेआंडरटाल मानव को ही नहीं पचा पा रहे थे. अब लूसी को लीजिए. लूसी दूब्वा के नर वानर से छः गुना ज़्यादा पुरानी है. मेरे सामने सवाल यह था कि "वह है क्या?" और एक लंबे अरसे तक मुझे ख़ुद भी पता नहीं चला.

विवाद और विवाद

मेरे इस सवाल का जवाब खड़े मानव के बाद होने वाली खोजों में छिपा था, ख़ास तौर पर पचासादि दशक में पेलियोएंथ्रोपालाजी में होने वाले दो महत्वपूर्ण विकासों में. पहले का संबंध आस्ट्रेलोपिथिसीन से था—एक नया नाम, लेकिन अत्यंत महत्वपूर्ण.

आस्ट्रेलोपिथिसीन आदिम मानवी या मानववत प्राणी थे, लेकिन वे मानव नहीं थे. २० लाख साल पहले अफ़्रीका में कुछ ऐसे जीव रहते थे, जो इतने अधिक आदिम थे, उन के दांत इतने अजीब और मस्तिष्क इतने छोटे थे, कि उन्हें मानव नहीं माना जा सकता था. अहम सवाल यह था : वे हमारे पूर्वज थे या भाई बंधु? हर आदमी इसी तर्क वितर्क में लगा था. और भी ख़राब बात यह थी कि उन आदिम प्राणियों की दो तीन क़िस्में थीं. सच बात तो यह है कि शुरू शुरू में आस्ट्रेलोपिथिसीनों का पूरा सवाल ही गुंजलकों से घिरा था."

यह गड़बड़ १९२४ में शुरू हुई. उस साल, डा. रेमंड डार्ट के पास. जो उन दिनों जोहांसबर्ग के विट्वाटर्सरैंड विश्वविद्यालय में

१९८२

पढ़ते थे, एक खोज भेजी गई : भेजने वाला था बचवानालैंड प्रोटेक्टोरेट के एक भाग टौंग की एक चूना पत्थर खदान का मालिक. खदान में मिलने वाले टेढ़े मेढ़े टुकड़ों में एक टुकड़ा कुछ गोल था और डार्ट की नज़र उस पर टिक गई. उसे लगा, यह कोई अंतःकपालीय ढांचा है—यानी खोपड़ी में चूना धीरे धीरे जमता चला गया था और उस ने उसे पूरी तरह भर दिया था तथा लंबे अरसे से विलुप्त मस्तिष्क के रूपाकार की सटीक प्रतिकृति पैदा कर दी थी. वह टूटे हुए पृष्ठ भाग से उस छोटे से सिर में देख रहा था.

उस ने जो कुछ देखा, उस से वह विस्मित रह गया. खोपड़ी किसी छः वर्षीय बच्चे की थी, जिस में पूरी दंत पंक्ति मौजूद थी और छः साल की उम्र में निकलने वाले दांत निकलने शुरू ही हुए थे. यह निश्चित था कि यह कोई किशोर लंगूर या चिंपांज़ी नहीं था. एकाएक, दूब्वा की ही तरह, डार्ट भी इस विचार से घिर गया कि यह भी किसी तरह की कोई लुप्त कड़ी हो सकती है.

उस ने बैठ कर अंगरेजी की लब्धप्रतिष्ठ पत्रिका 'नेचर' के लिए एक लेख लिख डाला : वैज्ञानिक विषयों से संबंधित सभी महत्त्वपूर्ण लेख इसी पत्रिका में छपते हैं. उस का लेख स्वीकृत हो गया और पाठकों के सामने यह संकल्पना पहली बार आई कि दो टांगों पर सीधा चलने वाला एक प्राणी, जिस का दिमाग़ किसी वानर से बड़ा नहीं था, कभी इस धरती पर विचरण करता था. इस के साथ ही पाठकों के सामने एक नाम आया—आस्ट्रेलोपिथिकस. डार्ट ने अपनी खोज को यही संज्ञा दी थी. वैज्ञानिक वर्ग की प्रतिक्रिया पूर्वानुमानित अपेक्षा की रही. सर आर्थर कीथ ने पहले तो डार्ट की खोज को स्वीकार किया, लेकिन बाद में उसे चिंपांज़ी या गोरिल्ला समूह की प्रतिनिधि बता कर बरख़ास्त कर दिया.

तीसरे दशक में डार्ट को पूर्ण समर्थन सिर्फ़ अपने एक साथी से प्राप्त हुआ—यह साथी था राबर्ट ब्रूम, जो दक्षिण अफ़्रीकी स्तनपायी और सरीसृप जीवाश्मों का सुविख्यात वर्गीकर्ता था. कीथ ने क़तई स्वीकृति नहीं दी और टौंग बेबी—डार्ट की खोज इसी नाम से जानी जाती थी—वैज्ञानिक कूड़ाघर में पड़ा रह गया. इस के वहां पड़े रहने का एक कारण यह था कि खोपड़ी एक बच्चे की थी. इस से अनेक शंकालुओं को अर्धविकसित टौंग" बेबी की मानवी समानताओं पर संदेह करते रहने का मौक़ा मिलता रहा.

फिर १९३६ में ब्रूम को स्टर्कफोंटाइन की एक चूना गुफ़ा में जीवाश्मों के वजूद की हवा मिल गई. बारलो नामक एक व्यक्ति चूना भट्टी में फ़ोरमैन था और पर्यटकों को ये जीवाश्म स्मृति चिह्नों के तौर पर बेच रहा था. ब्रूम ने खदान के मलबे का बड़ी सावधानी से निरीक्षण किया और वह लगभग एक पूरे कपाल के टुकड़ों को बटोरने में सफल हो गया. उस ने उन्हें साफ़ किया और जोड़ा और उसे तुरंत अहसास हुआ कि वे टुकड़े आस्ट्रेलोपिथिसीन समूह के थे. टौंग बेबी जैसा एक दूसरा जीवाश्म मिल गया था और यह वयस्क था. इस के बावजूद कीथ ने उन के संदर्भ में मानवी (होमीनिड) शब्द का इस्तेमाल नहीं किया. उन के लिए कीथ का शब्द था : डार्टियंस, यानी डार्ट जीव.

यह गड़बड़ १९५० तक बनी रही : उस वर्ष विल्फ़्रेड ले ग्रास क्लार्क ने एक निश्चयात्मक लेख प्रकाशित किया. इंगलैंड में कीथ के स्थान पर क्लार्क शरीर शास्त्रियों के डीन बन चुके थे. दक्षिण अफ़्रीका का एक दौरा करने

के बाद ले ग्रास क्लार्क ने पहला काम यह किया कि उन्हों ने वानर जबड़े के सभी दांतों का विस्तृत विश्लेषण किया और उस के बाद मानव जबड़े के दांतों का भी वैसा ही विश्लेषण किया. उन्हों ने लगभग एक दर्जन महत्वपूर्ण असमानताओं की सूची तैयार की. ये असमानताएं सभी वानरों और सभी मानवों के संदर्भ में तो सही थीं ही, सुस्पष्ट और प्रकट भी थीं.
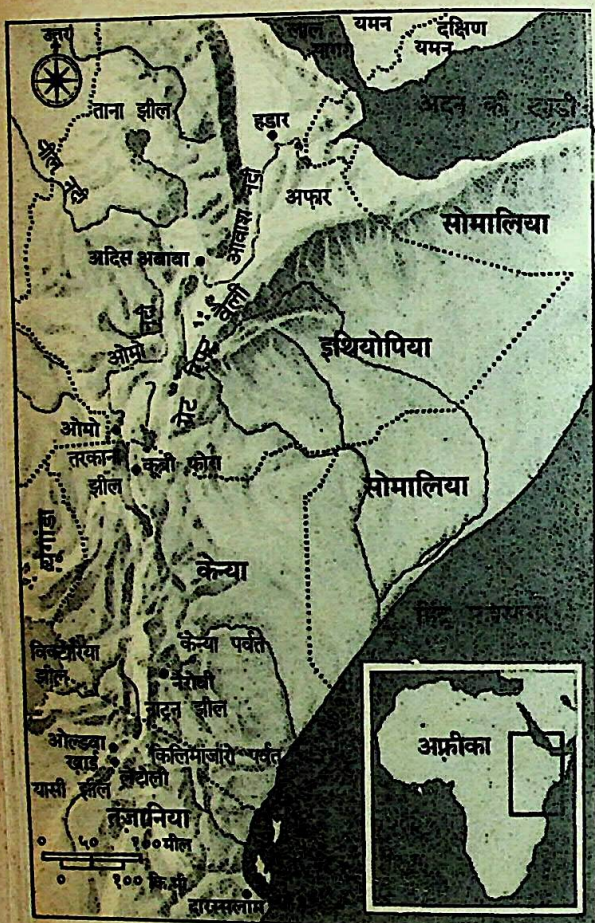
फिर ले ग्रास क्लार्क ने सभी आस्ट्रेलोपिथिसीन जीवाश्मों का मिलान अपनी वानर/मानव अंतरों वाली सूची से किया और उस ने देखा कि क़रीब क़रीब हर दृष्टि से आस्ट्रेलोपिथिसीन मानव आदर्श से मेल खाते थे, वानर आदर्श से नहीं. आस्ट्रेलोपिथिकस मानवी था, और एक संभाव्य पूर्वज भी. बाद में रेमंड डार्ट सही निकला.

आस्ट्रेलोपिथिसीनों को दो क़िस्मों में विभाजित किया गया—एक, 'सुकुमार' क़िस्म, दूसरी स्थूलकाय, आदिम लगने वाली, 'हृष्टपुष्ट' क़िस्म. पहली क़िस्म का पहला मिलने वाला उदाहरण टौंग बेबी था. उस का मूल नाम आस्ट्रेलोपिथिकस आफ़्रिकानस ही रहने दिया गया. स्थूलकाय क़िस्म रूपाकार में सुकुमार क़िस्म से काफ़ी भिन्न होते हुए भी स्पष्ट रूप से थी उसी क़िस्म के प्राणी की. यह भी था दो टांगों पर चलने वाला वानर नर (एप मैन) ही हल: इसे एक ही वंश का मानिए, लेकिन अलग जाति का. इस का नाम रखा गया—आस्ट्रेलोपिथिकस रोबस्टस.

पचासादि दशक की दूसरी बड़ी घटना १९५९ में हुई—और इस का संबंध मानव शास्त्री लुई. लीकी से था. इंगलिश धर्म प्रचारक के बेटे लीकी का जन्म १९०३ में केन्या में हुआ था. उसे पढ़ाई के लिए इंगलैंड भेजा गया. अफ़्रीकी जंगलों में पला वह लड़का वहां के तौर तरीक़ों से बंध कर नहीं चल पाया. इतराना उस के स्वभाव में

था—वह शोरीला और हठी था और उस के सहपाठी उस से नफ़रत करते थे. इस के बावजूद वह कैंब्रिज में प्रवेश पाने में कामयाब रहा और उस ने सर्वोच्च सम्मान के साथ स्नातक की उपाधि प्राप्त की. वह बड़ा योग्य युवक था और उस में ग़ज़ब की एकाग्रता क्षमता तथा विस्फ़ोटक क़िस्म की ऊर्जा थी.

धर्म प्रचारकों के बेटे सामान्यतया ग़रीब होते हैं और लुई सर्वाधिक ग़रीब लोगों में से था. बरसों तक वह किसी तरह गुज़र करता रहा—कभी थोड़े से पैसों के लिए व्याख्यान देता, कभी कोई किताब लिख डालता या कोई लेख. उस की मुसीबत यह थी कि लगभग बचपन में ही अफ़्रीकी पुरा इतिहास के प्रेम ने उसे ग्रस लिया था, और उन दिनों केन्या में मानवशास्त्री के रूप में कोई व्यक्ति ईमानदारी से अपनी गुज़र बसर नहीं कर सकता था. उस ने वही किया, जो वह कर सकता था. कपड़े तैयार करने के लिए वह अपने दर्ज़ी को अफ़्रीकी आबनूस की छड़ियां देता. हस्त लेख के अपने ज्ञान को उस ने जालसाज़ी के दस्तावेज़ों की पहचान के लिए इस्तेमाल किया.

इस सब के दौरान, कई गलत शुरुआतों और असफलताओं के बाद धीरे धीरे वह उस क्षेत्र में उतरता चला गया जो अंततः उसे विश्व ख्याति दिलवाने वाला था. उस ने तंज़ानिया की ओल्डवा गोर्ज (खाई) में एक जीवाश्म स्थल की खोज की, जहां वह और उस की पत्नी मेरी बरसों तक काम करते रहे.

उन को वहां खींच ले जाने वाली चीज़ थी पत्थर के औज़ार, जो इतने आदिम थे कि अप्रशिक्षित आंख के लिए वे आकार युक्त औज़ार हो ही नहीं सकते थे. लीकी दंपती बार बार ओल्डवा लौटते रहे. उन का तर्क यह था कि उन अत्यंत आदिम औज़ारों के निर्माता अत्यंत आदिम मानव थे और कभी न कभी उन्हें किसी के अवशेष ज़रूर मिल जाएंगे.

लगभग ३० साल तक वे नाकामयाब रहे; लेकिन खाई के भू वैज्ञानिक तथा जैविक इतिहास के निरंतर विस्तृत विश्लेषण के कारण, एक वैज्ञानिक के रूप में लुई की प्रतिष्ठा ठोस बनती गई. एक युवा अमरीकी मानव शास्त्री, क्लार्क हावेल, जो बाद में मेरे अध्यापकों में से एक बनने वाला था, उस से मिलने गया. वे दोस्त बन गए और लीकी ने ओल्डवा के दक्षिण में खुदाई शुरू करने में हावेल की सहायता की.

१९५९ में हावेल ने, एक बार फिर लीकी की मदद से, दक्षिणी इथियोपिया का सर्वेक्षण किया. जब वह नैरोबी वापस पहुंचा, तो लुई ने उसे डिनर पर बुलाया. खाने के बाद लुई ने कहा कि उस ने हावेल के लिए एक विशिष्ट डिज़र्ट (मिष्टान्न) रखा हुआ है.

"बड़ी हलकी सी मुसकराहट के साथ," क्लार्क ने मुझे बाद में बताया, "उस ने बिस्किटों वाला एक बड़ा टिन मेज़ पर रखा और मुझे ढक्कन हटाते देखता रहा. टिन में एक शानदार जीवाश्म खोपड़ी थी."

क्लार्क हक्का बक्का रह गया. उसे छोटे आफ़्रीकानस तथा बड़े रोबस्टस की विशेषताएं अच्छी तरह मालूम थीं. बिस्किटों के टिन से उस की ओर घूरती हुई खोपड़ी स्थूलकाय नर वानर की थी और उस क द्वारा देखे गए सभी नमूनों से बेहतर भी. वास्तव में वह अति स्थूल थी; उस की दाढ़ें बड़ी बड़ी थीं.

"तो," लुई ने कहा, "आख़िर हमें यह मिल ही गई."

(वास्तव में उस खोपड़ी की खोज मेरी लीकी ने की थी. १९५९ के अपने क्षेत्रीय सत्र के अंत में, उस ने अकेले जाने का फ़ैसला

किया था. क्योंकि लुई फ़्लू के गंभीर हमले के कारण अपने तंबू में लेटा पड़ा था.)

लीकी ने फ़ैसला किया कि उस खोपड़ी के दांत स्थूलकाय क़िस्म के दांतों से इतने ज़्यादा बड़े थे कि उसे एक अलग नाम देने की ज़रूरत थी: जिंजानथ्रोपस बोइसेई. यह नाम ज़्यादा देर तक चल नहीं पाया. अन्य लोगों ने स्थूलकाय क़िस्म से इस की समानता को देखते हुए इस बात पर ज़ोर दिया कि इस का पुनः नामकरण किया जाए: आस्ट्रेलोपिथिकस बोइसेई; और अंततः यही नाम इसे दिया गया. फिर भी. ज़िंज ने लीकी को रातोरात विख्यात बना दिया.

अभी बहुत कुछ बाक़ी था. एक साल के अंदर अंदर हावेल ने सुना कि इतालवी वैज्ञानिकों ने रोम के इर्दगिर्द के लावा प्रवाह तथा ज्वालामुखी राख की जमी परतों के कालांकन की एक क्रांतिकारी पद्धति विकसित कर ली है. इस पद्धति का आधार था पोटेशियम तत्व के एक अन्य तत्व आरगॉन में परिवर्तन के दौरान रेडियो सक्रिय आइसोटोप के विनाश की मात्रा का माप. इस पद्धति ने तब से भू विज्ञान तथा मानव जीवाश्म विज्ञान में भी क्रांति ला दी है; मानव के मूल स्रोतों की पहचान के लंबे संघर्ष के सर्वाधिक उत्पादक दशक का यह सर्वाधिक विस्मयकारी चरम बिंदु था.

ओल्डवा के तल में लावे की जमी परतों पर एक के बाद एक परीक्षण किए गए. थोड़े से हेरफेर के साथ सब का परिणाम एक सा ही मिलता रहा.

ज़िंज लगभग १८ लाख साल पुराना था—दुनिया का पहला ऐसा मानवी जीवाश्म, जिस की उम्र निश्चित रूप से आंकी जा सकी थी.

मैं उन दिनों अभी हाई स्कूल में ही था, जब मैं ने ज़िंज के बारे में 'नेशनल ज्योग्राफ़िक' पत्रिका में पढ़ा. ओल्डवा का नाम अपनी खोखली अद्भुत ध्वनि के साथ मेरे दिमाग़ में किसी घंटे की तरह गूंज गया. मैं मानव शास्त्र के बारे में ज़्यादा से ज़्यादा सोचने लगा. लीकी का अनुभव इस बात का सबूत था कि आदमी जीवाश्मों की खुदाई से भी अपना कार्यकारी जीवन चला सकता है.

मैं कालिज में पहुंच गया और लीकी ने तुरंत एक झटका मुझे और दे डाला. १९६१ में एक रिपोर्ट आई कि उस ने ओल्डवा में एक और मानवी जीवाश्म अस्थिपंजर की खोज कर डाली है—एक और आस्ट्रेलोपिथिसीन की नहीं, वास्तविक मानव की. इस नए होमो के बारे में हुई घोषणा में झटका देने वाली बात उस की उम्र थी: लगभग १७.५ लाख वर्ष, यानी ज़िंज की उम्र के बराबर. एक ही झटके से लीकी और उस के सहयोगियों ने मानव की ज्ञात उम्र को तीन गुना बढ़ा दिया था.

नई खोज़ को होमो हैबीलिस (हस्त मानव) नाम दिया गया, क्योंकि गोर्ज में उस ने पत्थर के औज़ार बनाए थे. हैबीलिस के बारे में कम से कम यह बात अत्यंत संतोषप्रद थी: ज़िंज के औज़ार निर्माता होने का विचार कभी जम नहीं सका था.

लेकिन उस के बाद हैबीलिस के सामने दिक्क़तें ही दिक्क़तें आने लगीं. एक मुख्य कारण था साक्ष्य की असंबद्ध स्थिति, क्योंकि जो चार नमूने मिले थे, वे अच्छी तरह परिरक्षित नहीं थे. लीकी इस बात पर बल देता रहा कि हैबीलिस मानव ही था—सब से पुराना मानव. दूसरों का दावा था कि वह सुकुमार आस्ट्रेलोपिथिसीन था. एक बात जिस पर सब सहमत थे, यह थी कि अभी और साक्ष्यों की और प्राचीनतर जीवाश्मों की ज़रूरत थी.

लेकिन ओल्डवा में और गहरे जाना संभव नहीं था. फावड़ा वहां २० लाख साल से कुछ कम अरसा पहले चट्टान पर अटक चुका था.

सामान्यतया इस बात पर सब लोग सहमत हैं कि प्लीस्टोसीन (अत्यंत नूतन) युग की शुरुआत २० लाख वर्ष पहले हुई थी. यह तिथि एक तरह का प्रवेश द्वार बन गई, जिस के पार मानव शास्त्री उत्तरोत्तर बढ़ती तीव्रता से झांकने लगे. उस द्वार के पार प्लियोसीन (नूतन) युग था—३० लाख साल लंबा युग. उस की गहराई में कहीं प्राचीनतर मानव अस्थिपंजर थे, जो आस्ट्रेलोपिथिसीनों की शुरुआत और उन के पारस्परिक संबंधों पर प्रकाश डाल सकते थे. मुमकिन था उस से होमो हैबीलिस पर बेहतर रोशनी पड़ सकती और इस बात का संकेत भी मिल सकता कि वास्तव में वह था क्या. शायद उन प्राचीनतर नर वानरों में कोई ऐसा भी हो, जो ३० लाख साल पहले दो टांगों पर सीधा खड़ा हो कर चलता हो—या उस से भी पहले.

जब लीकी ने १९५९ में तरकाना झील (पृष्ठ १३२ पर नक़्शा देखें) के पश्चिम और उत्तर के सर्वेक्षण में क्लार्क हावेल की मदद करने का प्रस्ताव रखा, तो उस के पीछे यह ज्ञान था कि झील के दोनों ओर प्लियो-प्लीस्टोसीन परतें जमी हैं, जो केन्या की सीमा के पार इथियोपिया तक फैली हैं—ख़ास तौर पर ओमो नदी के साथ साथ.

लेकिन कुछ राजनीतिक कारणों से ओमो अभियान का पहला क्षेत्र सत्र १९६७ से पहले शुरू नहीं हो सका. तब तक लीकी को पीठ में बड़ी तकलीफ़ होने लगी थी और उस के कूल्हे का जोड़ इतनी संजीदा हालत में था कि वह चल नहीं पाता था. ख़ुद ओमो जा पाने में असमर्थ होने के कारण उस ने अपने सब से छोटे बेटे रिचर्ड को भेज दिया, जो तब २३ वर्ष का था.

मैं शिकागो विश्वविद्यालय में हावेल के स्नातक कार्यक्रम में शामिल हुआ, तो ओमो का नाम हरएक के होंठों पर था. साक्ष्यों का एक सैलाब—नक़्शे, आंकड़े, और जीवाश्म—निरंतर प्रयोगशाला में पहुंच रहा था. इन सब की व्याख्या कैसे होनी चाहिए, उस के लिए तरह तरह की प्राक्कल्पनाएं उछाली जा रही थीं.

मैं ने तय किया था कि मेरा शोध प्रबंध चिंपांज़ी के दांतों की संपूर्ण समीक्षा पर होगा. चिंपांज़ी के जबड़े का विकास कैसे हुआ, वह कैसे चबाता था और क्यों चबाता था—इस के बारे में मैं सब कुछ बता सकूंगा. इस प्रक्रिया में मैं चिंपांज़ी के दांतों से इतनी अच्छी तरह परिचित हो गया कि जब मैं ने उन की तुलना अन्य वानरों—गोरिल्ला और ओरांग—के दांतों, और उस के बाद मानव के दांतों और आस्ट्रेलोपिथिसीनों के जबड़ों से करना शुरू किया, तो मुझे अंतश्चेतना के आधार पर ही यह अहसास होने लगा कि कौन सी चीज़ वानर बनाती है, कौन सी आस्ट्रेलोपिथिसीन और कौन सी चीज़ मानव.

जब मैं ने कुछ ओमो दांतों पर नज़र डाली, जिन्हें क्लार्क हावेल कामचलाऊ स्तर पर होमो का बता रहा था, तो मुझे लगा कि मुझे अभी बहुत कुछ जानना पड़ेगा. मैं ने अपने भाग्य की आज़माइश करने की सोची और क्लार्क से कहा कि वह चिंपांज़ी खोपड़ियों के दो यूरोपीय संग्रहों के अध्ययन तथा उस के बाद आगे के अध्ययन के लिए नैरोबी और ओमो तक के दौरे के लिए मुझे छोटा सा अनुदान दिलवाने में मेरी मदद करे. अंत में, मैं ने तीन गरमियों तक ओमो में काम किया.

ओमो से मैं नैरोबी गया. मेरी लीकी से मेरा परिचय करवाया गया और रिचर्ड से पुराने परिचय को मैं ने पुनर्जीवित किया. रिचर्ड तब तक काफ़ी ख्याति प्राप्त कर चुका था; दुनिया भर के अख़बार उस को जानते थे. वह हाल हीं में कूबी फ़ोरा में तरकाना झील के तट के पास के एक स्थल से लौटा था और अपने साथ कुछ सनसनीख़ेज नए स्थूलकाय जीवाश्म लाया था.' उन्हें देखने का मुझे एक अवसर मिला—यह एक और आनंदानुभूति थी, क्योंकि उन पर अभी लेख प्रकाशित नहीं हुए थे.

अपने दूसरे ओमो क्षेत्र सत्र के अंत तक मैं प्लियोप्लिस्टोसीन स्तनपायियों से पूरी तरह परिचित हो चुका था. मैं एक दक्ष सर्वेक्षक बन चुका था और मैं ने ख़ुद भी दो एक मानवी जीवाश्मों की खोज कर डाली थी.

ओमो अभियान बहु राष्ट्रीय था और फ़्रांसीसी वैज्ञानिक स्टाफ़ के कई लोगों से मेरी दोस्ती हो गई. अफ़्रीका से लौटते हुए पेरिस पहुंचा, तो मैं उन में से कुछ लोगों से मिलने चला गया. एक शाम, एक पार्टी में मेरा परिचय एक युवा भू वैज्ञानिक, मारिस ताईब, से कराया गया, जिसे इस बात से बड़ी दिलचस्पी हुई कि मैं अभी अभी दक्षिणी इथियोपिया से हो कर आया हूं.

"मैं ख़ुद इथियोपिया जा रहा हूं," ताईब ने कहा. "अदीस अबाबा के उत्तर पूर्व में स्थित अफ़ार त्रिकोण में. मै आवाश नदी की घाटी के भू वैज्ञानिक विकास का अध्ययन कर रहा हूं. वहां विलक्षण जीवाश्म हैं. मुझे पता नहीं वे हैं क्या. तुम्हें वहां मेरे साथ चलना चाहिए."

मैं ख़ुद गुंजलकों में घिरा था. मैं ने अपना शोध प्रबंध पूरा नहीं किया था, शिक्षक की नौकरी मेरे सामने नहीं थी और जेब भी ख़ाली थी. लेकिन वे जीवाश्म . . .

"ठीक है," मैं ने कहा. "मैं चलूंगा." हम ने एक खोज अभियान बना डाला.

दुर्लभ खोज

हम ने १९७३ में अपना पहला शिविर हडार में आवाश नदी के एक निचले कगार पर स्थापित किया. ताईब ने अपने आप को तुरंत हडार के भू विज्ञान को व्याख्यायित करने के जटिल कार्य में संलग्न कर दिया. भूक्षरण से गलियों के किनारों पर परतें स्पष्ट हो जाती हैं. ताईब का काम था, पूरे क्षेत्र को ऊपर से नीचे तक एक क्रमबद्ध भू वैज्ञानिक विन्यास में आबद्ध करना—यानी एक तथाकथित स्तरित शैल वैज्ञानिक स्तंभ का रूप देना.

पेलियोंटोलाजिस्ट भी काम में जुट गए. जब कभी उन्हें कोई जीवाश्म मिलता, वे एक 'स्थान' या लोकैलिटी स्थापित करते, उसे एक संख्या देते और उस संख्या को पत्थर (चट्टान) पर लिख देते. अंततः जीवाश्म संबंधी सारी जानकारी एक अकेले मास्टर नक़्शे पर समन्वित कर दी जाती.

आधा सत्र निकल जाने तक एक भी मानवी या होमीनिड नहीं मिल सका था. नेशनल साइंस फ़ाउंडेशन से अनुदान के लिए निवेदन करते समय मैं ने यह वादा नहीं किया था कि मानवी मिल ही जाएंगे, लेकिन अपना अनुदान प्रस्ताव लिखते समय मुझे यह भी मालूम था कि अगर मैं ने मानवीओं के प्राप्त होने की संभावना पर बल नहीं दिया, तो मुझे पैसा मिलेगा नहीं.

इन्हीं विचारों से घिरा एक दिन अपराह्न के बाद मैं सर्वेक्षण में जुटा था कि मैं ने यों ही अपने पांव से एक ऐसी चीज़ को ठोकर दे मारी, जो रेत में धंसी किसी हिप्पो की पसली

जैसी लगती थी. ढीली हो कर वह बाहर आ गई—लेकिन वह हिप्पो की पसली नहीं थी, एक प्राक्सीमल तिबिया थी—किसी लघु नर वानर की अंतर्जंघिका का ऊपरी भाग.

मुझे लगा कि वानर होगा और मैं ने उसे दर्ज करने का फ़ैसला किया. मैं ने अपनी नोटबुक में उस स्थान का अकन किया और उस की स्थल संख्या भी दे दी. फ़िर कुछ मीटर दूर मुझे एक और हड्डी नज़र आई—एक डिस्टल फ़ीमर यानी जांघ की हड्डी का निचला सिरा—और वह भी लघु आकार की थी. वह बीच से फटी हुई थी, जिस के फलस्वरूप उस का एक ही कोंडाइल (वह फूला हुआ भांग जो जांघ की हड्डी में जम कर घुटने के जोड़ का निर्माण करता है) जुड़ा था. इस के पास ही रेत में दूसरा कोंडाइल पड़ा था. मैं ने उन दोनों को साथ साथ रखा और फिर उन्हें जांघ की हड्डी में जोड़ने की कोशिश की. तीनों स्पष्टतः एक दूसरे में फ़िट बैठ रहे थे. यह एक दुर्लभ खोज थी.

मैं ने उस का अध्ययन किया, तो मुझे अहसास हुआ कि मैं ने फ़ीमर और तिबिया को एक कोण पर जोड़ दिया है. मैं ने ऐसा जान बूझ कर नहीं किया था. स्वाभाविक रूप से ही वे उस तरह रखे गए थे; उन के जुड़ने का और कोई तरीक़ा हो ही नहीं सकता था. फिर मुझे याद आया कि किसी वानर के तिबिया और फ़ीमर सरल रेखा में जुड़ते हैं. अपनी इच्छा के क़रीब क़रीब ख़िलाफ़ मैं अपने मन में एक मानव के अस्थिपंजर की तस्वीर बनाने लगा और घुटनों से जांघ तक के उस आगे की ओर बढ़े तिरछेपन को याद करने लगा, जो सीधे खड़े हो कर चलने वालों की विशेषता होती है.

मैं ने हड्डियों को सरल रेखा (वानर) में लाने के लिए उन्हें दोबारा जोड़ने की कोशिश की. उस रूप में वे नहीं जुड़ सकीं. मैं समझ गया, यह जीवाश्म किसी होमिनिड या मानवी का है.

टाम ग्रे मेरे पास आया. मैं ने उसे तिबिया दिखाई : "तुम्हारा क्या ख़याल है?"

"वानर?" ग्रे बोला. "किसी जाति का कोई लघु प्राइमेट (वानर)? ख़ाली तिबिया से ज्यादा कुछ नहीं कहा जा सकता."

"और अगर मैं इन्हें भी जोड़ दूं तो?" मैं ने फ़ीमर के दोनों टुकड़ों को दिखाते हुए पूछा. मैं ने उन्हें रेत पर रख दिया, इस तरह कि फ़ीमर और तिबिया के बीच का कोण स्पष्ट नज़र आए.

ग्रे ने पहले जीवाश्मों को और फिर मुझे घूर कर देखा. "इन में से एक?" आख़िर वह बोला.

मैं ने सिर हिलाया. और उस क्षण मैं उस बोझ से पूरी तरह मुक्त हो गया, जो महीने भर से मुझ पर पड़ा था. अचानक मेरा सिर हलका हो गया, चैन से तैरने सा लगा—साथ ही अपने भाग्य का वजह से मैं बुद्धुओं सा महसूस करने लगा. मानव विज्ञान के इतिहास में इस से पहले किसी ३० लाख साल पुराने होमीनिड के घुटने का जोड़ किसी ने नहीं देखा था. अगर यह सचमुच वही था, तो यह दुनिया में अद्वितीय था. क्या उस दुर्लभ वस्तु का शोधकर्ता सचमुच मैं ही था?

अगले दिन तक मुझे शक होना शुरू हो गया. रात भर मुझे इस खोज के मानों के बारे में सोचने का मौक़ा मिला था और मुझे यह अहसास हो गया था कि मानव जैसे घुटने के जोड़ का मतलब होना चाहिए मानव जैसी चाल. यह कहीं भी मिलने वाला इस बात का पहला सबूत होगा कि

३० लाख साल पहले भी कोई चीज़ सीधी रह कर दो पैरों पर चलती थी.

"हमें किसी ऐसी चीज़ की ज़रूरत होगी. जिस से इस की तुलना की जा सके," एक दिन बाद मैं ने ग्रे से कहा. "मुझे अपने शरीर विज्ञान पर इतना विश्वास नहीं है कि मैं निरापद रूप से तय कर सकूं. हमें एक मानवीय घुटने के जोड़ की ज़रूरत है."

"शिविर के स्टाफ़ में सब से बड़ा लोफ़र कौन है?" ग्रे बोला. "शायद उसी का इस्तेमाल हो सके."

"मज़ाक मत करो," मैं ने कहा. "जानना मेरे लिए ज़रूरी है."

उस अपराह्न में, बाद में, मेरे दिमाग़ में एक बात आई. मैं ने ग्रे से कहा कि वह मेरे साथ शिविर से पास की एक पहाड़ी के माथे तक चले. "वहां अफ़ार का एक मुर्दों का टीला है."

"एक मिनट रुको," ग्रे बोला. "इन लोगों से हमारे ताल्लुक़ात अच्छे रहे हैं. तुम अब उन की एक क़ब्र लूटने जा रहे हो?"

"सिर्फ़ देखना चाहता हूं."

"मैं नहीं चाहता. उन बुज़ुर्गों की याद है, जो हम से मिलने आए थे?"

मुझे याद था: शिविर लगने के एक हफ़्ते बाद कुछ बुज़ुर्ग क़बायली वहां आए थे. वे ज़मीन पर बैठ गए थे, जब कि क़बीले के कुछ युवा सदस्य, बंदूकें लिए, उन के पीछे खड़े हो गए थे और उन्हों ने एक दुभाषिए की मदद से हमें बताया था कि हमें वहां से चले जाना चाहिए; अजनबी लोग सिर्फ़ मुसीबतें ही ले कर आते हैं.

पता चला, अफ़ार लोगों ने देखा ही सिर्फ़ ऐसे लोगों को था जो सरकार के भेजे हुए सर्वेक्षक होते थे और बीच बीच में आते रहते थे; जो ज़मीन हथियाना चाहते थे, बांध बनाना चाहते थे या फिर उन के ग्रामीण जीवन में ख़लल डालते थे. अफ़ार लोग मुसलमान थे और उन्हें दूर, अदीस अबाबा में सरकार चलाने वाले ईसाई अम्हारा लोगों से कोई लगाव नहीं था.

ताईब ने और मैं ने बड़े धीरज से, लगभग पूरा दिन अफ़ार बुज़ुर्गों से बातचीत की थी और उन्हें समझाने की कोशिश की थी कि हम तो सिर्फ़ पुरानी हड्डियां और पत्थर एकत्र करने आए हैं. यह सही है कि बुज़ुर्गों को हमारी किसी बात पर यक़ीन नहीं आया था, लेकिन कुछ छोटे छोटे तोहफ़ों के आदान प्रदान के बाद हमें रुकने की इजाज़त मिल गई थी.

"वे हमें गोली मार देंगे," ग्रे बोला. "हमें भगा देंगे."

"पर मानव फ़ीमर तो मुझे हर हालत में चाहिए ही.".

दफ़न-टीला पत्थरों को यों ही लगा कर बनाया गया एक गुंबद था. मैं ने अंदर झांका. सब से ऊपर, उठाने को जैसे आमंत्रित करती सी, एक फ़ीमर पड़ी थी. हम ने चारों तरफ़ नज़र दौड़ाई. कहीं कोई नहीं था. टाम ने हड्डी को कमीज़ में डाला और उसे शिविर में ले गया. उस रात मैं ने जीवाश्म से उस की तुलना की. साइज़ को छोड़ कर, बाक़ी सब चीज़ों में समानता थी.

मैं ने अमरीका का टिकट कटाया और सीधे केंट, ओहायो, पहुंचा, जहां मेरा दोस्त ओवेन लवजाय, जो चलन प्रणाली का विश्व विख्यात विशेषज्ञ है, केंट स्टेट यूनिवर्सिटी में विज्ञान पढ़ाता है. हम लोग बातें कर रहे थे और मैं ने यों ही उस बक्से को खोल डाला जिस में घुटने के जोड़ के तीन टुकड़े रखे थे. "इन पर ज़रा एक नज़र डालो, ओवेन."

"ये वयस्क है," उस ने बड़े ग़ौर से

का निरीक्षण करने के बाद कहा. "लेकिन कितने छोटे हैं !"

"सही कहते हो."

"तुम ने क्या बताया था—कितने पुराने हैं?" उस ने पूछा.

"तीस लाख साल."

"यह नहीं हो सकता. यह आधुनिक घुटने के जोड़ जैसा है. यह छोटा बौना पूरी तरह देखा था."

"जानवरों के जीवाश्म तो ३० लाख ही बताते हैं. पोटैशियम तिथि मुझे कुछ सप्ताह बाद प्राप्त होगी."

लवजाय ने अपने सिर को पीछे की ओर झुकाया और ठहाका लगा कर हंसने लगा.

"क्या ग़लती हुई ?"

"ग़लती क्या हुई ? सारी बात ही ग़लत है. वह अपनी पिछली टांगों पर दौड़ सकता होगा. वह सचमुच दौड़ सकता होगा. लेकिन मैं शर्त लगा सकता हूं कि उस का दिमाग़ मटर के दाने से बड़ा नहीं रहा होगा."

"तो ?"

"तो, तुम्हारे दोस्तों के पास वंशवृक्ष में इस तरह की चीज़ के लिए कोई जगह है ? एक मीटर क़द के वानर के लिए, जो अपनी पिछली टांगों पर दौड़ता फिरता हो ? इसे किस श्रेणी में रखने जा रहे हैं वे ?"

"मुझे मालूम नहीं है."

"वे तुम्हारी बात पर यक़ीन नहीं करेंगे. बेहतर हो, तुम लौट कर जाओ और किसी पूरे जीवाश्म को ढूंढ़ो."

अगले साल हमें लूसी मिल गई.

१९७४ में आवाश शिविर में लौटने पर हमारे सामने अपने मानवी जीवाश्मों की सफ़ाई, उन के भू वैज्ञानिक इतिहास के मुताबिक उन के वर्गीकरण और अंत में उन के वर्णन का भारी काम था. शारीरिक वर्णन में बहुत वक़्त लगता है, इस में कैलिपर्स की मदद से अंतहीन पैमाइश और फिर उन सभी आंकड़ों को नोट बुकों में लिखने की ज़रूरत होती है. हडार के मानवी क्या थे, इस के संबंध में कोई निश्चित वैज्ञानिक परिकल्पना तैयार करने से पहले मुझे यह सारा काम पूरा करना था. इस निर्णय में सब से महत्त्वपूर्ण बात थी होमिनिडों की आयु. इस के लिए अकाट्य तिथियों की आवश्यकता थी.

कितनी पुरानी ?

ताईब एक लावा प्रवाह—असिताश्म बैसाल्ट परत—खोजने में सफल हो गया था, और उसी क्षेत्र में कुछ ऊपर उस ने ज्वालामुखी राख की कुछ अन्य पतली परतें भी देखी थीं. चूंकि लावा और राख, दोनों, तिथियों के संभाव्य स्रोत हैं, इस लिए पिछले साल दोनों के नमूने एकत्र कर लिए गए थे और क्लीवलैंड, ओहायो, की पोटैशियम आरगोन परीक्षणशाला में भेज दिए गए थे, जहां केस वेस्टर्न रिज़र्व यूनिवर्सिटी के एक विशेषज्ञ जेम्स ओरोन्सन ने उन का विश्लेषण किया था. असिताश्म की उम्र उस ने ३० लाख साल आंकी थी—दो लाख साल की इधर या उधर संभावना के साथ.

लावा के नमूनों से तिथियां प्राप्त करना एक जटिल प्रक्रिया है. पत्थरों और ज्वालामुखियों से संबंधित अन्य उत्पादों में रेडियो सक्रिय पोटैशियम-४० की छोटी छोटी मात्राएं रहती है, जो नियमित गति से नष्ट होती रहती है. पोटैशियम नष्ट होता है, तो वह आरगोन को मुक्त करता रहता है, जो एक अक्रिय गैस है. "मैं आरगोन को पकाता हूं और उसे मापता

हूं," आरोन्सन ने कहा. "चूंकि मुझे मालूम होता है कि शुरू में मैं कितना पोटैशियम ले कर चला था और मुझे नाश की गति भी मालूम होती है, मैं सीधे गणित से नमूने की उम्र का हिसाब लगा लेता हूं."

फिर भी, वह ख़ुश नहीं था. उस ने असिताश्म के सभी नमूनों का ख़ुर्दबीन के नीचे परीक्षण किया था और उन में से सब से अच्छे नमूनों में भी उसे उस के ख़याल से, बड़े सूक्ष्म परिवर्तन नज़र आए थे, जिस का मतलब यह था कि उन में से थोड़ी बहुत आरगोन निकल गई थी. अगर यह सच था, तो असिताश्म ३० लाख साल से भी अधिक पुराना था—कितना पुराना, यह वह नहीं बता सका. उस ने सुझाव दिया कि हम पेलियोमैग्नेटिज़्म का सहारा लें.

पृथ्वी एक चुंबक है. सभी चुंबकों की तरह इस के भी घन और ऋण ध्रुव हैं. चुंबक का घन छोर, इस समय, उत्तरी ध्रुव है, अपनी 'सामान्य' स्थिति में; और ऋण छोर दक्षिणी ध्रुव पर है. लेकिन कुछ कारणों से, जिन का संबंध शायद पृथ्वी की ऊपरी परत के बहुत नीचे, पिघले हुए चुंबकीय पदार्थों के ज्वार भाटे से है, ये ध्रुव बीच बीच में अपनी दिशा बदलते रहते हैं, और 'असामान्यता' अथवा विपरीत ध्रुवता के ऐसे अनेक काल आते रहे हैं, जिन में उत्तरी ध्रुव ऋणात्मक बन जाता है और दक्षिणी ध्रुव धनात्मक.

एक भू वैज्ञानिक, टाम शिमट, ने उम्र की निरंतर वृद्धि के हिसाब से पत्थरों के ४०० नमूनों की एक शृंखला संगृहीत की थी. जब उन का चुंबकीय विश्लेषण किया गया, तो यह तथ्य स्थापित हुआ कि विपरीत ध्रुवीकरण के काल में ही असिताश्म उन में जमा था. लेकिन किस काल में? क्या ऐसा तथाकथित 'विशाल विपर्यय' (मैमथ रिवर्सल) काल में हुआ था, जिस के बारे में अब हम जानते हैं कि वह ३१ और ३०. लाख साल पहले के बीच घटित हुआ था? या ऐसा उस से भी कुछ देर पहले के 'गिल्बर्ट रिवर्सल' काल में हुआ था, जो ३६ और ३४ लाख साल पहले घटित हुआ था? बीच के काल में कुछ भी संभव नहीं रहा होगा, क्योंकि उस पूरे काल में ३,००,००० साल का समय सामान्य रहा था.

असिताश्म की तिथि को और अधिक निश्चित करने के लिए आरोन्सन ने एक युवा ज्वालामुखी विशेषज्ञ, बाब वाल्टर को बुलवा भेजा. बाब ने अनेक ज्वालामुखी नमूने एकत्र किए और फ़िशन ट्रैक डेटिंग की तकनीक से विश्लेषित करने के ख़याल से वापस क्लीवलैंड ले गया: यह तकनीक छोटे ज़िरकान नामक रवों में यूरेनियम की उपस्थिति पर निर्भर करती है.

यूरेनियम-२३८ एक रेडियो सक्रिय आइसोटोप है, जिस के अणु धीमी किंतु नियमित गति से सीसे में तबदील होते जाते हैं, उसी तरह जैसे पोटैशियम-४० आरगोन में तबदील होता जाता है. अंतर इतना है कि पोटैशियम आरगोन परिवर्तन बड़े शांत तरीक़े से होता है, जब कि यूरेनियम सीसा परिवर्तन में थोड़ी सी ऊर्जा भी पैदा होती रहती है. यह ऊर्जा अणु के दोनों सिरों से एक साथ निकलती है और इस में इतनी ताक़त होती है कि वह ज़िरकान के कुछ अणुओं को अलग कर देती है. इस का प्रभाव वैसा ही होता है, जैसे कोई व्यक्ति गेहूं के खेत से गुज़र रहा हो; ऊर्जा की उस हलकी सी गति से हुई क्षति की मद्धिम सी रेखा पीछे छूट जाती है. ज़िरकान में बनी इस रेखा को फ़िशन ट्रैक कहा जाता है और जब इसे बड़ा करने के लिए किसी [illegible] को बड़े नाज़ुक तरीक़े से रेखा

पर रखा जाता है, तो इसे दूरवीक्षण यंत्र की मदद से देखा भी जा सकता है. ज़िरकान में जितने अधिक फ़िशन ट्रैक होंगे, उतना ही ज़्यादा पुराना वह माना जाएगा.

फ़िशन ट्रैक तिथ्यांकन आम तौर पर उतना सटीक नहीं होता, जितना पोटैशियम आरगोन तिथ्यांकन, लेकिन ऐसे नमूनों से, जो मौसमों के प्रभाव अथवा प्रदूषण के कारण पोटैशियम आरगोन पद्धति के लायक़ नहीं रह जाते, तिथियां प्राप्त करने में यह पद्धति सहायक सिद्ध होती है. आरोन्सन के नज़रिये से ज्यादा महत्वपूर्ण बात यह थी कि यह पद्धति एक पूर्णतया अलग तकनीक पर निर्भर करती है. यदि दोनों तकनीकों से समान तिथियां प्राप्त हों, तो उन की विश्वसनीयता में व्यक्ति का विश्वास बढ़ जाता है. दरअसल यही हुआ भी.

आरोन्सन और वाल्टर का काम पूरा हो गया तो हडर स्ट्रेटीग्राफ़िक स्तंभ में ऊपर की ज्वालामुखी राख की परत की आयु २६ लाख साल आंकी गई[१]—एक निश्चित तिथि, जो दो अलग अलग तरीक़ों से तय की गई थी. स्तंभ की गहराई में असिताश्म की परत थी, जो ३० लाख साल पुरानी थी. उन दोनों के बीच स्थित थी लूसी, एक ऐसे स्तर पर, जिस से उस की उम्र ३० लाख साल होने का अंदाज़ा मिलता था.

"यह है क्या ?"

१९७५ और १९७६ में दो हडार अभियान और हुए. १९७५ में, जो हमारा तीसरा सत्र था, दल ने एक अन्य अविश्वसनीय खोज की. एक पहाड़ी के एक ओर—बाद में उसे स्थल ३३३ का नाम दिया गया—हमें मानवी जीवाश्मों की एक सोने की खान ही मिल गई, और बाक़ी का सत्र, तथा अगले वर्ष का अधिकांश भी, उसी पर काम करने में खपा दिया गया. अंततः पहाड़ी से क़रीब २०० दांत या अन्य हड्डियां प्राप्त हुईं. विशिष्ट अंगों की पुनरावृत्ति से यह बात स्पष्ट हो गई कि उन में कम से कम १३ व्यक्तियों के अंग थे : पुरुष, स्त्रियां, और कम से कम चार बच्चे.

आख़िरकार, फ़रवरी १९७७ में, मैं क्लीवलैंड म्यूज़ियम आफ़ नैचुरल हिस्टरी में वापस पहुंच गया, जहां मैं संग्रहपाल था. मेरे साथ था, पहली बार एक ही स्थान पर एकत्रित हडार का संपूर्ण संग्रह : घुटने का जोड़ और स्थल ३३३ के तमाम जीवाश्म, जिन्हें अब प्रथम परिवार (फ़र्स्ट फ़ैमिली) के रूप में जाना जाता है. उन हड्डियों का एक ही स्थान पर मिलना क़रीब क़रीब एक चमत्कार ही था : अच्छे मौक़े, सौभाग्य और अध्यवसाय का मिला जुला परिणाम.

इस संग्रह में ३५० से भी अधिक पृथक जीवाश्म खंड थे, जिन में पुरुषों, स्त्रियों और बच्चों की हड्डियां भी थीं; व्यक्तियों के बीच काफ़ी अंतर भी था, जिस से यह आश्वासन मिलता था कि उन का मूल्यांकन एक पूरी आबादी के रूप में किया जा सकेगा. इस मूल्यांकन से इस दिशा में आगे बढ़ना संभव हो सकेगा कि यह पता लगाया जाए कि वे थे क्या : आस्ट्रेलोपिथिकस, होमो—या कुछ और. यह विश्लेषण करना मेरा ही काम था.

संग्रहालय के तलघर में बने अपने दफ़्तर में एक रात अकेले ही मैं ने सभी जबड़े निकाले और उन्हें मेज़ पर पंक्तिबद्ध कर दिया. वहां तहख़ाने में बड़ी ख़ामोशी थी. उस ख़ामोशी में मैं उन मोतियों की आभा वाले भूरे दांतों और खुरदरे भूरे जबड़ों की हड्डियों को तकने लगा. वे मेरा मख़ौल उड़ाते लग रहे थे. "क्या हैं हम ?" वे फुसफुसा रहे थे. "किस
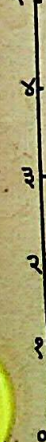
नाम से पुकारोगे तुम हमें?"

मेरी लीकी द्वारा हाल ही में तंजानिया के एक स्थल लेटोली में की गई कुछ खोजों ने मामले को और भी जटिल बना दिया था. उस ने कुछ जीवाश्म होमीनिड पदचिह्नों को ढूंढ़ निकाला था, जो ज्वालामुखी राख की एक परत में चमत्कारिक रूप से सुरक्षित थे. एक युवा अमरीकी पेलियोंटालाजिस्ट, टिम ह्वाइट, जो पहले रिचर्ड लीकी के साथ काम कर चुका था, उस समय लेटोली में
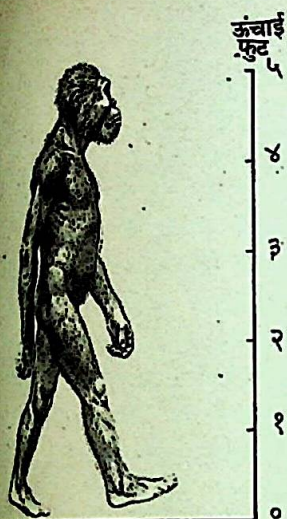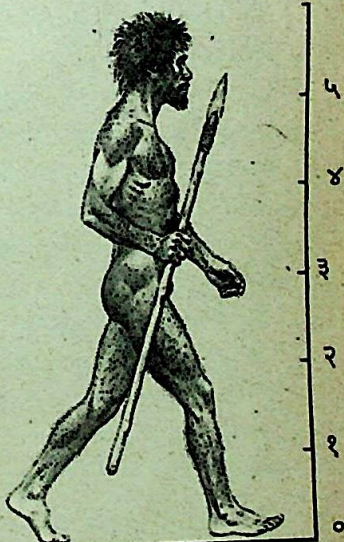
था. उस ने पदचिह्नों के परिरक्षण पर कुछ काम किया और मेरी द्वारा खोजे जा रहे होमिनिड जीवाश्मों का ब्यौरा भी लिखा. टिम को मैं ने हडार के जीवाश्म दिखाए, तो उस की राय थी कि ताज्जुब की बात थी, वे लेटोली में पाए गए जीवाश्मों जैसे ही थे.

उलझन वाली बात यह थी कि लेटोली हडार से १६०० किलो मीटर दूर था और यह भी कि उस के पदचिह्न ३७.४ लाख साल पुराने लगते थे—लूसी से भी ८,००,०००

साल पुराने. मैं ने फ़ैसला किया कि बेहतर हो टिम और मैं, दोनों, संग्रहों का और अधिक विस्तृत अध्ययन करें.

यह जानते हुए कि टिम मेरी लीकी के लिए लेटोली के जिन जीवाश्मों का अंकन कर रहा था, उन के ढांचे उस के पास थे, मै ने उस से कहा कि क्या वह उन्हें क्लीवलैंड ला सकता है ताकि मेरे वालों के साथ उन की सावधानी-पूर्वक तुलना की जा सके. टिम ने उन की समानताओं के बारे में जो कुछ कहा था, उस के बावजूद निजी तौर पर मुझे लगता था कि मुझे इतने अंतर नज़र आ ही जाएंगे कि उन्हें अलग अलग माना जा सके.

अब टिम लेटोली के ढांचों को मेज़ पर रखने लगा. हडार से प्राप्त सामग्री की तुलना में वे बड़े नाकाफ़ी थें. एक अधोहनु काफ़ी अच्छी हालत में था, तथा १३ अन्य टुकड़े थे. वे संख्या या हालत में कितने ही अपर्याप्त हों, पर विस्मयजनक तथ्य उभर कर सामने आ गया: जीवाश्मों के दोनों समूह एक जैसे थे. वास्तव में कुछ बड़े नमूने तो क़रीब क़रीब एक रूप थे.

कई दिन तक और बड़ी सावधानी से हम ने नमूनों का एक दूसरे से मिलान किया—एक एक दांत, एक एक दंताग्र. यह बड़ा अलौकिक अनुभव था. आख़िर में मैं ने कहा, "मेरे वाले बड़े (नमूने) मेरी के बड़ों जैसे ही हैं."

"यही तो मैं ने तुम से कहा था."

"लेकिन लूसी नहीं. वह भिन्न है."

"हां, वह थोड़ी सी भिन्न है, क्योंकि वह औरत है. वह छोटी है, उस का जबड़ा भी थोड़ा ज़्यादा कोणाकार का है. वरना और किसी तरह वह भिन्न नहीं है."

मैं ने एक बार फिर लूसी को देखा. वह मुझे भिन्न लग रही थी. मुझे यक़ीन था कि हडार में दो जातियां थीं: एक तो वड़ी, जो लेटोली वाली जाति के समान थी, दूसरी लूसी. मेरी सोच कई कारणों से उलझती जा रही थी. पहली बात तो यही थी कि रिचर्ड और मेरी लीकी हडार के एक दौरे के दौरान पहले ही मुझे बता चुके थे कि उन के ख़याल से बड़े नमूने होमो थे. मैं उन से सहमत था: लीकी ने तरकाना झील में खोजे जीवाश्मों को वर्गीकृत करने का तरीक़ा भी तय कर लिया था. उस ने उन्हें दो समूहों में बांट दिया. बड़े जबड़ों और दाढ़ों वालों को वह आस्ट्रेलोपिथिकस कह रहा था. छोटे जबडों और दाढ़ों वालों को उस ने होमो का नाम दिया था. जब वह हडार पहुंचा और उस ने वहां के नमूने देखे, जो तरकाना के नमूनों की तरह छोटे दांतों वाले थे, तो उन्हें भी होमो ही मान लेना स्वाभाविक बात थी.

लेकिन लूसी इस कथाक्रम में फ़िट नहीं हो रही थी—भले ही उस के दांत छोटे थे. वह इतनी अजीब थी कि वह मानवीय नहीं हो सकती थी. टिम, कुछ हद तक, मेरे विचारों से इत्तेफ़ाक रखता था, लेकिन हम दोनों में से किसी ने भी तब तक किसी से कुछ नहीं कहा, जब तक एक दिन स्थल ३३३ के प्रथम परिवार का एक नमूना हमारे सामने नहीं आ गया—एक वयस्क क्रपाल का अर्धांश क्रमांक ए एन ३३३-४५. यह कोई छोटी चीज़ थी, जिस की खोपड़ी के पृष्ठ भाग पर वानर जैसे पुट्ठों के संयोजन के गहरे अंकन थे. टिम ने इसे ग़ौर से देखा और बोला, "यह बड़ा अजीब जीवाश्म है. ईमानदारी से बताओ, तुम इसे होमो कहने की कोशिश करने जा रहे हो?"

मैं ने कहा, "तुम इसे आस्ट्रेलोपिथिकस कहने की कोशिश करने जा रहे हो?"

उस समय तक हमें लीकी के वर्ग उपयोगी नज़र आए थे. अचानक यह बात साफ़ हो गई कि ए एल ३३३-४५ उन में से किसी में भी फ़िट नहीं बैठेगा.

"कोई तीसरी चीज़ ?" टिम ने पूछा.

यह क्षण बड़ा उलझन वाला था. जब बड़े विचार आप के दिमाग में घूमने लगें और उन में से किसी को भी ठीक से पकड़ पाने का समय आप को न मिला हो, तो उन को नियंत्रण में लाना बहुत कठिन महसूस होता है. मुझे अब याद नहीं है, यह सुझाव किस ने दिया कि हमें लौट कर जाना चाहिए और तत्पश्चात पुराने ले ग्रास क्लार्क लेख का पुनरीक्षण कर के अपने विचारों को व्यवस्थित करना चाहिए. लेकिन जैसे ही यह सुझाव आया, हम दोनों को लगा कि ले ग्रास क्लार्क द्वारा सूचीबद्ध वानरों और मानवों के दांतों में पाए जाने वाले ११ अंतरों के आधार पर हम अपने जीवाश्मों को वर्गीकृत कर सकते हैं.

१९७७ की गरमियों के मध्य तक हम ने इस की तैयारी कर ली थी. गोरिल्ला और चिंपैंज़ी नमूने हमारे पास थे. आस्ट्रेलोपिथिसीन दांतों का एक बढ़िया संग्रह भी हमारे पास था. हम ने लेटोली और हडार की सामग्री को पुनर्योजित कर लिया था. इस के सटीक विवेचन के लिए हमें तीन प्रश्नों पर विचार करना था.

१. हमारे पास कोई नई चीज़ थी, या कि वह किसी पहले से परिचित चीज़ जैसी ही थी और इस पर 'नया' का लेबल नहीं लगाया जा सकता ?

२. अगर यह नई थी, तो अन्य परिचित सामग्री से उस का क्या संबंध था ? दूसरे शब्दों में वंशवृक्ष में इसे कहां फ़िट किया जा सकता था ?

३. इस का नाम क्या होना चाहिए ?

हमारा ख़याल था कि ले ग्रास क्लार्क विश्लेषण से हमें पहले प्रश्न का उत्तर मिल जाना चाहिए, और दूसरे में भी मदद मिलनी चाहिए. तीसरे सवाल का उत्तर हमें ख़ुद ढूंढ़ना होगा.

क्लीवलैंड की प्रयोगशाला के मध्य में एक लंबा, ऊंचा काउंटर है. हर शाम, बाकी कर्मचारियों के घर लौट जाने के बाद, टिम और मै उस पर जम जाते, दो एक ऊंचे स्टूल लेते और अपने तुलना संबंधी कार्य में जुट जाते. हम एक नक़्श को दूसरे नक़्श से मिला कर देखते—फिर तीसरे से.

सही नाम

मुझे एक झटका लगा, वह इस लिए नहीं कि हमारे जबड़े आदिम दिखाई देते थे; उस की तो मुझे उम्मीद ही थी. झटका इस लिए लगा कि वे बेहद आदिम थे. वे वानर प्रवृत्तियों के मानवों के बजाए मानवीय प्रवृत्तियों वाले वानर ज़्यादा लग रहे थे. जो बात एकदम साफ़ थी, वह यह थी कि वे लेटोली और हडार वानरों और मनुष्यों के बीच की चीज़ थे और वे न तो वानर लग रहे थे, न मनुष्य.

हमारे द्वारा पहचाने गए फ़र्क़ों में से किसी एक के बल पर हमारा केस तैयार नहीं हो सकता था. लेकिन जब बहुत से फ़र्क़ मिलते हैं, और वे काफ़ी सारे नमूनों में लगातार मिलते जाते हैं, तो व्यक्ति उन के बारे में बढ़ते आत्मविश्वास के साथ निष्कर्ष निकालना शुरू कर सकता है. गरमियों के अंत तक हम ने अपने नमूनों में इतनी पर्याप्त मात्रा में अंतर सूचीबद्ध कर लिए थे कि हमें यक़ीन हो सके कि लेटोली हडार के प्राणी वानरों और बाद की किसी भी होमीनिड जाति से भिन्न थे.

संक्षेप में, हमारे बिंदु दर बिंदु पुनरीक्षण ने हमें हमारे पहले प्रश्न का उत्तर दे दिया था: हमारे पास निश्चित रूप से एक नई चीज़ थी. उलझन सिर्फ़ एक थी: हमारे पास एक ही नई चीज़ थी या दो थीं? मेरा ख़याल दो का था; टिम का एक ही का. बिल किंबल, जो मेरी प्रयोगशाला में अब मेरा डिपुटी है, और जो विश्लेषण के दौरान कुछ समय हमारे साथ रहा, मुझ से सहमत था. वह यही कहता रहा, "लूसी भिन्न है." टिम कहता, "छोड़ो भी, किंबल. चलो, चिंप निकालें और थोड़ी सी तुलना और कर डालें और बतियाना छोड़ें!" लेकिन अगले ही दिन टिम ख़ुद बड़बड़ा रहा होता. चिल्लाते हुए वह प्रयोगशाला में दाख़िल होता, "एक ही चीज़, एक ही चीज़." हम चिल्ला कर जवाब देते, "दो चीज़ें!"

यद्यपि किंबल और मैं तब तक क़ायल हो चुके थे कि संग्रह में इतने अधिक आकार प्रकार शामिल थे कि लूसी का छोटापन अपने आप में कोई बाधा नहीं था कि उसे दूसरों में शामिल कर लिया जाए, हमारा यह विश्वास फिर भी बना रहा कि उस के जबड़े का कोणाकार भिन्न था. अंत में, टिम ने जीवाश्मों की एक शृंखला को पंक्तिबद्ध कर के मेज़ पर सजा दिया. उस ने उन्हें आकार के हिसाब से चुना था—जबड़ों की एक क्रमबद्ध शृंखला, जिस में संग्रह के बड़े से जबड़े से ले कर छोटे से छोटा जबड़ा शामिल था. जब लूसी के जबड़े को पंक्ति के अंत में रखा गया, तो यह बात स्पष्ट हो गई कि उस का स्थान वहीं था. ज़बड़े के अग्र भाग के संकरेपन में ही वह दूसरों से अलग थी—वरना उस की दंत पंक्ति वैसी ही आदिम थी, जिसे हम तीनों महीनों तक विश्लेषण करते रहने के कारण, तुरंत पहचान सकते थे—यानी हमारे जीवाश्म संग्रह की प्रतिनिधि—और कुछ नहीं. लूसी की विशिष्टता ग़ायब हो गई.

अपनी इस मान्यता में सुरक्षित कि हम होमीनिड की एक नई और पृथक जाति पर काम कर रहे हैं, अब हम दूसरे प्रश्न से मुख़ातिब हुए: पहले से ही वर्णित और नामांकित होमीनिडों के संदर्भ में हमारी जाति का स्थान क्या था? दूसरे शब्दों में, हम किस तरह के वंशवृक्ष को अंकित करें, जिस में वह सब फ़िट हो सके, जो हम अपनी जाति के बारे में जानते हैं और होमो हैबिलिस आस्ट्रेलोपिथिकस अफ़्रीकनस और आस्ट्रेलोपिथिकस रोबस्टस के बारे में भी जानते हैं?

पहले क़दम के रूप में हम ने सभी अफ़्रीकी होमिनिडों को उन की उम्र, प्रकार और स्थल के अनुसार एक चित्र में अंकित करने का फ़ैसला किया. दूसरा क़दम था स्थल को भुला कर जीवाश्मों के प्रकार के आधार पर एकत्रीकरण कर के प्रक्रिया का सरलीकरण. इस से जो चित्र बना, वह हमारी राय में, सभी विद्यमान जीवाश्मों को, उन की भिन्नता को ध्यान में रखते हुए, व्यवस्थित करने का सरलतम तरीक़ा था. यह चित्र हमारी स्थिति को स्पष्ट कर देता है: कि लेटोली हडार नमूने बाद में आए आस्ट्रेलोपिथिसीन और होमो के एक समान पूर्वज का प्रतिनिधित्व करते हैं कि बाद के दो प्रकारों के बीच अंतर संभवतः ३० लाख साल पहले आना शुरू हुआ; और कि रोबस्टस के आने से पहले वाले बीच के चरण का प्रतिनिधित्व अफ़्रीकनस करता है. हम यह नहीं मानते कि अफ़्रीकनस मानवों का पूर्वज था.

हम यह ज़रूर मानते हैं कि मानव जाति का उद्भव ३० लाख साल पहले के बाद कभी हुआ. २० लाख साल पहले तक मानव

का जन्म हो चुका था. तब तक होमो कहे जाने वाले प्राणी इस धरती पर विचरण करने लगे थे. उन के साथ उन के भाई बंधु भी थे, रोबस्टस आस्ट्रेलोपिथिसीन. लगता है, १० लाख सालों तक वे साथ साथ चले. १० लाख साल पहले तक कोई आस्ट्रेलोपिथिसीन बाकी नहीं रह गया था. वे सब विलुप्त हो चुके थे.

दो वर्ष से भी ज़्यादा लंबे कार्य के बाद, इन निष्कर्षों के साथ, टिम और मैं अपने दूसरे प्रश्न के ऐसे उत्तर तक आ पहुंचे थे, जो हमें संतोषजनक लग रहा था. अब तीसरा प्रश्न ही बाकी था: नई जाति को नाम क्या दिया जाए? मैं ने आस्ट्रेलोपिथिकस लेटोलेंसिस नाम सुझाया और कहा कि इस से मेरी लीकी को ख़ुशी होगी.

"मुझे नहीं लगता यह विचार इतना बढ़िया है," टिम ने कहा. "सभी श्रेष्ठतम जीवाश्म तुम्हारे पास हैं. उन्हें अपना नाम दो."

"जोहान्सोनेंसिस ? छोड़ो भी."

"नहीं, नहीं. मेरा मतलब तुम्हारे स्थान से है. 'हडारेंसिस.'"

इस से मैं संतुष्ट नहीं हुआ. मुझे लगा, हमें पूरे क्षेत्र का नाम इस्तेमाल करना चाहिए: अफ़ार त्रिकोण.

"ठीक है, अफारेंसिस," व्हाइट ने कहा. इस तरह आस्ट्रेलोपिथिकस अफ़ारेंसिस पर सहमति हो गई.

औपचारिक उद्घाटन

इस के बाद टिम और मैं अपनी खोजों के बारे में लिखने के काम में जुट गए. हम दोनों को यह अहसास था कि लेख हमारे कार्यकारी जीवन में मील का पत्थर होगा; मानव अपने अतीत को जिस नज़रिए से देखता है, इस लेख से उस में परिवर्तन आ जाएगा. इस प्रकार हम अपने आप के प्रति ही नहीं, विज्ञान के प्रति भी भारी जिम्मेदारी महसूस कर रहे थे.

मई १९७८ में हम ने अपना लेख 'साइंस' को भेजा, जो संयुक्त राज्य का सर्वाधिक प्रतिष्ठित विज्ञान प्रकाशन है. प्रकाशन द्वारा अफारेंसिस के औपचारिक उद्घाटन के बाद दिलचस्पी का जो विस्फोट हुआ, उस के लिए हम दोनों में से कोई भी तैयार नहीं था. न्यू यार्क टाइम्स ने मुख पृष्ठ पर एक लेख प्रकाशित किया और उस के साथ अफारेंसिस खोपड़ी की पुनर्रचना का चित्र भी प्रकाशित किया. बाद के दिनों में 'टाइम', 'न्यूज़वीक' तथा दूसरी पत्र पत्रिकाओं में अन्य लेख प्रकाशित हुए. मुझे अनेक टेलीविज़न भेंट वार्ताओं के लिए आमंत्रित किया गया. लेकिन न्यू यार्क टाइम्स में छपी सुर्ख़ी ने सारी बात कह दी— "नव प्राप्त जाति द्वारा मानव के विकास संबंधी विचारों को चुनौती;" समाचार पत्र ने लेख के प्रमुख मुद्दों की सारगर्भित समीक्षा भी प्रस्तुत की :

दो अमरीकी मानव शास्त्रियों ने एक ऐसे मानव पूर्वज की खोज की है, जिस की जानकारी पहले नहीं थी, जो ३० से ४० लाख साल पहले अफ़्रीका में रहता था और जिस में छोटे से मस्तिष्क वाले वानर जैसे सिर और पूरी तरह सीधी खड़ी होने वाली देह का अप्रत्याशित योग है.

इस खोज ने, जो पिछले १५ वर्षों में नामांकित की जाने वाली पहली मानव पूर्वज जाति है, उस पुरातन किंतु विस्तृत रूप से प्रचलित मान्यता को ज़बरदस्त झटका दिया है कि सीधे खड़े होने वाली स्थिति का विकास, जिस से सैद्धांतिक रूप से हाथ औज़ार बनाने के लिए मुक्त हो जाएं, बड़े

मस्तिष्क के साथ ही हुआ था.

नया ख़याल यह है कि हड्डियां जबड़ों, दांतों और खोपड़ी के मामले में न केवल इतनी ज़्यादा वानर जैसी नहीं थीं कि उन्हें होमो माना जाए, बल्कि यह भी कि वे एक अन्य पूर्व-ज्ञात मानव जैसे वंश, आस्ट्रेलोपिथिकस के अवशेषों से भी ज़्यादा आदिम हैं.

हमारे लेख पर पहला विधिवत हमला ७ मार्च १९८० को हुआ. 'साइंस' ने हमारे पास एक आलोचना भेजी, जिस पर रिचर्ड लीकी और एलन वाकर के हस्ताक्षर थे—एलन वाकर आजकल जान्स हापकिंस विश्वविद्यालय में शरीर शास्त्री है. एक आलोचना और भी भेजी, जिस पर मेरी, लीकी तथा सेंट टामस हास्पिटल, लंदन के दो शरीर शास्त्रियों, माइकल डे तथा टाड ओल्सन, के हस्ताक्षर थे.

लीकी-वाकर पुनरीक्षण के प्रति हमारी सब से बड़ी आपत्ति यह थी कि उस ने हमारे होमीनिडों के संयोजन की तो आलोचना की थी, लेकिन कोई विकल्प प्रस्तुत नहीं किया था. अगर उस में कोई ठोस बात होती, हमारे जीवाश्मों को ले कर कोई बहस ही की गई होती, जिस का हम भी ठोस जवाब दे सकते, तो इस आदान प्रदान से, मेरे ख़याल से, कोई फ़ायदा होता. जिस रूप में टिप्पणी हमारे पास आई थीं, उस से हमें हताशा का ही अहसास हुआ.

मेरी लीकी का पुनरीक्षण और भी ज़्यादा निराश करने वाला था. उस ने पहले दी गई एक भेंट वार्ता में कहा था कि लेटोली और हडार को परस्पर संबद्ध नहीं किया जा सकता था, क्योंकि एक तो वे भौगोलिक स्तर पर अलग थे, दूसरे उन दोनों के बीच क़रीब ढाई लाख साल का अंतर था. उन दोनों आपत्तियों पर मैं उस से मिलने और यह बताने के लिए तैयार था कि, मिसाल के तौर पर, होमो इरेक्टस उस से भी ज़्यादा लंबे समय तक, लगभग अपरिवर्तित, जीवित रहा था, और दुनिया के अनेक हिस्सों में रहा था, जिन के बीच का फ़ासला लेटोली और हडार से भी ज़्यादा था.

नया काल

आस्ट्रेलोपिथिकस अफ़ारेंसिस से संबंधित हमारी घोषणा चौकाने वाली बातों की श्रेणी में आ गई. उस ने एक नए होमीनिड की परिभाषा दी थी और मानव वंशवृक्ष को नया रूप दे दिया था. ऐसा करने में उस ने कुछ प्रतिस्पर्धी विचारों पर रोक सी लगा दी थी. मेरे ख़याल में लीकी दंपती के हमारे लेख पर उस तरह की प्रतिक्रिया करने का यही कारण था: इस ने उन के होमो की विशेषता से संबंधित लंबे अरसे से चले आ रहे नज़रिए को चुनौती दे दी थी.

लुई लीकी ने उस नज़रिए को बनाया था. उस ने होमो वंश के प्रत्येक स्पर्धी जीवाश्म को बड़ी सख़्ती से जोड़ा था. सभी आस्ट्रेलोपिथिसीनों को एक ओर धकेल दिया गया था, यहां तक कि होमो इरेक्टस को भी, नेआंडरथाल मानव को भी. लीकी परिवार अंततः अपने वैज्ञानिक रास्तों में ज़रूर अलग हो गया था, फिर भी मानव के उद्भव को ले कर उन के रुख़ में 'पारिवारिक' नज़रिया ज़रूर बना रहा था. अपने पिता की ही तरह, रिचर्ड लीकी भी बहुत पीछे की ओर देखने और स्पर्धा को समाप्त करने को तरजीह देता था. सभी होमीनिडों के बारे में उस का भी यही ख़याल था कि अगर वह वास्तव में होमो नहीं है, तो वह होमो पूर्वज भी नहीं हो सकता.

मैं यह बात बता ही चुका हूं कि कुछ बरस पहले तक यही निष्कर्ष तर्कसंगत क्यों था—उस समय तक होमीनिड जीवाश्मों के बारे में इतना ही ज्ञान उपलब्ध था; साथ ही रिचर्ड की इस घोषणा से कि लेटोली से प्राप्त खोपड़ियों में से एक—जिसे महज़ १४७० के नाम से जाना जाता है—क़रीब ३० लाख साल पुरानी है, शुरू शुरू के होमो के बारे में काफ़ी नाटकीय निष्कर्ष निकाले गए थे. रिचर्ड के पदचिह्नों पर चलते हुए, और यह स्वीकार करते हुए कि उस असाधारण होमीनिड जीवाश्म का काल उतना पुराना ही था, मुझे पूरा विश्वास है कि मै ने यही निर्णय किया होता कि मानव का वंश उस से भी पुराना है, और यह भी कि मानव पूर्व चरण के लिए हमें और भी अतीत में जाना होगा. चूंकि १४७० जितना पुराना और प्रमाणित आस्ट्रेलोपिथिसीन जीवाश्म कहीं प्राप्त नहीं हुआ था, इस लिए आस्ट्रेलोपिथिसीनों को पूर्वज के रूप में मुझे भी अस्वीकार करना पड़ता.

१४७० ने रिचर्ड लीकी को विश्व ख्याति दी थी. इसी ने उस के मानव के विकास संबंधी विचारों को ठोस बनाया था. लेकिन जब उस की प्राचीनता का क्षरण होने लगा, तो वह बात उस से स्वीकार नहीं हुई: उस की तिथि ग़लत है, इस के बारे में बढ़ते हुए प्रमाणों के अनुरूप अपने विचारों को पुनर्व्यवस्थित करने के बजाए उस ने तिथि की वकालत करना शुरू कर दिया. अंत में उस ने अपने आप को इस सब से अलग खींच लिया. नए प्रमाण को स्वीकृति न दे कर उस ने होमो संबंधी विकल्प को खुला छोड़ दिया है. अगर उसे १४७० के स्तर के और भी पुराने जीवाश्म मिल जाएं, या वह किसी तरह अपने जीवाश्मों के बारे में पहली वाली तिथियों को पुनः स्थापित करने में कामयाब हो जाए, तो मानव के विकास से संबंधित उस की मान्यताएं सुरक्षित रह सकती हैं.

लेकिन अफ़ारेंसिस ने दरवाज़ा बंद कर दिया है. अगर लीकी को एक अमानवी, अत्यंत वानर जैसे जीव को ३० लाख साल पहले के काल में होमो के पूर्वज के रूप में स्वीकार करना है, तो २९ लाख साल पहले के पुराने होमो का क्या होगा? उस संकरे कालखंड में उस के लिए, एक प्रमाणित मानव के लिए, कोई जगह ही नहीं है.

अगर लेटोली और हडार जीवाश्मों को किसी तरह होमो के रूप में पुनर्व्याख्यायित किया जा सके, तभी उस काल खंड को पुनः विस्तारित किया जा सकता है. ऐसा कीजिए और पुराना होमो सामने आ जाएगा ३० और ३७ लाख साल पर ! मेरा ख़याल है कि रिचर्ड और मेरी लीकी इसी लिए लेटोली और हडार संग्रहों में नज़र आने वाली होमो विशेषताओं को पकड़ कर बैठ गए है और उन से भी आदिम नमूनों को नजरअंदाज़ करते हैं.

१९७९ की गरमियों में एक अनपेक्षित बात हुई. हडार जीवाश्मों के विश्लेषण के लिए टिम और मैं ने जेम्स आरोन्सन द्वारा हडार असिताश्म को दी गई ३० लाख साल पुरानी तिथि को आधार बनाया था. आरोन्सन ने अगस्त में हमें सूचित किया कि वह तिथि को बदलने वाला है. नए साक्ष्यों से ३७.५ लाख साल की आश्चर्यजनक उम्र सामने आई—एक लाख साल कम या ज़्यादा की संभावना के साथ.

तिथियों में आमूल परिवर्तन आम तौर पर झटका देते है. यह परिवर्तन बड़ा सरलीकारक सिद्ध हुआ. एकाएक हडार जीवाश्म शारीरिक स्तर पर लेटोली जीवाश्मों के लगभग समरूप

होने के साथ साथ क़रीब क़रीब सम आयु भी हो गए. कितना कल्पनातीत, चकाचौंध कर देने वाला, ख़ूबसूरत योग था यह!

लेकिन मुफ़्त कुछ नहीं मिलता; इस से एक और समस्या उठ खड़ी हुई. हम ने जो वंशवृक्ष बनाया था, उस के मध्य में पहले से भी बड़ा रिक्त स्थान पैदा हो गया. अब लगभग १० लाख साल के लिए हमारे पास कहीं से प्राप्त हुए निरापद रूप से स्वीकृत जीवाश्म नहीं थे. उस काल में किस चीज़ का अस्तित्व था?

अगर हमारी रचना सही थी, तो उस लंबे काल खंड में, बाद में प्राप्त होने वाले जीवाश्मों को, अफ़्रेरेंसिस के बाद के विकास की दो में से एक दिशा को दर्शाना होगा: या तो होमो की ओर या बाद के आस्ट्रेलोपिथिसीनों की ओर. लेकिन अगर कुछ एकदम भिन्न सामने आ गया, तो हमें ड्राइंग बोर्ड पर लौटना होगा.

मुझे नहीं लगता था कि ऐसा होगा. चीज़ें बहुत सटीक थीं. इस से मूल (जनक) जाति को वह अत्यावश्यक काल खंड भी मिल जाता था, कि उस की विभिन्न जनसंख्याओं को विकासक्रम में विभिन्न पारिस्थितिकीय दिशाओं की ओर बढ़ने का मौका मिल सके. इस से एक वंश को अफ़्रेरेंसिस—जो क़रीब क़रीब वानर था—से होमो हैबिलिस—एक प्रमाणित मानव—की ओर विकसित होने के लिए और भी ज़्यादा समय मिलेगा. एक अन्य वंश के लिए भी और ज़्यादा वक़्त होगा, कि निरंतर बड़े होते हुए उस के गालों के दांतों का अबाध विकास हो सके—अफ़्रीकनस से रोबस्टस की ओर. और अगर रिचर्ड लीकी प्राचीन होमो को अतीत में, २० लाख साल से भी और पीछे धकेलने के लिए और वक़्त चाहे, तो उस के लिए वहां भी एक स्थान मौजूद था. मैं होमो को वहां तक स्वीकार करूंगा, जहां तक जीवाश्म अभिलेख उसे पीछे ले जाएगा—लेकिन वर्तमान प्रमाणों के आधार पर, अफ़्रेरेंसिस के उत्तराधिकारी के रूप में ही.

तंग करने वाले प्रश्न

२९ जनवरी १९८० के दिन मारिस ताईब और मैं अदीस अबाबा के नेशनल म्यूज़ियम गए. वहां एक ख़ासे अच्छे समारोह में हम ने पूरा हडार होमीनिड जीवाश्म संग्रह—३५० से भी अधिक बहुमूल्य हड्डियां—संग्रहालय के संरक्षक मामो तेसेमा को सौंप दिया.

अर्पण के क्षण में मुझे क्षति के एक भयावह भाव का अहसास हुआ. लूसी पांच साल तक मेरी रही थी. उस के बारे में लेख लिखे थे, टेलीविज़न पर आया था, भाषण दिए थे. दुनिया भर से आने वाले वैज्ञानिकों को मैं बड़े गर्व से उसे दिखाता रहा था. उस ने मुझे पूर्ण गुमनामी से निकाल कर वैज्ञानिक ख्याति दिलाई थी. इस के अलावा, उस की हड्डियों ने, और अन्य सभी ने, जिन्हें मैं अब सौंप रहा था, मुझे मानव के विकास की एक नई व्याख्या देने का मौक़ा दिया था. संग्रहालय में खड़े हो कर स्वीकृति भाषण सुनते हुए मुझे वैसा ही लग रहा था जैसे कोई पिता अपने बच्चे को किसी दत्तक ग्रहण एजेंसी को सौंपने के लिए हस्ताक्षर कर रहा हो. कुछ मिनटों के लिए, हाथ मिलाने और बधाइयां पाने के बीच, मैं नितांत एकाकी महसूस करता रहा.

लेकिन यह अहसास ज़्यादा देर नहीं रहा. इथियोपिया वासियों ने हमारे लिए द्वार खोल दिया था कि हम पूरे दल बल सहित वापस आएं. हम और कुछ नहीं करेंगे, सिर्फ़ होमीनिडों के लिए सर्वेक्षण करेंगे. हम हडार में अफ़्रेरेंसिस के अन्य नमूनों की तलाश करेंगे.

एक अन्य स्थल पर हम होमो इरेक्टस की भी तलाश करेंगे.

होमो इरेक्टस हालांकि पूरे यूरेशिया और अफ्रीका में फैला हुआ है और वह हडार जीवाश्मों से १५-२० लाख साल छोटा है, फिर भी शारीरिक स्तर पर उस की उतनी जानकारी नहीं है, जितनी हडार जीवाश्मों की. यहां वहां कुछ अच्छी इरेक्टस खोपड़ियां प्राप्त हुई हैं, बहुत से दांत भी मिले है, लेकिन और ज्यादा कुछ नहीं.

इरेक्टस के बारे में हम जो कुछ जानते हैं, उस का अधिकांश सांस्कृतिक है. हम जानते हैं कि इरेक्टस क्या खाता था; हम जानते हैं कि वह अपना खाना पकाता था और कपड़े भी बनाता था. हम जानते हैं कि वह बड़े बड़े जानवरों का शिकार बखूबी कर लेता था और उस ने पत्थर के तरह तरह के औज़ार बनाए थे. जो हम नहीं जानते, वह यह है कि होमो हैबिलिस से उस का विकास कैसे और कब हुआ—या शायद हुआ भी या नहीं.

होमो हैबिलिस से वह अचानक छलांग लगा कर इरेक्टस कैसे बन गया. क्या यह छलांग वस्तुतः इतनी अचानक थी ? यह छलांग लगी क्यों ? क्या यह तीव्र विकासशील दिमाग का मामला था, जो एक नई और बेहतर औज़ार संस्कृति के विकास के साथ साथ हुई ? अगर ऐसा है, तो यह नई संस्कृति कहां और क्यों शुरू हुई ?

फिर, एक और भी ज़्यादा दिलचस्प सवाल : वह संस्कृति—और उसे बनाने वाला मानव—१० लाख वर्षों तक स्थिर क्यों बने रहे ? यह बात बड़ी साफ़ है कि होमो इरेक्टस का विकास उस विशाल काल खंड के दौरान नहीं हुआ. फिर, मानवता ने अचानक एक और छलांग भरी. लगभग २,००,००० वर्ष पूर्व, एक अन्य टेकनोलोजीकल छलांग लगी तथा इस में से होमो सेपियंस (बुद्धिमानव—आधुनिक मानव) का विकास हुआ. आवाश का क्षेत्र बुला रहा है, क्योंकि मुमकिन है, इन दोनों सवालों का जवाब उस के पास हो.

इस बीच भू वैज्ञानिक हडार से क़रीब १६० किलो मीटर दूर स्थित अफ़ार की ४० से ७० लाख साल पुरानी परतों की जांच पड़ताल में जुट जाएंगे. वहां हमें जो कुछ मिलेगा, मुमकिन है उस से हर चीज़ पर से परदा उठ जाए, क्योंकि विज्ञान नहीं जानता था, न ही आज जानता है, कि वानर से होमीनिड तक का सर्वाधिक महत्वपूर्ण संतरण कैसे और कहां हुआ. पेलियोएंथ्रोपालाजी के सामने बची यही सब से बड़ी चुनौती है. अफ़ारेंसिस, ऐसा लगता है, होमीनिड द्वार में बड़ी मुश्किल से प्रविष्ट हो पाता है. लेकिन किसी ७० लाख साल पुराने पैर या ७० लाख साल पुराने श्रोणि प्रदेश पर क्या फ़ैसला सुनाया जाएगा ?

मुझे यक़ीन है, निकट भविष्य में अफ़ार की हड्डियां इथियोपिया को अवश्य ही विश्व का होमीनिड जीवाश्म केंद्र बना देंगी; सारी कहानी यहीं से सुनने को मिलेगी. साठ लाख साल पहले के काल खंड में हमें वानरों और लूसी के बीच का कुछ प्राप्त होगा. ४० लाख और ३० लाख के बीच रहेगी लूसी. फिर हमें अफ़्रारेंसिस के बाद वाले प्रकार मिलेंगे—एक ओर होमो की तरफ़ बढ़ते हुए, दूसरी ओर अफ़्रीकनस की तरफ़ बढ़ते हुए. अंत में, हमें इरेक्टस मिलेगा.

"लेकिन ये जीवाश्म अभी तलाशे जाने हैं," शंकालु टिम व्हाइट ने कहा.

"तुम्हें शक है कि हमें नहीं मिलेंगे ? उन्हें वहां होना ही चाहिए. और अगर वे वहां हैं, तो हम उन्हें ढूंढ़ ही लेंगे."

(समाप्त)

अगले महीने

मंदिर में नरबलि

सिद्ध उपासक ने नरबलि से देवता को प्रसन्न करने की पूरी तैयारी कर ली थी, अचानक . . .
सैंतीस सदी पहले की एक रामांचक घटना जिस का पता लगाया ग्रीस के पुरातत्व छात्रों ने

छलनगरी बंबई

एक शहर जो बुलाता है, हंसाता है, रुलाता है

पत्रकार : आज़ादी की सीमारेखा

क्या पत्रकार चाहे कुछ भी लिख सकते हैं?
यह सवाल भारत ही नहीं अन्य देशों में भी फिर उठ रहा है.
यहां पढ़िए कनाडा के एक प्रख्यात पत्रकार के विचार

मौत के सौदागर

आज हर देश में हथियार इतने सुलभ हैं कि हत्या की राजनीति उभर कर आ रही है. यह सब कब तक?

नागपंचमी

पश्चिमी घाटों पर बसे गांव शिराला में जीवित नागों की पूजा

प्रजातंत्र अमर रहे . . .

फ्रांसीसी क्रांति के दौरान उन चौबीस घंटों का आंखों देखा रोचक विवरण, जिन्हों ने दुनिया में प्रजातंत्र की नींव मज़बूत कर दी.

सर्वोत्तम पुस्तक

सूरमा शरीर

हमारे बाहर और भीतर जान के लाखों दुश्मन हैं, उन से लड़ रहा है हमारा शरीर

यह सब तथा और बहुत कुछ
सर्वोत्तम के जुलाई १९८२ अंक में

प्रजातंत्र का जन्म

कीवी

नरबलि

रु. ६.००
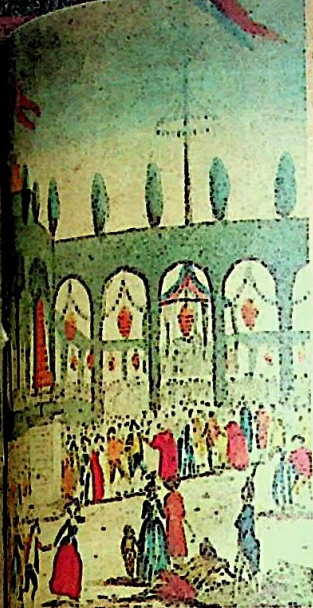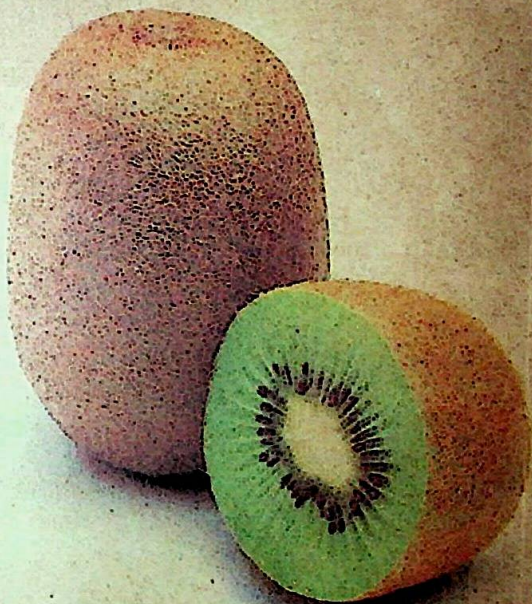
सर्वोत्तम
रीडर्स डाइजेस्ट

सर्वोत्तम पुस्तक
आज़ादी आई आधी रात
पृष्ठ १०९

बलात्कार का प्रतिकार
पृष्ठ ११

...र वाइल्ड की कहानी :
...खी राजा
पृष्ठ ४९

...सीयत ...लिए मत
पृष्ठ ४४

संसार की सर्वाधिक लोकप्रिय पत्रिका
प्रति मास १७ भाषाओं और ४१ संस्करणों में
३.१ करोड़ से अधिक प्रतियां

Reader's Digest : Hindi Edition : Feb 82

यह प्रति वार्षिक ग्राहकों के लिए है, बिक्री के लिए नहीं

सर्वोत्तम सूक्तियां

दर्शक और प्रशंसक हर ऐरे-ग़ैरे को हूट नहीं करते.

—रेगी जैक्सन,
अमरीकी बेसबाल खिलाड़ी

जीवन से मेरी प्रमुख आकांक्षा है एक ऐसा व्यक्ति जो मुझे मनचाहा करने दे.

—राल्फ़ वाल्डो एमरसन

प्यार दबे पांव आता है और दरवाज़ा भड़भड़ाता जाता है.

—रोबर्ट लैंब्के
'स्टटगार्ट नाखिक्तेन'

जो चीज़ किसी की कृपा से मिले, उस पर अधिकार मत जताओ.

—जौन चर्टन कोलिंस,
अंग्रेज साहित्य समीक्षक

सामाजिक अनुरूपता हमें आधा तबाह कर देती है, लेकिन इस के बिना हम पूरी तरह नष्ट हो जाते हैं.

—चार्ल्स डडले वार्नर

पाठक दो प्रकार के होते हैं—एक वे, जो पढ़ कर याद रखते हैं, और दूसरे वे, जो पढ़ कर भूल जाते हैं.

—विलियम लायन फ़ेल्पस,
अमरीकी साहित्य समीक्षक

बच्चे चाहे जिस वातावरण में पले बढ़े हों, चाहे जिस के पाले पोसे हों—इतना तय है कि उन की दुनिया में अन्याय को सूंघने और समझने की शक्ति बड़ी सूक्ष्म होती है.

—चार्ल्स डिकेंस, उपन्यासकार

सर्वोत्तम रीडर्स डाइजेस्ट

वर्ष २ : अंक १३ फ़रवरी १९८२

भारतीय संस्करणों के प्रमुख संपादक : राहुल सिंह
संपादक : अरविंद कुमार
सहायक संपादक : ललित सहगल, सुशील कुमार

विज्ञापन विभाग :
चंद्रन थरूर (निदेशक)
राम दत्ता (क्षेत्रीय प्रबंधक, बंबई)
विवियन डी सूज़ा (क्षेत्रीय प्रबंधक, दिल्ली)
कुमार माधवन (क्षेत्रीय प्रबंधक, मद्रास)
सुमित्रा मालवीय (लखनऊ)

अन्य विभाग :
कृष्णदेव भाटिया (मुद्रण प्रबंधक)
विनायक उकिडवे (वित्त नियंता)
संजय जौहरी (वितरण प्रबंधक)

शुल्क :
रु. ७२.०० प्रति वर्ष, डाक व्यय अतिरिक्त

जानकारी के लिए लिखें : सर्वोत्तम रीडर्स डाइजेस्ट, बी-१५, झिलमिल इंडस्ट्रियल एरिया, दिल्ली-११००३२

'सर्वोत्तम रीडर्स डाइजेस्ट' आर डी आई प्रिंट एंड पब्लिशिंग प्राइवेट लिमिटेड द्वारा प्रकाशित किया जाता है.
पंजीकृत कार्यालय : ओरियंट हाउस, मंगलौर स्ट्रीट, बलार्ड एस्टेट, बंबई ४०००३८.

प्रकाशक तथा प्रबंध निदेशक : अनील गोरे

रीडर्स डाइजेस्ट
प्लेज़ेंट विल, न्यू यार्क
संस्थापक : डी विट वालेस और लीला एचेसन वालेस

रीडर्स डाइजेस्ट के अंतरराष्ट्रीय संस्करण
प्रमुख संपादक : एडवर्ड टी टामसन
संचालन संपादक : आर्लें द लाइरो
अध्यक्ष : जान ए ओ हाय

अंतरराष्ट्रीय संस्करण १७ भाषाओं में प्रकाशित किए जाते है और उन के प्रमुख कार्यालय इस प्रकार है : अम्सटर्डम (डच), एथेंस (ग्रीक), ओसलो (नारवेजियन), केप टाउन (अंग्रेजी), कोपेनहेगन (डेनिश), ज़ूरिख़ (जरमन और फ्रैंच), तोकियो (जापानी), दिल्ली (हिंदी), पेरिस (फ्रैंच और अरबी), बंबई (अंग्रेजी), मिलान (इटालियन), मेक्सिको सिटी (स्पेनिश), मैड्रिड (स्पेनिश), मौंटरीयल (अंग्रेजी और फ्रैंच), लंदन (अंग्रेजी), लिसबन (पुर्तगाली), सिडनी (अंग्रेजी), सीयोल (कोरियन), स्टटगार्ट (जर्मन) स्टाकहोम (स्वीडिश), हांगकांग (चीनी), हेलसिंकी (फ़िनिश)

Published by Anil Gore for RDI Print & Publishing Pvt. Ltd., from B-15, Jhilmil Industrial Area, Delhi 110 032 and printed by him at Tej Press, Bahadur Shah Zafar Marg, New Delhi 110 002.

माथे को सजाए, चेहरे की शोभा बढ़ाए

EYETEX
DELUXE KUMKUM
EYETEX

शब्द संपदा सर्वोत्तम धन

—कुसुम कुमार

स्वर्गीय भगवतीचरण वर्मा (जन्म: ३० अगस्त १९०३; मृत्यु: ५ अक्तूबर १९८१) ने अनेक उपन्यास, नाटक, काव्य ग्रंथ, फ़िल्म पटकथा आदि की रचना की. लेकिन उन्हें विशेष ख्याति और सम्मान मिला चित्रलेखा उपन्यास से. यहां उसी उपन्यास से २० शब्द दिए जा रहे हैं. हर एक के सामने लिखे चार संभावित अर्थों में से निकटतम अर्थ पर सही का निशान लगाइए और अगले पृष्ठ के सही उत्तरों से मिला कर देखिए कि हिंदी साहित्य की लोकप्रिय नर्तकी को आप कितने प्रिय हो सकते हैं.

१. ऐंद्रजालिक—अ. इंद्रियों का दास. आ. टेढ़ा, तिरछा. इ. छोटी इलायची. ई. जादुई.
२. तात्पर्य—अ. आदरणीय जन. आ. तातार भाषा. इ. तत्कालीन. ई. अभिप्राय.
३. सौरभ—अ. सुगंध. आ. बैल. इ. एक अप्सरा. ई. सूर्यरथ.
४. परिमाण—अ. सबूत. आ. नतीजा. इ. मापतौल. ई. सीमा.
५. यंत्रणा—अ. सोचविचार. आ. यंत्र निर्माण. इ. यंत्र कौशल. ई. यातना.
६. अनुग्रह—अ. पुच्छल तारा. आ. शनि. इ. कृपा. ई. दान.
७. कोलाहल—अ. विष. आ. शोर. इ. संकीर्तन. ई. मछली बाज़ार.
८. प्रासाद—अ. कृपा. आ. देव भूमि. इ. राजसभा. ई. महल.
९. आघात—अ. आक्रमण. आ. धोखा. इ. पकड़. ई. चोट.
१०. निवारण—अ. रोकथाम. आ. नम्रता. इ. दोषानुभूति. ई. पाप कर्म.
११. थाह—अ. लंगर. आ. गहराई. इ. पता. ई. प्रतिष्ठा.
१२. कृत्रिम—अ. कारीगरी. आ. रचना. इ. कैंची. ई. नकली.
१३. विस्मृति—अ. भूल जाना. आ. बचपन के दिन. इ. विस्मय. ई. आराम.
१४. तिलांजली—अ. तिल का लड्डू. आ. एक प्रसिद्ध कवि. इ. रेवड़ी. ई. परित्याग.
१५. आधिपत्य—अ. धरोहर. आ. मानसिक पीड़ा. इ. बहुतायत. ई. प्रभुत्व.
१६. पृथक—अ. राजा. आ. कुंती का नाम. इ. शिव. ई. अलग.
१७. द्योतक—अ. जुगनू. आ. तीर का निशान. इ. सप्तर्षि. ई. सूचक.
१८. प्रांगण—अ. डीलडौलवाला. आ. चौक. इ. एक आभूषण. ई. एक नृत्य.
१९. अविकल—अ. संपूर्ण. आ. गौतम बुद्ध. इ. सम्राट अशोक. ई. सूर्य.
२०. विदुषी—अ. विदूषक का स्त्री रूप. आ. दोषवती. इ. विद्वान स्त्री. ई. विदिशा में रहने वाली.

(सही उत्तर के लिए पृष्ठ पलटिए)

शब्द संपदा सर्वोत्तम धन

उत्तर

१. **ऐंद्रजालिक**—ई. जादुई, सम्मोहक; इंद्रजाल का या इंद्रजालमय; इंद्रजाल करने वाला, बाजीगर.

२. **तात्पर्य**—ई. अभिप्राय, आशय, अर्थ; उद्देश्य.

३. **सौरभ**—अ. सुगंध, ख़ुशबू. मूलतः यह शब्द सुरभि से बना विशेषण है, जिस का अर्थ बनता है सुरभि का या सुरभि वाला अर्थात सुगंधित. लेकिन संज्ञा के रूप में इस का उपयोग व्यवहारसम्मत है. बैल के लिए शब्द है सौरभेय—जो सुरभि गाय से उत्पन्न हुआ हो. सौरभेयी एक अप्सरा का नाम है.

४. **परिमाण**—इ. मापतौल; नापजोख, तौल आदि की दृष्टि से किसी वस्तु की लंबाई, चौड़ाई, भार, घनत्व, विस्तार आदि; मान; चारों ओर का विस्तार.

५. **यंत्रणा**—ई. यातना; बहुत अधिक तीव्र कष्ट या पीड़ा क्लेश. संस्कृत में यंत्र धातु का अर्थ था दमन करना, रोकना, बांधना, कसना, इस से संस्कृत संज्ञा यंत्र यानी यंत्र का अर्थ होता था—बेड़ी, पट्टी, कंठबंध, तस्मा.

६. **अनुग्रह**—इ. कृपा, प्रसाद, छोटों पर किया जाने वाला उपकार.

७. **कोलाहल**—आ. शोर, बहुत से लोगों के एक साथ बोलने से होने वाला हंगामा, जनरव.

८. **प्रासाद**—ई. महल, भवन, गगन चुंबी विशाल भवन, शाही महल.

९. **आघात**—ई. चोट, प्रहार; घाव; धक्का. अन्य लेकिन आजकल अप्रचलित अर्थ: वध; वधस्थल; विपत्ति; पेशाब का रुकना.

१०. **निवारण**—अ. रोकथाम, भावी बाधा या संकट को रोकने के लिए किया जाने वाला प्रयत्न या प्रबंध; हटाना, दूर करना; निषेध, मनाही.

११. **थाह**—आ. गहराई. नदी, ताल, समुद्र, आदि, का तल या नीचे की धरती, इन की गहराई की सीमा या नाप. अब इस का उपयोग मुख्यतः वहीं होता है जहां यह गहराई नापने में कठिनाई हो. जैसे, इस घाट पर पानी की थाह मिलना कठिन है. इस से भी अधिक इस शब्द का उपयोग अब किसी के पांडित्य, मन या विचार के संदर्भ में होता है: थाह लगाना या लेना. थाह का आरंभिक अर्थ था: नदी आदि में वह स्थान जहां बिना डूबे पांव टिक जाएं या तल छुआ जा सके. इस संदर्भ में मुहावरा है—डूबते को थाह मिलना.

१२. **कृत्रिम**—ई. नक़ली, बनावटी, बनाया हुआ; जो प्राकृतिक न हो, काल्पनिक.

१३. **विस्मृति**—अ. भूल जाना, विस्मरण. विस्मय के लिए शब्द है विस्मिति.

१४. **तिलांजली**—ई. परित्याग, सदा के लिए किसी व्यक्ति या पदार्थ या आदत को छोड़ना. तिलांजली एक धार्मिक संस्कार है, जिस में हिंदू मृतक के नाम तिल मिश्रित जल की अंजली देते हैं.

१५. **आधिपत्य**—ई. प्रभुत्व; स्वामित्व; राज्य. अधिपति यानी प्रभु होने का भाव या क्रिया = आधिपत्य.

१६. **पृथक**—ई. अलग, जुदा; जो प्रस्तुत से संबंधित न हो और उस से अतिरिक्त हो; भिन्न प्रकार का; अपने कार्य या पद से हटाया हुआ. पृथक की मूल धातु है प्रथ्, जिस का अर्थ है फेंकना.

१७. **द्योतक**—ई. सूचक. द्योतक का शाब्दिक अर्थ है प्रकाश करने वाला या डालनेवाला. जिस वस्तु या लक्षण से किसी गुप्त या अज्ञात विषय पर प्रकाश पड़े वह उस की द्योतक होती है.

१८. **प्रांगण**—आ. चौक, आंगन, मकान के सामने की खुली जगह. आजकल मकान के भीतर के उस स्थान को भी प्रांगण कहते हैं जो चारों ओर से घिरा परंतु ऊपर से खुला होता है.

१९. **अविकल**—अ. संपूर्ण, पूरा, ज्यों का त्यों (जैसे, अविकल अनुवाद).

२०. **विदुषी**—ई. विद्वान स्त्री. विद् का अर्थ है जानना. विदुष कहते है विद्वान को, अपने विषय के पंडित को, उस का स्त्री रूप है विदुषी.

मूल्यांकन

१८ या अधिक सही .... सर्वोत्तम

१५ से १६ सही .... अत्युत्तम

११ से १४ सही .... उत्तम

पैसा कमाने के तीन कड़े उपाय

—आर्थर एम लुइस

उद्योगपतियों में आख़िर क्या ख़ासियत होती है? इन बड़े बड़े धनकुबेरों और ऊंचाई तक न पहुंच पाने वाले लोगों में आख़िर क्या अंतर होता है?

आधुनिक उद्योगपतियों का स्वभाव इनसानी फ़ितरत का रंग बिरंगा नज़ारा है. एक बेहद मिलनसार है तो दूसरा घोर एकांतवासी; एक शाहख़र्च है तो दूसरा पक्का मक्खीचूस; एक मन मोह लेता है तो दूसरा बेहद बोर है. मगर इन सब में बहुत सी बातें समान भी होती हैं जो साहब बनने के महत्वाकांक्षियों की अनिवार्य विशेषताएं हैं.

यह जानी मानी बात है कि व्यापार को शिखर तक पहुंचाने के लिए कड़ी मेहनत करनी पड़ती है. रोज़ाना बारह घंटों का दफ़्तर, दिन के भोजन के समय भी कारोबारी मुलाक़ातें, रातों को और छुट्टी के दिन भी काम—यह आम दिनचर्या होती है. लोग अकसर इतने परिश्रम को सफलता की कुंजी मानते हैं. मगर काम करना अपने आप में एक लत है. अधिकांश बड़े उद्यमियों को काम की धुन होती है, जो अन्य मनोवेगों जितनी ही शक्तिशाली है. बीवी बच्चों, छुट्टियों और शग़ल शगूफ़ों के मुक़ाबले वे काम को तरजीह देते हैं. जिन उद्यमियों में ऐसी प्रतिबद्धता का अभाव होता है, उन पर प्रतिबद्ध व्यवसायी निश्चय ही हावी हो जाते हैं.

कितने ही उद्योगपति बिला हुज्जत क़बूल करते हैं कि उन्हें काम का नशा है. अटलांटा के नौजवान, लाओ बाली सेठिए राबर्ट एडवर्ड टर्नर तृतीय ने 'प्लेब्वाय' पत्रिका को दिए एक इंटरव्यू में कहा है: "घर वालों की मैं सारी आवश्यकताएं पूरी कर चुका हूं, फिर भी कमाए जा रहा हूं. क्यों? यह ऐसी मस्ती है जो छोड़ते नहीं बनती." युनाइटेड टेकनालाजीज़ के चेयरमैन हैरी ग्रे को भयंकर ऐक्सीडेंट के कारण अस्पताल में भरती होना पड़ गया. इस पर उन्हों ने फ़ाइलें लिए दिए अपने सेक्रेटरी को भी वहीं बुलवा लिया, और महीनों पीठ के बल लेटे लेटे कारोबार निपटाते रहे.

ये उद्योगपति इस क़दर कार्यनिष्ठ होते हैं कि

"द टाइकून" से संक्षिप्त. कापीराइट १९८१ आर्थर एम लुइस प्रकाशकः साइमन एंड शूस्टर कंपनी, न्यू यार्क.

छुट्टी वुट्टी उन के लेखे एक बेहूदगी है. अमेरिकन स्टैंडर्ड इनकारपोरेटेड के अध्यक्ष विलियम मार्क्वार्ड दीर्घावकाश के बजाय दीर्घ सप्ताहांतों के धनी हैं. वे कहते हैं, ''चौथा दिन बीतते न बीतते मुझे अकुलाहट होने लगती है.'' अटलांटा की फूक्वा इंडस्ट्रीज़ के संस्थापक जान ब्रुक्स फूक्वा एक बार दो सप्ताह की छुट्टी मनाने स्विट्ज़रलैंड गए, मगर तीन दिन बाद ही दफ़्तर लौट आए. कहने लगे, ''महल सारे एक से होते हैं, एक देखा तो सभी देख लिए.''

दौड़ के घोड़े. विलक्षण कार्यानुरक्ति के तोष के लिए उद्योगपतियों को असाधारण ऊर्जा चाहिए. बहुतेरे होनहार, युवा उद्यमी केवल इस लिए सफल नहीं हुए कि उन के कस बल जुदा क़िस्म के थे. ज़ेराक्स के पीटर मैककोलो कहते हैं, ''जल्दी ही यह पता चल जाता है कि कौन दौड़ में पिछड़ जाएगा.'' यही बात लिटन इंडस्ट्रीज़ के टेक्स थार्नटन ने कही है: ''दौड़ाक घोड़ों का पालन पोषण दौड़ के लिए ही किया जाता है. यही बात मनुष्यों पर भी लागू होती है. उद्यम संस्कारों में होता है.''

परंतु ए एम इंटरनेशनल के अध्यक्ष राय ऐश ऐसा नहीं मानते. वे यह तो मानते हैं कि ''कुछ में जीवट होता है और कुछ में नहीं. लेकिन आदमी आवश्यकता के अनुसार ख़ुद को ढाल सकता है. यह एक मानसिकता है. लंबी दौड़ लगाने वाले थकान महसूस होने पर दौड़ना तो नहीं बंद कर देते.''

ये उद्योगपति थकान को दुर्बलता अथवा लगन के अभाव का प्रतीक मानते हैं. ''और,'' एक उद्यम भीम के अनुसार, ''आप की थकान आप के सहायकों के लिए समस्या बन सकती है. आप समझने लगते हैं कि उन की स्थिति भी आप जैसी ही है, और आप को लगता है कि आप उन्हें खपाए दे रहे हैं.''

सफल उद्यमियों को कड़ी मेहनत की प्रेरणा कहां से मिलती है? धन की कामना आदमी को व्यवसाय की ओर उन्मुख तो करती है, परंतु ऊंचाइयां छूने का प्रेरक धन नहीं होता, यह प्रेरक है सत्ता की लालसा.''

कुछ चोटी के उद्योगपति इस सत्ता लोलुपता को ईमानदारी से स्वीकार भी करते हैं; हालांकि यह शब्द आजकल लोकतंत्र के हिमायतियों को वारा नहीं खाता. मानसिटो कंपनी के प्रधान अधिकारी जान वेलर हैनली को अब तक याद है कि किशोरावस्था से ही वे दूसरों से अपनी मनचाही करा लेने के फ़िराक़ में रहते थे. शुरू शुरू में वे एक सोडा वाटर की दुकान पर काम करते थे, तब भी वे ग्राहकों से माल्ट मिश्रित मिल्क शेक में अंडा डाल कर पीने का आग्रह करते रहते थे. डोनाल्ड नेल्सन फ़्राई अपने परिश्रम के बल पर ४४ वर्ष की आयु में फ़ोर्ड मोटर्स के ग्रुप वाइस प्रेज़िडेंट बन गए, पर उन्हें तसल्ली नहीं हुई. कहते, ''मुझे एक पूरा कारोबार ख़ुद चलाना है.'' अतः फ़ोर्ड को छोड़ कर वे बेल एंड हावेल के प्रधान अधिकारी बन बैठे. यह कंपनी फ़ोर्ड के मुक़ाबले बित्ता भर की थी, मगर 'पूरी की पूरी' उन के तहत थी.

जीता जागता प्रमाण. अफ़सराना लवाज़मात—भत्ते तथा अन्य सुविधाएं—उद्योगपतियों की सत्ताकांक्षा की छवि होती हैं, क्योंकि ये इस बात का जीता जागता प्रमाण होती हैं कि लाट साहब पधारे हैं. जेट विमान उन्हें अपने विभिन्न व्यावसायिक अड्डों तक पहुंचाते हैं, तो अवकाश-कालीन आवासों से लौटाने के लिए हेलिकाप्टर भेजे जाते हैं, और तीज त्योहार की ख़रीदारी के लिए बंदे आदाब बजाते घूमते हैं. सूट सिलवाना हो तो दर्ज़ी, और हजामत बनवानी हो तो नाई दौड़े दौड़े घर आ जाते हैं.

उद्योगपति विकट स्पर्धी होते हैं, और जीतने में उन्हें बेहद आनंद आता है. स्पर्धा से बचने या डरने

वाले अधिक सफल नहीं हो पाते, क्योंकि व्यावसायिक उत्कर्ष स्पर्धाओं की अनंत श्रृंखला है. एकाधिकार के बल पर पनपने वाली कंपनियों में, जिन्हें बाहरी स्पर्धा का भय नहीं होता, स्तरमान बनाए रखने के लिए आंतरिक स्पर्धा को प्रोत्साहन दिया जाता है.

राय ऐश स्पर्धा की भावना को सत्ता की आकांक्षा का ही विस्तार मानते हैं. उन का कहना है, "सत्ता और जीत अलग अलग नहीं है. जीतने की तमन्ना के बिना ताश की चौकड़ी या शतरंज की बिसात पर कौन समय गंवाना चाहेगा ?"

यह मात्र संयोग नहीं है कि अनेक उद्योगपति छात्र जीवन के दौरान खेल स्पर्धाओं में सक्रिय रहे हैं. पेप्सीको के डोनाल्ड केंडल तथा राकवेल इंटरनेशनल के राबर्ट एंडरसन ने, फुटबाल नार्टन साइमन के डेविड माओनी ने बास्केट बाल की छात्रवृत्तियों की बदौलत कालेज की पढ़ाई पूरी की थी. माओनी का कहना है कि स्कूल में उस के खेल प्रशिक्षक उन के जीवन के सब से महत्वपूर्ण लोगों में से थे. "वे मेरे ज़हन में यहीं बैठाते रहते थे कि तुम्हें लक्ष्य तक पहुंचना है; तुम पहुंच सकते हो, तुम्हें पहुंचना चाहिए—और भरसक करोगे तो ज़रूर पहुंचोगे." वे कहते है, "हारने से मुझे सख़्त नफ़रत है." उन का प्रिय वाक्य है—"तुम मुझे अच्छा हारने वाला दिखा दो तो मैं तुम्हें महज़ हारने वाला दिखा दूंगा !"

शिखर तक पहुंचने वाला लगभग प्रत्येक व्यक्ति सामान्य से कहीं अधिक मेधावी होता है. परंतु, शिखर तक पहुंचने के लिए मेधा के बजाय कटिबद्धता ज़्यादा ज़रूरी है. इस संबंध में जाने माने प्रबंध विशेषज्ञ पीटर एफ़ ड्रकर ने लिखा है: "असाधारण बौद्धिक क्षमता वाले लोग बहुधा अत्यंत असफल सिद्ध होते हैं. वे नहीं समझ पाते कि अंतर्दृष्टि न तो कोई उपलब्धि है, न अध्यवसाय." टेलेडाइन नामक वाणिज्य साम्राज्य के संस्थापक हेनरी सिंगलटन के कथन से भी यही भाव प्रतिध्वनित होता है: "पर्याप्त मेधा न होने के बावजूद कुछ लोग असाधारण काम कर दिखाते हैं. सिर्फ़ इस लिए कि वे जुटे रहते हैं."

मैं जानता हूं. उद्योगपति ज़बरदस्त जिज्ञासु होते हैं. होनहारों का गुण उन के कैरियर के आरंभ में ही स्पष्ट हो जाता है : वह कभी भी अपनी जगह पर नहीं बैठता. दूसरे विभागों में घूमता, लोगों से सवाल जवाब करता, उन्हें परामर्श देता, सब को तंग करता रहता है. तरक़्क़ी करने के बाद भी वह जानकारी पाने के लिए उतना ही पागल रहता है. ए टी एंड टी के भूतपूर्व प्रधान अधिकारी जान डिबट्स कई बार मेनटेनेंस विभाग के कर्मचारियों के साथ हो लेते, और टेलीफोन लगाने या तारों वारों की मरम्मत में उन का हाथ बंटाते रहते. 'फ़ार्चून' में प्रकाशित उन के शब्दचित्र में उन के एक उपाध्यक्ष का संस्करण है: "बास और मैं एक कमरे के सामने से गुज़रे. उस में ७०-८० लोग काम कर रहे थे. मैं ने पूछा, 'जान, पता नहीं ये सब क्या कर रहे है.' इस पर वह ज़रा तेज़ आवाज़ में बोला, 'पर मैं जानता हूं कि वे क्या कर रहे हैं.'"

उद्योगपतियों की कुछ विशेषताएं भी होती है. मौक़ा न चूकने के मामले में वे लाजवाब होते हैं. निहायत चौकस : एकदम घात में. जाती फ़ायदे का कोई भी मौक़ा हाथ से निकल नहीं सकता : दूसरों की बनिस्बत ये कहीं सख़्तजान और तेज़ तर्रार होते हैं. और नैतिकताभीरु तो बिलकुल नहीं होते. लोगों से निभाने और हाकिम मुसाहिब की मेहरबानी हासिल करने के गुर भी ख़ूब जानते हैं.

इस सब के अलावा ये लोग सच्चे अर्थों में आस्थावान होते है. अपने काम में, अपने माल में, अपनी कंपनी में और निरंकुश उद्योग प्रणाली में उन्हें गहरी आस्था होती है. और क्यों न हो ? इस में उन्हें सफलता जो मिली है ! ❖

हंसते हंसते जीना

एक बार मासाचुसेट्स की पार्लियामेंट में एक भड़भड़िया सदस्य को दूसरे सदस्य ने एक कहानी सुना कर डांटा : "एक बार एक नवयुवक बोस्टन में सेंडविच खाता गुज़र रहा था. सेंडविच से मांस का एक टुकड़ा नीचे गिर गया जिसे वहां बैठी गाने वाली एक चिड़िया ने उठा लिया. सुबह का समय था और चिड़िया बहुत प्रसन्न थी कि सुबह सुबह ही पेट भर गया और सारा दिन चुगने की भागदौड़ से जान छूटी."

"चिड़िया प्रसन्नता से गाने लगी. अचानक वहां घूमती एक बिल्ली का ध्यान उस ओर गया और आंख झपकते ही उसे चट कर गई."

"यही कहानी का अंत है," सदस्य ने चैंबर के दूसरी ओर बैठे सिनेटर को देख कहा, "और कहानी की सीख यह है कि जब मुंह भरा हो तो उसे कभी मत खोलो."

—जान पार्कर

मेरे मित्र को पता चला कि आपरेशन से उस के नया दिमाग़ लगाया जा सकता है. वह संबंधित अस्पताल में पहुंचा. और उस ने डाक्टरों से दिमाग़ की क़िस्में पूछीं.

"यह देखिए," एक डाक्टर ने कहा, "यह इंजीनियर का दिमाग़ है. तेज़ कल्पनाशील और मेधावी. यह आप को ५०० डालर प्रति औंस मिलेगा."

"इस के अतिरिक्त कुछ और?"

"यह एक वकील का दिमाग़ है—चालाकी, चुस्ती, जोड़तोड़ और धूर्तता का बढ़िया नमूना. इस की क़ीमत १००० डालर प्रति औंस है."

"कुछ और भी है?" मेरे मित्र ने पूछा.

"यह रहा डाक्टर का दिमाग़—कुशाग्र, निपुण, गहराई से सोचने वाला. इस का मूल्य ५००० डालर प्रति औंस है."

"कुछ और दिखाइए," मेरा मित्र उतावला था.

डाक्टरों ने आंखों ही आंखों में एक दूसरे की तरफ़ देख कर कुछ फ़ैसला किया और एक मरतबान की ओर संकेत कर के धीरे से एक डाक्टर बोला, "यह एक विधायक का दिमाग़ है. इस की क़ीमत २,५०,००० डालर प्रति औंस है."

"बाप रे, इतना महंगा?" मेरा मित्र हैरानी से बोला.

"हां, इस के दो कारण है. पहला, इसे कभी इस्तेमाल ही नहीं किया गया. दूसरा यह कि अनेक विधायकों की चीर फाड़ के बाद मुश्किल से एक औंस हाथ लगता है."

—जे डी

हम स्काटलैंड के पहाड़ी प्रदेश में छुट्टियां बिता रहे थे तो हमें स्थानीय हास्य व्यंग्य के तीखेपन का पता चला. पर्थ पहुंच कर हम ने एरोल गांव जाने का निश्चय किया. वहां मेरे पूर्वज

से साल पहले रह चुके थे. मैं रेलवे स्टेशन गया और एरोल जाने वाली गाड़ियों का समय पूछा. रेलवे अधिकारी ने : या कि हर घंटे बाद गाड़ी वहां जाती है. मैं जैस ही धन्यवाद दे कर वापस लौटने लगा तो उस ने टोका, "सुनिए, आप ने यह तो पूछा ही नहीं कि इन में से कौन सी गाड़ी वहां रुकती है."
—जेम्स रीड

क्रेमलिन में लिओनिद ब्रेज़नेव और आंद्रेइ ग्रोमिको में वार्तालाप : "कामरेड ब्रेजनेव". ग्रोमिको ने सलाह दी. "क्यों न हम सद्भाव का प्रदर्शन करते हुए रूस में दो सप्ताह के लिए लौहावरण हटा दें?"

"लेकिन कामरेड ग्रोमिको," ब्रेज़नेव ने कहा, "अगर ऐसा किया तो रूस में केवल हम और तुम ही नज़र आएंगे."

"बस बस केवल अपनी ही कहिए!" ग्रोमिको ने उत्तर दिया.
—विलियम हाफ़नर

दुर्घटना के मुक॰ में एक आकर्षक युवती बतौर गवाह पेश हुई. बीमा कंपनी के वकील ने उल्टे सीधे सवाल करके उसे बौखलाना चाहा

ताकि वह परस्पर विरोधी बयान दे. वकील ने पूछा, "मेरा ख़याल है कि लिफ़्ट जब टूट कर नीचे गिरने लगी होगी तो आप की आंखों के सामने जीवन भर के सारे पाप घूम गए होंगे."

"अजी आप भी क्या मज़ाक करते हैं," युवती ने चहक कर कहा, "लिफ़्ट केवल नौवीं मंज़िल से नीचे गिरी थी."
—कोट मैगज़ीन

हाल में 'रोलिंग स्टोन' पत्रिका में अनूठा वर्गीकृत विज्ञापन छपा :

एरिक को नसबंदी पर बधाई.

तुम्हारी प्रिय पत्नी और बच्चे—क्रमशः क्रिस, एडा, जार्ज, कैरोल, योलांडा, जोन, शिरले, सूसन, अनिता, एलीन, जैकी, शीला, ब्रुस, डीन, फ्रैंक और मेक्सीन.

आठ साल का नन्हा जूनियर फ़ुटबाल मैच में छाया था. हालांकि मैच का आधा समय बाक़ी था, मगर वह अपनी टीम की तरफ़ से हुए पांच में से चार गोल कर चुका था. दूसरी टीम अभी तक कोई गोल नहीं कर पाई थी.

मैच के अंत में उस लड़के ने फ़ुटबाल को विरोधी खिलाड़ियों के बीच से निकाला और तेज़ी से गोल की ओर ले चला. गोल के पास पहुंचते ही उस ने धीरे से गेंद को ठोकर मारी और वह गोल में पहुंचने के बजाए बराबर से निकल गई.

मैच की समाप्ति पर लड़के के पिता ने पूछा, "तुम ने ऐसा क्यों किया? तुम आसानी से एक और गोल कर सकते थे."

"लेकिन पापा," बच्चे ने उदासी से कहा, "मुझे तरस आ गया, उन का गोलकीपर रो रहा था.
—एच डब्लू गार्डनर

"आप की लड़की से मिलते-जुलते मुझे पंद्रह साल हो गए," शर्मीले देहाती प्रेमी ने प्रेमिका के पिता से कहा. "आप को हमारी शादी पर कोई आपत्ति तो नहीं?"

"कतई नहीं," राहत की सांस ले प्रेमिका के पिता ने कहा, "मैं तो समझा, तुम पेंशन की बात कर रहे हो."—'कूरियर-जरनल मैगज़ीन', लुईविल

अपने दीवालों को खूबसूरती का ऐसा निखार दीजिए जो हमेशा साथ निभाये

सोमानी पिल्किंगटन के वाल टाइल्स—टिकाउ; खूबसूरती और सेहत के लिए पहली पसंद

एकदम सही-सही माप के...
एस पी एल टाइल्स एकदम सही-सही माप में बनते हैं जिससे जोड़ होते हैं बेजोड़ और फिनिश शानदार।

लगाना भी बेहद आसान...
प्रत्येक टाइल के पिछले भाग का खास पैटर्न दीवाल पर सख्त जकड़ की गारंटी है।

दिलकश रंग और डिजाइनें...
हल्के मोहक रंग और खूबसूरत डिजाइनों के एस पी एल टाइल्स हर मिजाज़ और बनावट से मेल खाए।

अनगिणत नये-नये पैटर्न के निर्माण की संभवनाएं...
एस पी एल टाइलों की मदद से आप जैसे और जितने चाहें दिलकश डिजाइनों का निर्माण कर सकते हैं: विशेषत: आयताकार टाइलों से।

लाजबाब क्वालिटी...
भारत से सबसे ज्यादा निर्यात किये जाते हैं एस पी एल टाइल्स जो दुनिया के बेहतरीन टाइलों के टक्कर के होते हैं। तभी तो, वर्षों बाद ये दिखते हैं नये के नये।

अब आकर्षक मूल्य पर बहुतायत से मिलते हैं। विविध रंगों और डिजाइनों की जानकारी अपने डीलर से हासिल कीजिए

रंगों और डिजाइनों की नयनाभिराम शृंखला

एस पी एल टाइलों को सही ढंग से बैठाने के लिए प्रत्येक कार्टन के साथ दिये गये जड़ाई-निर्देशों को देखिए।
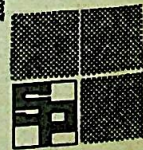
सोमानी-पिल्किंगटन्स
टाइलों में है सौंदर्य का अगाध भंडार
२, रेड क्रॉस प्लेस,
कलकत्ता ७०० ००१

SAA/SPL/3A9 HIN

वर्ष २ : अंक १३

सर्वोत्तम रीडर्स डाइजेस्ट

फ़रवरी १९८२

बलात्कार का प्रतिकार

बलात्कार स्त्री ही नहीं, मानवमात्र के प्रति अत्याचार है. अफ़सोस यह है कि बदनामी के डर से अधिकांश महिलाएं ऐसी घटनाओं की रपट नहीं लिखातीं और अपराधी बेदाग़ बच जाता है—अपराध करते रहने के लिए. यहां प्रस्तुत है एक नारी के संघर्ष की सत्यकथा, हमारी नारियों के लिए सर्वोत्तम आदर्श

—वाल्टर मिशनर

मई १९७८; पकिप्सी (न्यू यार्क) का रिवर-फ्रंट पार्क. समय रात के करीब १० बजे. पिकनिक मनाने आए परिवार जा चुके थे, मगर एक कला एवं विज्ञान केंद्र की मुलाज़िम २५ वर्षीय बारब्रा* फ्रीमैन एक बेंच पर बैठी अपने मित्र डेविड का इंतज़ार कर रही थी. सहसा कुछ आवाज़ें सुन कर उस ने सिर घुमाया और देखा तीन युवक उसी की तरफ़ बढ़े चले आ रहे हैं. फिर एक उस की दाहिनी ओर दूसरा बाईं ओर बैठ गया; और तीसरा ऐन उस के पीछे खड़ा रहा.

सिर पर ख़तरा मंडराते देख कर भी उस ने भरसक शांत रहने की चेष्टा की. लड़के सवाल पर सवाल करने लगे: अकेली हो? पार्टी में चलोगी?

"मेरे मित्र सड़क पर ही हैं," उस ने उन्हें डरा कर भगाने की आशा से कहा.

उन की बातचीत से बारब्रा को लगा कि वे आपस में कुछ इशारे कर रहे हैं. और ज्यों ही उस ने उठने की कोशिश की, तीनों उस पर टूट पड़े.

वह तड़फड़ाती और चीख़ती रही, पर वे उसे कंधों और टांगों से दबोचे पार्क के शौचालय की ओर ले चले. बोले कि यदि वह अपने हाथ पैर तुड़वाना नहीं चाहती और अपनी सलामती चाहती है तो मुंह सी ले. इस पर भी वह जूझती रही और बराबर मिन्नत करती रही. लेकिन हमलावरों के कानों पर जूं

*गोपनीयता की दृष्टि से कुछ पात्रों को काल्पनिक नाम दे दिए गए हैं.

तक नहीं रेंगी. उस के साथ बार बार बलात्कार कर के वे चंपत हो गए.

बाग़ीचे में चहलक़दमी करते किशोर वय जोड़े को बारब्रा फ़्रीमैन पहले तो चुड़ैल लगी होगी. बदन पर तार तार कपड़े और मैले, सने भीगे बाल—अंधेरे में से वह सहसा उन के सामने आ खड़ी हुई और हांफती हुई बोली, "मुझ से डरो मत. तीन आदमियों ने मिल कर मेरा सर्वनाश किया है. मुझे मेरी कार तक पहुंचा दो."

दोनों किशोर सहारा दे कर उसे उस की कार तक ले जा रहे थे. उसे अपना मित्र डेविड दिखा. वह दौड़ती हुई उस की बांहों में समा गई—उस की रुलाई फूट पड़ी.

बारब्रा इस घटना को यहीं समाप्त कर सकती थी, जैसा कि बलात्कार की शिकार लड़कियां प्रायः करती हैं. बहुत सी लज्जा के कारण शुभचिंतकों और परिवार वालों से वास्तविकता छिपाती रहती हैं, बहुत सी बलात्कारियों द्वारा प्रतिशोध के भय से पस्त पड़ जाती हैं. और बहुत सी यह जानती है कि पुलिस में बलात्कार की रिपोर्ट करना बहुधा निष्फल जाता है. अमरीका में तो पचहत्तर प्रति शत अपराधी बेदाग़ बरी हो जाते हैं.

इन सब अड़चनों के कारण अधिकांश बलात्कार पीड़ित स्त्रियों का चुप्पी साध जाना स्वाभाविक भी है, किंतु बारब्रा फ़्रीमैन चुप नहीं रही. उस का मत यह था कि उन तीनों बलात्कारियों के खिलाफ़ कारवाई न करने का मतलब होगा कि उन के दुष्कर्म की शिकार होने वाली वही आख़िरी अभागिन नहीं होगी. डेविड पुलिस को फ़ोन करने लपका.

प्रतिज्ञा. दो जासूसों ने बारब्रा से मुख़्तसर सी पूछताछ की, फिर उसे गाड़ी में बिठा कर अस्पताल ले गए. उस की पीठ और टांगों पर गहरी खरोंचें थीं, और शरीर बुरी तरह नुचा चुथा था. इस के बाद उसे पुलिस स्टेशन ले जाया गया—जहां वह चार घंटों तक आपबीती और बलात्कारियों का हुलिया दोहराती रही. दो बलात्कारी बेहद लंबे और ताक़तवर थे. उस ने उन्हें एक दूसरे को 'लेस' और 'जानसन' के नाम से पुकारते सुना था. किंतु पुलिस के फ़ोटो संग्रह में उसे उन जैसा कोई भी चेहरा नज़र नहीं आया. पुलिस वाले उस से हमदर्दी से पेश आए थे, पर थाने से निकलते वक्त बारब्रा को ऐसा लगा मानो उन के लेखे तफ़्तीश पूरी हो चुकी है.

बारब्रा सुबह ४ बजे घर पहुंची. वह यह समझने की कोशिश करने लगी कि दरअसल उस पर क्या गुज़री है. आक्रमण की क्रूरता से वह स्तब्ध रह गई थी. जो भी बीती थी, उस ने दुनिया को एक नया और जघन्य रूप दे दिया था. वह ऐसी दुनिया में रहना नहीं चाहती थी, जहां बलात्कारी स्वच्छंद विचरते हों. उस ने प्रतिज्ञा की कि यदि पुलिस उस की असमत लूटने वालों का पता लगाने में असफल रही तो वह खुद उन्हें खोज निकालेगी.

अगले दिन बारब्रा ने काम से दो सप्ताह की छुट्टी ले ली; फिर वह डेविड के साथ इस मुहिम पर जुट गई.

पहले तो उन्हों ने पूरी दुर्घटना पर बार बार विचार किया. रह रह कर बारब्रा ने बलात्कारियों की आपसी बातचीत याद की. एक ने कहा था कि वे लास एंजेलस से आए है, और यहां से गुज़र रहे है. बारब्रा को लगा कि वे जानबूझ कर इस बात पर ज़ोर दे रहे थे. उन्हीं में से एक ने एक छोटे से स्थानीय नाइट क्लब का

बलात्कार : आत्मरक्षा और रोकथाम के कुछ उपाय

१. बाहर की निस्बत घरों में बलात्कार ज़्यादा होते हैं. आगंतुक के बारे में हर तरह से संतुष्ट हो कर ही उसे घर में घुसने दें. दरवाजा खोलने से पहले अच्छी तरह जान लें कि कौन मिलने आया है.

२. स्कूल जाने वाली छात्राओं के साथ बलात्कार ज्यादा होते हैं. उन्हें आत्मरक्षा की शिक्षा दें. आप की बेटी किसी बड़े या निकटस्थ की ग़ैरहाज़िरी में लड़कों या पुरुष मित्रों की आवभगत कतई न करे; और उन्हें घर में न आने दें. आप को पता होना चाहिए कि वह कब, कहां और किस के साथ है. बंधु मित्रों की टोली में ही उस का यात्रा करना निरापद है. ऐसा अनुशासन रखें कि वह समय से घर लौटे.

३. सांझ घिरने के बाद लड़कियों का अकेले बाहर घूमना ठीक नहीं. किंतु यदि घूमना ही पड़े तो वे घरों के दरवाज़ों, झाड़ झंखाड़ और कहीं खड़ी की गई कारों से बरबार दूर रहें.

४. यदि कोई पीछा कर रहा हो, तो तब तक सीधे घर की ओर न भागें जब तक कि वहां कोई सहायता करने वाला न हो. अन्य लोगों को सहायता के लिए पुकारें; दौड़ना, चीखना, तेज़ सीटी बजा कर दूसरों को सचेत करना सुरक्षा के आजमाए हुए अस्त्र हैं.

५. आक्रमण की स्थिति में आक्रमण और अपनी शक्ति का पूरा पूरा जायज़ा लें. सशस्त्र आक्रमक का सबल प्रतिरोध न करना सामान्यतः सुरक्षात्मक होता है. निहत्था हमलावर हमले के दौरान चूक सकता है जो आप के लिए छूट भागने का सुअवसर होगा. ध्यान रखें, सुरक्षा के लिए रखा गया कोई हथियार आप के ही विरुद्ध काम आ सकता है.

६. यदि बचाव, भागना या मुक़ाबला संभव न हो तो बुद्धिमत्तापूर्ण, तार्किक वार्तालाप से हमलावर का ध्यान बंटाया जा सकता है. कम से कम उस के आक्रमण की तीक्षणता तो कम की ही जा सकती है.

७. बलात्कार हो ही जाए तो तत्काल पुलिस में रपट लिखाएं, डाक्टरी सहायता लें और क़ानूनी कारवाई करने से न चूकें.

—'हाउ टु प्रोटेक्ट योरसेल्फ़ फ़्राम क्राइम' से

ज़िक्र किया था. "अगर वे कहीं बाहर से आए होते तो उन्हें उस क्लब की जानकारी कैसे हो सकती थी. मेरे मन ने कहा कि वे पकिप्सी के ही हैं."

इस के बाद आततायियों का हुलिया बताते, तरह तरह के सवाल पूछते बारब्रा और डेविड गली गली भटकने लगे. वे पूरी तरह सतर्क थे. शायद तीनों बलात्कारी इस नगर में ही हों. वे उन्हें यह पता नहीं लगने देना चाहते थे कि कोई उन्हें ढूंढ़ रहा है. रोज़ रोज़, बार बार अपनी कहानी दोहराना किसी अग्निपरीक्षा से कम नहीं था किन्तु इस से बारब्रा का आवेश बना रहा और पीड़ा सहने की क्षमता निखरती गई.

डरी हुई रेज़ीना. आखिर बारब्रा उस नाइट क्लब में पहुंची जिस का बलात्कारियों ने ज़िक्र किया था. मगर लगा कि मालिक उस के बताए हुलिए के शोहदों को पहचानने में

असमर्थ रहा. कई दिन बाद भी कोई सुराग हाथ नहीं लगा. तब किसी ने बारब्रा को रेजीना नाम की एक औरत से मिलने का कहा. रेजीना पचीस तीस के बीच की एक शक्की नीग्रो स्त्री निकली. कुछ सप्ताह पूर्व उस से तीन आदमियों ने बलात्कार किया था. हालांकि वह उन्हें बख़ूबी जानती थी, पर पुलिस से शिकायत करते हुए घबरा रही थी. बारब्रा को उस ने तीनों का हुलिया बताया. उन में से पहला तो बारब्रा को अपरिचित लगा, पर बाक़ी दोनों करीब करीब वही थे.

रेजीना थाने जाने से इस कदर डर रही थी कि उसे बार बार भरोसा दिलाना पड़ा. बारब्रा बोली, "अगर हम इन लोगों को यूं ही छोड़ देंगी तो वे औरतों की इज़्ज़त लूटते ही रहेंगे. अगली दफ़ा वे किसी की जान भी ले सकते हैं."

रेजीना बोली, "पुलिस काली औरतों पर यकीन नहीं करती. मैं कुछ नहीं कर सकती."

"कर सकती हो," बारब्रा ने ज़ोर दिया. "मेरी मदद कर के तुम अपनी भी मदद करोगी. हम दोनों को एक दूसरे की ज़रूरत है."

आखिर रेजीना राज़ी हो गई.

अगले दिन सुबह बारब्रा की सहायता और प्रत्साहन से रेजीना ने अपने बलात्कार की रिपोर्ट पुलिस में लिखवाई तो बारब्रा के बलात्कारियों म दो की शिनाख्त हो गई. ये थे जो जानसन और जेम्स जानसन नाम के दो भाई. उस के अगले दिन दोनों गिरफ्तार भी कर लिए गए, पर कुछ ही घंटों में जमानत पर वे फिर छुट्टे घूमने लगे. फिर भी कम से कम उन की तसवीरें अब पुलिस रेकार्ड में आ गई थीं. (प्रमाणों के अभाव में रेजीना का मुक़दमा खारिज हो गया).

दो दिन बाद बारब्रा पुनः पुलिस स्टेशन पहुंची और तसवीरों की फाइलें देखने लगी. अपनी तीन बलात्कारियों में से दो पर उस ने उंगली रखी तो जानसन बंधु उसी सप्ताह दूसरी बार पकड़ लिए गए. उन पर दोबारा बलात्कार का आरोप लगा पर वे दोबारा ज़मानत पर छूट गए. तीसरे बलात्कारी की अभी तक कोई खोज ख़बर नहीं थी.

उसी शाम नाइट क्लब के मालिक ने बारब्रा को फ़ोन किया. उस ने कहा कि वह जानसन बंधुओं को पहचानता है. उस ने यह भी स्वीकार किया कि वे उस के यहां काम करते थे. उसे यह लगा ही नहीं था कि वे बलात्कारी भी हो सकते है.

लंबी कानूनी लड़ाई. बारब्रा का मुक़दमा असिस्टेंट डिस्ट्रिक्ट अटार्नी जिम ओ' नील को सौपा गया. यह उस का सौभाग्य ही था कि ओ' नील बलात्कार को गंभीर अपराध मानता था. और उस ने पाया कि बारब्रा अडिग और बढ़िया गवाह है. उसे अरुचि न होने लगे (जैसा कि बलात्कार के अधिकांश मामलों में इस्तग़ासे की साक्षियों के साथ अकसर होता हैं), इस लिए बग़ैर वक्त गंवाए ओ' नील ने ख़ुद को पूरी तरह से काररवाई में झोंक दिया.

सितंबर के मध्य में बारब्रा ग्रैंड जूरी के सामने पेश हुई नागरिकों की यह समिति अभियुक्त पर लगाए गए आरोपों की जांच पड़ताल कर के उसे प्रामाणिक अथवा असत्य सिद्ध करती हैं. जूरी के २३ सदस्यों के सामने उस ने अपने शील भंग के हर ब्योरे को अत्यंत जीवंत शब्दों में दोहराया. उस का बयान ख़त्म होने पर जूरी ने जो और जेम्स जानसन को बारब्रा से तीन बार बलात्कार और दो बार अप्राकृतिक मैथुन करने का अपराधी घोषत किया.

मुक़दमा अभी जारी था, पर कारवाई का 'सहल' दौर निपट चुका था. बलात्कार के मामलों में चूंकि साक्षी प्रायः दुर्भाग्य की मारी औरत मात्र होती है, इस लिए अधिकांश मुक़दमें 'सहमतिजन्य' संभोग मान कर टरका दिए जाते हैं. अभियुक्त जानसन बंधुओं ने भी बाद में यही कहा कि बारब्रा ने सहमति का संकेत दिया था.

महीनों निकल गए. मुक़दमा बार बार मुल्तवी होता रहा. बारब्रा को कई बार जानसन बंधु राह चलते दिखते. उसे लगने लगा कि उस का इंतजार और तनाव कभी खत्म नहीं होगा.

अप्रैल १९७९ में, जब फ़ैसले की घड़ी क़रीब आने लगी तो परिस्थिति ने सहसा नया मोड़ लिया. जो जानसन को अब लगा कि उस का शिकार बदले पर आमादा है और वह घोर संकट में पड़ने वाला है. जघन्यतम कोटि के बलात्कार के अपराध में पचीस वर्ष के कठोर कारावास की आशंका ने उस के सामने एक ही रास्ता छोड़ा: वह कम कुत्सापूर्ण अपराध स्वीकार ले, और अपने भाई के ख़िलाफ़ मुख़बिर बन जाए. उस ने डिस्ट्रिक्ट अटार्नी से तीसरे बलात्कारी को पकड़वाने का वादा किया.

ओ'नील ने बारब्रा को इस सौदे की बाबत बताया तो विह खिन्न हो उठी. वह जानती थी कि यह सौदा मंजूर करने का मतलब होगा कि एक वास्तविक बलात्कारी नाम मात्र के दंड के बाद वापस गलियों में मंडराने लगेगा. किंतु सौदे से इनकार का मतलब था जूरी द्वारा दोनों अभियुक्तों को निर्दोष क़रार देने का जोखिम मोल लेना; और तीसरे अभियुक्त का ताज़िंदगी सुराग़ न पा सकना. अतः वह मान गई.

कुछ दिन बाद, जेब में एक छोटा सा ट्रांस्मीटर डाले जो जानसन ने अपने मित्र 'लेस' डंकन का द्वार जा खटखटाया. गली की नुक्कड़ पर खड़ी पुलिस की गाड़ी में उन दोनों की बातचीत रेकार्ड हो रही थी, जिस का विषय थी वह रात, जब उन्हों ने बारब्रा फ्रीमैन से बलात्कार किया था. जानसन के वहां से जाने के कुछ ही घंटे बाद पुलिस ने डंकन को धर दबोचा. अभियोग पत्र बना और सुनवाई की तारीख़ मुक़र्रर हुई. इस बीच भाई की मुख़बिरी से पस्त हो जेम्स जानसन ने जो के ख़िलाफ़ शहादत देने के बजाय जुर्म क़बूल कर लिया.

२६ अप्रैल १९७९ को 'प्रथम क्रम के यौन दुर्व्यवहार' के लिए जो जानसन को जिला जेल में एक वर्ष की सजा हुई. उस के भाई को 'प्रथम क्रम के बलात्कार' के अपराध के तहत प्रांतीय कारावास में १२ वर्ष की सज़ा सुनाई गई. लेसली डंकन के साथ कोई रियायत नहीं बरती गई—चूंकि उस के अपराध की स्वीकृति उस के अपने ही शब्दों में रेकार्ड की जा चुकी थी. जूरी ने उसे तीन बार बलात्कार करने और दो बार अप्राकृतिक मैथुन करने का दोषी पाया और ३१ जनवरी १९८० को उसे विभिन्न अपराधों के लिए ८.३३ वर्ष से ले कर २५ वर्ष लंबे कारावास की सज़ा हुई.

इस बार विषमताओं से घिरे बलात्कारी बच नहीं सके. बारब्रा फ्रीमैन ने संघर्ष किया और उस का शील भंग बलात्कार की एक और अनसुलझी गुत्थी भर मान कर फ़ाइलों में दब नहीं सका. वह कहती हैं, "उन दुष्टों का सड़कों पर आज़ाद घूमना बंद करना ही मेरे ज़ख़्मों का बेहतरीन इलाज था. मैं इस सत्य को झुठला नहीं सकती कि मेरे साथ बलात्कार हुआ, किंतु यदि मुझे इस कड़वी सच्चाई के साथ ही जीना है, तो मुझे इस हादसे से कुछ सीखना भी था. मेरे ख़याल से आज मैं पहले की निस्बत कहीं ताक़तवर हूं." ◆

हर साल जनवरी और जुलाई में दुनिया के कई भागों के लोगों पर फ़ुज़ूलख़र्ची का दौरा पड़ता है, क्योंकि उन दिनों लंदन के हैरौड्स डिपार्टमेंटल स्टोर में सेल लगी होती है

दुनिया की सब से बड़ी सेल

—डेबोरा काउले

यह लंदन है. समय: सुबह के ८ बजकर ५८ मिनट. सारा शहर जनवरी मास की कड़ाके की सर्दी से ठिठुर रहा है. लेकिन पश्चिमी लंदन के फ़ैशनेबल नाइट्सब्रिज क्षेत्र में यातायात ठप हो चुका है. हर पल भीड़ बढ़ रही है और इसी के साथ उत्तेजना और उकसाव में वृद्धि होती जा रही है. यहीं पर चौथाई मील में फैला ब्रिटेन का सब से बड़ा हैरौड्स डिपार्टमेंटल स्टोर स्थित है जो तेज़ रोशनी में जगमगा रहा है. इस समय हज़ारों ग्राहकों की विशाल भीड़ ने इसे घेर रखा है. क्यों? कुछ ही क्षणों में ब्रिटेन का सब से बड़ा ख़रीद फ़रोख़्त का वह हंगामा शुरू होने वाला है, जिस का नाम है—'हैरौड्स विंटर सेल' (शीतकालीन बिक्री).

हैरौड्स डिपार्टमेंटल स्टोर के भीतर भी उत्साह और उत्तेजना का वातावरण बनता जा रहा है. स्टोर के मैनेजिंग डायरेक्टर एलेक्स क्रैडक पहली मंज़िल की एक बालकनी में समुद्री जहाज के कप्तान की तरह खड़े हैं. यहां से स्टोर का मुख्य प्रवेश कक्ष साफ़ दिखाई

देता है. वे स्टोर के कर्मचारियों को अंतिम हिदायतें दे रहे हैं. उन के आस पास यूरोप, अमरीका और सुदूर पूर्व से आए टेलीविज़न कैमरामैन और अख़बारों के संवाददाता एक दूसरे को धकिया कर अच्छी जगह खड़े होने की कोशिश कर रहे हैं. क्रैडक के हाथ में एक ऐसा रेडियो स्पीकर है, जिस से वे स्टोर के दस प्रवेश द्वारों के दरबानों से बात कर सकते हैं. हर प्रवेश द्वार पर सफ़ेद वरदी में तगड़े सुरक्षा संतरी बांहों में बांहें डाले क़तार में खड़े हैं. क्रैडक की नज़र अपनी कलाई की घड़ी पर है. एकाएक वे स्पीकर पर सदा की तरह समय की घोषणा करते हैं— 'स्टोर के खुलने में एक मिनट रह गया . . .तीस सेकंड रह गए . . .'' स्टोर के बाहर एकत्रित ग्राहकों की विशाल भीड़ किसी फुटबाल के फ़ाइनल मैच के दर्शकों की भांति उत्साह से चिल्ला उठती है. "पांच सेकंड, चार सेकंड, तीन सेकंड, दो सेकंड, एक सेकंड . . . दरवाज़े खोल दो.''

ठीक नौ बजे हैरोड्स डिपार्टमेंटल स्टोर के दरबान एक साथ सभी प्रवेश द्वार खोल देते हैं और कूद कर एक तरफ़ हो जाते हैं. ग्राहकों की भीड़ जैसे धावा ही बोल देती है. भीड़ के रेले का पहला धक्का पंक्तिबद्ध सुरक्षा संतरियों पर पड़ता है. वे धक्का मुक्की करती भीड़ के रेले को एस्कलेटर, लिफ्ट और सीढ़ियों की ओर धकेलते जाते हैं. क्रैडक का कहना है. "ओवरकोट पहने, हाथों में थैले और टोकरियां लिए सामान्य स्त्री पुरुष एकाएक ओलिंपिक के तेज़ धावक बन जाते हैं. पलक झपकते ही वे १४ एकड़ में फैले विशाल स्टोर के हर कोने में पहुंच जाते हैं.''

सेल का जादू

जनवरी १९८१ की विंटर सेल के पहले दिन तीन लाख ग्राहक हैरोड्स डिपार्टमेंटल स्टोर में आए और दस घंटों में ५०,१८,१२० (पचास लाख से भी अधिक) पौंड की नक़द बिक्री हुई. तीन सप्ताह की बिक्री के अंत में कई लाख चीजों की ख़रीद फरोख़्त का जो हिसाब लगाया गया, उस में उल्लेखनीय चीज़ें थीं—पुरुषों के एक हज़ार ब्लेज़र, शैटलैंड की ढाई हज़ार ऊनी टाइयां, साठ मिंक कोट, तंग मोरी की छः लाख पैंटें और ६४ पियानो. सर्वाधिक आश्चर्य हुआ मिट्टी की मूर्तियों के विभाग की अभूतपूर्व बिक्री से: इस विभाग के १५२ वर्ष के इतिहास में, जहां पहले आस पास की गहमागहमी के बीच पूर्ण शांति रहती थी, अब के इतनी मूर्तियां बिकीं कि दुनिया भर के टेरकोटा एंपोरियमों में कहीं मिसाल नहीं मिलेगी.

सरकारी मान्यता प्राप्त लंदन के हैरौड्स डिपार्टमेंटल स्टोर की खिड़कियों पर अंकित 'सेल' शब्द का ऐसा जादू है कि वहां ग्राहक केवल ब्रिटेन के हर भाग से ही नहीं, बल्कि विदेशों से भी खिंचे चले आते हैं. विदेशों से विशेष हवाई जहाजों में आने वाले हजारों ग्राहकों में आप को जरमनी, स्कैंडिनेविया, अमरीका, फ्रांस, इटली, पोलैंड, जापान और अरब देशों के स्त्री पुरुष भी मिलेंगे. इस 'न्यू ईयर सेल' के खजाने का एक खोजी तो हर साल नियमित रूप से आस्ट्रेलिया से भी आता है. बिल्लौरी चीजों का वह दीवाना सीधा स्टोर के चीनी और शीशे के बरतनों के उस विभाग
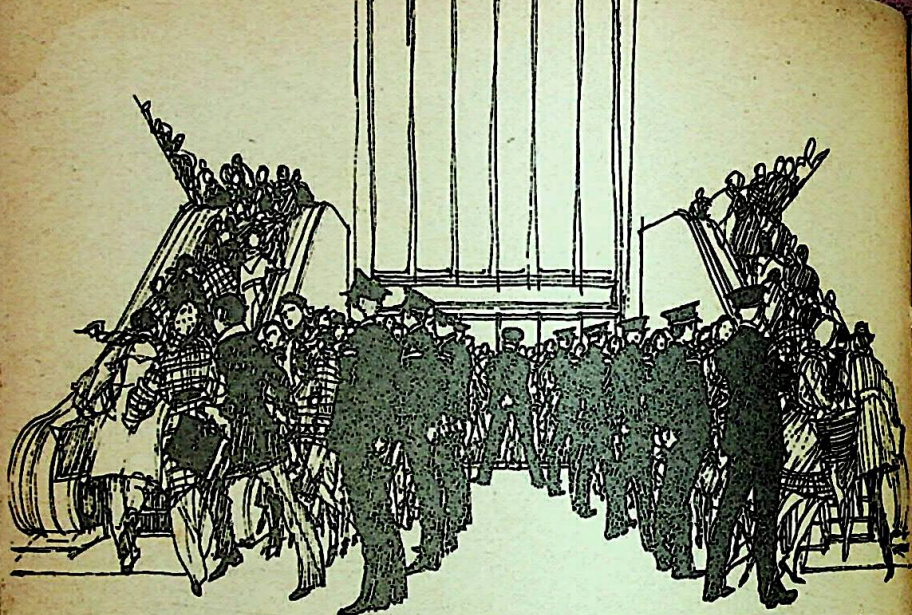
की ओर लपकता है, जो बहुत लोकप्रिय है.

चीनी और शीशे के बरतनों के विभाग को ढूंढ़ना आसान है. आप ऊपर जाती भीड़ के रेले के साथ तीसरी मंजिल पर पहुंच जाइए और फिर उधर बढ़िए, जिधर से प्लेटों की खनखनाहट की आवाज़ बड़े ज़ोर से आती है. वहां फुटबाल के तीन मैदानों के बराबर क्षेत्र में चार कमरे हैं. इन में टकटकी तख़्तों पर विभिन्न पंक्तियों में पांच लाख से भी अधिक बरतन रखे है. चीनी बरतनों की ढेरियां दो फुट ऊंची होती है और शीशे के चमचमाते नाजुक सामान की ढेरियां छः तह ऊंची और तीन गज़ गहरी मिलेंगी. एलेक्स के संकेत पर स्टोर के दरवाजे खुलते ही ग्राहकों की भीड़ हमलावर सिपाहियों की तरह भागती कुछ ही पलों में इस विभाग में पहुंच जाती है. हर एक ग्राहक जल्दी से तारों की बनी टोकरी हाथ में ले लेता है. यह टोकरी धक्का मुक्की कर के मेज़ों के पास जगह पाने के लिए कारगर हथियार का भी काम देती है.

यहां छीना झपटी के बड़े ही मनोरंजक दृश्य दिखाई देते है. इधर दो पुरुष क्राउन डर्बी की मीट डिश के क़ब्ज़े के लिए खींचतान कर रहे है तो उधर दो तीन स्त्रियां बाक़ी बचे एक हौच वाइन गिलास के लिए झगड़ रही हैं. एक के हाथ में गिलास का पेंदा है तो दूसरी के हाथ में उस का हैंडिल. इस छीना झपटी में उस के दो टुकड़े हो जाते हैं. एक ग्राहक रायल डौल्टन के बरतनों के ऊंचे ढेर की निचली तह में रखे एक कटोरे को पाने का तहैया किए है. ज्यों ही वह उसे खींचता है, ढेर का ढेर गिर कर चकनाचूर हो जाता है. दूसरी जगह धक्का मुक्की करते लोगों के ऊपर एक सुरक्षा संतरी किसी के नाजुक पांव से बिछुड़े ऊंची ऐड़ी के जूते को बड़ी बेचारगी से उठाए है.एक कर्मचारी मेजों के बीच से चीनी के टूटे बरतनों के टुकड़ों को बड़े विरल भाव से उठा रहा है. उधर नौ मास की एक गर्भवती स्त्री भीड़ में छटपटाती चिल्ला रही है, "हाय, मुझे निकल जाने दो!" बी बी सी का कैमरामैन

मजेदार टीका टिप्पणी करता इन तमाम दृश्यों को बड़े उत्साह से फ़िल्मा रहा है.

गत वर्ष (१९८१) एक औरत यह देख कर बहुत परेशान हुई कि उस की पसंद के कोलपोर्ट चीनी के सारे बरतन बिक गए है. यह सोच कर कि शायद एक आध बरतन बचा हो, वह अपनी स्कर्ट समेट कर रेंगती हुई मेज़ के नीचे घुस गई. यह बहुत ही जोखिम का काम था. ज्यों ही वह मेज़ के नीचे पहुंची, उस के चारों ओर दूसरे ग्राहकों की टांगों का एक मज़बूत घेरा सा बन गया. वह बुरी तरह फंस गई थी. उस औरत का सौभाग्य ही कहिए कि ग्राहकों के शोर शराबे में उस की करुण पुकार एक सज्जन को सुनाई दे गई. उस ने तुरन्त धक्का मुक्की कर के बड़ी मुश्किल से दूसरे ग्राहकों को मेज के पास से पीछे हटाया और बड़ी मुश्किल से औरत को खींच कर बाहर निकाला.

कुछ चुस्त और साहसिक ग्राहक सेल शुरू होने से दो चार रोज़ पहले आते हैं और 'स्टाप वाच' ले कर यह अनुमान लगा लेते हैं कि किस दरवाज़े से घुसने पर किस विभाग तक पहुंचने में कितना समय लगता है. १९८१ में ऐसे ग्राहकों के चैंपियन थे काली टोपीधारी एक सज्जन. वे स्टोर के बाहर की सड़क से प्रवेश द्वार पार कर और बीसियों सीढ़ियां चढ़ कर फ्लोरेंस के बने फ़ीरोज़ी रंग के वेजवुड बरतनों तक केवल २७ सेकंड में जा पहुंचे थे.
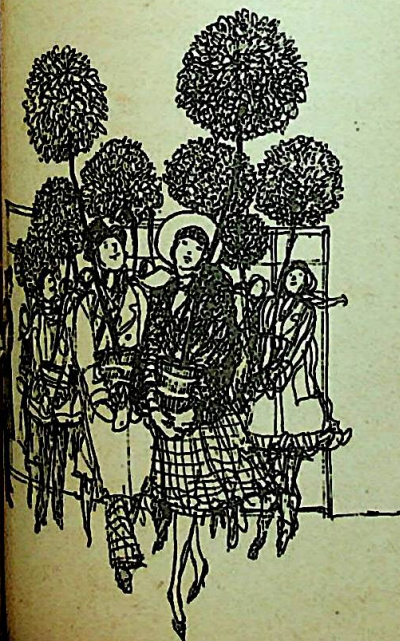
कुछ ग्राहक एक साथ बहुत सा सामान ख़रीदने के लिए गिरोह बना कर आते हैं. आठ सदस्यों के एक परिवार का लक्ष्य वाइल्ड स्ट्राबैरी डिज़ाइन की क्राकरी खरीदना था. परिवार के मुखिया ने अपनी मां को टी पाटों और जगों, पत्नी को प्लेटों और बहन को तश्तारियों तथा प्यालों पर कब्जा करने का काम सौंपा. एक कोने में इकट्ठी की जा रही तमाम क्राकरी की रखवाली के लिए अपने बच्चों को खड़ा कर दिया. दूसरी क़िस्म है अकेले सारा सामान समेटने वालों की. एक साहब क्राकरी विभाग से जीत के डंके बजाते बड़ी शान से निकले. उन्हों ने अपनी दस उंगलियों में दस प्याले लटकाये हुए थे, दो प्याले मुंह से पकड़े थे और बारह तश्तरियां अपनी जेबों में ठूंस रखी थीं. तीसरी दिलचस्प किस्म बुज़ुर्ग ग्राहकों की थी. एक बुजुर्गवार आस पास की छीना झपटी और धक्का मुक्की की परवाह किए बिना बड़े ध्यान और आराम से प्लेटों का साइज फ़ीते से नाप रहे थे. एक दूसरे बुज़ुर्गवार आतिशी शीशे से जांच कर रहे थे कि उन की पसंद की क्राकरी में कहीं कोई चटक तो नहीं है.

"मेरी तौबा!"

चीनी और शीशे के बरतनों के बाद दूसरे नंबर पर आता है पुरुषों के कपड़ों का विभाग. बड़ी सफाई से तह कर के बंडलों में बंधे

कश्मीरी स्वेटर देखते देखते भूसे के ढेर की तरह बिखर जाते हैं और ट्रे में सजी टाइयां गड्डमड्ड फ़ालूदा नज़र आने लगती हैं. कपड़े बदलने के कमरों में बेतहाशा भीड़ होने के कारण ज्यादातर मर्दों को बाहर रैकों के पास ही कोटों और पैंटों की ट्राई करनी पड़ती है. एक दिन स्टोर के असिस्टैंट मैनेजर माइकेल रौस ने देखा कि एक आदमी कपड़े ट्राई कर के भीड़ से गुत्थमगुत्था होता बाहर आया तो उस का सांस फूला था. वह शिकायत भरे स्वर में अपनी पत्नी से बोला, "मेरी तौबा! वहां कोई भी आदमी भले आदमियों के पैरों के नीचे आ कर कुचला जा सकता है."

स्त्रियों के वस्त्र विभाग का वातावरण अवश्य विनोदपूर्ण होता है. यहां वस्त्र बदलने के कामचलाऊ कमरे लकड़ी के चौखटों पर मटमैला कपड़ा लगा कर बनाए जाते हैं. उन कमरों के बाहर आप को कुरसियों की लंबी कतारों में बैठे पुरुष और युवक अपनी पत्नियों और प्रेमिकाओं का इंतजार करते मिलेंगे. एक दिन कामचलाऊ कमरे कपड़ों की ट्राई के लिए लड़ती झगड़ती और कशमकश करती औरतों से ठसाठस भरे थे. अकस्मात एक महिला भीतर से भीड़ द्वारा इस तरह खदेड़ी गई कि वह पीठ के बल एकदम निरावरण बाहर आ गिरी. पुरुष समुदाय ने तालियां बजा कर उस का जिस उल्लास से स्वागत किया, उस की सहज कल्पना आप कर सकते है.

हैरौड्स डिपोर्टमेंटल स्टोर की स्थापना लंदन के ईस्ट एंड के हेनरी हैरौड नामक एक चाय के व्यापारी ने की थी. शुरू में यह ख़ास ख़ास ग्राहकों को ख़ास ख़ास चीज़ें बेचने के लिए प्रसिद्ध था. १९६० तक यह स्टोर बिक्री के दांव पेच से दूर अपने सीमित दायरे में ही काम करता रहा. आज यह पूरे यूरोप का सब से बड़ा डिपार्टमेंटल स्टोर है. इस की छः मंजिली इमारत साढ़े चार एकड़ में फैली है. प्रति वर्ष जनवरी और जुलाई के महीनों में यहां नियमित रूप में 'सेल' आयोजित होती है और इस तरह यह स्टोर एक सुविख्यात संस्था का रूप ले चुका है.

हैरौड्स के विज्ञापन व्यवस्थापक बिल मैटकाफ का कहना है कि इस स्टोर की बिक्री की आश्चर्यजनक सफलता का एक ही रहस्य है और वह यह कि यहां बढ़िया किस्म का माल कम क़ीमत पर बेचा जाता है. सेल के

लिए प्रस्तुत अधिकांश माल वह होता है जो सीज़न की समाप्ति पर बच जाता है. स्टोर का कारखानों के साथ भी संपर्क रहता है. इस सिलसिले में माल की ख़रीद करने वाले डायरेक्टर टोनी क्लार्क ने बताया, "जब कोई कारखाने वाला घोषणा करता है कि वह बरतन धोने वाली मशीन का नया माडल बाजार में ला रहा है तो हम उस से तुरंत पूछते हैं—पुराने माडल का क्या होगा? फिर हम उस से मिल कर पुराने माडल की नई कीमत तय करते हैं जिस का फ़ायदा ग्राहक को पहुंचता है."

कौड़ियों के मोल

पिछले साल जब स्टोर ने ७९९ पौड के रंगीन टेलीविज़न सेट आधी कीमत पर पेश किए तो उन के लिए बिजली विभाग में ज़ोरदार छीना झपटी हुई. इसी तरह गिवेंची वस्त्रों की क़ीमत घटा कर एक तिहाई कर दी गई. छः फ़ुट चौड़े और आठ फ़ुट आठ इंच लंबे दुनिया के सब से बड़े तौलिए की क़ीमत ६० पौड से घटा कर २९.९५ पौड कर दी गई. पांच फ़ुट के सजावटी बे-वृक्ष २० पौड की [illegible] दर पर पहले ही घंटे में हाथों हाथ बिक गए. असिस्टेंट मैनेजर ग्रेम ब्राउन का कहना है कि जब ग्राहक भीड़ भड़क्के में से उन भारी भरकम वृक्षों को उठा कर ले जा रहे थे तो ऐसा लग रहा था मानो जंगल के पांव लग गए हैं. इसी तरह तीन रफ़्तारों वाली साइकिलें [illegible] पौंड की क़ीमत पर हाथों हाथ बिक गईं. ग्राहक उन्हें खरीदते ही हवा हो गए.

असामान्य बहुमूल्य वस्तुओं के खोजी ग्राहकों की उपलब्धियों के कई दिलचस्प क़िस्से हैं. मसलन सीप का बना टब और कमोड़ [illegible] पौंड के बजाए केवल २,०८० पौड में और १०,५०० पौड का एबर फौक्स कोट केवल, ५,२५० पौंड में बिका. इसी तरह बिल्ली के लिए बना सुनहरा स्क्रैचिंग पोस्ट ७० के बजाए ३५ पौड में बिका.

बहुत से ग्राहक फ़र के बने कपड़ों का सौदा जल्द से जल्द निपटाने का जिस तरह तहैया कर के आते है, उस से हैरौड्स स्टोर का स्टाफ भी चकित रह जाता है. वस्त्र विभाग के एक कर्मचारी माइक माइकल्स का कहना है, "चूंकि नकद देने से सौदा जल्दी पट जाता है, इस लिए लोग प्लास्टिक के थैलों में नोटों की गड्डियां भर कर सीधे बैंक से स्टोर में पहुंचते हैं." एक बार एक मिंक कोट को सब से पहले हासिल करने के लिए दो भाई स्टोर के बाहर सड़क पर रात भर बारी बारी से पंक्ति में खड़े रहे. उस मिंक कोट की कीमत डेढ हज़ार पौड से घटा कर सौ पौंड कर दी गई थी. एक भद्र महिला ने अपनी पसंद का एक विशेष फ़र कोट प्राप्त करने के लिए दादागिरी का तरीका अपनाया. उस ने एक हट्टे कट्टे मित्र को अपने साथ पक्ति में खड़ा कर लिया. एक चकित सेल्समैन ने बताया. "जब स्टोर के दरवाजे खुले तो वह अलग खड़ी रही, लेकिन उस का हट्टा कट्टा मित्र दूसरों को पछाड़ता हुआ सब से पहले मिंक कोट के पास पहुंच गया."

ज्यों ही हैरौड्स स्टोर की सेल समाप्त होती है, दूसरी की तैयारी शुरू हो जाती है. अतिरिक्त कर्मचारियों की भरती को प्राथमिकता दी जाती है. स्टोर के पास चार हज़ार स्थायी कर्मचारी है. उन के अलावा हर सेल के लिए दो हज़ार अस्थायी कर्मचारी भी भरती किए जाते हैं.

हैरौड्स स्टोर की चौका देने वाली बिक्री और गहमागहमी जेबकतरों और उठाईगीरों को भी आकर्षित करती है. उस खतरे का सामना

करने के लिए सुरक्षा संतरियों की संख्या दोगुनी कर दी जाती है. एक दिन स्टोर की एक महिला जासूस को यह देख कर कौतूहल हुआ कि दो औरतें स्टोर के खाली थैले बगल में दबाए धकियाती हुई ऊनी कपड़ों के विभाग में पहुंची और बड़े आराम से स्वेटरों को थैलों के हवाले करने लगीं. आख़िर उन की चोरी पकड़ी गई.

हाथ की सफ़ाई

एक दिन एक चोर बड़े रोब से दनदनाता स्टोर में पहुंचा. उस ने कुलियों को हुक्म दिया कि वे संगमरमर जड़ी एक क़ीमती मेज़ नीचे ले जा कर बाहर खड़ी गाड़ी में रख दें. मेज़ गाड़ी में रख दी गई, लेकिन ज्यों ही वह गाड़ी स्टार्ट करने लगा, उस के पीछे लगे स्टोर के जासूसों ने उसे धर दबाया. एक बार किसी पत्तेबाज़ ने स्टोर को लूटने के लिए मार्के की तरकीब आज़माई. स्टोर में एक साथ पांच सौ कैशियर काम करते हैं. उस पत्तेबाज ने किसी तरह स्टोर का एक कैश रजिस्टर हथियाया और दूसरे कैशियरों की तरह ट्राली पर चढ़ कर स्टोर का कैशियर बन गया. फिर वह किचनवेयर विभाग में पहुंचा और लगा धड़ल्ले से ग्राहकों से पैसा वसूल करने. लेकिन जब वह लूट के साथ स्टोर से बाहर जाने लगा तो उस ने सुरक्षा अधिकारियों को अपने स्वागत में खड़े पाया.

हैरौड्स डिपार्टमेंटल स्टोर के मैनेजिंग डायरेक्टर एलेक्स क्रैडक ने बताया, "हैरौड्स सेल की तैयारी किसी बड़े युद्ध की योजना के समान है." बहुत पहले से सेल को अखबारों, रेडियो और टेलीविज़न में सैकड़ों विज्ञापन दे कर और जगह जगह पोस्टर लगा कर विज्ञापित किया जाता है. लाखों की संख्या में प्लास्टिक के थैलों का आर्डर दिया जाता है और विभिन्न वस्तुओं के अठारह हजार से भी अधिक पहचान चिन्ह बड़ी सावधानी से हाथ से पेंट किए जाते हैं. सेल शुरू होने से ठीक एक दिन पहले क्रैडक और उन के सहायक अधिकारियों के निरीक्षण के लिए गोदामों और बरामदों में ढेर के ढेर पड़े सामान को उठा कर करीने से रखा जाता है. चीजों पर पहचान चिन्ह लगाए जाते हैं और अस्थायी बिक्री काउंटर बनाए जाते है.

और इस शानदार निरीक्षण यात्रा का शुभारंभ शराब विभाग में 'शुभकामना मधुपान' की रस्म से होता है. तब फ़ौज की सलामी लेने वाले एक जनरल की तरह क्रैडक स्टोर के शेष २१३ विभागों का मुआइना करते है : वहां के प्रत्येक कर्मचारी का नाम ले कर अभिवादन करते हैं और आने वाली अग्नि परीक्षा के लिए उस का हौसला बढ़ाते है.

एलेक्स क्रैडक के शब्दों में, "जनवरी और जुलाई की सेल हैरौड्स डिपार्टमेंटल स्टोर की प्राण शक्ति बन चुकी है. सेल द्वारा तमाम पुराना माल तो साफ़ हो ही जाता है, साथ ही नए ग्राहक भी मिल जाते हैं. हर नई सेल से भारी उत्साह भी उत्पन्न होता है."

दुखती पसलियों, कुचले पांवों और चिड़चिड़ी मनःस्थितियों के बावजूद सेल का अवसर हर किसी के लिए आनंददायक होता है. जरा उद्घाटन की सुबह के उस दृश्य की कल्पना कीजिए, जब नौ बजते ही कोई युवक और युवती एक दूसरे का हाथ पकड़े भागते हुए कुछ ही पलों में सब से पहले पुरुष वस्त्र विभाग में पहुंचे. कर्मचारी तुरंत तालियां बजा कर बड़ी गरमजोशी से उन का स्वागत करते हं. उस विभाग के बिक्री अधिकारी के शब्दों में "वह स्वागत एकदम सहज तथा स्वाभाविक और हैरौड्स 'सेल की सच्ची भावना का परिचायक होता है."

मारिया कलास

ओपेरा जगत की अनुपम नायिका

—रिचर्ड डब्लू मर्फ़ी

पेरिस के 'तिएत्र नेशनल द लोपेरा' में इतालवी ओपेरा रचयिता वीशेंत्सो बेलीनी की कृति 'नोर्मा' का मंचन था और मुख्य भूमिका में थीं मारिया कलास. शुरू के तीन अंकों में उन की आवाज़ जम नहीं रही थी, कुछ थकावट झलकती थी. अंततः चौथे अंक का पर्दा उठने से पहले मैनेजर ने घोषणा कर दी—आयोजन समाप्त. कार्यक्रम की प्रमुख आकर्षण, सांझ की तारिका मारिया बेतरह थक चुकी हैं, मंच पर नहीं आ सकतीं.

और २९ मई १९६५ की शाम को इस अनिश्चित घोषणा के साथ ही आधुनिक ओपेरा की सर्वाधिक देदीप्यमान तारिका की ज्योति मंद पड़ गई, और शुरू हुआ उस की गाथाओं, दंतकथाओं का विस्तृत क्रम. १६ सितंबर १९७७ को पेरिस में दिल का दौरा पड़ने से कुल ५३ वर्ष की आयु में स्वर्ग सिधारने तक मारिया कलास से जुड़ी गाथाओं

फोटो : जिम कैंपबेल

ने प्रशंसकों की एक और पीढ़ी को मोह लिया था. यह बात और है कि इस नई पीढ़ी ने उन्हें मंच पर ओपेरा का जादू जगाते कभी देखा नहीं था. उस की मृत्यु के बाद शास्त्रीय स्वर एवं संगीत का बाज़ार कलास के 'नए' रिकार्डों से भर गया, जिन में उस ने सार्वजनिक बिक्री के लिहाज से गाया ही नहीं था. वे रिकार्ड मारिया के स्टेज कार्यक्रमों के समय चोरी से बनाए गए थे. अमरीकी और यूरोपीय टेलीविज़न पर श्रद्धांजलि स्वरूप अनेक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए. १९७९ की वसंत में पेरिस के कार्नावाले म्यूज़ियम ने कलास के स्मारक साज़ो सामान की एक प्रदर्शनी आयोजित की. उस के जीवन पर पुस्तकों का प्रकाशन क्रम तो आज भी जारी है.

उस के सब से अच्छे जीवनीकारों में से एक हैं समीक्षक जान आरदोइन. इन्हों ने मारिया पर दो पुस्तकें प्रकाशित कीं. एक है 'कलास' (जेराल्ड फ़िट्सजेराल्ड के साथ) और दूसरी 'द कलास लीगेसी'. आरदोइन प्रारंभ में कलास के प्रशंसक नहीं थे. अपनी किताब में इन्हों ने वह प्रसंग भी दिया है कि पहले पहल इतालवी ओपेरा रचयिता गाएतानो दोनीज़ेती की रचना 'लूचीआ दि लामेरमुर' के रिकार्ड में मारिया को सुना. पर मुख्य चरित्र के रूप में वह इन्हें ज़रा नहीं भाई. उन्हों ने वह रिकार्ड तक किसी को दे दिया, लेकिन स्वर था कि दिल दिमाग़ में कहीं कौंधता रहा, वे उसे भुला नहीं पाए. अंततः उन्हों ने फिर से वही रिकार्ड ख़रीदा और 'आवाज़ के परे, संगीत की लहरियों का करिश्मा मेरे अंतःस्थल को छूने लगा.' बाद में मुलाक़ात होने पर उन्हों ने मारिया को यह बात बताई भी. कलास ने कहा, ''पहली पहली बार मेरा गाना सुनने वालों को अकसर मुझ से निराशा होती है. लेकिन फिर उन्हें मेरे काम पर भरोसा होने लगता है.''

आरदोइन के अनुसार, मारिया की आवाज़ परंपरागत रूप से श्रेष्ठ मानी जाने वाली आवाज़ों से हट कर थी—गहराई और मोहक झंकृति से भरा नाद. उस के स्वर में कुछ ऐसी गुंजार थी कि मानस पर छा जाती—एक बार सुन लेने पर भुलाए न भूलती. अपने ज़माने की अन्य गायिकाओं के विपरीत, कलास में एक अद्भुत क्षमता थी—वह अपने कंठ स्वर को सहज ही उस चरित्र के अनुरूप ढाल लेती थी, जिसे वह गीत के ज़रिए प्रस्तुत कर रही होती. उस की क्षमता इतनी व्यापक थी कि चरम प्रसिद्धि के दिनों में वह किसी भी तरह के नारी कंठ के लिए रचित कैसा भी गीत सहज ही गा लेती.

इस अनुपम कंठस्वर के साथ घुला मिला दूसरा गुण था—रंगमंच पर उस की उपस्थिति की विलक्षण प्रतीति.

अमरीकी ओपेरा संचालक लेनर्ड बर्नस्टाइन के अनुसार मंच पर तो वह एकदम द्युति की सी गति लिए होती थी और निदेशक फ्रांको ज़ेफ़िरेली को यह लगता कि उस की उपस्थिति में दूसरे गायक गायिकाएं कठपुतली की भांति यांत्रिक ढंग से ही गा पाते हैं.

सजीव भूमिका

अपने बारे में मारिया ने एक बार कहा था, ''मैं किसी भूमिका में उतरती हूं तो पूरी तरह उसी की हो जाती हूं.'' सचमुच, उस का अभिनय इतना स्वाभाविक होता था कि कभी कभी दर्शक एवं श्रोता विह्वल हो उठते. इतालवी ओपेरा लेखक जूज़ेप्पा वेर्दी के 'ला त्राविएता' की व्याधि ग्रस्त नायिका वायोलेता को तो उस ने ऐसा सजीव किया कि बार बार श्रोताओं को यही लगता मानो स्वयं गायिका गंभीर रूप से रोग ग्रस्त हो.

उस ने जो भी भूमिका निबाही, थिएटर में

१९८२

तीव्र भावावेश जगाने में सफल रही. ओपेरा संचालक टामस शिपर्स को मिलान के ला स्काला ओपेरा हाउस में आयोजित केरूबीनी की कृति 'मीडिया' की प्रस्तुति याद है जबकि बालकनी में सब से ऊपर बैठे कलास विरोधी धड़े के टट्टुओं ने अचानक उस का उपहास शुरू कर दिया था. तभी वह प्रसंग आया जहां मीडिया दो बार जेसन को 'क्रूडेल' यानी बर्बर कह कर धिक्कारती है. मारिया ने पहली धिक्कार के बाद प्रदर्शन स्तब्ध सा कर दिया. शिपर्स का कहना है, "मैं तो स्तंभित सा देखता रह गया—मारिया की निगाहें बालकनी की ओर उठीं. सभागार में बैठे हर दर्शक की आंख में चुभती नुकीली दृष्टि से देख कर उस ने घृणा भरी आवाज़ में दोबारा धिक्कार गीत गाया. दर्शकों में सन्नाटा छा गया. ज़िंदगी में मै ने थियेटर में किसी को इतने साहस से पेश आते नहीं देखा था. उस के बाद तो उस के विरुद्ध ज़रा भी फुसफुसाहट सुनाई नहीं दी. और मारिया ने 'मैं ने सर्वस्व तुम्हें दे दिया' के भाव वाला गीत शुरू किया, तो गैलरी की ओर घूंसा तान रखा था."

आख़िर वह बुद्धि, कल्पना और आंतरिक ओज की किस मिट्टी से बनी थी कि उसे ओपेरा क्षेत्र का दैवी चमत्कार मान कर कितनी ही कथाओं आख्यानों की धाराएं फूटती रहीं? वह एक यूनानी दंपती की दूसरी संतान थी और उस का नाम था मारिया अन्ना सोफ़िया सेसिलिया कालोगेरोपोलस. उस के माता पिता १९२३ में, उस के जन्म से कुछ ही पहले न्यूयॉर्क में आ कर बस गए थे. बचपन में मारिया दूर की नज़र के लिए मोटे शीशे का चश्मा लगाती. और वह चुप्पी सी लड़की शांतिप्रिय थी तो बच्चों की प्रिय कैंडी तक यों निगलती मानो मजबूरी में हलक से उतार रही हो. वर्षों बाद भी उसे याद था, "मैं मोटी भद्दी, बेडौल और अप्रिय हुआ करती थी."

आख्यानों के अनुसार, मारिया ने तीन साल की उम्र से घर के स्वचालित पियानो पर ओपेरा सुनना शुरू कर दिया था. आठ साल की होते न होते वह बाक़ायदा आवाज़ संभालने की शिक्षा लेने लगी और स्कूल के गायन कार्यक्रमों में भी उसे शामिल किया जाने लगा. अपनी महत्वाकांक्षी मां से सतत प्रेरणा व प्रोत्साहन पा कर उस ने रेडियो की अनेक ग़ैर पेशेवर स्पर्धाओं में भाग लिया, और इनाम भी जीते. इन सब से उसे एक महत्वपूर्ण बात मालूम हुई, "मैं गाती हूं, तो सब मुझे प्यार करते हैं."

संगीत की छात्रा

कुछ ही दिनों बाद उस की मां उसे एथेंस की संगीत अकादमी में भरती कराने के लिए वहां ले गईं. सुप्रसिद्ध स्पानी उच्चकंठी गायिका एलवीरा द ईदालगो इसी स्कूल में पढ़ाती थीं. उन्हें याद है कि अपनी मेज़ से नज़रें उठाने पर एक लंबी, बेहद मोटी और बेढब सी लड़की दिखी जिस ने मोटा चश्मा लगा रखा था, और जो चुपचाप अपने नाखून कुतरे जा रही थी. "सोच कर ही हंसी आती थी कि यह लड़की गायिका बनना चाहती है!" पर मारिया ने गाना शुरू किया तो द ईदालगो भाव विभोर हो उठीं: "मैं ने ऐसी ज़बर्दस्त स्वर लहरियां सुनीं जो अभी पूरी तरह नियंत्रित तो नहीं थीं, लेकिन उन में भावनाओं का उफ़ान और नाटकीय तत्व भरपूर थे."

उन दिनों की कलास के बारे में उस की अध्यापिका का कहना है: "वह सदा लज्जित सी रहने वाली बेढब लड़की थी. मात्र एक अपवाद के हर बात में हीन भावना से ग्रस्त रहती—और वह थी उस की आवाज़." उस

की इच्छा शक्ति बड़ी प्रबल थी और याददाश्त का तो जवाब ही नहीं. एक बार सुन लेने भर से उसे गाना याद हो जाता था और वह पूरा ओपेरा कुल आठ दिन में कंठस्थ कर लेती. कालक्रम में उसे ४७ भूमिकाएं याद हो गईं.

एलवीरा द ईदालगो से कलास ने पांच साल तक शिक्षा ली. वह 'बावरी' कंठ साधना में जुटी रहती. रात रात भर संगीत की स्वर लहरियां साधती रहती. द ईदालगो ने उसे गायन की तथाकथित 'बेल कांटो' शैली सिखाई, जिस में प्रतिभा, लोच, और सब से बढ़ कर सहजता पर विशेष बल रहता है.

यों तो कलास ने व्यावसायिक स्तर पर रंगमंच कार्यक्रम कुल १८ वर्ष की आयु में एथेंस ओपेरा में प्रस्तुत किया था, लेकिन गायिका के रूप में उस का वास्तविक जीवन-क्रम शुरू हुआ वेरोना, इटली से. अगस्त १९४७ में वहां उस ने पोंगक्येली की रचना 'ला जोकोंडा' की प्रमुख भूमिका में गाया. सब से पहले तो वह अपने इतालवी ओपेरा संचालक तुल्यो सेराफ़ीन का ध्यान आकृष्ट करने और प्रशंसा पाने में सफल रही. दूसरे, उस की मुलाक़ात अपने से दो गुनी उम्र वाले करोड़पती व्यापारी जोवानी बातीस्ता मेनेजीनी से हो गई. सेराफ़ीन उस के संगीत क्षेत्र के मार्गदर्शक हो गए और शीघ्र ही उन्हों ने उसे प्रमुख ओपेरा गृहों में गवाना शुरू कर दिया. उधर मेनेजीनी ने उसे वह भावात्मक तथा आर्थिक सुरक्षा प्रदान की जिस की उसे बहुत ज़रूरत थी—दो वर्ष बाद कलास ने उन से विवाह कर लिया.

प्रसिद्धि के शिखर तक की अपनी यात्रा में कलास ने अपना वज़न ३० किलो कम किया. इस से तो जैसे उस की काया ही पलट गई, और वह सिर्फ़ कोकिल कंठी न रह कर महान गायिका अभिनेत्री बन गई. यहां तक कि उस के साथ ही काम करने और उसे नज़दीक से जानने वाले भी उस की रंगमंचीय प्रतिभा का समुचित मूल्यांकन नहीं कर पाते थे. उस के चेहरे में भावाभिनय की अद्भुत क्षमता थी जो बरबस आकृष्ट करती. अपने नेत्र संचालन पर उसे इतना भरोसा था कि पूचीनी के 'तोस्का' में उस ने हत्या के चरमोत्कर्ष की अभिव्यक्ति के लिए मात्र इसी का सहारा लिया—खल-नायक स्कार्पिया की हत्या वाले प्रसंग में उस ने छूरे पर अपनी दृष्टि थिर कर के ही सारी बात कह दी. उस की लंबी बांहें और उंगलियों में भी कोई कम सम्मोहन नहीं था. बांहें चाहे फैली हों, शरीर को घेरे हों या उंगलियां हवा में संगीत का ताजमहल तराश रही हों; उन की कशिश बनी ही रहती थी.

देवों का आवाहन

उस के साथ काम कर चुके अधिकांश निदेशकों का दावा था कि कलास रहस्यमय संचेतना से भरपूर वह अभिनेत्री है जो कुछ भी कर दिखा सकती है. डलास सिविक ओपेरा कृत 'मीडिया' की रिहसर्ल के दौरान यूनानी निदेशक एलेक्सिस मिनोटिस एक दिन यह देख दंग रह गए कि कलास पागलों की तरह झूमती, फ़र्श पीटती, देवों का आवाहन कर रही है. इस तरह की भावाभिव्यक्ति का सहारा कोई और गायक या गायिका कदापि नहीं लेते. दरअसल इस से कंठ स्वर के लिए अवरोध उत्पन्न हो जाता है. लेकिन "मारिया ने यही कर दिखाया, फिर पूरे पिच पर बख़ूबी गाती भी रही. असंभव को संभव कर दिखाने का दम था तो केवल मारिया के पास," यह राय है मिनोटिस की.

लेकिन प्रसिद्धि बढ़ने के साथ साथ उस के दुर्व्यवहार के क़िस्से भी बढ़ते गए—आज इस

...शक से झगड़ा, तो कल उस निदेशक से कहासुनी. इन में से ज़्यादातर बातें अख़बार वालों की तरफ़ से बढ़ा चढ़ा कर छापी जातीं. क्योंकि उन्हें मुंह पर खरी खरी कह देने वाली इस गायिका के बारे में मसाला चाहिए था. आरदोइन के ही अनुसार, कलास की मुंहज़ोरी को इस लिए भी तूल दिया गया कि वह ख़ुद भी कई मांगें रखती थी, काम धंधे के मतलब की मांगें. "अपने समय में मैं ने कई कलाकारों के साथ काम किया पर कलास सब से विकट थी. और इस का कारण थी उस की असाधारण प्रतिभा," यह राय है न्यू यार्क मेट्रोपॉलिटन ओपेरा के भूतपूर्व महाप्रबंधक सर रुडोल्फ़ विंग की. "उसे पता होता था कि उसे क्या चाहिए और क्यों?" रिकार्डिंग क्षेत्र के पुराने महारथी १९५५ की वह घटना याद कर आज भी सिहर उठते हैं. उस दिन वह रिकार्डिंग के लिए आई तो कुछ सतरें गाने के बाद उसे लगा कि आवाज़ ठीक नहीं है. बस वह उलटे पांव घर लौट गई. लोगों ने उसे लाख समझाया, धमकाया भी कि उस के चले जाने से सारे आर्केस्ट्रा का आयोजन व्यर्थ जाएगा. हरजाना भुगतना पड़ेगा. पर उस ने किसी की कतई परवाह न की. "इस में कोई शक़ नहीं कि मेरे साथ काम करना मुश्किल है," वह स्वयं स्वीकार करती थी. "जो कलाकार ओपेरा संगीत की अपेक्षाओं को पूरा करने की, ईमानदारी से कोशिश करता है, उसे असाधारण तनाव में ही काम करना पड़ता है." किसी और संदर्भ में एक बार उस ने यह भी कहा था, "मैं ज़िद्दी हूं—नहीं, मैं ज़िद्दी नहीं, बल्कि सही हूं और सही बात करती हूं."

अपनी चरम सफलता के दिनों में कलास की ज़िंदगी पूरी तरह अपने काम के प्रति केंद्रित हो कर रह गई थी. संचालक निकोला रेस सीन्यो के अनुसार, "उस की ज़िंदगी घर से ओपेरा, और ओपेरा से घर के बीच सिमट कर रह गई थी. खाने पर कहीं बाहर जाना तक बड़ी बात लगती थी," मिलान में मेनेजीनी ने उस के लिए जो ख़ूबसूरत बंगला बनवा दिया था, उस के बारे में, उस के शानदार रसोईघर के बारे में और उस के खाना बनाने से ले कर हीरे जवाहरात के शौक़ तक के बारे में अख़बारों में तरह तरह की बातें की गईं. लेकिन सच्चाई यह है कि आभूषण पहनने का, खाना बनाने या फिर घर में रह कर उस का आनंद उठाने का मौक़ा उसे यदा कदा ही मिल पाया.

ममतामयी

मारिया को जानने वाले सभी लोग इस बात पर सदा सहमत रहे कि ओपेरा की इस महान गायिका के पीछे जो चेहरा है, वहां स्नेहपूर्ण एवं ममतामयी महिला ही मौजूद है. कलास स्वयं भी अपने को दो रूपों में देखती थी. एक वह, जिसे वह 'ला कलास' यानी रंगमंच की प्रखर व्यक्तित्व कहती और दूसरी ओर मारिया, सीधी सादी, नगण्य सी स्त्री. निदेशक फ्रांको ज़ेफ़िरेली उस की उस आत्मीयता को कभी भूल नहीं पाए जो उन्हों ने ला स्काला में एक ओपेरा आयोजन के प्रथम प्रदर्शन की रात देखी. वह अपने बूढ़े, अपंग पिता को साथ ले गए थे. शो के बाद वह नेपथ्य में कलास से मिले, तो वह अभिजात प्रशंसकों और छायाकारों से घिरी थी. फिर भी उस ने फ्रांको को देखते ही पूछा, "आप के पिता जी को कार्यक्रम पसंद आया? ज़ेफ़िरेली ने बताया कि उन्हें बहुत अच्छा लगा. लेकिन ख़ुद बधाई देने को वे नहीं आ पाए, क्योंकि वे स्टेज की सीढ़ियां चढ़ पाने में असमर्थ हैं. "मारिया ने झट मेरा हाथ पकड़ा, और सब को वहीं छोड़

वह मेरे साथ पिता जी से मिलने चल दी. उस ने उन्हें सादर चूमा और शो में आने के लिए धन्यवाद दिया. इस सब में कहीं कोई दिखावा या बनावटीपन न था. यह तो सीधे हृदय से उपजी भावनाएं थीं.''

ओपेरा के एक स्टेज पर उस ने १९६० में सात बार, १९६१ में पांच बार, १९६२ में दो बार कार्यक्रम दिए. पर १९६३ में एक भी नहीं. रंगमंच से उस का विलगाव और मेनेजीनी के साथ दस साल के विवाहित जीवन का अंत लगभग एक साथ हुआ. और इस के साथ ही शुरू हुए जहाज़रानी क्षेत्र के यूनानी अरबपती व्यापारी एरिस्टोटल ओनासिस के साथ नए संबंध, जो नौ साल तक बने रहे. समीक्षकों का कहना था कि अब उस का सक्रिय ओपेरा जीवन समाप्त हो चुका है, लेकिन अपनी प्रबल इच्छा के सहारे उस ने फिर से ख्याति अर्जित की. १९६४ और १९६५ में उस ने 'तोस्का' और 'नोर्मा' के ३० प्रदर्शन दिए. दर्शकों के सामने उस का आख़िरी कार्यक्रम १९७३-७४ के दौर में हुआ जिस में दुर्भाग्यवश यह भी स्पष्ट हो गया कि उस की आवाज़ में अब दम ख़म नहीं बचा.

फिर भी ओपेरा जगत से अर्ध सेवानिवृत्ति के वर्षों में, पेरिस में गुज़रे उस के दिन पूरी तरह निराशामय नहीं थे. यूनानी पियानो वादक वासो देवेत्सी इन वर्षों में लगातार उस से मिलते रहे. उन का कहना है, ''उसे ज़िंदगी से प्यार था, अपने काम से प्यार था और वह जब तक ज़िंदा रही, काम में लगी रही.'' घर पर भी अपनी संगीत की थाती को अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए वह किसी पेशेवर संगत करने वाले के साथ, लगभग रोज़ ही कुछ देर अभ्यास किया करती. और अपनी परीक्षा लेने के लिए वह तिएत्र दे शांज़्येलीसे में चली जाती. और तब वह आम जनता के लिए बंद इस विशाल थिएटर के मंच पर खड़ी अकेली गाती—कभी वेर्दी तो कभी बेलीनी की ही कोई कृति.

परस्पर संवाद

एक बार किसी ने उस से पूछा था कि उस की ज़िंदगी में संगीत ही सब कुछ है? कलास का जवाब था, ''बिलकुल नहीं, ज़िंदगी में सब से महत्वपूर्ण चीज़ है परस्पर संवाद की स्थिति. यह विषम से विषम परिस्थितियों को भी झेलने की शक्ति देता है, और एक दूसरे तक पहुंचने का सब से ठोस रास्ता कला का ही है जहां एक से दूसरे व्यक्ति तक संवाद और संप्रेषण होता है.

सितंबर'७७ की १६ तारीख़. वह सो कर उठी, तो प्रसन्न थी. उस ने बिस्तर पर ही नाश्ता किया, पर अचानक ही उसे चक्कर आने लगा. गुसलख़ाने की ओर बढ़ी ही थी कि गिर पड़ी. वह उठी, और उसे सहारा दे कर ही उस के बिस्तर तक पहुंचाया जा सका. लेकिन डाक्टर बुलाए जाने से पहले ही दिल का घातक दौरा पड़ा और वह चल बसी.

पास पड़ोस से ले कर अनेक ख्यात विख्यात लोग श्रद्धांजलि अर्पित करने उस के घर पहुंचे. दुनिया भर से संवेदना संदेशों का तांता लग गया. इन में सब से हृदयस्पर्शी श्रद्धांजलि थी स्पेन की उच्चकंठी गायिका मोंत्ज़ेरात काबाल्ये की. उस ने लिखा था, ''शुक्रिया मारिया.''

भौतिकी प्रयोगशाला में लगी तख़्ती: इकलौती आंख से लेसर किरण मत निहारें.

—जी पी एल

आज का ज़माना

समस्याओं का ज़माना

—जांनीन रैलंबर

यह काल का अभिशाप है या प्रकोप ? समस्याओं की छूत ने किसी जीवधारी को नहीं छोड़ा

मैं जिस दुकानदार से चुग्गा ख़रीदती हूं, उस से हाल ही में एक महिला ने पूछा कि वह अपनी काल्हक फ़ाख़्ता को क्या खिलाए. वह कतई कुछ नहीं खाती थी. महिला ने बताया, "उस नन्ही सी जान को एक बार मेरे पालतू तीतर ने ज़बरदस्त धौंस दिखाई थी, और उसी दिन से वह भूख हड़ताल के कारण एक समस्या बन गई है."

इस दर्दनाक घटना से मुझे यह पता चला कि २० वीं सदी के इन अंतिम दशकों की धुआंधार समस्याओं ने नन्ही मुन्नी चिड़ियाओं को भी चपेट में ले लिया है. समस्याओं की मारी पीटी इस दुनिया में, जबकि 'समस्यामूलक वस्तु' और 'ज़माने भर की समस्या' जैसी हताशोक्तियों से कान दिन रात ठसे रहते हैं, हमें 'इस में क्या समस्या है ?' जैसे फ़िकरों पर ताज्जुब क्यों नहीं होता ?

अख़बार हो या पत्रिका, टेलीविज़न हो या रेडियो या आपसी बातचीत ही हो, समस्याएं पीछा नहीं छोड़तीं, चाहो तो इन्हें झरी हुई पत्तियों की तरह बोरों में भर लो. कहानी उपन्यास तक अछूते नहीं बचे. लेखक बड़ी निष्कपटता से एक सीधे सादे कथा सूत्र को प्रदूषण, हिंसा, नशीली औषधियों या नारी आंदोलन जैसी किसी न किसी युगीन समस्या से जोड़ देते हैं.

हम सब समस्याओं के मारे हैं, बल्कि चारों तरफ़ से उन से घिरे हैं. प्रेमी या प्रेमिका से कानाफूसी करते समय भी हम दुनिया वालों की बेरुखी की चर्चा करने से नहीं चूकते. बढ़ती जनसंख्या का रोना रोने लगते है. या २,००० ईसवी में जनसंख्या विस्फोट से होने वाली दुर्गति पर ही बहस छेड़ बैठते हैं.

हमारे पूर्वजों की भी समस्याएं थीं, और नाती पोतों की होंगी. और यह स्वाभाविक है कि हम उन की ओर से आंखें नहीं मूंदते. पर हर चीज़ की अति भी बुरी है. भले लोग समस्याओं से उकता चुके हैं. खाने पीने या चैन की ज़रूरी सांसों का मज़ा लूटने की घड़ियों में समस्याओं के बीहड़ों में भटकना, उन पर बहस, विश्लेषण या टीका टिप्पणी करना सचमुच एक संत्रास है.

इसी लिए लोगों ने अपनी तकलीफ़ों को नकारने का स्वस्थ रुख़ अपना लिया है : "कोई बात नहीं !" (नो प्राब्लम !) प्रसिद्ध फ्रांसीसी लेखक आंद्रे जीद ने १९४९ में ही अपनी पुस्तक 'आटम लीव्ज' (पतझड़ के पत्ते) में लिख दिया था : 'देयर इज़ नो प्राब्लम.' भावी स्थितियों के पूर्वबोध के कारण क्या ज़ीद इस युग का पैगंबर नहीं कहलाएगा ? ◆

जीवन की यह रीत
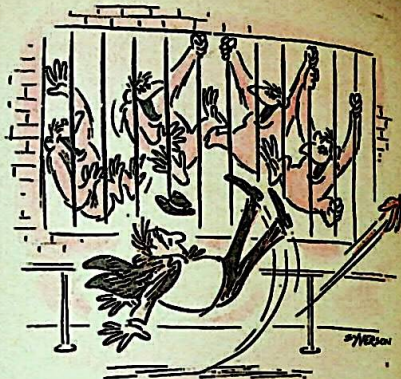
मेरी फ़ाइबरग्लास की पालदार नौका की नीली सतह पर रगड़ लगने से एक गहरा सफ़ेद निशान पड़ गया. मैं ने घंटों लग कर उस खरोंच को विशेष मसाले से भरा, सावधानी से क्षतिग्रस्त हिस्से की घिसाई की और वहां पहले के रंग से मिलता जुलता रंग पोता. आख़िर उस जगह का रंग नौका के असली रंग से मिलने लगा. पर छः मीटर की दूरी से देखने पर वह धब्बा बिलकुल दिखाई नहीं देता था. हां, अगर आप को मालूम हो कि धब्बा किस जगह पर है, तो तीन मीटर की दूरी से उस की हल्की झलक मिल जाती थी. पर कोई डेढ़ मीटर की दूरी से देखें, तो मरम्मत करने वाले की नौसीखिएपन की सारी कलई खुल जाती थी.

ख़ैर, पूरी तरह इतमिनान करने को मैं ने अपने पड़ोसी को बुलाया और सब कुछ सुना कर पूछा कि कोई यह धब्बा पहचान तो नहीं लेगा. उत्तर मिला, "भाई, इस धब्बे को जो पकड़ ले वह मेरी राय में किसी और ही चक्कर में है—उस के इरादे नेक नहीं."

—ए सी कूलिज, कैंब्रिज

उस शाम घंटी की आवाज सुन कर मैं ने दरवाज़ा खोला तो पाया हमारे वयोवृद्ध पड़ोसी खड़े हैं. उन के हाथ में प्लेट थी और उस पर था केक का एक टुकड़ा. वह बोले, "आज ये ८६ साल की हो गईं. सो इन की इच्छा थी कि जन्म दिन के केक में आप का भी थोड़ा हिस्सा हो." मैं ने उन्हें धन्यवाद दिया और उन की पत्नी को जन्म दिन की हार्दिक शुभकामनाएं भेजी.

करीब़ दस मिनट बाद वह फिर हाज़िर हुए. उन के होठों पर भोली मुसकान की छटा थी, बोले, "बेटी, माफ़ करना, आज ये केवल ८४ साल की हुई हैं."

—मार्गरेट, ओहायो

मेरे भाई भाभी अपने चारों बच्चों और पालतू कुत्ते के साथ छुट्टियां मनाने स्टेशन वैगन में लद कर निकल पड़े. रास्ते में उन्हों ने पेट्रोल के लिए गाड़ी रोकी तो पेट्रोल पंप का कर्मचारी ठसाठस लदी स्टेशन वैगन को देख कर मुसकराया, बोला, "बधाई ! भीड़भड़क्के से दूर, सैर सपाटे पर जा रहे हैं?"

मेरे भाई ने रिरियाते कुत्ते को एक तरफ़ सरकाया, छोटे बच्चे को वापस उस की सीट पर बिठाया, सामान के लुढ़कते पिरामिड को किसी प्रकार संभाला और बोले, "बेशक सैर सपाटे पर जा रहे हैं, लेकिन भीड़ भड़क्के से दूर नहीं, भीड़ भड़क्के के साथ."

—श्रीमती जे मैककांब, आस्ट्रेलिया

कुछ किशोर स्वयंसेवक एक वृद्धा के रसोईघर की सफ़ाई और रंगाई पोताई में लगे थे. कामधाम ठीक चल रहा है या नहीं, यह देखने के लिए एक समाजसेविका आ पहुंची और वृद्धा से कहने लगी, "कितना अच्छा लग रहा है, है न? आप को ख़ुशी हो रही होगी कि आप ने इन किशोरों की

सेवाएं लीं."

"ऐसा है . . ." वृद्धा ने गहरी सांस ले कर कहा, "मैं तो हमेशा, हर प्रकार के सहयोग के लिए तैयार हूं. अगर मेरे रसोईघर की सफ़ाई से ये बिगड़े हुए लड़के राह पर आ जाते हैं, तो यह बड़ी खुशी की बात है !" —श्रीमती एम पेज, लंदन

बचपन में मेरे पति डाकिए के आने के वक़्त अकसर आहाते में खेल रहे होते थे. डाकिया यानी व्हाइट साहब जब भी आते, इन्हें बबलगम या टाफ़ी ज़रूर पकड़ा देते.

कुछ समय पहले इन के साथ ससुराल गई तो राह में वही सज्जन मिले. उन्हें देखते ही मेरे पति ने कहा, "मिस्टर व्हाइट, मैं शर्त बद सकता हूं कि आप मुझे भूल चुके हैं."

बिना कुछ कहे उस वयोवृद्ध ने कोट की जेब में हाथ डाला और इन के हाथ में बबलगम थमा दी.

—नोर्मा स्मिथ, जार्जिया

मेरे बेटे के दोस्त की कहीं नौकरी लगी, उसे सुबह जल्दी ही निकलना पड़ता. उस के पिता हर सुबह उसे जगाने के लिए जीने के नीचे खडे हो उस का नाम ले ले कर चिल्लाते जब तक लडका दरवाज़ा खोल कर बाहर नहीं आता.

कुछ दिन बाद लड़के की हफ़्ते भर की छुट्टियां पड़ीं. सुबह उसे पुकार पुकार कर जगाने का कार्यक्रम भी रुक गया. लड़के को तो चैन की नींद मिली, लेकिन पडोस में जो सज्जन रहते थे, वे हफ़्ते में पांच दिन देर से दफ़्तर पहुंचे.

—श्रीमती एच एम हुक, इंगलैंड

पिछली गरमियों में हम आस्ट्रिया की यात्रा पर निकले. हमारी बस पहाड़ी की बल खाती सर्पीली सड़क पर मंथर गति से चढ़ने लगी तो हमारे लिए एक एक पल भारी हो गया. एक मोड़ तो ऐसा खतरनाक था कि हमारी ऊपर की सांस ऊपर और नीचे की नीचे रह गई. हमारा हाल देख कर गाइड ने घोषणा की, "जो लोग बाईं तरफ़ के खंदक देखना चाह रहे हों, वे आंखें मूंद लें."

—श्रीमती मेरी मार्टिन, आयरलैंड

ग्लासगो हवाई अड्डे पर भारी बदन के एक पादरी की कस्टम चेकिंग की गई. उन के पास सामान भी अधिक था सो वह अपने टिकट पर आंखें गड़ाए उधेड़बुन में पड़े थे. सामान की जांच करने वाले अधिकारी ने कहा, "शायद आप अपने वज़न को ले कर चिंतित है ?"

"हां आं . . ." पादरी ने नजरें उठाए बिना जवाब दिया, "वज़न कुछ ज्यादा तो हो गया है लेकिन इस ढीले चोगे के कारण ख़ास पता नहीं चलता." —रेवरेंड थामस मोनाघन, स्काटलैंड

हमारे बडे लडके को किशोर अवस्था में बहुत ज्यादा भूख लगती थी. एक दिन उसे घर में अकेला छोड़ पूरा परिवार सैर को निकल गया. घर में बिस्कुट का डब्बा आधा भरा था सो मैं ने उस में एक चिट डाल दी : देखो सारे के सारे बिस्कुट मत खा जाना.

वापस लौटने पर मै ने डब्बा देखा—बिल्कुल खाली ! मेरी ही चिट पर लिखा था : 'बिस्कुट ! कौन से बिस्कुट !' —श्रीमती मार्गरेट जेनर

बंबई में एक पुलिस इंसपेक्टर का मकान किराए पर लेने लगा, तो वह बिना लिखत पढ़त के किराएदार रखने पर तुला था. कहता था—क्या ज़रूरत है, जब तक चाहो ठाठ से रहो.

धीरे धीरे हमारी जान पहचान बढ़ी तो एक दिन मैं ने मज़ाक़ किया कि यहां का क़ानून भी हम किराएदारों के साथ है. मेरी नीयत ख़राब हुई, तो मकान खाली करवाना भारी पड़ेगा.

"ये लो, गुरु, मुझे कुछ नहीं करना होगा. थाने में कह दूंगा—रोज़ सुबह दो ख़ाकी वर्दी वाले तुम्हें सलाम मारेंगे. बस, बाक़ी का काम तुम्हारे पड़ोसी कर देंगे." —आर एस दास, बंबई
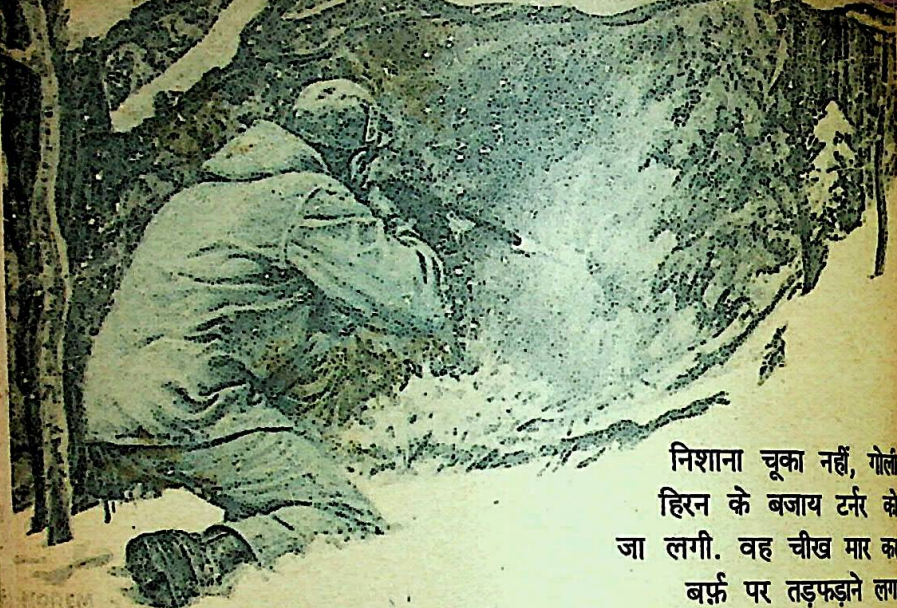
निशाना चूका नहीं, गोली हिरन के बजाय टर्नर को जा लगी. वह चीख मार कर बर्फ़ पर तड़फड़ाने लगा

जीवन का रोमांच

मौत से साक्षात्कार

—जेराल्ड मूर

गत १८ नवंबर की बात है. सुबह ८ बजे से कुछ पहले, ४३ वर्षीय चार्ल्स वड टर्नर पर्वतीय क्षेत्र के घने जंगल से गुज़र रहा था. यह जंगल ईस्ट चैथम, एन वाई, स्थित उस के घर के पास ही था. उस ने हरे रंग की ऊनी टोपी, चितकबरी जाकेट और काले रंग की ऊनी पैंट पहन रखी थी. टर्नर जल्द ही अपने साथियों से जा मिला. वे लोग कुछ देर पहले पास वाली दलदल के निकट घायल हुए एक हिरन को ढूंढ़ रहे थे. ताज़ी ताज़ी गिरी बर्फ़ की तीस सेंटीमीटर मोटी तह ज़मीन पर जमी थी. टर्नर ठंड के मारे झुका झुका, सिमटा सिमटा सा चल रहा था. बीच बीच में आहट लेने के लिए रुक जाता.

अनुभवी शिकारी टर्नर ने घायल हिरन को खुले में लाने की एक योजना बनाई. यह वह स्थान था जहां से बिजली के तार पर्वत पर्वत कई सौ मीटर उत्तर की ओर चले गए थे. उस ने अपने १६ वर्षीय पुत्र मार्क सहित शिकारी दल को खुले इलाक़े की घेराबंदी के लिए भेजा. हिरन उधर से बच कर निकल सकता था.

अचानक गोली छूटने का धमाका गूंजा.

टर्नर को लगा, उस की योजना सफल रही. उस ने चाल तेज कर दी.

यह निशाना वह नहीं था जो टर्नर समझ रहा था. दल के दो सदस्य फ्रैंक ड्रेक और एलन प्रेस्टन * टर्नर के बताए रास्ते से भटक गए थे. बिजली के तारों की सीध में जाने के बजाय ये एक ऐसे मैदान में हिरन को ढूंढ़ने लगे जो जंगल के खुले इलाके के नीचे था और जिस का किसी को ख़याल तक नहीं था. आधा मैदान पार करने पर सहसा उन का घायल हिरन से सामना हो गया.

प्रेस्टन ने स्वयं बंदूक़ न चला कर ड्रेक को मौक़ा दिया, लेकिन वह नौसिखिया था. ड्रेक ने गोली तो चलाई, किंतु निशाना चूक गया और हिरन टर्नर की दिशा में जंगल में दौड़ पड़ा. ड्रेक हिरन के पीछे पीछे भागा. वह यह नहीं चाहता था कि उस का दूसरा निशाना भी चूक जाए. प्रेस्टन भी ड्रेक के पीछे पीछे भागा.

घातक लक्ष्य. टर्नर ने हिरन को अपनी ओर आते नहीं देखा क्योंकि वह टर्नर की दिशा में जाते जाते अचानक पहाड़ पर चढ़ गया था. लेकिन हां, टर्नर को अपने ऊपर से कोई चीज़ जाती दिखाई दी, पर तभी हेमलाक (विषगर्जर) वृक्ष की एक शाखा से बर्फ़ का ढेर गिरा और वह उस से ढक गया.

गिरती बर्फ़ पर ड्रेक की नजर पडी. ओझेकना में उसे लगा मानो विषगर्जर के पेड़ के पास उस ने किसी छोटे से सफ़ेद जानवर को सरकते देखा हो. एक घुटने के बल बैठ कर उस ने फ़ौरन १२ गेज की बंदूक़ से घातक निशाना लगाया.

ऐन मौक़े पर टर्नर ने ऊपर देखा. वह ड्रेक को पुकारने ही वाला था कि ड्रेक की बंदूक़ ने आग उगल दी. गोली टर्नर के हाथ को छेदती हुई पेट में धंसी और पीठ चीर कर बाहर निकल गई. टर्नर चीख़ मार कर गिर पड़ा.

ख़ून से लथपथ टर्नर ने उठने की कोशिश की, मगर दर्द और घबराहट से उस का बुरा हाल था. वह खड़ा न हो सका. उस का घाव घातक है, इस का उसे अहसास हो चुका था. उस का क्रंदन फूट पड़ा, ''बचाओ, बचाओ !''

बंदूक़ का घोड़ा दबाते ही ड्रेक समझ गया कि गिरती बर्फ़ में जिसे हिरन समझ कर उस ने गोली चलाई थी, वह तो कोई और ही है. वह तेज़ी से उछला और गिरता पड़ता, बर्फ़ पर फिसलता नीचे भागा.

ख़ून से सनी बर्फ़ पर टर्नर तड़प रहा था. इस भयानक दृश्य को देख कर ड्रेक कांप उठा. पश्चात्ताप और दहशत के मारे वह घुटनों के बल बैठ गया और टर्नर के लिए दुआ मांगने लगा. ड्रेक की बौखलाहट देख कर टर्नर और भी त्रस्त हो उठा और मदद के लिए चीख़ पुकार मचाने लगा.

एलन प्रेस्टन ड्रेक के पीछे पीछे आ रहा था. वह पलक झपकते सारा माजरा समझ गया. ''तुम बड के पास रहो,'' उस ने ड्रेक से कहा, ''मैं मदद लाने जा रहा हूं.'' और प्रेस्टन नीचे टर्नर के घर की ओर दौड़ा.

टर्नर से कुछ दूर कीथ शा दबे पांव हिरन का पीछा कर रहा था. सहसा उसे दोस्त टर्नर का चीत्कार सुनाई पड़ा तो वह तेज़ी से उस की ओर लपका. पास पहुंच कर कीथ शा ने जो दृश्य देखा, वह बड़ा ही हृदय विदारक था. टर्नर पीठ के बल बर्फ़ पर पड़ा था और उस के शरीर से ख़ून बह रहा था. वह बार बार उठने की कोशिश कर रहा था. उधर ड्रेक बर्फ़ पर घुटनों के बल बैठा प्रार्थना कर रहा था.

* ये उन के वास्तविक नाम नहीं हैं.

शा ने टर्नर की पैंट खोली और गोली के गहरे घाव को देखा. उस ने टर्नर का हौसला बढ़ाया, ''घबराओ मत, बड ! तुम ठीक हो जाओगे.'' उस ने टर्नर को तसल्ली दी, ''यार, ऐसा तो कुछ नहीं है कि तुम यहां मर जाओगे.'' उस ने घाव में बर्फ़ भर दी. इस के बाद उस ने अपनी जाकेट उतारी और टर्नर के शरीर पर लपेट दी.

सनसनीखेज़ ख़बर. शा जानता था कि टर्नर को पर्वत से नीचे ले जाने के लिए काफ़ी मदद की ज़रूरत पड़ेगी. बर्फ़ीला मौसम, ऊबड़ खाबड़ इलाक़ा और टर्नर का ९० किलो वज़न इस कार्य को और भी मुश्किल बना रहे थे. उस ने शिकारी दल के अन्य सदस्यों को इकट्ठा करने के लिए हवा में तीन गोलियां चलाईं.

उन में से एक शिकारी स्टीव स्मिथ पर्वत की तलहटी के पास प्रेस्टन को मिल गया.

दोनों प्रेस्टन के ट्रक की तरफ़ भागे.

प्रेस्टन और स्मिथ हांफते हुए घर में घुसे तो टर्नर की १३ वर्षीया लड़की टैमी रिकार्ड बजा रही थी. भारी हिमपात के कारण स्कूल में छुट्टी हो गई थी. टैमी ने टेलीफ़ोन की ओर लपकते स्मिथ को प्रश्नात्मक दृष्टि से देखा.

''दुर्घटना हो गई,'' स्मिथ बोला.

''पापा को कुछ हो गया ?'' टैमी ने पूछा.

''हां.''

जब तक स्मिथ आपरेटर से संकटकालीन सहायता के लिए बात करता रहा, टैमी चुपचाप खड़ी रही. उस के बाद टैमी ने अपनी मां मेरी को फ़ोन किया जो उस वक़्त काम पर गई हुई थी.

बड टर्नर को जंगल में गोली लग गई, स्मिथ से यह ख़बर सुनते ही आसपास के पूरे इलाक़े में हलचल मच गई. किसी भी संकट से निबटने में सक्षम पड़ोसी पलक झपकते सहायता कार्य में जुट गए. आपरेटर ने बिजली की तेज़ी से ईस्ट चैथम वालंटियर फ़ायर कंपनी को सतर्क कर दिया. इस के सदस्य तत्काल फ़ायर हाउस की ओर झपट पड़े, जहां कई दमकल गाड़ियां तैयार खड़ी थीं. विशेष चैथम बचाव दस्ता और स्वयंसेवक भी अपनी एंबुलेंस लाने के लिए दौड़ पड़े.

तुम कर सकते हो. इधर लोग सहायता कार्यों में जुटे थे, उधर शा की हवा में चलाई गोलियों की आवाज़ें सुन कर आसपास के तमाम लोग घटना स्थल पर जमा हो गए. हर आगंतुक अपना कोट उतार कर सर्दी से बेतरह कांपते टर्नर पर डाल देता.

मार्क टर्नर दौड़ा दौड़ा आया और बाप के पास घुटनों के बल बैठ गया. टर्नर ने बेटे को देखा और कंपकंपी पर क़ाबू पाने की कोशिश करते हुए बोला, ''मैं शायद न बचूं. अपनी मां और टैमी का ध्यान रखना. मैं जानता हूं, तुम यह कर सकते हो.''

परिवार के एक पुराने हितैषी जेरी केहलेन ने मार्क को एक ओर बुलाया और उस के दोनों कंधे थाम कर कहा, ''अब तुम मदद के लिए तैयार हो जाओ. नीचे सड़क पर जाओ और लोगों को यहां पहुंचने में सहायता करो.''

लोग सूखी टहनियों से स्ट्रेचर बनाने में जुट गए. तभी दूर से उन्हों ने ईस्ट चैथम अग्नि शमन सेवा की दमकल गाड़ी के सायरन की परिचित आवाज़ सुनी. मदद आ पहुंची थी.

पेशे से अध्यापक पर ईस्ट चैथम फ़ायर कंपनी के प्रमुख एवं चैथम बचाव दस्ते के मुख्य अधिकारी वेन गियरिंग के घर टेलीफ़ोन

की घंटी बजी तो वह गहरी नींद सो रहा था. वह भाग कर रसोई में लगे वायरलेस से सार्वजनिक अपील प्रसारित करने लगा. अल सोमर्स की गाड़ी दुर्घटना स्थल से कोई ख़ास दूर नहीं थी. संदेश सुनते ही वह मुस्तैद हो गया. गाड़ी में लगे वायरलेस से उस ने तत्काल सूचना दी कि वह घटनास्थल की ओर बढ़ रहा है. लेकिन इस से पहले कि गियरिंग घर से निकलता, सोमर्स का संदेश मिला कि उसे मदद की ज़रूरत होगी. वह पावर लाइन वाली सड़क की दशा देख चुका था, सो महसूस कर रहा था कि इतनी बर्फ़ के रहते टर्नर को नीचे लाना काफ़ी मुश्किल होगा.

"डैडी को ख़बर कर दो," पत्नी डोरीस से कहता गियरिंग दरवाज़े की ओर भागा. "उन से कहो कि ट्रैक्टर ले कर पहुंचे. शायद बर्फ़ ढकी सड़क पर उन के ट्रैक्टर से बात बन जाए." उस की गाड़ी अभी निकली ही थी कि कोई एक किलो मीटर दूर बैठे उस के डैडी फ्रैंक अपने भारी भरकम हरे ट्रैक्टर पर सवार हो गए. देखते ही देखते ट्रैक्टर दुर्घटना स्थल की ओर बढ़ चला.

इधर टूटी हंसुली और तीन चटखी पसलियां ले कर बिस्तर पर पड़े एरिक लेगर-वाल ने भी यह रेडियो संदेश सुना. स्वयंसेवी फ़ायरमैन होने के नाते उस के पास भी वायरलेस रिसीवर था. ख़बर सुन कर उस से न रहा गया. वह जैसे तैसे बदन पर कोट चढ़ा कर अपने ट्रक में जा बैठा. उसे आशा थी कि ट्रक के फ़ोर-व्हील-ड्राइव होने के कारण वह उस सड़क पर जल्दी चढ़ सकेगा और टर्नर को संकट से निजात दिला सकेगा.

मददगार लोग. अब टर्नर का ख़ून बहना तो कम हो गया था, लेकिन उस का ज़ख्म भयंकर पीड़ा से दुखने और बेतरह टीसने लगा था. आसपास के लोगों ने टर्नर के लिए स्ट्रेचर तैयार किया ही था कि अल सोमर्स जंगल से निकल कर आता दिखाई दिया.

सोमर्स आपात चिकित्सा में निपुण था और उस के पास प्राथमिक चिकित्सा पेटी भी थी. "हिलाना डुलाना बिलकुल मत," वह आते ही बोला. सब के देखते देखते सोमर्स ने घाव पर पट्टी बांध दी. तभी लोगों ने जंगल की ओर से घरघराहट और कड़कड़ाहट की आवाज़ सुनी और सघन झाड़ियों को रौंदता कुचलता फ्रैंक गियरिंग का ट्रैक्टर प्रकट हुआ. दस मिनट बाद गियरिंग द्वारा काटे गए रास्ते पर चलते दमकल तथा बचाव दस्ते के छः और सदस्य आ पहुंचे. उन के साथ एक हलका स्ट्रेचर भी था.

दस आदमियों ने टर्नर को संभाल कर उठाया और बड़ी सावधानी से जंगल के सिरे तक ले जा कर उसे लेगरवाल के ट्रक में डाल दिया. लेगरवाल धीरे धीरे ट्रक चलाता नीचे आया और बर्फ़ हटा कर साफ़ की गई सड़क के किनारे खड़ी एंबुलेंस की ओर बढ़ा.

गोली लगे घंटा भर ही हुआ होगा कि टर्नर पिट्सफ़ील्ड, मासाचुसेट्स, स्थित बर्कशायर चिकित्सा केंद्र की ओर रवाना हो चुका था. यह कठिन बचाव अभियान पूरी तरह सेवा भाव का अथवा टर्नर के पड़ोसियों की तत्परता का परिणाम था—यह उन लोगों द्वारा संचालित था जो सहायता की इच्छा से प्रेरित हो कर आगे बढ़े थे और जिन्हों ने ऐसे संकटों का सामना करने के लिए हर तरह से प्रशिक्षित और सुसज्जित होने के लिए मेहनत की थी, अपना वक़्त लगाया था. अब बाक़ी का काम डाक्टरों का था, लेकिन इस स्वयंसेवी सहकार के बिना वे भी क्या कर लेते !

क्षमाशीलता. प्रारंभिक आपरेशन के दौरान डा. माइकेल कोन ने पाया कि गोली टर्नर को भेदती निकल गई थी. इस के बावजूद उस ने रीढ़, गुरदे अथवा अन्य मर्मस्थलों को कोई क्षति नहीं पहुंचाई थी. "गोली अगर पांच सेंटीमीटर भी इधर उधर हो जाती तो चोट घातक सिद्ध हो सकती थी," उन्हों ने आपरेशन के बाद मार्क और टर्नर की पत्नी को बताया.

दुर्घटना के पांच दिन बाद टर्नर लोगों से कुछ मिलने जुलने लायक़ हो गया तो दुर्घटना के सदमे से पीड़ित फ्रैंक ड्रेक उस से मिलने आया, इस भेंट के दौरान स्थिति बड़ी विचित्र बन पड़ी—उलटे टर्नर ने ड्रेक के प्रति सांत्वना और सहानुभूति दिखाई. वस्तुतः उसे भी लगा कि ड्रेक के मर्म पर लगा घाव उस के ज़ख़्म से कहीं ज्यादा गंभीर है.

"अब मैं कभी शिकार नहीं करूंगा," ड्रेक बोला, "मैं अपने आप को कभी माफ़ नहीं कर सकूंगा. कभी शूटिंग करूंगा भी तो सिर्फ़ कैमरे से. जंगल में तसवीरें भले ही खींचूं, शिकार तो अब कभी नहीं करूंगा."

इस पर टर्नर ने कहा, "मैं ठीक हो जाऊं तो तुम घर आना. यह भी तुम्हारा ही घर है, दोस्त. मैं तुम्हें ख़ुद ले जाऊंगा और दिखाऊंगा कि तुम्हें बढ़िया तसवीरें कहां मिल सकती हैं."

दुर्घटना के आठ दिन बाद टर्नर घर पर था. वही स्नेही साथी फिर आ जुटे जो उसे घटना स्थल से उबार कर लाए थे—अब वह उस के स्वास्थ्य लाभ में साथी थे.

स्थानीय मैथोडिस्ट चर्च ने इस ख़ुशी में एक रात्रिभोज का आयोजन किया, किंतु चर्च इस आयोजन में अकेला नहीं था—अन्य संप्रदाय वाले भी साथ थे. टर्नर के पड़ोसियों ने जलावन लकड़ी के एक गट्ठर पर लाटरी निकाल कर २७५ डालर बटोरे और यह रक़म टर्नर परिवार को सौंपी तो किसी को भी कुछ अस्वाभाविक नहीं लगा. कीथ शा ने इसी पर कहा, "मुसीबत में दूसरों के काम आने का गुण यहां के लोगों के रोम रोम में बसा है—दरअसल यहां के लोग हैं ही ऐसे."

खाद्य अखाद्य

वह लड़का पहली बार मां बाप की छत्रछाया से दूर नौकरी पर निकला था. नए मकान में आते ही उस ने एक महिला से पूछा कि काफ़ी कैसे बनाते हैं. मातृतुल्य महिला ने उसे सब कुछ समझा बुझा दिया और वह ख़ुशी ख़ुशी चला गया. कुछ दिन बाद सामने पड़ने पर उसी महिला ने पूछा कि अब काफ़ी कैसी बन रही थी. वह बोला, "शुरू में तो बहुत बढ़िया बनती थी, पर आज कल बिलकुल मज़ा नहीं आ रहा. ये क़ाफी के बीज कितने कितने दिन पर बदलने चाहिए?"

—इ गिल

उस किशोर वय लड़के की मां पहली बार उसे घर में अकेला छोड़ कहीं बाहर जा रही थी. बड़ी चिंता थी कि उन के जाने के बाद बेटा ढंग का संतुलित भोजन कैसे पा सकेगा. सब सहेज संभाल कर जाने के कुछ दिनों बाद बेटे को फ़ोन किया. चिंता भरे स्वर में पूछा, "मुन्ना, तू ठीक तो है—कुछ हरी चीज़ें भी खाता है या नहीं?"

"हां, डबलरोटी खा रहा हूं," लड़के का उत्तर था.

—जी एच इसमाइल

इज़राइल का टूटता स्वप्न किबुत्स

इज़राइल के सामूहिक फ़ार्म कभी उन्नति के शिखर पर थे. आज उन का शीराज़ा बिखर रहा है क्योंकि कड़ी फ़ार्म व्यवस्था ने मानव स्वभाव की उपेक्षा की है

—मिलान कुबिक

सत्तर वर्ष पूर्व जब यहूदियों ने फ़िलिस्तीन के पहाड़ों और मैदानों में शामियाने गाड़ कर बसना शुरू किया तो वह ब्रिटिश उपनिवेश था. वहां बसने के बाद यहूदी प्रवासियों ने 'किबुतज़िम' नाम से सामूहिक कृषि फ़ार्मों की स्थापना की जो विश्व भर के आदर्शवादियों की आशा के केंद्र बन गए. प्रारंभिक प्रवासी रूस तथा पोलैंड की गंदी बस्तियों के भगोड़े थे. वे सुबह से ले कर रात देर तक कठिन परिश्रम करते ताकि ऐसे बेहतर इनसान और नागरिक बन सकें जो कृषक हों और नगरों से दूर रहें. मोटे मुनाफ़े वाले व्यापार तथा उच्च शिक्षा में भी वे दूर रहना चाहते थे, क्योंकि प्रवासियों की दृष्टि में यहूदियों को बेघर बनाने में इन का बहुत बड़ा हाथ था.

इज़राइल की भूमि पर आज ऐसे लगभग २५० सामूहिक फ़ार्म हैं जो हरे भरे नख़लिस्तान की तरह नज़र आते हैं. इन की स्थापना उन धीर गंभीर यहूदियों ने की थी जो कठोर साधक थे. आज उन फ़ार्मों का रूप इतना निखर गया है जिस की कभी कल्पना तक नहीं की गई थी. इज़राइल की सिंचित भूमि के ३५ प्रति शत क्षेत्र में उन के खेत, तालाब और चरागाह हैं. उन का योगदान कृषि उत्पादन का ४९ प्रति शत है. उन के द्वारा स्थापित कारख़ाने उत्पादन तथा निर्यात में देश का नेतृत्व कर रहे हैं. प्रारंभ में वे छोलदारियों में रहते थे. धीरे धीरे आवास की दशा सुधरती गई. आज वे ऐसे घरों में रहते हैं जिन में सभी आधुनिक सुविधाएं उपलब्ध हैं. यद्यपि ये सामूहिक कृषि फ़ार्म अब समृद्ध हो चुके हैं, परंतु एक नए समाज की स्थापना का उन का आंदोलन ठंडा पड़ चुका है और मृतप्राय है. वे जिस मानव स्वभाव को बदलना चाहते थे, वही उन के आदर्शों के ह्रास का कारण बन गया.

सामूहिक कृषक अब तीसरी पीढ़ी में पहुंच चुके हैं. उन का दावा है कि उन्हों ने अपने सदस्यों में समानता की भावना को अमली रूप

दे दिया है, जबकि यही प्रयोग अन्य समाजों में पूर्णतया असफल रहा है. किसी भी किबुत्स पर किसी व्यक्ति के रहन सहन के स्तर का उस के काम अथवा दक्षता से कोई संबंध नहीं है.

उसे सामूहिक भोजनालय से भोजन मिलता है. अन्य ज़रूरी चीज़ें सामूहिक स्टोर से मामूली दामों पर मिलती हैं. प्रत्येक सदस्य को २०० डालर प्रति वर्ष जेब ख़र्च मिलता है. परंतु उसे नक़द राशि की शायद ही कभी आवश्यकता होती हो. सामूहिक फ़ार्म के पास अपनी कारें हैं जिन का उपयोग सदस्य कर सकते हैं. उन की छुट्टियां बिताने का पूरा व्यय, बच्चों की शिक्षा का ख़र्च तथा बीमार होने पर इलाज की ज़िम्मेदारी सामूहिक फ़ार्म की है.

सदस्य परिषद

इस के बदले में प्रत्येक सदस्य से यह आशा की जाती है कि वह इस समाजवादी आदर्श का पालन करे कि "प्रत्येक व्यक्ति अपनी सामर्थ्य के अनुसार काम करे और उसे उस की आवश्यकता के अनुसार मिले." पुरुष अथवा महिलाएं ४० से ४६ घंटे प्रति सप्ताह खेत अथवा कारख़ाने में काम करते हैं. प्रत्येक व्यक्ति उन सभाओं में भाग लेता है जिन में मुनाफ़े का बंटवारा, नये सदस्यों की भरती आदि सभी मामलों पर निर्णय लिए जाते हैं. आर्थिक तथा सामाजिक मामलों का संचालन एक परिषद करती है. जो सदस्य इस परिषद के लिए चुने जाते हैं वे लगातार दो वर्ष से अधिक अपने पद पर नहीं रह सकते, ताकि अफ़सरशाही का नया वर्ग तैयार न हो सके. किबुत्स के प्रत्येक सदस्य को छोटे से छोटा कार्य भी करना पड़ता है. इज़राइल के स्वतंत्रता संग्राम का एक प्रमुख जनरल इगाल एलन कुछ वर्ष पूर्व विदेशमंत्री पद से मुक्त हुआ. अवकाश ग्रहण के बाद वह अपने सामूहिक फ़ार्म में चला गया

यद्यपि सामूहिक फ़ार्मों ने अपनी परंपरा को क़ायम रखा है, परंतु पिछले वर्षों में उन्हें अनेक परिवर्तनों से गुज़रना पड़ा. ये परिवर्तन छठे दशक के अंत में शुरू हुए. उस समय निरंतर विकसित होने वाले किबुत्सों को भूमि और पानी की कमी महसूस हुई. प्रधान मंत्री डेविड बेन गुरियन ने उन से आग्रह किया कि वे उद्योग धंधों का भी निर्माण करें ताकि मोरक्को, मिस्र, इराक़ तथा अन्य अरब देशों से आने वाले प्रवासियों को भी रोज़गार दिया जा सके: नए कारख़ानों में तकनीकी लोगों की कमी पड़ गई. तब इन फ़ार्मों ने अपने सदस्यों के बच्चों को कालिज की शिक्षा प्राप्त करने की छूट दे दी. १९६९ से '७३ तक विश्वविद्यालय की शिक्षा पाने वाले किबुत्स बच्चों की संख्या में ४० प्रति शत की वृद्धि हो गई. कुछ समय बीत जाने के बाद अनेक सामूहिक फ़ार्मों के एक तिहाई सदस्यों ने ऐसे पाठ्यक्रम में भी दाख़िला ले लिया जिन में ललित कला, फोटोग्राफ़ी, नक़्क़ाशी तथा कलात्मक बरतन बनाने का काम भी शामिल हैं. ये विषय अब तक सर्वहारा के लिए अनुपयोगी समझे जाते थे.

प्रदूषण

शून्य से शुरू कर के शीघ्र ही सामूहिक फ़ार्मों ने ३२५ कारख़ाने खड़े कर लिए. औद्योगिक उत्पादन का सात प्रति शत इन कारख़ानों से तैयार हो कर जाने लगा है. इन में दूध की गाड़ियां तथा सचल सैनिक भोजनालय भी शामिल हैं. परंतु इन कारख़ानों की चिमनियों से निकलने वाले धुएं ने प्रदूषण की समस्या उत्पन्न कर दी है. इस के फलस्वरूप शुद्ध भोजन तथा शुद्ध वायु का किबुत्स का प्रारंभिक आकर्षण धूमिल पड़ गया है.

इन सामूहिक फ़ार्मों के संस्थापकों की त्यागमय भावना अब समाप्त हो चुकी है. १९३० में जज़रीली घाटी में स्थित बेत हशीता किबुत्स छोलदारियों का गांव था. वहां के रहने वाले स्त्री पुरुष हाइफ़ा बंदरगाह पर कुली आदि का काम करते थे. उन्हें मज़दूरी के बदले रोज़ १० सेंट की हेरिंग मछली और आलू खाने को मिलता था. दो दशक पूर्व किबुत्स ने बड़े पैमाने पर ज़ैतून और सब्ज़ियों को डब्बाबंद करना शुरू किया. इस के अलावा उन्हों ने रुई धुनने की मशीन बनाने का एक कारख़ाना भी गांव में चालू कर दिया. अब इस गांव के १२०० निवासियों में से अधिकांश वातानुकूलित मकानों में रहते हैं. नए सामूहिक भोजनालय में दोपहर तथा रात के भोजन में चार प्रकार के पकवान मिलते हैं. बच्चे नर्सरी स्कूलों में शिक्षा पाते हैं, जहां पर प्रशिक्षित अध्यापक उन की देखभाल करते हैं. लगभग हर वर्ष बेत हशीता फ़ार्म से पर्यटकों का एक दल यूरोप भ्रमण के लिए जाता है, जिस का समस्त ख़र्च सामूहिक फ़ार्म वहन करता है. वृद्ध सदस्यों को छूट है कि वे इच्छानुसार कम या अधिक कार्य कर सकते हैं. सुयोग्य कार्यकर्ता नियमों में भी परिवर्तन करवा सकते हैं. उन्हें भ्रमण के दिन भी अधिक मिल जाते हैं क्योंकि फ़ार्म के नेताओं की उन पर विशेष कृपा रहती है.

जीवन शैली

साल के अधिकांश महीनों में वहां गरमी का काफ़ी प्रकोप रहता है. इस कारण गांव का जीवन प्रातः छः बजे प्रारंभ हो जाता है. दंत चिकित्सक भी उसी समय अपनी दुकान खोल लेता है. छः घंटे के बाद प्रत्येक सामूहिक कृषक अपने घर को लौट जाता है. उस दिन का कार्य पूरा हो जाता है. दोपहर बाद से चार बजे तक वे विश्राम करते हैं. चार बजे के बाद वे अपनी खाट ले कर विशाल स्विमिंग पूल के पास पहुंच जाते हैं. वहां सारा परिवार स्नान करता है. वहां से आ कर रात का भोजन होता है. रात साढ़े नौ बजे तक बच्चे सो जाते हैं. बड़े या तो चलचित्र देखते हैं या काफ़ी हाउस आदि में विचार विमर्श के लिए पहुंच जाते हैं.

ऐसा प्रतीत होता है कि यह जीवन शैली आदर्श है. परंतु चंचल तथा सक्रिय व्यक्ति खाने और काम करने की नियमित व्यवस्था तथा एक ही प्रकार के लोगों से प्रति दिन मिलने से ऊब गए हैं. मुफ़्त का भोजन मिलता है और कोई चिंता नहीं है. कुछ लोग इस वातावरण में घुटन महसूस करते हैं. बेत हशीता की एक गृहस्थ महिला ने शिकायत की कि "चूंकि हमें कोई बड़ी चिंता नहीं है, इस कारण छोटी छोटी बातों पर वाद विवाद होता है. अगर कोई महिला अपने शिशु को दूध पिलाने में देरी कर दे तो वह उस दिन के बाद विवाद का विषय बन जाती हैं. निरर्थक विषयों पर बातचीत सुन कर मुझे कभी कभी आश्चर्य होता है."

अधिकांश सामूहिक फ़ार्मों में सब से अधिक वाद विवाद ऊंची नौकरियों के वितरण पर होता है. विशेष कर वे नौकरियां जिन में गांव से बाहर जाना पड़ता है. कृषि तथा फ़ार्म व्यवस्था के लिए अकसर आम सभाएं होती हैं. इन में एक चौथाई से भी कम उपस्थिति होती है.

पिछले कुछ वर्षों से उदासीनता का ऐसा ही भाव प्रमुख राजनीतिक समस्याओं पर विचार करने के लिए बुलाई गई सभाओं के प्रति भी झलकता है. १९४८ में फ़िलिस्तीन के विभाजन के प्रश्न पर खूब गरमागरम बहस हुई. इसी के

फलस्वरूप इज़राइल का एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में जन्म हुआ. परंतु अब वह जोश नहीं रहा है. कुछ दिन पूर्व सामूहिक फ़ार्मों से संबंधित राजनीतिज्ञों ने सीरिया से जीते प्रदेश को इज़राइल में मिलाने का प्रश्न उठाया तो किबुत्स निवासियों ने इस पर बहस करने में कोई दिलचस्पी नहीं दिखाई. ऐसा क्यों हो रहा है? इस पर विचार करने के लिए एक विशेष सम्मेलन बुलाया गया. इस सम्मेलन ने यह खेदजनक निष्कर्ष निकाला कि सामूहिक फ़ार्म के सदस्यों, विशेष कर ३५ वर्ष से कम आयु वालों में "राजनीति तथा सार्वजनिक जीवन के प्रति उदासीनता आ गई है."

परिवर्तित दृष्टिकोण

प्रारंभ में पुरुषों तथा महिलाओं में पूर्ण समानता थी. पुरुषों के साथ साथ महिलाएं भी खेतों में काम करती थीं. शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण बदल जाने पर इस में भी परिवर्तन आ गया. अब महिलाओं को स्कूलों, नर्सरी पाठशालाओं तथा भोजनालयों में भेजा जाने लगा, जहां पर ९० प्रति शत कर्मचारी महिलाएं हैं. मिशमार हामेक फ़ार्म की एक महिला ने बताया, "जिन नौकरियों के दरवाज़े महिलाओं के लिए खुले हैं, उन जगहों में सभी महिलाएं नियुक्त हैं. इस कम्यून (स्थानीय स्वायत्त मंडल) ने सचिव पद पर एक महिला को चुना है. उस का कहना है, बाहरी दुनिया की अपेक्षा किबुत्स की महिलाओं पर अधिक प्रतिबंध है."

प्रारंभ में एक कठोर नियम था कि दूसरे के श्रम का शोषण नहीं किया जा सकता. परंतु अब यह नियम लगभग भुलाया जा चुका है. सार्वजनिक उद्योगों के विकास से रोज़गार में भी वृद्धि हुई है. अब न्यूनतम योग्यता वाले लोगों को दैनिक मज़दूरी के आधार पर नियुक्त किया जाने लगा. सामूहिक उद्योगों के १६,५२० कर्मचारियों में इन वेतनभोगी मज़दूरों की संख्या ५,२२० हो गई है. इस का सब से बड़ा उदाहरण अफ़िकिम कम्यून है जो अन्य सभी से समृद्ध माना जाता है. इस की ८० प्रति शत आय का स्रोत प्लाइवुड कारख़ाना है. इस कारख़ाने में ३०० वेतनभोगी मज़दूर तथा १२० सदस्य कार्य करते हैं. किबुत्स के भूतपूर्व सचिव आरनोन क्लादनिज़्की ने यह स्वीकार किया कि "हमारा जीवन उन मज़दूरों से बेहतर है जो हमारी अधिकांश संपत्ति का उत्पादन करते हैं. हम में से कुछ लोग यह महसूस करते हैं कि हम उन का शोषण कर रहे हैं. विश्वास रखिए कि हम लोग बहुत सुखी नहीं हैं."

क्लादनिज़्की एक प्रशिक्षित मोटर मैकेनिक है. उन्हों ने यह आंदोलन चलाया कि अधिक मज़दूरों वाले कारख़ाने के स्थान पर दो स्वचालित कारख़ाने स्थापित किए जाएं, जिन्हें कम्यून के सदस्य स्वयं चला सकें. इस प्रस्ताव पर किबुत्स के सदस्यों की स्वीकृति मिल चुकी है. परंतु जब तक स्वचालित कारख़ाने चालू नहीं होते तब तक मुनाफ़ा कमाने वाला प्लाइवुड का कारख़ाना चलता रहेगा.

अन्य कम्यूनों में मुनाफ़ा कमाने की प्रवृत्ति का विरोध अपेक्षाकृत कम है. चार वर्ष पहले पूर्वी क्षेत्रों में रहने वाले यहूदियों ने इस प्रवृत्ति की कठोर निंदा की थी. वे यहूदी बेत शीन तथा किर्यात शेमोना जैसे अर्ध विकसित नगरों में रहते हैं. इन नगरों के चारों ओर पुराने तथा समृद्ध किबुत्स बसे हैं. समाजवाद के नाम पर इस प्रकार की समृद्धि के प्रति रोष प्रकट करने के लिए इन नगर वासियों ने पिछले चुनाव में मज़दूर दल के विरुद्ध वोट दिया था, क्योंकि मज़दूर दल को किबुत्सों का समर्थन प्राप्त था.

इन नगर वासियों के वोट से ही प्रधान मंत्री मेनचम बेगिन की दक्षिणपंथी सरकार विजयी हुई थी.

इन कम्यूनों के प्रति आकर्षण में कमी आने का सब से अधिक प्रभाव नवयुवकों में देखा जा सकता है. उन की आस्था दिन ब दिन घटती जा रही है. ३० वर्ष पूर्व कम्यून को छोड़ कर जाना एक अक्षम्य अपराध था. हजारों में कोई एक रात के वक्त ऐसा दुःसाहस कर सकता था. सारे समाज में उस की निंदा होती थी. परंतु आज किबुत्स छोड़ कर जाना आम बात हो गई है. किबुत्स में रहने वाले नवयुवक ही किबुत्स की निंदा करने लगे हैं. एक सामाजिक कार्यकर्ता अवी पोरत को इतना सुरक्षित जीवन पसंद नहीं आया और वह चला गया. उस का कथन है कि ''मैं जानना चाहता था कि मैं कितने पानी में हूं.'' कालिज की एक छात्रा डफना पराग सामूहिक कम्यून के परंपरागत बंधे बंधाए जीवन से ऊब गई. उस के अनुसार, ''किबुत्स में व्यक्तिवादी के लिए कोई स्थान नहीं है.''

पलायन

किबुत्स छोड़ कर भागने वालों की संख्या इतनी बढ़ चुकी है कि इन के अस्तित्व को ही खतरा पैदा हो गया है. ३३ वर्ष पूर्व इज़राइल के सात प्रति शत लोग सामूहिक फ़ार्मों में रहते थे. आज किबुत्सों की सदस्य संख्या १,१२,००० है जो कुल जनसंख्या का केवल ३.३ प्रति शत है. प्रारंभिक दिनों में नवयुवकों को सामूहिक फ़ार्म में आकर्षित करने के लिए 'आरज़ी' आंदोलन ख़ूब सफल रहा. परंतु पिछले दस वर्षों में उस का आकर्षण इतना कम हो गया है कि दस में से छः सदस्य १८ वर्ष की आयु होने पर इस से अलग हो जाते हैं. क्लादनिज़्की के अनुसार, ''नवयुवकों की कमी हमारी सब से बड़ी समस्या है.''

भागने वालों की दिन ब दिन बढ़ती संख्या के कारण सदस्य अब उन की निंदा नहीं करते. अब साल भर में एक समारोह होता है, जहां वापस आने वालों का स्वागत किया जाता है. पिछले दिनों इज़राइल के समाचार पत्रों में सामूहिक फ़ार्मों के विज्ञापन प्रकाशित हुए थे. इन विज्ञापनों में उन से वापस आने का अनुरोध किया गया था. वापस आने के इच्छुक लोगों को लाने के लिए बसों की सुविधा दी जाती है. इन उपायों से बहुत कुछ सफलता मिली है. लगभग १२,००० व्यक्ति वापस आ कर सदस्यता के लिए आवेदन पत्र दे चुके हैं. इस के फलस्वरूप किबुत्सों की संख्या में स्थिरता आ गई है. परंतु नवयुवकों का पलायन अभी पूरी तरह रुका नहीं है.

हाइफ़ा विश्वविद्यालय के अनुसंधान संस्थान ने यह निष्कर्ष निकाला है कि सामूहिक फ़ार्मों के आदर्शों तथा व्यावहारिकता में अंतर आ गया है. नवयुवकों में निराशा का यही कारण है. वेतनभोगी मज़दूर प्रथा तथा आम सभाओं के प्रति उदासीनता और अनुपस्थिति किबुत्स के आधारभूत नैतिक मूल्यों के विपरीत है. नैतिक मूल्यों का यह ह्रास नवयुवकों को इन से दूर हटाने में मुख्य भूमिका अदा कर रहा है.

इन खोजों के आधार पर पिछले दिनों कई सुधार किए गए हैं. वेतनभोगी मज़दूरों की संख्या घटाने के लिए एक कम्यून ने आफि-जिम का अनुकरण किया है. उस ने फलों को डब्बाबंद करने का एक कारख़ाना बेच दिया है. यद्यपि इस में अच्छा मुनाफ़ा था, परंतु मज़दूर अधिक रखने पड़ते थे. अधिकांश सामूहिक फ़ार्मों ने पिछले वर्ष (१९८०) मांस की ख़पत तथा जेब ख़र्च की राशि घटा दी. कुछ ने

विदेशों का भ्रमण कार्यक्रम समाप्त कर दिया. पिछले दिनों एक सम्मेलन में यह निश्चय किया गया कि महिलाओं को विभिन्न प्रकार के कामों में लगाया जाए. इस के लिए पाठ शालाओं में दस अध्यापकों में दो अध्यापक पुरुष रखे जाएं. उत्तरी इज़राइल में कुछ सामूहिक फ़ार्मों ने ग़रीब नगरवासियों के लिए पुलों का निर्माण प्रारंभ कर दिया है. बेत शीन नगर के बाहरी इलाके में रेशाफ़िम सामूहिक फ़ार्म के द्वारा प्रौढ़ शिक्षा केंद्र चलाया जाता है जिस में पास पड़ोस की अशिक्षित महिलाएं अक्षर ज्ञान प्राप्त करती हैं. उस इलाके के अधिकांश किबुत्सों ने अपने स्विमिंगपूल तथा खेल के मैदान बाहर के बच्चों के लिए भी खोल दिए हैं. अब ग़रीब नगर वासियों के बच्चे भी उन का लाभ उठा सकते हैं.

इन सब सुधारों तथा परिवर्तनों के बावजूद वे पुराने दिन फिर वापस नहीं आ सकते, जब एक नया राष्ट्र बना था. कम्यून उस नवीन राष्ट्र के क़िले थे और किबुत्स की सदस्यता सम्मान की सूचक थी. चाहे वे कितना ही अधिक प्रयास करें, परंतु ये सामूहिक फ़ार्म वे अवसर प्रदान नहीं कर सकते, जो आज के विकसित इज़राइल का स्वतंत्र समाज उपलब्ध कराता है. आज के इज़राइल में वे एक भिन्न तथा वैकल्पिक जीवन शैली प्रस्तुत करते हैं. परंतु भविष्य उन के साथ नहीं है. वे भावी इज़राइल की झांकी नहीं बन सके हैं.

बालमन

मेरे परिचितों में विलियम डब्लू येट्स ही एक ऐसे थे जो जीवन और मृत्यु दोनों के प्रति समान जिज्ञासु दृष्टि रखते थे. वे ऐसे उत्साही पुरुष थे जिन्हों ने ७० वर्ष की आयु में भी एक १७ वर्ष के युवक की जिज्ञासा और उत्सुकता को बनाए रखा. मुझे अच्छी तरह याद है वह पहली रात जब मैं उन से मिलने गया. मोमबत्ती के पीले प्रकाश में डूबी बैठक, येट्स ने प्रवेश किया—रुचिपूर्ण कपड़े, ऊंची और दृढ़ आकृति जो मुझ से कहीं अधिक साहसी युवक को आतंकित कर देने के लिए पर्याप्त थी. परंतु उत्तेजित होते ही एक असाधारण परिवर्तन आ गया उन में—कुर्सी पर तन कर बैठ गए, सिर कुछ पीछे झुका था, दृष्टि में कठोरता और वाणी में उत्तेजना; बीच बीच में थोड़ी हकलाहट और चेहरे पर एक दीप्ति जो अंतःस्थिति को उजागर करती थी. सचमुच, आश्चर्यजनक दृश्य था.

वृद्धावस्था में भी वह कभी बहुत दुखी और असंतुष्ट लगते तो उन के चेहरे पर उत्तेजना की लालिमा किसी गरिमा की भांति दपदप करती, मानो दलदली भूमि पर सूर्य की रश्मि का आकस्मिक प्रस्फुटन. और चेहरे पर मौजूद उम्र की परतों के पीछे बालपन की सी उत्कंठा, उत्सुकता और व्यग्रता झलकती थी. कभी वह गंभीर चेहरा फड़कन लिए होता और इस तरह तकता जैसे किसी बच्चे का चेहरा ग्रीष्म की दुपहरिया में खिड़की के पीछे से झांक रहा हो—निराश और हताश.

—फ्रैंक ओ कोनर

'डब्लू बी येट्स : इंटरव्यूज़ एंड रिक्लेक्शंस', (मैकमिलन, इंगलैंड)

पिकनिक वह मौका है जब लोग तो घूमते है और कीड़े मकोड़े झूमते.

—न्यूज़, आयोवा

पाठशाला: हास्यशाला

हवाई विश्वविद्यालय के विज्ञान सभागार की दीवार पर उपग्रहों के संबंध में अमरीकी समिति का पोस्टर लगा था, जिस के ऊपर बड़े बड़े लाल अक्षरों में प्रश्न था: 'वह क्या चीज़ है जो ऊपर जा कर कभी नीचे नहीं आती?' इस के नीचे उतने ही बड़े अक्षरों में किसी ने लिख दिया: 'फ़ीस'

—मैट फ़ारेस्टर

प्रिंस्टन विश्वविद्यालय के भूतपूर्व अध्यक्ष जेम्स मैक्काश एक सुबह विश्वविद्यालय के गिरजे में प्रार्थना सभा का संचालन कर रहे थे. प्रार्थना का अंत करते करते उन्हें याद आया कि एक घोषणा करनी है. वे जानते थे कि प्रार्थना की समाप्ति पर 'आमीन' कहते ही छात्र दरवाज़ों की तरफ यूं लपकेंगे कि घोषणा दुष्कर हो उठेगी. सो, बिना रुके उन्हों ने प्रार्थना का अंत यूं कर दिया: "और ईश्वर की अनुकंपा सीनियरों की जरमन क्लास पर हो जो आज ११ के बजाए १० बजें शुरू होगी."

—हेनरी डब्लू कोरे

उन दिनों मेरे पिता नार्थ वेस्टर्न विश्वविद्यालय के छात्र थे. एक दोपहर को वे अपने चार सहपाठियों के साथ प्रिय पब में पहुंचे तो उन का सामना एक ऐसे आदमी से हुआ जो शर्तें बद बद कर लोगों से कई दौर जीत चुका था. शर्त थी उस के विज़िटिंग कार्ड के पीछे दो घूमघुमौवल रेखाओं के बीच तीसरी रेखा खींचने की, पर दो नियम थे. नई रेखा कहीं भी दो रेखाओं से बाहर न निकले, और यह करिश्मा उन्हें छोटे जेबी शीशे में कार्ड का प्रतिबिंब देखते हुए करना था. शर्त बदने वाले महाशय पिताजी की मेज़ पर आए तो उन पांचों ने आननफ़ानन में बारी बारी से छोटे शीशे में देख कर तीसरी रेखा खींच दी.

"आप जीनियस हैं! वह आदमी चीख़ पड़ा.

"नहीं," बारटेंडर न टोका, "ये सब विद्यार्थी हैं."

—के जे

धर्मशास्त्र संस्थान के प्रोफ़ेसर साहब ने अपनी कक्षा को सूचित किया कि उन के अगले व्याख्यान का विषय कपटाचरण का पाप होगा और इस संदर्भ में उन्हों ने लड़कों से कहा कि वे बाइबिल में संत मार्क के सुसमाचारों का १७ वां अध्याय पढ़ कर आएं तो अच्छा रहेगा. अंततः व्याख्यान शुरू होने लगा, तो उन्हों ने लड़कों से पूछा कि किस किस ने उन के निर्देश का पालन किया. फिर क्या था, हर छात्र ने दाहिना हाथ उठा दिया."

"धन्यवाद," प्रोफ़ेसर ने कहा, "आज का व्याख्यान तुम जैसे लोगों के लिए ही है, क्योंकि मार्क के सुसमाचारों में १७ वां अध्याय है ही नहीं."

—केनेथ एडवर्ड्स

व्यावसायिक पाठ्यक्रम की कक्षा में उम्र में कुछ बड़े एक छात्र से इंस्ट्रक्टर ने कालेज में दाख़िला लेने का कारण पूछा. वह बोला, "मैं शोफ़र हूं और अगली से पिछली सीट पर पहुंचना चाहता हूं."

—राबर्ट ली वांडोवस्की

आप ने कभी सोचा है कि आप की पत्नी विधवा हो गई तो उस का और बच्चों का क्या होगा?

हर गृहस्थ का पुनीत कर्तव्य

—सत्येंद्रनाथ सरकार

सड़क दुर्घटना में पति की आकस्मिक मृत्यु रेणु के लिए बहुत बड़ा आघात थी. जीविका का एकमात्र साधन जाता रहा. पति की भविष्य निधि राशि प्राप्त करने गई तो एक और गहरा धक्का लगा. भविष्य निधि आयुक्त के कार्यालय से उसे पता चला कि शादी के पहले उस के पति ने उत्तराधिकारी के रूप में अपनी मां का नाम लिखा दिया था. मां को मरे काफी अरसा बीत चुका था, लेकिन लापरवाही में रेणु का स्वर्गीय पति उत्तराधिकारी का नाम बदलवाना टालता रहा था. अब भविष्य निधि की राशि झमेले में पड़ गई थी और उसे प्राप्त करने में महीनों लग जाएंगे. ग्रेचुइटी की आशा में वह पति के कारख़ाने के प्रबंधकों के पास गई. वहां पता चला कि उस का पति अस्थाई कर्मचारी था, इस लिए वह ग्रेचुइटी का अधिकारी नहीं था. बेचारी रेणु न तो ख़ास पढ़ी लिखी थी, न कोई हुनर जानती थी. अपना और अपने पांच वर्षीय बेटे का पेट पालने की समस्या उस के सामने मुंह बाए खड़ी थी.

—व्यवहारकुशल अवतार कौल ने वकील की सहायता से अपने आर्थिक मामले इस प्रकार सुव्यवस्थित कर लिए थे कि अकस्मात मुसीबत पड़ने पर उस की पत्नी के सामने किसी प्रकार की आर्थिक कठिनाइयां न आएं. वकील से सलाह मशविरे के समय उस की पत्नी भी साथ रहती थी. इस प्रकार वह परिवार के आर्थिक मामलों से पूरी तरह परिचित हो गई थी. अकस्मात विधवा हो जाने पर श्रीमती अवतार कौल को परेशानियां नहीं झेलनी पड़ी.

दोनों ही पतियों को अपनी पत्नियों से पूरा लगाव था. लेकिन अवतार ने इस बात का विशेष ध्यान रखा कि उसकी पत्नी को अज्ञान की सज़ा न भुगतनी पड़े. समझदार गृहस्थ के नाते पत्नी और बच्चों के भविष्य का ध्यान रखना अवतार कौल अपना पुनीत कर्तव्य समझता था.

आश्रितों की भावी आर्थिक सुरक्षा का नाम 'संपत्ति नियोजन' है. प्रत्येक व्यक्ति के पास कुछ न कुछ संपत्ति अवश्य होती है, जिस में पेंशन, भविष्य निधि व ग्रेचुइटी आदि भी शामिल है. उस की व्यवस्था व योजना सभी

के लिए लाभदायक सिद्ध होती है. संपत्ति नियोजन का प्रथम लक्ष्य है संपत्ति का पूर्ण विवरण प्राप्त कर अपने जीवन काल में उस से अधिकतम लाभ हासिल करना और अनावश्यक करों से बचना. दूसरा लक्ष्य है अपने उत्तराधिकारियों में संपत्ति का उचित वितरण करना ताकि उन्हें न्यूनतम ख़र्च उठाने पर अधिकतम लाभ मिल सके और मानसिक परेशानियां कम से कम हों.

आम तौर पर सभी पति ये बातें जानते है. लेकिन ऐसे व्यक्ति बहुत कम है जो इस विषय पर पत्नी से खुल कर परामर्श करते हों कि विधवा होने पर उस की आर्थिक समस्याओं का समाधान किस प्रकार होगा. कुछ पत्नियां तो यह मान कर चलती हैं कि ईश्वर की दया से सब ठीक ठाक ही चलता रहेगा.

सच तो यह है कि युवावस्था में कोई भी वह नहीं सोच पाता कि कोई भी दिन उस का अंतिम दिन हो सकता है. हम मानें या न मानें, यह सच है कि भारत की हज़ारों महिलाओं के पति हर साल घातक दुर्घटनाओं या बीमारियों के शिकार होते हैं.

कई लोगों को यह ग़लतफ़हमी होती है कि उन के पास कुछ है ही नहीं तो अधिक चिंता करने की क्या आवश्यकता. पर धनी व्यक्तियों के मुकाबले अल्प संपत्ति वालों को नियोजन की आवश्यकता अधिक है. ज़रा सी भूल उन के उत्तराधिकारियों को अंधकार की ओर धकेल सकती है. ३६ वर्षीय शोभा को ही लीजिए. असफल आपरेशन में उस के पति अशोक की मृत्यु क्या हुई, उस पर मुसीबतों का पहाड़ टूट पड़ा. अशोक ने अपने पिता की जमीन पर निजी पैसे से मकान बनाया था, और उसी के एक कमरे में छोटी सी दुकान खोल रखी थी. हाल ही में पिता की मृत्यु हुई थी. उन्हों ने कोई वसीयत नहीं छोड़ी थी, न अशोक के नाम उस जमीन पर मकान बनाने का अधिकार पत्र ही लिखा था. अशोक के सामने तो उस के भाई कुछ नहीं बोले, लेकिन उस के मरते ही उन्हों ने यह कह कर कि मकान उन के स्वर्गीय पिता का था और उस में उन का भी बराबर बराबर का हक़ है, मकान के दो तिहाई हिस्से पर दख़ल कर लिया. शोभा दुकान तो क्या चला पाती, स्वर्गीय पति की संपत्ति से भी वंचित हो गई, इस लिए कि पति ने उस संपत्ति पर अपना अधिकार क़ानूनी तौर पर पूरी तरह स्थापित और स्पष्ट नहीं किया था. समुचित संपत्ति नियोजन के द्वारा इन परेशानियों से बचा जा सकता था. क़ानूनी कारवाई में हज़ारों रुपए ख़र्च हो गए. पति की कार बिक गई, बच्चों की फ़ीस तक जुटाना मुश्किल हो गया.

भविष्य के प्रति सजग रहना पति व पत्नी दोनों के हित में है. कुछ पत्नियां इसे अनावश्यक समझती है, लेकिन अकस्मात विपत्ति पड़ने पर यह भूल महंगी पड़ती है. संतति निरोध की गोली की तरह संपत्ति नियोजन भी समय निकल जाने पर व्यर्थ हो जाता है. इस के लिए उचित समय वही है जब पति व पत्नी जीवित हों. पारस्परिक सहयोग से पंचसूत्री संपत्ति नियोजन इस प्रकार कार्यान्वित किया जा सकता है:

प्रथम सूत्र : सही योजना बनाइए. यदि पति व पत्नी एक ही वय के हैं तो पचास प्रति शत संभावना है कि पत्नी को वैधव्य दुःख भोगना पड़े. समुचित संपत्ति नियोजन से विधवा पत्नी आर्थिक कठिनाइयों से मुक्त रहेगी, गृहस्थ जीवन सामान्य रूप से चलता रहेगा व नई परिस्थिति में परिवार को ढालने के लिए आर्थिक साधन उपलब्ध रहेंगे. बच्चों की

पारिवारिक फ़ाइल का विवरण

निम्नांकित दस्तावेज तथा पारिवारिक विवरण एकत्र कर लीजिए. आवश्यक कागजात की फोटोकापी भी करवा लें. जो भी कागज अथवा दस्तावेज़ कुछ भी महत्व रखता हो उसे एक स्थान पर एकत्र कर लें. तत्पश्चात उन दस्तावेजों की सूचियां निम्न शीर्षकों के साथ तैयार कर लें.

पारिवारिक
—जन्म प्रमाणपत्र
—गोद लेने संबंधी काग़ज़ात
—विवाह व तलाक़ संबंधी दस्तावेज

निजी संपत्ति
—मकान व अचल संपति के दस्तावेज, किराएदारों से किए गए अनुबंध व शर्तें
—कृषि भूमि का विवरण व माल संबंधी कागजात
—बैंक खाते, पास बुक व नामज़दगी के दस्तावेज़
—निश्चित अवधि के लिए जमा बैंक धनराशि की रसीदें
—जमा पूंजी तथा लेन देन के काग़ज़ात
—कंपनियों के शेयर, वोनस, यूनिट, धारक बौंड, स्वर्ण बौंड
—सेफ़ डिपाज़िट वाल्ट, उन का स्थान, नंबर व चाबी
—डाक घर में जमा अनिवार्य बचत पूंजी
—वसूल किया जाने वाला ऋण
—कार अथवा स्कूटर के रजिस्ट्रेशन व बीमा संबंधी काग़ज़ात

बीमा
—जीवन बीमा
—मकान व दुकान का बीमा
—दुर्घटना बीमा

कर्मचारी लाभ
—भविष्य निधि की पास बुक व कागज़ात
—मृत्यु अथवा अवकाश ग्रहण करने पर मिलने वाली ग्रेचुइटी
—पेंशन तथा सेवानिवृत्त होने पर मिलने वाले लाभ

आय कर तथा अन्य कर
—आय कर स्थायी नंबर व ज़िला तथा मुहल्ला जहां कर निर्धारण हुआ है
—पिछले तीन वर्षों का आय कर विवरण व निर्धारण आदेश
—संपत्ति कर विवरण

व्यापार
—हिंदू अविभाजित परिवार की संपत्ति में हिस्सा
—पार्टनरशिप के दस्तावेज
—संपत्ति हस्तांतरण व क्रय विक्रय संबंधी दस्तावेज व मुख़्तारनामा जहां आप के नाम से पंजीकृत न हुआ हो
—व्यापार संबंधी साख तथा व्यापार से प्राप्त होने वाली आय का तरीका व विवरण

संपत्ति नियोजन
—वसीयतनामा
—मुख़्तारनामा
—विशेष व आम
—ट्रस्ट संबंधी अनुबंध

शिक्षा और लड़कियों के विवाह में आर्थिक अड़चन नहीं आएगी. साथ ही विवाद व मुक़दमेबाज़ी से छुटकारा मिल जाएगा.

द्वितीय सूत्र : विश्वसनीय तथा पेशे में सुयोग्य सलाहकार चुन लीजिए. सपत्ति की व्यवस्था अकेले व्यक्ति के बस का नहीं है. कई प्रकार के लोगों से परामर्श करना ठीक रहेगा. परंतु किसी वकील अथवा चार्टर्ड एकाउंटेंट की सलाह विशेष रूप से महत्वपूर्ण है. वसीयतनामा लिखने, संपत्ति की उचित व्यवस्था व वितरण तथा कर संबंधी मामले

निपटाने के लिए अनुभवी कानूनी सलाहकार की सहायता लीजिए.

जानकार मित्रों से ऐसे स्थानीय वकीलों व चार्टर्ड एकाउंटेंट के नाम व पते मालूम कीजिए जिन्हें जायदाद संबंधी विवादों का पर्याप्त अनुभव हो. दो या तीन वकीलों से मुलाक़ात कीजिए. उन की पेशे संबंधी विशेष योग्यता की जानकारी प्राप्त करने में तनिक भी संकोच न करें. उन के दो या तीन मुवक्किलों से भी मुलाक़ात कीजिए, जिन्हों ने उन वकीलों से क़ानूनी सलाह ली हो. वह वकील जो पति और पत्नी दोनों की उपस्थिति में सलाह दे, अधिक विश्वसनीय सिद्ध होगा. अपना उद्देश्य एवं व्यक्तिगत इच्छा सलाहकार को साफ़ साफ़ बता दें.

तृतीय सूत्र : संपत्ति संबंधी तथ्य एकत्र कीजिए. आवश्यक दस्तावेज़ों की फ़ाइल बनाइए. (संभावित दस्तावेज़ों की सूची पृष्ठ ४६ पर दी गई है.) इस बारे में अपने वकील से क़ानूनी सहायता लें. वर्तमान आय की राशि निर्धारित करें. इस का भी हिसाब रखें कि गृहस्थ की मृत्यु की स्थिति में आय कितनी होगी. व्यय का अनुमान क्या होगा. ऋण की देय तिथियों का ब्यौरा बना लें. पेंशन, भविष्य निधि, ग्रेचुइटी, जीवन बीमा व अन्य जमा पूंजी का सही विवरण रखें.

अपने कानूनी सलाहकार से मालूम कर लें कि करों की मार कितनी होगी. वे करों से बचत व अन्य बचत के उपायों पर भी सलाह देंगे.

चतुर्थ सूत्र : बैंकों के खाते सही ढंग से रखें. जहां तक हो सके पति पत्नी संयुक्त खाते ही रखें. यदि किसी कारणवश संयुक्त खाता संभव न हो तो अपना उत्तराधिकारी नामजद कर दें. वसीयतनामा लिख कर संपत्ति के समुचित वितरण की स्पष्ट व्यवस्था करें. कोई ऐसी कमी न छोड़ें जिस से भविष्य में विवाद की स्थिति उपस्थित हो सके. यदि आप जीते जी अपनी संपत्ति की व्यवस्था नहीं करते हैं तो आप की मृत्यु के बाद लालची रिश्तेदार गिद्ध की तरह उस पर टूट पड़ेंगे. यह एक ग़लत धारणा है कि वसीयतनामा लिख कर भुला दिया जाता है. पारिवारिक संबंध बदलते रहते हैं. क़ानून में भी परिवर्तन होता है. करों में बचत व करों के उत्तरदायित्व के संबंध में वकील की सलाह मानिए. मृतक के उत्तराधिकारी क़ानूनी सलाह के आधार पर अपने आर्थिक मामले सुलझाएं. याद रखें, शोकाकुल परिवार की संपत्ति हड़पने वालों की कमी नहीं रहती. अतएव सचेत रहें.

पंचम सूत्र : वार्षिक समीक्षा की व्यवस्था करें. अपनी पुस्तक 'विधवा' (विडो) में लिन कैन ने सुझाव दिया है कि वर्ष में एक बार पति पत्नी अपनी आर्थिक स्थिति की समीक्षा करें और आवश्यक सुधार कर लें. समय समय पर हम शारीरिक स्थिति की डाक्टरी जांच करवाते रहते हैं. आर्थिक स्थिति की जांच भी उसी प्रकार ज़रूरी है. पत्नी को निम्न बातों से अवगत होना चाहिए :

१. क्या मेरा व मेरे पति का वसीयतनामा स्पष्ट है?

२. क्या हमारे सलाहकार सुयोग्य व ईमानदार हैं? क्या हम लालची रिश्तेदारों को पहचानते हैं?

३. क्या हम ने समस्त दस्तावेज़ों की फ़ाइल बना ली है जिस में सभी आर्थिक विवरण हैं?

४. क्या विधवा हो जाने पर हमारे पास रहने के लिए अपना मकान है?

५. क्या जीवन बीमा की क़िस्तों का भुगतान नियमित रूप से हो रहा है? क्या वह मृत्यु कर से मुक्त है?

६. क्या आवश्यकता पड़ने पर मैं नौकरी कर सकती हूं?

७. क्या हम ने बच्चों की शिक्षा तथा लड़कियों के विवाह के लिए समुचित व्यवस्था की है?

८. क्या हम ने मृत्यु कर से बचत के उपाय कर लिए हैं? क्या हम ने उत्तराधिकार प्रमाण पत्र प्राप्त करने की बाधा दूर कर दी है? क्या हमें ज्ञात है कि करों का भुगतान कैसे करेंगे?

९. क्या मुझे ज्ञात है कि पति के अवकाश ग्रहण करने पर उन्हें पेंशन, भविष्य निधि, ग्रेचुइटी आदि से कुल कितनी धनराशि मिलेगी?

१०. अगर पति व्यापार करते हैं या दुकान चलाते हैं तो क्या मुझे उन के व्यापार की पूरी जानकारी है?

यह आवश्यक है कि घर गृहस्थी के आर्थिक साधन व दायित्व स्पष्ट हों, सुनियोजित हों और सभी सदस्य उस से परिचित हों. यदि दुर्भाग्य से पति न भी रहे तो पत्नी व आश्रितों को आर्थिक असुरक्षा का ख़तरा न हो.

सतर्क

दो रूसी प्रेमियों ने कोयल को गाते सुना "तुम्हें कैसा लगा?" प्रेयसी ने पूछा.

"मैं इस बारे में कोई राय नहीं दे सकता, जब तक यह पता न चल जाए कि यह धुन किस ने तैयार की है," प्रेमी का उत्तर था. —'न्यू सलेक्शंस आफ ह्यूमरस एनकडोट्स', हांग कांग

फाटक दर फाटक

एक इसलामी कहावत है कि मुंह से निकलने वाला हर शब्द तीन फाटकों से हो कर आना चाहिए. पहले फाटक पर दरबान पूछे, "क्या यह सत्य है?" दूसरे पर पूछे, "क्या यह आवश्यक है?"; और तीसरे फाटक पर पूछा जाए, "क्या यह नेक है?"

—एकनाथ ईश्वरन, नीलगिरी

कार्टून धुन

असफल परीक्षार्थी से ड्राइविंग टेस्ट निरीक्षक: पर जनाब, आप की असफ़लता का यह अर्थ ज़रूर निकला कि हमारी क्षीण होती पेट्रोल की सप्लाई कुछ देर और खिंच जाएगी.

हिप्पी लड़की अपने मित्र से: "मैं ने अर्थपूर्ण और सार्थक संबंध बहुत देख लिए. अब तो शादी करूंगी."

हरम की एक बेगम से सुलतान: तुम्हारी आंखें चांद तारों की तरह हसीन हैं, तुम्हारे होंठ तराशे गए लाल की तरह सुर्ख़—लाओ, इन्हें मेरे हवाले कर दो

—डेली मिरर, लंदन

सुखी राजा

दु:ख को महल में घुसने की इजाज़त न थी, मगर राजा ने प्रजा की पीर देखी तो उस का दिल दो टूक हो गया

—आस्कर वाइल्ड

गर के सब से ऊंचे स्थान पर एक खंभे के ऊपर सुखी राजा की मूर्ति थी. सारे शरीर पर सोने का पतरा चढ़ा था. आंखों में दो चमचमाते नीलम जड़े थे. तलवार की मूठ पर दमकता था एक बड़ा मानिक. सभी लोग सुखी राजा पर मुग्ध हो जाते.

एक रात शहर के ऊपर अकेला अबाबील उड़ रहा था. उस के संगी साथी छः सप्ताह पहले मिस्र चले गए थे. वह शहर में रुक गया था, क्योंकि नदी तट की तन्वंगी वेणु से उसे प्यार हो गया था. बसंत के शुरू के दिनों में ही उस की मुलाक़ात वेणु से हो गई थी. वह नदी किनारे एक बड़े पतंगे का पीछा कर रहा था कि वेणु की पतली कमर पर लट्टू हो कर रह गया. साथी अबाबीलों ने उस के इस अहमकाना इश्क़ की हंसी उड़ाई और पतझड़ आते ही वे शहर छोड़ कर चले गए.

उन के जाने के बाद अबाबील बहुत अकेला पड़ गया. उसे अपनी प्रियतमा से भी ऊब होने लगी. "यह तो बात तक नहीं करती," उस ने कहा, "और पक्की छिनाल है...जब देखो हवा के साथ चुहल करती रहती है."

और वह उड़ चला. उड़ते उड़ते दिन बीत गया. शाम ढले शहर पहुंचा, तो सोचने लगा, "अब रात कहां कटेगी?" तभी उस की नज़र ऊंचे खंभे पर खड़ी मूर्ति पर पड़ी.

"ठीक है मैं यहां रहूंगा", वह ख़ुशी से चिल्लाया. "बड़ी बढ़िया जगह है." बस वह सुखी राजा के पैरों के बीच की ख़ाली जगह पर जा उतरा.

ख़ुश हो कर उस ने कहा, "मेरा शयन कक्ष सोने का बना है." वह सोने की तैयारी करने लगा. वह डैनों में सिर छिपा रहा था कि पानी की एक बड़ी बूंद उस पर आ गिरी.

"बड़ी अजीब बात है," वह बोला. "आसमान में कहीं बादल का नाम नहीं और बरसात हो रही है."

तभी एक बूंद और गिरी.

"ऐसी मूर्ति का क्या फ़ायदा जो पानी तक न रोक सके." वह बुदबुदाया. उस ने कहीं और चले जाने का फ़ैसला किया. उस ने उड़ने के लिए पंख फैलाए कि एक और बूंद उस पर आ टपकी. सिर उठाया, तो देखता क्या है... सुखी राजा की आंखें आंसुओं से भरी थीं. आंसू उस के सुनहरी गालों से टपटप टपक रहे थे.
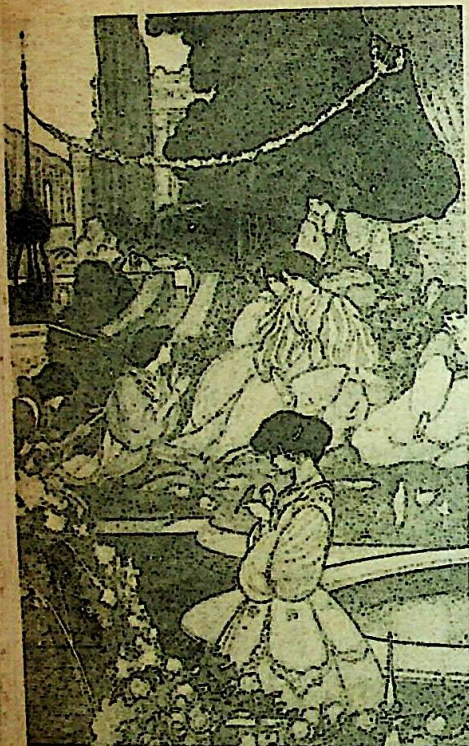
सान्स सूकी का महल

"तुम कौन हो?" अबाबील ने पूछा.

"मैं सुखी राजा हूं!"

"तो फिर रोते क्यों हो?" अबाबील ने पूछा.

"जब मैं ज़िंदा इनसान था और मेरे सीने में धड़कता दिल था, तो मुझे मालूम तक न था कि आंसू क्या होते हैं", मूर्ति ने कहा, "क्योंकि मैं महल में रहता था और वहां दुःख को अंदर घुसने की इजाज़त नहीं थी. दिन में मैं संगी साथियों के साथ बाग़ों में खेलता और शाम को महलों के रास रंग में डूब जाता. दरबारी मुझे सुखी राजा कहते. मेरी मौत के बाद उन्हों ने मुझे इतनी ऊंची जगह पर रख दिया कि यहां से मैं अपने शहर की तमाम गंदगी और दुःख देख सकता हूं. अब मेरा दिल सीसे का है फिर भी आंसू रोके नहीं रुकते."

"ओ हो, तो यह ठोस सोने का नहीं!" अबाबील ने मन ही मन सोचा. पर वह इतना अशिष्ट नहीं था कि ऐसी बात मुंह पर ले आता.

"दूर एक तंग गली में ग़रीब परिवार रहता है", मूर्ति कहती रही, "उस घर की खिड़की में एक औरत बैठी दिखाई देती है उस का चेहरा पतला और थका है. लाल खुरदुरे हाथ कढ़ाई की सूई से छलनी हो रहे हैं. इस वक़्त वह रानी की ख़ास सहेली के लिए साटन की पोशाक पर सूरजमुखी के फूल काढ़ रही है. यह पोशाक शाही दावत के लिए उसे जल्दी ही पूरी काढ़नी है. कमरे के कोने में औरत का नन्हा बीमार बेटा कराह रहा है...

"अबाबील, मेरे अच्छे अबाबील, मेरा एक काम कर दो. मेरी तलवार की मूठ का मानिक निकाल कर उस दुखियारी को दे आओ. मेरे पांव तो इस खंभे से जकड़े हैं. मैं कहीं आ जा नहीं सकता."

"मुझे मिस्र पहुंचना है," अबाबील बोला, "वहां मेरे साथी नील नदी पर उड़ रहे होंगे, और कमल के फूलों से बात कर रहे होंगे."

"अबाबील, अबाबील," सुखी राजा ने कहा. "एक रात मेरे पास ठहर जाओ. मेरा यह काम कर दो. बेचारा बच्चा प्यासा है. मां बेहद उदास है."

अबाबील को दया आ गई. वह बोला, "यहां ठंड है. पर आज रात मैं ठहर जाऊंगा और तुम्हारा काम कर दूंगा."

"धन्यवाद, प्यारे अबाबील." सुखी राजा ने कहा.

अबाबील ने सुखी राजा की तलवार की मूठ से बड़ा मानिक निकाला, अपनी चोंच में

दबा कर शहर के उस हिस्से की तरफ उड़ पड़ा, जिधर मां और बीमार बेटा रहते थे. रास्ते में महल पड़ता था. वहां से नाच गाने की आवाज़ें आ रही थीं. एक खूबसूरत लड़की अपने प्रेमी के साथ महल की बालकनी पर आ गई.

वह कह रही थी, "शाही दावत तक मेरी पोशाक शायद बन जाए. मैं ने उस पर सूरजमुखी के फूल कढ़वाए हैं. पर दरजिनें बेहद लापरवाह और सुस्त होती हैं."

आख़िरकार अबाबील ग़रीब दरजिन के घर आ पहुंचा. उस ने अंदर झांका. बच्चा तेज़ बुख़ार में करवटें बदल रहा था. मां नींद में एक ओर ढुलक गई थी. अबाबील कमरे में चला आया. दरजिन के अंगुश्ताने के पास उस ने बड़ा मानिक रख दिया. बीमार बच्चे के बिस्तर के गिर्द एक ख़ामोश चक्कर लगाया और बच्चे के तपते माथे को अपनी पांख से हवा दी.

"कितनी ठंडी हवा है!" राहत महसूस कर के बच्चा बुदबुदाया और करवट बदल कर सुख की नींद सो गया.

अबाबील सुखी राजा के पास वापस आया. अपना किया उसे कह सुनाया. बोला, "बड़ी अजीब बात है. इतनी ठंड में भी मुझे गरमाहट लग रही है."

"यह इस लिए कि तुम ने नेक काम किया है," सुखी राजा ने कहा.

दिन निकलने पर अबाबील नदी किनारे गया, और नहाया धोया. उस के बाद वह शहर के सभी सार्वजनिक स्मारकों पर गया. गिरजाघर की मीनार पर काफ़ी देर बैठा रहा. शाम ढल आई. आसमान में चांद दिखाई पड़ा. अबाबील सुखी राजा के पास आया. "तुम्हें मिस्र में कोई काम हो तो बताओ", वह बोला, "मैं अब वहीं जा रहा हूं."

"अबाबील, अबाबील, मेरे प्यारे अबाबील, "सुखी राजा ने कहा. "तुम एक रात और ठहर जाओ न."

"मुझे मिस्र पहुंचना है", अबाबील ने जवाब दिया. "कल मेरे साथी दूसरे झरने की तरफ़ चल पड़ेंगे. दोपहर में सुनहरे अयाल वाले शेर इस झरने का पानी पीने आते हैं."

उन की गर्जना के सामने झरने का शोर भी हलका पड़ जाता है."

"अबाबील, अबाबील, मेरे प्यारे अबाबील," सुखी राजा ने कहा, "दूर शहर के पार छोटे बरसांती कमरे में एक नौजवान बैठा है. उस की मेज़ काग़ज़ों से भरी है. उसे एक नाटक लिख कर पूरा करना है. पर ठंड के मारे उस से लिखा नहीं जा रहा."

"चलो, मैं तुम्हारे साथ एक रात और काट लूंगा," नेकदिल अबाबील बोला : "कोई और मानिक उसे दे कर आना है क्या?"

"अफ़सोस! अब मेरे पास कोई और मानिक नहीं है," सुखी राजा ने कहा, "अब सिर्फ़ आंखें बची हैं मेरे पास. हज़ार साल पहले हिंदुस्तान से बेशकीमती नीलम मंगाए गए थे. वही इन आंखों में जड़े हैं. तुम एक नीलम

निकाल लो और उस लेखक को दे आओ. वह इसे किसी जौहरी को बेच देगा और जलाने के लिए लकड़ी वगैरह ज़रूरी चीज़ें ला कर अपना नाटक पूरा कर लेगा."

अबाबील ने सुखी राजा की आंख का नीलम निकाल लिया और चोंच में दबा कर लेखक की कोठरी की तरफ़ चल पड़ा. लेखक, हथेलियों पर सिर रखे ख़यालों में डूबा था. अबाबील के पंखों की फड़फड़ाहट उसे सुनाई नहीं दी. कुछ देर बाद उस ने सिर उठाया, तो हैरान रह गया. एक चमचमाता नीलम मेज़ पर रखा था.

"तो अब मेरे प्रशंसक बनने लगे हैं", लेखक ने कहा. "यह किसी बड़े आदमी ने यहां रखवाया है. अब मेरा नाटक जल्दी पूरा हो जाएगा."

अगले दिन अबाबील बंदरगाह गया. वहा वह बड़े जहाज़ के मस्तूल पर बैठ कर जहाज़ियों को बड़ी बड़ी पेटियां उतारते देखता रहा. "मैं मिस्र जा रहा हूं". वह मस्तूल से चिल्लाया. लेकिन किसी का ध्यान उस की तरफ़ नहीं गया.

आसमान में चांद निकल आया. वह सुखी राजा के पास आया और बोला, "मैं विदा लेने आया हूं."

"अबाबील, अबाबील, प्यारे अबाबील", सुखी राजा ने कहा, "मेरे साथ एक रात और ठहर जाओ."

"सर्दियां आ गई हैं," अबाबील बोला. "मिस्र में, हरे भरे खजूर के पेड़ों पर धूप झिलमिला रही है. मगरमच्छ कीचड़ में लोट लगा रहे हैं. प्यारे राजा, मुझे जाना है."

"नीचे चौराहे पर," सुखी राजा ने कहा, "माचिस वाली बच्ची खड़ी है. उस की तीलियां नाली में गिर गई हैं. वह ख़ाली हाथ घर लौटी, तो उस का बाप उसे पीटेगा. डर के मारे उस की घिग्घी बंधी है. तुम मेरी दूसरी आंख का नीलम निकाल कर उसे दे आओ. वह बाप की मार से बच जाएगी."

"चलो, एक रात और रुक जाता हूं," अबाबील ने कहा. "लेकिन मैं तुम्हारी दूसरी आंख नहीं निकाल सकता, तुम बिलकुल अंधे हो जाओगे."

"अबाबील, अबाबील, प्यारे अबाबील," राजा ने कहा, "मेरा हुक्म तुम्हें मानना ही पड़ेगा."

इस पर अबाबील ने सुखी राजा की दूसरी आंख का नीलम निकाल लिया और तेज़ी से नीचे उतर आया. और झपाटे से वह बच्ची के हाथ पर नीलम रखता हुआ उड़ गया. "कित्ता सुंदर कंचा है!" बच्ची ख़ुशी से चिल्लाई और किलकारियां भरती घर भाग गई.

सुखी राजा के पास वापस पहुंच कर अबाबील ने कहा, "तुम्हारी आंखें तो रहीं नहीं, इस लिए मैं अब हमेशा तुम्हारे पास ही रहूंगा."

"ना, प्यारे अबाबील, तुम्हें मिस्र जाना ही होगा." बेचारे राजा ने कहा.

"अब मैं हमेशा तुम्हारे पास रहूंगा,"

चार्ल्स रॉबिन्सन के जिन रेखांकनों का इस कहानी में उपयोग किया गया है, वे प्रथम सचित्र संस्करण (१९१३) में छपे थे. कापीराइट : डकवर्थ ऐंड कंपनी

अबाबील ने कहा और वहीं सुखी राजा के पैरों में सो गया.

अगले तमाम दिन वह सुखी राजा के कंधों पर बैठा रहा और अजनबी देशों की अजीबोग़रीब बातें बताता रहा. लाल सुरख़ाब के बारे में जो नील नदी के किनारे पानी में खड़े हो कर मछलियां पकड़ते हैं. नृसिंह स्फिंक्स के बारे मे, जो दुनिया जितना बूढ़ा है और मरुथल में रहता है. विशाल हरियल अजगर के बारे में, जो खजूर के पेड़ से लिपटा रहता है और जिसे बीस पुजारी शहद रोटी खिलाते रहते हैं.

"मेरे प्यारे अबाबील, तुम ने मुझे बड़ी अजीब बातें बताईं, पर सब से अजीब है मर्द और औरत के दु:खों की दास्तान. तुम मेरे शहर का चक्कर लगाओ और सब कुछ बताओ."

सुखी राजा की सलाह पर अबाबील ने शहर के ऊपर उड़ान भरी. उस ने आलीशान इमारतों में रईसों को ऐशोआराम करते देखा, उन के दरवाज़ों पर बैठे भिखारियों को देखा. अंधेरी तंग गलियों में उस ने पीले ज़र्द भूखे, कमज़ोर बच्चे देखे जो स्याह गलियों को सूनी सूनी आंखों से ताक रहे थे. सुखी राजा के पास लौट कर उस ने सारा हाल कह सुनाया.

सुखी राजा ने कहा, "मुझ पर सोने का पत्तर चढ़ा है. तुम इसे टुकड़े टुकड़े उतार डालो और शहर के ग़रीबों में बांट दो."

अबाबील ने सुखी राजा का सुनहरी लिबास टुकड़े टुकड़े उतार दिया. राजा बदरंग और भद्दा नज़र आने लगा. उधर बच्चों के चेहरे गुलाबी होते चले गए. बरफ़ीली गलियां उन के हंसने खेलने से गुलज़ार हो गईं.

बेचारा अबाबील सर्दी से ठिठुरता रहता, लेकिन उस ने सुखी राजा का साथ नहीं छोड़ा. वह उसे बहुत चाहने लगा था. आख़िर उसे लगा कि वह अब नहीं बचेगा. उस में बस इतनी ताक़त रह गई थी कि उड़ कर राजा के कंधे तक पहुंच सके. "अलविदा, प्यारे राजा!" वह फुसफुसाया.

सुखी राजा ने कहा, "अच्छा हुआ जो तुम आख़िरकार मिस्र जाने लगे. बहुत दिन तुम यहां रह लिए."

"अब मैं अपने देश मिस्र नहीं जा रहा," अबाबील बोला. "मैं तो मौत के घर जा रहा हूं." उस ने सुखी राजा को प्यार किया और उस के पैरों पर ढेर हो गया.

उसी क्षण मूर्ति के अंदर से कुछ चटख़ने की विचित्र आवाज़ निकली. सीसे का दिल दो टूक हो गया था.

अगली सुबह शहर का मेयर दो नगर पार्षदों के साथ नीचे चौक में घूम रहा था. खंभे के पास, उस की नज़र मूर्ति पर गई. "सुखी राजा कितना भद्दा लग रहा है."

"वाक़ई कितना भद्दा है!" दोनों पार्षदों ने हामी भरी.

मेयर ने कहा, "तलवार का मानिक गिर चुका है. आंखों के नीलम ग़ायब हैं और अब यह सुनहरी भी नहीं रहा."

"इस में और भिखारी में अब फ़र्क ही क्या रह गया है", नगर पार्षदों ने कहा.

"और यह देखो, इस के पैरों पर चिड़िया मरी पड़ी है!" मेयर

ने अपना निरीक्षण जारी रखा.

"परिंदों के यहां मरने पर पाबंदी लगा दी जानी चाहिए." पार्षदों ने कहा.

सुखी राजा की मूर्ति को हटा कर पिघलाने के लिए भट्ठी में झोंक दिया गया. और इधर मेयर ने बैठक बुलवाई कि मूर्ति से प्राप्त धातु का क्या किया जाए. "हमें यहां एक और मूर्ति लगा देनी चाहिए," उस ने सुझाव दिया, "मेरी मूर्ति".

उधर धातु पिघलाने वाले हैरान थे. "कमाल है सीसे का दिल पिघल नहीं रहा. क्यों न इसे फेंक दें." और उन्हों ने सीसे का टूटा दिल घूरे पर फेंक दिया, जहां मरा अबाबील पड़ा था.

"मेरे लिए नगर की दो सब से बहुमूल्य चीजें लाओ," इधर भगवान ने दूत को आदेश दिया. दूत शहर से टूटा दिल और मृत अबाबील उठा लाया.

"तुम बिलकुल सही चीज़ें चुन कर लाए हो," भगवान ने कहा, "यह अबाबील जन्नत के बाग़ में अनंत काल तक गाता रहेगा, और सुखी राजा सोने के शहर में मेरा गुणगान करेगा."

स्वतंत्रता किस की ?

उस दिन सिनेमाघर की टिकट खिड़की पर खड़ा था. दो आधुनिक लड़कियां बातें कर रही थीं—हर तीसरा चौथा शब्द अपशब्द था. यह बात मुझे अटपटी सी लगी कि उन की वह बातचीत, वह शब्दावली मुझे खल नहीं रही थी. लड़कियां ग़ुस्से या उत्तेजना में वह सब बोल रही हों, ऐसा भी न था. दोनों बस सामान्य ढंग से बतियाए जा रही थीं. उन्हें चिंता न थी कि कोई उन की सुन रहा होगा या कुछ और. फिर उन्हें चिंता होती भी क्यों ? उन्हें नहीं लग रहा था कि उन के द्वारा प्रयुक्त शब्दों में कहीं बुराई है. और एक तरह से वे ठीक भी थीं. वस्तुतः अश्लील शब्दावली भले कल तक समाज के निम्न वर्गों की विशिष्टता रही हो, पर आज यह किसी प्रकार से आम आदमी की रोज़मर्रा की बोलचाल का अभिन्न अंग बन चुकी है.

इस के बावजूद मुझे बात कुछ खली—इस लिए नहीं कि इस का कोई नैतिक आधार था अथवा मैं महानता बघार रहा हूं, बल्कि इस कारण कि अपशब्दों के ऐसे खुले प्रयोग से दूसरे की व्यक्तिगत अंतरंगता पर आंच सी आती लगती है. मैं जानता हूं कि दुनिया में ऐसे भी व्यक्ति हैं जो यह सब सुन कर 'मर्माहत' अनुभव करें. मैं ने इस शब्द का बहुत सोच समझ कर प्रयोग किया—वास्तव में कुछ शब्द मर्म को आहत करते हैं.

कुछ लोग असहमति व्यक्त करते हुए शायद यह कहें, "भई शब्द आख़िर शब्द है." पर सच पूछें तो शब्द वाहक होते हैं—वे संदेश वहन करते हैं. फिर कुछ लोगों के लिए अश्लीलता का संदेश घृणा एवं दुर्व्यवहार का संदेश है, और है लोक मर्यादा के विरुद्ध किया जाने वाला आचरण.

अब तो कई लोकप्रिय गीतों में भी कई भद्दे और अश्लील शब्द सुन पड़ते हैं. और तो और, कुछ पत्र पत्रिकाओं तक में ऐसी भाषा का प्रयोग होने लगा है, जो पहले अकल्पनीय थी. इस प्रवृत्ति को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के नाम पर तूल दिया जा रहा है. पर यह कैसी स्वतंत्रता है, किस की स्वतंत्रता है ? यह विलुप्ति भाषा कल हमारे सामाजिक जीवन में पूरी तरह रच बस गई, तो इस से जान बचाने के लिए किसी को कोई ठौर नसीब न होगा. और तब फिर सवाल होगा कि अभिव्यक्ति की यह स्वतंत्रता आख़िर किस के लिए है ?

—बाब ग्रीन

संतोष सुमात्रा स्टाइल

नेशनल ज्योग्राफ़िक से संक्षिप्त —हार्वे आर्डन

इंडोनेशिया के रमणीक द्वीप सुमात्रा में अधैर्य से काम लेना निरर्थक ही नहीं, ख़तरनाक भी है

कई सप्ताहों के सुमात्रा प्रवास के दौरान मैं ने बहुत कुछ देखा, सुना और गुना. सब से महत्वपूर्ण था 'जाम करेत' का जीवन आदर्श जिस का शाब्दिक अर्थ है रबर काल, पर रबर के वृक्षों आदि से इस का दूर पार का भी कोई वास्ता नहीं है. वस्तुतः इस का अर्थ है 'परम नीति संतोष' या रोज़मर्रा की चिंताओं से मुक्त रहने और वस्तुस्थिति को यथावत स्वीकार करने की यथार्थपरक नीति. भारतीय संदर्भ में इस का तात्पर्य है—'जब आवे संतोष धन, सब धन धूरि समान.'

इस संतोष धन से मेरा परिचय पहले पहल सुमात्रा के दक्षिणी बंदरगाह टेलकबेटुंग से द्वीप के भीतरी भाग में स्थित पालेमबांग की ९ घंटे की रेल यात्रा के समय हुआ. गाड़ी छुक छुक करती ग्रामीण क्षेत्र से गुजरी तो बार बार

नेशनल ज्योग्राफ़िक (मार्च १९८१), कापीराइट १९८१ नेशनल ज्योग्राफ़िक सोसाइटी, १७वीं तथा एम स्ट्रीट्स, एन डब्ल्यू वाशिंगटन डी सी २००३६.

फ़ोटो : डेविड एलेन हार्वे, कापीराइट नेशनल ज्योग्राफ़िक सोसाइटी

भक भक छू छू कर के १०-२० या ३० मिनट के लिए रुकने लगी. गरमी कष्टदायक हो चली.

घुटन भरे डब्बे से बाहर देखते समय मैं ने पाया कि घनी बस्ती वाले द्वीपों के सैकड़ों प्रवासी सुमात्रा के खुले स्थानों पर दोबारा बसाए जा रहे हैं. ये भूमिहीन ग़रीब अपना तमाम तामझाम—बरतन, तसले, बिस्तर, साइकिल, चावल के बोरे, कों कों करती मुरगियों के झाबे—साथ लिए सिकुड़े सिमटे बैठे थे, लेकिन उन्हें विलंब की कोई चिंता न थी.

अपने दो बच्चों को पालने में झुलाते पिता ने कहा, "जल्दी काहे की? असली घर मिलने में तो अभी बरसों लगेंगे." संयत हो कर मैं अपनी सीट पर लौट आया और बिना किसी शिकायत के प्रतीक्षा करता रहा. गाड़ी अंधेरा होने के काफ़ी बाद पालेमबाग पहुंची. "सिर्फ़ छः घंटे लेट." कंडक्टर ने मुसकराते हुए कहा. ऐसे देश में, जहां अधैर्य निरर्थक समझा जाता हो, संतोष उपयोगी धारणा है.

चौड़े पाट वाली मूसी नदी के ऊपर की ओर लगभग ८० कि.मी. की दूरी पर बसे ७,८७,००० की आबादी वाले बंदरगाह पालेमबाग से ३०० कि.मी. दूर बेंगकूलू तक जाने के लिए मैं ने जोजो नामक ड्राइवर की जर्जरित लैंड रोवर किराए पर ली.

यात्रा के दिन निश्चित समय से दो घंटे बाद जोजो मेरे होटल पहुंचा और बोला, "साब, गाड़ी का वाटरहोज़ टूट गया है. मैं उसे बदलवा कर आता हूं." लेकिन वह आया ४८ घंटे . . . संतोष के पूरे दो दिन बीतने के बाद.

जोजो के आने पर हम लोग खड्डों से भरी टूटी फूटी सड़क पर बेंगकूलू के लिए रवाना हुए. अभी मानसून शुरू नहीं हुई थी तो भी हमारी औसत रफ़्तार मुश्किल से २५ कि.मी. प्रति घंटा रही. हमें हिलते लरज़ते लकड़ी के पुलों से हो कर गुज़रना पड़ा, जिन की टूटी रेलिंग से कितने ही बदनसीब फिसल कर जलसमाधि ले चुके थे. जोजो सड़क के

विपुल संपदा और विलक्षण उपलब्धियों का संगम

इंडोनेशिया के ३,००० आवासीय द्वीपों का पश्चिमी गढ़ है सुमात्रा. सिंगापुर से १०० किलोमीटर दक्षिण में सुमात्रा सुप्त मगरमच्छ की तरह पसरा है. उस का अधखुला मुंह जावा और पूंछ भारत की ओर है.

भूमध्य रेखा इस के बीच से गुज़रती है. यह द्वीप वन्य एवं असंभव चरम बिंदुओं का स्थल है. इस के ३० ज्वालामुखियों में से ११ सक्रिय हैं. १,६०० किलोमीटर लंबा ज्वारभाटे का एक दलदल है; घने वर्षा जंगल हैं जिन में हाथी, गैंडे, बाघ, वनमानष घूमा करते हैं इन में एक से एक विलक्षण एवं दुर्लभ
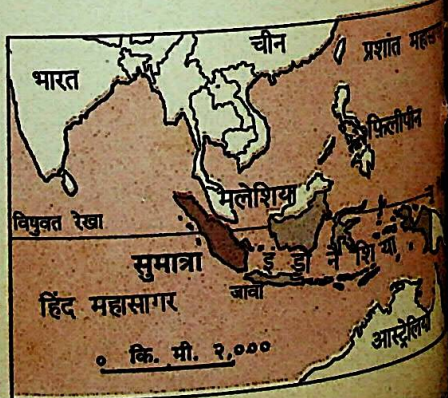
बीचोबीच सुमात्रा स्टाइल से गाड़ी चला रहा था और तभी गाड़ी किनारे लगाता, जब विनाश-कारी टक्कर होने की पूरी पूरी आशंका होती.

रात होते होते लैंड रोवर चार बार बिगड़ी. अंत में जोजो ने कंधे उचका कर कहा, "आगे नहीं जा सकते. पहाड़ हैं.'' और गाड़ी पीछे ले चला . . . पालेमबाग की ओर. मुझे तो आगे जाना था. इस लिए मैं सामान ले कर उतर गया और सड़क के किनारे घुप अंधेरे में अकेला खड़ा रहा. कोई ४५ मिनट के बेचैनी भरे इंतज़ार के बाद अंधेरे में से धुंधली सी हैड लाइट झलकी. बस ! मैं ने हाथ दिया. किराए के बारे में ड्राइवर से झिकझिक होने के बाद एक बार फिर मैं झटके खाता चला जा रहा था.

संतोष यात्रा

सुमात्रा की बसों की यात्रा अपने आप में एक आतंकजनक कहानी होती है. वर्षा ऋतु में, जो अब शुरू होने वाली ही थी, इतनी मूसलाधार वर्षा होती है कि सड़कें डूब जाती हैं. गाड़ियां कीचड़ में हेड लाइट तक धंस जाती हैं. मर खप कर पहियों को निकालना पड़ता है. इस तरह ३६ घंटे की यात्रा कभी कभी कई दिनों में जा कर पूरी हो पाती है.

बस के भीतर चार यात्रियों के बैठने के लिए बनी सीटों पर छः छः सात सात यात्री ठुंसे रहते हैं. अंग सुन्न पड़ जाते हैं. इंजन असहनीय गरमी उगलता है और सिर के कुछ ही सेंटीमीटर ऊपर लगे लाउड स्पीकरों से इंडोनेशिया का पाप संगीत गरजता रहता है.

इन बसों से यात्रा करते समय कभी कभी आप की मुलाकात पश्चिम के लोगों से भी हो जाती है. एक बस में मुझे थोड़ा सा संतोषपूर्ण समय कैलिफ़ोर्निया के दढ़ियल घुमक्कड़ बिल डाल्टन के साथ बिताने का मौका मिला. वह ८३ देशों का भ्रमण कर चुका था. सुमात्रा जाने वाले यात्रियों के लिए बिल की सलाह है, "कभी भी गुस्सा मत कीजिए, यहां तक कि नाराज़गी भी ज़ाहिर मत होने दीजिए क्योंकि

वनस्पतियां और विश्व के सब से बड़े दुर्लभ फूल रैफ़्लेसिया मिलते हैं, जिन का व्यास एक मीटर से भी अधिक होता है.

सुमात्रा प्राकृतिक साधनों से संपन्न द्वीप है. इंडोनेशिया द्वारा निर्यात की जाने वाली वस्तुओं का ५० प्रति शत उत्पादन सुमात्रा में होता है. इस में समस्त विश्व की १८ प्रति शत रबर, १६ प्रति शत टिन और साथ ही कहवा, चाय, काली मिर्च एवं ताड़ के तेल का विपुल उत्पादन शामिल है. इस द्वीप में सोने और तांबे की खानें भी हैं, जिन का दोहन अभी तक पूरी तरह नहीं किया जा रहा है. साथ ही दक्षिण पूर्व एशिया के सब से बड़े तेल और गैस क्षेत्र भी सुमात्रा में ही स्थित हैं.

पूर्वी द्वीप समूह में सुमात्रा एक ऐसा द्वीप था, जिसे खोजने के लिए क्रिस्टोफ़र कोलंबस ने पश्चिम की ओर यात्रा की थी. १२ वीं शताब्दी समाप्त होने तक अरब और भारतीय मुसलिम व्यापारी इस द्वीप में इसलाम धर्म ले आए.

डच लोग यहां सन १५९५ में पहुंचे और द्वितीय विश्व युद्ध में जापानियों द्वारा इसे अपने क़ब्ज़े में ले लेने तक यहां शासन करते रहे. इंडोनेशिया १९४५ में स्वतंत्र हो गया.

इस का परिणाम उलटा हो सकता है. धैर्य इन लोगों का जन्मजात गुण है. लेकिन आप के दुर्व्यवहार के कारण कहीं किसी सुमात्रावासी का समस्त असीमित धैर्य चुक गया तो ख़ुदा ही ख़ैर करे. गुस्से में पागल हो जाना भी यहां की पुरानी रीत है."

कुछ दिन बाद एक अन्य लैंड रोवर में बैठ कर मैं सुमात्रा के पर्वतीय क्षेत्रों से होता हुआ उत्तर पश्चिम क्षेत्र में पहुंचा. यहां एक प्राकृतिक चमत्कार देखने को मिला—टोबा झील. कई किलोमीटर चौड़ी यह गहरी और नीली झील एक मृत ज्वालामुखी के गह्वर में स्थित है. झील के बीचोबीच सामोसिर द्वीप स्थित है. यह द्वीप सुमात्रा की सब से मनमाहक जाति टोबा बाटक के पूर्वजों का मूल स्थान है.

टोबा बाटक पहले नरभक्षी थे. अब वे बड़े ही शांतिप्रिय एवं परिश्रमी हैं. वैसे ईसाई धर्मावलंबी बाटक अब भी मुसलमानों के लिए ख़तरनाक हैं. उन्हों ने अब नर मांस भक्षण तो छोड़ दिया है, लेकिन वे सूअर और कुत्तों का मांस अब भी खाते हैं. मैं ने सामोसिर द्वीप से झील पार क़सबे तक जाने के लिए एक नाव किराए पर ली. पांच घंटे की इस यात्रा के दौरान एक औरत ने एक बड़े बरतन में स्ट्यू पकाया. और फिर टीन की प्लेटों में परोस परोस कर भूख से आकुल यात्रियों को बेचा. मुसकराती औरत ने स्ट्यू से लबालब भरी प्लेट मेरी फड़कती नाक से लगा दी.

मै ने प्लेट में देखा—चावल और सब्ज़ियों के ढेर में कुत्ते का निचला जबड़ा भी पड़ा था जिस का एक एक दांत चमक रहा था.

"लो, लो, चखो तो सही." उस ने आग्रह किया.

"खेद है, मै मुसलमान हूं." मैं झूठ बोल गया.* इस झूठ के लिए मैं ने मन ही मन निष्ठावान मुसलमानों से क्षमायाचना भी कर ली.

सुमात्रा में मेरा आख़िरी पड़ाव 'आची' था, जो इस द्वीप का धुर उत्तरी प्रांत है. इस के विषय में लोगों से कई वर्जनात्मक अफ़वाहें सुनने को मिलती हैं. इंडोनेशिया के इस भाग में सब से कट्टर मुसलमान रहते हैं. आचीवासी प्रसिद्ध योद्धा १८७३ से १९०३ तक डचों से लगातार युद्ध करते रहे और उन्हों ने द्वितीय विश्वयुद्ध शुरू होने तक छापामार लड़ाई जारी रखी.

मुझे तो आचीवासी इंडोनेशिया के सब से सुसंस्कृत लोगों से भी अधिक सहृदय और मैत्रीपूर्ण लगे. इस की राजधानी बांडाआची एक समृद्ध नगर है—पक्के और सुंदर मकान, बढ़िया पोशाक पहने नागरिक. भव्य मसजिदें और चौड़ी साफ़ सुथरी सड़कें. 'हां,' आची के एक प्रतिष्ठित व्यक्ति ने कहा, "हमारा प्रांत इंडोनेशिया के समृद्धतम प्रांतों में से है. यहां सोना, तांबा, मालिब्डेनम, बिल्लौर तथा प्राकृतिक गैस के भंडार हैं. फिर भी हम लोग निराशा भरी ज़िंदगी जी रहे हैं. हमारे प्रांत से होने वाले लाभ का अधिकांश भाग जकार्ता चला जाता है; आची के लिए बहुत कम बचता है. वे कहते हैं कि कभी हम पर डच लोगों का शासन था; अब हमारे ऊपर जावावासियों का नियंत्रण है.'

जो विमान हमें बांडाआची से जकार्ता ले जाने वाला था, वह लेट था. "बहुत बादल हैं." हवाई अड्डे पर एजेंट ने मुझे बताया. "यहां राडार नहीं है. बादल छंट जाएंगे, तभी हवाई जहाज़ आएगा. साइकिल वाले का इंतजार कीजिए."

* इसलाम में कुत्ते और सूअर का मांस हराम माना जाता है.

संतोष सुमात्रा स्टाइल

साइकिल वाला?

लगता है, भैंसों को हवाई अड्डे पर चरने के लिए छोड़ दिया जाता है. जब कोई हवाई जहाज़ आने वाला होता है तो एक आदमी साइकिल पर बैठ कर भैंसों को खदेड़ने के लिए दौड़ता है. उस की उपस्थिति से यात्रियों को विमान आने का संकेत मिल जाता है.

आख़िर साइकिल वाला आया. भैंसें भगा दी गईं और जहाज़ नीचे उतरा. "हूं . . . सिर्फ़ तीन घंटे लेट." मैं ने मन में कहा और पीठ टिका कर आराम से बैठ गया. जब मैं इस आकर्षक और बावला कर देने वाली अद्भुत धरती से प्रस्थान कर रहा था, तो संतोष परम धन का अभ्यस्त हो गया था.

चंद्र गति

लाखों कनाडा निवासियों की तरह हमारा परिवार भी रानी विक्टोरिया की वर्षगांठ यानी २४ मई को अपना बग़ीचा लगाना शुरू करता था, पर हमारे पड़ोस की रूसी महिला यह देख नाक भौ सिकोड़तीं और बड़बड़ातीं, "अभी चंद्रमा की स्थिति ठीक नहीं, जाने क्यों लगा रहे हैं ये पौधे!"

कस्बे के अन्य सभी बगीचों से कहीं अधिक उन का ही बाग़ फल फूल से लदा रहता था, तो भी हम ने कभी उन की बात पर कान नहीं दिया. फिर उस महिला के इन अंधविश्वासों की खिल्ली उड़ाने में अग्रणी थे जीवविज्ञान के वह शिक्षक, जो सड़क के उस पार रहते थे. पर लाख कोशिश कर के भी शिक्षक महोदय वैसी गोभियां या ककड़ियां नहीं ले पाते थे जैसी कि उस रूसी महिला के बग़ीचे में होती थीं.

ख़ैर, आज का विज्ञान भी जीव जंतुओं और वनस्पतियों पर चंद्रमा के संभावित प्रभाव के अध्ययन में जुटा है. इलीनौय स्थित नार्थवेस्टर्न विश्वविद्यालय के जीवविज्ञान के प्रोफ़ेसर डा. फ़्रैंक ब्राऊन कहते है, "इस में संदेह नहीं रहा कि पौधों पर चंद्र कलाओं का प्रभाव पड़ता है." डा. ब्राऊन ने ग्यारह वर्षों के अध्ययन के बाद पाया कि कम से कम आलुओं का विकास क्रम तो चंद्रमा की कलाओं के बढ़ाव घटाव से संबंधित है.

उन्हों ने इस अन्वेषण के लिए आलू इस लिए चुना कि आलू में ख़ुद का एक भोजन कुंड होता है और इस कारण उसे लंबे समय के लिए परख-कक्ष में बंद रखा जा सकता है.

आलू के कटे हुए टुकड़े, जिन में अंकुर फूट चुके थे, प्रयोगशाला के अंधेरे, नियंत्रित वातावरण में निश्चित तापमान और आर्द्रता पर रखे गए. और फिर आलू के अंदर पोषक पदार्थों के उपापचय (मेटाबोलिज़्म) की स्थिति देखी गई. यहां पर पौधे की सांस लेने की प्रक्रिया का अंदाज़ा लगाने के लिए आक्सीजन की खपत की स्थिति पर ध्यान रखा गया. लंबे समय तक इस परिस्थिति में रखे आलुओं की ऐसी जांच से स्पष्ट हुआ कि उन के उपापचय में चंद्रमा की कलाओं का सा उतार चढ़ाव था. उपापचय की गति दूज के समय सब से कम थी और जब चंद्रमा का आकार तीन चौथाई होता है तो सब से अधिक. इस अवधि में आक्सीजन की खपत में भी २० प्रति शत की वृद्धि दर्ज की गई.

ब्राऊन इन निष्कर्षों के आधार पर कहते हैं कि यह मानना उचित है कि आक्सीजन की खपत और पौधे की वृद्धि की दर समानुपातिक होती है. "दूसरे पौधों और प्राणियों पर किए गए ऐसे प्रयोगों से पता चलता है कि आलू के साथ किए गए प्रयोगों से मिले परिणाम दूसरों पर भी लागू होते हैं."

और अब अपने पिछवाड़े की बगिया के आलुओं पर आएं, तो चंद्रमा के अनुकूल पक्ष में पौधे लगाने का अर्थ है उस के बढ़ाव में १५-२० प्रति शत की तेज़ी.

—'हैरोस्मिथ', कनाडा

पुष्पम्मा

जी हफ्नंग, कापीराइट डायोजेनिस वरलाग, देर वाल्ट एम सोनटाग में

शौक़ अपने अपने

"हम ने आख़िरी किताव किस सन में पढ़ी थी?"

लीवरमान—फ्रैंकफुर्त रंदशो में

होर्जू में हांस-गेओर्ग राउक
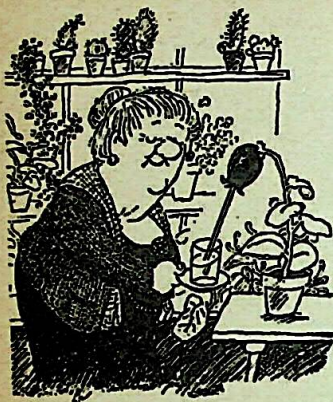
"मां ठीक कहती थी, तुम्हें सिर्फ़ मेरे तन से काम है."
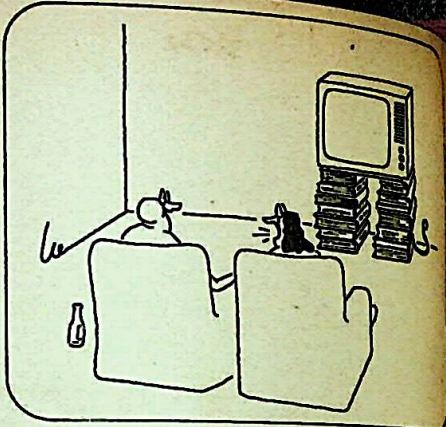
फ़ैमिली सर्कल में हस्ट

"तुम बटेरबाज़ी क्यों नहीं करते!"

होर्जू में बुश
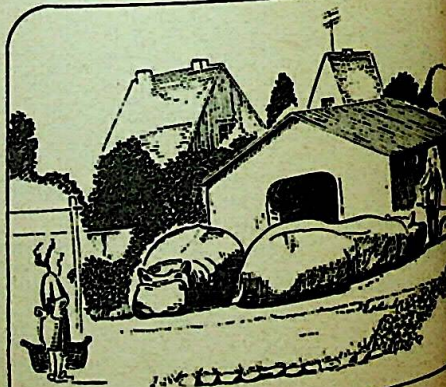
छत्रपति
पंच/डाइ वेल्ट

"गुरु, तुम्हारी साइकिल
ज़रा हल्की चल रही है."
दुनागिन, पब्लिशर्स हाल सिंडिकेट
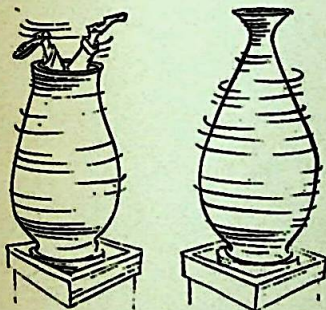
...दिया कबीरा रोय

"यूं दीदे फाड़ के क्या देख रही हो?'
स्टर्न
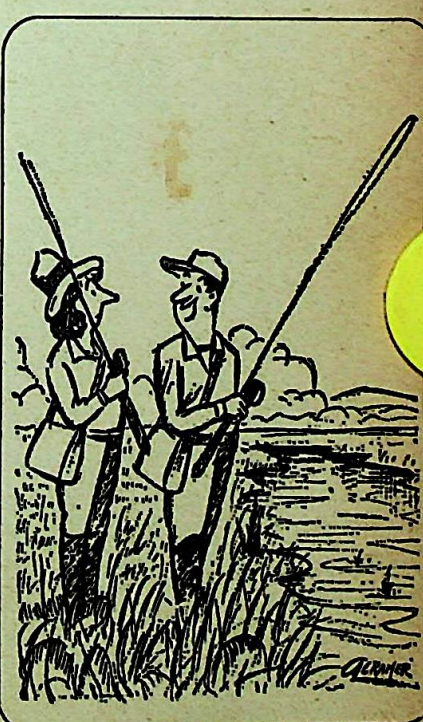
"जो कुछ सलाह मशवरा देना है अभी दे लो,
फिर चार घंटे मौन."
पंच/डाइ वेल्ट

वैज्ञानिक इसे अपनी भाषा में बंधन कहते हैं, लेकिन वास्तव में यह है . . .

अपना ख़ून

—फ़्रेडेल मेनार्ड

"मैंने उस का गाल छुआ. वह मुलायम और चिकना था, जैसे गार्डेनिया फूल की पंखुड़ी."

●"मैं ने उसे छाती से लगाया तो हंसते हंसते मेरा गला रुंध गया. मैं चमत्कारों पर विश्वास करने लगी हूं."

●"वह अपलक मुझे निहारता रहा. मैं उन आंखों में डूब गई . . .और प्यार से भीग गई."

क्या यह प्रेमी से प्रेमिकाओं के मिलन का वर्णन है? नहीं. ये स्त्रियां उन क्षणों को याद कर रही हैं जब उन्हों ने पहले पहल अपने नवजात शिशुओं को बांहों में लिया था.

शिशु जन्म के बाद की घड़ियों से इसकी

...नापता की शक्ति का नए माता पिता को तो एहसास था ही, अब वैज्ञानिक यह मानने लगे है कि इन्हीं क्षणों में बच्चे के साथ अटूट और गहरा संबंध स्थापित होता है. क्लीवलैंड के केस वेस्टर्न रिज़र्व यूनिवर्सिटी स्कूल आफ मेडिसिन के डाक्टर मार्शल क्लौस और जान केनल ने १९७२ में पहली बार इस चमत्कारी तथ्य का वर्णन किया था, तब से अन्य अनुसंधान भी इस बात की पुष्टि करते आए है कि शिशु जन्म के बाद की ये कोमल घड़ियां बच्चे और माता पिता के बीच अटूट बंधन स्थापित करने में आदर्श सिद्ध होती हैं. जन्म के समय शिशु संकरे प्रसव मार्ग से बाहर आने को उत्सुक होता है और व्याकुल मां भी उसे जन्म देने के लिए आतुर होती है. दोनों ही व्यग्र होते हैं—मां गर्भ में पाले अज्ञात शिशु की छवि के साक्षात दर्शनों के लिए और शिशु अपने सुरक्षित, हार्दिक और सौम्य नवजीवन के लिए.

शिशु की भूख मां के शरीर में तत्काल प्रतिक्रिया जगाती है. उस के क्रंदन मात्र से मां के स्तन भर आते हैं और कभी कभी तो उन स्तनों से दूध भी छलक उठता है. कुनकुने दूध की सुगंध से खिंचा शिशु चाव से दूध पीने लगता है नवजात द्वारा स्तन चूसने से मां के शरीर में पीयूष हारमोन (आक्सीटोसिन) का उत्पादन बढ़ जाता है, जिस से गर्भाशय सिकुड़ने लगता है, नाल (प्लेसेंटा) कट जाती है, और प्रसवोत्तर रक्तस्राव रुक जाता है. एक दूसरे को सुख पहुंचाने वाली, यह अन्योन्य प्रतिक्रिया मां और बच्चे के हृदय का बंधन बन जाती है.

जन्म लेते ही शिशु में विस्मयकारी होशियारी आ जाती है. अगर उसे सर्दी गरमी से बचा कर रखा जाए और आराम से उठाया लिटाया जाए तो वह चुपचाप लेटा आसपास का जायज़ा लेता रहेगा. उस के चेहरे से २० सेंटीमीटर ऊपर कोई अपना चेहरा झुलाए तो वह हौले हौले नज़रों से उस का अनुसरण करेगा. वह रोशनी, चुटकी जैसी आवाज़, और हलके से स्पर्श से भी मचल उठेगा. ऊंची आवाज़ पर—जिस आवाज़ में बहुत से माता पिता उस से बतियाते हैं—वह अपना सिर उसी ओर घुमा लेता है और यह सब वह जन्म के कुछ ही घंटों के भीतर सीख लेता है.

लंदन के चेरिंग क्रास अस्पताल के डाक्टर ह्यू जौली के अनुसार, यह मान बैठना ठीक नहीं है कि प्रसव के तुरंत बाद मां को आराम की ज़रूरत होती है. उसे तो अपने बच्चे की ज़रूरत होती है. वे कहते हैं, "साधारण ढंग से जनमे शिशु को सीधे मां की बांहों में दे दो, ताकि वह उसे छाती से लगा सके."

लाड़, बच्चे को नख से शिख तक छूना दुलारना, मां द्वारा बच्चे का सहज अभिनंदन है; और वात्सल्य बंधन का सर्वाधिक शक्तिशाली तत्व भी.

प्रसव प्रशिक्षिका शीला किट्ज़िंगर कहती हैं कि शिशु को जानने का यह तृप्तिकारी अनुष्ठान एक तरह का भावात्मक रहस्योद्घाटन है. आरंभ में मां बच्चे को फूलों के गुलदस्ते की तरह थामती है. फिर उंगलियों की पोरों से उस की मृदु काया का संधान करती है. एक उंगली से उस के चेहरे की गोलाई का जायज़ा लेती है, उस के अंग प्रत्यंग पर हाथ फेरती है और उस सलोने की पीठ थपथपाती है.

स्वस्थ शिशु के निरापद जन्म पर राहत और प्रसन्नता से कहीं अधिक परम आनंद की अनुभूति होती है. एक नए संबंध की दावेदारी भी, जिस के संग संग ऐसे हर्षातिरेक भरे शब्द

भी झरते हैं, "ज़रा देखो, इस का नन्हा सा मुह. ये छोटे छोटे नाख़ून !"

प्यार के इस बंधन में पिता का भी हिस्सा होता है. प्रसव पीड़ा से ले कर गर्भस्थ शिशु के आगमन तक जो पिता मां के इर्द गिर्द रहता है, उस में उन के इष्ट मंगल की कामना के ज्वार उमड़ने लगते हैं. एक पिता बोला, "मैं यह तो नहीं कहूंगा कि उसे देखते ही मुझ में से प्यार का समंदर हिलोरें लेने लगा पर जब मैं ने अपनी चीख़ती, आंसुओं से सने चांद से चेहरे वाली बिटिया को गोद में उठाया तो प्रतिज्ञा की कि इसे कभी फूल से भी चोट नहीं लगने दूंगा."

कैलिफ़ोर्निया के मनोचिकित्सक मार्टिन ग्रीनबर्ग और चेरिंग क्रास अस्पताल के प्रो. नारमन मारिस ने पिता और नवजात के आपसी बंधन को समझाने के लिए अंगरेजी में एक नया शब्द गढ़ा है एनग्रासमेंट—जिस में निहित है लगाव, गहरी सोच, और दूसरे सारे काम छोड़ कर इस नई पहचान में ही खो जाना. जो पिता उन प्रारंभिक घड़ियों में अपने बच्चे के निकट होते हैं, वे इस दृष्टिकोण का समर्थन करते हैं. एक पिता ने बताया, "उसे बिटर बिटर टुकटुकाती, और हर चीज़ को मुट्ठियों में पकड़ने को मचलती देख मैं दंग रह गया. और जब मैं ने उसे छुआ तो मुझे लगा कि मुझे एक बच्ची नहीं, बेटी मिली है."

इस बंधन के महत्व के प्रति जागरूकता से अस्पतालों के तौर तरीक़ों में भी काफ़ी फ़र्क़ आ गया है. छूतछात के डर से कभी जच्चा-ख़ाने एक तरह के क़िले हुआ करते थे, जहां शिशुओं को अलग थलग रखा जाता था. लेकिन अब अधिकतर अस्पतालों में इस बात पर ध्यान दिया जाता है कि शिशुओं का परिवार के साथ निकट का संबंध बना रहे.

अपने अध्ययन के आधार पर डा. क्लौस और डा. कैनल ने ये सुझाव दिए हैं:

● फ़ुज़ूल चिंताओं से बरी रहने के लिए गर्भावस्था के दौरान माता पिता को प्रसव संबंधी जानकारी हासिल कर लेनी चाहिए. अस्पताल में पिता की मौजूदगी से मां को तसल्ली रहती है और प्रसव पीड़ा सहनीय हो जाती है.

● कोई विशेष कारण न हो तो शिशु को नहलाई सफ़ाई के तुरंत बाद मां की बांहों में दे दिया जाना चाहिए. फ़िलाडेल्फ़िया के लोग शिशु को मां के पेट या कलेजे से लगा कर लिटा देते हैं और एक कंबल उढ़ा देते हैं ताकि बाक़ी कारवाइयां निपटाने से पहले जननी और संतान एक दूसरे को ख़ूब चीन्ह लें.

● जितनी जल्दी हो सके, नए परिवार को अकेला छोड़ दिया जाना चाहिए. मां में शक्ति हो तो उसी को नवजात की देख भाल सौंपी जानी चाहिए. नर्सें मां की देखभाल करें या उस की सलाहकार बन जाएं.

● परिवार के सदस्यों को नवजात शिशु को देखने के लिए आते रहना चाहिए. अगर कोई अड़चन न हो तो उस के छोटे छोटे भाई बहनों को भी आना चाहिए. सात बच्चों की एक मां 'संपन्नता, निर्मलता, और ख़ुशी' के उन क्षणों को आज भी याद करती नहीं अघाती जब उस का पति और बच्चे सब से छोटे—नवजात—के गिर्द जुटा करते थे. "मेरा विश्वास है कि स्नेह बंधन केवल शिशु और उस के मां बाप के बीच ही नहीं, उन सब के बीच भी पैदा हो जाते हैं जो उस के पास होते हैं."

जन्म के बाद मां और बच्चा साथ रहें तो यह बंधन स्वतः गहरा होता जाता है. पर

आपरेशन या समय से पहले पैदा होने वाले बच्चों के मामले में कुछ ख़ास समस्याएं पेश आती है. इन दोनों ही स्थितियों में शिशु को जीवन रक्षक कारणों से तुरंत मां से अलग करना पड़ सकता है. समय से पूर्व होने वाला बच्चा ठीक समय पर पैदा होने वाले बच्चों की अपेक्षा माता पिता से मिलने का कम इच्छुक होता है. और अपने जने से मां की मुलाकात भी बड़े अजीब माहौल में होती है. बच्चा इनटेंसिव केयर यूनिट में इनक्यूबेटर में पड़ा होता है. जो मां आपरेशन द्वारा बेहोशी के आलम में शिशु जनती है, वह तुरंत उस की देखरेख नहीं कर सकती. उसे कई घंटे तक शिशु का चेहरा भी देखने को नहीं मिलता.

सौभाग्य से ऐसे मामलों में भी मां और नवजात को शीघ्रातिशीघ्र मिलाने की दिशा में काफ़ी प्रगति हुई है. समझदार डाक्टर आपरेशन से होने वाले बच्चे को साधारण प्रसव ही मानते है, और पिता को कमरे में मौजूद रहने की आज्ञा दे देते हैं. सान फ्रांसिस्को के यूनिवर्सिटी आफ़ कैलिफ़ोर्निया स्कूल आफ़ नर्सिंग के रैमोना टी मर्सर के अनुसार, "इस से मां को तसकीन रहती है कि होने वाले बच्चे का स्वागत करने वाला उस के अलावा भी कोई है."

शिकागो के माइकेल रीज़ हास्पिटल में बाल एवं स्त्री रोग विभाग की मनोचिकित्सा परामर्शदाता डा. नैडा स्टाटलैंड ने आपरेशन का हौआ कम करने की दिशा में कुछ और सुझाव दिए हैं. जैसे मां अपने होश हवास में रहे तो बच्चे को अपने शरीर से निकाले जाते देख सकती है. जब उस के पेट में टांके रहे हों तो वह बच्चे को दुलार सकती है. या बच्चे को ऐसे स्थान पर रखा जाए जहां मां उसे देख सके और छू सके. डा. स्टाटलैंड ज़ोर दे कर कहती हैं, "मां और बच्चा एक दूसरे के होते हैं."

पारिवारिक सौहार्द बढ़ाने की दिशा में समय से पहले पैदा होने वाले बच्चों के बारे में भी विधान बदलने लगे हैं. मां बाप को नर्सरी में जा कर इंक्यूबेटर में रखे बच्चे की देख रेख के लिए प्रोत्साहित किया जाता है. ऐसे मिलन से बच्चे और मां बाप, दोनों को लाभ होता है. थपथपाने, छूने, और झुलाने से बच्चे को सांस लेने में, विश्राम करने में, और अवरुद्ध शरीर के विकास में मदद मिलती है.

अंत में बच्चे को गोद लेने वाले मां बाप का प्रश्न उठता है. उन में ये वात्सल्य बंधन धीरे धीरे और भिन्न भिन्न प्रकार से स्थापित होते हैं. (मसलन किस उम्र में बच्चा गोद लिया गया है.) प्रसव प्रशिक्षिका वाल्माई हाऊ एल्किंस के मतानुसार, "मानवीय संबंध इतने कोमल व जटिल हैं कि उनकी किताबी परिभाषाएं नहीं दी जा सकतीं." इसी प्रसंग में कर्सर कहते है. "वात्सल्य का बंधन प्राकृतिक चमत्कार है और शिशु जन्म के तत्काल बाद का समय इस के लिए अनुकूलतम होता है. लेकिन मानव स्वभाव विचित्र और कई तरह से क्रिया प्रतिक्रिया करता है. यही बात हर मां और हर शिशु पर लागू होती है: हर मां व शिशु अनोखे होते हैं; और इसी तरह उन के आपसी स्नेह की भाषा भी अनोखी और मौलिक होती है."

मधुमक्खियां भी अब हड़ताल पर जाने वाली हैं—उन्हें छोटे फूलों पर ज़्यादा शहद चाहिए.

—जे बी मूनी

गणित की अनोखी पहेलियां

—'ओमनी' से संक्षिप्त

लगभग २५ वर्षों से 'साइंटीफिक अमेरिका' नामक पत्रिका के पाठकों का मार्टिन गार्डनर द्वारा बनाई गई बौद्धिक पहेलियों से मनोरंजन होता रहा है. बहुमुखी प्रतिभाशाली नटखट गार्डनर को 'गणित का जादूगर' माना जाता है. यहां गार्डनर की १० श्रेष्ठ लघु पहेलियां प्रस्तुत हैं, जिन्हें स्काट मारिस ने 'मास्टर गेम्समैन' की ६५वीं वर्षगांठ मनाने के लिए अपने 'मनोविनोद' स्तंभ के लिए चुना. उत्तर पृष्ठ ६८ पर हैं.

प्रश्न

१. एक आदमी के पास अंगरेजी के L अक्षर के आकार का ज़मीन का टुकड़ा है (नीचे देखें). वर्गाकार टुकड़े में से उस के चौथाई भाग के बराबर और उस से छोटा वर्ग काट लिया गया है. वह इस ज़मीन की वसीयत अपने चारों बेटों के नाम कर देता है. शर्त बस इतनी है कि वे उसे आपस में एक जितने आकार के सर्वांगसम टुकड़ों में बांटें. गणितज्ञों का विचार है कि ऐसा करने का केवल एक ही ढंग है. आप बताइए, वह ढंग क्या है?
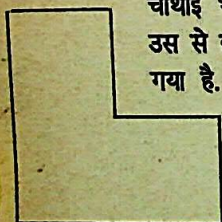
२. एक कार्यकुशल विशेषज्ञ किसी पिकनिक में तेल व सिरका लाने का वादा करता है, लेकिन वह दोनों चीज़ें एक ही बोतल में ले आता है. वह तेल और सिरके का ठीक उतना ही अंश प्रत्येक मेहमान को देना शुरू करता है जितना मेहमान चाहता है. वह ऐसा कैसे करता है?

३. २ और ३ के अंकों के बीच ऐसा कोई अंक रखिए जो २ से बड़ा और ३ से छोटा हो.

४. एक धूपखिले दिन एक आदमी कंपास (दिशासूचक यंत्र) के अभाव में जंगल में भटक जाता है. तब कलाई पर बंधी घड़ी का उपयोग कर के वह अंततः सही दिशा ढूंढ लेने में सफल हो जाता है और फिर से सुरक्षित स्थान में पहुंच जाता है. वह यह कैसे कर पाया?

५. इन में से किस का मूल्य अधिक है—१० डालर वाली स्वर्ण मुद्राओं का ५०० ग्राम वज़न या २० डालर वाली स्वर्ण मुद्राओं का २५० ग्राम वज़न? कहीं इन का मूल्य बराबर तो नहीं है?

६. सूर्योदय के समय एक जोगी ने पर्वत के शिखर पर स्थित मंदिर की ओर जाने वाले तंग रास्ते पर चढ़ना शुरू किया. वह एक ही गति से नहीं चलता गया. बीच बीच में रुकते हुए वह सूर्यास्त से पहले मंदिर पहुंच गया. अगले दिन वह सूर्योदय के समय रवाना हुआ और

उसी रास्ते से नीचे उतरने लगा. इस बार भी वह एक ही गति से नहीं चला. उतरते हुए उस की गति कहीं तेज़ थी, कहीं धीमी. क्या उस के रास्ते में ऐसी कोई जगह आई जहां वह जोगी ऊपर चढ़ते और फिर नीचे आते समय एक ही समय पर पहुंचा हो?

७ एक लड़का नहाने के टब में प्लास्टिक की नाव तैरा रहा है. नाव में पेंच और ढिबरियां लदी हैं. अगर वह ये पेंच और ढिबरियां पानी में गिरा देता है और नाव को ख़ाली तैरने देता है तो क्या टब में पानी का स्तर बढ़ेगा या गिर जाएगा?

८ एक साइकिल के पैडल से रस्सी बांध दी जाती है. अगर कोई उस रस्सी को पीछे की
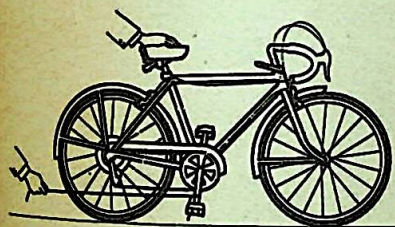
ओर खींचता है और कोई दूसरा साइकिल का संतुलन बनाए रखने के लिए उस की गद्दी धीरे से पकड़ लेता है, तो वह साइकिल आगे की ओर चलेगी या पीछे की ओर? या चलेगी ही नहीं?

९. एक ट्रक एक कमज़ोर पुल के पास आ कर रुक जाता है. उस का चालक बाहर निकलता है और ट्रक के पार्श्व भाग पर घूंसे मारने लगता है. यह देख कर एक किसान उस से घूंसे मारने का कारण पूछता है. चालक बताता है, "ट्रक में २०० कबूतर हैं. मेरा ख़याल है, यह कमज़ोर पुल उन का वज़न सह नहीं पाएगा. मैं वज़न कम करने के लिए उन्हें ट्रक के अंदर इधर उधर उड़ाने की कोशिश कर रहा हूं." अगर ट्रक का पिछला हिस्सा हवाबंद है तो आप चालक के तर्क के बारे में क्या कहेंगे?

१०. एक गिरजाघर के शिखर की अंदरूनी छत में घंटे बजाने के दो रस्से नीचे फ़र्श तक लटके हैं. एक रस्सा दूसरे से ३० सेंटीमीटर दूर है. एक कलाबाज़ चोर रस्सा चुराना चाहता है. लेकिन छत तक पहुंचने के लिए न तो किसी तरह की सीढ़ी है और न कोई ऐसी चीज़ जिस पर खड़े हो कर वह रस्सा काट सके. उसे तो रस्से के सहारे ऊपर चढ़ना होगा और ज़्यादा से ज़्यादा ऊपर चढ़ कर रस्सा काटना होगा. छत इतनी ऊंची है कि अगर एक तिहाई ऊंचाई से भी वह नीचे गिर पड़े तो उस की जान चली जाएगी. अब बताइए कि वह किस ढंग से ज़्यादा से ज़्यादा रस्सा चुराने में सफल हो सकता है.

सूचीबद्धता

भूल जाने की आदत से मज़बूर हर काम की लिस्ट बनाने में विशेष रुचि रखने के कारण, उस महिला से मेरी हमदर्दी स्वाभाविक थी जो मेडिकल आर्ट्स भवन की लिफ़्ट में अपनी सूची खो बैठी. सो उस ने लिखना शुरू किया, "कुत्ते को टीका लगवाना है," "कपड़ा धोने की मशीन ठीक करवाने के लिए मैकेनिक को बुलाना है:" और इन्हीं इंदराजों के बीचोबीच उस नें छोटे, लेकिन साफ़ अक्षरों में यह भी लिखा, "बच्चा लाना है."

—सूसन अल्बर्ट

गणित की अनोखी पहेलियां: उत्तर
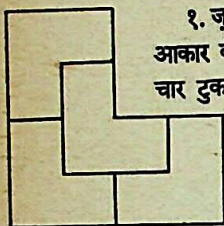
१. ज़मीन को चित्र के समान आकार के ही बराबर बराबर के चार टुकड़ों में बांट दिया जाए.

२. चूंकि तेल सिरके पर तैरता रहेगा, इसलिए विशेषज्ञ बोतल के ऊपर से तेल का उतना अंश मेहमान को दे सकता है जितना वह चाहता है. फिर वह बोतल उलटा कर उस की डाट को थोड़ा ढीला करता है ताकि वांछित मात्रा में सिरका टपक कर निकल सके.

३.२.३.

४. घड़ी को सीधा पकड़ने से और घंटा इंगित करने वाली सुई को सूर्य की ओर रखने से उसे दिशा का ज्ञान हो गया. डायल के केंद्र से घंटा इंगित करने वाली सुई और १२ के मध्यवर्ती बिंदु के बीच उस ने एक रेखा की कल्पना की. यह रेखा दक्षिण दिशा की ओर संकेत करता है. यही रेखा शाम ६ बजे से सुबह ६ बजे तक उत्तर दिशा की ओर संकेत करती है. यदि वह आदमी भूमध्य रेखा के दक्षिण में होता तो यही नियम विपरीत हो जाता.

५. ५०० ग्राम सोना २५० ग्राम सोने से दोगुना मूल्य रखता है.

६. हां. कल्पना कीजिए कि दो जोगियों ने एक साथ चलना शुरू किया—एक ने नीचे से ऊपर और दूसरे ने ऊपर से नीचे. दोनों ठीक उसी लीक पर और उसी गति से चले जो लीक और गति असली जोगी ने अपनाई थी. दोनों काल्पनिक जोगियों की रास्ते में कहीं न कहीं तो भेंट होगी ही. बस, उसी जगह एक ही समय पर असली जोगी पहुंचा होगा.

७ पानी का स्तर नीचे गिर जाएगा. तैरती हुई वस्तु पानी में अपना भार और डूबी हुई वस्तु अपना आयतन खो बैठती है.

८ निचले पैडल से बंधी रस्सी खींचे जाने से साइकिल पीछे की ओर चलेगी. पैडल पर जब ज़ोर पड़ता है तो उस से सामान्यतः साइकिल आगे की ओर खिंचेगी, लेकिन पहियों का बड़ा आकार और पैडल तथा स्प्राकेट (जिस पर साइकिल की चेन चढ़ी रहती है) के बीच छोटी सी गरारी का अनुपात कुछ इस प्रकार का होता है कि खींचने पर साइकिल पीछे की ओर चलेगी.
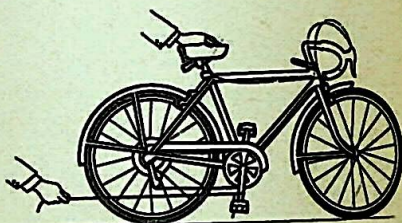
९. उस का तरीका काम नहीं करेगा. जिस ट्रक में कबूतर बंद हैं, उस के वज़न में कबूतर और ट्रक दोनों का भार शामिल है. हां, जब कबूतर आकाश में ऊपर उड़ रहा हो तो बात दूसरी है. इस लिए बंद ट्रक में कबूतर के उड़ने या बैठने से ट्रक के वज़न में कोई अंतर नहीं आएगा.

१०. कलाबाज़ चोर सब से पहले रस्सों के निचले सिरों को बांधता है. वह एक रस्से से छत तक पहुंच कर दूसरे रस्से को ऊपर से काट देता है. वह दूसरे रस्से का केवल इतना भाग बचाता है जिस का छोटा सा फंदा बन सके. उस फंदे से लटकते हुए वह पहले रस्से को ऊपर से काट डालता है, लेकिन नीचे गिरने नहीं देता. फिर वह पहले रस्से का सिरा फंदे में से निकाल कर तब तक खींचता है जब तक कि गांठ ऊपर नहीं आ जाती. उस दोहरे रस्से से नीचे उतर कर वह रस्से को फंदे से अलग कर लेता है और इस तरह दोनों रस्से पा लेता है—लगभग सारे के सारे.

दुनिया भर की

मिस्र में ड्राइविंग लाइसेंस प्राप्त करना और जारी करना, शायद सब से आसान है. कार या गाड़ी के पीछे दो पत्थर रख दिए जाते हैं. जो व्यक्ति गाड़ी पिछले गीयर में डाल कर इन पत्थरों के बीच से निकाल ले जाता है, लाइसेंस उसी का.

— गिनेस बुक आफ़ वर्ल्ड रिकार्ड

अमरीका के राष्ट्रीय वन्य जीवन संघ का दावा है कि केवल आदमी ही ऐसा प्राणी नहीं जो नशा करता हो. इस संगठन के अध्ययन के अनुसार लाल रंग की रोबिन चिड़ियां कैंथ वृक्ष के रसदार फल खा कर इतनी मदहोश हो जाती हैं कि वे उड़ते समय आपस में टकराने लगती हैं. या फिर उड़ते उड़ते खिड़कियों के शीशों से टकरा जाती हैं. वृक्षों के ख़मीर लगे रस को पीने के बाद तितलियां और बरें लड़खड़ाती हुई

उड़ती हैं या ज़मीन पर आ लुढ़कती हैं. मधुमक्खियां ज़्यादा पके मकरंद को पी कर बेताबी से इधर उधर उड़ने लगती हैं. उधर दक्षिणी अफ़्रीका के क्रूगर नेशनल पार्क के हाथी तो वेमरूला पेड़ के ख़मीर उठे फल की दावत खा कर अकसर उन्मत हो जाते हैं, और तब उन में वह धींगामुश्ती होती है कि बस रे बस.

— न्यू यार्क टाइम्स

वरजीनिया की ग्रेसन्. काउंटी में हर वर्ष वाईट माउंटेन रैंप मेला लगता है, जिस में संगीत आदि कई सांस्कृतिक कार्यक्रम होते हैं. इस का सब से लोकप्रिय पक्ष वह प्रतिस्पर्धा है जिस में विजयश्री उसी को मिलती है जो सब से ज़्यादा रैंप भक्ष जाता है. यह स्वाद में मीठी सब्ज़ी होती है जिस का आकार प्याज़ का और जिस की गंध लहसुन की सी होती है. विजेता को पुरस्कार रूप में मुखशुद्धि की बड़ी बोतल दी जाती है.

—फ़िलाडेल्फिया इंक्वायरर

पीकिंग में हवाई हमले से बचाव के लिए इतनी खाइयां बनाई गई हैं कि एक साथ दस हज़ार लोगों को पनाह दी जा सकती है. अधिकारी जब हवाई हमले से बचाव का अभ्यास करवाते हैं, तो कुछ मिनटों में ही सारी खाइयां चीनियों से पट जाती हैं.

—एल एम बी

किताब के पन्ने पलटते पलटते आप के सामने किसी ऐसे नगर या राष्ट्र का नाम आ जाए जो आप को अनजाना लगे, तो समझ लीजिए कि आप किसी पुरानी जानी पहचानी जगह के नए नाम के कारण चकरा गए हैं. कुछ नए पुराने नाम इस प्रकार हैं:

पुराना	नया
सीलोन	श्री लंका
स्याम	थाईलैंड
फ़ारस	ईरान
सीयुदौ ट्रूहीयो	सांत दीमिंगो
स्तालिनग्राद	वोल्गोग्राद
गोल्ड कोस्ट	घाना
बेल्जियन कांगो	ज़ेयर
रोडेशिया	ज़िबाब्वे
तांगानिका	तंज़ानिया
कांस्टेंटिनोपल	इस्तांबूल
सैगोन	हो ची मिन्ह सिटी
ग्रीनलैंड	कलालिट नुनाट
पूर्वी पाकिस्तान	बांग्लादेश

साठ साठ फुट ऊंची
हहराती लहरों और
जिस्म को चीरते बींधते
बर्फ़ानी तूफ़ानों के बीच
तैंतालीस हजार किलोमीटर
लंबी इस नौका
दौड़ के नाविकों का
लक्ष्य समुद्र विजय नहीं
अपने जीवट को
आज़माना है

मुक़ाबला नावों का सफ़र समंदरों का

—जोआन ए फ़िशमैन

दुनिया की तलहटी में कहीं २६ नावों का एक दुस्साहसी बेड़ा पूरब की ओर अग्रसर है. बेड़े में मूलतः ३० नावें थीं. २९ अगस्त १९८१ को पोर्ट्समाउथ, इंगलैंड, से चला यह बेड़ा 'व्हिटब्रेड राउंड द वर्ल्ड रेस' के तीसरे चरण में पहुंच चुका है. अपने मार्ग की सब से बड़ी बाधा—दक्षिण सागर में ४० और ५० डिगरी दक्षिणी अक्षांशों के बीच का तूफ़ानी समुद्र—भी वह लांघ गया है. संसार भर में मात्र यही एक ऐसा समुद्र है जहां प्रचंड अधड़ की राह में रुकावट डालने वाला ज़मीन का कोई टुकड़ा नहीं है. समुद्री प्रसार पर हहराती तूफ़ानी हवा प्रचंड वेग से चलती है. गगनचुंबी लहरें उमड़ती हैं. इन झंझाओं का मुक़ाबला बहुत कम नाविक कर पाते हैं. लगभग दो

न्यू यार्क टाइम्स मैगज़ीन (६ सितंबर, १९८१) से संक्षिप्त. कापीराइट १९८१ द न्यू यार्क टाइम्स कंपनी, न्यू यार्क.
फोटो: अलस्टेयर ब्लैक

महीने बाद पोर्ट्समाउथ लौटने तक, दुनिया के चंद बदतरीन मौसमों से जूझते हुए ये नावें ४३,००० किलोमीटर की तीव्रतम समुद्री दौड़ पूरी कर चुकी होंगी. और गति एवं नौसंचरण की सीमाओं का कीर्तिमान स्थापित कर चुकी होंगी.

नाविकों को यह क्या सूझी ? इन जांबाज़ों को साल भर तक कमरतोड़ तैयारी के बाद सात महीने लंबी जान जोखिम नौयात्रा की—जिस का पुरस्कार एक छोटी सी ट्राफ़ी भर है—क्या पड़ी थी ? और अन्य नाविक उन के साथ जाने के लिए एक दूसरे से होड़ क्यों करते है ? दौड़ में भाग लेने वाली नावें की १७ मीटर लंबी नाव 'बर्ज वाइकिंग' के कप्तान पीडर लुंडे ने इन प्रश्नों पर ज़रूर ग़ौर किया होगा, क्योंकि १५० लोगों ने उस के साथ चलने के लिए अर्ज़ियां दी थीं और मनोवैज्ञानिक परीक्षा द्वारा उस ने उन सब की योग्यता और इरादे भी जांच लिए थे. ब्रिटिश नाव 'एफ़ सी एफ़ चैलेंजर' के कप्तान लेस्ली विलियम्स ने १,०१,६०० रुपए प्रति सैलानी के हिसाब से दस बर्थें बेच कर अपने अभियान का कुछ ख़र्च निकाल लिया.

व्हिटब्रेड दौड़ में भाग लेने का आधारभूत कारण है संसारव्यापी स्तर पर मनुष्य का प्राकृतिक शक्तियों से मुक़ाबला करने का प्रलोभन. डच बैंकर कोर्नेलियस कोनी वान रीत्शाटन ने दो बादबानों वाली अपनी नाव 'फ़्लायर' में १९७७-७८ व्हिटब्रेड दौड़ जीती थी, और इस बार इसी नाम की दूसरी २३ मीटर लंबी नाव द्वारा फिर जीतने की आशा करते हैं. वे कहते हैं : "इस दौड़ में आप कीर्ति पाने के लिए नहीं, अपने संतोष के लिए भाग लेते हैं."

फ़्लायर के भूतपूर्व नेवीगेटर राय मुलेंडर को १९७३-७४ की व्हिटब्रेड रेस के दौरान नौचालन का असीम और अभूतपूर्व आनंद मिला. केप हार्न के अंतिम छोर पर "हवा की गति २० समुद्री मील प्रति घंटा थी. हम एक दूसरी को प्रचंडता से काटती उत्ताल लहरों में से गुज़र रहे थे. लेकिन सितारों से दीप्तिमान रात में पाल चमचमा रहे थे और हम स्टीरियो स्पीकरों से फूटती रख्मैनिनाफ़ के सैकंड प्यानो कंसार्टो (धुन) पर झूम रहे थे : नाव पूरी तरह नियंत्रण में थी; बग़ैर किसी हिचकोले के निर्बाध फिसलती सी; पूरी तरह सधी हुई.

सिर्फ़ मस्ती के लिए दुनिया भर के गिर्द नौका विहार का यह दस्तूर १४ वर्ष पहले शुरू हुआ था. इस की प्रेरक थी सर फ़्रांसिस चिचिस्टर की नौका द्वारा शौर्यपूर्ण, एकल, विश्व परिक्रमा. ब्रिटिश पत्र पत्रिकाओं में इस एकल नौ परिक्रमा की बड़ी धूम रही. कुछ ही दिन बाद, १९६८ में, लंदन के रविवासरीय 'टाइम्स' ने सब से कम समय में अकेले विश्व की नौ परिक्रमा करने वाले नाविक को ५,००० पौंड का पुरस्कार देने की घोषणा की. ९ नावों ने इस दौड़ में भाग लिया था, लेकिन राबिन नाक्स-जान्स्टन की १०.५ मीटर लंबी 'सुहैली' ही परिक्रमा पूरी कर सकी. इन में से चार नावें बुरी तरह टूट फूट गई थीं, और एक अन्य अतलांतिक सागर में भटकती मिली थी जिस के नाविक का कुछ पता नहीं लगा.

अगले साल इंगलैंड की रायल नेवल सेलिंग एसोसिएशन (सागर विहार समिति) ने नौ परिक्रमा का आयोजन किया और शराब बनाने वाली व्हिटब्रेड एंड कंपनी को इस का प्रायोजक बना दिया. व्हिटब्रेड रेस एकल परिक्रमा की तरह विपत्तियों की मारी नहीं थी. इस का आयोजन बड़ी सावधानी से किया गया था, जिस का प्रधान लक्ष्य था नाविकों की सुरक्षा. हर चौथे वर्ष होने वाली इस नौका दौड़ में सिर्फ़ ऐसी नावें भाग ले सकती हैं, जिन का खांचा (लकड़ी या धातु के) एक ही टुकड़े से बना हो. और हर नाव में कम से कम पांच नाविक होने चाहिए. हर नाव को हफ़्ते में दो बार बेतार द्वारा अपनी स्थिति बतानी होती है. ये सूचनाएं
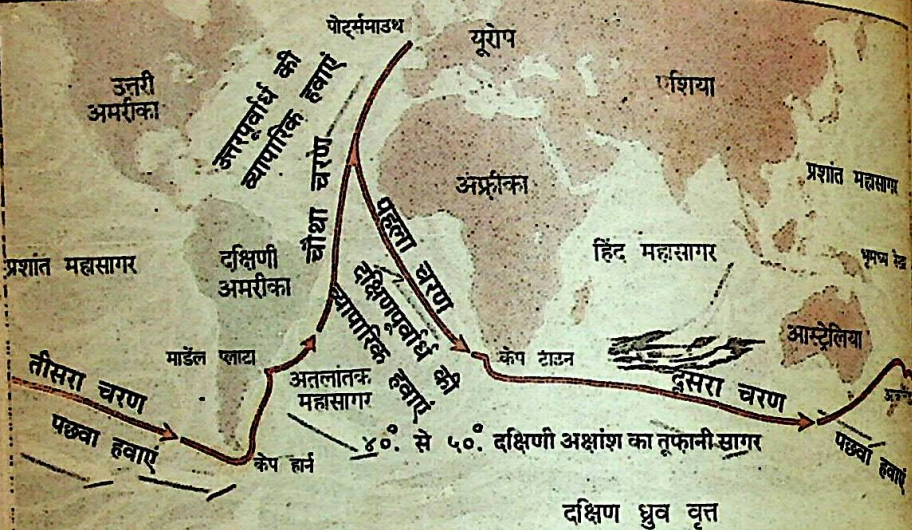
काफ़ी ऊलजलूल भी होती हैं, क्योंकि कोई भी स्पर्धी अपने विरोधी को अपनी प्रगति की झलक नहीं देना चाहता.

इस परिक्रमा का एक नियम यह भी है कि मरम्मत आदि और नाविकों को कुछ आराम देने के लिए हर नाव कम से कम तीन स्थानों पर अनिवार्यतः रुकेगी. इस प्रकार व्हिटब्रेड रेस चार चरणों में बंट गई है : पोर्ट्समाउथ से ले कर दक्षिण अफ़्रीका में केप टाउन तक; केप टाउन से आकलैंड (न्यू ज़ीलैड) तक; आकलैड से मार्डेल प्लाटा (अर्जेंटाइना) तक और अंत में मार्डेल प्लाटा से फिर (वापस) पोर्ट्समाउथ.

१९७३-७४ में हुई पहली व्हिटब्रेड रेस में १७ नावों ने भाग लिया था, जिन में से १४ ने अंततः परिक्रमा पूरी की थी. तीन नाविक समुद्र में डूब गए थे. अगली रेस में भाग लेने वाली १५ की १५ नावों ने परिक्रमा पूरी की थी और कोई जनहानि नहीं हुई. अब तक सब से कम समय में परिक्रमा पूरी करने वाली नाव का रेकार्ड है : १३४ दिन और १२ घंटे.

इस तीसरी व्हिटब्रेड रेस के बेड़े में १५ देशों की नावें भाग ले रही हैं, जिन में सब से छोटी नाव १३ मीटर की और सब से लंबी २० मीटर की है. अमरीका ने अब के इस में पहली बार भाग लिया है; और भारत ने अभी तक नहीं लिया.

न्यू ज़ीलैंड के ३२ वर्षीय मिकेनिकल इंजीनियर पीटर ब्लेक पिछली दोनों परिक्रमाओं में भी शामिल थे, पर इस बार वे अपनी नाव 'सीरमको न्यू ज़ीलैंड' के कप्तान हैं. २०.५ मीटर लंबी ब्लेक की नाव एक तरह का राष्ट्रीय उद्योग है : इस के ५०० भागीदार हैं, जिन में भागीदारी है एक प्राथमिक स्कूल की कक्षा के बच्चों की. परिक्रमा का तीसरे चरण का मार्ग बर्फ़ीले पहाड़ों वाले इलाक़ों से हो कर है और, ब्लेक के अनुसार, "पीछे पच्छिम से आती हवाओं में बला की सर्दी होती है. इन झंझाओं की गति ३५ से ५७ समुद्री मील होती है, जो बहुधा तूफ़ानी वेग पकड़ लेती है तब नावों को रेलिंग या डेक से थामने वाले लंगर डालने पड़ते हैं. कि पानी जम जाता है. कि नाव के पाल भी जम कर ठोस हो जाते हैं."

शीतातिरेक से बचने के लिए ब्लेक ने अपने

नाविकों के लिए विशेष वस्त्र बनवाए हैं, जो हिमदंश तथा अवताप (हाइपोथर्मिया) से शरीर की रक्षा करते हैं. फिर भी "वे भीग जाते हैं और हफ़्तों भीगे रहते हैं. सोने के लिए वे भीगे ही स्लीपिंग बैग में लेट जाते हैं, सोने की कोशिश में दो एक घंटे ठिठुरते रहते हैं, फिर दोबारा डेक पर चले जाते हैं."

लेकिन संसार के अधोतल पर, दक्षिण अफ़्रीका से न्यू ज़ीलैंड और दक्षिण तक झंझावातों और हहराती लहरों वाले इसी समुद्री विस्तार पर व्हिटब्रेड नौका दौड़ जीतने या हारने का दारोमदार है. इस समुद्र खंड की अठारह अठारह मीटर ऊंची लहरों से पार पाने के लिए 'सीरिमको' इस तरह बनाई गई है कि ज़रूरत पड़ने पर वह सर्फ़बोर्ड की तरह (पानी की सतह पर) उड़ भी सके.

ब्लेक कहते हैं: "यह सब बहुत रोमांचक है." पर यह ख़तरनाक भी है; क्योंकि, राबिन नाक्स-जानस्टन के अनुसार, 'उड़ती' हुई नाव "पहाड़ी ढलान पर सरपट दौड़ती बिना ब्रेकों की साइकिल जैसी होती है. उस पर स्वयं लोगों को मज़ा तो बहुत आता है; जिस तिस डेक को वे इस मज़बूती से पकड़ लेते हैं कि उंगलियों के जोड़ सफ़ेद पड़ जाते हैं; पर जब तक उसे दोबारा लहरें ही न रोकें, उस का लुढ़कना थमता नहीं. खेवनहार नाविक से ज़रा सी भी चूक हो जाए तो सामने से आने वाली लहर नाव को जलमग्न कर देगी."

बहुत से नाविकों के लिए दक्षिणी सागर का अपना ही एक आकर्षण है. पानी के भीतर सील और इक्कीस इक्कीस मीटर लंबी मछलियां मंडराती रहती हैं, और ऊपर जब तब पेंग्विन उड़ते दिखाई देते है. ज़मीन से १,५०० किलोमीटर दूर यहां अलबटरास और अन्य पक्षी भी गगन विहार करते मिलेंगे. इन में से कुछ के पंखों का विस्तार तीन तीन मीटर होता है. पीटर ब्लैक बताते हैं: रात को विस्मय एवं विराटता से अभिभूत कर देने वाली भव्य दक्षिण ध्रुवीय ज्योति जगमगा उठती है—"आकाश के इस छोर से उस छोर तक फैले हरिताभ प्रकाश के झिलमिलाते परदे सी."

लेकिन इस मुग्धकारी दृश्य में तेज़ गति से नाव चलाने के आनंद पर गंभीर ख़तरे भी छाए रहते हैं. मसलन, उपग्रह नौसंचालन व्यवस्था, मौसम के चित्र खींचने वाली मशीनें, राडार, सोनार जैसे आधुनिक यंत्रोपकरण भी हिमशैलों की समस्या नहीं सुलझा सके. ब्लेक के अनुसार, "बड़े हिमशैलों से, जिन्हें राडार पर देखा जा सकता है, कोई ख़तरा नहीं है, ख़तरनाक हैं वे छोटे छोटे हिमशैल जो राडार पर दिखाई नहीं देते. ये छोटे छोटे मकानों के बराबर होते हैं और पानी की सतह पर सिर्फ़ फ़ुट भर निकले रहते हैं. हम हर समय हिमशैलों पर ही निगाह रखते हैं."

जबकि मुलेंडर कहते हैं, "यहां के बदतर मौसम का तो अभी तक किसी को गुमान ही नहीं. कभी न कभी यहां हमें आंधी का—६४ से ७० समुद्री मील या उस से अधिक वेग से चलने वाली 'फ़ोर्स-१२' आंधियों का भी मुक़ाबला करना पड़ेगा. ये दो सौ मील दूर के बर्फ़ानी समंदर से उठेंगी. दो दिन तक फ़ोर्स-१२ आंधी चलती रहने पर लहरें तो २५ मीटर ऊपर तक उछालें मारने लगेंगी और बेहद सर्दी के कारण नाविकों के लिए नावें तेज़ी से खे कर सुरक्षित स्थानों तक पहुंच पाना मुहाल हो उठेगा."

व्हिटब्रेड जैसी दुस्साध्य नौका दौड़ में मनोबल बनाए रखने, सुरक्षित रहने और (अंत में) विजयी होने के लिए सब से महत्वपूर्ण है तैयारी. पिछले वसंत में जिस दिन नीदरलैंड में रीत्शाटन की नई नाव का जलावतरण हुआ, वह परीक्षणों में जुट गया. अतलांतिक लांघ कर वह मार्बलहेड

(मासाचूसेट्स), अमरीका तक हो आया. मक़सद था २७ विभिन्न पालों की परख, जिन में से कुछ सैकड़ों पौंड भारी थे.

दाएं बैकअप गियर को पाना महत्वपूर्ण है. पिछली व्हिटब्रेड रेस में ब्लेक की नाव का मस्तूल बीच अतलांतिक टूट गया. वह बताते हैं, "किसी तरह मिल जुल कर हम ने एक कामचलाऊ मस्तूल बनाया और पास के बंदरगाह तक पहुंचे और हवाई जहाज़ द्वारा नया मस्तूल आने का इंतज़ार करते रहे." अब हर नाव का कप्तान खुदरा यंत्र साथ ले कर चलता है और हर विश्राम स्थल से रवाना होने से पहले उन में ज़रूरत के मुताबिक़ बढ़ोतरी या तरमीम भी कर लेता है.

व्हिटब्रेड के नाविकों में उस स्थिति को झेलने का माद्दा ज़रूर होना चाहिए जिसे मुलेंडर "पिंजरे में फंसे चूहों जैसी स्थिति कहते हैं." फ़्लायर के १५ नाविकों में एक है पेरिस का ख़ानसामा, जो ठंडे सूखे व्यंजन बनाने में माहिर है; एक है पाल बनाने का विशेषज्ञ, जिस के पास सिलाई की मशीन भी है; और बाक़ी सब में एक डाक्टर भी है. हर नाविक बारी बारी से चौकीदारी करता है. दिन में : छः घंटे की दो पारियां होती हैं; रात में चार चार घंटे की तीन. एक पारी के लोग जब बिस्तरों में समाते हैं, तब तक उस से पहले वाली पारी के लोग अपनी ठिठुरन मिटा चुके होते हैं.

ये नाविक कैसे मिल जुल कर रहते हैं ? मुलेंडर का जवाब है, सिर्फ़ "लक्ष्य प्रेम." लोग मुश्किलों को नज़रअंदाज़ करना सीख जाते हैं और "वही करते हैं जो करना चाहिए. हमारा ज़्यादातर वक़्त हंसने हंसाने में गुज़रता है." जबकि कोनी रीत्शाटन का दृष्टिकोण है : हमें जीतना है, पर चुहल करते करते जीतना है. बीच समंदर में किसी को पीने पिलाने की इजाज़त नहीं. लेकिन बंदरगाह पर वान रीत्शाटन हर नाविक की ख़ूब ख़ातिर करता है, और अगले चरण पर रवाना होने से पहले होने वाले जश्न में तो उन्हें गोते लगवा देता है.

शांत, स्थिरचित्त कप्तान, वान रीत्शाटन धैर्य को सहिष्णुता और अनुशासन का संयोग मानते हैं. और दूसरों को अनुशासित रखने के लिए पहले "ख़ुद अनुशासित होना चाहिए." बहुत से मौक़ों पर साथी दहशत खा जाते हैं. ऐसे क्षणों में कप्तान को (अपने स्वभाव और आचार व्यवहार से) जताना होता है कि वह एक दम निर्भीक है और किसी भी संकट का सामना कर सकता है. बहुत से मौक़ों पर कप्तान ख़ुद डर जाता है. लेकिन भय पर उसे उसी तरह क़ाबू पाना पड़ता है जैसे वह रोज़मर्रा की ज़िंदगी में तमाम छोटी मोटी समस्याओं पर क़ाबू पा लेता है.

इस बार, मार्च या अप्रैल में, व्हिटब्रेड रेस की नौकाएं पोर्ट्समाउथ लौटेंगी तो उन के कप्तान और नाविक समंदर पर न सही, अपनी ख़ामियों पर ज़रूर विजय पा चुके होंगे. नाविकों ने हर बार यही सीखा है कि समुद्र से जीता नहीं जा सकता; उस से तो बस निपटा ही जा सकता है.

उंगलियां घी में . . .

दक्षिण पूर्व स्विट्ज़रलैंड के लूगानो के समीप रहने वाले इतालवी चित्रकार, गाब्रीएला नेजरी व ओलेज्यो को अबू धाबी के अमीर और कुवैत के शेख़ों की ओर से तीन वर्षों में १५० पारिवारिक चित्र बनाने का प्रस्ताव मिला. फ़ीस थी ७० करोड़ लीरा, ऊपर से एक महल और ४० नौकर भी कलाकार की सेवा में दे दिए गए. गाब्रीएला नेजरी इस प्रस्ताव से ख़ुश तो थे, परंतु समय की पाबंदी के कारण कुछ सहमे भी थे—हर साल ५० चित्र बनाना कोई हंसी ठट्ठा तो नहीं.

—ल फ़िगारो, पेरिस

स्वस्थ सुंदर पांवों के लिए

बिवाई, गोखरू, गट्ठे, अंगूठे की सूजन और अन्य रोगों से बचने के उपाय

—जैनिस हौपकिंस टैन

अधिकांश लोग जाने क्यों पैरों की इतनी उपेक्षा करते हैं. शरीर के और अंगों के प्रति तो वे ऐसी लापरवाही नहीं बरत पाते. फिर पैरों के साथ ही ऐसा दुर्व्यवहार क्यों करते हैं? हाथों के साथ हम ऐसा कर सकते हैं? नहीं. फिर जो पांव हमारे सारे शरीर को लाने ले जाने का भार उठाते हैं, उन की ओर हमारा ध्यान तभी जाता है जब उन्हें चिकित्सीय सहायता की आवश्यकता पड़ती है. हम चाहें तो समय रहते पांवों की बहुत सी समस्याओं से बच सकते हैं.

हमारे पांवों में शायद सब से ज्यादा होने वाला रोग है दद्रु (एथलीट्स फुट). यह अंगूठों के बीच की अधित्वचा को प्रभावित करता है. यह रोग उस 'फ़ंगस' या फफूंद की वजह से होता है जो हमेशा ही उपजीवी की तरह हमारे शरीर में रहता है. पैर के बंद और नम हिस्से की त्वचा को फाड़ कर यह रोग अपनी जड़ें जमाता है. प्रभावित क्षेत्र को खुश्क रख कर या सामान्य दवाइयों के प्रयोग से इस रोग से छुटकारा पा सकते हैं. पाउडर की अपेक्षा 'स्प्रे' से छिड़की जाने वाली दवा ज्यादा कारगर होती है. अपने जूतों को भी स्प्रे करें.

यदि यह उपाय कारगर साबित न हो तो इस का मतलब है कि वह रोग दद्रु नहीं बल्कि कोई जीवाणुजन्य छूत या सोरियासिस नामक त्वचा रोग है. ऐसी हालत में आप अपने डाक्टर या पाद रोग विशेषज्ञ से कहें कि वह संवर्ध (कल्चर) तैयार कर इस का पता लगाए.

घटिया दवाओं से बचें

दुखने वाले गोखरू (गट्ठे) या किण (कैल्स) पैरों पर अधिक दबाव पड़ने के कारण होते हैं. औरतों के पैरों में अधिक गट्ठे पड़ते हैं और इस का मुख्य कारण है ऊंची

पैरों के कुछ भारतीय रोग तथा उपचार

भारत जैसे समशीतोष्ण कटिबंधीय तथा विकासशील देशों में पांवों की देखभाल अधिक ज़रूरी हो जाती है. अमरीका जैसे विकसित देशों की अपेक्षा हमारे यहां पैरों को अधिक जोखिम उठाना पड़ता है. राह चलते आप का पैर चोट लगने से कट फट सकता है. इसे नज़रअंदाज़ न करें. ताज़ा ज़ख़्म में रास्ते की मिट्टी गोबर लगने से पैरों को ही नहीं, आप की ज़िंदगी को भी ख़तरा हो सकता है. आप धनुर्वात अर्थात टेटनस जैसे मारक रोग की गिरफ़्त में आ सकते हैं. इस लिए निहायत ज़रूरी है कि तुरंत घांव की मरहम पट्टी कराई जाए तथा टेटनस निरोधी टीका लगवाया जाए. जूतों के काटने से पैरों पर पड़े फफोलों का भी उपचार ज़रूरी है. संक्रमण से स्थिति भयंकर हो सकती है.

नंगे पांव घरों में कामकाज करने वाली महिलाओं तथा खेतों में काम करने वाले किसानों के पैर कभी पानी तथा कभी सूखे में रहते है. इस कारण तलवों में बिवाइयां फट जाती हैं जो बहुत ही तकलीफ़देह होती हैं. यह तलवों की अतिकिरेटिनता का रोग है. इस से नजात पाने के लिए यह ज़रूरी है कि पैरों को नमी और सूखे से बचाया जाए. हो सके तो काम करते समय सही क़िस्म के जूते पहनें तथा तलवों में चमड़ी को मुलायम रखने वाला लेप लगाएं, ग्लिसरीन, वैसलिन तथा लैनोलिन को मिला कर इस के लिए एक असरदार अवलेप बनाया जा सकता है. रोग गंभीर हो तो हो सकता है आप को इन के लिए किराटिन नाशी मरहम मसलन सैलिसिलिक एसिड (२० प्रति शत) का मरहम लगाना पड़े या फिर चर्मरोग विशेषज्ञ से सलाह लेनी पड़े.

एथलीट्स फुट अर्थात् दद्रु के अलावा पैरों में दूसरे प्रकार के फ़ंगस के कारण दाद (टीनिर्मा पीडिस) हो सकता है. पैरों को जहां तक हो सके सूखा रखना, गुनगुने पानी में लाल दवा डाल कर उन्हें धोना तथा स्थानीय रूप से फ़ंगसनाशी दवाइयों का इस्तेमाल ज़्यादातर मामलों में कारगर साबित होता हैं.

एड़ी के जूते पहनने का पागलपन. ऊंची एड़ी के जूते पैर के अंगूठों को तंग डब्बे में सिमट जाने को मजबूर करते हैं, इस दबाव से पैर की खाल सख़्त पड़ जाती है और गट्ठे या कैल्स को जन्म देती है. ये गट्ठे पीड़ा पहुंचाते हैं क्योंकि उन से नीचे की सामान्य त्वचा तथा तंत्रिकाओं पर दबाव पड़ता है.

आप सप्ताह में एक दो बार गट्ठों या कैल्स को झांवा से रगड़ कर स्थिति को नियंत्रण में रख सकते हैं, लेकिन इस से मूल समस्या का समाधान नहीं होगा. उस्तरे या ब्लेड से इन गट्ठों को काटने की कोशिश न करें. बाज़ार में बिकने वाली गट्ठों की दवाइयों से भी बचें. इन दवाइयों में ऐसे तत्व होते हैं जो कि ऊतकों को उत्तेजित अथवा नष्ट कर सकते हैं.

पैरों के नीचे की सतह में होने से मस्सों को पदतल मस्से कहा जाता है. ये मस्से भी तक़लीफ़ का कारण बनते हैं. लगातार दबे रहने से वे मस्से जैसे दिखाई नहीं देते, लेकिन वे छूत वाले होते हैं तथा फैल सकते हैं. अतः उपयोगी बात यह होगी कि उन्हें किसी विशेषज्ञ से निकलवा कर जमी हुई कार्बन डाइआक्साइड या बिजली की सुई से जलवा दिया जाए. यह काम डाक्टर द्वारा ही डिसपेंसरी में किया जा सकता है.

अंदर की तरफ़ को बढ़ा हुआ अंगूठे का

पैरों के नाख़ून तथा उन के आसपास की त्वचा भी फंगस की गिरफ़्त में आ सकती है. यह गिरफ़्त काफ़ी मुश्किल से ही ढीली होती है और हो सकता है, इस के लिए आप को एक साल तक ग्रिसियोफल्विन जैसे फंगसनाशी एंटीबायोटिक का सेवन करना पड़े. नाख़ूनों के आसपास की चमड़ी में सूजन (पैरोमिरिया) स्टैफाइलोकाक्कस जीवाणु तथा मनीलिया के कारण भी हो सकती है. इन में क्रमशः एंटीबायोटिक्स का सेवन तथा स्थानीय तौर पर निस्टैटिन का घोल उपयोगी होता है.

कुछ लोगों को कुछ तरह के खर पतवारों के छू जाने, रबर के चप्पल या जूते पहनने या नाइलोन के मोज़े पहनने से संस्पर्श त्वचाशोथ (कंटैक्ट डर्मटाइटिस) हो जाता है. कभी कभार पेनिसिलिन का मरहम लगाने से भी यह रोग हो सकता है. इन चीज़ों से बचाव तथा स्थानीय तौर पर स्टेराइड क्रीम लगाना इस में लाभ कर होता है.

कुष्ठ रोग तथा मधुमेह की वजह से पैरों में पोषणज ज़ख़्म हो जाते हैं. इन ज़ख़्मों की देखभाल बहुत ज़रूरी होती है. कुष्ठ रोग में पैर संवेदनशून्य हो जाते हैं. इस लिए आग तथा चोट से बचाव इन के रखरखाव के लिए लाज़िमी होता है. इन दोनों के लिए स्थानीय उपचार के अलावा रोग का नियमित इलाज ज़रूरी होता है. दो प्रकार के गठिया रोग यानी र्‌यूमैट्वाइड आर्थ्राइटिस एवं गाउट पांव के अंगूठों तथा इन के जोड़ों पर असर डाल कर इन में ख़राबी पैदा करते हैं. ये अकसर उभर कर आप के और आप के पैरों के लिए बेहद तकलीफ़ का कारण बनते हैं. इन में विशेषज्ञ की राय से इलाज करना बेहतर और ज़रूरी होता है.

अगर चलते समय आप की एड़ी दर्द करती हो और नमक के गरम पानी से सेंकने या सामान्य दर्दनाशक दवाइयों के सेवन तथा उचित प्रकार के जूते पहनने से भी कोई लाभ नहीं होता तो विकलांग विशेषज्ञ से सलाह मशविरा करें. आप को कैल्केनियल स्पर (एड़ी की हड्डी का स्पर) हो सकता है और शल्यक्रिया करनी पड़ सकती है.

—डा. रामकिशोर द्विवेदी

नाख़ून कभी कभार परेशानी का सबब हो सकता है. अधिकतर मामलों में आप नाख़ून को बहुत छोटा न काट कर तथा उसे आर पार सीधा काट कर इस समस्या से बच सकते हैं. कभी कभी यह हालत फिर से पैदा हो सकती है, क्योंकि नाख़ून के नीचे की हड्डी का उभार उसे ठेल कर इस की वक्रता अथवा गोलाई को बहुत ज़्यादा कर देता है और यह दोनों तरफ़ के मुलायम ऊतक में धंस जाता है. तब शल्यक्रिया ही एकमात्र उपाय रह जाती है.

असंतुलन का दर्द

पैर के गोलक (प्रपद गोलक) में दर्द, जिसे मैटाटार्सैल्जिया अथवा मेटाटार्सैल्जिया कहते हैं, अमूमन देर तक खड़े रहने के कारण बढ़े हुए अनुचित भार वहन से संबंधित होता है. विकलांग विशेषज्ञ या पैर रोग विशेषज्ञ इस तरह के असंतुलन को ठीक कर सकता है तथा जूतों में पैड डाल कर आरामदेह बना सकता है. ये पैड एड़ी के दर्द में भी कारगर साबित होते हैं. एड़ी का दर्द धावकों और चपटे पांव वाले लोगों में सामान्य होता है.

ठोकर लग जाने पर पैर के अंगूठे में दर्द होने का मतलब यह भी हो सकता है कि अंगूठे की हड्डी टूट गई हो. पैर को ऊंचा कर बर्फ़ के टकोरे दें ताकि सूजन कम हो जाए. यदि वह बदशक्ल हो जाए या काला या नीला दिखाई दे

तो उस का एक्सरे करवाएं. अगर अंगूठे की हड्डी टूट गई हो तो साथ की उंगली का इस्तेमाल स्प्लिंट के रूप में किया जाए. हथौड़ा-नुमा अंगूठा या उंगली ऊंची पदतल चाप (हाई आर्च) के कारण हो सकता है. पैरों की ऐसी बनावट में अंगूठे सामान्य से अधिक नीचे की तरफ़ झुके रहते हैं और ऊंची एड़ी के जूते इस झुकाव को और अधिक बल देते हैं. इस की वजह से पंजे को नियंत्रित करने वाली कंडराओं में एक तरह का असंतुलन पैदा होता है. आख़िर वाला जोड़ नीचे को झुक जाता है तथा पांव के पास वाला जोड़ ऊपर को उठ जाता है, अंगूठा टेढ़ा मेढ़ा हो जाता है. इस के ऊपर पहले फफोला, उस के बाद कैलस तथा उस के बाद गट्टा बन जाएगा. आप उन पर एडहेसिव स्ट्रिप लगा सकते हैं, थोड़े ढीले जूते पहन सकते हैं या फिर चौड़े अंगूठे या उंगलियों को शल्यक्रिया द्वारा ठीक करवा सकते हैं. कंडराओं को संतुलन में लाने के लिए उन्हें शल्यक्रिया द्वारा काटा छांटा जाता है. अकसर जोड़ों में से कोई हड्डी काट ली जाती है ताकि पंजा सीधा रह सके.

अंगूठे की सूजन

कुछ लोगों का अंगूठा सूज जाता है. नोकदार जूतों के दबाव से वह सूजन और भी बढ़ जाती है. अंगूठे के जोड़ को घेरने वाली बर्सा नामक स्नेहपुटी तब बतौर सुरक्षा के बढ़नी शुरू हो जाती है, हड्डी भी बढ़ने लगती है और कुछ साल बाद आप के अंगूठे में चिरशोथ हो जाता है.

यदि बचपन में आप के पैर के जोड़ कदाचित ढीले थे और आप के अंगूठे तथा उस के पीछे की हड्डियों का रुख़ भीतर की तरफ़ यानी कि दूसरे पांव की तरफ़ था तो समझिए कि आप को इस तरह की सूजन होने का ख़ास ख़तरा है. नुकीले जूते पहनने के कारण महिलाओं के अंगूठे में ऐसी सूजन होने का ज्यादा डर रहता है, लेकिन कई पांव विशेषज्ञों का कहना है कि यही काम अब काउबाय बूट पुरुषों के साथ कर रहे हैं.

अंगूठे की सूजन, हथौड़ानुमा अंगूठों तथा संकुचित कंडराओं जैसी अन्य समस्याओं का एक मात्र इलाज शल्यक्रिया है. लेकिन यह शल्यक्रिया किसे करनी चाहिए? इसे करने के अधिकारी हैं पैर रोग विशेषज्ञ. इसके अधिकारी विकलांग विशेषज्ञ भी हैं.

अंगूठे की सूजन की शल्यक्रिया को ही लें. इस में अकसर कंडराओं, जोड़ के संपुट (कैप्सूल) तथा उसे नियंत्रित करने वाली अस्थिरज्जुओं का संमजन करना तथा उन के संतुलन को ठीक ठीक बनाए रखना होता है. अधिकतर विकलांग विशेषज्ञों का कहना है कि यह बहुत ही जटिल तथा नाज़ुक प्रक्रिया है जिस में शल्यक्रिया की ज़रूरत पड़ती है. अंगूठे की सूजन के अधिकांश मरीज़ों को औसतन पांच दिन अस्पताल में रखा जाता है.

फिर भी बहुत से पैर रोग विशेषज्ञ इस के लिए अपने कार्यालय में ही की जाने वाली हलकी फुलकी शल्यक्रिया के हिमायती हैं. सूजन के उपचार के लिए वे स्थान विशेष को संज्ञारहित कर के छोटा सा चीरा लगाते हैं और इस के बाद छोटे बरमों का इस्तेमाल कर फ़ालतू हड्डी बाहर निकाल देते हैं तथा हड्डियों को तोड़ कर पांव की हड्डियों को सही शक्ल देते हैं. यह शल्यक्रिया कष्टकर नहीं होती. रोगी आपरेशन के बाद चल कर घर जाते है तथा कुछ रोज बाद काम पर जाने लगते हैं. दोनों ही तरह की शल्यक्रियाओं में हड्डियां भरने में छः से आठ हफ़्ते का समय लगता है.

कुछ डाक्टर बीच का रास्ता अपनाते हैं. वे पांवों की शल्यक्रिया करते हुए भी यह कहते पाए जाते हैं कि कभी कभी क्लिनिक में स्थानीय

संज्ञाहरण के अधीन मरीज़ पर लंबा चौड़ा आपरेशन करने के बजाय अस्पताल में सामान्य संज्ञाहरण (जनरल एनेस्थेसिया) के अधीन उपचार करना ज्यादा बेहतर होता है.

पैर का आपरेशन कराने से पहले यह जरूर देख लें कि आप का डाक्टर पैर रोगों का विशेषज्ञ है या नहीं. अगर संदेह हो तो दूसरे डाक्टर से सलाह मशवरा करें.

सही जूते का चुनाव

याद रखें, अच्छा जूता कुछ समस्याओं की पहले से ही रोकथाम कर सकता है. ऐसी बात स्पोर्ट्स के जूतों में विशेष कर हो सकती है. जौगिंग अर्थात मंद या तीव्र गति की दौड़ में भाग लेने से पहले अपने पैरों की जांच खेल कूद संबंधी आयुर्विज्ञान के विशेषज्ञ से करवा लें. जब दौड़ के लिए जूतों का चुनाव करें तो क़ीमती देख कर ही जूता बढ़िया न समझ लें. देखें कि जूते के पतावे नरम व गदेले है या नहीं. यह भी देख लें कि जूते की एड़ियां ऊंची न हो. साथ ही इतनी लंबी हों कि तलवों को सहारा दे सकें. उन पर आप की एड़ियां आराम से टिक सकेंगी. एड़ियां सीधी होनी चाहिए और तला लचकदार होना चाहिए. ऐसे जूते शहरी सड़कों के लिए सब से अच्छे होते हैं.

चोट से बचने का अभ्यास करें. दौड़ना कठिन काम है. यदि दौड़ते समय आप के पैर में चोट लग जाए तो उस हालत में दौड़ना जारी न रखें क्योंकि ऐसा करने से मामूली चोट भी बड़ी चोट में बदल सकती है. चोट पर बर्फ़ की थैली से बीस मिनट छोड़ कर बीस बीस मिनट के लिए टकोर दें. साथ ही एलास्टिक की पट्टी बांधें ताकि उस के भिंचाव से सूजन को बढ़ने से रोका जा सके. २४ से ४८ घंटे तक चोट वाले हिस्से को ज़मीन पर न लगने दें. इस के बाद चोट को सेंकें.

चलने फिरने या दौड़ने के अलावा सुबह से शाम तक आप के पैरों को बहुत बोझ उठाना पड़ता है, इस लिए कसरत का चुनाव सोच समझ कर करें. अपने आप को चुस्त दुरुस्त रखने के लिए न्यू यार्क के एक क्रीड़ा औषध विशेषज्ञ का कहना है, "मैं तैरता हूं. यह लाजवाब कसरत है."

ताज़ातरीन

सुपर बाज़ार में बड़ी बी को अंडों के डब्बों पर पड़ी तारीख़ बड़े ध्यान से पढ़ते पाया. आख़िर नहीं पढ़ा गया तो उन्हों ने पास के क्लर्क से मदद मांगी. "माता जी १७ अप्रैल की मोहर है," उस ने बताया. "मतलब ये कि डब्बा आज ही आया है."

"वह तो ठीक है," वह बोली, "मगर मुर्ग़ी ने कब दिए."

—शेरी

चला चली

हम मकान बदल रहे थे. पड़ोस की दो किशोरियां मदद को आ गईं कि इन का सामान पेटियों में भरवा दें. सारा सामान बाहर खड़ी हमारी मिनी कार और स्टेशन वैगन में लदना था, वैगन भर गई तो मैं उन लड़कियों के साथ पेटियां उठाए मिनी कार के पास पहुंचा और कहा,. "मेरा खयाल है, अब इसे भी लाद दें."

क्षण भर को दोनों लड़कियां आंखें फाड़ मुझे घूरती रहीं, फिर उन में से एक बोली, " वो तो ठीक है, पर इसे बांधेंगे, किस चीज़ में।"

—जे जे ज़ेड

कलात्मक क़लमकारी

सुलेखकों ने अरबी लिपि को संसार की सुंदरतम लिपि बना दिया

ईरान में १७८० के तबरेज़ भूकंप के बाद सहायता कार्य करने वालों ने मलबा खोदते खोदते एक तहख़ाने में अजीब दृश्य देखा. वहां फ़र्श पर बैठा एक आदमी मोमबत्ती की रोशनी में कुछ लिखने में तल्लीन था. कहते हैं, जब उस से कहा गया कि सारा शहर लगभग मटियामेट हो चुका है, हज़ारों मर चुके हैं और बच निकलने को अब गिनती की घड़ियां ही रह गई हैं तो उस ने गर्वपूर्वक कागज का एक टुकड़ा उठाया, जिस पर एक ख़ूबसूरत अक्षर अंकित था. बोला, "हज़ार कोशिशों के बाद तो मुझे कामयाबी मिली है. इस क़दर बेकसर

१७ वीं शताब्दी के एक ईरानी मक़बरे के दरवाज़े पर लगे जालीदार फलक की इबारत में जन्नत के सुखों का वर्णन करते हुए कहा गया है : "बहिश्ती सेजों पर टेक लगाए बंदों को न (सूरज का) ताप सताएगा, न पाला."

—द आर्ट इंस्टीट्यूट आफ शिकागो

१६ वीं शताब्दी की इस मसजिदी झारी पर तुर्की के सुन्नी मुसलमानों ने "अल्लाह, मुहम्मद" और इसलाम के पहले चार खलीफ़ाओं के नाम लिखे थे.

—द वाल्टर्स आर्ट गैलरी, बाल्टीमोर (अमरीका)

९ वीं-१० वीं शताब्दी की चीनी मिट्टी की इस ईरानी तश्तरी पर अलकूफ़ा शैली में लिखा है : "(अल्लाह से किए) क़रार में जिस का अक़ीदा है, वही खरा है..."

हरफ़ पूरे शहर से कहीं ज़्यादा क़ीमती है."

यह दंतकथा ही होगी, पर इस से समर्पित क़ातिबों की उस निष्ठा की झलक मिल जाती है जो अरबी लिपि के सौंदर्य को सर्वांग संवारने और उजागर करने पर कटिबद्ध थी. क़ुरान के ११४ सूराह (अध्यायों) में समाए ख़ुदाई संदेश को क़लमबंद करने के कारण इस लिपि को ही नहीं इसे अपनाने वालों को भी ग़ैरमामूली ताक़त मिल गई. कालांतर में यह इसलामी सभ्यता की कलात्मक अभिव्यक्ति का प्रमुख माध्यम बनी.

आधुनिक विद्वानों की धारणा है कि अरबी लिपि की उत्पत्ति प्राचीन नबाटिया (वर्तमान पश्चिम जोर्डन) की आरमियाई वर्णमाला से हुई है. यह भाषा ईसवी युग के प्रारंभ में प्रचलित

डेविड कलेक्शन, कोपेनहेगेन, डेनमार्क

हाथीदांत का यह फलक शायद १४ वीं शताब्दी के किसी मिस्री रईस की मंजूषा का एक हिस्सा है, जिस पर सुलुस शैली में उकेरा हुआ है : "अंधेरे, उजाले, हैं ज़िंदगी के मज़े."

थी. इस में दीर्घ स्वरों सहित २८ वर्ण हैं (ह्रस्व स्वर नहीं हैं). दाएं से बाएं लिखी जाने वाली यह लिपि नीचे से ऊपर खिंचने वाले खड़े, ऊपर से नीचे खिंचने वाले गोल गोल और संतुलित रेखाओं वाले पड़े अक्षरों की निर्बाध सरिता सी होती है. शब्द और वर्ण घुंडियों में संजोए भी जा सकते हैं और लक़ीरोलक़ीर फैलाए भी; वे नुकीले हो सकते हैं और गोल भी; छोटे भी और बड़े भी.

आम तौर पर इसलाम मतावलंबियों की ऐसी मान्यता रही है कि अक्षरों का जादुई असर भी होता है, यद्यपि पढ़े लिखे मुसलमान ऐसा नहीं समझते. ख़ास ख़ास वर्ण संयोग ख़ास ख़ास मुसीबतों से बचने के तावीज़ माने जाते थे.

द वाल्टर्स आर्ट गैलरी, बाल्टीमोर (अमरीका)

उदाहरण के लिए 'पानी' के प्रतीक अक्षर बुख़ार कम या ख़त्म कर सकते है, जबकि 'आग' के प्रतीक अक्षर युद्ध या संघर्ष की तीव्रता बढ़ा देते हैं.

भाषा में ज्ञान को संजोने और विचारों को देशकालातीत बनाने की शक्ति होने के कारण लिखाई के साधनों को भी महिमामंडित किया गया.

स्याही को अमरत्व प्रदान करने वाली जीवन सुधा और मनुष्य को अल्लाह के हाथ की लेखनी कहा गया. अधिकांश कातिब सरकंडे की क़लम से लिखते थें. स्याही आम तौर पर काली या गहरी भूरी होती थी. रुपहली और सुनहरी स्याहियों की भी अनुमति थी.

सजावटी शीर्षकों में लाल, सफ़ेद, नीली और पीली स्याहियां भी ख़ूब इस्तेमाल की जाती थी.

कितावत किताबों और परचों तक ही सीमित नहीं थी. बहुत से कातिब पत्थरों, ईंटों, चीनी मिट्टी की वस्तुओं और इमारती गचकारी में पवित्र लेख उकेरने के माहिर थे. किसी भी ठोस चीज़ पर लिखाई की जा सकती थी. यूं सिक्के, रक़ाबियों और अन्य कीमती चीज़ों की सतहें लिखावट की तख़्तियां बनीं.

किताबत का अपना ही एक शिष्टाचार था. शैली का चुनाव लिखवाने वाले की पसंद और क़ातिब की क़ाबलियत पर ही नहीं, इबारत के मिज़ाज और मक़सद पर भी निर्भर करता था. इसलाम के प्रारंभ काल में क़ुरान लेखन के लिए नुकीली अलकूफ़ा शैली का प्रयोग आकस्मिक नहीं था. मंद गति और शालीन, लिखने में कठिन और पढ़ने के लिए विशेष पटुता की अपेक्षा करने वाली अलकूफ़ा शैली से अनश्वरता, दिव्य वचनों की पावनता तथा इसलामी
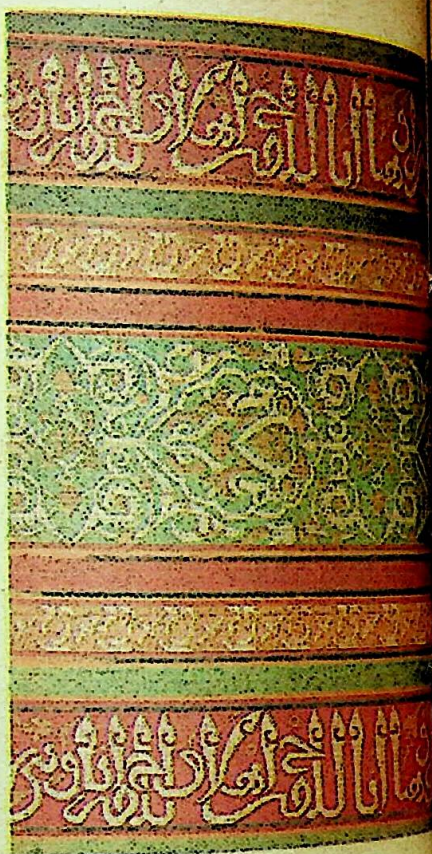
पाषाण स्मारकों की रूपगत परिभाषा झलकती थी.

क़ुरान अत्यंत सुपाठ्य एवं लंबूतरी नस्ख़ी शैली में भी लिखे गए थे, लेकिन सूराहों के शीर्षक व कुतुबे लहीम शहीम पर दुरूह सुलुस शैली में लिखे गए. इस के साथ साथ बहुत सी दूसरी शैलियां भी पनपीं.

अरबी लिपि को "ज़हन के ख़ालिस सोने का हाथों से गढ़ा गहना कहा गया है." निस्संदेह ये सुंदर कृतियां इसलाम की ख़ासुलख़ास व दुर्लभ सौगात हैं.

१४ वीं शताब्दी के इस स्पेनी रेशम में एक अरबी कविता बुनी हुई है: "मौजोमस्ती है मेरा मंज़िले मकसूद — ख़ुशआमदीद! जो भी थामे मेरा पहलू देखे नज़ारा महबूब!"

—द टेक्सटाइल म्यूज़ियम, वाशिंगटन

१३ वीं-१४ वीं शताब्दी की पीतल की यह मिस्री चिलमची वज़ू के लिए थी. इस पर चांदी की कामदार नक्काशी की गई है. परंपरागत अलंकरण के साथ साथ इस पर ऐसे आध्यात्मिक आलेख भी उकेरे गए हैं—"परम सत्ता, मालिक, विजेता, धर्मयोद्धा, प्रतिरक्षक, लोकरक्षक."

द सेंट लुई आर्ट म्यूज़ियम, सेंट लुई (अमरीका)

प्लेन की सादगी या फ़ैंसीज़ की उड़ान

एस. कुमार्स का नाम उत्तमता की पहचान
एस. कुमार्स वस्त्रों का सजीला संसार हम संजो लाये हैं आपके लिए.
एस. कुमार्स प्लेन सूटिंग्स अर्थात इन्द्रधनुषी रंगों, टेक्सचर्स, वीव्स् एवं शानदार फ़िनिश में विविध एवं विस्तृत चुनाव।
एस. कुमार्स फ़ैंसीज़-विभिन्न यार्न एवं तकनीकों द्वारा निर्मित कल्पना के साकार सुंदर स्वरूप... फ़ैंसी वीव्स्, फ़ैंसी डिज़ाइन और फ़ैंसी प्रभाव।
शानदार चुनाव एवं आपके चुकाये मूल्यों का पूर्ण प्रतिदान... एस. कुमार्स फ़ैंसीज़। हर स्तर पर कड़ी जांच परख एवं किफ़ायत द्वारा एस.कुमार्स दिलाते हैं उत्कृष्टतम क्वालिटी-किफ़ायती दाम।
तभी तो हमारे डीलरों से कपड़ा खरीदते वक्त आप पाते हैं प्रत्येक मीटर में क्वालिटी एवं वाजिब दाम।
'टेरीन' एवं 'पालिएक्रॉन' सूटिंग, शर्टिंग एवं साड़ियाँ.
एस. कुमार्स
'निरंजन'
९९, मरीन ड्राइव, बम्बई ४०० ००२.
ऊंची से ऊंची क्वालिटी –
नीचे से नीचे दाम
Sista's SK-155-A/81 HIN
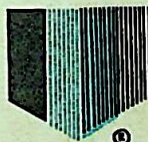
मुफ़्त
यह आकर्षक टेलीफ़ोन बुक उपहार में पाइये...

रीगन कहते हैं...
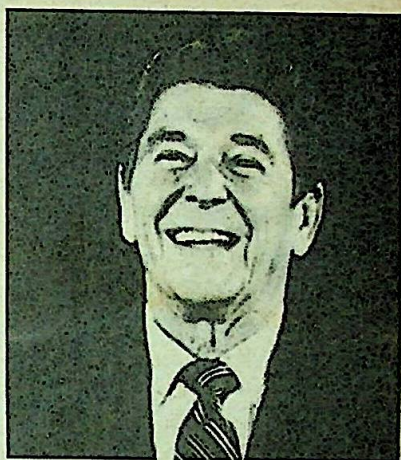
हाल ही में एक दिन तीसरे पहर व्हाइट हाउस के ओवल आफ़िस में बैठे अमरीका के प्रेज़िडेंट ने रीडर्स डाइजेस्ट के अंतरराष्ट्रीय संपादकों के साथ महत्वपूर्ण सामयिक समस्याओं पर विचार विमर्श किया

प्रश्न : मिस्टर प्रेज़िडेंट, दुनिया भर में ऐसा ख़याल बनता जा रहा है कि आप का प्रशासन एक ऐसी सुस्पष्ट विदेश नीति निर्धारित करने में असफल रहा है जिसे लोग समझ सकें और जिस का समर्थन कर सकें, इस संबंध में आप का क्या कहना है ?

उत्तर : मैं मानता हूं कि इस देश के प्रेस का रुख़ आलोचनात्मक है. हमारे अखबार वाले समझते हैं कि जब तक अपने भाषणों में यह न कहा जाए कि 'यह हमारी विदेश नीति है,' तब तक विदेश नीति नहीं होती. मेरा हमेशा से विश्वास रहा है कि बहुत से कूट-नीतिक कार्य चुपचाप होने चाहिए. कई बार उन के बारे में मुख पृष्ठ पर सूचना देने से नुकसान होता है. मेरा विश्वास है कि हमारे पास एक सुस्पष्ट विदेश नीति है और अब लोगों को लग रहा है कि वह काम भी कर रही है.

इस नीति का पहला तत्व तो हमारा आर्थिक कार्यक्रम है. सब से पहले हमें अपनी काम करने की क्षमता को फिर से स्थापित करना चाहिए. उसी से जुड़ी है हमारी प्रतिरक्षा नीति. मेरा ख़याल है कि पिछले दस पंदरह वर्षों में सोवियत संघ के साथ निरस्त्रीकरण के संबंध में जब भी कोई समझौता करने की कोशिश की गई, उन्हों ने किसी तरह की रियायत देने की जरूरत महसूस नहीं की क्योंकि हम एकतरफ़ा निरस्त्रीकरण कर ही रहे थे.

सामरिक महत्व के आयुधों और आणविक

हथियारों में कमी लाने के लिए मै भी दूसरों की तरह दृढ़ प्रतिज्ञ हूं. लेकिन अगर कोई हमें युद्ध का भय दिखाता है तो हमारे लिए भी यह ज़रूरी हो जाता है कि हम उस से बढ़ कर युद्ध का हौआ दिखाएं. आणविक युद्ध से बचने के लिए या आणविक हथियारों के बूते पर दिए गए अल्टीमेटम से बचने के लिए ज़रूरी हो जाता है कि आप के पास भी एक ऐसी जवाबी धमकी हो जो दूसरे पक्ष को सोचने पर मजबूर कर दे. हम ने ख़तरनाक तरीके से एक ऐसे असंतुलन को बढ़ावा दिया है जिस में कोई भी 'समर्पण करो या मरो' वाले अल्टीमेटम की संभावना देख सकता है. यही कारण है, मैं सोचता हूं कि जैसे जैसे हम अपने प्रतिरक्षात्मक इरादे ज़ाहिर करेंगे, उतनी ही इस बात की संभावना बढ़ेगी कि सोवियत संघ अपनी इच्छा से निरस्त्रीकरण कार्यक्रम में हमारे साथ आए.

प्रश्न : मि. प्रेज़िडेंट, आप का सुझाव है कि सोवियत संघ अपने एस एस-२०, एस एस-५ और एस एस-४ प्रक्षेपास्त्रों को हटा ले. बदले में अमरीका यूरोप में मीडियम रेंज के प्रक्षेपास्त्रों के विस्तार की योजना रद्द कर देगा. आलोचकों, ख़ास तौर पर शांतिवादी आंदोलन के लोगों का कहना है कि यह आप की ओर से प्रचार मात्र है. उन का दावा है कि अमरीका अपने काग़ज़ी प्रक्षेपास्त्रों के बदले में चाहता है कि सोवियत संघ अपने असली प्रक्षेपास्त्र हटा ले. आप का क्या विचार है?

उत्तर : और चारा क्या है? क्या सारे यूरोप को प्रक्षेपास्त्रों के निशाने पर रख कर चुप हो जाएं? क्या उन प्रक्षेपास्त्रों से सारे पश्चिमी यूरोप को नष्ट हो जाने दें? जिसे वे लोग काग़ज़ी प्रक्षेपास्त्र कह रहे हैं, वे सिर्फ़ काग़ज़ी नहीं हैं. अब तो हम उन का निर्माण करने वाले है और दो साल के अंदर उन्हें स्थापित किया जा सकता है. इस लिए हम सिर्फ काग़ज़ी प्रक्षेपास्त्रों का सौदा नहीं कर रहे हैं. हम ने सोवियत संघ से कहा है कि अगर आप अपने प्रक्षेपास्त्रों को रखने पर ज़ोर देंगे तो हम भी वह करेंगे जिस से सोवियत संघ को उतना ही संकट होगा जितना संकट आपसे पश्चिमी यूरोप को है. अगर वे अपने प्रक्षेपास्त्रों को हटाने के लिए तैयार हों तो हम भी अपने प्रक्षेपास्त्र स्थापित नहीं करेंगे. और इस तरह खतरा टल जाएगा.

प्रश्न : अमरीका के पुराने मित्रों को लग रहा है कि नाटो गठबंधन टूट रहा है. उस संबंध को फिर से मज़बूत बनाने के लिए क्या किया जा सकता है? और क्या ऐसा खतरा है कि यूरोपीय असमंजस, शांति आंदोलन और अमरीका विरोधी प्रदर्शनों के कारण पैदा हुई खीझ से अमरीका यूरोप को उस के हाल पर छोड़ दे?

उत्तर : मै नहीं समझता कि अमरीका कभी ऐसा करेगा. इस छोटे होते जाते संसार में वह गठबंधन हमारे लिए भी उतना ही महत्वपूर्ण है जितना उन के लिए है.

मेरा विचार है कि हम ने नाटो गठबंधन को मज़बूत किया है. हमारे हाल के निरस्त्रीकरण के प्रस्ताव से यूरोप की मौजूदा सरकारों को तटस्थतावाद का जो खतरा था, वह टल गया है. हम जो कुछ कर रहे हैं, उस की उन्हों ने तारीफ़ की है और कहा है कि इस से उन के हाथ मजबूत हुए है. अब उन्हें पहले की तरह 'शांति आंदोलन' से खतरा नहीं है.

प्रश्न : गत अक्तूबर में स्वीडिश सागर में अणु आयुधों से लैस सोवियत ख़ुफ़िया पन-

दुब्बी के अनधिकार प्रवेश की चेष्टा को आप कितना महत्व देते हैं?

उत्तर : घटना स्वयं बोलती है. दो हजार साल से भी पहले एथेंस के हाट में डेमोस्थनीज़ ने कहा था, "संतुलित आदमी किसी की कथनी से नहीं करनी से परखता है कि कौन उस से शांति और कौन युद्ध चाहता है."

प्रश्न : मिस्टर प्रेजिडेंट, सोवियत नेताओं का दुनिया में जो आचरण है, उस के आधार पर किसी सहमति पर पहुंचने की धारणा की क्या अब भी आप वकालत करते है? क्या इस बात में आप को विसंगति नहीं दिखाई पड़ती कि एक ओर तो आप सोवियत अतिक्रमण और सैनिक शक्ति में वृद्धि पर चेतावनी देते है और दूसरी ओर सोवियत संघ को भारी मात्रा में अनाज बेचते है?

उत्तर : हां, मैं इसी धारणा में आस्था रखता हूं. सोवियत संघ के साथ हमारा जो भी व्यापारिक या राजनीतिक संबंध है, वह उन के विश्वव्यापी आचरण पर ही निर्भर करता है.

जहां तक अन्न भेजने पर रोक लगाने का सवाल है, उस से हमारे किसानों को जितना नुकसान होगा, उतना सोवियत संघ को नहीं. हमारे अन्न न भेजने से वह देश भूखा नहीं मर जाएगा. हम उस पर कोई विशेष दबाव भी नहीं डाल पाएंगे.

प्रश्न : पोलैंड में हुई हाल की घटनाओं को देखते हुए क्या आप समझते है कि पूर्वी यूरोप और सोवियत संघ के बुनियादी संबंधों में अंतर आएगा?

उत्तर : बेशक, सोवियत संघ को इच्छा या अनिच्छा से अपनी विचारधारा में कुछ परिवर्तन करना ही पड़ेगा. हंगरी, रूमानिया और अब पोलैंड में सोवियत नेता वास्तव में दुविधा के कगार पर खड़े हैं. उन्हें चिंता है कि अगर यह स्वतंत्रता उन की अपनी प्रणाली से अधिक सफल हो गई तो उस समय क्या होगा. अगर उन्हों ने ताक़त के बल पर इसे रोकने की कोशिश की तो दुनिया की नज़र में वे कहां होंगे!

प्रश्न : मिस्टर प्रेजिडेंट, आप ने यह संकेत दे कर कि तीसरी दुनिया के राष्ट्र अपनी आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए व्यक्तिगत पहल, निजी उद्यम और व्यापार पर अधिक निर्भर करें, अमरीका की नीति में मुख्य परिवर्तन किया है. वस्तुतः विकासशील देशों—विशेषकर दक्षिण अमरीका को अपनी ग़रीबी और भ्रष्टाचार की समस्याओं से छुटकारा पाने के लिए मार्क्सवाद या समाजवाद की ओर जाने से कैसे रोका जाए?

उत्तर : हमें एक ऐसा कार्यक्रम बनाना चाहिए जिस के अंतर्गत हर देश की समस्याओं से निपटने के लिए सीधी सहायता के साथ साथ आर्थिक रूप से सक्षम होने के लिए उस की मदद की जाए, ताकि वह अपने लोगों का जीवन और बेहतर बना सके. दूसरे शब्दों में, हमें सामाजिक और आर्थिक असमानता समाप्त करने में ऐसे देशों की सहायता करनी चाहिए, ताकि वे आयातित क्रांति के लक्ष्य न बन सकें. हम विकासशील देशों को सुझाव देना चाहते हैं कि सरकार की अपनी एक सीमा होती है जब कि निजी उद्यम में विकास में सहायता देने के लिए अथाह शक्ति है. हमें एक भी ऐसी मार्क्सवादी व्यवस्था का उदाहरण दीजिए जिस ने ग़रीबी और दरिद्रता के अलावा और कुछ पैदा किया हो. दूसरी तरफ़ दक्षिण कोरिया, सिंगापुर, ताइवान, फ़ीलीपींस और हांग

कांग की तरफ़ देखिए जिन के जीवन निर्वाह का स्तर निजी उद्यम से हमारे जीवन स्तर तक पहुंच रहा है.

प्रश्न : मिस्टर प्रेज़िडेंट, आप का प्रशासन क्यूबा द्वारा निकारागुआ को आधार बना कर अफ्रीका में पलटन भेजना और मध्य अमरीका में क्रांति निर्यात करने का घोर आलोचक रहा है. अब यह बताइए, आप क्यूबा के बारे में क्या करना चाहते हैं?

उत्तर : कूटनीति की आवश्यकताओं को मद्देनज़र रखते हुए मैं इस प्रश्न का पूरा उत्तर नहीं दूंगा. लेकिन हम अपने दक्षिण अमरीकी मित्रों के साथ मिलजुल कर काम कर रहे हैं. क्यूबा से जो ख़तरा है, उस के प्रति जितने हम सावधान है, वे भी उतने ही सजग हैं. इस लिए इस समस्या से हम एकतरफ़ा नहीं जूझ रहे हैं.

मैं समझता हूं कि क्यूबा के साथ व्यापार प्रतिबंध लागू करने से काफ़ी मदद मिली है क्योंकि क्यूबा की आर्थिक स्थिति दयनीय हो चली है.

हमारा लक्ष्य यह होना चाहिए कि क्यूबा जल्द से जल्द यह समझ जाए कि सोवियत संघ से संबद्ध हो कर वह उस का पिछलग्गू मात्र रह गया है. उसे यह पता चलना चाहिए कि वह फिर अमरीकी परिवार का। सदस्य बन जाए तो पहले की तरह ख़ुशहाल हो जाएगा.

प्रश्न : जनवादी जनतंत्र चीन को हथियार बेचने का वादा कर अमरीका को क्या फ़ायदा हुआ है? क्या अमरीका ताइवान को भी हथियार बेचता रहेगा?

उत्तर : हम चीन को उसी दृष्टि से देखते हैं जिस दृष्टि से उन देशों को देखते हैं जो सोवियत संघ की तरह अमरीका विरोधी नहीं है. जिस प्रकार हम और देशों को उन के निवेदन पर विचार करते हुए शस्त्रास्त्र बेचने का निर्णय लेते हैं, उसी प्रकार हम जनवादी चीन को भी बेचने के लिए तैयार हैं. मेरा ख़याल है, इस के बिना उन्हें ऐसा लगेगा जैसे उन्हें परखा जा रहा हो.

जहां तक ताइवान का प्रश्न है, हम वहां के क़ानून, ताइवान संबंध अधिनियम, के अनुसार चलना चाहते हैं. उस कानून के अनुसार, पहले आप यह देखिए कि उन्हें शस्त्रास्त्रों की कितनी आवश्यकता है और फिर उन्हें बेचिए.

प्रश्न : मिस्टर प्रेज़िडेंट, इस बात पर प्रायः सभी सहमत हैं कि जब तक फ़िलिस्तीनियों की मातृभूमि का प्रश्न हल नहीं होगा, तब तक मध्य पूर्व में स्थायी शांति नहीं हो सकती. क्या आप ने यह तय कर रखा है कि जब तक फ़िलिस्तीन मुक्ति संगठन इज़राइल के अस्तित्व को नहीं स्वीकार कर लेगा, तब तक आप उस के साथ किसी प्रकार का विचार विमर्श नहीं करेंगे? मान लीजिए, फ़िलिस्तीन मुक्ति संगठन इज़राइल के अस्तित्व को स्वीकार कर लेता है तो क्या उस के बाद आप उसे मान्यता प्रदान कर देंगे?

उत्तर : जब वे इज़राल का अस्तित्व स्वीकार कर लेंगे, उस के बाद ही यह निर्णय किया जाएगा. मैं जानता हूं कि फ़िलिस्तीन मुक्ति संगठन ने इज़रायल को अमान्य कर एक ऐसी स्थिति बना ली है कि समझौता वार्ता के दौरान सौदेबाज़ी की जा सके.

मेरे विचार से वे ग़लत हैं. मेरी समझ में नहीं आता कि आप उस देश के साथ कैसे सौदेबाजी कर सकते हैं जिसके अस्तित्व को

आप मानते न हों और, संभव हो तो, उस का सर्वनाश भी चाहते हों.

मेरी समझ में यह सौदेबाजी का विषय नहीं है. मुझे आशा है कि धीरे धीरे हम नरम विचारधारा वाले अरब देशों को इस बात के लिए तैयार कर लेंगे कि वे इज़राइल का अस्तित्व स्वीकार कर लें.

प्रश्न : अफ़ग़ानिस्तान में जमी सोवियत सेना दिसंबर १९७९ के धावे के बाद तीसरी बार अफ़ग़ान स्वतंत्रता सैनिकों पर हमले की तैयारी कर रही है. अफ़ग़ानिस्तान की संचार प्रणाली, उस का व्यापार और उद्योग, ख़ास तौर पर प्राकृतिक गैस भंडार सोवियत क़ब्ज़े में है. क्या अफगानिस्तान को सोवियत संघ का अंग बनने से वास्तव में रोका जा सकता है?

उत्तर : हां, रोका जा सकता है. लाखों सोवियत सैनिकों की मौजूदगी के बावजूद अफ़ग़ानिस्तान को जीता नहीं जा सका. अर्थव्यवस्था के महत्वपूर्ण हिस्सों पर नियंत्रण के बावजूद सेना की शक्ति के बल पर एक चौथाई अफ़ग़ानिस्तान ही उन के क़ब्जे में है. मैं समझता हूं कि अब सोवियत संघ को अपने किए पर कुछ अफ़सोस हो रहा होगा. मेरा यह भी विचार है कि हम इसी तरह अपील करते रहे तो हो सकता है कि एक दिन सोवियत संघ धीरे धीरे वहां से अपनी सेना हटा ले और अफ़ग़ानिस्तान को फिर से एक स्वतंत्र तथा तटस्थ राष्ट्र के रूप में जीने की इजाज़त दे दे.

प्रश्न : मिस्टर प्रेज़िडेंट, बहुत से लोग अमरीका को एकाधिकारवादी शासनों का समर्थन करते पा रहे है. साम्यवाद विरोधी प्रतिबद्धता का मतलब यह नहीं है कि मानवीय अधिकारों की अवहेलना को नजर अंदाज़ कर दिया जाए ?

उत्तर : बिलकुल, लेकिन जब इन देशों में विकल्प एकाधिकारवाद से भी बुरा—साम्यवाद का सर्वसत्तावाद हो जो प्रायः क्यूबा और सोवियत संघ द्वारा बाहर से थोपा जाता है, तो ऐसी हालत में अगर हम उन के साथ मित्रता बनाए रखें तो उन्हें मानव अधिकारों की श्रेष्ठ धारणा की ओर अग्रसर करने का अधिक अवसर मिलता है. अगर हम मुंह मोड़ लेते हैं तो उन के पास सर्वसत्तावादी शासन का खतरा उठाने के अलावा और कोई चारा नहीं होगा.

प्रश्न : आज से एक साल पहले आप अमरीकी प्रशासन को अपने हाथ में लेने की तैयारी कर रहे थे. समय के साथ साथ क्या आप की राष्ट्रपतित्व की अवधारणा में परिवर्तन आया है ?

उत्तर : हां, मै वास्तविकता समझने लगा हूं. लेकिन उम्मीदें ऊची होते हुए भी मै निराश नहीं हुआ हूं.

पहले के राष्ट्रपतियों ने इस पद के अकेलेपन और इस की गुरुता के बारे में अकसर कहा है. उन्हों ने यह भी कहा है कि यह एक आदमी के बस का काम नहीं है. अब मैं ने अपनी आंखों देख लिया. लेकिन इस के साथ ही जिन विचारों पर आप की आस्था है, उन के लिए काम करने और उन में से कुछ को कार्य रूप में परिणत करने का संतोष भी मिला है, हम ने करों में इतनी कटौती की है जितनी पहले कभी नहीं हुई. ख़र्चे आधे कर दिए है. बहुत से कायदे कानून छोड़ दिए है और सैन्य शक्ति के व्यापक विस्तार और आधुनिकीकरण का प्रस्ताव रखा है.

हम ने ये काम पूरे किए हैं, लेकिन हम ने इस से भी ज़्यादा कुछ कर दिखाया है. हम ने यह सिद्ध किया है कि अगर जनता साथ हो तो राष्ट्रपति और कांग्रेस मिल कर राष्ट्रीय नीतियों में काफ़ी परिवर्तन ला सकते है. अमरीकी जनता मुद्रास्फीति में कमी चाहती थीं. वह ऐसी सरकार चाहती थी जो उन के लिए ज्यादा बोझ न बने. इस के अलावा वह करों में कटौती और सुदृढ़ प्रतिरक्षा चाहती थी. पिछले वर्ष उन्हों ने पाया कि सरकार उन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए सचमुच काम कर सकती है जो उन की वास्तविक आवश्यकताओं और इच्छाओं का प्रतिनिधित्व करते हैं.

राष्ट्रपति पद को ले कर यही मेरी अवधारणा थी—और इस दृष्टि से एक वर्ष में मेरे विचारों में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है.

प्रश्नः कनाडा, अमरीका और मैक्सिको संबंधी उत्तर अमरीकी संधि के बारे में मैक्सिको सिटी और ओटावा में आप के विचारों के प्रति जो नकारात्मक रुख़ अपनाया गया था, क्या उस में कोई परिवर्तन आया है? क्या अप्रवासी, जल साधन, विष वर्षा (एसिड रेन) और उत्तरी पाइप लाइन जैसी फूट डालने वाली समस्याओं के समाधान की ओर कोई प्रगति हुई है?

उत्तर : हां, प्रगति हुई है और हो रही है. हम मैक्सिको से उन कामगारों की समस्या पर भी संपर्क बनाए हुए हैं जो बिना काग़ज़ पत्र के मैक्सिको में दाख़िल हो गए हैं. हम उत्तरी पाइप लाइन और वातावरण प्रदूषण या तथाकथित विष वर्षा के ख़तरे के संदर्भ में कनाडा के साथ मिल कर काम कर रहे हैं और पूरी तरह से संपर्क बनाए हुए है. इस बीच मेरी प्रेज़िडेंट लोपेस पोरटिलो और प्रधान मंत्री त्रूदो के साथ कई मुलाकातें हुई हैं. इस लिए मेरा खयाल है कि उत्तर अमरीकी संधि ठीक निभ रही है.

प्रश्न : जापान का प्रतिरक्षात्मक निर्माण वहां के संविधान और प्रबल जनमत के कारण नियंत्रित कर दिया गया है. क्या आप के प्रशासन ने जापान को यह समझाना छोड़ दिया है कि वह अपनी प्रतिरक्षा पर ज्यादा खर्च करे और एशिया के प्रशांत क्षेत्र की सुरक्षा के लिए अपना ज्यादा सैनिक योगदान दे?

उत्तर : नहीं, हम ने बिलकुल समझाना नहीं छोड़ा है. हम सांविधानिक सीमाओं को स्वीकार करते हैं, हम यह भी मानते हैं कि कुछ राजनीतिक दबाव ऐसे होते हैं जिन का लिहाज़ हर सरकार को करना ही पड़ता है. लेकिन हमारा मुख्य ज़ोर इस बात पर था, और जापान उसे खूब समझता है कि अगर मौजूद तनावों के कारण हमारे प्रशांत बेड़े को हिंद महासागर में जाने की ज़रूरत पड़ी तो जापान को आकाश और समुद्र में अपनी सीमा के भीतर सोलह सौ किलोमीटर तक गश्त लगाने की ज़िम्मेदारी लेनी होगी. फिर जापान में हमारे सैनिक अड्डों को थोड़ा सा और वस्तुपरक समर्थन देने का भी प्रश्न है. दोनों मुद्दों पर हमारी प्रगति संतोषजनक हैं.

प्रश्न : मि. प्रेज़िडेंट, अमरीका और जापान के बीच के व्यापारिक संबंधों को बनाए रखने के लिए कौन कौन से क़दम उठाए जाने चाहिए? उदाहरणार्थ, अगर जापान अमरीका में बने माल के लिए अपना बाजार खोल दे तो क्या अमरीका भी जापानी कारों आदि के आयात पर किसी प्रकार की सीमा नहीं बांधेगा?

उत्तर : हम ने कारों के आयात पर कभी

प्रतिबंध नहीं लगाया. प्रधान मंत्री सुजुकी की अमरीका यात्रा से पूर्व मुझे लगा कि अगर हम उन्हें सावधान कर दें कि हमारे सामने एक ऐसा प्रस्ताव है जिस पर वर्तमान आर्थिक स्थिति के कारण प्रजिडेंट का 'वीटो' का इस्तेमाल करना अत्यंत कठिन होगा तो अच्छा रहेगा. हम उन्हें बता दें कि अमरीकी कार उद्योग को सुरक्षा प्रदान करने के लिए हम पर बराबर दबाव डाला जा रहा है. मैं सुरक्षा नीति पर विश्वास नहीं रखता क्योंकि यह दोमुंहा रास्ता है. अगर आप किसी देश का माल रोकेंगे तो वे अपने यहां आप के माल पर प्रतिबंध लगाएंगे. परिणाम होगा खुले बाज़ार का प्रतिबंध. मेरा ख़याल है कि सीमा शुल्कों के अतिरिक्त आयात संबंधी कुछ ऐसे अधि-नियम है जो जापानी माल की अपेक्षा हमारे माल को जापान जाने से ज़्यादा रोकते है. मैं सोचता हूं कि खुले दिल से इस समस्या के समाधान के लिए हमें विचार विमर्श करते रहना चाहिए.

प्रश्न : मि. प्रेज़िडेंट, बी-१ की प्रगति से संबंधित आप के निर्णय की इस आधार पर आलोचना की जा रही है कि यह जल्द ही पुराना पड़ जाएगा. कुछ आलोचकों का कहना है कि बी-१ बनाने और एम एक्स प्रक्षेपास्त्रों को ख़ूब मज़बूत गोदामों में रखने के बजाए अमरीका को अदृश्य बमवर्षकों, चलते फिरते प्रक्षेपास्त्रों और यहां तक कि किरण आयुधों के विकास पर ज़्यादा ख़र्च करना चाहिए. आप की प्रतिक्रिया ?

उत्तर : अदृश्य बमवर्षकों के सिलसिले में हम जितनी तेज़ी से अनुसंधान कर सकते हैं, कर रहे हैं. जैसा लोग सोच रहे हैं, यह अभी उतना तैयार नहीं हुआ है. फ़िलहाल हम एक ऐसे विमान पर निर्भर हैं जो उन के उड़ाकों से भी ज़्यादा पुराने है यानी बी-५२. बी-५२ और अदृश्य बमवर्षकों के बीच एक खाई है. आशावादी अनुमानों के आधार पर भी यह कहना मुश्किल है कि यह कब सामने आएगा.

हम जानते हैं कि बी-५२ उस खाई को नहीं भर सकता. बी-५२ इस आधार पर बनाया गया था कि वह विमान मारक तोपों की मार से ऊपर उड़ सके. लेकिन प्रक्षेपास्त्रों के कारण अब यह संभव नहीं है. बी-१ बी-५२ की तुलना में डेढ़ गुना ज़्यादा वज़न उठा सकता है. उस में एक राडार प्रतिरोधी सिलहुत की व्यवस्था है, जो इस खाई को भर देगा.

दयानतदार

घंटी होने पर हाज़िरी लगाते समय हमारे प्रोफ़ेसर साहब यह भली भांति जानते थे कि बहुत से लड़के गैरहाज़िर लड़कों की हाज़िरी बोल रहे हैं. इस बार उन्हों ने नाम पुकारा, 'रामधन !'' मगर कोई जवाब नहीं. वह कुछ क्षण रुके, और फिर पुकारा, ''रामधन !'' अब भी कोई उत्तर नहीं मिला तो उन्हों ने लड़कों पर आहत दृष्टि डाली और बोले, ''क्या इस बेचारे का एक भी दोस्त नहीं—''

—गंगा सिंह

हमारी कक्षा के दो लड़के बाक़ी से अच्छे अंक प्राप्त करने की ताक में मिल कर होम वर्क करते और दूसरे लड़कों को चिढ़ाते. एक बार कापियों के नंबर लगने लगे तो दोनों की कापियां शब्दशः एक थीं : कापियां वापस मिलीं तो उन में से केवल एक की कापी पर नंबर दिया गया था. दूसरे पर लिखा था : आपस में बांट लो.

—जे एफ़

जैक लेमन हीरो के रोल में आम आदमी

—मारिस ज़ोलोतोव

चरित्र से तादात्म्य स्थापित करने की कला इस लोकप्रिय फ़िल्म अभिनेता को यूं ही नहीं मिल गई
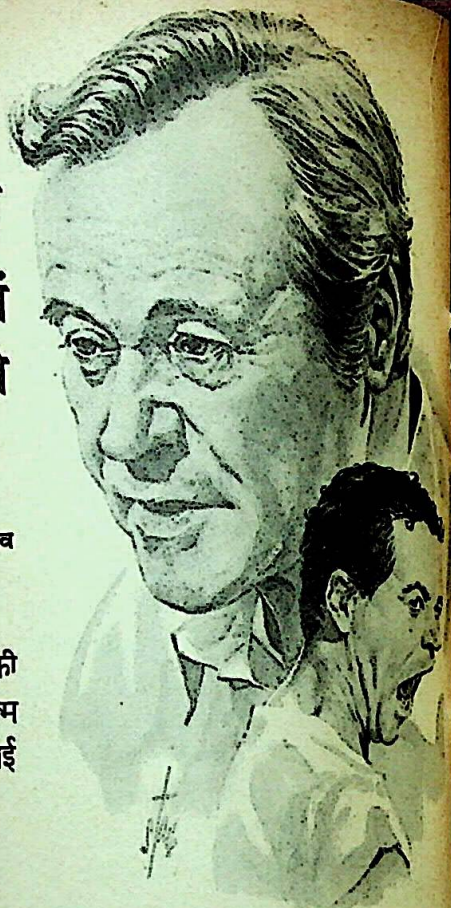
कैलिफोर्निया के एक होटल की तीसरी मंजिल की मुंडेर पर खड़ा विक्टर क्लूनी नीचे कूद कर जान देने पर आमादा है—क्योंकि . . . वजह ? उस की बीवी भाग गई है. भूरी नीली आंखों में बेशुमार दर्द है; नीचे देखता है तो कचहरी वाले चौराहे पर तमाशबीनों की भीड़ है. उस के होंठ कांप उठते हैं. हालांकि वह निश्चल खड़ा है, पर टांगें कांप रही हैं और बांहें फड़क रही हैं.

कुछ ही क्षण पहले, बिली वाइल्डर की नवीनतम फ़िल्म 'बड़ी बड़ी' के आत्महत्या पर कटिबद्ध, टेलीविज़न सेंसर कर्मचारी, क्लूनी की भूमिका निभाता जैक लेमन होटल के इस सेट की बनावटी मुंडेर पर घिसटता हुआ चढ़ा था. कलंदरी के ऐसे दृश्य आम तौर पर जैक का डबल टाम एंटनी करता है, लेकिन जैक बोला कि शूटिंग का यह पहला ही हफ्ता है और "अभी तक मैं क्लूनी को तलाश रहा हूं. अभी तक मैं उस के पात्र में उस तरह नहीं समा सका हूं जैसे हथेली दस्ताने में समा जाती है. लेकिन विक्टर क्लूनी अब नीचे कूदना चाहता है, इस लिए मुझे कूदना ही पड़ेगा."

उस की कमीज़ के नीचे, कमरबंद की तरह एक बेहद महीन, अदृश्यप्राय तार लिपटा हुआ

है. लापरवाही से कंधे उचकाता वह बताता है, "बिली कहता है, यह तार २,९०० किलो वज़न उठा सकता है." जैक नख से शिख तक भीग कर भी ७२ किलो का ही होता है. और इस वक्त वह पसीने से इतना भीगा हुआ है कि चाहो तो निचोड़ लो. वह ड्रा डरा लग रहा है. या फिर वह क्लूनी की आत्मा में समा गया है और यह डरा हुआ व्यक्ति विक्टर क्लूनी है.

कैमरा तैयार है. नीचे, चौराहे से वाइल्डर उसे कूदने का इशारा करता है. अचानक जैक हार जाता है, "बिली से कह दो, मैं नहीं कूद सकता."

वाकी टाकी में से वाइल्डर की चिढ़ी आवाज़ गूंजती है, "क्यों नहीं?"

"कैमरे से मुझे घबराहट हो रही है." और जैक इतनी ज़ोर से हंसा कि कगार से गिरते गिरते बचा. मुझे वह बताता है कि वाइल्डर उस के इस हथकंडे के चकमे में लाखों बार आ चुका है.

अगले ही क्षण जैक फिर क्लूनी बन जाता है. उदास आंखों वाले चेहरे और कांपती टांगों से भय और यंत्रणा छलकी पड़ रही है. वाइल्डर इशारे से बताता है कि शाट बढ़िया रहा. जैक की वह हमेशा हिमायत करता है. कहता है, "चैपलिन के बाद जैक ही ऐसा अभिनेता है जिस से दर्शक घनिष्ठता अनुभव करते हैं."

जादूगरी का वक्त. दर्शकों से घनिष्ठता यानी एकरूपता जैक लेमन की सफलता का रहस्य है. वह दर्शकों का चहेता है, चाहे वह डेज़ आफ वाइन ऐंड रोज़ेज़' जैसी क्लासिक का अभागा शराबी हो, चाहे डंके बजा देने वाली हास्य कृति 'सम लाइक इट हौट' में 'महिला' संगीतज्ञ दाफ़ने बना हो, और चाहे 'द फ्रंट पेज़' में जुमलेबाज़ रिपोर्टर बन कर आए. करुण से हास्यास्पद हो जाना उस के लिए अत्यंत सहज है. कैसी भी परिस्थिति हो, वह अहसास करा देगा कि आप भी उस के साथ उसी में फंसे हुए हैं. जैक लेमन का मतलब है हीरो के रोल में आम आदमी.

वह शर्ली मैकलेन और किम नोवाक जैसी दिग्गज तारिकाओं के नफ़ासत पसंद आशिक़ की भूमिका में हो, तो भी हमें पता होता है कि वह केले के छिलके पर फिसल जाएगा. हम में से जिस जिस को भी हालात ने उल्लू बनाया है, जैक के साथ अपनापन अनुभव करते हैं. 'द अपार्टमेंट' के उन्नतिशील नौजवान अफ़सर में हम कहीं कहीं अपना प्रतिबिंब देखते हैं—और उम्मीद करते हैं कि उस अफ़सर (जैक) की तरह हमें भी जब तब शराफ़त छोड़ने का मौक़ा मिलेगा.

अपनी मौलिकता के कारण जैक को सात एकेडमी पुरस्कारों के लिए नामज़द किया जा चुका है. उसे दोनों ही श्रेणियों के लिए पुरस्कार मिल चुका है: सर्वश्रेष्ठ सहायक अभिनेता ('मिस्टर राबर्ट्स') तथा सर्वश्रेष्ठ पुरुष अभिनेता ('सेव द टाइगर').

रोज़ शूटिंग के लिए तैयार होते वक्त वह बुदबुदाता है, "जादूगरी का वक्त आ गया." और कैमरा शुरू होते ही वह नन्ही एलिस की तरह आश्चर्य लोक की यात्रा पर निकल पड़ता है.

यह कमाल उस ने कैसे किया?

निर्दोष चरित्र चित्रण. जैक बड़ी विदग्धता से चरित्रों को आत्मसात करता है. उस की उसे क़रीब क़रीब ख़ब्त हो जाती है. मानो लेमन ने उस चरित्र पर नहीं, चरित्र ने ही लेमन पर क़ब्ज़ा कर लिया हो. अपनी हाल ही की उपलब्धि 'ट्रिब्यूट' में रक्त कैंसर से मरते स्काटी टैंपलटन

की भूमिका निभाते हुए उस का वज़न सिर्फ़ ६१ किलोग्राम रह गया था. उस ने डाइटिंग नहीं की थी; चरित्र के साथ तादात्म्य ने ही ऐसा कर दिया. 'डेज आफ वाइन एंड रोज़ेज़) की शूटिंग के दौरान वह नियमपूर्वक एलकोहलिक्स एनानिमस (गुमनाम शराबी) की मीटिंगें अटेंड करता था. और कभी कभी वह इतनी पीने लगता कि उस के मित्र उद्विग्न हो उठते. शरारतों भरी 'इर्मा ला डूस' के दौरान, जिस में उस ने एक वेश्या (शर्ली मैकलेन) के प्यार में डूबे पेरिसवासी सिपाही की भूमिका की थी, शर्ली और वह घंटों बाज़ारू औरतों से बातें करते रहते.

चरित्र की आत्मा में उतरने के लिए अपने स्टंट दृश्य भी ख़ुद ही करने के कारण जैक पर कई बार विपत्तियां भी टूटी हैं. 'हाउ टु मर्डर योर वाइफ' के एक दृश्य में यह फ़ायर एस्केप वाली सीढ़ी से उतर रहा था कि जंग खाई होने के कारण वह टूट गई; और वह भी लुढकने लगा. एक चिमनी की पनाह मिल जाने से वह रोड़ी डामर की सड़क पर गिर कर मरने से तो बच गया, पर छाती की पेशियों में इस क़दर खिंचाव आया कि साल भर तक वह बांह उठाने में भी कराह कराह उठता.

चरित्र चित्रण को निर्दोष बनाने की झोंक में एक बार जैक को दुःख के साथ साथ, अनजोहे, बेहद सद्प्रसिद्धि भी मिली. बात १९५७ की है. फ़िल्म थी 'फ़ायर डाउन बिलो', रीटा हेवर्थ और राबर्ट मिचम के साथ ट्रिनिडाड में आउटडोर शूटिंग के बाद स्टूडियो दृश्यों की शूटिंग के लिए यूनिट जब लंदन आया तो जैक का धूप से गहराया रंग हलका पड़ने लगा. उसे लगा कि मेकअप भी इसे छिपा नहीं पा रहा. अतः सन लैंप ख़रीद कर उस ने चेहरे को दो मिनट आंच देने की ठानी. मगर वह आंखें ढकना भूल गया और लैंप आन कर के झपकी खा गया. और पूरे बारह मिनट आंच में सोता रहा. पांच घंटे बाद उस की सूजी पलकों पर फफोले उभर आए.

उसी हाल में उसे तत्कालीन हालीवुड की अति विख्यात, उपद्रवी स्तंभ लेखिका लुएला पार्संस की जन्म दिन पार्टी में जाना पड़ा. वह बताता है, "मैं दर्द से बेहाल था. जब जाम टकराए जाने लगे तो जलन की मारी मेरी आंखें बहने लगीं. लूएला ने मेरे 'आंसू' देखे तो सब को सुनाती हुई बोली, 'जैक सब से प्यारा मर्दुआ है!'

लिफ़्ट में जन्म. बोस्टन के धनाढ्य परिवार का बेटा जान ऊलर लेमन (थर्ड) ८ फ़रवरी १९२५ को ऊपर जाती एक लिफ़्ट में जनमा था; क्योंकि उस की मां क्लब में ब्रिज खेलती इतनी रम गई थी कि वक़्त रहते अस्पताल नहीं पहुंच पाई. तभी से जैक सदा गतिशीत रहा है. वह चलता है तो लगता है दौड़ रहा है, खड़ा हो तो लगता है झूम रहा है. बैठे बैठे भी उस के हाथ पैर लगातार जारी रहते हैं.

जैक पीलिया लिए पैदा हुआ था. नर्स उसे देख कर बोली थी, "कितना प्यारा, पीला पीला लेमन (नीबू) जनमा है!" लेमन से जुड़ा यह पहला पहला कटु हास्य था.

स्कूल में लड़के जैक यू लेमन को नीबू कह कर चिढ़ाते थे. सैकड़ों बार मारपीट करने के बाद उस ने नियति को स्वीकार लिया. हाल ही में मिल्टन बर्ल के एक टीवी शो में वह एक ऐसी अलमारी में से निकलता दिखाया गया जिस में बर्ल ने एक खूबसूरत लड़की बैठा रखी थी. इस पर उस ने बर्ल से कहा, "तुम ने भीतर पीच * रखी थी,

* पीच के शाब्दिक अर्थ हैं: आड़ू. लेकिन कमनीय स्त्री को भी बोलचाल की अंगरेजी में पीच कहते हैं. इसी पर खिलवाड़ करते हुए कहा गया है: "तुम ने भीतर आड़ू रखा था, बाहर आया नींबू."

पर बाहर आया लेमन.

जैक के माता पिता सिनेमा नाटक के रसिया थे और उसे भी अकसर साथ ले जाते थे. नौ वर्ष की उम्र में उस ने ब्रिटेन के झक्की हंसोड़े रिचर्ड हेडन की १२ मिनट की एक लघु फ़िल्म देखी, जिस में हेडन तरह तरह के ख़र्राटे भरता था.

घर आ कर उस ने नामचीन फ़िल्म तथा रेडियो कलाकारों को ख़र्राटे लेता दिखाना शुरू कर दिया. उस की नक़लों का सब ने मज़ा लिया और ख़ूब हंसे.

जब भी वह जिमी ड्यूरेंट या फ्रेंड एलेन जैसे किसी सितारे की नक़ल उतारता तो बेहद आनंद पाता. बल्कि ख़ुद को वही महसूस करने लगता. उसे एक शग़ल के साथ साथ अकेलेपन से छुटकारा पाने का रास्ता भी मिल गया था. शर्मीला और बचपन से ही तरह तरह की बीमारियों के कारण वह संगी साथियों से कटता चला गया था.

हार्वर्ड विश्वविद्यालय पहुंचने के बाद से उस की सारी शक्ति नाटक क्लब तथा हेस्टी पुडिंग सोसाइटी की गतिविधियों में ही ख़र्च होने लगी. द्वितीय विश्व युद्ध के बाद सोसायटी के पहले शो में उस ने अभिनय करने के साथ साथ लेखन में भी सहयोग दिया. फिर वह न्यू यार्क चला गया.

न्यू यार्क में नाटकों और टीवी पर नियमित काम पाने से पहले उसे दारुण संघर्ष से गुज़रना पड़ा : जैसे तैसे कमरे, आधा पेट भोजन. टीवी नाटक 'लाइव' होते थे, जिन के रिहर्सलों के लिए नाम मात्र का ही समय होता था. सो जैक को तरह तरह के चरित्रों को तुरत फुरत आत्मसात करने के हुनर में महारत हासिल करनी पड़ी.

चौपट हनीमून. १९५३ में उसे कोलंबिया पिक्चर्स ने अनुबंधित किया, और १९५६ तक स्टूडियो में उस की तूती बोल उठी. एक प्रचार अधिकारी ने एक पत्रिका के लिए सुपरस्टार जैक लेमन और उस की पत्नी सिंथिया स्टोन के चित्र खिंचाने के लिए पिकनिक का आयोजन किया था. यहां जैक की मुलाक़ात हुई युवा अभिनेत्री फ़ीलिसिया फ़र से, और सिंथिया के साथ उस के दांपत्य पर बादल मंडरा उठे.

वह फ़ीलिसिया पर क़ुरबान हो गया. सिंथिया से तलाक़ के बाद फ़ीलिसिया के साथ उस का लंबा, उद्दाम प्रणय चला. १९६२ में, 'इर्मा ला डूसे' की शूटिंग के दौरान, दोनों ने पेरिस में शादी कर ली.

अपने चरित्रों का हर काम ख़ुद करने की खब्त ने उस का हनीमून चौपट कर दिया. उस का चरित्र सेन नदी में छलांग मारना है, इस लिए जैक ने छलांग मार दी— और मुंह भर कीटाणु निगल लिए. नतीजा? "मुझे ऐसी अमीबा-पेचिश हुई कि इस बीमारी की ईजाद से ले कर आज तक किसी को नहीं हुई होगी. इस से रोमांस को तो फांस ही पड़ गई. सो तो भला हो फ़ीलिसिया का—उस में चुहल का सलीक़ा है. हमने आफ़त हंस कर गुज़ार दी."

तभी मियां बीवी में हंसने, लड़ने और प्यार करने का सिलसिला क़ायम है. पहली पत्नी से हुआ जैक का बेटा, २७ वर्षीय क्रिस ख़ुद भी अभिनेता है और पिता का अंतरंग है. फ़ीलिसिया की पहली शादी से एक बेटी है—डेनिस. और दोनों की एक और बेटी है—प्रखर, १५ वर्षीय कोर्टनी.

फ़ीलिसिया और बच्चों का हर छठे महीने एक नए पति और पिता से साबक़ा पड़ता है. जब वह 'सेव द टाइगर' में उद्विग्न, बाघ रक्षक नायक हैरी स्टोनर की भूमिका निभा रहा था, रोज सुबह स्टूडियो जाते वक़्त बिलख बिलख

कर रोने लगता था. 'बड़ी बड़ी' में विक्टर क्लूनी बनने पर वह गोल्फ यों खेलता मानो सचमुच पत्नी के भाग जाने की आशंका से पीड़ित है. उबड़ खाबड़ की ओर लंबी लंबी हिटें मारता. पर फ़िल्म चूंकि मूलतः कामेडी थी, अतः बीच बीच में 'ग्रीन' की ओर भी कुछ शानदार शाट मार देता और भला चंगा हो जाता.

चरित्र में पूरी तरह रम जाने के ऐसे अतिशयोक्तिपूर्ण उदाहरणों के कारण सहज ही विश्वास नहीं होता कि अभिनेता के रूप में जैक की ज़िंदगी में कांपती टांगों से मुंडेरों से कूदने, पेशियां मुचका बैठने और अमीबा पेचिशों से बीमार होने जैसी आफ़तें ही होंगी. 'सम लाइक इट हौट' में वह काफ़ी लंबा समय मारलिन मानरो तथा नाम मात्र की लतरों में किलकती मचलती संगीतज्ञ लड़कियों की सोहबत में ऊपरी बर्थ पर बिताता है. तब तो मौज ही मौज रही होगी.

पर जैक कहता है, "मौज ? पगला गए हैं क्या आप ?" ऊपर बर्थ से ऐन लगी हुई छत थी. सांस लेना मुहाल था. बार बार मेरा सिर छत से टकरा जाता. कई दिन तक मेरा सिर दर्द से फटता रहा."

ज़रा सा थम कर वह अपने ख़ास अंदाज़ में दाहिने हाथ से सर्पिले घेरे बनाता रहता है, और मुसकरा कर कहता है, "मैं कभी भी मुंडेर पर खड़ा होना ज़्यादा पसंद करूंगा."

क्या यह विक्टर क्लूनी बोल रहा है ? नहीं; अभिनेता जैक लेमन फ़रमा रहे हैं.

राष्ट्रनिष्ठ

लेनिन के जन्म दिवस यानी २२ अप्रैल से पहले शनिवार को सोवियत संघ के लोग बिना कोई पारिश्रमिक लिए अपना समय राष्ट्र की सेवा में लगाते हैं. हां, बालक, वृद्ध और बीमार यहां अपवाद हैं. अतः सभी सोवियत नागरिक उस दिन कंपनियों, फैक्टरियों या अपने सरकारी कार्यालयों में रोज़ की तरह जाते हैं और सब लोग प्रायः वह काम हाथ में लेते हैं जो सामान्यतः उन के कार्य की परिधि में नहीं आता. प्रबंधक से ले कर फ़ोरमैन तक उस दिन कल-कारख़ाने के दरवाज़े खिड़कियों की सफ़ाई में जुट जाते हैं. जहां तक कामगारों का संबंध है, वे इस मौक़े पर निर्धारित लक्ष्य से अधिक उत्पादन करने का प्रयास करते हैं. स्कूली बच्चे और विद्यार्थी अपने स्कूल कालेज जाते हैं और कक्षाओं की धुलाई करते या फ़र्श चमकाते हैं. कुछ लोग सार्वजनिक उद्यानों में क्यारियां बनाते हैं, सड़कों की सफ़ाई करते हैं, या फिर सार्वजनिक भवनों पर रंग रोगन करते हैं. इसे 'सुबोतनिक' (सौबाता यानी शनिवार से बना शब्द) अर्थात बिना वेतन का कार्य दिवस कहते हैं.

—ल फ़िगारो, पेरिस

मेरे पापा तो

पूरे छः नन्हें बच्चों को कार में बिठा थियेटर ले जाने में मेरी हालत पस्त हो गई. वापसी में धैर्य ने मेरा साथ छोड़ दिया, तो मैं दहाड़ा, "तुम लोग आराम से नहीं बैठे तो मैं कार रोक कर सब की मरम्मत कर दूंगा."

कार में चुप्पी छा गई कि एक फुसफुसाया, "लेकिन मेरे पापा तो बिना कार रोके ही मरम्मत कर लेते हैं."

—पी एम

हंसिए और हंसाइए

सर्वोत्तम में विभिन्न स्तंभों के लिए रचनाएं भेजिए. प्रकाशित रचनाओं पर पारिश्रमिक निम्न दरों से दिया जाता है :

जीवन की यह रीत : रु. १५०
रचनाएं आप के निजी अनुभव पर आधारित और पूर्णतः अप्रकाशित होनी चाहिए. उन से वयस्क मानव स्वभाव या दैनिक भारतीय जीवन का कोई आकर्षक पक्ष उजागर होना चाहिए. अधिकतम शब्द : ३००

जय जवान ! जय मुसकान ! : रु. १५०
सैनिक जीवन के सच्चे अनुभवों पर आधारित अप्रकाशित रचनाएं. अधिकतम शब्द : ३००

पाठशाला हास्यशाला : रु. १५०
विद्यार्थी जीवन से संबंधित सच्ची अप्रकाशित रचनाएं. अधिकतम शब्द : ३००

मेरा काम तेरा काम : रु. १५०
काम के क्षणों में होने वाली सच्ची मनोरंजक घटनाओं पर अप्रकाशित रचनाएं. अधिकतम शब्द : ३००

लच्छे भाषा के : रु. ४०
हिंदी उर्दू लेखकों द्वारा लच्छेदार चित्रण, रवानीदार, मज़ेदार और दिलचस्प मुहावरे, वाक्य या छंद. उद्धरणों के साथ लेखक का नाम, पुस्तक या रचना का शीर्षक, और प्रकाशन संस्था का नाम या पत्रिका का नाम एवं प्रकाशन तिथि अवश्य लिखें. स्वरचित रोचक वाक्य अथवा वर्णन भी भेज सकते हैं. अधिकतम शब्द : १००

इसी प्रकार झलकियां (प्रसिद्ध व्यक्तियों के

जीवन की उल्लेखनीय घटनाएं), सोचने की बात (पुस्तकों, पत्रपत्रिकाओं, भाषणों में उठाए गए ऐसे मुद्दे जिन पर सब को विचार करना चाहिए) आदि स्तंभों के लिए, तथा लेखों के अंत में प्रकाशित की जाने वाली लघु रचनाओं के लिए भी आप अपनी पसंद के उद्धरण भेज सकते हैं. प्रत्येक उद्धरण के साथ लेखक, पुस्तक या पत्रपत्रिका का नाम व प्रकाशन तिथि अवश्य लिखें. प्रकाशित उद्धरणों को हमारे पास सर्व प्रथम पहुंचाने वालों को प्रति उद्धरण रु. ४० दिए जाएंगे.

हर रचना पर अपने नाम व पते के साथ भेजने की तारीख़ अवश्य लिखें. जिस रचना पर भेजने की तारीख़ नहीं लिखी होगी, उस पर क़तई विचार नहीं किया जाएगा. संपादक का निर्णय अंतिम व पूर्णतः मान्य होगा. रचनाओं के संबंध में किसी प्रकार का कोई पत्र व्यवहार नहीं किया जाएगा, न ही अस्वीकृत रचनाएं लौटाई जाएंगी. रचनाएं भेजने का पता :

संपादक, सर्वोत्तम,
बी-१५, झिलमिल इंडस्ट्रियल एरिया,
दिल्ली-११००३२

लिफ़ाफ़े पर ऊपर के बाएं कोने पर संबंधित स्तंभ का नाम व भेजने की तारीख़ फिर से लिखना न भूलें.

मैं मवेशी डाक्टर कैसे बना

—डेविड टेलर

पशु चिकित्सा में मेरी रुचि का एक घरेलू इतिहास है. इस की नियंता थी मेरी अपनी दादी, और उन की उंगली पकड़ मैं क़दम दर क़दम बढ़ चला . . .

दादी गोरी चिट्टी और गजब की फुर्तीली महिला थीं—रंग शहद का सा शुभ्र पीलापन, और क़दकाठी घरेलू अपनापन लिए थी. मैं मानचेस्टर के निकट राचडेल स्थित अपने घर के चारों ओर फैले खेत खलिहानों और खादरों में भटकता फिरता, तो वह मेरे साथ नहीं होती थीं—फिर भी वह मेरी मीत थीं. मैं छोटे मोटे जीव जंतुओं की चीर फाड़, मरहम पट्टी का विधान करता, तो वह हर तरह से मेरे साथ होतीं, प्रोत्साहन और प्रेरणा देतीं.

मैं अपनी दवाई की पेटी में जमौलिन मरहम, डैडी की ब्रांडी और विटामिन टानिक के अलावा आर्निका का टिंचर भरे रहता. जड़ी बूटियों से तैयार आर्निका, दादी की नज़रों में हर मर्ज़ की एक मात्र दवा थी.

जवानी के दिनों में दादी सिलाई का काम करती थीं अतएव इस बात पर बड़ा ज़ोर रखतीं कि मैं सिलाई भी सीख लूं. वह तर्क देतीं कि शल्य क्रिया में प्रवीणता पाने का सपना पूरा करना हो, तो सीने टांकने का ज्ञान ज़रूरी है. आदमी फ़लानेल, रेशम या ऊनी कपड़े की

'डाक्टर इन द ज़ू' से संक्षिप्त, कापीराइट १९७८ डेविड टेलर तथा जार्ज एलेन एंड अनविन (पब्लिशर्स) लि, लंदन, द्वारा प्रकाशित

सिलाई सीख ले तो शल्य चिकित्सा के दौरान टांके भी बड़ी सफ़ाई से लगा सकता है. बस, मैं दादी की भूरी और पैनी आंखों के सामने कपड़े के चौकोर टुकड़ों को घंटों सिलता रहता. ज़रा सी लापरवाही होते ही वह मेरे पोरों में स्वेटर बुनने की सलाई चुभो देतीं.

वैसे मेरी और उन की छनती ख़ूब थी. बेहोशी की दवा के नाम पर हमारे पास इथाइल क्लोराइड भर था; और दादी इस मामले में बड़ी अनुभवी थीं : मैं झाड़ झंखाड़ में छटपटाते किसी पक्षी को ले आता, तो एक हाथ से वह उस नन्ही जान को पकड़तीं और दूसरे हाथ से उस के डैने की टूटी हड्डियों पर तरल पदार्थ की फुहार छोड़तीं. दवा ख़ून सने डैने पर जम जाती, तो वह मुझ से दियासलाई की तीलियों की खपच्चियां लगा कर प्लास्टर वाली पट्टियां चिपकाने को कहतीं. चश्मे की सुनहरी फ़्रेम के पीछे से उन की आंखें मेरी उंगलियों की एक एक हरकत पर नज़र रखतीं.

बाथरूम के आलों पर आराम करते मेंढक के बच्चों, ड्राइंग रूम की दीवार पर लगी दादा जी की घड़ी पर डटे अपंग उल्लू, और जस्ते की ख़ाली चिलमचियों में संजोए गए आपात चिकित्सा विभाग के एक मात्र मरीज़ यानी सड़क दुर्घटना के शिकार ख़रगोश को पहले तो मेरे ममी डैडी बरदाश्त करते रहे. लेकिन मरीज़ों की संख्या बढ़ने के साथ मामला भी गड़बड़ाने लगा. उलूक की कृपा से घड़ी बंद हो गई. दरअसल मैं अख़बार का वह टुकड़ा ही रखना भूल गया जिस पर उल्लू महाशय पसरते थे. बस, घड़ी के लकड़ी के ढांचे की दरार से उन की बीट अंदर जाने लगी और घड़ी ठप हो गई. डैडी ने बड़ी मुश्किल से बीट साफ़ की, लेकिन घड़ी एक बार जो बैठी तो फिर ठीक नहीं रह सकी.

युद्ध शुरू हुआ तो कोयले वाला पुराना तहख़ाना हवाई हमले से बचाव की दृष्टि से हमारे घर की शरणस्थली बन गया. वैसे राचडेल पर कभी कोई हमला नहीं हुआ अतएव हमारे घर वाले उस का इस्तेमाल नहीं कर सके. फिर क्या था—मेरी बन आई.

मैं ने दादी को मन की बताई और अप्रयुक्त तहख़ाने में और बड़े क़िस्म के जीव जंतुओं को इलाज के लिए घेरने की योजना सुझा दी.

"तेरी मां नहीं मानेगी," दादी मां बुदबुदाईं. "ठीक है अभी यह काम में नहीं आ रहा, लेकिन कल करना पड़ा तो?"

अंततः वह मेरी मदद को तैयार हो गईं. लेकिन कहा कि मैं अपने मरीजों को बाहर, गली के रास्ते से लाऊं, जिधर से पहले कोयला आता था. इस तरह अगले और पिछले दरवाज़े से कोई मतलब नहीं होगा और घर वालों की निगाह में भी कुछ नहीं आएगा. अब मैं अपने मरीज़ों को झोले या अपनी जैकेट में लपेट कर लिए आता और लोहे की भारी जाली उठा कर अस्पताल के नए वार्ड में चुपचाप घुस जाता. वहां पड़ी चारपाइयों पर मैं ने पेटियां, टिन, मर्तबान और पिंजड़े रख लिए थे. उन्हीं पर बीमार और कमज़ोर जीव पड़े रहते. मैदान साफ़ रहता, तो दादी भी अंदर आ जातीं और हम काम में जुट जाते.

इस अस्पताल का रहस्य सब से पहले मेरी छोटी बहन विविएन पर खुला, पर दादी ने छोटा सा लाकेट दे कर उस का मुंह बंद कर दिया. कुछ ही दिनों बाद मानचेस्टर पर हवाई हमले के कारण राचडेल में भी ख़तरे का लंबा भोंपू बजा. बम गिरने की आवाज़ साफ़ सुनाई दे रही थी, सो ममी डैडी ने तय किया कि सब लोग तहख़ाने में ही सोएं. रात को सारे घर वाले पाजामे चढ़ाए अंदर पहुंचे, तो देखा कि

तहख़ाना पहले से ही तरह तरह के परदार, रोएंदार और केंचुलीदार जीवों से भरा है. बुरी तो तब बीती जब डैडी ने देखा कि मैं डब्बाबंद मांस की लगभग सारी पेटी साहियों की भेंट चढ़ा चुका हूं. इसी बीच हमारी बहन जी को लोमड़ी के अनाथ बच्चे ने काट लिया—वह उंघते ऊंघते उस के बिस्तर पर धंस गई थीं.

तभी दादी ने कमाल किया. बड़ी निर्भयता से यह स्वीकार कर कि मांस के डब्बे उन्हों ने मेरे लिए खोले थे, सब का ग़ुस्सा ठंडा कर दिया. ख़ैर, रोज़ की किचकिच से तंग आए डैडी ने उसी समय पिछवाड़े का शौचालय जानवरों के अस्पताल को अर्पित कर दिया. इस के साथ समस्या यह थी कि दादी और मेरे लिए काम करने की जगह ज़रा भी नहीं थी. असली काम अब भी कहीं और किया जाना था. इस दृष्टि से हमारी प्रिय जगह थी रसोई. अतः साही चिकित्सालय की रोज़मर्रा की काररवाई शुरू करने से पहले दादी हमेशा देखभाल लेतीं कि मां बाहर हैं या कहीं काम में फंसी हैं. हम रसोई की मेज़ का इस्तेमाल करते और हमेशा फुसफुसा कर बोलते. हमारे कांटेदार मरीज़ों के पेट पर ख़ून चूसने वाली किलनियां लगी होतीं तो हम दोनों क्लोरोफ़ार्म का इस्तेमाल करते. पेट पर क्लोरोफ़ार्म लगा कर कुछ देर इंतजार करते कि परजीवियों की पकड़ ढीली हो जाए. तब दादी पीछे हट जातीं और मैं बड़े डाक्टर के रूप में उन्हें चिमटी से निकाला करता.

चर्मरोगों से ग्रस्त लाल सुनहरी मछलियों, गोहों और मेंढकों के इलाज का सिलसिला बना तो शुरुआत अच्छी न थी. मैं उन के फोड़ों पर क्रीम या एंटीसेप्टिक लोशन लगाता, लेकिन पानी पड़ते ही सारी दवा धुल जाती. एक एक कर के मुझे अपनी असफलताओं को अपने बग़ीचे में दफ़न करना पड़ा.

उस दिन भी मैं मृत लाल मछली के रूप में मिली असफलता को दफ़न कर रहा था. दादी पास खड़ी थीं, कि बोलीं, "मुझे एक तरकीब सूझी है. ज़रा मेरी नक़ली दांत वाली पेस्ट तो उठा लाओ."

मैं ने भूरे, चिपचिपे पदार्थ का टिन ला दिया तो बोलीं, "अगली बार कोई फोड़े वाली मछली मिली तो पहले की तरह आनिका लगाएंगे. लेकिन पानी में छोड़ने से पहले ज़रा सा पेस्ट भी लगा देना. यह बड़ा मज़ेदार है, भीगते ही यह मोम की तरह जम जाता है. तभी तो मेरे दांत अंदर ही जमे रहते हैं. लो, ज़रा सा लगाओ तो."

मैं ने थोड़ा सा पेस्ट अपनी जीभ पर रखा. मैं उस की मज़बूत होती पकड़ बख़ूबी महसूस कर रहा था. मैं ने जीभ पूरे मुंह में घुमा कर पेस्ट छुड़ाने की जुगत की. पर नहीं, बात नहीं बनी. अगले रोज़ भी मैं ने पेस्ट का अटपटापन महसूस किया तो कई संभावनाओं के द्वार खुलते नज़र आए. बस, ज़रूरत थी तो एक अदद मरीज़ की.

कुछ सप्ताह बाद मेरा एक दोस्त एक बड़ा सा मेंढक ले आया. वह मेरी हथेली पर निर्विकार बैठा हांफ रहा था और दमक रहा था उस का हरा रंग. उस की अगली टांग में सूजन थी और चमड़ी से लस निकल रहा था. मैं ने उसे दादी मां को दिखाया. "नक़ली दांतों वाली चीज़!" मैं ने उन्हें याद दिलाया. "अब मौक़ा मिला है."

दादी मां ने भी भरपूर उत्साह दिखाया. "हम थोड़ा सा जड़ी बूटियों वाला मरहम लगाएंगे."

यह मरहम जड़ी बूटियों से बनी उन गिनी चुनी दवाइयों में से एक था जिन के गुणों का

बखान करते दादी अघाती न थीं. उन्हों ने संभाल कर मेंढक को उठाया, जबकि मैं सूजे पंजे पर गहरे हरे रंग का शीतल मरहम लगाने लगा. फिर मैं ने उस के नन्हे, नाज़ुक पैर पर नक़ली दांतों वाला पेस्ट चुपड़ दिया. अब उसे शीशे के मर्तबान में रख दिया गया जिस में थोड़ा सा पानी और उस के कूदने के लिए एक पत्थर भी था. मैं यह देख कर बहुत ख़ुश हुआ कि पानी में पैर मारने के साथ-साथ पेस्ट जमता चला जा रहा है.

तीन दिन बाद हम ने पेस्ट और मरहम पोंछ कर चोट देखी. सूजन निस्संदेह कम हो रही थी और पैर पहले से बेहतर लग रहा था. मैं ने वही क्रिया दोहराई और मेंढक को वार्ड में वापस भेज दिया. मेंढक और दादी ने मिल कर पशु चिकित्सा के क्षेत्र में इतिहास का निर्माण कर डाला—हफ़्ते भर में मेंढक भला-चंगा था. सच पूछें तो इस रोगी मेंढक ने शीघ्र स्वास्थ्य लाभ की दृष्टि से हमारे क्लीनिक में कीर्तिमान क़ायम किया. बाद में हम ने उसे पास के एक जोहड़ में छोड़ दिया. ख़ैर, मैं आज भी दादी वाले पेस्ट का प्रयोग डालफिन और सील जैसी मछलियों के ज़ख़्मों पर करता हूं.

दादी ने कछुए जैसे शल्कधारी जीवों की खोल के किसी गंभीर प्रहार से चटक या दरक जाने पर उन के इलाज का एक नया तरीक़ा ढूंढ़ निकाला. एक दिन हम बिल्ली के काटने से पके एक कछुए की पीठ का घाव देख रहे थे तो उन्हों ने कहा, "मेरी समझ से, नीचे के मांस को सुरक्षित रखने के लिए हमें पीठ के सूराख को ठीक से बंद करना होगा. दौड़ के अपनी साइकिल वाली पेटी ले आओ."

साइकिल का पंचर आदि लगाने की सामग्री से भरी मेरी बड़ी पेटी में रेगमार, ग्लू, सिलखड़ी का पाउडर और साइकिल की ट्यूब के गोल गोल चकत्ते थे. अब मैं सामान लाते लाते यह भी सोच रहा था कि ट्यूब ले तो जा रहा हूं, पर कछुए के मामले में यह क्या काम आएगी?

लेकिन दादी से बहस करना बेकार था. "हां, बेटा, अब ज़ख़्म के गले हिस्से को काट दो." कहते कहते उन्हों ने उस जगह पर सुन्न करने वाली दवा की फुहार छोड़ी. "अब आर्निका लगाओ." मैं ने उन के कहे अनुसार किया. "और यह समझ लो कि साइकिल की तरह कछुए के भी पंचर लगना है."

कछुए ने हलकी हिसहिसाहट के साथ अपना शरीर खोल में समेट लिया. मैं ने रेगमार से घाव के किनारों को रेत कर साफ़ किया, फिर सिलखड़ी छिड़क ग्लू लगाई, और ऊपर से ट्यूब की क़तरन लगा दी.

दादी मुसकराईं. बोलीं, "अब यह समझ लो कि घाव का आकार क्या है और उंगली का नाख़ून सवा सेंटीमीटर बढ़ने में कितना वक़्त लगता है. कछुआ असमतापी जीव है, अतएव इस का घाव हम जैसे स्तनपायी जीवों की तरह जल्दी नहीं भरने वाला. मेरे ख़याल से एक महीने बाद ही कहीं जा कर तुम ज़ख़्म देख पाओगे."

कछुआ पानी में रखा गया. ठीक एक महीने बाद हम उसे रसोई में लाए. मैं ट्यूब के टुकड़े को दादी की नाख़ून काटने वाली छोटी कैंची से काटने लगा; वह दम साधे खड़ी रहीं. मैं ने क़तरन फेंक दी, और हम दोनों माथा जोड़ कर घाव की जांच करने लगे—मैं ने चैन की सांस ली. उस का शल्क जुड़ गया था और घाव की जगह नया, स्वस्थ कवच दिखाई पड़ रहा था.

बस, हम दोनों एक दूसरे से लिपट ख़ुशी

से मुसकराने लगे. हम ने अपना काम गंभीरता से किया और अपनी यदा कदा की सफलता पर खुशी प्रकट की, तो रोज़मर्रा की असफलताओं पर एक दूसरे को ढाढ़स भी बंधाया.

"दादी," तब मैं ने कहा, "देखना, एक न एक दिन तुम्हें नोबल पुरस्कार ज़रूर मिलेगा."

वैसे ख़ुद दादी भी क्लीनिक के जीव जंतुओं के प्रति अगाध स्नेह रखती थीं, लेकिन मेरी समझ से उन की सारी मेहनत के पीछे इस पारितोषिक की प्राप्ति ही थी जो हम दोनों का अभीष्ट बन चुकी थी—मेरा घोड़ा डाक्टर बनना. हम सपने में भी नहीं सोचते थे कि मुझे कुछ और करना या बनना है. यह उन के ही प्रोत्साहन, उत्साहवर्धन का प्रताप था कि जीव जंतुओं के प्रति मेरा लगाव स्कूल और फिर विश्व विद्यालय तक यथावत बना रहा. तब तक वह गंभीर हृदय रोग से ग्रस्त हो खटिया पकड़ चुकी थीं, लेकिन मेरे पशु चिकित्सक बन जाने पर उन्हें बहुत गर्व हुआ. उन्हों ने मेरी डिगरी अपने बिस्तर से सटी दीवार पर टांग दी और उस के बाद भी हम बहुत दिनों तक उन बीते दिनों की बातें करते रहे कि रसोई में मरीज़ों का इलाज कैसे चलता था.

डेविड टेलर की पुस्तक से संक्षिप्त तीन अन्य रोचक रचनाओं के लिए देखें 'सर्वोत्तम' के नवबर्ष, फरवरी और जून' ८१ अंक.

अपनी डफली

हाल में एक महिला मित्र के यहां गया. हम गपशप में मशगूल थे. इतने में उस के बच्चे ने अपना ढोल पीटना शुरू कर दिया. मै ने पूछा, "इस शोर से तुम्हारे कान नहीं फटते ?" मेरी मित्र ने कहा, "नहीं तो, इस की वजह से यह शांत रहता है." — संडे मिरर, लंदन

अमरीका की एक शहरी महिला अपनी अंग्रेज दोस्त से मिलने गई जिस ने इटली में सिएना के निकट फ़ार्म हाउस ख़रीद रखा था. वहां उसे घर में बनी शराब पीने को मिली तो उस ने अपनी मित्र से पूछा, "तुम यह शराब कहां से लाती हो ?"

बड़े गर्व से आंग्ल महिला ने बताया, "वो, तुम्हारी पीछे जो पहाड़ियां हैं वहां से."

"तभी ये दिमाग़ पर नहीं चढ़ती. इतने ऊंचे से आती है न." — संडे टाइम्स, लंदन

पत्र परंपरा

जापान में पत्र लिखने की परंपरा आज भी परंपरागत है. पत्र कुछ यूं शुरू होगा : 'अब वसंत का पदार्पण निश्चित है. और जबकि दूर शैल शिखरों पर चैरी की नई नई कलियां अपना अवगुंठन उठा रही हैं, तो हमें आप के अति व्यस्त कार्यक्रम में हस्तक्षेप करते बहुत संकोच का अनुभव हो रहा है, क्योंकि आप महान लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए सचेष्ट हैं. फिर भी हम परिस्थितिवश यह जताने पर विवश हैं कि आप की कंपनी का ऋण भार . . .

—एनकाउंटर', इंगलैंड

सर्वोत्तम पुस्तक
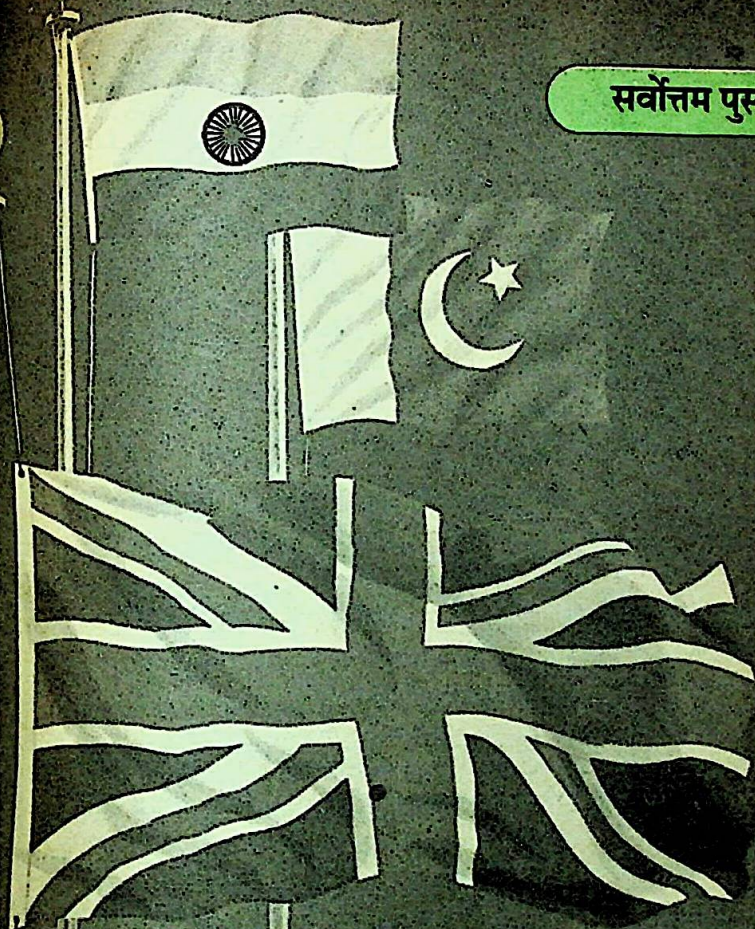
आज़ादी आई आधी रात

लारी कोलिंस और दोमिनिक लापियेर

आज़ादी

भारत की आज़ादी के दिन देश के बंटवारे के और सांप्रदायिक दंगों के लोमहर्षक दिन थे. उन दिनों की कहानी युग युग तक भारतीय उपमहाद्वीप के लोगों को सालती रहेगी.

उस महान नाटक के कुछ प्रमुख पात्र थे—महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरू, सरदार पटेल, मोहम्मद अली जिन्ना . . . और लार्ड माउंटबेटन, जिन पर ब्रिटेन की लेबर सरकार के प्रधान मंत्री एटली ने भारत को स्वतंत्रता सौंपने की ज़िम्मेदारी डाली थी. लेकिन कौन था वह, जिसे भारत के विभाजन के लिए ज़िम्मेदार ठहराया जा सके ?

प्रसिद्ध पुस्तक 'इज़ पेरिस बर्निंग' के लेखक लारी कोलिंस और दोमिनिक लापियेर ने भारतीय उपमहाद्वीप के इस अविस्मरणीय अध्याय पर बरसों तक खोज कर के एक पुस्तक लिखी 'फ़्रीडम एट मिडनाइट.'

सर्वोत्तम के फ़रवरी और मार्च अंकों में प्रस्तुत है उसी पुस्तक का सार संक्षेप, दो खंडों में.

आई आधी रात

—लारी कोलिंस और दोमिनिक लापियेर

उदासी किसी सर्द कोहरे की तरह लंदन पर छाई थी. ब्रिटेन की राजधानी ने नए साल की इतनी अंधकारमय, इतनी विषण्ण शुरुआत शायद ही कभी देखी होगी. गलियां क़रीब क़रीब सुनसान थीं. पटरियों पर तेज़ क़दमों से चलते राहगीर पुरानी वर्दियों या कपड़ों में फटीचरों जैसे लग रहे थे, क्योंकि वे कपड़े लगभग आठ सालों से पहने जा रहे थे और जीर्णता और मरम्मत उन में झलक रही थी. पूरे शहर में एक ख़ास क़िस्म की गंध, युद्धोत्तर लंदन की महक, फैली थी. यह गंध जले खंडहरों की थी, बमबारी से ध्वस्त इमारतों से पतझड़ की धुंध की तरह उठती हुई.

केवल १७ माह पूर्व ब्रिटेनवासी मानव इतिहास के सर्वाधिक भयावह युद्ध में विजयी हुए थे. उन की उपलब्धियों ने, संकट काल में उन के साहस ने, उन्हें ऐसी सराहना दिलवाई थी, जैसी दुनिया ने पहले कभी उन्हें नहीं दी थी. लेकिन उन की इस विजय की क़ीमत ने अदम्य ब्रितानवियों को लगभग पराजित भी कर दिया था. ब्रिटेन के उद्योग अपंग हो चुके थे. उस का राजकोष दिवालिएपन के निकट पहुंच चुका था. ढलाईख़ाने और कारख़ाने सब तरफ़ बंद हो रहे थे. हज़ारों ब्रितानवी बेरोज़गार हो चुके थे. लंदन की दुकानों की खिड़कियों में सब से ज्यादा लिखा नजर आने वाला शब्द था "नहीं". "आलू नहीं", "कोयला नहीं", "सिगरेट नहीं", "गोश्त नहीं".

उपनिवेशों, अधिराज्यों, संरक्षित राज्यों आदि का सर्वाधिक असाधारण समूह, जिन से ब्रिटिश साम्राज्य बना था, नव वर्ष दिवस, १९४७, को भी जस का तस था, लेकिन वह भी जल्दी ही छिन जाने वाला था. साम्राज्यवादी युग का अवसान हो चुका था, और इसी ऐतिहासिक अपरिहार्यता की स्वीकृति के रूप में उस सुबह एक काली आस्टिन राजधानी की सुनसान सड़कों पर, जैसे चोरी छिपे, फिसलती जा रही थी.

बकिंघम पैलेस को पार कर के जब वह माल की ओर घूमी, तो उस का एकाकी यात्री अपनी आंखों के सामने से गुज़रते शाही मार्ग को उदासी से घूरता रहा. इस मार्ग पर ब्रिटेन ने साम्राज्य के विजयोत्सवों को कितनी कितनी बार मनाया था, वह सोच रहा था.

रियर एडमिरल लुई फ्रांसिस अल्बर्ट विक्टर निकोलस माउंटबेटन, वाइकाउंट आफ बर्मा, उस समय ४६ वर्ष के थे. ऊंचा छरहरा बदन, १८२ सेंटी मीटर से भी कुछ अधिक क़द. उन का आश्चर्यजनक रूप से सुघड़ नाक नक़्शा किसी

"फ्रीडम एट मिडनाइट" से संक्षिप्त. कापीराइट १९७५ लारी कोलिंस और दोमिनिक लापियेर.
प्रकाशक: विकास पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली ११०००२. मूल्य: रु. ४५.००

कलाकार के लिए आदर्श हो सकता था, और काली आंखों और भरपूर बालों के कारण वह अपनी उम्र से कम से कम पांच साल छोटे लगते थे.

दक्षिण पूर्व एशिया के सुप्रीम अलाइड कमांडर के अपने युद्धकालीन पद से लौटने के बाद से माउंटबेटन १० डाउनिंग स्ट्रीट में अकसर आते रहते थे; वह उन एशियाई देशों के मामलों के सलाहकार थे, जो उन की कमान के नीचे आ चुके थे. लेकिन उन की आख़िरी भेंट के दौरान प्रधान मंत्री क्लीमेंट एटली के सारे सवाल भारत पर केंद्रित रहे थे, एक ऐसे राष्ट्र पर, जो उन के कार्य क्षेत्र का हिस्सा नहीं था. युवा एडमिरल को अचानक "एक अत्यंत अप्रिय, अत्यंत बेचैन कर देने वाला अहसास" हुआ था. उन का पूर्वाभास सही सिद्ध हुआ था. एटली उन्हें भारत का वाइसराय नामज़द करने की बात सोच रहे थे.

पूरे साम्राज्य में यह पद सर्वाधिक महत्वपूर्ण था; एक ऐसी गद्दी, जिस पर बैठ कर अंगरेजों की एक लंबी कतार ने मानव जाति के छठवें हिस्से की क़िस्मत पर राज किया था. लेकिन माउंटबेटन का काम उस पद पर रह कर भारत पर शासन करना नहीं होगा. उन्हें वह काम करना था, जो किसी भी अंगरेज के लिए बड़ा पीड़ादायी हो सकता था—सत्ता परित्याग का काम.

माउंटबेटन इस विचार से पूरी तरह सहमत थे कि वह वक़्त आ चुका है, जब ब्रिटेन को भारत से विदा हो जाना चाहिए, लेकिन उन का दिल इस विचार से ही बाग़ी हो रहा था कि उन का काम उन प्राचीन संबंधों को काटने का होगा, जो ब्रिटेन और उस के साम्राज्य के परकोटे के बीच चले आ रहे थे. एटली को निरुत्साहित करने के लिए उन्होंने तरह तरह की, छोटी और बड़ी मांगें उन के सामने रख दी थीं—सचिवों के अमले से ले कर हवाई जहाज़ों तक : इतने सचिव मुझे चाहिए और इस तरह के विमान मुझे मिलने चाहिए. सर्वाधिक महत्वपूर्ण बात यह थी कि उन्होंने एक बेमिसाल शर्त की मांग रखी थी : उन को सौंपी गई नीति को लागू करने के लिए पूर्णाधिकार सत्ता. माउंटबेटन को यह देख कर बड़ी निराशा हुई कि एटली ने उन की हर मांग को स्वीकार कर लिया. कैबिनेट कक्ष में प्रविष्ट होते समय एडमिरल को अब भी उम्मीद थी कि भारतीय कार्य भार को उन के कंधों पर डालने के एटली के प्रयासों को वह किसी तरह नाकाम बनाने में सफल हो जाएंगे.

स्थिति दिन ब दिन बिगड़ती जा रही है, प्रधान मंत्री ने कहना शुरू किया, त्वरित निर्णय लेने का समय आ चुका है. यह इतिहास के उदात्त विरोधाभासों में से एक था कि जब ब्रिटेन आख़िरकार भारत को स्वतंत्र करने को तैयार था, तो उसे ऐसा करने का कोई रास्ता नहीं मिल रहा था. जिस क्षण को भारत में ब्रिटेन का सब से शानदार क्षण होना चाहिए था, उस की नियति अभूतपूर्व त्रासदायक दुःस्वप्न में तब्दील हो जाने की नज़र आ रही थी. ब्रिटेन ने भातर पर विजय पाई थी और उस पर शासन किया था—औपनिवेशिक मानदंडों के हिसाब से, अपेक्षाकृत बिना रक्त-पात. लेकिन ब्रिटेन का भारत से विदा होना हिंसा के ऐसे विस्फोट को जन्म देने वाला सिद्ध होने की धमकी दे रहा था, जो उस के द्वारा साढ़े तीन सदियों तक वहां बने रहने के दौरान उस के हर तरह के अनुभव को अपनी विशालता और स्तर से बौना बना देगा.

भारत की समस्या की जड़ भारत के २८ करोड़ हिंदुओं और १०.५ करोड़ मुसलमानों का युगों से चला आ रहा आपसी विरोध था. परंपरा, विद्वेषी धर्मों और आर्थिक भेदों द्वारा पोषित उन का विरोध अब उबाल के बिंदु तक
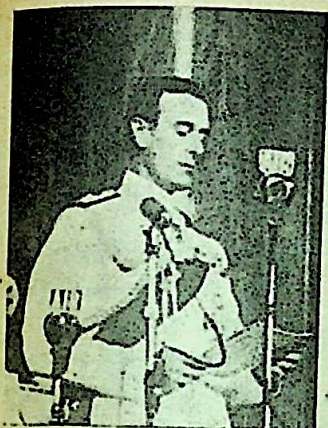
लार्ड माउंटबेटन

आ पहुंचा था: भारत के मुसलमानों के नेता अब यह मांग कर रहे थे कि ब्रिटेन एकता को नष्ट कर दे और उन्हें उनं का अपना एक इसलामी राज्य दे. उन्हें पाकिस्तान न दिए जाने की क़ीमत, उन्हों ने चेतावनी दी थी, एशिया के इतिहास का सर्वाधिक रक्तपातपूर्ण गृहयुद्ध होगा.

उन की मांगों का विरोध करने को उतने ही दृढ़ निश्चयी कांग्रेस पार्टी के नेता थे. उन की नज़र में उपमहाद्वीप का विभाजन उन की ऐतिहासिक मातृभूमि का नापाक बंटवारा होगा.

ब्रिटेन इन दोनों परस्पर विरोधी नज़र आने वाली मांगों के बीच फंस गया था. इस समस्या को हल करने के ब्रितानवी प्रयास हर बार नाकाम रहे थे. अब ब्रिटेन और भारत, एटली ने माउंटबेटन को बताया, बड़ी भारी विपदा की ओर अग्रसर हो रहे थे. इस स्थिति को ऐसे ही बने रहने नहीं दिया जा सकता था. हर सुबह इंडिया आफ़िस में तार पहुंच रहे थे, जिन में उपमहाद्वीप के नए नए कोनों में निरर्थक बर्बरता के विस्फोट की ख़बरें होती थीं. एटली ने संकेत किया कि माउंटबेटन को जो पद दिया जा रहा है, उसे स्वीकार करना उन का पावन कर्तव्य है.

एक घंटे बाद, झुके कंधे लिए, माउंटबेटन डाउनिंग स्ट्रीट के प्रवेश द्वार से बाहर आए. अपनी आस्टिन में बैठते समय एक अजीब विचार उन के मन में आया. ठीक ७० साल पहले; इसी दिन, इसी पल, उन की अपनी परनानी भारत की सम्राज्ञी बनी थीं.

दिल्ली के बाहर एक मैदान में एकत्र भारतीय राजाओं ने उस दिन भगवान से प्रार्थना की थी कि महारानी विक्टोरिया की "शक्ति और संप्रभुता" "हमेशा हमेशा के लिए अटल" हो. अब, नए साल की इस विवर्ण सुबह, उन के परनातियों में से एक, उस प्रक्रिया की शुरुआत कर रहा था, जिस से वह तिथि तय होगी, जिस दिन "हमेशा हमेशा" का अंत हो जाएगा.

शासक वर्ग

पांच बेचारे शिलिंगों ने ग्रेट ब्रिटेन को उस महान औपनिवेशिक साहस यात्रा के मार्ग पर डाल दिया था, जिस का अंत करने का आदेश लुई माउंटबेटन को मिला था. वे पांच शिलिंग एक पौंड काली मिर्च की मूल्य वृद्धि के प्रतिनिधि थे; मूल्य वृद्धि ग़ैर सरकारी डच युद्धपोतों ने की थी, जो गरम मसालों के व्यापार के लगभग एकाकी नियंत्रक थे. नाराज़ हो कर लंदन शहर के २४ व्यापारी २४ सितंबर १५९९ के अपराह्न में लेडनहाल स्ट्रीट की एक जर्जर इमारत में, जो माउंटबेटन और एटली की मुलाक़ात वाले स्थान से केवल तीन किलो मीटर दूर थी, एकत्र हुए. उन का मक़सद था एक छोटी सी व्यापारिक संस्था की स्थापना, जिस की प्रारंभिक पूंजी होगी

७२,००० पौड. ईस्ट इंडिया कंपनी के नाम से जानी जाने वाली यह संस्था, विस्तार और परिवर्धन परिवर्तन के बाद अंततः साम्राज्यवादी युग की भव्यतम रचना बनने वाली थी—यानी ब्रिटिश राज.

कंपनी की सफलता बड़ी तीव्र और प्रभावशाली रही. जल्दी ही हर साल कई कई जहाज़ टेम्स नदी की गोदियों पर गरम मसालों, गोंद, शक्कर, कच्चे रेशम और मलमल कपास के पहाड़ के पहाड़ उतारने लगे और अंगरेजी माल से लद कर वापस जाने लगे. अपरिहार्य रूप से ही, जैसे जैसे उन की व्यावसायिक गतिविधियां बढ़ती गईं, वैसे वैसे कंपनी के अफ़सर स्थानीय राजनीति में भी उलझते गए; अपने विस्तृत होते व्यापार की सुरक्षा के लिए, जिन तुच्छ राजाओं के प्रदेशों में उन का कार्य क्षेत्र था, उन के आपसी झगड़ों में हस्तक्षेप करने को वे मजबूर हो गए. वह अनिवार्य प्रक्रिया प्रारंभ हो चुकी थी, जो लगभग अनभिप्रेत रूप से ही भारत पर ब्रिटेन की विजय का मार्ग प्रशस्त कर देने वाली थी.

१८५७ के हिंस्र सैनिक विद्रोह के बाद आनरेबल ईस्ट इंडिया कंपनी का अस्तित्व समाप्त कर दिया गया और ३० करोड़ भारतीयों की नियति का उत्तरदायित्व ३९ वर्षीय महिला महारानी विक्टोरिया के हाथों में पहुंच गया. इस प्रकार विक्टोरियाई युग के चरमोत्कर्ष की शुरुआत हुई; एक ऐसा काल, जिसे दुनिया अकसर ब्रिटिश भारतीय अनुभव के साथ जोड़ कर देखने वाली थी. इस का प्रमुख दर्शन एक अवधारणा थी, जिसे स्वनियुक्त राष्ट्रकवि रुडयार्ड किपलिंग अकसर प्रकट किया करते थे, कि श्वेत अंगरेज "उच्छृंखल निम्नतर जातियों" पर शासन के लिए अद्वितीय रूप से सटीक थे.

उन अंगरेजों का भारत पगड़ीधारी सिपाहियों के आगे आगे घोड़ों पर चलते, पुच्छक वाले शाको पहने भद्र पुरुष अफ़सरों का भारत था; हिमालयी ग्रीष्मकालीन राजधानी शिमला में वैभवशाली नृत्यों का भारत; कलकत्ता के बंगाल क्लब के हरियाले मैदानों में क्रिकेट मैचों का भारत; राजपूताना के तपते मैदानों में पोलो के खेल का भारत; असम में बाघ के शिकार का भारत; ऐसा भारत, जिस में युवा लोग जंगल के बीच लगे तंबू में, काली टाइयां लगाए, रात्रि भोज के लिए बैठते थे, बड़ी आस्था से पोर्ट के साथ राजा सम्राट के नाम सेहत के जाम पीते थे, जबकि उन के आसपास के अंधेरे में गीदड़ हुआं हुआं करते रहते थे; ऐसा भारत, जिस में लाल कुरते पहने अफ़सर ख़ैबर दर्रे के तंग चट्टानी रास्तों पर चढ़ने की कोशिश करते रहते थे, या बर्फ़ानी बारिश अथवा उत्तर पश्चिमी सीमांत की असहनीय गरमी में विद्रोही पठान क़बायलियों का पीछा करते रहते थे; अपनी जातीय श्रेष्ठता के बारे में निर्विवाद रूप से निश्चित, केवल यूरोपीय क्लबों के बरामदों में शैंपेन या व्हिस्की चुसकते लोगों का भारत था यह.

ये लोग आम तौर पर त्रुटिहीन अभिजात परिवारों के बेटे थे. ईटन, हैरो, रगबी, विंचेस्टर, चार्टरहाउस, हेलीबरी के खेल मैदानों और अध्ययन कक्षों में उन्हों ने वही शिक्षा पाई थी, जो उन्हें एक साम्राज्य की हुकूमत का कारोबार चलाने के क़ाबिल बनाती थी. १९वीं सदी के इतिहासकार जेम्स मिल ने कहा था : "भारत ब्रिटेन के उच्च वर्ग के लिए घर से बाहर (आउटडोर) राहत का विशाल ज़रिया था."

भारत में ब्रिटिश शासन पैतृकवादी था, जैसे कोई बुज़ुर्ग स्कूल मास्टर लड़कों के उच्छृंखल
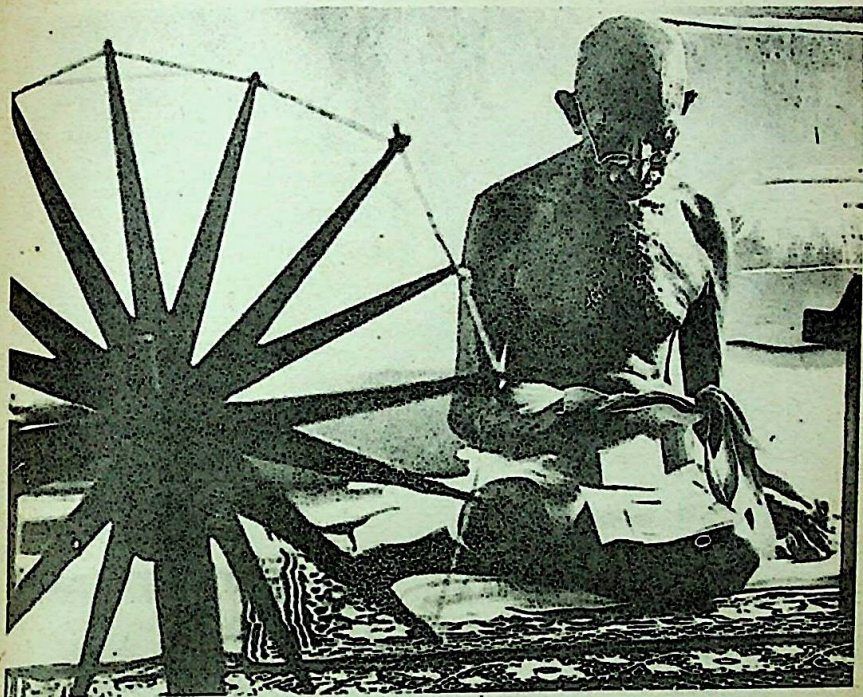
महात्मा गांधी अपने चरखे के साथ, जो साम्राज्यवाद के प्रति उन की चुनौती का प्रतीक था

समूह को अनुशासित कर रहा हो और उन पर ऐसी शिक्षा थोप रहा हो, जो उस की नजर में उन के लिए श्रेष्ठ है. कुछ अपवादों को छोड़ कर वे योग्य थे और भ्रष्टाचार से परे थे, और भारत के सर्वोच्च हितों को ध्यान में रखते हुए प्रशासन चलाने के लिए दृढ़निश्चयी भी—लेकिन इस बात का फ़ैसला हमेशा वे ख़ुद ही करते थे कि वे हित थे क्या.

अब १९४७ के नव वर्ष के दिन इंडियन सिविल सर्विस़ के केवल १,२०० ब्रितानवी सदस्य ही भारत में शेष थे और किसी तरह ४१ करोड़ लोगों को अपनी प्रशासनिक पकड़ में रखे हुए थे. वे उस विशिष्ट वर्ग के आख़िरी झंडाबरदार थे, जो अपने समय के बाद भी जीवित बचा रह गया था.

"एकला चलो रे !"

डाउनिंग स्ट्रीट से दस हज़ार किलो मीटर दूर एक बुज़ुर्ग एक किसान की झोंपड़ी के कच्चे फ़र्श पर लेटा अपने पेट पर रखी मिट्टी की पट्टी को थपथपा रहा था; उस ने एक और पट्टी अपने गंजे सिर पर भी रख ली. फ़र्श पर लेटा वह बड़ा कमज़ोर, क्षुद्र जीव लग रहा था. इस के बावजूद ब्रितानवी साम्राज्य को ध्वस्त करने के लिए उस ने किसी भी अन्य जीवित व्यक्ति से ज़्यादा काम किया था.

फ़ोटो : मार्गरेट बर्क/टाइम लाइफ़ पिक्चर एजेंसी. कापीराइट टाइम इन.

मोहनदास करमचंद गांधी एक असंभावनीय क्रांतिकारी थे, विश्व के असाधारणतम स्वातंत्र्य आंदोलन के विनम्र पैग़ंबर. उन के निकट, बड़ी सावधानी से साफ़ किए हुए उन के नक़ली दांत रखे थे, जिन का इस्तेमाल वह केवल खाते समय करते थे; और साथ ही रखा था स्टील के फ्रेम वाला चश्मा, जिस के पीछे से वह आम तौर पर दुनिया को झांक कर देखते थे. बहुत छोटा सा व्यक्ति, मुश्किल से १५२ सेंटी मीटर क़द का, वज़न ५० किलोग्राम. क़ुदरत ने गांधी के चेहरे को कुरूप बनाया था : उन के कान बड़े बड़े थें, नाक अपनी नोक को बिखरी बिखरी मूंछों में घुसाए रहती थी, उन के होंठ उन के पोपले मुंह को ढंके रहते थे. इस के वावजूद उन के चेहरे में एक विशिष्ट सौंदर्य झलकता था; वह चेहरा हमेशा सप्राण रहता था—उन के बदलते हुए मनोभावों और नटखट हास्यप्रियता का प्रतिबिंबित करता रहता था.

हिंसा से त्रस्त इस शताब्दी को गांधी ने अहिंसा का सिद्धांत दिया था. उन्हों ने इस का इस्तेमाल भारत की जनता को संगठित करने के लिए किया था, जिस से वह ब्रिटेन को उपमहाद्वीप से खदेड़ सके, सशस्त्र विद्रोह के बदले नैतिक जेहाद से, मशीनगन की आग के बदले प्रार्थनाओं से, आंतकवादियों के बमों के उपद्रव के बदले अवज्ञापूर्ण मौन से.

गांधी का संदेश आधुनिक संचार साधनों से विहीन राष्ट्र को भी बींध गया था, क्योंकि उन में भारत की आत्मा से बात करने वाली सहज चेष्टाओं के लिए अद्भुत प्रतिभा मौजूद थी. एक ऐसी धरती पर, जहां भूख सदियों से अभिशाप बनी हुई थी, गांधी की सर्वाधिक ध्वंसक नीति अपने आप को भोजन से ही वंचित रखने की थी—यानी उपवास की. पानी और सोडा बाइकार्ब पी पी कर उन्हों ने ग्रेट ब्रिटेन को नीचा दिखा दिया था.

धर्मप्राण भारत ने उन के दुबले पतले ढांचे में एक महात्मा को पहचान लिया था, और वह जहां उसे ले जाते थे, भारत उन के पीछे पीछे चलता था. अपने अनुयायियों के लिए वह एक संत थे. ब्रितानवी नौकरशाहों के लिए, जिन की विदा की घड़ी को उन्हों ने बड़ी तेज़ी से पास ला दिया था, वह एक चश्मपोश राजनीतिज्ञ थे, एक ढोंगी मसीहा. वस्तुतः, ब्रह्मचर्य के फ़ायदों पर प्रवचन कर के उन की गंभीर राजनीतिक बहस में ख़लल डाल देने में भी वह पूरी तरह सक्षम थे.

कहा जाता है कि जहां कहीं गांधी जाते थे, वही भारत की राजधानी बन जाती थी. इस समय यह राजधानी कलकत्ता के उत्तर पूर्व में स्थित नोआखली के एक छोटे से बंगाली गांव श्रीरामपुर में थी, जहां महात्मा अपनी मिट्टी की पट्टियों के नीचे लेटे हुए थे.

१९४७ का नव वर्ष दिवस उन के लिए अतीव संतुष्टि का अवसर होना चाहिए था. वह उस मक़सद की प्राप्ति के बिंदु पर खड़े थे, जिस के लिए वह जीवन भर जूझते रहे थे : भारत की आज़ादी. फिर भी गांधी हताश और दुखी थे. कारण सब तरफ़ साफ़ नज़र आ रहे थे—उस गांव के झुलसे खंडहरों में, जहां उन्हों ने अपना शिविर लगा रखा था. कट्टर नेताओं द्वारा भड़काए जाने पर और इन रिपोर्टों से भड़क कर कि कलकत्ता में हिंदू लोग मुसलमानों को मार रहे है, श्रीरामपुर के मुसलमान —गंगा और ब्रह्मपुत्र के घनी आबादी वाले डेल्टा में बसे मुसलमानों की ही तरह—एकाएक बस्ती के अल्पसंख्यक हिंदुओं पर टूट पड़े थे; उन्होंने मार काट की थी, बलात्कार किए थे, लूट पाट, आगज़नी की थी
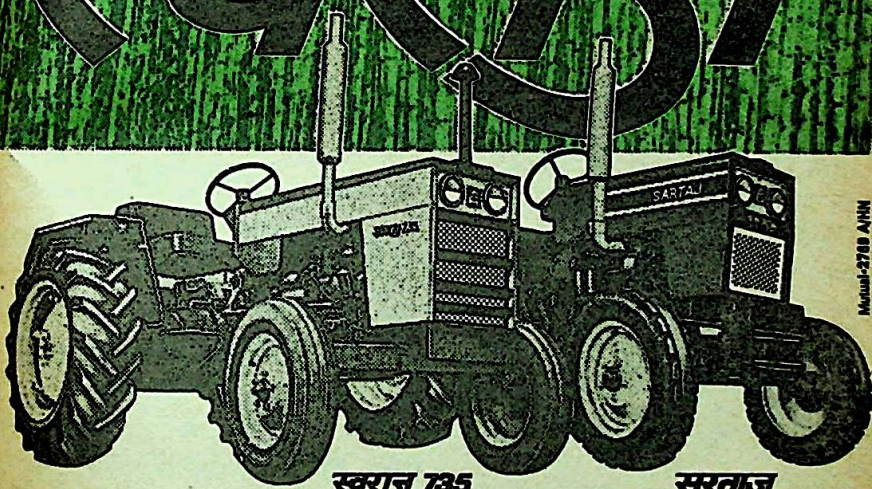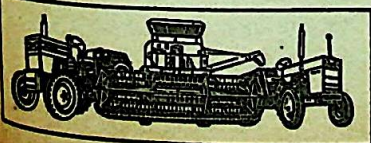
और अपने अनेक पड़ोसियों को उन की पवित्र गउओं का गोश्त खाने पर मजबूर किया था. इस तथ्य ने कि कामयाबी की घड़ी में उन के देशवासी एक दूसरे के ख़ून के प्यासे हो उठे थे, गांधी का दिल तोड़ दिया था.

एक और त्रासदी गांधी को धमका रही थी. धार्मिक आधार पर भारत का विभाजन उस सब के लिए चुनौती होगा, जिस के लिए वह लड़ते रहे थे. "भारत के टुकड़े करने से पहले तुम्हें मेरे शरीर के टुकड़े करने पड़ेंगे," उन्हों ने उद्घोष किया था.

कई दिनों तक वह श्रीरामपुर गांव में घूमते रहे थे, उस के वासियों से बातें करते रहे थे; ध्यान मग्न रहे थे, "आंतरिक आवाज़" की सम्मति की प्रतीक्षा करते रहे थे, जिस ने अकसर संकट की घड़ियों में उन के मार्ग को आलोकित किया था.

अब, अपनी मिट्टी की पट्टियों से मुक्ति पाने के बाद, उन्हों ने अपने अनुयायियों को अपनी झोंपड़ी में बुलाया. उन की अंदरूनी आवाज़ आख़िर बोल उठी थी. क्षेत्र के घृणा ग्रस्त गांवों की वह तपस्या यात्रा करेंगे.

कांग्रेस पार्टी और मुस्लिम लीग भारत के भविष्य के बारे में दिल्ली में अंतहीन बहसें करते रहे, उन्हों ने कहा. अगर रक्तपात और कटुता से अभिशप्त उन गांवों में वह "पड़ोसी-पन का दीपक पुनः प्रज्ज्वलित" कर सके, तो मुमकिन है, उस से सारे राष्ट्र को प्रेरणा मिल सके.

उन का जत्था तड़के सवेरे ही चल दिया; गांधी की १९ वर्षीया नातिन मनु ने सादा सा झोला तैयार कर दिया था, जिस में एक पेन और काग़ज़, सुई और धागा, मिट्टी का एक कटोरा और लकड़ी का चम्मच, उन का चरखा और उन के तीन गुरु—हाथी दांत के तीन बंदर जो "न कोई बुराई सुनते हैं, न कोई बुराई देखते हैं, न कोई बुराई बोलते हैं"—शामिल थे. एक सूती थैले में उस ने वे पुस्तकें भी रख दी थीं, जो गांधी के विभिन्न दर्शन ग्रहण को प्रतिबिंबित करती थीं—'भगवद्गीता,' 'क़ुरान,' 'प्रैक्टिस एंड प्रिसेप्टस आफ़ जीसस' तथा 'ए बुक आफ़ ज्यूइश थाट्स,' आदि.

गांधी के नेतृत्व में वह छोटा सा जत्था तलैयों तथा पान और नारिकेल कुंजों के बीच से होता हुआ धान के खेतों तक पहुंचा. झुकी हुई कमर वाले, बांस की छड़ी के सहारे तेज़ तेज़ क़दम उठाते उस ७७ वर्षीय व्यक्ति की अंतिम झलक पाने के लिए गांववासी दौड़े चले आए. धान के कटे खेतों के पार जब उन का जत्था ग़ायब हो गया, तो गांववासियों ने गांधी को अपनी ऊंची, बेसुरी आवाज़ में महान बंगाली गान गाते हुए सुना, "यदि तुम्हारी गुहार का उत्तर वे नहीं देते, तो अकेला चलो रे, अकेला चलो रे!"

"भारत नष्ट"

भाई बंधुओं के जिस रक्तपात को गांधी रोकने की आशा लगाए बैठे थे, वह सदियों से भारत की सब से बड़ी समस्या के स्थान के लिए भूख से स्पर्धा करता आ रहा था. भारतीय उपमहाद्वीप में जमे दोनों धर्म एक दूसरे से सर्वथा भिन्न थे. जहां इसलाम एक व्यक्ति, पैग़ंबर, और एक लिखित ग्रंथ, क़ुरान, में पूरी आस्था रखता है, वहां हिंदुत्व एक ऐसा श्रुत धर्म है, जिस का कोई प्रवर्तक नहीं था, कोई मतवाद नहीं था, न ही उस में संरचित पुजारी का कोई स्थान है. इसलाम में रचयिता अपनी रचना से अलग खड़ा है, अपनी कृति को आदेश देता हुआ, सब से ऊपर स्थित.

हिंदू के लिए रचयिता और उस की रचना एक है और अविभाज्य भी; इस लिए ईश्वर की उपासना उस के किसी भी रूप में हो सकती है. पशु, पूर्वज, मनीषी, आत्माएं, प्राकृतिक शक्तियां, अवतार, स्वयंभू—किसी भी रूप में. मुसलमानों के लिए, इस के बिलकुल विपरीत, केवल एक ही ईश्वर है, अल्लाह, और कुरान ने आस्थावादियों को अल्लाह को किसी भी आकार या रूप में चित्रित करने की मनाही कर रखी है.

किंतु हिंदू मुस्लिम मेल मिलाप के रास्ते में सब से बड़ी अड़चन हिंदू समाज को व्यवस्थित करने वाली पद्धति है—जातिवाद—और उस से जुड़ी हुई एक और अवधारणा—पुनर्जन्म. हिंदू का विश्वास है कि उस का शरीर उसकी आत्मा की शाश्वत्व की ओर यात्रा के बीच केवल एक अस्थायी चोला है. प्रत्येक मरणशील जीवन काल में संचित अच्छे और बुरे कर्मों से ही यह तय होता है कि आगामी जन्म में आत्मा योनि अनुक्रम में ऊपर की ओर संतरण करेगी या नीचे की ओर.

मुसलमानों के लिए, जिन के लिए इसलाम आस्थावादियों का एक तरह का भाईचारा है, यह समाज पद्धति एक अभिशाप है. इसलाम एक ऐसा धर्म है, जो सब का स्वागत करता है और मुग़ल शासकों के ज़माने में लाखों लोग धर्म बदल कर मस्जिदों की ओर आकर्षित हो गए थे. इन में से अधिकांश लोग अछूत थे, निम्नतम जाति के लोग, जो एक तरफ इसलाम के भ्रातृ भाव में उस स्वीकृति को तलाश रहे थे, जो उन के अपने धर्म में उन्हें किसी दूर के पुनर्जन्म में मिल सकती थी, दूसरी ओर वे उस कर से बचना चाह रहे थे, जो उन्हें काफ़िर होने पर देना पड़ता था. इस लिए सवर्ण हिंदू मुसलमान की उपस्थिति में खाने को छूते तक नहीं थे. किसी मुसलमान के किसी हिंदू रसोईघर में प्रविष्ट होने से रसोई भ्रष्ट हो जाती थी. किसी मुसलमान के हाथ का स्पर्श सर्वोच्च जाति के हिंदू, ब्राह्मण, को चिल्लाते हुए भागने और घंटों तक पाप प्रक्षालन और शुद्धिकरण के लिए बाध्य कर सकता था.

शुरू शुरू में भारतीय स्वाधीनता के लिए सारा आंदोलन बुद्धिजीवी विशिष्ट वर्ग तक ही सीमित रहा, जिस में हिंदुओं और मुसलमानों ने सांप्रदायिक फ़र्क को भुला कर एक साझे उद्देश्य के लिए साथ साथ कार्य करने की कोशिश की. लेकिन गांधी की कांग्रेस पार्टी, अपरिहार्यतः, बिना जाने बूझे, हिंदू स्वर ग्रहण करने लगी, जिस से मुसलमानों के मन में शंकाएं उठने लगीं: स्वतंत्र भारत में हिंदू बहुसंख्यक शासन में तो वे डूब कर रह जाएंगे.

उपमहाद्वीप में एक पृथक इसलामी राष्ट्र, पाकिस्तान, की रचना इस स्थिति से बचाव का एक ज़रिया नजर आने लगी. मुख्यतः मुस्लिम लीग द्वारा अंगीकृत यह विचार धीरे धीरे भारत की मुसलमान जनता की कल्पना को जकड़ता चला गया. कांग्रेस के बहुसंख्यक हिंदू नेताओं के अंधदेशभक्तिपूर्ण नज़रिए से यह विचार निरंतर पुष्टि प्राप्त करता रहा; हिंदू नेता अपने मुसलमान शत्रुओं की मांग को स्वीकार न करने के लिए पूरी तरह कटिबद्ध थे.

भारत के हिंदू और मुसलमानों के बीच बढ़ती इस प्रतिद्वंद्विता को हिंसा में बदल देने वाली घटना १६ अगस्त १९४६ को घटी, गांधी द्वारा पश्चात्ताप यात्रा की शुरुआत के लगभग पांच माह पूर्व. घटनास्थल था कलकत्ता, एक ऐसा महानगर, हिंसा और बर्बरता के लिए जिस की ख्याति बेमिसाल थी. एक कलकत्तावासी ने एक बार कहा था कि

कलकत्ता की झोपड़पट्टियों में किसी अछूत के घर पैदा होने का ही नाम नरक है. उन झोपड़पट्टियों में दुनिया का सघनतम इनसानी जमावड़ा मौजूद था—घोर ग़रीबी के बदबूदार जोहड़. हिंदू और मुसलमान वहां साथ साथ रहते थे, बिना किसी पैटर्न या कारण के.

मुस्लिम लीग द्वारा १६ अगस्त को 'सीधी काररवाई का दिन' घोषित करने के आह्वान के जवाब में और 'अगर ज़रूरत पड़े, तो सीधी काररवाई द्वारा अपने लिए पाकिस्तान प्राप्त करने' के अपने इरादे को सिद्ध करने के लिए मुसलमानों की भीड़, प्रभात के समय, लाठियां, लोहे की छड़ें, बेलचे भांजती झोपड़पट्टियों से निकल पड़ी. रास्ते में आने वाले हर हिंदू को उन्हों ने बड़ी निर्दयता से पीटा और लाशों को नालियों में फेंक दिया. भयभीत पुलिस दुम दबा कर भाग गई. देखते ही देखते नगर के बीसियों स्थानों से काले धुएं के ऊंचे ऊंचे स्तंभ ऊपर उठने लगे; हिंदू बाज़ार बुरी तरह जल रहे थे.

बाद में, उन के पड़ोस से हिंदुओं की भीड़ असहाय मुसलमानों की हत्या करने निकल पड़ी. जल्दी ही कलकत्ता पर गिद्धों का आधिपत्य हो गया. घिनौने भूरे झुंडों में वे आकाश में मंडराने लगे और महानगर के ५,००० मृतकों को नोच खाने के लिए उन पर टूटने लगे. मुसलमान बरसों से जो धमकी देते आ रहे थे—कि अगर उन्हें उन का राज्य नहीं दिया गया तो भारत विभीषिका की चपेट में आ जाएगा—वह एक भयावह यथार्थ में बदल गई थी.

उस ठंडे और प्रतिभाशाली वकील के लिए, जो एक चौथाई सदी से गांधी का प्रमुख मुस्लिम शत्रु चला आ रहा था, यह संभावना एक ऐसा औज़ार बन गई, जिस से वह भारत का विच्छेदन कर सकता था. १९४७ के नव वर्ष के दिन भारत के भविष्य की कुंजी गांधी या किसी भी अन्य व्यक्ति से ज्यादा मोहम्मद अली जिन्ना के हाथ में थी. भारत पहुंचने पर महारानी विक्टोरिया के परनाती को इसी कठोर और हठधर्मी मुस्लिम मसीहे सा सुलटना होगा.

अगस्त १९४६ में, बंबई में, उन्हों ने अपने अनुयायियों के सामने सीधी काररवाई दिवस के सबक़ों का मूल्यांकन किया था. विवर्ण होंठों को गंभीर मुसकान में दबाए, बींधती आंखों में दमित आवेश लिए, जिन्ना ने कांग्रेस और ब्रितानवियों के सामने बीड़ा पटक दिया था.

"या तो हम भारत का बंटवारा करवाएंगे," उन्हों ने कसम खाई थी, "या भारत को ही तबाह करवा देंगे."

गांधीवादी विकल्प

भारत में माउंटबेटन को यह पता लगने में देर नहीं लगी कि सरकार हालांकि कांग्रेस पार्टी और मुस्लिम लीग की सम्मिलित सरकार थी, फिर भी, वस्तुतः वह शत्रुओं का जमावड़ा थी और आपस में इस बुरी तरह से बंटी हुई थी कि उस के सदस्य एक दूसरे से बात तक नहीं करते थे. उस में होने वाले विभाजन को कोई नहीं रोक सकता था.

इस तरह की संभावना का सामना होने पर और हिंसा की सब ओर से आघात करने वाली रिपोर्टों को ध्यान में रखते हुए माउंटबेटन ने एक महत्वपूर्ण फ़ैसला किया. सत्ता हस्तांतरण के लिए लंदन में तय की गई तारीख़, जून १९४८—जिसे उन्हों ने ख़ुद एटली से स्वीकार करने को कहा था—निशाने से बहुत दूर थी. भारत के भविष्य के लिए उन्हें जो भी हल निकालना था, वह हफ़्तों में निकालने वाले थे,
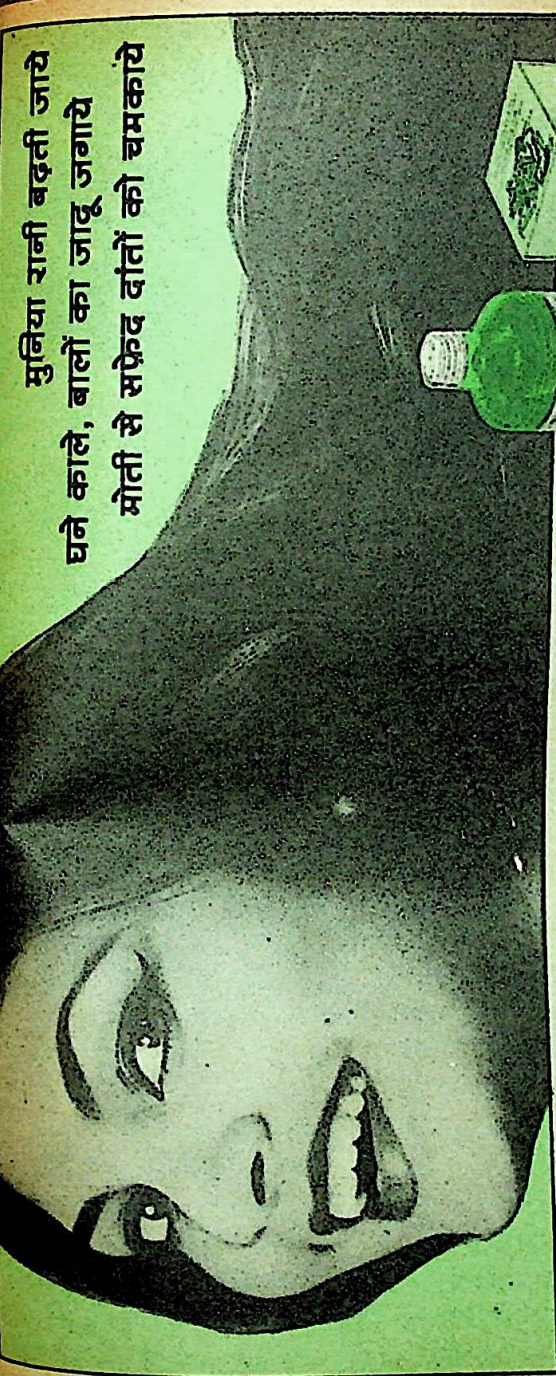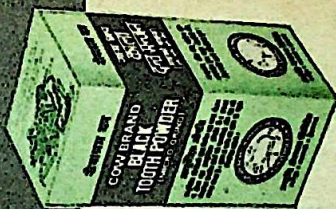
विशेष नव वर्ष उपहार

सर्वोत्तम के पाठकों के लिए

१२ रुपये मूल्य की यह प्रेरणामूलक पुस्तक आपके लिए मुफ़्त !

मुफ़्त

'जीना इसको कहते हैं' में आप पायेंगे संसार के कुछ सफल और महान व्यक्तियों के जीवन की झांकी. ऐसे जीवन चरित जो अंधेरी रात में जगमगाते ध्रुव तारे की तरह जीवन की उलझनों में खोये-भटके व्यक्ति को सही राह दिखाते हुए उन्हें सफलता की मंज़िल तक पहुँचने की प्रेरणा देते हैं. आपके परिवार में भी हर किसी को इन सत्य-कथाओं से प्रेरणा मिलेगी और उनमें जगेगा जीवन-संघर्ष में सफल होने के लिए आवश्यक आत्मविश्वास.

जीना इसको कहते हैं

उपहार प्राप्त करने की शर्त :
सर्वोत्तम रीडर्स डाइजेस्ट का वार्षिक सदस्य बननेवाले नये ग्राहकों को यह पुस्तक उपहार में मिलेगी—मुफ़्त !

सर्वोत्तम की एक प्रति का मूल्य है ६ रुपये. वार्षिक सदस्यता के लिए (साल के १२ अंकों के लिए) आप अदा करते हैं ७२ रुपये (डाक व पैकिंग के लिए ७ रु. अतिरिक्त). वार्षिक ग्राहक बनने के लिए नीचे के कूपन को भर कर पूरे वार्षिक शुल्क के साथ हमारे पास भेजिए.

आर्डर कूपन

सेवा में : सर्वोत्तम रीडर्स डाइजेस्ट, बी-१५ झिलमिल इंडस्ट्रियल एरिया, दिल्ली ३२.
कृपया 'जीना इसको कहते हैं' की मेरी मुफ़्त प्रति मेरे पास शीघ्र भेज दें और मुझे सर्वोत्तम का वार्षिक ग्राहक बना लें. वार्षिक शुल्क के ७९ रुपये मैं साथ में भेज रहा हूं.

नाम ____________________

पता ____________________

____________________ पिनकोड ________

पुराने सदस्यों के लिए विशेष सूचना :

पहले के वार्षिक ग्राहक अपनी सदस्यता का नवीकरण करने के लिए इस कूपन का इस्तेमाल न करें. आपके लिए एक विशेष आकर्षक उपहार योजना है जिसकी जानकारी आपको डाक द्वारा मिलेगी.

जवाहरलाल नेहरू : गांधी जी के राजनीतिक उत्तराधिकारी

महीनों में नहीं.

२ अप्रैल १९४७ को एटली को दी गई अपनी पहली रिपोर्ट में युवा एडमिरल ने दुःखभरी चेतावनी दी. "मैं केवल एक ही निष्कर्ष पर पहुंचा हूं," उन्हों ने लिखा, "वह यह कि अगर मैं ने जल्दी ही कोई काररवाई नहीं की, तो मुमकिन है, गृहयुद्ध की शुरुआत का सामना मुझे करना पड़े."

भारत के नेताओं से बातचीत करने के लिए माउंटबेटन ने क्रांतिकारी नीति का उपयोग करने का फ़ैसला किया था. औपचारिक मुलाक़ातों में, उन लोगों को भारत की समस्याओं के बारे में किसी हल को स्वीकार कराने के उन के सभी प्रयास विफल रहे थे. इस के बदले, अपने अध्ययन कक्ष के एकांत में, हर व्यक्ति से अलग अलग बात कर के, उन्हें उम्मीद थी, वह उन में एकता पैदा कर सकेंगे.

चार भारतीय इस बातचीत से संबद्ध हुए : गांधी, जिन्ना, जवाहरलाल नेहरू और वल्लभभाई पटेल. सब के सब मध्य वय को पार कर चुके थे. चारों ने अपनी उम्र का बेहतर हिस्सा ब्रितानवियों के खिलाफ़ आंदोलन करने और एक दूसरे से तर्क वितर्क करने में गुजारा था. चारों के चारों वकील थे, जिन्हों ने अपनी न्यायिक निपुणता ब्रिटेन की इन्स आफ़ कोर्ट में प्राप्त की थी.

सब से पहले नेहरू आए. गांधी द्वारा काफ़ी पहले से अभिषिक्त नेहरू कांग्रेस में निरंतर आगे बढ़ते रहे थे और चार बार उस की अध्यक्षता भी कर चुके थे. महात्मा ने यह बात साफ कर दी थी कि वह चाहते थे कि उन के बाद उन का उत्तरदायित्व नेहरू के कंधों पर ही आए.

माउंटबेटन और नेहरू दो मुद्दों पर तुरंत सहमत हो गए : रक्तपात से बचने के लिए एक त्वरित निर्णय आवश्यक था; और भारत का विभाजन एक त्रासदी होगी. फिर नेहरू ने अपना ध्यान गांधी की ओर मोड़ा, जो, उन्हों ने कहा, "भारत के शरीर पर लगे घावों के कारणों का निदान करने और पूरे शरीर के इलाज में भाग लेने के बदले, अपने हाथों में मरहम लिए, एक घाव से दूसरे की ओर उस के इलाज के लिए घूमते फिर रहे है."

नेहरू ने गांधी और उन के निकटतम साथियों के बीच बढ़ती दरार की एक झलक पेश कर के माउंटबेटन को अत्यावश्यक अंतर्दृष्टि प्रदान कर दी. अगर वह भारत के नेताओं को अपने देश को अखंड बनाए रखने के लिए राज़ी नहीं कर सकते, तो उन्हें उसे विभाजित करने को राजी करना होगा. और इस काम के लिए, उन की सारी उम्मीद कांग्रेसी नेताओं को उन के वयोवृद्ध परामर्शदाता से अलग कर सकने पर निर्भर करेगी.

फ़ोटो : रिफ़्लेक्स, लंदन
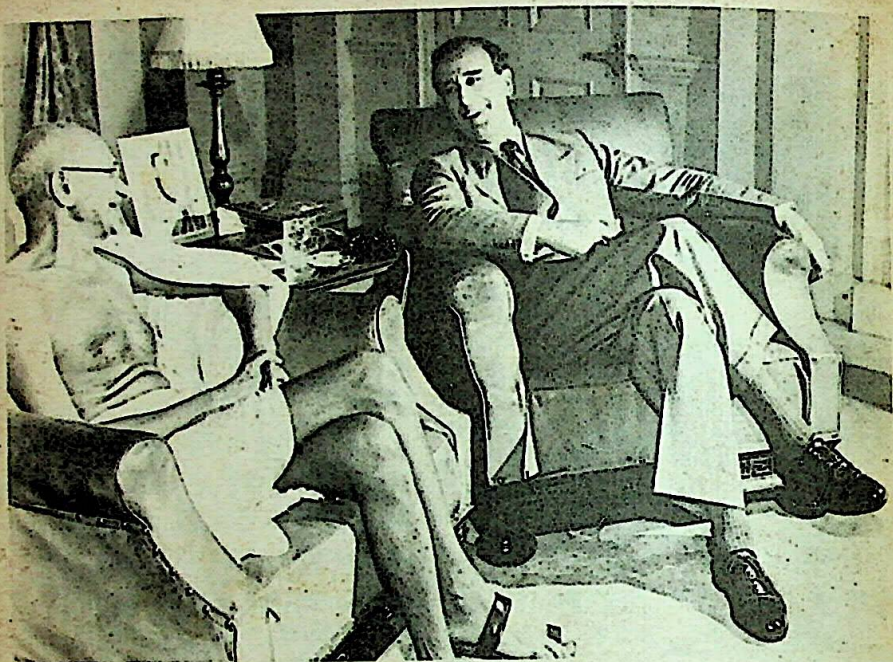
महात्मा गांधी और भारत के अंतिम वायसराय लार्ड माउंटबेटन : अनिवार्य टकराहट के बावजूद दोनों के बीच मैत्री भावना क्रमशः गहराती गई

गांधी माउंटबेटन से मिलने कई बार आए. उन की पृष्ठभूमियों की क़रीब क़रीब हर चीज़ इस बात की ओर संकेत कर रही थी कि दोनों व्यक्ति कभी सहमत नहीं होंगे. इस के बावजूद, आने वाले कुछ महीनों में शांतिवादी गांधी को, एक आत्मीय के शब्दों में, पेशेवर योद्धा की आत्मा में "कुछ नैतिक मूल्यों की अनुगूंज" मिली, "जो उन की अपनी आत्मा को आंदोलित करते थे." दूसरी ओर माउंटबेटन भी गांधी से इतनी संलग्नता महसूस करने लगे कि वह भविष्यवाणी कर सके कि "महात्मा गांधी का इतिहास में वही स्थान होगा जो क्राइस्ट और बुद्ध का है."

पहली बातचीत दो घंटों से भी ज़्यादा समय तक चलती रही. बीच में एक सीधी सी, लेकिन असाधारण चेष्टा हुई. बातचीत के अधबीच में दोनों व्यक्ति, माउंटबेटन की पत्नी के साथ, टहलते हुए फोटोग्राफ के लिए बग़ीचे में जा पहुंचे. भारतीय नेता को अपने दोनों हाथ दो युवा लड़कियों के कंधों पर रख कर चलना बड़ा प्रिय था, जिन्हें वह अपनी "बैसाखियां" कहा करते थे. अब, जब तसवीरें खिंच गईं. तो उस क्रांतिकारी ने, जो जीवन भर ब्रितानवियों के विरुद्ध संघर्ष करता रहा था, सहज भाव से ही अपना हाथ ब्रिटेन के अंतिम वाइसराय के कंधे पर रख दिया और उतनी ही शांति से, जैसे वह संध्या की प्रार्थना सभा में जा रहे हों, वह वाइसराय के अध्ययन कक्ष में दुबारा दाख़िल हो गए.

दूसरी मुलाक़ात के दौरान बातचीत गंभीर

फ़ोटो : डेविड डंकन

ख़ ले गई. एक ही चीज़ सब से ज़्यादा अहमियत रखती है, गांधी ने कहा. भारत का बंटवारा मत करो; शांति के पैग़ंबर ने गुज़ारिश की, चाहे ऐसा न करने का मतलब "ख़ून की नदियाँ" बहाना ही हो. स्तंभित माउंटबेटन ने गांधी को आश्वासन दिया कि बंटवारा उन के लिए आख़िरी हल ही होगा. लेकिन कौन कौन से विकल्प हो सकते थे?

गांधी के पास एक विकल्प था. बंटवारा न होने देने के लिए वह इतने बेताब थे कि वह बच्चे के टुकड़े करने के बजाय उसे मुसलमानों को सौंप देने को तैयार थे. २८ करोड़ हिंदुओं को मुस्लिम शासन के नीचे डाल दो, उन्होंने माउंटबेटन से कहा. जिन्ना को उन के इच्छित एक हिस्से के बदले पूरा भारत दे दो. उन्होंने कहा कि कांग्रेस "हर चीज़ से ऊपर बंटवारे से बचना चाहती है. इस से बचने के लिए वह कुछ भी करने को तैयार होगी.'

लेकिन गांधी ग़लत थे और उन की ग़लती इस बात का सबूत थी कि उन के और आस पास के लोगों के बीच फ़ासला कितना बढ़ता जा रहा है. भारत को अखंड बनाए रखने के लिए नेहरू और पटेल जितनी क़ीमत देने को तैयार थे, उस की भी एक सीमा थी और उन के दुश्मन जिन्ना को सत्ता दे दिया जाना उस क़ीमत से कहीं ज़्यादा बड़ी क़ीमत थी. टूटे दिल से गांधी को वाइसराय तक यह सूचना पहुंचानी पड़ी कि अपने साथियों को राज़ी करने में वह नाकामयाब रहे हैं.

उपमहाद्वीप की उलझन को सुलझाने की चाबी अंततः जिस व्यक्ति के हाथ में सिद्ध होने वाली थी, भारतीय नेताओं में वाइसराय के अध्ययन कक्ष में दाख़िल होने वाला वह अंतिम व्यक्ति था. चौथाई सदी बाद दूरस्थ पीड़ा की अनुगूंज को अब भी अपने स्वर में लिए लुई माउंटबेटन ने कहा था, "मोहम्मद अली जिन्ना से पहली बार मिलने तक मुझे इस बात का कतई अहसास नहीं था कि भारत में मेरा काम किस हद तक असंभव होने वाला था."

उन की मुलाक़ात की शुरुआत एक अप्रिय नाटकीयता से हुई, जिस ने सतर्क, स्वार्थी जिन्ना को बड़े मर्मस्पर्शी ढंग से प्रकट किया; जिन्ना के लिए कोई भी चेष्टा स्वतःप्रसूत नहीं हो सकती थी. अच्छी तरह जानते हुए कि माउंटबेटन दंपती के साथ उन की तसवीरें ली जाएंगी, जिन्ना ने एडवीना माउंटबेटन की ख़ुशामद के लिए एक छोटी सी मनोहारी पंक्ति को बड़ी सावधानी से कंठस्थ कर लिया था; उन्हें यक़ीन था तसवीर लेते समय एडवीना वाइसराय और जिन्ना के बीच खड़ी होंगी.

लेकिन बेचारे जिन्ना! बीच में एडवीना को नहीं, उन्हें ख़ुद खड़े होना पड़ा, फिर भी वह अपने आप को रोक नहीं पाए. "आह," वह चहके, "दो कांटों के बीच एक गुलाब."

भारतीय मुसलमान जनता के इस से ज़्यादा असंभाव्य नेता की कल्पना भी नहीं की जा सकती थी. मोहम्मद अली जिन्ना में केवल एक ही बात मुस्लिम थी और वह यह कि उन के माता पिता मुसलमान थे. वह शराब पीते थे, दाढ़ी मूंड़ते थे और हर जुम्मे को मसजिद से दूर रहते थे. जिन्ना के विश्व परिदृश्य में अल्लाह और कुरान के लिए कोई स्थान नहीं था. उन के राजनीतिक शत्रु गांधी को मुस्लिम धर्मग्रंथ की जिन्ना से कहीं ज़्यादा आयतें याद थी.

जिन्ना क़रीब १८२ सेंटी मीटर लंबे
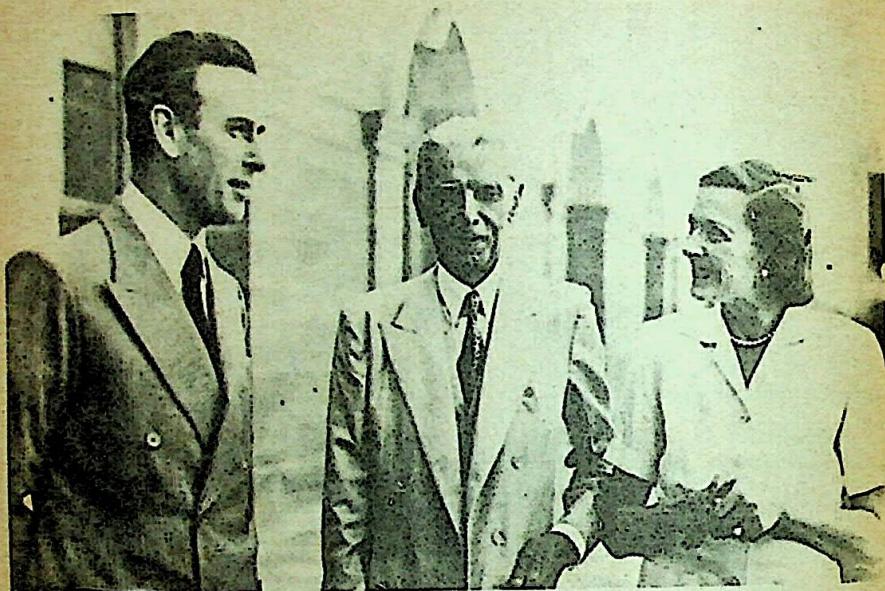
लार्ड और लेडी माउंटबेटन के साथ मुसलमानों के नेता मोहम्मद अली जिन्ना

थे, लेकिन उन का वज़न केवल ५४ किलो था. उन के चेहरे की त्वचा इतनी अच्छी तरह खिचीं हुई थी कि गालों की ऊंची सुस्पष्ट हड्डियां पारभासी चमक झलकाती लगती थीं. वह बडे दुबले पतले, अस्वस्थ व्यक्ति थे, जो उन के डाक्टर के शब्दों में, पिछले तीन साल से 'इच्छा शक्ति, व्हिस्की और सिगरेटों' के बल पर जीवित चले आ रहे थे.

अप्रैल १९४७ के पहले पखवाड़े में माउंटबेटन और जिन्ना के बीच छः महत्वपूर्ण मुलाक़ातें हुईं. वे संवाद बड़े महत्व के थे—जो कुल मिला कर १० घंटे से भी कम समय तक चले—जिन्हों ने अंततः भारत के दोहरे संकट के हल को निश्चित किया. माउंटबेटन ने उन संवादों में 'लोगों को सही काम करने को राज़ी करने की अपनी क्षमता की बहुत बड़ी अहम्मन्यता' से लैस हो कर भाग लिया, ''इस लिए नहीं कि मैं प्रत्ययकारी हूं, बल्कि इस लिए कि मुझ में इतनी प्रतिभा है कि तथ्यों को उन के स्वीकारात्मक रूप में पेश कर सकूं.'' जैसा कि बाद में उन्हों ने कहा, जिन्ना के इरादे को विचलित करने के लिए उन्हों ने 'हर वह चाल चली, जो मै चल सकता था, हर उस आग्रह का इस्तेमाल किया, जिस की मै कल्पना कर सकता था.' लेकिन सब बेकार. ऐसी कोई चाल नहीं थी, कोई तर्क नहीं था, जो जिन्ना को विचलित कर सकता.

जिन्ना की स्थिति की अनम्यता को देख कर माउंटबेटन स्तंभित रह गए. ''मै कभी इस बात पर यक़ीन ही नहीं कर सकता था.'' उन्हों ने बाद में याद करते हुए कहा, ''कि एक योग्य व्यक्ति, अच्छा पढ़ा लिखा, इन्स आफ कोर्ट में प्रशिक्षित, उस तरह से अपने

फ़ोटो : ब्रॉडलैंड्स आर्काइव्ज़

ह्लों दिमाग को बद कर सकने की क्षमता खता था जैसे जिन्ना ने कर रखा था. ऐसी ात नहीं है कि मुद्दा उन्हें नज़र नहीं आ रहा ा. नजर उन्हें आ रहा था, लेकिन उन्हों ने क तरह का शटर गिरा लिया था. पूरे मामले वही दुष्ट प्रतिभा थे. अन्य लोगों को कायल किया जा सकता था, जिन्ना को क़तई नहीं.''

उन की बातचीत का चरम बिंदु १० अप्रैल ो आया. माउंटबेटन के भारत आगमन से न सप्ताह से भी कम समय बाद दो घंटों क वह जिन्ना से गुज़ारिश, मिन्नत, तर्क और र्थना करते रहे कि वह भारत को अखंड बना ने दें. अपनी समस्त वाक्पटुता से उन्हों ने तरह की तसवीर जिन्ना के सामने चित्रित रने की कोशिश की : भारत कितना महान सकता है; विभिन्न जातियों और धर्मों के करोड़ लोग, एक केंद्रीय सरकार द्वारा एक रे से जुडे हुए; बढ़ते हुए उद्योगीकरण से ं कितनी आर्थिक शक्ति प्राप्त होगी; सुदूर के सर्वाधिक प्रगतिशील देश के रूप में त दुनिया के मामलों में कितनी महान मिका अदा कर सकेगा. यक़ीनन जिन्ना उस को तबाह नहीं करना चाहेंगे, उपमहाद्वीप एक तीसरे दर्जे की ताक़त का अस्तित्व ने नहीं देना चाहेंगे?

जिन्ना अटल रहे. माउंटबेटन ने बड़े बुझे न से निष्कर्ष निकाला कि उन का मामला एक मनोरोगी का मामला था, अपने पाकि-स्तान की प्राप्ति के लिए कृतसंकल्प.'

अगली सुबह अपने स्टाफ़ के सामने उन्हों जिन्ना से हुई बातचीत का पुनरीक्षण किया. फिर, बुझे मन से, वह अपने चीफ़ आफ़ स्टाफ़, लार्ड इस्मे, की ओर घूमे. उन्हों ने कहा कि भारत के बंटवारे की योजना तैयार करने का समय आ गया है.

मोहम्मद अली जिन्ना की कठोर मांगों को पूरा करने के लिए भारत के दो सर्वाधिक विशिष्ट प्रदेश पंजाब और बंगाल को काटना होगा. उस के परिणाम से बना पाकिस्तान एक भौगोलिक विपथन होगा. दो सिरों वाला एक राष्ट्र, १,६०० किलो मीटर भारतीय क्षेत्र द्वारा एक दूसरे से कटा हुआ. पाकिस्तान के एक भाग से दूसरे तक पहुंचने के लिए १० दिन की समुद्री यात्रा की ज़रूरत होगी और बिना रुके उड़ान के लिए महगे चार इंजिन वाले विमान की जरूरत होगी.

इस के अलावा, अल्लाह में समान आस्था के सिवा पंजाबी और बंगाली उतने ही भिन्न थे, जितने फिनलैंड के वासी यूनानियों से हो सकते है. बंगाली है छोटे क़द के, काले वर्ण के और चुस्त, जाति की दृष्टि से एशियाई जन का अंग. पंजाबी मध्य एशिया के घास के मैदानों के वंशज हैं और उन के नाक नक़्श में तुर्किस्तान, रूस, फारस तथा अरब के रेगिस्तान के अवशेष है. इतिहास, भाषा या संस्कृति के क्षेत्र में कोई भी ऐसा सेतु नहीं है, जिस से वे दो जातियां एक दूसरे से संपर्क कर सकतीं. पाकिस्तान के साझे राज्य में उन का परिणय संबंध तर्क के समस्त सिद्धांतों के विरुद्ध स्थापित किया गया संबंध होता.

पंजाब भारत के मुकुट का रत्न था. क्षेत्रफल में फ़्रांस का लगभग आधा, पंजाब उत्तर पश्चिम में सिंधु नदी से ले कर दिल्ली के बाहरी इलाक़ों तक विस्तृत है. यह चमकती नदियों और दूर नील क्षितिज तक लहराते समृद्ध खेतों का प्रदेश है, भारत के शुष्क विस्तार के बीच देवताओं द्वारा बख़्शा गया नख़लिस्तान.

इस का बंटवारा कल्पनातीत था. इस के १७,९३२ शहरों और गांवों के गली कूचों में

एक करोड़ ५० लाख हिंदू, एक करोड़ ६० लाख मुसलमान और ५० लाख सिख साथ साथ रहते थे. वे एक ही ज़बान बोलते थें. उन की आर्थिक समृद्धि मानव निर्मित चमत्कार पर आधारित थी, जिसे उस की प्रकृति के कारण ही विभाजित नहीं किया जा सकता था—यह चमत्कार था ब्रितानवियों द्वारा पूर्व से पश्चिम तक बिछाया गया नहरों का जाल, जिस ने पंजाब को भारत का अन्न भंडार बना दिया था. उन की सड़कें और रेल मार्ग भी इसी पूर्व पश्चिम पैटर्न पर बने थे. फिर भी, जहां कहीं भी उसे तय किया जाए, विभाजित पंजाब के सीमांत को उत्तर से दक्षिण की ओर जाना होगा, जिस से प्रांत की सिंचाई और यातायात प्रणालियां कट जाएंगी. इस से गर्वीली और लड़ाकू सिख जाति के भी दो भाग हो जाएंगे, जिस से कम से कम २० लाख सिख और उन की उपजाऊ ज़मीनें, जिन्हें उन्हों ने रेगिस्तान को साफ़ कर के तैयार किया था, तथा उन के कुछ पवित्रतम धर्म स्थल, एक मुस्लिम राज्य में रह जाएंगे.

उपमहाद्वीप के दूसरे सिरे पर बंगाल का बंटवारा भी एक और त्रासदी की संभावनाओं को जगा रहा था. बंगाल में, जिस की जनसंख्या ग्रेट ब्रिटेन और आयरलैड की संयुक्त जनसख्या से भी ज्यादा थी,. ३.५ करोड़ मुसलमान थे, जिन का अधिकांश पूर्व में रहता था, और तीन करोड़ हिंदू थे, जो अधिकतर पश्चिम में रहते थे.

बंगाल की हर चीज़ का—सड़कों, रेल मार्गों, संचार साधनों, उद्योगों का —रुख़ कलकत्ता की ओर था. अगर बंगाल को उस के पश्चिमी और पूर्वी अर्ध भागों में विभक्त किया गया, तो निश्चित था कि कलकत्ता पश्चिमी हिंदू भाग में रहेगा और पूर्व के मुसलमान एक दमघोंटू वातावरण में क़ैद हो जाएंगे. दुनिया की लगभग सारी की सारी पटसन पूर्वी बंगाल में पैदा होती थी, तो उसे रस्सी, बोरी और कपड़े में तबदील करने वाली सारी फैक्टरियां पश्चिम बंगाल में कलकत्ता के आस पास थीं. पूर्व के मुसलमान हिंदू पश्चिम में पैदा होने वाले चावल पर ज़िंदा रहते थे.

अंततः, विभाजन का इस से ज़्यादा तर्कहीन पहलू कोई नहीं हो सकता था कि जिन्ना का पाकिस्तान भारत के आधे से कुछ ही अधिक मुसलमानों को हिंदुओं के बहुसंख्यक शासन के तथाकथित पक्षपातों से मुक्ति दिलवाने वाला था. बाक़ी के मुसलमान शेष भारत में इस क़दर छितराए हुए थे कि उन को अलग किया ही नहीं जा सकता था. हिंदू सागर में द्वीपों की सी स्थिति वाले ये मुसलमान दोनों देशों के बीच होने वाले किसी भी युद्ध के पहले शिकार होंगे—पाकिस्तान के सही बरताव के लिए भारत के मुस्लिम बंधक. वस्तुतः अंग भंग के बाद भी ४.५ करोड़ मुसलमान भारत में रहेंगे, जिस से, उस के अपने गर्भ से निकले नए देश के बाद भी वह दुनिया का दूसरा सब से बड़ा मुस्लिम राष्ट्र रहेगा.

यदि अप्रैल १९४७ में लुई माउंटबेटन, जवाहरलाल नेहरू या महात्मा गांधी को एक असाधारण भेद की जानकारी होती, तो भारत विभाजन का ख़तरा टल सकता था. वह भेद एक फिल्म के सलेटी टुकडे पर मुहरबंद था: क्षय रोग द्वारा निगले जाते एक जोड़ी मानवीय फेफड़ों का एक एक्स रे. फेफड़े इतने ज्यादा क्षतिग्रस्त थे कि उन का स्वामी दो या तीन साल से ज़्यादा ज़िंदा नहीं रह सकता था. एक सादे लिफ़ाफ़े में सीलबंद वे एक्स रे बंबई के एक डाक्टर के दफ़्तर की अलमारी में बंद

थे और उन में चित्रित फेफड़े उस कठोर और अनम्य व्यक्ति के थे, जिस ने लुई माउंटबेटन के भारत को अखंड बनाए रखने के प्रयासों को निष्फल बना दिया था.

और इस तरह महात्मा गांधी की ज़िंदगी भर की तीर्थ यात्रा का अंतिम यातनादायी चरण शुरू हुआ. पहली मई १९४७ की शाम थी. फ़र्श पर पालथी मार कर बैठे, अपने गंजे सिर पर एक गीला तौलिया चिपकाए महात्मा गांधी अपने आस पास के लोगों में चल रही बहस को बड़े दुःखी मन से सुन रहे थे; बहस में संलग्न लोग कांग्रेस पार्टी की आला कमान के लोग थे.

नेहरू, पटेल और अन्य सभी का ख़याल था कि भारत को महासंकट से बचाने का एक ही तरीक़ा था—विभाजन. गांधी अपने मन और आत्मा से यह मानते थे कि वे लोग ग़लत सोचते हैं. अगर वे सही हैं तो भी गांधी ने अराजकता को बंटवारे से बेहतर समझा होता. उन की त्रासदी यह थी कि वह अपनी अंतश्चेतनाओं—जिन पर वे सब लोग पहले अकसर चलते रहे थे—के अलावा कोई विकल्प प्रस्तुत नहीं कर पा रहे थे. मगर, आज की रात गांधी पैग़ंबर नहीं रह गए थे. "वे मुझे महात्मा कहते हैं," बाद में उन्हों ने बड़ी कटुता से एक मित्र को बताया, "लेकिन मैं तुम्हें बताता हूं, वे मुझ से किसी झाड़ूदार जैसा बर्ताव तक नहीं करते."

पटेल माउंटबेटन के आगमन के पूर्व से ही विभाजन को स्वीकार कर लेने को तैयार बैठे थे. जिन्ना को पाकिस्तान दे दो, उन का तर्क था, वह स्थायी नहीं होगा.

नेहरू अंदर से विभाजित हो चुके थे. अपने अंतर्मन में उन्हें बंटवारे से वितृष्णा होती थी; इस के बावजूद उन का तार्किक विवेक उन्हें बता रहा था कि जवाब यही हो सकता है. जिन्ना के चले जाने से भारत में वह सशक्त केंद्रीय सरकार स्थापित हो सकेगी, जिस की नेहरू को, अपने सपनों के समाजवादी राज्य के निर्माण के समय ज़रूरत होगी. और इसी लिए, अंततः वह भी उस व्यक्ति के विरुद्ध खड़े हो गए, जिस के नक़्शे क़दम पर वह इतने लंबे अरसे से चलते आ रहे थे.

नेहरू और पटेल की आवाज़ एक पक्ष में होते ही शेष आला कमान भी बड़ी तेज़ी से सहमत हो गई. नेहरू को वाइसराय को यह सूचना देने का कार्य भार सौंपा गया कि कांग्रेस "अखंड भारत के विचार से उत्कट रूप से जुड़ी" रह कर भी बंटवारे को स्वीकार करेगी. गांधी, जिन के नेतृत्व में उन लोगों को विजय मिली थी, अकेले छूट गए.

माउंटबेटन भी जब बाद में मुड़ कर देखेंगे, तो जिन्ना को आंदोलित न कर पाना उन्हें अपने जीवन की अकेली बड़ी निराशा नज़र आएगी. एटली सरकार को लिखे अपने व्यक्तिगत पत्र में माउंटबेटन ने कहा था कि बंटवारा "महज़ पागलपन है" और 'अगर हर आदमी को इस बेतुके सांप्रदायिक पागलपन ने ग्रस न लिया होता, और सारे रास्ते बंद न कर दिए होते, तो मुझे कोई भी व्यक्ति यह रास्ता अख़्यितार करने के लिए राज़ी नहीं कर सकता था . . ." इस पागलपन भरे फ़ैसले की पूरी जिम्मेदारी, उन का विश्वास था, "दुनिया की नजरों में भारतीय कंधों पर आनी चाहिए, क्योंकि जो फ़ैसला वे करने जा रहे है, उस के लिए वे एक दिन बुरी तरह पछताएंगे.'

अबोधगम्य बुद्ध

बिस्तर में लेटी वह परिचित आकृति, कंधों

से नीचे सरकता गद्देदार ड्रेसिंग गाउन, नाक क सेतु पर टिका अर्ध चंद्राकार चश्मा, मुंह में ठुसा सिगार—लुई माउंटबेटन के जीवन क्षितिज पर वह बिंब स्थायी रूप से अंकित था.

माउंटबेटन की शुरू की यादों में चर्चिल की प्रतिमा थी—युवा, छबीले, फ़र्स्ट लार्ड आफ़ द एडमिरल्टी, माउंटबेटन के ड्राइंग रूम में बैठ कर उन के पिता वरिष्ठ माउंटबेटन , जो फर्स्ट सी लार्ड थे, से बतियाते चर्चिल की प्रतिमा. माउंटबेटन की माता ने एक बार मज़ाक़ मज़ाक में ही उन्हें चेतावनी दी थी कि वह व्यक्ति, जो एक दिन हिटलर के ख़िलाफ यूरोपीय प्रतिरोध शक्ति का प्रतीक बनने वाला था 'अविश्वसनीय' था. उस ने, माता की निगाहों में, एक ऐसा काम किया था, जो अक्षम्य पाप था. उस ने एक किताब पढ़ने के लिए ली थी और वापस नहीं की थी.

माउंटबेटन जानते थे कि चर्चिल उन्हें पसंद करते थे लेकिन, उन का ख़याल था कि "इस के कारण सब ग़लत थे. वह सोचते थे, मैं बड़ा दबंग हूं, योद्धा हूं. उन्हें बिलकुल पता नहीं था कि मेरा राजनीतिक नज़रिया क्या था." अब, सरकार के सामने विभाजन की योजना पेश करने के लिए नई दिल्ली से लंदन तक की उड़ान के बाद, एटली की गुज़ारिश पर वह चर्चिल से वह काम करवाने आए थे, जो वृद्ध टोरी के राजनीतिक जीवन के सर्वाधिक पीड़ादायक कार्यों में से एक होगा. वह योजना के लिए उन का व्यक्तिगत आशीर्वाद चाहते थे, जिस से चर्चिल के प्रिय साम्राज्य के घातक विघटन की शुरुआत हो जाएगी.

माउंटबेटन को चर्चिल से मिलने की बात कहते हुए एटली ने कहा था, "ब्रिटेन में चाबी विंस्टन के पास है. उन्हें शायद न तो मैं और न ही मेरी सरकार का कोई व्यक्ति राज़ी कर सकता है," एटली बोले थे. "लेकिन तुम उन्हें प्रिय हो. उन्हें तुम पर विश्वास है. तुम्हारे पास मौक़ा है."

चर्चिल भारत को उत्कट और अवास्तविक भावना से प्यार करते थे. जवानी के दिनों में अपनी रेजिमेंट, फोर्थ क्वींस ओन हुसार्स के एक छोटे अफसर के रूप में वह भारत गए थे और वहां उन्हों ने हर तरह का किपलिंगीय काम किया था. भारत से चले जाने के ४१ साल बाद भी वह हर महीने उस भारतीय को दो पौंड भेज रहे थे, जो उन की दो साल की अफ़सरी के दिनों में उन का बैरा रहा था.

साम्राज्यवादी स्वप्न में उन की आस्था अटल थी, और १९१० से ले कर अब तक उन्हों ने भारत को स्वाधीनता की ओर ले जाने वाले हर प्रयास का बड़ी दृढ़ता से विरोध किया था. "भारत की क्षति," उन्हों ने १९३१ में कहा था, "हमारे लिए अंतिम और घातक होगी. इसे उस प्रक्रिया का अंग होने से नहीं रोका जा सकेगा, जो हमें छोटे स्तर की शक्ति में बदल देगी." और यद्यपि वह और उन की कंज़रवेटिव पार्टी १९४५ में पराजित हो गई थी, हाउस आफ़ लार्ड्स में अब भी उन का बहुमत था. इस से उन्हें वह शक्ति प्राप्त थी कि अगर वह चाहते, तो पूरे दो साल के लिए भारत की आज़ादी को विलंबित कर सकते थे.

आंखों को आधा बंद किए चर्चिल समाधिस्थ रहस्यमय बुद्ध की सी मुद्रा में माउंटबेटन की दलीलों को सुनते रहे. लेकिन माउंटबेटन भारत से अपने साथ एक ऐसी दलील ले कर आए थे, जो वयोवृद्ध नेता को सचेत कर सकती थी. यह दलील थी कांग्रेस पार्टी का यह वचन कि अगर उन्हें तुरंत अधिराज्य स्थिति (डोमिनियन स्टेटस) दे दी जाए, तो वे इसे स्वीकार कर लेंगे. जैसे ही राज के

सर्वाधिक अप्रशम्य शत्रुओं के ब्रिटिश कामन-वेल्थ में बने रहने की संभावना सामने आई, चर्चिल का रुख़ स्पष्ट रूप से परिवर्तित हो गया; मुमकिन है उन का प्रिय साम्राज्य मर रहा हो, लेकिन फिर भी, कम से कम इतनी उम्मीद तो थी कि उस का कुछ न कुछ शेष बचा रहेगा.

उन्हों ने शक भरी नजर से माउंटबेटन की ओर देखा. क्या उन के पास लिखित रूप में कुछ था? माउंटबेटन ने बताया कि वह नेहरू का एक पत्र लाए हैं, जो अब एटली से पास है, जिस में यह संकेत दिया गया है कि कांग्रेस स्वीकार कर लेगी, बशर्ते कि अधिराज्य पद अविलंब प्रदान कर दिया जाए.

चर्चिल अपने बिस्तर में अधलेटे से हो कर सोचने लगे, उन का सिगार अब भी उन के दांतों के बीच दबा था.

अंततः, उन्हों ने कहा कि अगर माउंटबेटन सचमुच सभी भारतीय पक्षों से अपनी योजना की स्वीकृति को औपचारिक तथा सार्वजनिक स्तर पर प्राप्त कर लेते हैं, तो "सारा देश" उन के पीछे होगा. वह और उन की कंज़र-वेटिव पार्टी लेबर के साथ मिल कर संसद में इस ऐतिहासिक प्रस्ताव को शीघ्रातिशीघ्र पारित करवा लेंगे, जिसे माउंटबेटन ग्रीष्मावकाश से पहले पास कराना चाहते थे. भारत वर्षों या महीनों में नहीं, कुछ ही हफ़्तों, यहां तक कि दिनों में, आज़ाद हो सकेगा.

निर्मम कार्य

३ जून १९४७ को प्रमुख भारतीय नेताओं ने उपमहाद्वीप को दो पृथक प्रभुतासंपन्न राष्ट्रों में विभाजित करने पर अपनी सहमति की औपचारिक घोषणा की. भारत विभाजन की बात को ले कर गांधी ख़ुद बहुत दुःखी थे: "यह कितनी भयानक बात है, कितनी भयानक बात है," उन्हों ने कहा. लेकिन सार्वजनिक स्तर पर वह ख़ामोश रहे, और अनेक भारतीयों ने उन्हें इस ख़ामोशी के लिए कभी माफ़ नहीं किया.

कुछ समय बाद ही एक प्रेस सम्मेलन में माउंटबेटन से पूछा गया कि क्या सत्ता हस्तां-तरण के लिए कोई तारीख़ उन के दिमाग में है. "मुझे यह काम तेज़ी से निपटवाना था," बाद में याद करते हुए उन्हों ने कहा. "मैं जानता था, चीज़ों को बिखरने से बचाने के लिए मुझे संसद को मजबूर करना था कि वह ग्रीष्मा-वकाश से पहले पहले प्रस्ताव को पारित कर दे. हम एक ज्वालामुखी के कगार पर बैठे थे, एक फ्यूज्ड बम पर बैठे थे और हमें पता नहीं था, विस्फोट कब हो जाएगा." अचानक भावुकता के शिकंजे में आए स्वर में उन्हों ने एलान किया: "१५ अगस्त को सत्ता भारतीय हाथों में सौंप दी जाएगी."

तलाक़ के काग़ज़ात की तैयारी के लिए अब केवल ७३ दिन बाकी थे. और जैसा कि तलाक़ के अधिकांश मामलों में होता है, कटुतम विवाद धन को ले कर हुआ. लाहौर के किसी बाज़ार में खजूर फ़रोशों की तरह मोल भाव करते हुए, इस काम के लिए चुने गए दोनों वकील—एक हिंदू, एक मुसलमान—आख़िरकार इस बात पर सहमत हो गए कि पाकिस्तान को स्टेट बैंकों की नक़द राशि का १७.५ प्रति शत प्राप्त होगा और उसे राष्ट्रीय ऋण का भी वही प्रति शत अपने जिम्मे लेना होगा.

भारत के विशाल प्रशासनिक तंत्र की चल संपत्ति का विभाजन ८०-२० के हिसाब से होगा. पूरे भारत में सरकारी दफ़्तरों ने अपनी

कुरसियों, मेज़ों और झाडुओं की गिनती शुरू कर दी. कुछ कटुतम विवाद पुस्तकालयों में पड़ी पुस्तकों को ले कर हुए. शब्दकोशों को फाड़ कर आधा आधा कर दिया गया, ए से के तक भारत को, शेष पाकिस्तान को.

भारत के बंटवारे से संबंधित सब से ज्यादा उलझन वाले काम का भार उस व्यक्ति पर पड़ने वाला था, जिसे १९४७ की गर्मियों में इंगलैंड का सब से ज्यादा प्रतिभाशाली बैरिस्टर माना जाता था—सर सिरिल रैडक्लिफ़.

विडंबना यह थी कि रैडक्लिफ़ का चुनाव इस लिए किया गया था कि वह भारत के बारे में क़रीब क़रीब कुछ भी नहीं जानते थे. केंद्रीय समस्या यह थी कि पंजाब और बंगाल को भारत और पाकिस्तान में कैसे बांटा जाए. यह जानते हुए कि वे ख़ुद किसी रेखा पर सहमत नहीं हो सकेंगे, नेहरू और जिन्ना ने यह काम एक सीमा आयोग के हाथों में सौंप दिया था, जिस के अध्यक्ष एक प्रतिभाशाली अंगरेज बैरिस्टर होंगे, जिन्हें भारत का कोई अनुभव नहीं था. रैडक्लिफ़ इस के लिए आदर्श थे.

लेकिन १५ अगस्त की तारीख़ उन के लिए एक झटका थी. गति की निष्ठुर मांग के कारण रैडक्लिफ़ के पास इस के अलावा कोई विकल्प नहीं था कि वह एकाकी रह कर ही अपना काम करें. जिन महान अस्तित्वों का विभाजन वह कर रहे थे, उन से किसी तरह का मानवीय संपर्क न होने के कारण वह जीवन से उफनते हुए क्षेत्रों पर अपनी रेखा के प्रभाव की कल्पना करने पर मजबूर हो गए. वह धान या पटसन के उस खेत में कभी नहीं चल पाएंगे, जिसे उन की पेंसिल विखंडित करने जा रही थी. समुदायों को उन के जुताई वाले खेतों से, कारखानों को उन के लदाई घरों से, बिजलीघरों को उन के तारों से काट दिया जाएगा—सिर्फ़ इस लिए कि उन्हें इतनी जल्दी अपना काम पूरा करना था कि औसतन प्रति दिन उन्हें लगभग ४८ किलो मीटर लंबी सीमा रेखा का अंकन कर देना था.

जैसे जैसे गरमियों के सप्ताह गुज़रते गए, रैडक्लिफ़ निर्मम, कमज़ोर बना देने वाली गरमी से पीड़ित होने लगे. उन के कमरे नक़्शों, दस्तावेज़ों और पतले राइस पेपर पर टंकित रिपोर्टों से अटे पड़े थे. अपनी मेज़ पर झुके, आस्तीनों को ऊपर चढ़ाए, वह काम करते रहते, और वे काग़ज़ उन की पसीना पसीना बांहों से चिपक जाते, और जब वह उन काग़ज़ों को बांहों से अलग करते तो उन की सीली हुई बांहों पर कुछ शब्दों का अक्स छूट जाता; उन शब्दों का, जिन में से हरएक, शायद हज़ारों ज़िंदगियों के हताश निवेदनों का प्रतिनिधि होता.

रैडक्लिफ़ को बहुत पहले से ही मालूम था कि वह चाहे कुछ भी कर लें, जब उन की रिपोर्ट प्रकाशित होगी, तो रक्तपात और क़त्लेआम ज़रूर होगा. लगभग हर रोज़ उन्हें पंजाबी गांवों से रिपोर्टें मिल रही थीं—कभी कभी उन समुदायों की भी, जिन के भाग्य का फ़ैसला वह कर रहे थे—जिन में पीढ़ियों से साथ साथ रहते चले आ रहे लोग अचानक पागल हो गए लगते थे और हत्या का उन्माद लिए एक दूसरे पर टूट पड़े थे.

अन रिपोर्टों से आविष्ट रैडक्लिफ़ भारत के नक़्शे पर सीमा रेखा खींचते रहे.

एक आदमी का पुलिस दल

गांधी के सपनों में हमेशा एक ऐसे आधुनिक भारत का निर्माण रहा था, जो एशिया

और विश्व के समक्ष उन के सामाजिक आदर्शों की ज़िंदा मिसाल हो. उन के आलोचकों के लिए ये आदर्श एक सनकी बुड्ढे की मनोग्रस्तताओं का पचमेल संग्रह थे. लेकिन, उन के अनुयायियों के लिए, ये आदर्श बौराई दुनिया की मानव जाति को एक अद्भुत समझदार बुज़ुर्ग द्वारा दिया गया रक्षा पेटी थे.

महात्मा इस बात के पूर्ण विरोधी थे कि भारत उस तकनीकी और औद्योगिक समाज की उपलब्धियों की नक़ल करे, जिस ने उसे अपना उपनिवेश बनाया था. उन का तर्क था कि भारत की मुक्ति ''पिछले ५० वर्षों में उस ने जो कुछ सीखा है, उसे भुला देने'' में थी.

उन का आर्थिक घोषणा पत्र था : ''पारंपरिक प्राचीन औज़ार, हल और चरखा हमारी प्रतिभा और कल्याण के प्रतीक रहे हैं. हमें अपनी प्राचीन सादगी की ओर लौटना ही होगा.'' जब आदमी किसी ऐसे ट्रैक्टर की ईजाद कर लेगा, जो दूध, मक्खन और गोबर का उत्पादन कर सकता हो, तो, उन्हों ने कहा, वह भारत के किसानों से सिफ़ारिश करेंगे कि वे गाय के स्थान पर ट्रैक्टर को पालने लगें.

अब निकट आती आज़ादी के साथ उन के विचार नेहरू जैसे फ़ाबियन समाजवादियों और पटेल जैसे कट्टर पूंजीवादियों के लिए परेशानी का बायस बनते जा रहे थे. उन का विश्वास मशीनों, उद्योग, टेकनोलाजी, पश्चिम द्वारा भारत में लाए गए संपूर्ण तंत्र में था, जो गांधी की नज़र में एक अभिशाप था. उन्हें इस बात पर और भी खीझ हुई कि महात्मा उन से ज़ोर दे कर कह रहे थे कि वे उन सिद्धांतों की सार्वजनिक रूप से घोषणा करें, जिन के तहत, गांधी को उम्मीद थी, वे और नए भारत के अन्य नेता जीवन जिएंगे.

महात्मा का कहना था कि हर मंत्री को केवल खादी ही पहननी चाहिए, सादे से बंगले में रहना चाहिए, जहां कोई नौकर न हो. उस के पास कार नहीं होनी चाहिए. उसे कम से कम एक घंटा रोज़ कोई शारीरिक कार्य करने में लगाना चाहिए—सूत कातने में, या अन्न के अभाव को कम करने के ख़याल से अन्न और सब्ज़ियां उगाने में. गांधी को यक़ीन था कि ''स्वतंत्र भारत के किसी भी नेता को अपना पाखाना साफ़ कर के उदाहरण पेश करने में कोई हिचकिचाहट नहीं होगी.''

निष्कपट और निस्संदेह बुद्धिमान गांधी अकेले ऐसे व्यक्ति थे, जिन्हों ने आने वाली त्रासदी के भयावह आयामों को पहले से ही देख लिया था. ''ख़ून की होली खेल जाएगी,'' उन्हों ने कहा, ''हम जन्मदात्री मां के कोख में ही अपने आप को फाड़ डालेंगे.''

१५ अगस्त के बाद पंजाब में व्यवस्था बनाए रखने के ख़याल से माउंटबेटन ने ५५,००० व्यक्तियों का एक विशिष्ट बल तैयार करने का फ़ैसला किया था. लेकिन जब तूफ़ान आया, तो आगे बढ़ती वेगवान लहरों द्वारा तटवर्ती झोपड़ियों के उड़ते परखचों की तरह वे लोग एक ओर फेंक दिए गए. सच बात यह थी कि जो विभीषिका आने वाली थी, उस की विशालता और रूप के बारे में किसी ने भी पूर्वानुमान नहीं लगाया था—न नेहरू ने, न जिन्ना ने और न ही ख़ुद माउंटबेटन ने. उन की यह कमजोरी इतिहासकारों को विस्मित कर देने वाली और भारत के अंतिम वाइसराय पर आलोचना की लहर को केंद्रित कर देने वाली थी.

माउंटबेटन का विश्वास था कि उन आख़िरी दिनों में वास्तविक दुःस्वप्न पंजाब में नहीं, कलकत्ता में देखना पड़ेगा. अगर वहां की झोपड़पट्टियों और भीड़ भरे बाज़ारों में विपत्ति

पड़ेगी, क्योंकि, जिस प्रकार, उत्तर में मुसलमानों द्वारा वचनभंग करने पर वह आमरण व्रत करेंगे, उसी प्रकार कलकत्ता के हिंदुओं द्वारा उन के संदेश को नज़रअंदाज़ करने पर वह अनशन करने को तैयार थे.

यह उन की अहिंसक रणनीति का सार था: युद्धरत दलों के बीच एक अनुबंध और उस की पूर्ति के अंतिम गारंटी के रूप में उन की अपनी ज़िंदगी.

गांधी के तर्कों ने भीड़ को उलझन में डाल दिया. यह वचन देते हुए कि आगे की बातचीत वे भीड़ के प्रतिनिधियों से करेंगे, गांधी और उन के साथी एक ढहती हुई इमारत, हैदरी हाउस, में चले गए.

लेकिन चैन की घड़ियां बहुत थोड़ी रहीं. इमारत की गिनी चुनी खिड़कियों में से एक में एक पत्थर आ कर लगा और किरचें पूरे उस कमरे में छिटक गईं, जहां गांधी बैठे थे. उस के बाद तो एक बौछार ही हो गई, जिस ने बाक़ी की खिड़कियों को भी तोड़ डाला, और इमारत के जर्जर बाहरी हिस्से पर पत्थर किसी भारी ओला वृष्टि की तरह पड़ने लगे.

ऊपर से शांत गांधी कंधों को झुकाए, सिर को नीचा किए, कमरे के बीचोबीच पालथी लगाए बैठे थे और बड़े धीरज से चिट्ठियों का जवाब लिख रहे थे. इस के बावजूद गांधी के जीवन में एक भयानक मोड़ का बिंदु आ पहुंचा था. अगस्त के उस तपते अपराह्न में, भारत की लंबी स्वाधीनता यात्रा के अंत से कुछ ही घंटे पहले, उन के अपने देशवासियों की भीड़ पहली बार उन्हीं पर टूट पड़ी थी.

आधी रात

मानव ने जब अपनी कल्पना को पत्थर के शिल्प में ढालना नहीं सीखा था, तब से ही भारत के तटों पर शंख की ध्वनि प्रभातागमन का संकेत देती आ रही थी. अब, खादी के वस्त्र पहने एक व्यक्ति नई दिल्ली की ठसाठस भरी विधान सभा के ऊपर की दीर्घा के किनारे पर खड़ा करोड़ों इनसानों के लिए एक नए प्रभात के आह्वान की प्रतीक्षा कर रहा था. उस ने अपनी बांह में एक पेंचदार शंख दबा रखा था, जो गुलाबी और बैंगनी रंगों के बीच चमक रहा था.

उस के नीचे, स्पीकर के मंच पर, जवाहरलाल नेहरू थे. उन की सूती जैकेट के काज में वह फूल टंका हुआ था, जो, उन के द्वारा ब्रितानवी जेलों में बिताए गए नौ वर्षों को छोड़ कर, हमेशा उन के शालीन व्यक्तित्व का तमग़ा बना रहा था—एक ताज़ा तोड़ा गया गुलाब. दीवारों पर वाइसरायों के शाही तैल चित्रों को हटा दिया गया था; अब उन के सुनहरी चौखटों में केसरिया सफ़ेद और हरे तिरंगे लगे थे.

नेहरू के सामने, विधान सभा की भरी बेंचों पर, साड़ियों और खादी के वस्त्रों में, शाही लिबासों और डिनर जैकेटों में, उस रात जन्म लेने वाले राष्ट्र के प्रतिनिधि विराजमान थे. जिस जन गण का प्रतिनिधित्व वे कर रहे थे, वह ऐसी जातियों और धर्मों, भाषाओं और संस्कृतियों का मिला जुला रूप था, जिन की भिन्नता और विषमता की दूसरी मिसाल इस धरती पर नहीं थी: २७.५ करोड़ हिंदू (जिन में से ५ करोड़—यानी ब्रिटेन की आज की जनसंख्या के बराबर—अछूत थे); लगभग ४.५ करोड़ मुसलमान; ७० लाख ईसाई; ६० लाख सिख; १,००,००० पारसी तथा २४,००० यहूदी, जिन के पूर्वज बेबिलोन की जलावतनी के दौरान सोलोमन के मंदिर के

ने सिर उठा लिया, तो बड़े से बड़ा सैन्य दल भी उसे नियंत्रित नहीं कर पाएगा. नगर में अमन बनाए रखने के लिए उन्हें एक अन्य युक्ति की ज़रूरत होगी. शायद गांधी अपने व्यक्तित्व की ताकत और अहिंसा के आदर्श से वहां वह उपलब्धि कर सकें, जो सैनिक नहीं कर सकते थे.

पत्थरों की बौछार

अगस्त १९४७ में समृद्धि का एक छलावा कलकत्ता की असलियत को छिपाए था. मैदान की प्रभूत हरीतिमा, चौरंगी रोड पर बनी जार्जियन इमारतें और विशाल व्यावसायिक कंपनियों के दफ़्तर केवल ऊपरी मुलम्मा थे, किसी फ़िल्मी सेट की तरह झूठा और दिखावटी. उन के पीछे किलो मीटरों तक एक इन्सानी गंदा नाला फैला था, इस धरती के चेहरे पर सघनतम इनसानी जमावड़ों में से एक.

३० लाख लोग कलकत्ता में रहते थे, जिन में से ४,००,००० लोग ऐसे थे, जो भिखारी थे या काम के योग्य नहीं थे, और ४०,००० कोढ़ी थे. उन की भयावह झोपड़पट्टियां हिंसा के प्रत्येक रूप के पनपने का स्थान थीं. मुट्ठी भर चावल के लिए कलकत्ता में क़त्ल हो जाते थे. सीधी क़ारवाई के दिन की बर्बर हत्याओं के साथ उस हिंसा ने एक नया आयाम ले लिया था, जिस का आधार धार्मिक और जातिवादी कट्टरता थी, जो हिंदू और मुसलिम समुदायों को भड़का रही थी. अगस्त १९४६ से ले कर मुश्किल से ही कोई दिन ऐसा गया था, जब कोई विषमय सांप्रदायिक हत्या न हुई हो.

१३ अगस्त के अपराह्न में, तीन बजे के कुछ ही देर बाद, वह व्यक्ति, जो उन्हें किसी तरह शांत करना चाहता था, एक जर्जर पुरानी शेवरलेट गाड़ी में उन के बीच पहुंचा, बंडियां और लंगोटियां पहने एक उत्तेजित, क्रुद्ध भीड़ उस का इंतज़ार कर रही थी. वे सब हिंदू थे और उन में से अनेक ने सीधी काररवाई के दिन, मुसलमानों की भीड़ द्वारा अपने संबंधियों को हलाल तथा बीवी-बेटियों पर बलात्कार होते देखा था. उस की गाड़ी के पास आते ही वे गांधी का नाम चिल्लाने लगे. लेकिन तीन दशकों में पहली बार भारतीय मोहनदास गांधी का जयकार नहीं कर रहे थे. वे उन्हें कोस रहे थे. कार रुकी, और धीरे धीरे वह परिचित व्यक्तित्व उस में से प्रकट हुआ. नाक पर नीचे की ओर फिसलता चश्मा, शाल को थामे एक हाथ, दूसरा हाथ शांति की मुद्रा में उठा हुआ—वह ७७ वर्षीय दुबला पतला बूढ़ा आदमी चीख़ती हुई भीड़ के बीच अकेला आगे बढ़ने लगा.

"तुम लोग मेरी बुराई चाहते हो," गांधी ने ऊंचे स्वर में कहा, "सो मैं तुम्हारे पास आ गया हूं."

उन के शब्द सुन कर प्रदर्शनकारी स्तब्ध रह गए. "मैं यहां हिंदुओं और मुसलमानों की समान सेवा के लिए आया हूं." उन्हों ने आगे कहा. जिन मुसलमानों के मन में नोआखली क्षेत्र में अनेकानेक हिंदुओं का क़त्लेआम करने का अपराध बोध भरा हुआ था, उन्हों ने वादा किया था : अगर गांधी यह वचन दें कि १५ अगस्त को कलकत्ता के मुसलमानों की वह रक्षा करेंगे, तो नोआखली में एक भी हिंदू को नुक़सान नहीं उठाना पड़ेगा. उन के प्रयास में यह विचार भी अंतर्निहित था कि अगर कलकत्ता के हिंदुओं से उन की गुज़ारिश नाकाम रही और वे मार काट में जुट गए, तो इस की क़ीमत उन्हें गांधी की जान से चुकानी

विनाश से भाग कर आए थे.

भारत में स्विट्ज़रलैंड की जनसंख्या के बराबर कोढ़ी होंगे. बेल्जियम की जनसंख्या के बराबर ब्राह्मण; हालैंड को आबाद कर सकने लायक़ संख्या भिखारियों की होगी; १.१ करोड़ साधू महात्मा; दो करोड़ आदिवासी. एक करोड़ से भी अधिक भारतीय मूलतः यायावर थे, अपने वंशगत धंधों में संलग्न—संपेरे, नजूमी, मदारी, कुएं खोदने वाले, बाजीगर, जड़ी बूटियां बेचने वाले—जिस की वजह से उन्हें लगातार एक गांव से दूसरे गांव की ओर चलते रहना पड़ता था. प्रति दिन अड़तीस हज़ार भारतीय जन्म लेते थे, जिन में से एक चौथाई पांच साल की उम्र से पहले ही मर जाते थे. लगभग एक करोड़ अन्य भारतीय हर साल कुपोषण, अन्नाभाव तथा चेचक और हैज़े जैसी बीमारियों से, जिन का अधिकांश अन्य देशों में उन्मूलन हो चुका था, मर जाते थे.

जिस व्यक्ति पर यह सारा बोझ सब से ज़्यादा पड़ने वाला था, अब उठ खड़ा हुआ. उस के शब्द मर्मभेदी थे.

''कई साल पहले हम ने नियति से मुलाक़ात का समय निश्चित किया था,'' उस ने घाषणा की, ''और अब वह समय आ गया है, जब हम अपनी शपथ को पूरा करेंगे, पूरी तरह तो नहीं, फिर भी पर्याप्त रूप में. मध्य रात्रि के घंटे के साथ, जब दुनिया सोती है, भारत ज़िंदगी और आज़ादी में जागेगा.''*

नेहरू ने प्रस्ताव रखा, मध्य रात्रि के घंटे पर, वे सब खड़े होंगे और भारत तथा उस की जनता की सेवा की शपथ लेंगे. बाहर मध्य रात्रि के आकाश में एक तूफ़ानी लहर गड़गड़ा रही थी और मानसूनी बरसात उस इलाक़े में हजारों की तादाद में एकत्र हुए सामान्य भारतीयों को भिगो रही थी. बाइसिकलों को थामे, वे लोग बारिश में ख़ामोशी से खड़े थे; निकट आती घड़ी की विस्मयकारिता ने उन के उल्लास को शिथिल बना रखा था.

हाल में, स्पीकर के मंच के ऊपर लगी दीवाल घड़ी की सुइयां सरकते सरकते रोमन अंकों में लिखे १२ पर पहुंचीं : प्रतिनिधि मध्य रात्रि के इंतजार में, सतर्क चुप्पी साधे; सिर झुकाए बैठे थे.

जैसे ही बारहवें घंटे की अनुगूंज शांत हुई, दीर्घा में खड़े व्यक्ति की ओर से आई एक तानहीन चीख़ पूरे हाल में गूंज गई. उन भारतीय राजनीतिज्ञों के लिए, वह शंख ध्वनि उन के राष्ट्र के जन्म का संकेत स्वर थी. दुनिया के लिए, वह एक युग के अंत का संकेत थी.

ब्रितानवी साम्राज्य के मुकुट रत्न के भूरे एशियाई हाथों में पहुंच जाने से, जहां वास्तव में उस का स्थान था, अन्य कोई भी औपनिवेशिक साम्राज्य अब ज्यादा देर तक टिका नहीं रह सकता था. भारत की स्वाधीनता ने मानव के अनुभवों का एक अध्याय अटलनीय और निर्णायक रूप से समाप्त कर दिया था.

बदले की भावना

बंबई के दक्षिण पूर्व में, १९० किलोमीटर दूर स्थित पुणे के एक ख़ाली प्लाट में हो रहा समारोह, १५ अगस्त १९४७ को, भारत के नए अधिराज्य के ओर छोर में होने वाले हजारों समारोहों जैसा ही था—ध्वजारोहण समारोह. लेकिन एक छोटी सी बात ने पुणे में होने वाले समारोह को अन्य स्थानों से भिन्न बना दिया था. ५०० लोगों के समूह के मध्य में काम-

* पाकिस्तान की आज़ादी उसी दिन कराची की विधान सभा में पहले ही मनाई जा चुकी थी.

आप कितना जिएंगे ?

आने वाले कल को सब से ज़्यादा प्रभावित करता हैं आप के जीने का ढंग. क्या आप जानते हैं कि दीर्घजीवन के लिए आप को कैसे जीना चाहिए ?

मार्क्सवाद की पहली राजशाही

किम इल सुंग का दावा था कि उस ने विश्व स्तर पर मार्क्सवाद को राष्ट्रीय आत्मनिर्भरता का सिद्धांत दिया है. लेकिन उस के अपने देश उत्तरी कोरिया में जो कुछ हो रहा है, उस से क्या साबित होता है ?

सूर्यकलंक के रहस्य

क्या आप जानते हैं कि सूरज पर समय असमय उभर आने वाले इन दाग़ों के कारण ही आधुनिकतम स्काई लैब समय से बहुत पहले नष्ट हो गया . . .

पटियाले की तितली सराय

लोग तोते पालते हैं, हाथी पालते हैं, शेर भी पालते हैं, लेकिन इन्हों ने पाली हैं तितलियां

चमत्कारी ऐस्पिरीन

अगर सही समय और सही मात्रा में हो तो मृतसंजीवनी है, लेकिन चूक होने पर . . .

मंज़िलें और भी हैं . . .

मकालू शिखर के भीषण पाले ने न्यू ज़ीलैंड के उस दुस्साहसी अभियानी को अपंग कर डाला तो वह निकल पड़ा सागर मंथन को

सर्वोत्तम पुस्तक

आज़ादी आई आधी रात

भारतीय स्वतंत्रता प्राप्ति काल पर लिखी गई अत्यंत रोचक पुस्तक का दूसरा और अंतिम भाग

यह सब तथा अन्य बहुत कुछ

सर्वोत्तम के मार्च १९८२ अंक में

चलाऊ खंभे पर धीरे धीरे ऊपर की ओर सरकता हुआ ध्वज स्वाधीन भारत का ध्वज नहीं था. वह एक केसरिया रंग का त्रिकोण था और उस पर बने हुए प्रतीक ने, थोड़े से परिवर्तन के साथ, पूरे एक दशक तक यूरोप को त्रस्त किए रखा था—स्वस्तिक.

पुणे के उस केसरी ध्वज पर उस प्राचीन प्रतीक के होने के वही कारण थे, जो हिटलर के तृतीय रीख़ के झंडों पर होने के थे. ऐसा माना जाता था कि यह एक आर्य प्रतीक था, जिसे उपमहाद्वीप को अपने अधीन करने के लिए आई आर्य विजेताओं की पहली लहरें अपने साथ भारत लाई थीं. उस के चारों ओर एकत्र सब लोग राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से संबंध रखते थे, जो एक अर्ध फासिस्ट आंदोलन था, और इस के समर्थक अपने आप को प्राचीन आर्यों के वंशज मानते थे

भारत के बंटवारे से बुरी तरह दुखी, वे अपने मन में एक ऐतिहासिक स्वप्न को पाले हुए थे—सिंधु नदी से पूरब में बर्मा तक और तिब्बत से कन्याकुमारी तक फैले महान हिंदू साम्राज्य की पुनर्स्थापना का स्वप्न.

उन्हें गांधी और उन के हर काम से नफ़रत थी. उन के लिए, भारत का राष्ट्र नायक हिंदुत्व का सब से बड़ा दुश्मन था. अहिंसा के जिस सिद्धांत से वह भारत को स्वाधीनता की ओर ले आया था, उन की नजर में वह एक कायर का दर्शन था, जिस ने हिंदू जनता की शक्ति और चरित्र को दूषित कर दिया था. गांधी द्वारा उपदेशित भारत के अल्पसंख्यक मुसलमानों के प्रति भ्रातृ भाव और सहिष्णुता के लिए उन के सपनों में कोई जगह नहीं थी.

सब से ऊपर एक पाप था, जिस के लिए भारत के बुज़ुर्ग नेता को वे कभी माफ़ नहीं कर सकते थे. गांधी पर इस पाप का आरोप लगाया गया, यह बात महात्मा गांधी के जीवन के निर्ममतम वर्ष की अंतिम निष्ठुर विडंबना थी. उन का मत था कि सिर्फ गांधी ही, जो अंत तक भारत विभाजन का विरोध करते रहने वाले अकेले भारतीय नेता थे, पूरी तरह विभाजन के लिए ज़िम्मेदार थे.

पुणे में, उस अपराह्न में, एकत्र लोगों में सब से आगे जो व्यक्ति खड़ा था, वह था ३७ वर्षीय पत्रकार नाथूराम विनायक गोडसे. "भारत का विभाजन," उस ने अपने अनुयायियों को ऊंचे स्वर में बताया, "एक ऐसी विपत्ति है, जिस ने लाखों भारतीयों को भयावह यातनाओं का शाप दे दिया है. यह काम कांग्रेस पार्टी का है," उस ने कहा, "और सब से बढ़ कर, उस के नेता, गांधी का."

अपनी बात कह चुकने के बाद नाथूराम गोडसे ने ५०० लोगों की भीड़ के साथ ध्वज को प्रणाम किया. दिल पर दबा कर रखे हुए अंगूठों, सीने पर समकोण बनाती उलटी हथेलियों के साथ उन्हों ने 'मातृभूमि' की शपथ ली : "जिस ने मुझे जन्म दिया है, जिस में मैं बड़ा हुआ हूं, उस के लिए मैं अपना तन न्यौछावर करने को तत्पर हूं."

अगले अंक में

आज़ादी आई आधी रात : विजय और त्रासदी

हरियाणा
प्रगति के पथ पर

विज्ञापन फ़ीचर

अग्रणी प्रदेश—हरियाणा

—भजन लाल,
मुख्य मंत्री, हरियाणा
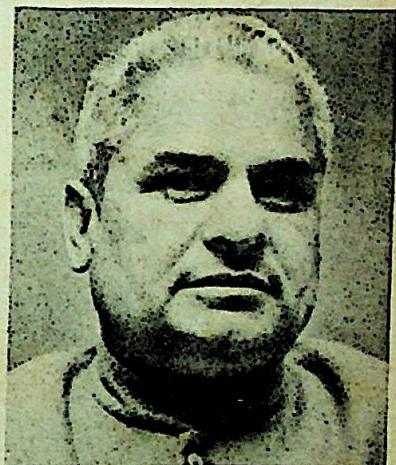
हरियाणा का अतीत गौरवमय था, भविष्य उज्ज्वल है. ऋषि-मुनियों की भूमि, ऋग्वेद, मनुस्मृति और गीता की जन्मभूमि तथा महाभारत और पानीपत जैसे निर्णायक युद्धों की रणस्थली हरियाणा में ही प्राचीन सभ्यता और संस्कृति के प्रथमांकुर प्रस्फुटित हुए. यही वह पावन प्रदेश है जहां भगवान श्री कृष्ण ने मोहग्रस्त अर्जुन को श्रीमद्भगवद्गीता द्वारा 'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन्' का अमर संदेश दिया था.

इस गरिमापूर्ण अतीत के अनुरूप ही हरियाणा ने अपने १५ साल की अल्पावधि में प्रगति युग में प्रवेश पा लिया है. कृषि हो अथवा उद्योग, पेय जल की समस्या हो अथवा बिजली का प्रबंध, हरियाणा ने हर क्षेत्र में आशातीत प्रगति की है. यह जन सामान्य को आर्थिक तथा सामाजिक न्याय सुलभ करवाने के लिए कृतसंकल्प है.

प्रधान मंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी के आशीर्वाद से हरियाणा को आगामी दो वर्षों में रावी-व्यास के पानी का हिस्सा, अर्थात् ३५ लाख एकड़ फ़ुट, भी मिलने लगेगा. यह पानी अभी तक पाकिस्तान को ही जा रहा था. प्रधान मंत्री ने पंजाब के क्षेत्र में १२२ किलोमीटर नहर के निर्माण के लिए २ वर्ष की अवधि निश्चित की है. हरियाणा में यह नहर पहले ही बन चुकी है. इस नहर के निर्माण से हरियाणा की ५.६७ लाख हैक्टेयर भूमि को सिंचाई योग्य पानी मिलेगा.

श्रीमती इंदिरा गांधी के २० सूत्री आर्थिक कार्यक्रम द्वारा कमज़ोर वर्गों के सामाजिक और आर्थिक उत्थान के लिए हरियाणा दृढ़ प्रतिज्ञ है. इसी से १,३१,००० एकड़ से अधिक फ़ालतू घोषित भूमि ३९,७७८ पात्र व्यक्तियों को बांटी गई है. इसी प्रकार २,२५,००० से अधिक बेघर व्यक्तियों को रिहायशी प्लाट दिए गए हैं. पिछड़े वर्गों के हितों की सुरक्षा के लिए एक अलग निगम

बनाया गया है. कमज़ोर वर्गों के लिए भी एक अलग निगम स्थापित किया गया है.

पर्यावरण को सुंदर बनाने और वन रोपण के लिए राज्य में विशेष अभियान चलाया जा रहा है ताकि यह प्रदेश 'हरियाला-हरियाणा' होने के नाम को सार्थक कर सके. १९८० में १.५० करोड़ वृक्ष लगाए गए थे और १९८१ में ६ करोड़. इस वर्ष १० करोड़ वृक्ष लगाने का लक्ष्य रखा गया है. विश्व बैंक की सहायता से एक सामाजिक वानिकी परियोजना कार्यान्वित की जा रही है, जिस में आशातीत प्रगति हुई है. हर्ष की बात है कि विश्व बैंक ने हरियाणा की कार्यकुशलता की भूरि-भूरि
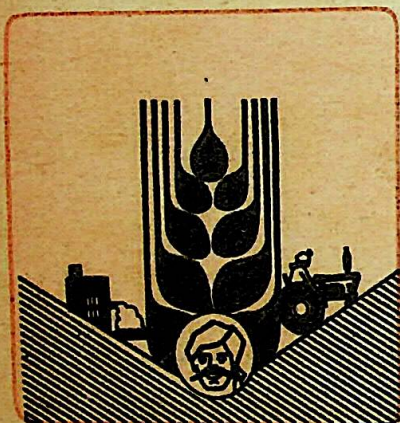
प्रशंसा की है. यह श्रेय हरियाणा को ही गया है कि जो नए वृक्ष लगाए जाते हैं उन में ८० प्रति शत जीवित रहते हैं. यह अनुपात देश भर में सब से अधिक है.

'खाद्यान्न भंडार' हरियाणा कृषि क्षेत्र में अन्य राज्यों के लिए स्पृहणीय क्षेत्र बन गया है. यहां का चावल देश में ही नहीं, अपितु विदेश में भी बहुत लोकप्रिय हुआ है. यहां के प्रगतिशील कृषकों में आधुनिक तकनीक, खाद, उन्नत बीज, कीटनाशक दवाइयां, ऋण तथा विपणन और भंडारण सुविधाएं अपनाने के प्रति पर्याप्त उत्साह है. इस बात का श्रेय उन को ही जाता है कि आज प्रदेश के अनुपजाऊ क्षेत्रों में भी लहलहाती फ़सलें खड़ी हैं. हरियाणा उत्तरी भारत का प्रथम राज्य है जहां प्राकृतिक विपदाओं से किसानों की रक्षा के लिए ३९ तहसीलों में गेहूं, धान तथा बाजरे की फ़सलों के लिए बीमा योजना लागू की गई है. सम्भवतः यही ऐसा राज्य है जहां मज़दूरी की दर मूल्य सूचकांक से संबद्ध है और अन्य राज्यों की अपेक्षा अधिक है.

विद्युत ऊर्जा, आधुनिकीकरण और समृद्धि का आधारस्तंभ है. बिजली के उत्पादन में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है. आज हर हरिजन बस्ती बिजली से सुप्रकाशित है. गांव की गलियों के अंधेरे कोनों और हरिजन परिवारों के अंधकारमय वातावरण का स्थान अब प्रकाश और उल्लास ले रहे हैं. विद्युतचालित नलकूपों से कृषि क्षेत्र में नई क्रांति आ गई है. उद्योग क्षेत्र में जो अभूतपूर्व प्रगति हुई है, उस के मूल में भी विद्युत संसाधनों की वृद्धि ही है.

औद्योगिक विकास हरियाणा में प्रगति चक्र के निरंतर गतिमान होने का साक्षी है. लघु उद्योग यूनिटों में सात गुनी वृद्धि और निर्यात का केवल ४.५० करोड़ रुपए से बढ कर एक अरब रुपए तक पहुंच जाना नवल स्वर्णिम उद्योग युग के शुभारंभ के द्योतक हैं.

सड़कें रक्तवाहनी धमनियां हैं. हरियाणा के गांवों में समृद्धशाली युग के सूत्रधार होने का श्रेय इन को प्राप्त है. २५० तक की जनसंख्या वाले सभी गांवों को पक्की सड़कों से जोड़ कर सुगम बनाने में अग्रणी रहना हरियाणा की एक अन्य महत्वपूर्ण उपलब्धि है

जल मार्गों को पक्का कर के हर जल कण का सदुपयोग करने और निर्जलीय क्षेत्रों में स्वच्छ पेय जल उपलब्ध करवाने में हरियाणा के भागीरथ प्रयत्न वस्तुतः सराहनीय हैं.

इन सब प्रयासों के परिणामस्वरूप हरियाणा आज संचार, उत्पादन आदि विकास के प्रत्येक क्षेत्र में अग्रणी प्रदेश है.

हरियाणा खादी एवं ग्रामोद्योग बोर्ड

☆ ग्रामीण अर्थ व्यवस्था को सुदृढ़ बनाता है.

☆ ग्रामों में ही मिलने वाले कच्चे माल के प्रयोग से जीवनपयोगी वस्तुएं तैयार कराने में सहायक होता है.

☆ कामगारों को अपने ही घरों में और उन के पास उपलब्ध हुनर की सहायता से ही काम दिलवाता है.

☆ निम्नलिखित उद्देश्यों के लिए ब्याज की केवल ४ प्रति शत वार्षिक दर के हिसाब से ऋण देता है, जो ५ से १० वर्षों में आसान किस्तों में वापस किया जा सकता है.

— भूमि, औजार व मशीनरी ख़रीदने के लिए.
— कर्मशाला व गोदाम बनाने के लिए.
— कार्यकारी पूंजी के रूप में.

☆ कच्चे माल की ख़रीद पर तथा बने माल की बिक्री पर बिक्री-कर से छूट भी दिलवाता है.

☆ द्वारा इस समय १३,००० से अधिक इकाइयां सहायता प्राप्त हैं, जिन में व्यक्तिगत, सहकारी समितियां तथा अन्य संस्थान संबंधी इकाइयां शामिल हैं.

☆ द्वारा सहायता प्राप्त इकाइयों में १४ करोड़ रुपए से अधिक का माल एक वर्ष में तैयार किया जाता है.

— इन इकाइयों में कोई ३५,००० लोगों को रोज़गार मिला हुआ है.

☆

हरियाणा खादी तथा ग्रामोद्योग बोर्ड सहायता प्राप्त करने वाले व्यक्तियों के प्रशिक्षण की भी व्यवस्था करता है और प्रशिक्षण के दौरान संबंधित व्यक्तियों को प्रति मास १२०/- रुपए देता है और इस संबंध में कच्चे माल की व्यवस्था भी करता है.

—चीफ एग्जिक्यूटिव

If you have
24 hour running water,
give us a thought

aUE

बहुधान्य हरियाणा

खाद्यान्न मानव जीवन की मूलभूत आवश्यकता है और वित्त तंत्र का मूलाधार कृषि. यह वही प्रदेश है जहां महाराजा कुरु ने स्वयं स्वर्ण हल चला कर नए कृषि युग का सूत्रपात किया था और प्रदेश को बहुधान्यक प्रदेश होने का गौरव प्राप्त था.

आज अपनी उसी ऐतिहासिक परंपरा के अनुरूप यह अन्न भंडार बन गया है. १५ वर्ष के अल्पकाल में हरियाणा न केवल खाद्यान्न उत्पादन में स्वावलंबी हो गया है अपितु केंद्रीय भंडार में भी पर्याप्त अनाज दे रहा है. इस का श्रेय यहां के कर्मठ और प्रगतिशील किसानों को जाता है जो खाद, बीज, कीटनाशक दवाओं, भंडारण की आधुनिक सुविधाओं और तकनीकों को उत्साहपूर्वक अपना रहे हैं.

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, कृषकों को कृषि विषयक आधुनिक विधियों से अवगत करवाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है. किसान उन्नत बीज और तकनीकी मार्गदर्शकों के लिए इस विश्वविद्यालय के ऋणी हैं. इस संस्था द्वारा चलाया गया 'भूमि से प्रयोगशाला' कार्यक्रम बहुत लाभदायक सिद्ध हो रहा है.

गत दो वर्षों में उर्वरकों की प्रति हैक्टेयर खपत ५४.२ किलोग्राम से बढ़ कर ६४.४ किलोग्राम और ट्रैक्टरों की संख्या ४८,९३९ हो गई है. रासायनिक उर्वरकों की कुल खपत २.३१ लाख टन तक पहुंच गई है. सिंचाई के लिए हर संभव साधन जुटाए जा रहे हैं. अब किसान कृषि के लिए अकेले वर्षा के पानी पर निर्भर न रह कर भूमिगत जल स्रोतों को भी प्रयोग में ला रहा है, जिस के लिए नलकूप प्रणाली बहुत प्रिय है. 'ट्रेनिंग एंड विज़िट' प्रणाली लागू करने से किसानों को बहुत

लाभ हुआ है.

अब १५०० परिवारों के बजाए प्रत्येक ८०० परिवारों के लिए एक कृषि विशेषज्ञ लगाया गया है. कृषि ज्ञान केंद्रों द्वारा डिमांस्ट्रेशन प्लाट भी बनाए गए हैं. आज हरियाणा का किसान एक प्रगतिशील कृषक के रुप में उभरा है.

क़िसानों को भूमि-सुधार तथा कृषि-उपकरण और बीज आदि ख़रीदने के लिए ऋण सुविधाएं भी उपलब्ध की जाती हैं. उत्तरी भारत में हरियाणा प्रथम राज्य है जिस ने बाढ़ सूखे जैसे प्राकृतिक प्रकोप से किसानों की सुरक्षा के निमित्त ३९ तहसीलों में गेहूं, धान तथा बाजरे की फ़सलों के लिए फ़सल बीमा योजना लागू की है. संचार सुविधाओं का विस्तार किया गया है. नई मंडिया स्थापित की गई हैं. किसान को अब फ़सल मंडियों में ले जाने और अपनी मेहनत का लाभकारी मूल्य प्राप्त करने के लिए १५ किलोमीटर से अधिक दूर नहीं जाना पड़ता.

सिंचाई सुविधाओं तथा किसानों के श्रम से सिंचित अल्पजलीय क्षेत्र भी शस्य श्यामला बन गए हैं.

चावल की उपज में छः गुणा, गेहूं की उपज में तीन गुणा और कपास की उपज में दो गुणा वृद्धि प्रशासन, किसानों तथा अन्य संस्थाओं के सामूहिक प्रयासों के परिणाम हैं. १९७९-८० और १९८०-८१ के दो सालों में पौने तीन लाख क्विंटल बढ़िया बीज और तक़रीबन ४.५ लाख टन खाद किसानों को बांटी गई है. यह प्रगति यद्यपि पर्याप्त उत्साहवर्द्धक है तथापि कृषि उत्पादन की वृद्धि की दिशा में हमारी कोशिशें जारी हैं. १९८१-८२ के लिए खाद्यान्न उत्पादन लक्ष्य ६६ लाख टन निर्धारित किया जाना इसी का द्योतक है. आशा है कि छठी पंचवर्षीय योजना के अंत तक उत्पादन ८० लाख टन तक पहुंच जाएगा. यह वृद्धि देश की अर्थ व्यवस्था में हरियाणा के कृषकों के महत्वपूर्ण योगदान का जीवंत प्रमाण है. ❖

समृद्धि का आधार - उद्योग

हरियाणा का उद्योग आज नए युग में प्रवेश कर रहा है. कभी यह औद्योगिक दृष्टि से पिछड़ा देश समझा जाता था, पर १९६६ के बाद सरकार उद्योग को बढ़ावा देने के लिए उद्यमियों को नेक प्रकार की सुविधाएं और प्रोत्साहन देने की षणा की. लघु उद्योग लगाने पर विशेष बल या गया. यहां तक कि गांवों में उद्योग लगाने के ए आय कर में शत प्रति शत छूट दी गई.

इन सब प्रयासों के परिणाम बहुत उत्साहवर्धक हैं. लघु उद्योगों की संख्या में सात गुणा वृद्धि है. आज लघु उद्योगों की संख्या ४,५०० से कर ३४,००० हो गई है. इन में ७,२०० से धिक उद्योग तो ग्रामीण क्षेत्रों में ही लगाए गए हैं न से २३,००० से भी अधिक शिक्षित युवकों स्वरोज़गार के अवसर प्राप्त हुए हैं. इतना ही , प्रवासी भारतवासियों को हरियाणा में उद्योग ाने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए उन के लिए , ऋण, मशीनरी, कच्चा माल, कर में छूट विपणन केंद्रों की सुविधा की भी व्यवस्था की है. उद्यमियों को समस्त सुविधाएं एक ही स्थान उपलब्ध करवाने के लिए आई: ए: जी: ना द्वारा 'वन विंडो सर्विस' चालू की गई है. प्रकार उद्यमियों की सुविधा और सहायता के प्रमुख ज़िला मुख्यालयों में ज़िला उद्योग केंद्र खोले गए हैं.

पंचकूला में सिलाई मशीन कांपलेक्स और सांपला में स्पोर्ट्स कांपलेक्स की स्थापना अनुषंगी उद्योग योजना के लाभकारी उपयोग का सजीव उदाहरण है. इन को स्थापित करने का विशिष्ट उद्देश्य यही है कि विशेष प्रकार के उद्योग के लिए आसपास उपलब्ध उद्यमियों को प्रशिक्षण देने के अतिरिक्त कच्चा माल, ऋण और तैयार माल के विपणन की सुविधा भी प्रदान की जा सके.

उद्योग क्षेत्र में जो दो अन्य क्रांतिकारी क़दम उठाए गए हैं, उन में से एक है 'सहायता प्राप्त क्षेत्र' जिस के अंतर्गत ग़ैर-सरकारी क्षेत्र को भी प्रोत्साहन दिया जाता है और हरियाणा सरकार कुछ हिस्से ख़रीद कर उन की आर्थिक तथा प्रशासनिक सहायता करती है. दूसरा है—विकास निगम की स्थापना, जो उद्यमियों को आधारभूत सुविधाएं प्रदान कर शीघ्रातिशीघ्र उद्योग लगाने में सहायता करती है.

उद्योग के मूलाधार हथकरघा उद्योग को अनुप्राणित करने के विचार से अनेक परियोजनाएं बनाई जा रही हैं ताकि सहस्रों बेघर और बेकार बुनकरों को रोज़गार के अवसर उपलब्ध करवाने के अतिरिक्त ग्रामीण अर्थ व्यवस्था को सुदृढ़ आधार प्रदान किया जा सके.

इन सब प्रयासों के परिणामस्वरूप हरियाणा राज्य उद्योग के क्षेत्र में आज बहुत आगे बढ़ चुका

मुख्य मंत्री द्वारा इंगलैंड स्थित प्रवासी भारतीयों को राज्य के उद्योगों में विनियोग का न्यौता

है. इस के केंद्रों में निर्मित माल देश विदेश में बहुत चाव से प्रयोग में लाया जाता है और सराहा जाता है. इस का साक्षात प्रमाण है निर्यात का ४.५० करोड़ रुपए से बढ़ कर १०० करोड़ रुपए तक पहुंच जाना. अतः वह दिन दूर नहीं जब हरियाणा एक विशाल निर्यात केंद्र बन जाएगा.

हरियाणा में उद्योगों की मांग को पूरा करने तथा कुशल तकनीशियन उपलब्ध करने के लिए ६६ सरकारी और ७५ गैर सरकारी प्रशिक्षण केंद्र चलाए जा रहे हैं जिन में प्रति वर्ष ७,४०० से अधिक नवयुवक-युवतियां प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं.

प्रदेश में युवक एवं युवतियों को व्यवसाय पूर्व प्रशिक्षण देने की स्कीम को पिछले वर्ष पूर्ण रूप से प्रारंभ किया गया. फ़ैक्टरियों के कारीगरों को भी उच्च स्तरीय प्रशिक्षण दिया जाता है. शीघ्र ही तीन नए उच्च स्तरीय ट्रेनिंग केंद्र यमुनानगर, सोनीपत तथा हिसार में खोले जा रहे हैं.

औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान फ़रीदाबाद, में एक बेसिक ट्रेनिंग सैल की भी स्थापना की गई है. प्रशिक्षण अधिनियम-१९६१ के अंतर्गत ३,००० के लगभग प्रशिक्षु राज्य की विभिन्न फ़ैक्टरियों में विविध व्यवसायों का प्रशिक्षण ले रहे हैं. प्रशिक्षण के दौरान हर प्रशिक्षु को १३० रुपए से २०० रुपए प्रति मास की दर से वज़ीफ़ा दिया जाता है. १९७५ से पहले इस स्कीम पर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया गया था.

राज्य के औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों में प्रशिक्षुओं का प्रशिक्षण पूर्णतः निःशुल्क है. सभी दाख़िल प्रशिक्षुओं में से ३३.३३ प्रति शत को २५ रुपए मासिक की वृत्ति दी जाती है. अनुसूचित जातियों, भूतपूर्व सैनिकों तथा उन पर आश्रित प्रशिक्षुओं को क्रमशः ४५ रुपए, १०० रुपए और ४० रुपए की मासिक वृत्ति दी जाती है. अगर किसी भूतपूर्व सैनिक का आश्रित व्यक्ति छात्रावास में रहता है तो उसे ४० रुपए प्रति मास की अपेक्षा ७५ रुपए प्रति मास की वृत्ति दी जाती है. ◆

संस्थागत वित्त : नई दिशा

आज के इस द्रुतगामी युग में क्रांति की अग्रदूत वित्त संस्थाएं राज्य की अर्थ व्यवस्था को अनुप्राणित करने के संदर्भ में विशेष महत्व रखती हैं. संस्थागत वित्त एवं ऋण नियंत्रण विभाग की स्थापना कृषि तथा अन्य संबद्ध प्राथमिक क्षेत्रों में अबाध धन प्रवाह को सुनिश्चित करने के आशय की द्योतक है. ग्राम अंगीकरण और क्षेत्र विकास की महत्वाकांक्षी योजनाएं इस दिशा में नितांत नवल प्रयास हैं. ग्राम अंगीकरण योजना के अंतर्गत सभी ऋण सुविधाएं एक ही स्थान पर उपलब्ध करने की व्यवस्था है. कृषकों को आधुनिक कृषि तकनीकों से अवगत करवाने के अभिप्राय से कृषि विकास शाखाओं में तकनीकी कक्ष खोले गए हैं. बैंकों और प्रशासन के सामूहिक प्रयास पर्याप्त उत्साहवर्धक रहे हैं और मार्च १९८० तक कुल ३०० करोड़ रुपए में से २०० करोड़ रुपए की राशि कृषि तथा अन्य संबद्ध प्राथमिक कार्यों, लघु और ग्रामोद्योग तथा स्वरोज़गार उपलब्ध करवाने तथा शिक्षा आदि क्षेत्रों में निविष्ट की गई.

भूमिहीन श्रमिकों तथा अनुसूचित जातियों के लिए ग्राम आवास एवं उत्पादक ऋण स्कीम के अंतर्गत ४ प्रति शत की नाममात्र ब्याज दर पर ऋण देने तथा ग्राम उद्योगीकरण कार्यक्रमों के अंतर्गत मत्स्यपालन और लघु डेरी उद्योग के लिए धन व्यवस्था करने की योजना है. अनुसूचित जातियों के सदस्यों को अपना कारोबार चलाने के लिए वाणिज्यिक बैंकों द्वारा ४ प्रति शत की सांतर ब्याज दर पर ऋण देने का भी प्रस्ताव है. सांतर ब्याज दर स्कीम के अंतर्गत ५०,००० लोगों को ४ प्रति शत रियायती

ब्याज दर पर ६.८० लाख रुपए की राशि दी गई जिस में से ५४% राशि अनुसूचित जातियों के २६,००० सदस्यों को दी गई.

वाणिज्यिक बैंक अतिवर्षा और अनावृष्टि आदि प्राकृतिक आपदाओं के अवसर पर कृषकों के सहायक बनते हैं. राज्य के दूरस्थ और दुर्गम क्षेत्रों में अनिवार्य वस्तुओं का वितरण करने वाले निगम भी इन संस्थाओं से वित्त सहायता प्राप्त करते हैं.

विश्व बैंक ग्रुप की सहायता से हरियाणा में राष्ट्रीय बीज, कृषि विस्तार, कपास विकास आदि से संबद्ध पांच बड़ी परियोजनाएं चल रही हैं. सभी दिशाओं में सतत प्रयासों के फलस्वरूप लगभग ८० प्रति शत ऋणों का उपयोग प्राथमिक क्षेत्रों के लिए किया गया है जो संभवतः देश भर में सर्वाधिक है. आधुनिक समाज वित्त संस्थाओं के अस्तित्व व महत्व को स्वीकार रहा है और अखिल भारतीय स्तर पर प्रति २१,००० जन संख्या पर एक बैंक की औसत के मुक़ाबले हरियाणा के ग्राम्य प्रदेशों में १४,००० के लिए एक बैंक है और निकट भविष्य में यह संख्या १०,००० हो जाने की आशा है.

समाज के दलित, पीड़ित, और उपेक्षित वर्गों के जीवन स्तर के उन्नयन और उन्हें रोज़गार के अधिक अवसर उपलब्ध कराने के विचार से सभी ज़िलों में बनाई गई ज़िला ऋण योजनाएं वाणिज्यिक, प्रादेशिक और सहकारी बैंकों को सहायता से क्रियान्वित की जा रही हैं. क्षेत्रीय तथा आर्थिक असमानताएं दूर करने के लिए भिवानी, हिसार, जींद, महेंद्रगढ़ और मेवात क्षेत्र की उच्च प्राथमिकता दी गई है.

भारतीय रिज़र्व बैंक, कृषि व ग्राम विकास निगम, कृषि वित्त निगम आदि अखिल भारतीय वित्त संस्थाएं और वाणिज्यिक बैंक हरियाणा के निर्धन और ग्रामीण लोगों की आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए वित्तीय सहायता दे रहे हैं.

सामूहिक ऋण कार्यक्रमों और परामर्श सेवाओं द्वारा और ६०,००० तक के कृषि ऋणों के पंजीकरण और स्टांप शुल्क से छूट उपलब्ध होने पर ग्राम्य जन में नव जीवन का संचार हुआ है.

चिकित्सा सुविधा का विस्तार

एक समय था जब हरियाणा के देहातियों को छोटे-मोटे इलाज के लिए शहरों की ओर भागना पड़ता था. चिकित्सा सुविधाओं के अभाव के कारण उन की स्थिति बड़ी दयनीय हो जाती थी. लेकिन पंदरह वर्ष का समय हरियाणा के इतिहास में युगांतकारी समय माना जाता है.

अब गांव-गांव में अस्पताल तथा डिस्पेंसरियों का एक जाल सा बिछा दिया गया है. १९६६ में केवल ८१ डिस्पेंसरियां और ५१० उपकेंद्र सेवारत थे. तहसील स्तर पर भी कई स्थानों पर अस्पताल भवन तक नहीं थे. केवल तीन मुख्य शहरों, अंबाला, करनाल और हिसार में अस्पतालों में विशेषज्ञ डाक्टरों की सुविधाएं थीं. आज प्रदेश में ५२ अस्पताल, ८९ प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र, २१ उपस्वास्थ्य केंद्र, १६९ डिस्पेंसरियां और १,१४० उपकेंद्र कार्य कर रहे हैं. पहले प्रति व्यक्ति चिकित्सा खर्च १.३३ रुपए होता था जबकि आज प्रति व्यक्ति १८ रुपए खर्च हो रहे हैं.

पिछले दो वर्षों में ये सुविधाएं तेज़ी से पहुंचाने के लिए विशेष कार्यक्रम बनाए गए. बहु उद्देश्यीय कार्यकर्ता योजना सारे राज्य में चल रही हैं. प्रत्येक सात हज़ार की आबादी पर एक पुरुष एवं महिला कार्यकर्ता उपलब्ध है. इस उद्देश्य से लगभग २,७०० चिकित्सा कर्मचारियों को प्रशिक्षण दिया गया.

बच्चों पर देश का भविष्य निर्भर करता है. इस लिए उन के स्वास्थ्य की रक्षा के लिए स्कूलों में विशेष स्वास्थ्य रक्षक योजना लागू की गई है. स्कूल में बच्चों की नियमित रूप से जांच की जाती है. राज्य के सभी राज्य मार्गों पर दुर्घटना से पीड़ित लोगों को तुरंत राहत पहुंचाने के लिए आपात क्लिनिक खोले गए हैं. ❖

प्रगति की गति

हरियाणा राज्य कृषि व विपणन बोर्ड
चंडीगढ़

१. गठन	१ अगस्त १९६९.
२. स्थापित किए	८८ प्रधान यार्ड एवं ९२ उप-यार्ड, जबकि १९६९ में इन की संख्या क्रमशः ६१ व ६८ रही. ५८ क्रय केंद्र भी कार्यरत.
३. मंडी समितियों के माध्यम से मंडी शुल्क संग्रह	१२७९.२२ लाख रुपए १९८०-८१ में, जबकि १९६९-७० में १६१.९८ लाख रुपए. १९८१-८२ में नवंबर ८१ तक ९२६.८२ लाख रुपए
४. कुल भंडारण क्षमता की उपलब्धि	२४ स्थानों पर २,०२,५०० मीट्रिक टन, जो १९६९ में शून्य थी.
५. विश्व बैंक की मदद से विकासाधीन	२६ बाज़ारों की पूंजीगत लागत रु. २३.४३ लाख; १९ पर काम प्रगति पर है.
६. हरिजनों और भूतपूर्व सैनिकों के लिए प्लाटों का आरक्षण	बोर्ड द्वारा स्थापित की जानेवाली नई मंडियों में बूथों के लिए निर्धारित बड़े प्लाटों का ५ प्रति शत नीलामी द्वारा हरिजनों में आवटन के लिए आरक्षित, भू. पू. सैनिकों के मामले में आलोच्य आरक्षण १० प्रति शत.
७. मंडियों में सुविधाएं जुटाने के लिए किया गया कुल व्यय	१९८०-८१ में ८.०८८५ लाख रुपए, जबकि १९६९-७० में ०.३७१६ लाख रुपए.
८. मंडियों के चरणबद्ध विकास के मास्टर प्लान का व्यय	१६४.६२ करोड़ रुपए की लागत से १४२ मंडियां.

गया लाल, विधायक
अध्यक्ष

गौरवमय अतीत से सुनहरे भविष्य की ओर

देशोस्ति हरियानाख्यः पृथिव्या स्वर्गसन्निभः' अर्थात हरियाणा नामक प्रदेश इस भूतल पर साक्षात स्वर्ग है. पौराणिक मान्यतानुसार यहीं पर सृष्टि की उत्पत्ति हुई. इसी पावन प्रदेश के सरस्वती तथा हषद्वती नदियों के तंटों पर आर्य सभ्यता संस्कृति प्रस्फुटित, पल्लवित और पुष्पित हुई. यही वह भूभाग है, जहां हिंदु धर्म और समाज का वास्तविक स्वरूप सुनिश्चित हुआ. मनु स्मृति की जन्मस्थली, महाभारत की युद्धस्थली है यह और इसी पुनीत धरा पर भगवान श्रीकृष्ण ने 'श्रीमद्भगवद्गीता' का दिव्य संदेश दिया.

वैदिक काल से ही यह प्रदेश साहित्य सृजन का केंद्र रहा है. संस्कृत के प्रसिद्ध कवि बाणभट्ट स्थानेश्वर के दरबारी थे और उन के प्रमुख काव्य ग्रंथों कादंबरी व हर्षचरितम् का प्रणमन यहीं पर हुआ. यही वह प्रदेश है जहां सूरदास सरीखे महाकवियों ने जन्म लिया. यहीं पर जैन और नाथ कवियों ने श्रेष्ठ साहित्य रचना द्वारा आदि हिंदी साहित्य को समृद्ध किया. गुप्तकाल में हरियाणा भारतीय सभ्यता संस्कृति का केंद्र था. इसी काल में स्थानेश्वर का महत्व बढ़ा. सुविख्यात चीनी यात्री ह्यूनसांग ने इस प्रदेश की समृद्धि और संस्कृति की भूरि-भूरि प्रशंसा की है. स्थानेश्वर साहित्य, दर्शन एवं कला का प्रमुख केंद्र था, जिस की सुख समृद्धि का हर्षवर्धन के राज्यकवि बाण-भट्ट ने 'हर्षचरितम्' में इस प्रकार विशद् और सूक्ष्म विश्लेषण किया है:

"ऋषिगण इसे तपोवन कहते हैं, लास्यक और अभिनेता इसे संगीतशाला मानते और शत्रु इसे यमपुरी. याचकों के लिए यह चिंतामणि था, तो सैनिकों के लिए रणस्थली. छात्रों के लिए गुरुकुल तो गायकों के लिए गंधर्वपुरी. वैज्ञानिक इसे विश्वकर्मा का मंदिर मानते तो वणिक कुबेरपुरी. चारण इसे द्यूतागार कहते और सज्जन इसे तीर्थ-

राज. पथिक इसे गंतव्य मानते तो धनार्थी मणि मुक्ताओं का भंडार. भिक्षु इसे बौद्ध विहार कहते तो सौंदर्य प्रेमी अलकापुरी. गायकों और चारणों के लिए यदि यह महोत्सवमही थी, तो ब्राह्मणों के लिए वैभव सरिता और कल्प तरु.''

हर और हरि का प्रदेश हरियाणा सदा से ही वीर भूमि रहा है. कृषि पशुपालन और सैन्य सेवा में यहां के वासियों की विशेष रुचि होने के कारण यह प्रारंभ से बहुधान्यक और धन धान्य से भरपूर रहा है और आज भी है. स्वतंत्रता संग्राम में हरियाणावासियों के बलिदान अविस्मरणीय हैं.

हरियाणा अपनी सांस्कृतिक ख्याति और पुरातात्विक महत्व के लिए आकर्षण केंद्र रहा है. यादवेंद्र उद्यान, पिंजोर, कुरुक्षेत्र, थानेसर, करनाल, गुड़गांव, पेहोवा, पानीपत, कपालमोचन और कलायत का कण-कण प्राचीन सभ्यता संस्कृति से पूर्णतः अनुस्यूत है. संगीत और नृत्य तो इस देश का प्राण है. यहां के मेले, त्यौहार, उत्सव और पर्वों के अवसर पर गाए जाने वाले लोक गीत भारतीय संस्कृति व आदर्शों से ओत प्रोत हैं. यहां के लोक नृत्य, लोक कला, संगीत, नाटक व सांग में लोकमानस की सूक्ष्म भावनाएं मुखरित होती हैं और संस्कृति की झलक दृष्टिगोचर होती है.

आज यहां एक नई संस्कृति की भावधारा विकसित हो रही है जो प्राचीन सभ्यता संस्कृति को अविकल अक्षुण्ण रखते हुए निरंतर प्रगति पथ पर अग्रसर है. आज कृषि उत्पादन के अतिरिक्त उद्योग के उत्पादन और निर्यात में नए कीर्तिमान स्थापित हुए हैं. सभी गांव सड़कों द्वारा सुगंध बना दिए गए हैं. शिक्षा, स्वास्थ्य एवं स्वच्छ पेय जल की पर्याप्त सुविधाएं उपलब्ध है. प्रति व्यक्ति आय में आशाजनक वृद्धि हुई है. धनहीन, उपेक्षित और दलित वर्ग के जीवन को हर्षोल्लासमय बनाया जा रहा है. यह प्रदेश गौरवपूर्ण अतीत के आधार पर, आशापूर्ण वर्तमान का आनद उठाते हुए प्रति पल प्रति क्षण सुनहले भविष्य की ओर बढ़ रहा है.❖

ई सी ई के वैज्ञानिक डिजाईनों से तैयार लाइटिंग फिक्सचर कहीं भी लगाने के लिये - भीतर या बाहर।
ECE LIGHTING
ECE
भारतीय परिस्थितियों के अनुकूल कार्य योग्य विशेष वैज्ञानिक तकनीक द्वारा बनाये गये ई.सी.ई. बिजली के साज़ो-समान, हर प्रकार की लाईटिंगस में अधिकतम प्रकाश प्रदान करते हैं।
प्रकाश सलाहकार केन्द्र
गहन अनुसंधान व सतत विकास प्रयासों, विश्व प्रसिद्ध तकनीक तथा निपुण व योग्य व्यवसायिक दल द्वारा समर्थित ई.सी.ई. प्रकाश सलाहकार केन्द्र आपकी हर प्रकार की प्रकाश योजना की आवश्यक्ता के अनुरूप वैज्ञानिक ढंग से प्रकाशमान करने में सर्वथा योग्य है, चाहे वह औद्योगिक, व्यवसायिक, स्ट्रीट लाइटिंग का कार्य ही क्यो न हो।
ECE LIGHTING
बल्बस.
ट्यूबलाइटस.
मरक्री वेपर लैम्पस.
हाइ वाटेज लैम्पस.
लाइटिंग फिक्सचर्स.
ECE
बल्ब से संपूर्ण प्रकाश व्यवस्था तक.
इलेक्ट्रिक कन्स्ट्रक्शन अेंड ईक्विपमेंट कं. लिमिटेड
ई सी ई हाऊस
28-A कस्तूरबा गान्धी मार्ग
नई दिल्ली 110001
SPECTRUM: F125
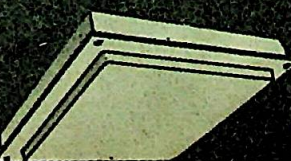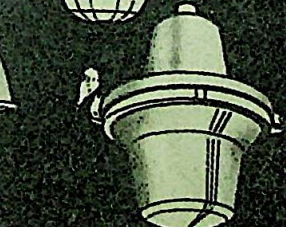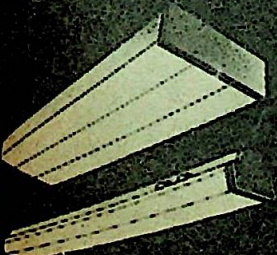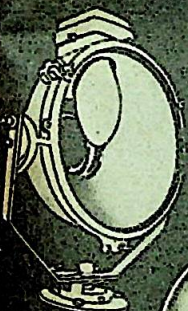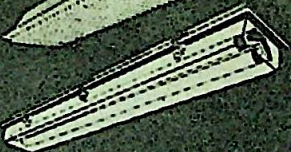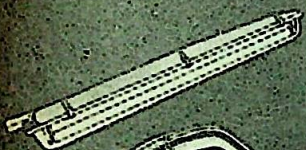
रोटी, कपड़ा और अब मकान

रोटी, कपड़ा और मकान मानव जीवन की मूलभूत आवश्यकताएं हैं. निरंतर बढ़ती आबादी एवं आय के सीमित साधनों के कारण आर्थिक रूप से कमज़ोर वर्ग के लोगों के लिए अपना मकान एक कल्पना मात्र बन गई है. लेकिन हरियाणा सरकार उन के स्वप्न को साकार करने के लिए प्रयत्नशील है.

आवास निर्माण बोर्ड ने हर वर्ग के लोगों के लिए क्रमबद्ध कार्यक्रम बनाए. हम ने अपना कार्य राज्य के औद्योगिक नगरों में श्रमिकों के लिए मकान बनाने से आरंभ किया. आवास बोर्ड द्वारा राज्य के विभिन्न स्थानों पर कुल निर्मित १२,१२७ मकानों में ५,१३९ मकान केवल पिछले ढाई वर्षों में बनाए गए हैं. इस के अलावा श्रमिकों के लिए आवास योजना पंचकूला, कुंडली, धारुहेड़ा और डुंडाहेड़ा में प्रगति पर है. आज प्रदेश के चार औद्योगिक नगरों तथा नारनौल के सिवाय सभी ज़िला मुख्यालय की आवास कालोनियां गरिमा बढ़ा रही हैं. इस के अतिरिक्त १६ प्रमुख नागरिक क्षेत्रों में १७,००० एकड़ भूमि अगले चार वर्षों में प्लाटों में परिवर्तित की जाएगी जबकि पिछले १५ वर्षों में केवल १५,००० एकड़ भूमि पर प्लाट काटे गए.

प्रधान मंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी के २० सूत्री कार्यक्रम के अंतर्गत प्रदेश में सामाजिक एवं आर्थिक समानता लाने के लिए प्रयत्न जारी हैं. हरिजन, पिछड़े तथा आर्थिक रूप से कमज़ोर वर्ग के लोगों के लिए ७५ प्रति शत मकान बनाए गए हैं. उन में भी १९ प्रति शत मकानों का आरक्षण अनुसूचित जाति और ४ प्रति शत मकानों का आरक्षण पिछड़े वर्ग के लोगों के लिए किया गया है.

समुचित विकास की ओर

—हरीशचंद्र खन्ना

हरियाणा प्रदेश को यह गौरव प्राप्त है कि यहां विकास के हर पक्ष पर समुचित ध्यान दिया जा रहा है. हमारी नीति यह रही है कि पिछड़े क्षेत्रों और पिछड़े वर्गों का विकास तीव्र गति से किया जाए ताकि यह अन्य विकसित क्षेत्रों तथा उन्नत वर्गों के समान स्तर पर आ जाएं. मेवात विकास बोर्ड, मरुस्थल विकास कार्यक्रम, सूखा क्षेत्र कार्यक्रम, समेकित ग्राम विकास कार्यक्रम, हरिजन कल्याण निगम, पिछड़ा वर्ग कल्याण निगम और कमज़ोर वर्ग कल्याण निगम इसी उद्देश्य को ले कर बनाए गए हैं. इन के अतिरिक्त ३.२१ लाख से अधिक हरिजन परिवारों के जीवन स्तर के उन्नयन के लिए एक विशेष अंगभूत योजना भी बनाई गई है.

प्रधान मंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी द्वारा प्रतिपादित २०-सूत्री आर्थिक कार्यक्रम से हमें नई प्रेरणा और नया उत्साह मिला है. इस कार्यक्रम के अंतर्गत हरियाणा में एक लाख एकड़ से अधिक भूमि भूमि हीनों
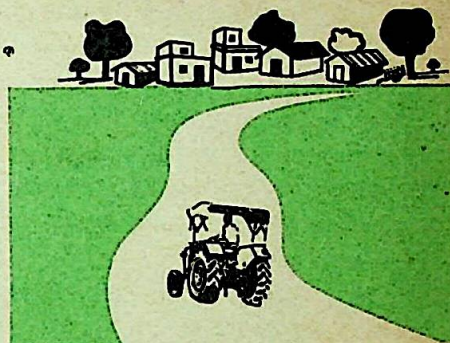
को और २ लाख से अधिक रिहायशी प्लाट बेघर पात्र व्यक्तियों को दिए जा चुके हैं.

हरियाणा में तीव्र विकास के गति चक्र में न केवल कृषि, पशुपालन और उद्योग ही आते हैं, अपितु योजक सड़कें, पेयजल और वनरोपण आदि क्षेत्र भी समान रूप से प्रभावित हुए हैं.

शक्ति प्रगति का मूल स्रोत है. बिजली की खपत २३ लाख यूनिट से बढ़ कर १५० लाख यूनिट हो गई है और बिजली का उत्पादन भी उसी गति से बढ़ा है. भावी आवश्यकताओं के दृष्टिगत बिजली की उत्पादन क्षमता बढ़ाने के लिए १,०२० मेगावाट की क्षमता की नाथपा-झाखड़ी परियोजना, ८०० मेगावाट की यमुनानगर ताप परियोजना तथा ३०० माइक्रो पन यूनिट लगाने की योजनाएं हाथ में ली गई हैं.

विकास की दृष्टि से ग्रामीण क्षेत्रों को शहरी क्षेत्रों के समान स्तर पर लाने तथा गांवों से शहरों में जाने की प्रवृत्ति को रोकने के लिए गांवों में भारी संख्या में छोटे उद्योग स्थापित किए जा रहे हैं तथा स्वरोज़गार की अन्य योजनाएं कार्यान्वित की जा रही है ताकि गांवों की अर्थ व्यवस्था को सुदृढ़ आधार प्रदान किया जा सके और लोगों को रोज़गार की खोज में शहरों की ओर न भागना पड़े. इस प्रकार हरियाणा में क्षेत्रीय तथा आर्थिक असमानताएं दूर करने के यथासंभव प्रयास किए जा रहे हैं. ◆

हरियाणा के आधुनिक तीर्थ

विज्ञापन फ़ीचर

हरियाणा के आधुनिक तीर्थ मनोरंजक भी हैं और आय के स्रोत भी. प्राकृतिक परिवेश में स्थित, नैसर्गिक सौंदर्य से सजे-संवरे ये पर्यटनस्थल आधुनिक सुख-सुविधाओं से पूर्णतः सुसज्जित हैं. राष्ट्रीय तथा राजमार्गों पर बने ये सुरम्य स्थल, जिन का नामकरण पक्षियों के नाम पर किया गया है, मानव की शिल्प कला तथा प्रकृति की मनमोहक छटा का विलक्षण समन्वय प्रस्तुत करते है.

पंद्रह वर्ष पूर्व राज्य में कोई भी पर्यटन स्थल नहीं था, किंतु अब राज्य का पर्यटन के मानचित्र पर विशिष्ट स्थान है. अब हरियाणा में ३१ पर्यटन स्थल हैं. चंडीगढ़ से लगभग २० किलोमीटर दूर शिवालिक गिरिमालाओं के अंचल में सात उत्तालों में बना यादवेंद्र उद्यान परंपरागत वास्तुकला और आधुनिक सुविधाओं का अनुपम सम्मिश्रण है.

एशियाड १९८२ के अवसर पर दिल्ली आने वाले पर्यटकों की सुख-सुविधाओं के लिए सूरजकुंड में 'राजहंस' नामक एक नया आकर्षक मोटल बनाया जा रहा है. फ़रीदाबाद की बड़खल झील और सुलतानपुर का पक्षी विहार खग प्रेमियों के लिए तीर्थ है. गुड़गांव की दमदमा झील का विशेषतः मछलीपालन के लिए विकास किया जा रहा है. आधुनिक सुख-सुविधाओं से संपन्न यह केंद्र पर्यटकों के लिए एक मनोरम स्थल सिद्ध होगा.

पर्यटन के विकास में हरियाणा द्वारा की गई आशातीत प्रगति अन्य राज्यों के लिए रहस्य का विषय बन गई है. उन की इस जिज्ञासा को शांत करने के लिए हरियाणा परामर्शी सुविधाएं प्रदान करता है जिस के अंतर्गत विषय विशेषज्ञों की सेवाएं अन्य राज्यों को उपलब्ध की जाती हैं. 'पेसिफिक एरिया ट्रेवल एसोसिएशन' और 'ट्रेवल एजेंट्स एसोसिएशन आफ इंडिया' से जीते गए पुरस्कार भी राज्य की पर्यटन कुशलता के प्रमाण हैं.

आदर्श पंखा कूलर का

—पूरबी घोष राय

कुल तीन दशक पहले का फ़रीदाबाद यहां से वहां तक पसरी परती ज़मीन का दूसरा नाम था. वस्तुतः १९४७ तक यह एक अजाना क़सबा भर था. पर विगत वर्षों में यहां औद्योगिक प्रगति इस गति से हुई है कि आज २,६०० औद्योगिक इकाइयों वाली एक विशद औद्योगिक बस्ती बस गई है.

छोटे बड़े और मध्यम क्षेत्र के उद्योगों से युक्त फ़रीदाबाद-बल्लभगढ़ औद्योगिक संकुल देश के उद्योग क्षेत्र के प्रमुख स्तंभों में गिना जाने लगा है. इस में ट्रैक्टर व कूलर से ले कर प्रतिरक्षा सामग्री, पेंट व दवाओं तक का उत्पादन होता है और इस बस्ती के औद्योगिक नामों में प्रमुख हैं—गुडईयर, मेटल वाक्स, अमेरिकन यूनिवर्सल, एस्कोर्ट्स, बाटा, कैलविनेटर आदि. ये कंपनियां न केवल देश की अर्थ व्यवस्था, बल्कि अनेक सहायक उद्योगों के विकास में महत्वपूर्ण योग दे रही हैं.

इस प्रकार के औद्योगिक प्रयासों से उद्योग क्षेत्र के उत्पादनों में विविधता तो आती ही है, साथ साथ बड़ी कंपनियों के वर्षों के अनुसंधान कार्यों के फलस्वरुप औद्योगिक उत्पादनों की गुणवत्ता से ले कर उन के प्रयोग व प्रयोजन तक का क्षेत्र व्यापक हो गया है. डेज़र्ट कूलरों में प्रयुक्त होने वाला पंखों के विकास व उत्पादन की व्यापकता की कहानी भी इसी तथ्य की पुष्टि करती है. वातानुकूलन और कूलिंग के क्षेत्र में हुई उल्लेखनीय तकनीकी प्रगति के कारण डेज़र्ट कूलरों के लिए विशेष रूप से बनाए गए पंखे भी अब बाज़ार में उपलब्ध हैं.

एक बड़ा भ्रम व्यापा हुआ है कि एग्जास्ट पंखे और कूलर के पंखे में कोई अंतर नहीं. वस्तुतः

कूलर के पंखे का उपयोग बहुविध है और यह न केवल एग्जास्ट पंखे की कमियों का स्थानापन्न है, अपितु उस के कई नकारात्मक पक्षों को सकारात्मकता भी प्रदान करता है.

यहां यह जानना उपयोगी होगा कि दोनों में अंतर क्या है. सर्वप्रथम तो एग्जास्ट पंखे सामान्य आर्द्रता वाले वातावरण में काम करने के लिए बनाए जाते हैं जबकि डेज़र्ट कूलर सामान्य आर्द्रता की स्थिति में काम नहीं करता. फिर एग्जास्ट पंखे एक ही दिशा में हवा देते हैं. तीसरे, कूलर के लिए बनाया गया पंखा एग्जास्ट पंखे से डेढ़ गुनी ज़्यादा हवा फेंकता है और प्रति इकाई हवा के संदर्भ में एग्जास्ट पंखा बिजली भी अधिक फूंकता है. कूलर के लिए बने पंखों की गति पर नियंत्रण होता है जबकि एग्जास्ट के साथ ऐसा नहीं. इन के अलावा इस्तेमाल की विविधता की दृष्टि से एग्जास्ट पंखे के उपयोग को लिया जाए तो इस की क़ीमत भी ज़्यादा बैठती है.

इस सारे संदर्भ में कूलर में कम आवाज़ वाले बढ़िया पंखे ही लगाने चाहिए जिन के ब्लेड का कोण तो सही हो ही, उन की लंबाई भी २० इंच हो. ब्लेडों का ज़ंगरोधक होना भी बड़ा ज़रूरी है और इस दृष्टि से इस्पात के बजाए अलुमीनम के पंखों का इस्तेमाल ही श्रेयस्कर है.

अतः कूलर के पंखे ये सब गुण व दोष देख कर ही लिए जाने चाहिए, हर ग्रीष्म में कूलरों की भारी मांग के कारण लोग जैसा तैसा माल उठा लेते हैं जिस से न केवल पैसा बरबाद होता है, अपितु आराम की जगह पंखे के शोर जैसी दिक़्क़तें भी उठानी पड़ती हैं. यह ठीक है कि कई बार कूलिंग उद्योग भी बढ़ती मांग को पूरा नहीं कर पाता, पर बाज़ार में आम बिकने वाले माल के स्थान पर उत्कृष्ट उत्पादन को ही अपनाना उचित होता है. फिर इस क्षेत्र में 'कूल होम' उत्पादों के विनिर्माता अमेरिकन यूनिवर्सल, खेतान व जीईसी जैसे कूलर व उन के पंखों के विनिर्माता भी उपलब्ध हैं.
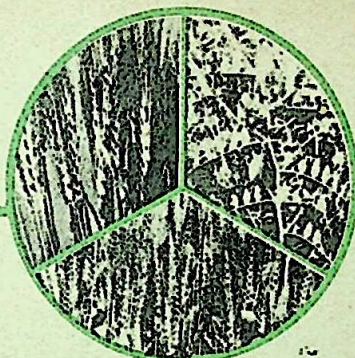
हरियाणा राज्य में फ़सल बीमा योजना लागू

रबी १९८१-८२ में गेहूं, चना और जौ पर :

गेहूं : हरियाणा राज्य की सभी तहसीलों में.

चना : १२ तहसीलों में—फ़तेहाबाद, हिसार, हांसी, टोहाना, सिरसा, रोहतक, बहादुरगढ़, सोनीपत, गोहाना, जींद, सफ़ीदों व नरवाना.

जौ : ११ तहसीलों में—रोहतक, झज्जर, गुड़गांव, नूह, फ़िरोज़पुर झिरका, बल्लभगढ़, पलवल, हथीन, महेंद्रगढ़, नारनौल व रिवाड़ी.

बीमा योजना की विशेषताएं

१ — बीमा योजना का कार्य क्षेत्र तहसील होगा.

२ — बीमा योजना के तहत क्षतिपूर्ति समान आधार पर होगी यानी हानि की स्थिति में प्रत्येक तहसील के सभी काश्तकारों को एक सा मुआवज़ा मिलेगा.

३ — प्रति काश्तकार गेहूं के लिए २,२५० रुपए तथा चना और जौ के लिए १,३०० रुपए निश्चित सीमा तक फ़सल बीमा करवा सकेगा.

४ — प्रीमियम की दर ४.५ से ५ प्रति शत तक होगी.

५ — बीमा राशि के क्लेमों का भुगतान किसानों को सीधे वित्तीय संस्थाओं के माध्यम से तुरंत किया जाएगा.

६ — प्रत्येक फ़सल की क्षतिपूर्ति निश्चित पैदावार सीमा के आधार पर निश्चित होगी.

अधिक जानकारी एवं विवरण के लिए

अपने ज़िला/तहसील/क्षेत्र के केंद्रीय सहकारी एवं मिनी बैंक तथा अधिकारियों एवं कृषि विभाग के कृषि विकास अधिकारी, ग्रामीण विस्तार कार्यकर्ता से तुरंत संपर्क करें.

संकल्प पूर्ति

हरियाणा आज समृद्धि, आर्थिक विकास एवं सामाजिक परिवर्तन के पथ पर तेज़ी से क़दम बढ़ा रहा है. इस अद्वितीय सफलता का रहस्य है—बिजली की व्यापक उपलब्धि.

वर्ष १९६६ के मुक़ाबले राज्य में बिजली की प्रति व्यक्ति खपत ५७ यूनिट से बढ़ कर २०४ यूनिट, घरेलू कनेक्शनों की संख्या २,२३,९०३ से बढ़ कर ८,७०,००० और औद्योगिक कनेक्शनों की ९,७०० से बढ़ कर ४७,६०० हो गई है. इसी तरह बिजली चालित नलकूपों की संख्या भी २०,००० से बढ़ कर २,४०,००० को छू रही है.

हरियाणा राज्य बिजली बोर्ड ने दो वर्ष पूर्व उत्पादन वृद्धि एवं इस के प्रसार, पारेषण और वितरण की सुदृढ़ व्यवस्था तथा इन से भी बढ़ कर यह संकल्प लिया कि राज्य की सभी हरिजन बस्तियों, घरों एवं गांव की गलियों को विद्युत के प्रकाश से जगमगा दिया जाए. नवंबर १९७९ से अब तक बोर्ड ने ३३ केवी, ६६ केवी व १३२ केवी के ५० नए उप विद्युत सेवा केंद्रों की स्थापना और ६० सेवा केंद्रों की क्षमता में वृद्धि की है. १५,००० किलोमीटर लंबी तारें बिछाई गई है, तो २८० मेगावाट की वृद्धि की है अपने ताप बिजली घरों—फरीदाबाद में ६० मेगावाट और पानीपत में २२० मेगावाट—की प्रतिस्थापित क्षमता में. इस तरह बिजली की दैनिक उपलब्धि ५० लाख यूनिट बढ़ी है. धन्य हैं ये योगदान जिन के कारण हरियाणा ने १९७९ व १९८० के सूखे का डट कर मुक़ावला किया. राज्य बिजली बोर्ड अब ख़रीफ और रबी की बुआई और औद्योगिक विकास के चक्र को चालू रखने के लिए प्रति दिन १.५८ करोड़ यूनिट बिजली की आपूर्ति में समर्थ है.

इस ने १९८१ में सभी ५,६३४ हरिजन बस्तियों में बिजली की व्यवस्था कर के देश में कीर्तिमान स्थापित किया है. ३,८०० ग्रामीण गलियां और २,७०० हरिजन घर बिजली के प्रकाश से जगमगाने लगे हैं. लेकिन बोर्ड को अभी कई मंज़िलें तय करनी हैं. ह. रा. बि. बोर्ड १९८५ तक राज्य के सभी ६,७३१ ग्रामों की गलियों के विद्युतीकरण का दृढ़ संकल्प लिए है.

यह सभी हरिजन घरों को एक पाइंट के बिजली के कनेक्शन देने के कार्यक्रम को शीघ्र पूरा करने के लिए तत्पर है. यह ऐसा बड़ा कार्य है जिसे टाला नहीं जा सकता—अंधकार का नाश करना है.

नव वर्ष के पुनीत अवसर पर हरियाणा राज्य बिजली बोर्ड ने अपने ३०,००० जोड़ी निपुण एवं विश्वसनीय हाथों से हरियाणा को और अधिक उज्ज्वलता, शक्ति और ख़ुशहाली देने का संकल्प दोहराया है—उसी हरियाणा की सेवा का जिसे न केवल प्रति व्यक्ति उच्च आय वरन सामाजिक न्याय की दृष्टि से भी अग्रणी होने का गौरव प्राप्त है.

हरियाणा राज्य बिजली बोर्ड

ऐस्कॉर्ट्स समय की गति से ज़्यादा गतिशील

ESCORTS

उन्नत तकनॉलोजी को अपना कर तेल की हर लीटर से अधिक दूरी तय करने की क्षमता और ईंधन की लागत कम रखते हुए वाहनों से अधिकतम कार्यकुशलता प्राप्त करने में कार्यशील।

मोटरसाइकलों के अग्रणी निर्माता के रूप में, ऐस्कॉर्ट्स ने जपान से उपलब्ध नवीनतम तकनॉलोजी का, बदलते भारतीय वातावरण में प्राप्त अपने अनुभव के साथ कुशलतापूर्वक तालमेल कराया है, और ४०० सी सी तक के दोपहिया वाहनों की एक ऐसी पूरी श्रृंखला के उत्पादन की क्षमता बड़ी तेज़ी से विकसित कर रहा है जो भारत में उपलब्ध किसी भी अन्य दोपहिए वाले वाहनों से तकनीकी रूप में कहीं आगे होंगी।

इस तकनॉलोजी में विश्व की सबसे उन्नत दोपहिया सहायक सामग्री जैसे अति कार्यकुशल कारबुरेटर, स्वाज्ड स्पोक्स, क्लच असेम्ब्ली, बिजली का सामान, सुरक्षा साधन आदि की पूरी श्रृंखला शुरू करना शामिल है। इनमें से कई राजदूत के ५०० सहायक सामग्री सप्लाई करने वालों में से कुछ को दे दिए गए हैं।

परिणाम यह है कि भारतीय दोपहिया-चालकों को समय पाकर ऐसी मशीनें मिलने लगेंगी जिनमें ईंधन की वर्तमान खपत से ही कहीं ज़्यादा बेहतर शक्ति, टिकाऊपन और कार्यकुशलता हो सकेगी।

अभी से ऐस्कार्ट्स एम्प्लाईज ऐन्सिलरीज लि०, विश्व में कारबुरेटरों के अग्रणी निर्माता — जापान की मिकुनी क० के सहयोग से, वे उन्नत कारबुरेटर बना रही है जो अधिक दूरी तय करने की क्षमता और अच्छी कार्यकुशलता प्रदान करते हैं।
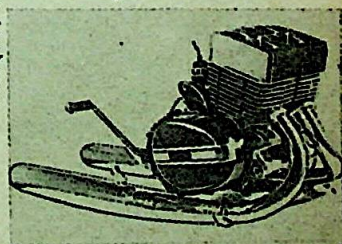
ऐस्कॉर्ट्स द्वारा जापान की यामाहा कम्पनी के तकनीकी सहयोग से बनने वाला भारत का प्रथम २-स्ट्रोक, २-सिलिंडर ३५० सी सी, ३९ बी एच पी इन्जन।

भारत की मूल आवश्यकताओं के अनुकूल उन्नत तकनॉलोजी

ऐस्कॉर्ट्स लिमिटेड

११, सिंधिया हाउस, कनॉट सर्कस, नई दिल्ली-११०००१

मोटर साइकिलें • ट्रैक्टर एवं कृषि उपकरण • मोटर गाड़ियों के सहायक पुर्जे • औद्योगिक एवं निर्माण उपकरण • रेलवे सहायक सामग्री • हीटिंग एलिमेंटस

HTD-ESC-6959 I

हैफ़ेड—कृषकों की सेवा को कृतसंकल्प

हरियाणा सहकारी वितरण एवं विपणन महासंघ हरियाणा राज्य में सहकारी समितियों की एक शीर्ष संस्था है. इस का जन्म १९६६ में हुआ था. इस के मुख्य उद्देश्यों में कृषि उत्पादनों का विपणन और उन के प्रक्रमण का प्रबंध करना, कृषि में उपयोग होने वाली सामग्री जैसे कि उर्वरक, कीट एवं खरपतवार नाशक दवाओं और उपकरणों आदि का वितरण करना तथा अपने साथ जुड़ी सहकारी समितियों के कार्यों को सुचारू रूप से चलाने में सहायता देना, शामिल है.

वसूली. कृषकों को उन के कृषि उत्पादनों का उचित मूल्य दिलवाने की अपनी नीति को कार्यरूप देने के लिए महासंघ कृषि उत्पादनों जैसे गेहूं, चना जौ, मक्का, कपास, सरसों, मूंगफली आदि की ख़रीद करता है. महासंघ १९६९ से प्रति वर्ष ख़रीद का कार्य करता आ रहा है और वर्ष १९८०-८१ में इस ने ४८.५० करोड़ रुपए मूल्य की ३.४६ लाख मीट्रिक टन गेहूं की रिकार्ड ख़रीद की. हैफ़ेड धान की ख़रीद भी करता है और नवंबर १९८० में इस ने हरियाणा राज्य में १४ करोड़ रुपए मूल्य के १.०९ लाख टन धान की ख़रीद की. भारतीय खाद्य निगम के केंद्रीय पूल को चावल उपलब्ध करने के लिए हैफ़ेड ने १४ चावल मिलों की स्थापना की है जिन में वसूले गए धान का चावलों के रूप में प्रक्रमण किया जाता है.

आलू. आलू की फ़सल हैफ़ेड द्वारा ख़रीदी जाने वाली एक महत्वपूर्ण फ़सल है और हैफ़ेड के कोल्डस्टोरों में भंडार कर इसे कमी के समय पर बेचा जाता है. इस प्रकार हुए लाभ का एक बड़ा भाग कृषकों में बांट दिया जाता हैं.

प्रक्रमण. हैफ़ेड ने कई प्रक्रमण संयंत्रों की स्थापना की है, जो निम्नलिखित हैं :

उर्वरक संयंत्र. एन.पी.के. खाद की विभिन्न क़िस्में जैसे कि १५:१५:७ १/२, १२:३२:१६, ८:८:८ और १०:३०:१० तैयार करने के लिए मात्र एक पाली में काम कर प्रति वर्ष ३०,००० मीट्रिक टन की उत्पादन क्षमता वाला एक कारख़ाना भी इस ने स्थापित किया है. इस के अलावा १९८०-८१ में ४५.१२ करोड़ रुपए मूल्य की विभिन्न प्रकार की २.३९ लाख टन खाद भी कृषकों को उपलब्ध की.

कीटनाशक दवाएं. हैफ़ेड कई प्रकार के कीट और खरपतवार नाशक दवाओं का उत्पादन करता है, जैसे कि बी.एच.सी. ५० प्रति शत, कारबारिल ८५ प्रति शत, कारबारिल ४० प्रति शत और एंडोस्लफ़ान आदि. १९८०-८१ में हैफ़ेड ने ३७ लाख रुपए मूल्य की कीटनाशक दवाओं का वितरण किया.

बीज. हैफ़ेड बढ़िया क़िस्म के गेहूं, धान, और चने के बीज भी उपलब्ध करता है. १९८०-८१ में इस ने १०४ लाख रुपए मूल्य के बीजों का वितरण किया.

पशुचारा संयंत्र. कृषकों की सहायता के लिए एक पाली में काम कर ३०,००० मीट्रिक टन का वार्षिक उत्पादन देने में समर्थ एक पशु आहार एवं मुर्ग़ीदाना संयंत्र भी हैफ़ेड ने स्थापित किया है. संयंत्र द्वारा तैयार पशुचारा एवं मुर्ग़ीदाना उत्तर प्रदेश, राजस्थान एवं जम्मू कश्मीर में काफ़ी लोकप्रिय है. इस संयंत्र ने १९८०-८१ में १.५९ करोड़ रुपए मूल्य का पशु आहार और मुर्ग़ीदाना बेचा.

बेकरी. दो पालियों में काम कर प्रति दिन १५,००० डबल रोटियां बनाने वाली इस की बेकरी द्वारा उत्पादित डबलरोटियां भी बाज़ार में बेचीं और समाज कल्याण विभाग को शहरी एवं देहाती क्षेत्रों में मुफ़्त वितरण के लिए दी जाती हैं. १९७९-८० में इस संयंत्र ने ३१.७७ लाख रुपए मूल्य की डबलरोटियों का उत्पादन तथा विक्रय किया.

दाल मिल. हैफ़ेड की एक दाल मिल अंबाला में स्थापित है जिस में विभिन्न प्रकार की दालों का प्रक्रमण होता है. इस मिल ने १९८०-८१ में १६.५९ लाख रुपए मूल्य की दालों का प्रक्रमण किया.

ओटाई संयंत्र. कपास की उपज को बढ़ावा देने व बिनौलों के प्रक्रमण के साथ साथ प्राईवेट व्यापारियों, जो कि कृषकों का शोषण करते हैं, के एकाधिकार को मिटाने के लिए हैफ़ेड ने १२ गांठें

प्रति घंटा की क्षमता वाली दो ओटाई मिलें डींग और रतिया में स्थापित की हैं. ५४ लाख रुपए की लागत से बने इन केंद्रों में बिनौलों के प्रक्रमण का संयंत्र भी स्थापित किया गया है जिस की क्षमता १०० मीट्रिक टन प्रति दिन होगी. ये परियोजनाएं विश्व बैंक की सहायता से स्थापित की गई हैं. बिनौला प्रक्रमण संयंत्र १९० लाख रुपए की लागत से डींग में स्थापित किया गया है. इन संयंत्रों को सुचारू रूप से चलाने के लिए मशीनरी का आयात किया गया है. बिनौलों से उत्पादित बिनौले का तेल जल्दी ही महासंघ द्वारा बाज़ारों में उपलब्ध किया जाएगा. इस की विशेषताएं हैं कम दाम, बढ़िया स्वाद, गंध रहित कम चिकनाहट आदि.

निर्यात. महासंघ ने कपास की बांग्लादेशी और जे-३४ क़िस्मों का निर्यात कर इस क्षेत्र में १९७८-७९ में पदार्पण किया और १९८०-८१ में ०.५८ करोड़ रुपए मूल्य की २,८०१ गांठों का निर्यात किया. इस के अतिरिक्त हैफ़ेड ने विभिन्न क़िस्मों के ४०,००० टन चावल का निर्यात कर ११.२१ करोड़ रुपए क़ी विदेशी मुद्रा कमाई. वस्तुतः महासंघ काफ़ी ऊंची दरों पर चावल निर्यात करने में सफल रहा. इस लिए मंडियों से चावल उठाया भी अधिक मूल्य पर गया, जिस के फलस्वरूप कृषकों को काफ़ी लाभ मिला है.

व्यापारावर्त. विभिन्न क्षेत्रों में महासंघ के कार्यकलापों के बढ़ने से इस के व्यापारावर्त में दिन दोगुनी रात चौगुनी वृद्धि हुई. यह राशि १९७०-७१ में केवल १८.६४ करोड़ रुपए थी, जबकि १९८०-८१ में बढ़ कर १५० करोड़ रुपए से भी अधिक हो गई और शुद्ध लाभ १९७५-७६ के ५६.५८ लाख रुपए से बढ़ कर १९७९-८० में १.४ करोड़ रुपए हो गया.

भविष्य. अधिक संयंत्रों के स्थापित होने से कृषि उत्पादनों की खपत बढ़ती है अतएव कृषकों को अपने उत्पादन पर अधिक दाम मिलते हैं. इसी लिए हैफ़ेड ने और बहुत से ऐसे संयंत्र स्थापित करने की योजना बनाई है जिन में भट्टूकलां में तीसरी ओटाई मिल और रतिया में कपास तथा प्रक्रमण संयंत्र सम्मिलित है. २५,००० तकुए वाला कताई मिल स्थापित करने का भी निर्णय लिया गया है. इस के अतिरिक्त कई चावल मिलें एवं शीत भंडार स्थापित करने और लुहारू में ऊन कताई मिल तथा एक ग्वार गम संयंत्र लगाने की योजना भी है. इस के अतिरिक्त निर्यात के क्षेत्र में फलों और सब्ज़ियों का निर्यात शुरू करने तथा चावल और कपास के निर्यात में वृद्धि करने पर बल दिया जाएगा जिस से देश के लिए और अधिक विदेशी मुद्रा प्राप्त की जा सके और कृषकों को उन के उत्पादन का यथासंभव सही और अधिक मूल्य मिल सके.
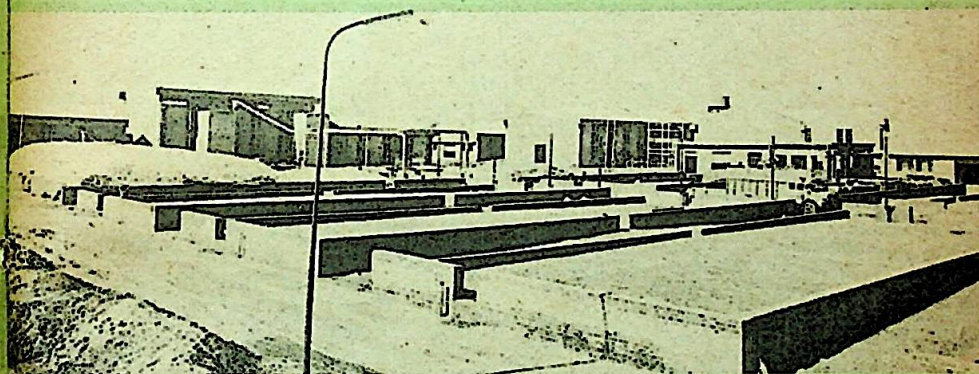
हैफ़ेड कपास ओटाई एवं बिनौला प्रक्रमण केंद्र, डींग

शक्ति का स्रोत बिजली

आज के इस यंत्र चालित युग में किसी देश प्रदेश को प्रगति पथ पर उत्तरोत्तर अग्रसर करने में विद्युत का प्रयोग परमावश्यक है. कृषि हो अथवा उद्योग, हर क्षेत्र में अधिकाधिक उत्पादन तथा मानव जीवन को आधुनिक सुख सुविधा-संपन्न करने के लिए भी विद्युत शक्ति अनिवार्य है.

इसी उद्देश्य को ले कर हरियाणा में श्रीमती इंदिरा गांधी के जन्म दिवस १९ नवंबर, १९८० को एक नई और क्रांतिकारी योजना का श्रीगणेश किया गया जिस के अंतर्गत राज्य की सभी ५,६३४ हरिजन बस्तियां एक वर्ष में ही बिजली के प्रकाश से जगमगा उठी हैं. हरिजन घरों में व्याप्त अंधकार मिटाने के उद्देश्य से २७,००० से भी अधिक हरिजन परिवारों को रियायती दरों पर एक-एक प्वाइंट के कनैक्शन दिए गए हैं और ३,९०० गांवों की गलियों में बिजली लगाई जा चुकी है. लक्ष्य है कि १९८५ तक सभी गांवों की गलियां बिजली के प्रकाश से जगमगा उठें.

बिजली की इस बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए अनेक परियोजनाएं द्रुत गति से पूरी की जा रही हैं. फ़रीदाबाद में ६०-६० मेगावाट के तीन तापघर लगाए गए हैं. पानीपत में ११०-११० मेगावाट की क्षमता के दो चालू ताप बिजलीघरों के अतिरिक्त ११०-११० मेगावाट के दो और यूनिट लगाए जा रहे हैं. यमुनानगर में ८०० मेगावाट का ताप बिजलीघर बनाने की योजना है. प्राकृतिक जल साधन सीमित होते हुए पन बिजली परियोजनाएं क्रियान्वित की जा रही हैं पश्चिमी यमुना नहर पर ६४ मेगावाट की पन बिजली परियोजना पर कार्य द्रुत गति से चल रहा है और दादूपुर (अंबाला) में १४ मेगावाट की क्षमता के दो माइक्रो पन बिजलीघर बनाने का प्रस्ताव है.

हरियाणा और हिमाचल प्रदेश के सहयोग से कार्यान्वित होने वाली १,०२० मेगावाट क्षमता की नाथपा-झाखड़ी पन बिजली परियोजना से भी राज्य को पर्याप्त मात्रा में बिजली उपलब्ध होने की आशा है. इस प्रकार पिछले दो वर्षों में बिजली की संस्थापित क्षमता में ३८६ मेगावाट की वृद्धि होने से कुल क्षमता ७८८ मेगावाट से बढ़ कर १,१७४ मेगावाट तक पहुंच गई है.

गत दो वर्षों में लगभग ५३,००० नलकूपों को बिजली दी गई है और आज विद्युत चालित
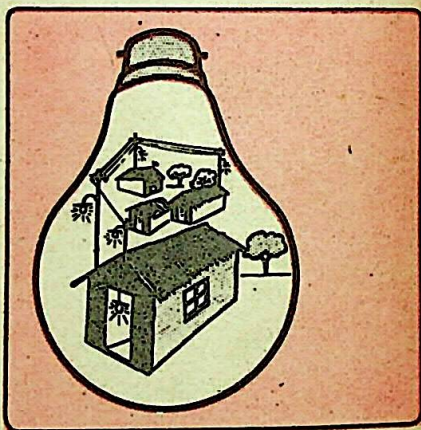
नलकूपों की संख्या २,४०,००० तक पहुंच गई है. औसतन प्रति किलोमीटर में ५ से भी अधिक नलकूप हैं. इस के अतिरिक्त ४२,००० छोटे एवं मध्यम और ७०० से अधिक बड़े उद्योगों को बिजली दी जा रही है.

बिजली की बढ़ती मांग राज्य की अर्थ व्यवस्था के समृद्ध से समृद्धतर होने की द्योतक है. इस निरंतर बढ़ती मांग को पूरा करते हुए राज्य के विकास को नई दिशा देने के लिए पूरा प्रयत्न किया जाएगा. इस संदर्भ में अब तक की गई प्रगति इस संकल्प का सजीव प्रमाण है.
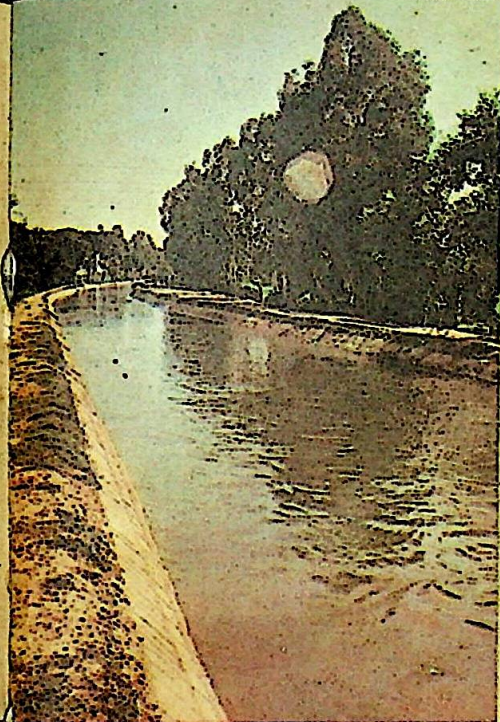
हरियाणा—दूसरी हरित क्रांति की ओर अग्रसर

दो वर्ष के अंदर पंजाब के इलाक़े में १२२ किलोमीटर लंबी सतलुज यमुना योजक नहर बनने पर हरियाणा को रावी-ब्यास के पानी में उस के हिस्से का ३५ लाख वर्ग फुट पानी मिलने लगेगा. हरियाणा के इलाक़े में ९२ किमी नहर पहले ही बन कर तैयार हो चुकी है.

इस से ५.६७ लाख हैक्टेयर अतिरिक्त भूमि की सिंचाई की जा सकंगी और अन्न उत्पादन में १०० करोड़ रुपए वार्षिक की वृद्धि होगी.

हर चौथे हरियाणावासी को स्वच्छ पेय जल उपलब्ध है

गत ढाई वर्षों में लगभग ६०० गांवों को साफ़ पीने के पानी की सुविधाएं दी गईं तथा वित्त वर्ष १९८१-८२ में ३०० और गांवों को यह सुविधा दे दी जाएगी.

११३६ पेय जल योजनाओं पर कार्य चल रहा है.

इसी दशक में सभी ग्रामों को पेयजल उपलब्ध करवाने का संकल्प है.
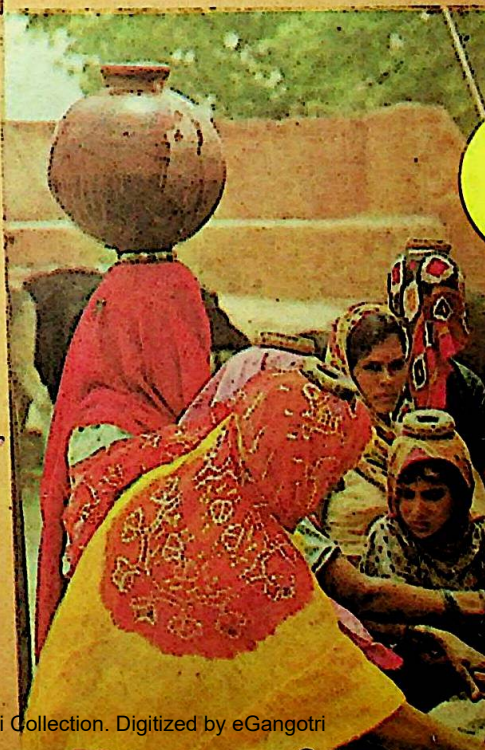
निदेशक, लोक संपर्क विभाग,
हरियाणा द्वारा जारी

'गुलदस्ता' स्पेन के कलाकार एचावेरिया की कृति